
बं
द्
ति जो री

१

मेरा नाम अथर्व है - अथर्व शेखावत । आज में आपके सामने मेरी जिंदगी की कहानी लेकर आया हूं। कहानी क्या , कहा जाए तो यह मेरी जिंदगी एक बंद तिजोरी की तरह है,जिसे आज में आपके सामने खोलने जा रहा हू। उम्मीद है कि आपको इसमे छुपा खजाना पसंद आएगा।

में तीस साल का तथाकथित सफल और संपन्न आदमी। इतना की एक औसत व्यक्ति मुझसे इर्ष्या करे। सफलता की इस सीढ़ी को लांघने के लिए मेरे माता-पिता ने बहुत प्रोत्साहन दिया। उन्होंने अपने जीवनकाल में बहुत से कष्ट देखे और सहे थे - इसलिए उन्होंने बहुत प्रयास किया की मैं वैसे कष्ट न देख सकूँ। अतः उन्होंने अपना पेट काट-काट कर ही सही, लेकिन मेरी शिक्षा और लालन पालन में कोई कमी न आने दी। सदा यही सिखाया की 'पुत्र! लगे रहो। प्रयास छोड़ना मत! आज कर लो, आगे सिर्फ सुख भोगोगे!'

मैं यह कतई नहीं कह रहा हूँ की मेरे माँ बाप की शिक्षा मिथ्या थी। प्रयास करना, मेहनत करना अच्छी बाते हैं - दरअसल यह सब मानवीय नैतिक गुण हैं। किन्तु मेरा मानना है की इनका 'जीवन के सुख' (वैसे, सुख की हमारी आज-कल की समझ तो वैसे भी गंदे नाले में स्वच्छ जल को व्यर्थ करने के ही तुल्य है) से कोई खास लेना देना नहीं है। और वह एक अलग बात है, जिसका इस कहानी से कोई लेना देना नहीं है। मैं यहाँ पर कोई पाठ पढाने नहीं आया हूँ।

जीवन की मेरी घुड़दौड़ अभी ठीक से शुरू भी नहीं हुई थी, की मेरे माँ बाप मुझे जीवन की जिन मुसीबतों से बचाना चाहते थे, वो सारी मुसीबतें मेरे सर पर मानो हिमालय के समस्त बोझ के सामान एक बार में ही टूट पड़ी। जब मैं ग्यारहवीं में पढ़ रहा था, तभी मेरे माँ बाप, दोनों का ही एक सड़क दुर्घटना में देहान्त हो गया, और मैं इस निर्मम संसार में नितान्त अकेला रह गया। मेरे दूरदर्शी जनक ने अपना सारा कुछ (वैसे तो कुछ खास नहीं था उनके पास) मेरे ही नाम लिख दिया था, जिससे मुझे कुछ अवलंब तो अवश्य मिला। ऐसी मुसीबत के समय मेरे चाचा-चाची मुझे सहारा देने आये - ऐसा मुझे लगा – लेकिन वह केवल मेरा मिथ्याबोध था। वस्तुतः वो दोनों आये मात्र इसलिए थे की उनको मेरे माँ बाप की संपत्ति का कुछ हिस्सा मिल जाए, और उनकी चाकरी के लिए एक नौकर (मैं) भी। किन्तु यह हो न सका - माँ बाप ने मेहनत करने के साथ ही अन्याय न सहने की भी शिक्षा दी थी। लेकिन मेरी अन्याय न सहने की वृत्ति थोड़ी हिंसक थी। चाचा-चाची से मुक्ति का वृतांत मार-पीट

और गाली-गलौज की अनगिनत कहानियों से भरा पड़ा है, और इस कहानी का हिस्सा भी नहीं है।

बस यहाँ पर यह बताना पर्याप्त होगा की उन दोनों कूकुरों से मुझे अंततः मुक्ति मिल ही गयी। बाप की सारी कमाई और उनका बनाया घर सब बिक गया। मेरे मात-पिता से मुझको जोड़ने वाली अंतिम भौतिक कड़ी भी टूट गयी। घर छोड़ा, आवासीय विद्यालयों में पढ़ा, और अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए (जो मेरे माता पिता की न सिर्फ अंतिम इच्छा थी, बल्कि तपस्या भी) विभिन्न प्रकार की क्षात्रवृत्ति पाने के लिए मुझे अपने घोड़े को सबसे आगे रखने के लिए मार-मार कर लहू-लुहान कर देना पड़ा। खैर, विपत्ति भरे वो चार साल, जिसके पर्यंत मैंने अभियांत्रिकी सीखी, जैसे तैसे बीत गए - अब मेरे पास एक आदरणीय डिग्री थी, और नौकरी भी। किन्तु यह सब देखने के लिए मेरे माता पिता नहीं थे और न ही उनकी इतनी मेहनत से बनायी गयी निशानी।

घोर अकेलेपन में किसी भी प्रकार की सफलता कितनी बेमानी हो जाती है! लेकिन मैंने इस सफलता को अपने माता-पिता की आशीर्वाद का प्रसाद माना और अगले दो साल तक एक और साधना की - मैंने भी पेट काटा, पैसे बचाए और घोर तपस्या (पढाई) करी, जिससे मुझे देश के एक अति आदरणीय प्रबंधन संस्थान में दाखिला मिल जाए। ऐसा हुआ भी और आज मैं एक बहु-राष्ट्रीय कंपनी में प्रबंधक हूँ। कहने सुनने में यह कहानी बहुत सुहानी लगती है, लेकिन सच मानिए, तीस साल तक बिना रुके हुए इस घुड़दौड़ में दौड़ते-दौड़ते मेरी कमर टूट गयी है। भावनात्मक पीड़ा मेरी अस्थि-मज्जा के क्रोड़ में समा सी गयी है। ह्रदय में एक काँटा धंसा हुआ सा लगता है। और आज भी मैं एकदम अकेला हूँ। कुछ मित्र बने – लेकिन उनसे कोई अंतरंगता नहीं है – सदा यही भय समाया रहता है की न जाने कब कौन मेरी जड़ें काटने लगे! और न ही कोई जीवनसाथी बनने के इर्द-गिर्द भी है। ऐसा नहीं है की मेरे जीवन में लडकियां नहीं आईं - बहुत सी आईं और बहुत सी गईं। किन्तु जैसी बेईमानी और अमानवता मैंने अपने जीवन में देखी है, मेरे जीवन में आने वाली ज्यादातर लड़कियां वैसी ही बेइमान और अमानवीय मिली। आरम्भ में सभी मीठी-मीठी बाते करती, लुभाती, दुलारती आती हैं, लेकिन धीरे-धीरे उनके चरित्र की प्याज़ जैसी परतें हटती है, और उनकी सच्चाई की कर्कशता देख कर आँख से आंसू आने लगते हैं।

सच मानिए, मेरा मानव जाति से विश्वास उठता जा रहा है, और मैं खुद अकेलेपन के गर्त में समाता जा रहा हूँ। तो क्या अब आप मेरी मनःस्तिथि समझ सकते हैं? कितना अकेलापन और कितनी ही बेमानी जिन्दगी! प्रतिदिन (अवकाश वाले दिन भी) सुबह आठ बजे से रात आठ बजे तक कार्य में स्वयं को स्वाहा करता हूँ, जिससे की इस अकेलेपन का बोझ कम

ढ़ोना पड़े। पर फिर भी यह बोझ बहुत भारी ही रहता है। कार्यालय में दो-तीन सहकर्मी और बॉस अच्छे व्यवहार वाले मिले। वो मेरी कहानी जानते थे, इसलिए मुझे अक्सर ही छुट्टी पर जाने को कहते थे। लेकिन वो कहते हैं न, की मुफ्त की सलाह का क्या मोल! मैं अक्सर ही उनकी बातें अनसुनी कर देता।

लेकिन, पिछले दिनों मेरा हवा-पानी बदलने का बहुत मन हो रहा था - वैसे भी अपने जीवन में मैं कभी भी बाहर (घूमने-फिरने) नहीं गया। मेरे मित्र मुझको "अचल संपत्ति" कहकर बुलाने लगे थे। अपनी इस जड़ता पर मुझको विजय प्राप्त करनी ही थी। इंटरनेट पर करीब दो माह तक शोध करने के बाद, मैंने मन बताया की उत्तराँचल जाऊंगा! अपने बॉस से एक महीने की छुट्टी ली - आज तक मैंने कभी भी छुट्टी नहीं ली थी। लेता भी किसके लिए - न कोई सगा न कोई सम्बन्धी। मेरा भला-मानुस बॉस ऐसा प्रसन्न हुआ जैसे उसको अभी अभी पदोन्नति मिली हो। उसने तुरंत ही मुझको छुट्टी दे दी और यह भी कहा की एक महीने से पहले दिखाई मत देना। छुट्टी लेकर, ऑफिस से निकलते ही सबसे पहले मैंने आवश्यकता के सब सामान जुटाए। वह अगस्त मास था – मतलब वर्षा ऋतु। अतः समस्त उचित वस्तुएं जुटानी आवश्यक थीं। सामान पैक कर मैं पहला उपलब्ध वायुयान लेकर उत्तराँचल की राजधानी देहरादून पहुच गया। उत्तराँचल को लोग देव-भूमि भी कहते हैं - और वायुयान में बैठे हुए नीचे के दृश्य देख कर समझ में आ गया की लोग ऐसा क्यों कहते है। मैंने अपनी यात्रा की कोई योजना नहीं बनायीं थी - मेरा मन था की एक गाडी किराए पर लेकर खुद ही चलाते हुए बस इस सुन्दर जगह में खो जाऊं। समय की कोई कमी नहीं थी, अतः मुझे घूमने और देखने की कोई जल्दी भी नहीं थी। हाँ, बस मैं भीड़ भाड़ वाली जगहों (जैसे की हरिद्वार, ऋषिकेश इत्यादि) से दूर ही रहना चाहता था। मैंने देहरादून में ही एक छोटी कार किराए पर ली और उत्तराँचल का नक्शा, 'जी पी एस' और अन्य आवश्यक सामान खरीद कर कार में डाल लिया और आगे यात्रा के लिए चल पड़ा।

अगले एक सप्ताह तक मैंने बद्रीनाथ देवस्थान, फूलों की घाटी, कई सारे प्रयाग, और कुछ अन्य छोटे स्थानिक मंदिर भी देखे। हिमालय की गोद में चलते, प्राकृतिक छटा का रसास्वादन करते हुए यह एक सप्ताह न जाने कैसे फुर्र से उड़ गया। प्रत्येक स्थान मुझको अपने ही तरीके से अचंभित करता। अब जैसे बद्रीनाथ देवस्थान की ही बात कर लें – मंदिर से ठीक पूर्व भीषण वेग से बहती अलकनंदा नदी यह प्रमाणित करती है की प्रकृति की शक्ति के आगे हम सब कितने बौने हैं। इसी ठंडी नदी के बगल ही एक तप्त-कुंड है, जहाँ भूगर्भ से गरम पानी निकलता है। हम वैज्ञानिक तर्क-वितर्क करने वाले आसानी से कह सकते हैं की भूगर्भीय प्रक्रियाओं के चलते गरम पानी का सोता बन गया। किन्तु, एक आम व्यक्ति के लिए यह दैवीय चमत्कार से कोई कम नहीं है। मंदिर के प्रसाद में मिलने वाली

वन-तुलसी की सुगंध, थके हुए शरीर से सारी थकान खींच निकालती है और सिर्फ यही नहीं। प्रत्येक सुबह, सूरज की पहली किरणें नीलकंठ पर्वत की छोटी पर जब पड़ती हैं, तो उस पर जमा हुआ हिम (बरफ) ऐसे जगमगाता है, जैसे की सोना!

ऐसे चमत्कार वहां पग-पग पर होते रहते हैं। ताज़ी ठंडी हवा, हरे भरे वृक्ष, जल से भरी नदियों का नाद, फूलों की महक और रंग, नीला आकाश, रात में (अगर भाग्यशाली रहे तो) टिमटिमाते तारे और विभिन्न नक्षत्रों का दर्शन, कभी होटल में, तो कभी ऐसे खुले में ही टेंट में रहना और सोना - यह सब काम मेरी घुड़दौड़ वाली जिंदगी से बेहद भिन्न थे और अब मुझे मज़ा आने लग गया था। मैंने मानो अपने तीस साल पुराने वस्त्रों को कहीं रास्ते में ही फेंक दिया और इस समय खुले शरीर से प्रकृति के ऐसे मनोहर रूप को अपने से चिपटाए जा रहा था।

सबसे आनंददायी बात वहां के स्थानीय लोगो से मिलने जुलने की रही। सच कहता हूँ की उत्तराँचल के ज्यादातर लोग बहुत ही सुन्दर है - तन से भी और मन से भी। सीधे सादे लोग, मेहनतकश लोग, मुकुराते लोग! रास्ते में कितनी ही सारी स्त्रियाँ देखी जो कम से कम अपने शरीर के भार के बराबर बोझ उठाए चली जा रही है - लेकिन उनके होंठो पर मुस्कराहट बदस्तूर बनी हुई है! सभी लोग मेरी मदद को हमेशा तैयार थे - मैंने एकाध बार लोगो को कुछ रुपये भी देने चाहे, लेकिन सभी ने इनकार कर दिया - 'भला लोगो की भलाई का भी कोई मोल होता है?' छोटे-छोटे बच्चे, अपने सेब जैसे लाल-लाल गाल और बहती नाक के साथ इतने प्यारे लगते, की जैसे गुड्डे-गुडियें हों! इन सब बातो ने मेरा मन ऐसा मोह लिया की मन में एक तीव्र इक्छा जाग गयी की अब यही पर बस जाऊं।

खैर, मैं इस समय 'फूलों की घाटी' से वापस आ रहा था। वहां बिताये चार दिन मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा। कोई तीन किलोमीटर ऊपर स्थित इस घाटी में अत्यंत स्थानीय, केवल उच्च पर्वतीय क्षेत्र में पाये जाने वाले फूल मिलते हैं। फूलों से भरी, सुगंध से लदी इस घाटी को देखकर ऐसा ही लगता है की उस जगह मैं वाकई देवों और अप्सराओं का स्थान होगा। बचपन में आप सब ने दादी की कहानियों में सुना होगा की परियां जमीन पर आकर नाचती हैं। मेरे ख़याल से अगर धरती पर कोई ऐसा स्थान है, तो वह ‘फूलों की घाटी’ ही है। मेरे जैसा एकाकी व्यक्ति इस बात को सोच कर ही प्रसन्न हो गया की इस जगह से "मानव सभ्यता" से दूर-दूर तक कोई संपर्क नहीं हो सकता। न कोई मुझे परेशान करेगा, और न ही मैं किसी और को। लेकिन पहाड़ो के ऊपर चढ़ाई, और उसके बात उतराई में इतना प्रयास लगा की बहुत ज्यादा थकावट हो गयी। इतनी की मैं वहां से वापस आने के बाद करीब आधा दिन तक मैं अपनी गाडी में ही सोता रहा।

वापसी में मैं एक घने बसे कस्बे में (जिसका नाम मैं आपको नहीं बताऊँगा) आ गया। मैंने गाडी रोक दी की, थोडा फ्रेश होकर खाना खाया जा सके। एक भले आदमी ने मेरे नहाने का बंदोबस्त कर दिया, लेकिन वह बंदोबस्त सुशीलता से परे था। सड़क के किनारे खुले में एक हैण्डपाइप, और एक बाल्टी और एक सस्ता सा साबुन। खैर, मैंने पिछले ३ दिनों से नहाया नहीं था, इसलिए मेरा ध्यान सिर्फ तरो-ताज़ा होने का था। मैं जितनी भी देर नहाया, उतनी देर तक वहां के लोगों के लिए कौतूहल का विषय बना रहा। विशेषतः वहां की स्त्रियों के लिए - वो मुझे देख कर कभी हंसती, कभी मुस्कुराती, तो कभी आपस में खुसुर-फुसुर करती। वैसे, अपने आप अपनी बढाई क्या करूँ, लेकिन नियमित आहार और व्यायाम से मेरा शरीर एकदम तगड़ा और गठा हुआ है और चर्बी रत्ती भर भी नहीं है। व्यायाम करना मेरे लिए सबसे बड़ा भोग-विलास है, यद्यपि कभी कभार द्राक्षासव का सेवन भी करता हूँ, लेकिन सिर्फ कभी कभार। इसी के कारण मुझे पिछले कई वर्षों से प्रतिदिन बारह घंटे कार्य करने की ऊर्जा मिलती है। हो सकता है की ये स्त्रियाँ मुझे आकर्षक पाकर एक दूसरे से अपनी प्रेम कल्पना बाँट रही हों - ऐसे सोचते हुए मैंने भी उनकी तरफ देख कर मुस्कुरा दिया।

खैर, नहा-धोकर, कपडे पहन कर मैंने खाना खाया और अपनी कार की ओर जाने को हुआ ही था की मैंने स्कूल यूनिफार्म पहने लड़कियों का समूह जाते हुए देखा। मुझे लगा की शायद किसी स्कूल में छुट्टी हुई होगी, क्योंकि उस समूह में हर कक्षा की लड़कियां थी। मैं यूँ ही अपनी कार के पास खड़े-खड़े उन सबको जाते हुए देख रहा था की मेरी नज़र अचानक ही उनमे से एक लड़की पर पड़ी। उसको देखते ही मुझे ऐसे लगा की जैसे धूप से तपी हुई ज़मीन को बरसात की पहली बूंदो के छूने से लगता होगा।

वह लड़की आसमानी रंग का कुरता, सफ़ेद रंग की सलवार, और सफ़ेद रंग का ही पट्टे वाला दुपट्टा (यही स्कूल यूनिफार्म थी) पहने हुए थी। उसने अपने लम्बे बालो को एक चोटी में बाँधा हुआ था। अब मैंने उसको गौर से देखा - उसका रंग साफ़ और गोरा था, चेहरे की बनावट में पहाड़ी विशेषता थी, आँखें एकदम शुद्ध, मूँगिया रंग के भरे हुए होंठ और अन्दर सफ़ेद दांत, एक बेहद प्यारी सी छोटी सी नाक और यौवन की लालिमा लिए हुए गाल! उसकी उम्र बमुश्किल बिस इक्कीस की रही होगी, इससे मैंने अंदाजा लगाया की वह कॉलेज में पढ़ती होगी।

'कितनी सुन्दर! कैसा भोलापन! कैसी सरल चितवन! कितनी प्यारी!'

"प्रिया... रुक जा दो मिनट के लिए..." उसकी किसी सहेली ने पीछे से उसको आवाज़ लगाई। वह लड़की मुस्कुराते हुए पीछे मुड़ी और थोड़ी देर तक रुक कर अपनी सहेली का इंतज़ार करने लगी।

'प्रिया..! हम्म.. यह नाम एकदम परफेक्ट है! सचमुच, एकदम सांझ जैसी सुन्दरता! मन को आराम देती हुई, पल-पल नए-नए रंग भरती हुई .. क्या बात है!' मैंने मन ही मन सोचा।

मैंने जल्दी से अपना कैमरा निकाला और दूरदर्शी लेन्स लगा कर उसकी तस्वीरे तब तक निकालता रहा जब तक की वह आँखों से ओझल नहीं हो गयी। उसके जाते ही मुझे होश आया! होश आया, या फिर गया?

'क्या लव एट फर्स्ट साईट ऐसे ही होता है?' ‘लव एट फर्स्ट साईट’ – यह वाक्य अगर किसी को कहो, तो वह यही कहेगा की दरअसल ऐसा कुछ नहीं होता। ऐसी भावना लालसा के वेश में लिपटी वासना के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। वे इसको प्रेम की एक झूठी भावना कहकर उपहास करने लगेंगे।

लेकिन कैसा हो यदि ऐसा कुछ वाकई होता हो? मुझे एक नशा मिला हुआ बुखार सा चढ़ गया। दिमाग में इसी लड़की का चेहरा घूमता जाता। उसकी सुन्दरता और उसके भोलेपन ने मुझे मोह लिया था - या यह कहिये की मुझे प्रेम में पागल कर दिया था। मेरे मन में आया की अपने होटल वाले को उसकी तस्वीर दिखा कर उसके बारे में पूछूँ, लेकिन यह सोच के रुक गया की कहीं लोग बुरा न मान जाएँ की यह बाहर का आदमी उनकी लड़कियों/बेटियों के बारे में क्यों पूछ रहा है। वैसे भी दूर दराज के लोग अपनी मान्यताओ और रीतियों को लेकर बहुत ही जिद्दी होते है, और मैं इस समय कोई मुसीबत मोल नहीं लेना चाहता था।

'हो सकता है की जिसको मैं प्रेम समझ रहा हूँ वह सिर्फ विमोह हो!' मेरे मन की उधेड़बुन जारी थी।

उसी के बारे में सोचते-सोचते देर शाम हो गयी, तो मैंने निश्चय किया की आज रात यहीं रह जाता हूँ। लेकिन उस लड़की का ध्यान मेरे मन और मस्तिष्क में कम हुआ ही नहीं! रात में अपने बिस्तर पर लेटे हुए मेरा सारा ध्यान सिर्फ प्रिया पर ही था। मुझे उसके बारे में कुछ भी नहीं मालूम था - लेकिन फिर भी ऐसा लग रहा था की, यह मेरे लिए परफेक्ट लड़की है। मुझको ऐसा लगा की अगर मुझे जीवन में कोई चाहिए तो बस वही लड़की - प्रिया।

नींद नहीं आ रही थी – बस प्रिया का ही ख़याल आता जा रहा था। तभी ध्यान आया की वो तो मेरे कैमरे में है! जल्दी से मैं अपने कैमरे में उतारी गयी उसकी तस्वीरों को ध्यान से देखने लगा - लम्बे बाल, और उसके सुन्दर चेहरे पर उन बालों की एक दो लटें, उसकी सुन्दरता को और बढ़ा रहे थे। पतली, लेकिन स्वस्थ बाहें। उत्सुकतावश उसके स्तनों का ध्यान हो आया – छोटे-छोटे, जैसे मानो मध्यम आकार के सेब हों। ठीक उसी प्रकार ही स्वस्थ, युवा नितम्ब। साफ़ और सुन्दर आँखें, भरे हुए होंठ - बाल-सुलभ अठखेलियाँ भरते हुए और उनके अन्दर सफ़ेद दांत! यह लड़की मेरी कल्पना की प्रतिमूर्ति थी... और अब मेरे सामने थी।

यह सब देखते और सोचते हुए स्वाभाविक तौर पर मेरे शरीर का रक्त मेरे लिंग में तेजी से भरने लगा, और कुछ ही क्षणों में वह स्तंभित हो गया। मेरा हाथ मेरे लिंग को मुक्त करने में व्यस्त हो गया .... मेरे मष्तिष्क में उसकी सुन्दर मुद्रा की बार-बार पुनरावृत्ति होने लगी - उसकी सरल मुस्कान, उसकी चंचल चितवन, उसके युवा स्तन... जैसे-जैसे मेरा मष्तिष्क प्रिया के चित्र को निर्वस्त्र करता जा रहा था, वैसे-वैसे मेरे हाथ की गति तीव्र होती जा रही थी.... साथ ही साथ मेरे लिंग में अंदरूनी दबाव बढ़ता जा रहा था - एक नए प्रकार की हरारत पूरे शरीर में फैलती जा रही थी। मेरी कल्पना मुझे आनंद के सागर में डुबोती जा रही थी। अंततः, मैं कामोन्माद के चरम पर पहुच गया - मेरे लिंग से वीर्य एक विस्फोटक लावा के समान बह निकला। हस्त-मैथुन के इन आखिरी क्षणों में मेरी ईश्वर से बस यही प्रार्थना थी, की यह कल्पना मात्र कोरी-कल्पना बन कर न रह जाए। रात नींद कब आई, याद नहीं है।

२

अगले दिन की सुबह इतनी मनोरम थी की आपको क्या बताऊँ। ठंडी ठंडी हवा, और उस हवा में पानी की अति-सूछम बूंदे (जिसको मेरी तरफ "झींसी पड़ना" भी कहते हैं) मिल कर बरस रही थी। वही दूर कहीं से - शायद किसी मंदिर से - हरीओम शरण के गाये हुए भजनों का रिकॉर्ड बज रहा था। मैं बाहर निकल आया, एक फ़ोल्डिंग कुर्सी पर बैठा और चाय पीते हुए ऐसे आनंददायक माहौल का रसास्वादन करने लगा। मेरे मन में प्रिया को पुनः देखने की इच्छा प्रबल होने लगी। अनायास ही मुझे ध्यान आया की उस लड़की के स्कूल का समय हो गया होगा। मैंने झटपट अपने कपडे बदले और उस स्थान पर पहुच गया जहाँ से मुझे स्कूल जाते हुए उस लड़की के दर्शन फिर से हो सकेंगे।

मैंने मानो घंटो तक इंतज़ार किया ... अंततः वह समय भी आया जब यूनिफार्म पहने लड़कियां आने लगी। कोई पांच मिनट बाद मुझे अपनी परी के दर्शन हो ही गए। वह इस समय ओस में भीगी नाज़ुक पंखुड़ी वाले गुलाबी फूल के जैसे लग रही थी! उसके रूप का सबसे आकर्षक भाग उसका भोलापन था। उसके चेहरे में वह आकर्षण था की मेरी दृष्टि उसके शरीर के किसी और हिस्से पर गयी ही नहीं। कोई और होती तो अब तक उसकी पूरी नाप तौल बता चुका होता। लेकिन यह लड़की अलग है! मेरा इसके लिए मोह सिर्फ मोह नहीं है - संभवतः प्रेम है। आज मुझे अपने जीवन में पहली बार एक किशोर वाली भावनाएँ आ रही थीं। जब तक मुझे प्रिया दिखी, तब तक उसको मैंने मन भर के देखा। दिल धाड़ धाड़ करके धड़कता रहा। उसके जाने के बाद मैं दिन भर यूँ ही बैठा उसकी तस्वीरें देखता रहा और उसके प्रति अपनी भावनाओं का तोल-मोल करता रहा।

मैं यह सुनिश्चित कर लेना चाहता था, की प्रिया के लिए मेरे मन में जो भी कुछ था वह लिप्सा अथवा विमोह नहीं था, अपितु शुद्ध प्रेम था। उसको देखते ही ठंडी बयार वाला एहसास, मन में शान्ति और जीवन में ठहर कर घर बसाने वाली भावना लिप्सा तो नहीं हो सकती! ऐसे ही घंटो तक तर्क वितर्क करते रहने के बाद, अंततः मैंने ठान लिया की मैं इससे या इसके घरवालों से बात अवश्य करूंगा। दोपहर बाद जब उसके स्कूल की छुट्टी हुई तो मैंने उसका पीछा करते हुए उसके घर का पता करने की ठानी। आज भी मेरे साथ कल के ही जैसा हुआ। उसको तब तक देखता रहा जब तक आगे की सड़क से वह मुड़ कर ओझल न हो गयी और फिर मैंने उसका सावधानीपूर्वक पीछा करना शुरू कर दिया। मुख्य सड़क से कोई डेढ़ किलोमीटर चलने के बाद एक विस्तृत क्षेत्र आया, जिसमे काफी दूर तक

फैला हुआ खेत था और उसमे ही बीच में एक छोटा सा घर बना हुआ था। वह लड़की उसी घर के अन्दर चली गयी।

'तो यह है इसका घर!'

मैं करीब एक घंटे तक वहीँ निरुद्देश्य खड़ा रहा, फिर भारी पैरों के साथ वापस अपने होटल आ गया। अब मुझे इस लड़की के बारे में और पता करने की इच्छा होने लगी। अपने बुद्धि और विवेक के प्रतिकूल होकर मैंने अपने होटल वाले से इस लड़की के बारे में जानने का निश्चय किया। यह बहुत ही जोखिम भरा काम था - शायद यह होटल वाला ही इस लड़की का कोई सम्बन्धी हो? न जाने क्या सोचेगा, न जाने क्या करेगा। कहीं पीटना पड़ गया तो? खैर, मेरी जिज्ञासा इतनी बलवती थी, की मैंने हर जोखिम को नज़रंदाज़ करके उस लड़की के बारे में अपने होटल वाले से पूछ ही लिया।

"साहब! यह तो अपने हरिहर सिंह की बेटी है।" उसने तस्वीर को देखते ही कहा। फिर थोडा रुक कर, "साहब! माज़रा क्या है? ऐसे राह चलते लड़कियों की तस्वीरें निकालना कोई अच्छी बात नहीं।" उसका स्वर मित्रतापूर्ण नहीं था।

"माज़रा? मुझे यह लड़की पसंद आ गयी है! इससे मैं शादी करना चाहता हूँ।" मैंने उसके बदले हुए स्वर को अनसुना किया।

"क्या! सचमुच?" उसका स्वर फिर से बदल गया – इस बार वह अचरज से बोला।

"हाँ! क्या हरिहर सिंह जी इसकी शादी मुझसे करना पसंद करेंगे?"

"साहब, आप सच में इससे शादी करना चाहते है? कोई मजाक तो नहीं है?"

"यार, मैं मजाक क्यों करूंगा ऐसी बातो में? अब तक कुंवारा हूँ – अच्छी खासी नौकरी है। बस अब एक साथी की ज़रुरत है। तो मैं इस लड़की से शादी क्यों नहीं कर सकता? क्या गलत है?"

"मेरा वो मतलब नहीं था! साहब, ये बहुत भले लोग हैं - सीधे सादे। हरिहर सिंह खेती करते हैं - कुल मिला कर चार जने हैं: हरिहर सिंह खुद, उनकी पत्नी और दो बेटियां। इस लड़की

का नाम प्रिया है। आप बस एक बात ध्यान में रखें, की ये लोग बहुत सीधे और भले लोग हैं। इनको दु:ख न देना। आपके मुकाबले बहुत गरीब हैं, लेकिन गैरतमंद हैं। ऐसे लोगो की हाय नहीं लेना। अगर इनको धोखा दिया तो बहुत पछताओगे।"

"नहीं दोस्त! मेरी खुद की जिंदगी दु:ख भरी रही है, और मुझे मालूम है की दूसरों को दु:ख नही पहुचना चाहिए। और शादी ब्याह की बातें कोई मजाक नहीं होती। मुझे यह लड़की वाकई बहुत पसंद है।"

"अच्छी बात है। आप कहें तो मैं आपकी बात उनसे करवा दूं? ये तो वैसे भी अब शादी के लायक हो चली है।"

"नहीं! मैं अपनी बात खुद करना जानता हूँ। वैसे ज़रुरत पड़ी, तो आपसे ज़रूर कहूँगा।"

रात का खाना खाकर मैंने बहुत सोचा की क्या मैं वाकई इस लड़की, प्रिया से प्रेम करता हूँ और उससे शादी करना चाहता हूँ! कहीं यह विमोह मात्र ही नहीं? कहीं ऐसा तो नहीं की मेरी बढती उम्र के कारण मुझे किसी प्रकार का मानसिक विकार हो गया है और मैं पीडोफाइल (ऐसे लोग जो बच्चो की तरफ कामुक रुझान रखते हैं) तो नहीं बन गया हूँ? काफी समय सोच विचार करने के बाद मुझे यह सब आशंकाएं बे-सरपैर की लगीं। मैंने एक बार फिर अपने मन से पूछा, की क्या मुझे प्रिया से शादी करनी चाहिए, तो मुझे मेरे मन से सिर्फ एक ही जवाब मिला, "हाँ"!

सवेरे उठने पर मन के सभी मकड़-जाल खुद-ब-खुद ही नष्ट हो गए। मैंने निश्चय कर लिया की मैं हरिहर सिंह से मिलूंगा और अपनी बात कहूँगा। आज रविवार था - तो आज प्रिया का स्कूल नहीं लगना था। आज अच्छा दिन है सभी से मिलने का। नहा-धोकर मैंने अपने सबसे अच्छे अनौपचारिक कपडे पहने, नाश्ता किया और फिर उनके घर की ओर चल पड़ा। न जाने किस उधेड़बुन में था की वहां तक पहुचने में मुझे कम से कम एक घंटा लग गया। आज के जितना बेचैन मैंने अपने आपको कभी नहीं पाया। खैर, प्रिया के घर पहुच कर मैंने तीन-चार बार गहरी साँसे ली और फिर दरवाज़ा खटखटाया।

दरवाज़ा प्रिया ने ही खोला।

'हे भगवान्!' मेरा दिल धक् से हो गया। प्रिया पौ फटने से समय सूरज जैसी लग रही थी। उसने अभी अभी नहाया हुआ था - उसके बाल गीले थे, और उनकी नमी उसके हलके लाल रंग के कुर्ते को कंधे के आस पास भिगोए जा रही थी।

'कितनी सुन्दर! जिसके भी घर जाएगी, वह धन्य हो जायेगा।'

"जी?" मुझे एक बेहद मीठी और शालीन सी आवाज़ सुनाई दी। कानो में जैसे मिश्री घुल गयी हो।

"अ..अ आपके पिताजी हैं?" मैंने जैसे-तैसे अपने आपको संयत किया।

"आप अन्दर आइए ... मैं उनको अभी भेजती हूँ।"

"जी, ठीक है"

प्रिया ने मुझे बैठक में एक बेंत की कुर्सी पर बैठाया और अन्दर अपने पिता को बुलाने चली गयी। आने वाले कुछ मिनट मेरे जीवन के सबसे कठिन मिनट होने वाले थे, ऐसा मुझे अनुमान हो चुका था। करीब दो मिनट बाद हरिहर सिंह बैठक में आये। हरिहर सिंह साधारण कद-काठी के पुरुष थे, उम्र करीब बयालीस के आस-पास रही होगी। खेत में काम करने से सर के बाल असमय सफ़ेद हो चले थे। लेकिन उनके चेहरे पर संतोष और गर्व का अद्भुत तेज था। 'एक आत्मसम्मानी पुरुष!' मैंने मन ही मन आँकलन किया, 'बहुत सोच समझ कर बात करनी होगी।'

"नमस्कार! आप मुझसे मिलना चाहते हैं?" हरिहर सिंह ने बहुत ही शालीनता के साथ कहा।

"नमस्ते जी। जी हाँ। मैं आपसे एक ज़रूरी बात करना चाहता हूँ ..... लेकिन मेरी एक विनती है, की आप मेरी पूरी बात सुन लीजिये। फिर आप जो भी कहेंगे, मुझे स्वीकार है।"

"अरे! ऐसा क्या हो गया? बैठिए बैठिए। हम लोग बस नाश्ता करने ही वाले थे, आप आ गए हैं - तो मेहमान के साथ नाश्ता करने से अच्छा क्या हो सकता है? आप पहले मेरे साथ नाश्ता करिए, फिर अपनी बात कहिये।"

"नहीं नहीं! प्लीज! आप पहले मेरी बात सुन लीजिए। भगवान्‌ने चाहा तो हम लोग नाश्ता भी कर लेंगे।"

"अच्छा बताइए! क्या बात हो गई? आप इतना घबराए हुए से क्यों लग रहे हैं? सब खैरियत तो है न?"

"ह्ह्ह्हाँ! सब ठीक है... जी वो मैं आपसे यह कहने आया था की ...." बोलते बोलते मैं रुक गया। गला ख़ुश्क हो गया।

"बोलिए न?"

"जी वो मैं .... मैं आपकी बेटी प्रिया से शादी करना चाहता हूँ!" मेरे मुंह से यह बात ट्रेन की गति से निकल गई..

'मारे गए अब!'

"क्या? एक बार फिर से कहिए। मैंने ठीक से सुना नहीं।"

मैंने दो तीन गहरी साँसे भरीं और अपने आपको काफी संयत किया, "जी मैं आपकी बेटी प्रिया से शादी करना चाहता हूँ।"

“...”

"मैं इसीलिए आपसे मिलना चाहता था।"

"आप प्रिया को जानते हैं?"

"जी जानता तो नहीं। मैंने उनको दो दिन पहले देखा।"

"और इतने में ही आपने उससे शादी करने की सोच ली?" हरिहर सिंह का स्वर अभी भी संयत लग रहा था।

"जी।"

"मैं पूछ सकता हूँ की आप प्रिया से शादी क्यों करना चाहते है?"

"मैंने आपके बारे में पूछा है और मुझे मालूम है की आप लोग बहुत ही भले लोग हैं। आज आपसे मिल कर मैं आपको अपने बारे में बताना चाहता था। इसलिए मेरी यह विनती है की आप मेरी बात सुन लीजिये। उसके बाद आप जो भी कुछ कहेंगे, मुझे सब मंज़ूर रहेगा।"

"हम्म! देखिये, आप हमारे मेहमान भी है और ... शादी का प्रस्ताव भी लाये हैं। तो हमारी मर्यादा यह कहती है की आप पहले हमारे साथ खाना खाइए। फिर हम लोग बात करेंगे। .... आप बैठिये। मैं अभी आता हूँ।" यह कह कर हरिहर सिंह अन्दर चले गए।

मैं अब काफी संयत और हल्का महसूस कर रहा था। पिटूँगा तो नहीं। निश्चित रूप से अन्दर जाकर मेरे बारे में और मेरे प्रस्ताव के बारे में बात होनी थी। मेरे भाग्य पर मुहर लगनी थी। इसलिए मुझे अपना सबसे मज़बूत केस प्रस्तुत करना था। यह सोचते ही मेरे जीवन में मैंने अपने चरित्र में जितना फौलाद इकट्ठा किया था, वह सब एकसाथ आ गए।

'अगर मुझे यह लड़की चाहिए तो सिर्फ अपने गुणों के कारण चाहिए।'

हरिहर सिंह कम से कम दस मिनट बाद बाहर आये। उनके साथ उनकी छोटी बेटी भी थी।

"यह मेरी छोटी बेटी अश्विनी है।" अश्विनी करीब अठारा-उन्नीस साल की रही होगी।

"नमस्ते। आपका नाम क्या है? क्या आप सच में मेरी दीदी से शादी करना चाहते हैं? आप कहाँ रहते हैं? क्या करते हैं?" अश्विनी नें एक ही सांस में न जाने कितने ही प्रश्न दाग दिए।

मैं उसको कोई जवाब नहीं दे पाया... बोलता भी भला क्या? बस, मुस्कुरा कर रह गया।

"मुझे आपकी स्माइल पसंद है ..." अश्विनी ने बाल-सुलभ सहजता से कह दिया।

वाकई हरिहर सिंह के घर में लोग बहुत सीधे और भले हैं - मैंने सोचा। कितना सच्चापन है सभी में। कोई मिलावट नहीं, कोई बनावट नहीं। अश्विनी एकदम चंचल बच्ची थी, लेकिन

उसमे भी शालीनता कूट कूट कर भरी हुई थी। खैर, मुझे उससे कुछ तो बात करनी ही थी, इसलिए मैंने कहा, "नमस्ते अश्विनी। मेरा नाम अथर्व है। मैं अभी आपको और आपके माता पिता को अपने बारे में सब बताने वाला हूँ।"

लड़की के पिता वहीँ पर खड़े थे, और हमारी बातें सुन रहे थे। इतने में हरिहर सिंह जी की धर्मपत्नी भी बाहर आ गईं। उन्होंने अपना सर साड़ी के पल्लू से ढका हुआ था।

"जी नमस्ते!" मैंने उठते हुए कहा।

"नमस्ते! बैठिये न।" उन्होंने बस इतना ही कहा। परिश्रमी और आत्मसम्मानी पुरुष की सच्ची साथी प्रतीत हो रही थीं।

मुझे इतना तो समझ में आ गया की यह परिवार वाकई भला है। माता पिता दोनों ही स्वाभिमानी हैं, और सरल हैं। इसलिए बिना किसी लाग लपेट के बात करना ही ठीक रहेगा। हम चारो लोग अभी बस बैठे ही थे की उधर से प्रिया नाश्ते की ट्रे लिए बैठक में आई। मैंने उसकी तरफ बस एक झलक भर देखा और फिर अपनी नज़रें बाकी लोगो की तरफ कर लीं – ऐसा न हो की मैं मूर्खों की तरह उसको पुनः एकटक देखने लगूं, और मेरी बिना वजह फजीहत हो जाय।

"और ये प्रिया है – हमारी बड़ी बेटी। खैर, इसको तो आप जानते ही हैं। अश्विनी बेटा! जाओ दीदी का हाथ बटाओ।"

दोनों लड़कियों ने कुछ ही देर में नाश्ता जमा दिया। लगता है की वो बेचारे मेरे आने से पहले खाने जा रहे थे, लेकिन मेरे आने से उनका खाने का गणित गड़बड़ हो गया। खैर, मैं क्या ही खाता! मेरी भूख तो नहीं के बराबर थी – नाश्ता तो किया ही हुआ था और अभी थोडा घबराया हुआ भी था। लेकिन साथ में खाने पर बैठना आवश्यक था – कहीं ऐसा न हो की वो यह समझें की मैं उनके साथ खाना नहीं चाहता। खाते हुए बस इतनी ही बात हुई की मैं उत्तराँचल में क्या करने आया, कहाँ से आया, क्या करता हूँ, कितने दिन यहाँ पर हूँ ..... इत्यादि इत्यादि। नाश्ता समाप्त होने पर सभी लोग बैठक में आकर बैठ गए।

हरिहर सिंह थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोले, "अथर्व, मेरा यह मानना है की अगर लड़की की शादी की बात चल रही हो तो उसको भी पूरा अधिकार है की अपना निर्णय ले सके।

इसलिए प्रिया यहाँ पर रहेगी। उम्मीद है की आपको कोई आपत्ति नहीं।"

"जी, बिलकुल ठीक है। भला मुझे क्यों आपत्ति होगी?" मैंने प्रिया की ओर देखकर बोला। उसके होंठो पर एक बहुत हलकी सी मुस्कान आ गयी और उसके गाल थोड़े और गुलाबी से हो गए।

फिर मैंने उनको अपने बारे में बताना शुरू किया की मैं एक बहु-राष्ट्रीय कंपनी में प्रबंधक हूँ, मैंने देश के सर्वोच्च प्रबंधन संस्थान और अभियांत्रिकी संस्थान से पढाई की है। बैंगलोर में रहता हूँ। मेरा पैत्रिक घर कभी मेरठ में था, लेकिन अब नहीं है। परिवार के बारे में बात चल पड़ी तो बहुत सी कड़वी, और दुःखदाई बातें भी निकल पड़ी। मैंने देखा की मेरे माँ-बाप की मृत्यु, मेरे संबंधियों के अत्याचार और मेरे संघर्ष के बारे में सुन कर हरिहर सिंह की पत्नी और प्रिया दोनों के ही आँखों से आंसू निकल आये। मैंने यह भी घोषित किया की मेरे परिवार में मेरे अलावा अब कोई और नहीं है।

उन्होंने ने भी अपने घर के बारे में बताया की वो कितने साधारण लोग हैं, छोटी सी खेती है, लेकिन गुजर बसर हो जाती है। उनके वृहत परिवार के फलाँ फलाँ व्यक्ति विभिन्न स्थानों पर हैं। इत्यादि इत्यादि।

"अथर्व, आपसे मुझे बस एक ही बात पूछनी है। आप प्रिया से शादी क्यों करना चाहते हैं? आपके लिए तो लड़कियों की कोई कमी नहीं।" हरिहर सिंह ने पूछा।

मैंने कुछ सोच के बोला, "ऊपर से मैं चाहे कैसा भी लगता हूँ, लेकिन अन्दर से मैं बहुत ही सरल साधारण आदमी हूँ। मुझे वैसी ही सरलता प्रिया में दिखी। इसलिए।"

फिर मैंने बात आगे जोड़ी, "आप बेशक मेरे बारे में पूरी तरह पता लगा लें। आप मेरा कार्ड रखिये - इसमें मेरी कंपनी का पता लिखा है। अगर आप बैंगलोर जाना चाहते हैं तो मैं सारा प्रबंध कर दूंगा। और यह मेरे घर का पता है (मैंने अपने विसिटिंग कार्ड के पीछे घर का पता भी लिख दिया था) - वैसे तो मैं अकेला रहता हूँ, लेकिन आप मेरे बारे में वहां पूछताछ कर सकते हैं। मैं यहाँ, उत्तराँचल में, मैं वैसे भी अगले दो-तीन सप्ताह तक हूँ। इसलिए अगर आप आगे कोई बात करना चाहते हैं, तो आसानी से हो सकती है।"

हरिहर सिंह ने सर हिलाया, फिर कुछ सोच कर बोले, "प्रिया और आप आपस में कुछ बात करना चाहते हैं, तो हम बाहर चले जाते हैं।" और ऐसा कह कर तीनो लोग बैठक से बाहर चले गए।

अब वहां पर सिर्फ मैं और प्रिया रह गए थे। ऐसे ही किसी और पुरुष के साथ एक कमरे में अकेले रह जाने का प्रिया का यह पहला अनुभव था। घबराहट और संकोच से उसने अपना सर नीचे कर लिया। मैंने देखा की वो अपने पांव के अंगूठे से फर्श को कुरेद रही थी। उसके कुर्ते की आस्तीन से गोरी गोरी बाहें निकल कर आपस में उलझी जा रही थी।

"प्रिया! मेरी तरफ देखिए।" उसने बड़े जतन से मेरी तरफ देखा।

"आपको मुझसे कुछ पूछना है?" मैंने पूछा।

उसने सिर्फ न में सर हिलाया।

"तो मैं आपसे कुछ पूछूं?" उसने सर हिला के हाँ कहा।

"आप मुझसे शादी करेंगी?"

मेरे इस प्रश्न पर मानो उसके शरीर का सारा खून उसके चेहरे में आ गया। घबराहट में उसका चेहरा एकदम गुलाबी हो चला। वो शर्म के मारे उठी और भाग कर कमरे से बाहर चली गयी। कुछ देर में हरिहर सिंह अन्दर आये, उन्होंने मुझे अपना फ़ोन नंबर और पता लिख कर दिया और बोले की वो मुझे फ़ोन करेंगे। जाते जाते उन्होंने अपने कैमरे से मेरी एक तस्वीर भी खीच ली। मुझे समझ आ गया की आगे की तहकीकात के लिए यह प्रबंध है। अच्छा है - एक पिता को अपनी पूरी तसल्ली कर लेनी चाहिए। आखिर अपनी लड़की किसी और के सुपुर्द कर रहे हैं!

मैं अगले दो दिन तक वहीँ रहा लेकिन मुझे हरिहर सिंह का फ़ोन नहीं आया। मैं कोई व्यग्रता और अतिआग्रह नहीं दर्शाना चाहता था, इसलिए मैंने उनको उन दो दिनों तक फोन नहीं किया, और न ही प्रिया का पीछा किया। मैं नहीं चाहता था की वो मेरे कारण लज्जित हो। मेरा मन अब तक काफी हल्का हो गया था की कम से कम मन की बात कह तो दी। अब मैं आगे की यात्रा आरम्भ करना चाह रहा था। इसलिए मैं आगे की यात्रा पर निकल

पड़ा और कौसानी पहुच गया। निकलने से पहले मैंने हरिहर सिंह जी को फोन करके बता दिया। उनके शब्दों से मुझे किसी प्रकार की तल्खी नहीं सुनाई दी – यह अच्छी बात थी।

कौसानी तक आते-आते उत्तराँचल के क्षेत्र अलग हो जाते हैं – प्रिया का घर गढ़वाल में था, और कौसानी कुमाऊँ में। वहां तक की यात्रा मेरे लिए ठिठुराने वाली थी – एक तो बेहद घुमावदार सड़कें, और ऊपर से ठंडी ठंडी वर्षा। लेकिन मेरे आनंद में कोई कमी नहीं थी। कौसानी को महात्मा गाँधी जी ने "भारत का स्विट्ज़रलैंड" की उपाधि दी थी। इतनी सुन्दर जगह हिमालय में शायद ही कहीं मिलेगी। यहाँ की प्राकृतिक भव्यता की कोई मिसाल नहीं दी जा सकती है - देवदार के घने वृक्षों से घिरे इस पहाड़ी स्थल से हिमालय के तीन सौ किलोमीटर चौड़े विहंगम दृश्य को देखा जा सकता है। मैं दिन में बाहर जा कर पैदल यात्रा करता और रात में अपने होटल के कमरे से बाहर के अँधेरे में आकाशगंगा देखने का प्रयास करता।

लेकिन मेरे दिलो-दिमाग पर बस प्रिया ही छायी हुई थी। 'क्या उन लोगो को याद भी है मेरे बारे में?' मैं यह अक्सर सोचता। कौसानी में अत्यंत शान्ति थी, अतः कुछ दिन वहीँ रहने का निश्चय किया। वैसे भी उत्तराँचल घूमने की मेरी कोई निश्चित योजना नहीं थी। जहाँ मन रम जाय, वहीँ रहने लगो! वहां रहते हुए, करीब पांच दिन बाद मुझे हरिहर सिंह के नंबर से रात में फ़ोन आया।

"हेल्लो!" मैंने कहा।

"जी..... मैं प्रिया बोल रही हूँ।"

"प्रिया? आप ठीक हैं? घर में सभी ठीक हैं?" मैंने जल्दी जल्दी प्रश्न दाग दिए। लेकिन वो जैसे कुछ नहीं सुन रही हो।

"जी.... हमें आपसे कुछ कहना था।"

"हाँ कहिये न?" मेरा दिल न जाने क्यों जोर जोर से धड़कने लगा।

"जी..... हम आपसे प्रेम करते हैं।" कहकर उसने फोन काट दिया।

मुझे अपने कानो पर विश्वास ही नहीं हो रहा था – ये क्या हुआ? ज़रूर हरिहर सिंह ने मेरे बारे में तहकीकात करी होगी, और यह सोचा होगा की प्रिया और मेरा अच्छा मेल है। हाँ, ज़रूर यही बात रही होगी। पारंपरिक भारतीय समाज में आज भी, यदि माता-पिता अपनी लड़की का विवाह तय कर देते हैं, तो वह लड़की अपने होने वाले पति को विवाह से पूर्व ही पति मान लेती है।

'वो भी मुझसे प्रेम करती है!'

प्रिया के फोन ने मेरे दिल के तार कुछ इस प्रकार झनझना दिए की रात भर नींद नहीं आई। मैंने पलट कर फोन नहीं किया। हो सकता है की ऐसा करने पर वो लोग मुझे असंस्कृत समझें। बहुत ही बेचैनी में करवटें बदलते हुए मेरी रात किसी प्रकार बीत ही गयी। 'प्रिया का कैसा हाल होगा?' यह विचार मेरे मन में बार बार आता।

३

अगले दिन मेरे ऑफिस से मेरे बॉस, और मेरे हाउसिंग सोसाइटी के सेक्रेटरी का फ़ोन आया। उन लोगो ने बताया की कोई मेरे बारे में पूछताछ कर रहे थे। मैंने उन लोगो को सारी बात का विवरण दे दिया। दोनों ही लोग बहुत खुश हो गए - दरअसल सभी को मेरी चिंता खाए जाती थी। खासतौर पर मेरा बॉस - उसको लगता था की कहीं मैं वैरागी न बन जाऊं। काम मैं अच्छा कर लेता हूँ, इसलिए उसको मुझे खोने का डर लगा रहता था। इसी तरह हाउसिंग सोसाइटी का सेक्रेटरी सोचता की रहता तो इतने बड़े घर में है, लेकिन अकेले रहते रहते कहीं उसको खराब न कर दूं। लेकिन, अगर मैं शादी कर लेता, तो उन लोगो की अपनी अपनी चिंता समाप्त हो जाती। इसलिए उन लोगो ने मौका मिलते ही मेरे बारे में जांच करने वाले व्यक्ति को अच्छी-अच्छी बातें बताई और मेरी इतनी बढाई कर दी जैसे मुझसे बेहतर कोई और आदमी न बना हो। शायद यही बाते हरिहर सिंह को भी पता चली हों और उन्होंने अपने घर में मेरे बारे में विचार विमर्श किया हो।

सारे संकेत सकारात्मक थे। अवश्य ही हरिहर सिंह के घर में मुझको पसंद किया गया हो। प्रिया के फोन के बाद मुझे अब हरिहर सिंह के फोन का इंतज़ार था। पूरे दिन इंतज़ार किया, लेकिन कोई फोंन नहीं आया। आखिरकार, शाम को करीब तीन बजे हरिहर सिंह का फोन आया।

"हेल्लो... अथर्व जी, मैं हरिहर सिंह बोल रहा हूँ .."

"जी.. नमस्ते! हाँ... बोलिए... आप कैसे हैं?"

"आपसे एक बहुत ज़रूरी बात करनी है। आप हमारे यहाँ एक बार फिर से आ सकते हैं?"

"जी.. बिलकुल आ सकता हूँ। लेकिन मुझे दो दिन का समय तो लगेगा। अभी कौसानी में ही हूँ!"

"कोई बात नहीं। आप आराम से आइये। लेकिन मिलना ज़रूरी है, क्योंकि यह बात फोन पर नहीं हो सकती।"

"जी.. ठीक है" कह कर मैंने फोन काट दिया, और मन ही मन हरिहर सिंह को धिक्कारा। 'अरे यार! यह बात सवेरे बता देते तो कम से कम मैं एक तिहाई रास्ता पार चुका होता अब तक!'

खैर, इतने शाम को ड्राइव करना मुश्किल काम था, इसलिए मैंने सुबह तड़के ही निकलने की योजना बनायीं। अपना सामान पैक किया, और रात का खाना खा कर लेटा ही था, की मुझे फिर से हरिहर सिंह के नंबर से कॉल आया। मैंने तुरंत उठाया - दूसरी तरफ प्रिया थी।

"प्रिया जी, आप कैसी हैं?" मैंने कहा।

"जी..... मैं ठीक हूँ। .... आप कैसे हैं?"

"मैं बिलकुल ठीक हूँ ... आपको फिर से देखने के लिए बेकरार हूँ..."

उधर से कोई जवाब तो नहीं आया, लेकिन मुझे लगा की प्रिया शर्म के मारे लाल हो गयी होगी।

"प्रिया?" मैंने पुकारा।

"जी... मैं हूँ यहाँ।“

“तो आप कुछ बोलती क्यों नहीं?”

“..... आपको मालूम है की आपको पिताजी ने क्यों बुलाया है?"

"कुछ कुछ आईडिया तो है। लेकिन पूरा आप ही बता दीजिये।"

"जी... पिताजी आपसे हमारे बारे में बात करना चाहते हैं....." जब मैंने जवाब में कुछ नहीं कहा, तो प्रिया ने कहना जारी रखा, ".... आप सच में मुझसे शादी करेंगे?"

"आपको लगता है की मैंने मजाक कर रहा हूँ? आपसे मैं ऐसा मजाक क्यों करूंगा?"

"नहीं नहीं... मेरा वो मतलब नहीं था। हम लोग बहुत ही साधारण लोग हैं... आपके मुकाबले बहुत गरीब! और... मैं तो आपके लायक बिल्कुल भी नहीं हूँ... न आपके जितना पढ़ी लिखी, और न ही आपके तौर तरीके जानती हूँ.."

"प्रिया... शादी का मतलब अंत नहीं है ... यह तो हमारी शुरुआत है। मैं तो चाहता हूँ की आप अपनी पढाई जारी रखिये। खूब पढ़िए – मुझसे ज्यादा पढ़िए। भला मैं क्यों रोकूंगा आपको। रही बात मेरे तौर तरीके सीखने की, तो भई, मेरा तो कोई तरीका नहीं है... बस मस्त रहता हूँ! ठीक है?"

"जी..."

"तो फिर जल्दी ही मिलते हैं.. ओके?"

"ओ.. के.."

"और हाँ, एक बात... आई लव यू टू"

जवाब में उधर से खिलखिला कर हंसने की आवाज़ आई।

अगली सुबह सूर्य की पहली किरण के साथ ही मैं प्रिया से मिलने निकल पड़ा। मौसम अच्छा था - हलकी बारिश और मंद मंद बयार। ऐसे में तो पूरे चौबीस घंटे ड्राइव किया जा सकता है। लेकिन, पहाड़ों पर थोड़ी मुश्किल आती है। खैर, मन की उमंग पर नियंत्रण रखते हुए मैंने जैसे तैसे ड्राइव करना जारी रखा - बीच बीच में खाने पीने और शरीर की अन्य जरूरतों के लिए ही रुका। ऐसे करते हुए शाम ढल गयी, लेकिन फिर भी प्रिया का घर कम से कम पांच घंटे के रास्ते पर था। बारिश के मौसम में, और वह भी शाम को, पहाडो पर ड्राइव करने के लिए बहुत ही अधिक कौशल चाहिए। अतः मैंने वह रात एक छोटे से होटल में बिताई।

अगली सुबह नहा धोकर और नाश्ता कर मैंने फिर से ड्राइव करना शुरू किया और करीब छह घंटे बाद हरिहर सिंह के घर पहुँचा। सवेरे निकलने से पहले मैंने उनको फोन कर दिया था की आज ही आने वाला हूँ, इसलिए उनके घर पर सामान्य दिनों से अधिक चहल पहल देख कर मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ। दरवाज़े पर हरिहर सिंह और अश्विनी ने मेरा स्वागत किया और मुझे घर के अन्दर ससम्मान लाया गया। घर के अन्दर चार पांच बुजुर्ग पुरुष थे -

उनमे से एक तो निश्चित रूप से पण्डित लग रहा था। जान पहचान के समय यह बात भी साफ़ हो गयी। हरिहर सिंह वाकई आज मेरे प्रस्ताव को अगले स्तर पर ले जाना चाहते थे। उन बुजुर्गो में दो लोग हरिहर सिंह के बड़े भाई थे, और बाकी लोग उस समाज के मुखिया थे। भारतीय शादियाँ, विशेष तौर पर छोटी जगह पर होने वाली भारतीय शादियाँ काफी जटिल और पेचीदा हो सकती हैं - इसका ज्ञान मुझे अभी हो रहा था।

ऐसे ही हाल चाल लेते हुए दोपहर का खाना जमा दिया गया। बहुत ही रुचिकर गढ़वाली खाना परोसा गया था - पेट भर गया, लेकिन मन नहीं। नाश्ता सवेरे किया था, इसलिए भूख तो जम कर लगी थी - इसलिए मैंने तो डटकर खाया। खाना खाते हुए अन्य लोगो से मेरे उत्तराँचल आने, मेरे पढाई और काम के विषय में औपचारिक बाते हुईं। वैसे भी उन लोगो को अब मेरे बारे में काफी कुछ मालूम हो चुका था, बस वहां बात करने के लिए कुछ तो होना चाहिए - ऐसा सोच कर बस खाना पूरी चल रही थी।

खाने के बाद अब गंभीर विषय पर चर्चा होनी थी।

हरिहर सिंह : "अथर्व जी, मैं जानता हूँ की आप बहुत अच्छे आदमी हैं, और आपके जैसा वर ढूंढना मेरे अपने खुद के बस में संभव नहीं है... और मैं यह भी जानता हूँ की आप मेरी बेटी को बहुत जिम्मेदारी और प्यार से रखेंगे। लेकिन.. यह सब बातें आगे बढ़ें, इसके पहले मैं आपको बता दूं की हम लोग अपनी परम्पराओं में बहुत विश्वास रखते हैं।"

मैंने सिर्फ अपना सर सहमती में हिलाया... हरिहर सिंह ने बोलना जारी रखा, ".... वैसे तो हम लोग अपने समाज के बाहर अपने बच्चो को नहीं ब्याहते, लेकिन आपकी बात कुछ और ही है। फिर भी, जन्म-पत्री और कुंडली तो मिलानी ही पड़ती है न..."

"मुझे इस बात पर कोई ऐतराज़ नहीं... आप मिला लीजिये..." मैंने मन ही मन शक्ति को उनकी मूर्खता के लिए कोसा, 'कहीं ये बुड्ढा कचरा न कर दे'

"इसके लिए मैंने पंडित जी को बुलाया था... आप अपनी जन्मतिथि, समय और जन्म-स्थान बता दीजिये। पंडित जी इसका मिलान कर देंगे।"

"बिलकुल .." यह कह कर मैंने पंडित को अपने जन्म सम्बंधित सारे ब्योरे दे दिए। पंडित ने अपने मोटे-मोटे पोथे खोल कर न जाने कौन सी प्राचीन, लुप्तप्राय पद्धति लगा कर हमारे

भविष्य के लिए निर्णय लेने की क्रिया शुरू कर दी। यह सब करने में करीब करीब एक घंटा लगा होगा उस मूर्ख को। खैर, उसने अंततः घोषणा करी की लड़का और लड़की के बीच अष्टकूट मिलान छब्बीस हैं, और यह विवाह श्रेयष्कर है। यह सुनते ही वहां उपस्थित सभी लोगो में ख़ुशी की लहर दौड़ गयी - खासतौर पर मुझमें। चूंकि घर की सारी स्त्रियाँ और लड़कियां घर के अन्दर के कमरों में थीं, इसलिए मुझे उनके हाव-भाव का पता नहीं।

खैर, इस घोषणा के बाद हरिहर सिंह और उनकी पत्नी दोनों ने मुझे कुर्सी पर आदर से बिठा कर मेरे मस्तक पर तिलक लगाया और मिठाई खिलाई। मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रहा था की यह सब क्या हो रहा था - खैर, मैं भी बहती धारा के साथ बहता जा रहा था। ऐसे ही कुछ लोगो ने टीका इत्यादि किया - अभी यह क्रिया चल ही रही थी की बैठक में प्रिया आई। उसने लाल रंग की साड़ी पहनी हुई थी - शायद अपनी माँ की। हिन्दू रीतियों में लाल रंग संभवतः सबसे शुभ माना जाता है। इसलिए शादी ब्याह के मामलों में लाल रंग की ही बहुतायत है। साड़ी का पल्लू उसके सर से होकर चेहरे पर थोड़ा नीचे आया हुआ था - इतना की जिससे आँख ढँक जाए।

'क्या बकवास!' मैंने मन में सोचा, 'इतना दूर आया... और चेहरा भी नहीं देख सकता ..!'

प्रिया को मेरे बगल में एक कुर्सी पर बैठाया गया। वहां बैठे समस्त लोगो के सामने हम दोनों का विधिवत परिचय दिया गया। उसके बाद पंडित ने घोषणा करी की वर (यानि की मैं), वधु (यानि की प्रिया) से विवाह करने की इच्छा रखता हूँ और यह की दोनों परिवारों के और समाज के वरिष्ठ जनो ने इस विवाह के लिए सहमति दे दी है। उसके बाद सभी लोगो ने हम दोनों को अपनी हार्दिक बधाइयाँ और आशीर्वाद दिए। मैंने और प्रिया ने एक दूसरे को मिठाई खिलाई।

पंडित ने एक और दिल तोड़ने वाली बात की घोषणा की - यह की अभी चातुर्मास चल रहा है, इसलिए विवाह की तिथि नवम्बर में निश्चित है। मेरा मन हुआ की इस बुढऊ का सर तोड़ दिया जाए। खैर, कुछ किया नहीं जा सकता था। बस इन्तजार करना पड़ेगा। यह भी तय हुआ की शादी पारंपरिक रीति के साथ की जायेगी। यह सब होते होते शाम ढल गयी। उन लोगो ने रात में वहीँ रुकने का अनुरोध किया, लेकिन मैंने उनसे विदा ली, और अपने पहले वाले होटल में रात गुजारी। होटल के मालिक ने मुझे बधाई दी और मुझे मुफ्त में रात का खाना खिलाया।

सवेरे उठने के साथ मैंने सोचा की अब आगे क्या किया जाए! शादी के लिए छुट्टी तो लेनी ही पड़ेगी, तो क्यों न यह छुट्टियाँ बचा ली जाए, और वापस चला जाया जाए। इस समय का उपयोग घर इत्यादि जमाने में किया जा सकता था। अतः मैंने सवेरे ही हरिहर सिंह के घर जा कर अपनी यह मंशा उनको बतायी। उन्ही के यहाँ खाना इत्यादि खा कर मैंने वापसी का रुख लिया। दुःख की बात यह की जाते समय प्रिया से बात भी न हो सकी और न ही मुलाकात।

'दकियानूसी की हद!' खैर, क्या कर सकते हैं!

वापस कब घर आ गया, कुछ पता ही नहीं चला। समय कहाँ उड़ गया - बस खयालो की दुनिया में ही घूमता रहा। कुछ याद नहीं की कब ड्राइव करके वापस देहरादून पहुँचा और कब वापस घर!

प्रिया के लिए मेरे प्रेम ने मुझे पूरी तरह से बदल दिया था। सुना था, की लोग प्रेम के चक्कर में पड़ कर न जाने कैसे हो जाते हैं, लेकिन कभी यह नहीं सोचा था की मेरा भी यही हाल होगा। घर पहुँचने के बाद मैं जो भी कुछ कर रहा था, वह सब प्रिया को ही ध्यान में रख कर कर रहा था। बेडरूम की सजावट कैसी हो, उसी तर्ज पर नया बेड और नयी अलमारियां खरीदीं, खिडकियों के परदे और दीवारों की सजावट सब बदलवा दी। मुझे जानने वाले सभी लोग आश्चर्यचकित थे। इन कुछ महीनों में मैंने क्या क्या किया, उसका ब्यौरा तो नहीं दूंगा, लेकिन अगर कुछ ही शब्दों में बयान करना हो तो बस इतना कहना काफी होगा की 'प्यार में होने' का एहसास गज़ब का था। ऐसा नहीं था की मैं और प्रिया फोन पर दिन रात लगे रहते थे - वास्तविकता में इसका उल्टा ही था। विवाह के अंतराल तक हमारी मुश्किल से पांच-छः बार ही बात हुई थी, और वह भी निश्चित तौर पर उसके परिवार वालो के सामने। लिहाज़ा, मिला-जुला कर कोई पांच-छः मिनट! बस! लेकिन फिर भी, उसकी आवाज़ सुन कर दुनिया भर की एनर्जी भर जाती मुझमे, जो उसके अगले फोन तक मुझको जिला देती। मेरा सचमुच का कायाकल्प हो गया था।

अंततः वह दिन भी आया जब मुझे प्रिया को ब्याहने उसके घर जाना था। निकलने से पूर्व, एक इवेंट आर्गेनाइजर को बुला कर विवाहोपरांत रिसेप्शन भोज के निर्देश दिए और घर की चाबियाँ हाउसिंग सोसाइटी के सेक्रेटरी को सौंप कर वापस उत्तराँचल चल पड़ा।

बरात के नाम पर मेरे दो बहुत ही ख़ास दोस्त आ सके। खैर, मुझे बरात जैसे तमाशों की आवश्यकता भी नहीं थी। कोर्ट में ज़रूरी कागजात पर हस्ताक्षर करना मेरे लिए काफी था।

विवाह, दरअसल मन से होता है, नौटंकी से नहीं। मंत्र पढने, आग के सामने चक्कर लगाने से विवाह में प्रेम, आदर और सम्मान नहीं आते – वो सब प्रयास कर के लाने पड़ते हैं। लेकिन मैं यह सब उनके सामने नहीं बोल सकता था – उन सबके लिए अपनी बड़ी लड़की का विवाह करना बहुत ही बड़ी बात थी, और वो सभी इस अवसर को अधिक से अधिक पारंपरिक तौर-तरीके से मनाना चाहते थे। मेरे मित्रों ने देहरादून से स्वयं ही गाड़ी चलाई, और मुझे नहीं चलाने दी। उस कसबे में सबसे अच्छे होटल में हमने कमरे बुक कर लिए थे, जिससे कोई कठिनाई नहीं हुई।

विवाह सम्बन्धी क्रियाविधियां और संस्कार, शादी के दो दिन पहले से ही प्रारंभ हो गयी - ज्यादातर तो मुझे समझ ही नहीं आयीं, की क्यों की जा रही हैं। पारंपरिक बाजे गाजे, संगीत इत्यादि कभी मनोरम लगते तो कभी बेहद चिढ़ पैदा करने वाले! कम से कम एक दर्जन, लम्बी चौड़ी विवाह रीतियाँ (मुझे नही लगता की आपको वह सब विस्तार में जानने में कोई रूचि होगी) संपन्न हुईं, तब कहीं जाकर मुझे प्रिया को अपनी पत्नी कहने का अधिकार मिला। यह सब होते होते इतनी देर हो चली थी की मेरा मन हुआ की बस अब जाकर सो जाया जाए। ऐसी हालत में भला कौन आदमी सहवास अथवा सुहागरात के बारे में सोच सकता है! मैंने अपनी घड़ी पर नज़र डाली, देखा अभी तो मुश्किल से सिर्फ दस बज रहे थे - और मुझे लग रहा था की रात के कम से कम दो बज रहे होंगे। सर्दियों में शायद पहाड़ों पर रात जल्दी आ जाती है, जिसकी मुझे आदत नहीं थी। खैर, अगले आधे घंटे में हमने खाना खाया और शुभचिंतकों से बधाइयाँ स्वीकार कर, विदा ली।

खैर, तो मेरी सुहागरात का समय आ ही गया, और प्रिया जैसी परी अब पूरी तरह से मेरी है - यह सोच सोच कर मैं बहुत खुश हो रहा था। अब भई यहाँ मेरी कोई भाभी या बहन तो थी नहीं – अन्यथा सोने के कमरे में जाने से पहले चुंगी देनी पड़ती। मुझे अश्विनी ने सोने के कमरे का रास्ता दिखाया। मैंने उसको गुड नाईट और धन्यवाद कहा, और कमरे में प्रवेश किया। हमारे सोने का इन्तेजाम उसी घर में एक कमरे में कर दिया गया था। यह काफी व्यवस्थित कमरा था - उसमे दो दरवाज़े थे और एक बड़ी खिड़की थी। कमरे के बीच में एक पलंग था, जो बहुत चौड़ा नहीं था (मुश्किल से चार फीट चौड़ा रहा होगा), उस पर एक साफ़, नयी चद्दर, दो तकिये और कुछ फूल डाले गए थे। प्रिया उसी पलंग पर अपने में ही सिमट कर बैठी हुई थी। प्रिया ने लाल और सुनहरे रंग का शादी में दुल्हन द्वारा पहनने वाला जोड़ा पहना हुआ था। मैं कमरे के अन्दर आ गया और दरवाज़े को बंद करके पलंग पर बैठ गया। पलंग के बगल एक मेज रखी हुई थी, जिस पर मिठाइयाँ, पानी का जग, गिलास, और अगरबत्तियां लगी हुई थी। पूरे कमरे में एक मादक महक फैली हुई थी। बाहर हांलाकि ठंडक थी, लेकिन इस कमरे में ठंडक नहीं लग रही थी।

'क्या सोच रही होगी ये? क्या इसके भी मन में आज की रात को लेकर कामुक भावनाए जाग रही होंगी?'

मैं यही सब सोचते हुए बोला - "प्रिया ..?"

"जी"

"आई लव यू....."

जवाब में प्रिया सिर्फ मुस्कुरा दी।

"मैं आपका घूंघट हटा सकता हूँ?" प्रिया ने धीरे से हाँ में सर हिलाया।

मैंने धड़कते दिल से प्रिया का घूंघट उठा दिया - बेचारी शर्म से अपनी आँखें बंद किये बैठी रही। अपने साधारण मेकअप और गहनों (माथे के ऊपरी हिस्से से होती हुई बेंदी, मस्तक पर बिंदी, नाक में एक बड़ा सा नथ, कानो में झुमके) और केसरिया सिन्दूर लगाई हुई होने पर भी प्रिया बहुत सुन्दर लग रही थी - वस्तुतः वह आज पहले से अधिक सुन्दर लग रही थी। उसके दोनों हाथों में कोहनी तक मेहंदी की विभिन्न प्रकार की डिज़ाइन बनी हुई थी, और कलाई के बाद से लगभग आधा हाथ लाल और स्वर्ण रंग की चूड़ियों से सुशोभित था। उसके गले में तीन तरह के हार थे, जिनमे से एक मंगलसूत्र था।

"प्लीज अपनी आँखें खोलो..." मैंने कम से कम तीन-चार बार उससे बोला तब कहीं उसने अपनी आँखें खोली। आखें खुलते ही उसको मेरा चेहरा दिखाई दिया।

'क्या सोच रही होगी ये? और क्या सोचेगी? शायद यही की यह आदमी इसका कौमार्य भंग करने वाला है।'

यह सोचकर मेरे होंठों पर एक वक्र मुस्कान आ गयी। ऐसा नहीं है की प्रिया को पाकर मैं उसके साथ सिर्फ सहवास करना चाहता था – लेकिन सुहागरात के समय मन की दशा न जाने कैसी हो जाती है, की सिर्फ सहवास का ही ख़याल रहता है। प्रिया ने दो पल मेरी

आँखों में देखा – संभवतः उसको मेरे पौरुष, और मेरी आँखों में कामुक विश्वास और संकल्प का आभास हो गया होगा, इसीलिए उसकी आँखें तुरंत ही नीचे हो गयीं।

"मे आई किस यू?" मैंने पूछा।

उसने कुछ नहीं बोला।

"ओके। यू किस मी।" मैंने आदेश देने वाली आवाज़ में कहा।

प्रिया एक दो सेकंड के लिए हिचकिचाई, फिर आगे की तरफ थोडा झुक कर मेरे होंठो पर जल्दी से एक चुम्बन दिया, और उतनी ही जल्दी से पीछे हट गयी। उसका चेहरा अभी और भी नीचे हो गया।

'भला यह भी क्या किस हुआ' मैंने सोचा और उसके चेहरे को ठुड्डी से पकड़ कर ऊपर उठाया।

कुछ पल उसके भोले सौंदर्य को देखता रहा और फिर आगे की ओर झुक कर उसके होंठो को चूमना शुरू कर दिया। यह कोई गर्म या कामुक चुम्बन नहीं था - बल्कि यह एक स्नेहमय चुम्बन था - एक बहुत ही लम्बा, स्नेहमय चुम्बन। मुझे समय का कोई ध्यान नहीं की यह चुम्बन कब तक चला। लेकिन अंततः हमारा यह पहला चुम्बन टूटा।

लेकिन, बेचारी प्रिया का हाल इतने में ही बहुत बुरा हो चला था - वह बुरी तरह शर्मा कर कांप रही थी, उसके गाल इस समय सुर्ख लाल हो चले थे और साँसे भारी हो गयी थी। संभवतः यह उसके जीवन का पहला चुम्बन रहा होगा। उसकी नाक का नथ हमारे चुम्बन में परेशानी डाल रहा था, इसलिए मैंने आगे बढ़कर उसको उतार कर अलग कर दिया। ऐसा करने हुए मुझे सहसा यह एहसास हुआ की थोड़ी ही देर में इसी प्रकार प्रिया के शरीर से धीरे-धीरे करके सारे वस्त्र उतर जायेंगे। मेरे मन में कामुकता की एक लहर दौड़ गयी।

"प्रिया?"

"जी?"

"आपको इंग्लिश आती है?"

"थोड़ी-थोड़ी ... आपने क्यों पूछा?"

"बिकॉज़, आई वांट टू सी यू नेकेड" मैंने उसके कान के बहुत पास आकर फुसफुसाती आवाज़ में कहा।

"जी?" उसकी बहुत ही भयभीत आवाज़ आई।

"मैं आपको बिना कपड़ो के देखना चाहता हूँ" मैंने वही बात हिन्दी में दोहरा दी, और उसको आँखें गड़ा कर देखता रहा। वह बेचारी घबराहट और शर्म के मारे कुछ भी नहीं बोल पा रही थी। मैंने कहना जारी रखा, "मैं आपके सारे कपड़े उतार कर, आपके स्तनाग्र चूमूंगा, आपके बम और ब्रेस्ट्स को दबाऊँगा और फिर आपके साथ ज़ोरदार सहवास करूंगा..."

मेरी खुद की आवाज़ यह बोलते बोलते कर्कश हो गयी, और मेरे शिश्न में उत्थान आना शुरू हो गया।

"ज्ज्ज्जीईई .. म्म्म मुझे बहुत डर लग रहा है" बड़े जतन से वह सिर्फ इतना ही बोल पाई।

"आई कैन अंडरस्टैंड दैट डिअर। मैं आपको किसी भी ऐसी चीज़ को करने को नहीं कहूँगा, जिसके लिए आप रेडी नहीं हैं।"

प्रिया ने समझते हुए बहुत धीरे से सर हिलाया। कुछ कहा नहीं।

मैंने उसकी लाल गोटेदार साड़ी का पल्लू उसकी छाती से हटा दिया। लाल रंग के ही ब्लाउज में कैद उसके युवा स्तन, उसकी तेज़ी से चलती साँसों के साथ ही ऊपर नीचे हो रहे थे। मेरा बहुत मन हुआ की उसके कपड़े उसके शरीर से चीर कर अलग कर दूँ, लेकिन मेरे अन्दर उसके लिए प्यार और जिम्मेदारी के एहसास ने मुझे ऐसा करने से रोक लिया। लिहाज़ा, मेरी गति बहुत ही मंद थी। वैसे मेरे खुद के हाथ कांप रहे थे, लेकिन मैंने यह निश्चय किया था की इस परम सुंदरी परी को आज मैं प्यार कर के रहूँगा।

मैंने उसकी साड़ी को उसकी कमर में बंधे पेटीकोट से जैसे तैसे अलग कर दिया और उसके शरीर से उतार कर नीचे फेंक दिया। इस समय वह सिर्फ ब्लाउज और पेटीकोट में बैठी हुई थी। मेरी अगली स्वाभाविक पसंद (उतारने के लिए) उसका ब्लाउज थी। कितनी ही बार मैंने कल्पना कर कर के सोचा था की मेरी जान के स्तन कैसे होंगे, और इस समय मुझे बहुत मन हो रहा था की उसके स्तनों के दर्शन हो ही जाएँ। मैं कांपते हुए हाथ से उसके ब्लाउज के बटन धीरे-धीरे खोलने लगा। करीब तीन बटन खोलने के बाद मुझे अहसास हुआ की उसने अन्दर ब्रा नहीं पहनी है।

"आप ब्रा नहीं पहनती?" मैंने बेशर्मी से पूछ ही लिया।

प्रिया घबराहट और शर्म के मारे कुछ भी नहीं बोल पा रही थी। उसका चेहरा नीचे की तरफ झुका हुआ था, मानो वह उसके ब्लाउज के बटन खोलते मेरे हाथों को देख रही हो। उसकी तेज़ी से चलती साँसे और भी तेज़ होती जा रही थी। उसने उत्तर में सिर्फ न में सर हिलाया - और वह भी बहुत ही हलके से। खैर, यह तो मेरे लिए अच्छा था - मुझे एक कपड़ा कम उतारना पड़ता। मैंने उसकी ब्लाउज के बचे हुए दोनों बटन भी खोल दिए। उसकी त्वचा शर्म या उत्तेजना के कारण लाल होती जा रही थी। मैंने अंततः उसके ब्लाउज के दोनों पट अलग कर दिए, और मुझे उसके स्तनों के दर्शन हो गए।

प्रिया के स्तन अभी भी छोटे थे - मध्यम आकार के सेब जैसे, और ठोस। उसकी त्वचा एकदम दोषरहित थी। उन पर गहरे भूरे रंग के अत्यंत आकर्षक स्तनाग्र (स्तनाग्र) थे, जिनका आकार अभी छोटा लग रहा था। महिलाओं के स्तन बढती उम्र, मोटापे, अक्षमता और गुरुत्व के मिले जुले कारणों से बड़े हो जाते हैं, और कई बार दुर्भाग्यपूर्ण तरीक से नीचे लटक से जाते हैं। लेकिन प्रिया इन सब प्रभावों से दूर, अभी अभी यौवन की दहलीज़ पर आई थी। लिहाज़ा, उसके स्तनों पर गुरुत्व का कोई प्रभाव नहीं था, और उसके स्तनाग्र भूमि के सामानांतर ही सामने की ओर निकले हुए थे। प्रिया के स्तन उसकी तेज़ी से चलती साँसों के साथ ही ऊपर नीचे हो रहे थे। यह सारा नज़ारा देख कर मुझे नशा सा आ गया - वाकई इन स्तनों को किसी भी ब्रा की ज़रुरत नहीं थी।

"प्रिया ... यू आर सो प्रीटी! आप मेरे लिए दुनिया की सबसे सुन्दर लड़की हैं!" यह सब कहना स्वयं में ही कितना उत्तेजनापूर्ण था - खास तौर पर तब, जब यह सारी बातें सच थी।

मुझसे अब और रहा नहीं जा रहा था। उसके जवान, ठोस स्तनों पर मैंने अपने मुंह से हमला कर दिया। मेरा सबसे पहला एहसास उसके स्तनों की महक का था - आड़ू जैसी

महक! उसके चिकने स्तनाग्र पहले मुलायम थे, लेकिन मेरे चूसे और चुभलाए जाने से कड़े होते जा रहे थे। मेरे इस क्रिया कलाप का सकारात्मक असर प्रिया पर भी पड़ रहा था, क्योंकि उसके हाथों ने मेरे सर को उन्मादित होकर पकड़ लिया था। मैंने कुछ देर तक उसके स्तनों को ऐसे ही दुलार किया - लेकिन इतना होते होते प्रिया और मेरा, दोनों का ही, गला एकदम शुष्क हो गया। मैंने रुक कर पास ही रखे गिलास से पानी पिया और प्रिया को भी पिलाया। उसके बाद मैंने उसके ब्लाउज को उसके शरीर से अलग कर के ज़मीन पर फेंक दिया। ऐसा होते ही मेरी जान अपने में ही सिमट गयी और अपने हाथो से अपनी नग्नावस्था को छुपाने की कोशिश करने लगी। चूड़ियों और मेहंदी से भरे हाथो से ऐसा करते हुए वह और भी प्यारी लग रही थी। मैंने उसके हाथ हटाने की कोशिश नहीं की, लेकिन उसके चेहरे को अपने दोनों हाथों में लेकर उसके होंठों पर एक गहरा चुम्बन दिया, और फिर सिलसिलेवार तरीके से चुम्बनों की बौछार कर दी।

शुरू में उसका शरीर, होंठ, चेहरा - सब कुछ - एकदम से कड़ा हो गया, शायद नर्वस होने से ... लेकिन चुम्बनों की संख्या बढ़ते रहने से वह भी धीरे-धीरे शांत होने लगी। उसने मेरी आँखों में देखा, और फिर आँखें बंद कर के चुम्बन में यथासंभव सहयोग देने लगी। उसके होंठ गर्म और मुलायम थे - एकदम शानदार! चुम्बन करते हुए मैं अपनी जीभ को उसके मुंह में डालने का प्रयास करने लगा। संभवतः उसको यह बात समझ में आ गयी - उसने अपने होंठ ज़रा से खोल दिए। मैंने बहुत सावधानीपूर्वक अपनी जीभ उसके मुंह में प्रविष्ट कर दी। एक बात और हुई, उसने अपने हाथ अपने सीने से हटा कर, मुझे अपनी बाहों में भर लिया। प्रिया के मुंह का स्वाद बहुत अच्छा था - हलकी सी मिठास लिए हुए। मैं बयान नहीं कर सकता की यह अनुभव कितना बढ़िया था। यह एक कामुक चुम्बन था, जिसके उन्माद में अब हम दोनों ही बहे जा रहे थे। मेरे हाथ उसके चेहरे से हट कर उसकी कमर पर चले गए और वहां से धीरे धीरे उसके नितम्बों पर। मेरी उत्तेजना मुझे प्रिया को अपनी तरफ भींचने को मजबूर कर रही थी। मैंने उसको अपनी तरफ खीच लिया - मुझे अपने सीने पर प्रिया के स्तनों का एहसास होने लगा। इस तरह से प्रिया को चूमना और भी सुखद लग रहा था।

खैर, ऐसे ही कुछ देर चूमने के बाद हम दोनों के मुंह अलग हुए। मैंने प्रिया की कमर पर नज़र डाली - उसके पेटीकोट का नाड़ा ढूँढने के लिए। नाड़ा उसकी कमर से बाएं तरफ था, जिसको मैंने तुरंत ही खीच कर ढीला कर दिया। अब पेटीकोट उसके शरीर पर नाम-मात्र के लिए ही रह गया। इसलिए मैंने उसको उतारने में ज़रा भी देर नहीं की। लेकिन मेरी इस जल्दबाजी में प्रिया बिस्तर पर चित होकर गिर गयी। पेटीकोट के उतरते ही उसने अपना चेहरा अपने हाथों से ढक लिया - शायद अब उसको अपने स्तनों के प्रदर्शन पर उतना

ऐतराज़ नहीं था, लेकिन ऐसी नग्नावस्था में वह मुझे अपना चेहरा नहीं दिखाना चाहती थी। मेरी आशा के विपरीत, प्रिया ने चड्ढी पहनी हुई थी। उसका रंग काला था। उसमे कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था - बस रोज़मर्रा पहनी जाने वाली सामन्य सी चड्ढी थी - हाँ एक बात है - चड्ढी नयी थी। सामने से देखने पर उसकी चड्ढी अंग्रेजी के "वी" जैसी, कमर की तरफ फैलाव लिए और वहां, जहाँ पर उसकी योनि थी, एक सौम्य उभार लिए हुए थी। प्रिया के नितम्ब स्त्रियोचित फैलाव लिए हुए प्रतीत होते थे, लेकिन उसका कारण यह था की उसकी कमर पतली थी। उसके शरीर का आकर वस्तुतः एक कमसिन, छरहरी और तरुण लड़की जैसा था।

मैंने और नीचे नज़र डाली। प्रिया के दोनों पाँव भी मेहंदी से आलिंकृत थे। दोनों ही टखनों में चांदी की पायलें थीं। उसके पैरों में मैंने ही बिछिया पहनाई थी। उसके दोनों पाँव की निचली परिधि लाल रंग से रंगे हुए थे। मेरी दृष्टि वापस उसके योनि क्षेत्र पर चली गयी। मेरा मन हुआ की उसकी चड्ढी भी उतार दी जाए - मेरे लिंग का स्तम्भन और कसाव बढ़ता ही जा रहा था, और मैं अब प्रिया के अन्दर समाहित होने के लिए व्याकुल हुआ जा रहा था। लेकिन मुझे अभी कुछ और देर उसके साथ खेलने का मन हो रहा था। मैंने पलंग पर प्रिया के काफी पास अपने घुटने पर बैठ कर, अपना कुरता उतार दिया। अब मैंने सिर्फ चूड़ीदार पजामा और उसके अन्दर स्लिम फिट चड्ढी पहनी हुई थी।

"प्रिया ..?" मैंने उसको आवाज़ लगाई।

"जी?" बहुत देर बाद उसने अपना चेहरा ढके हुए ही बोला।

"आपको मेरा एक काम करना होगा ...." मेरे आगे कुछ न बोलने पर उसने अपने चेहरे से हाथ हटा कर मेरी तरफ देखा।

"जी ... बोलिए?" मेरे कसरती शरीर को देख कर उसको और भी लज्जा आ गयी, लेकिन इस बार उसने छुपने का प्रयास नहीं किया।

"अपने हाथ मुझे दीजिये" उसने थोडा सा हिचकते हुए अपने हाथ आगे बढ़ाए, जिनको मैंने अपने हाथों में थाम लिया, और फिर अपने पजामे के कमर के सामने वाले हिस्से पर रख दिया।

"यह पजामा आपको उतारना पड़ेगा। आपके कपडे उतार-उतार कर मैं थक गया।" मैंने मुस्कुराते हुए उससे कहा।

उसने पहले तो थोड़ा सा संकोच दिखाया, लेकिन फिर मेरी बात मान कर इस काम में लग गयी। उसने बहुत सकुचाते हुए मेरे पजामे का नाड़ा ढीला कर दिया और मेरे पजामे को धीरे से सरका दिया। मेरी चड्ढी के अन्दर मेरा लिंग बुरी तरह कस जा रहा था, और अब मेरा मन था की लिंग को मेरी चड्ढी के बंधन से अब मुक्त कर प्रिया के नरम, गरम और आरामदायक गहराई में समाहित कर दिया जाए। मेरी चड्ढी के वस्त्र को बुरी तरह से धकेलते मेरे लिंग को प्रिया भी बड़े कौतूहल से देख रही थी।

"इसे भी ..." मैंने उसको उकसाया।

प्रिया को फिर से घबराहट होने लग गयी.. उसने न में सर हिलाया। यह देख कर मैंने उसके हाथ पकड़ कर जबरदस्ती अपनी चड्ढी की इलास्टिक पर रख दिया और उसको नीचे की तरफ खीच दिया। और इसके साथ ही मेरा अति-उत्तेजित लिंग मुक्त हो गया।

"बाप रे!" प्रिया के मुंह से निकल ही गया, "इतना बड़ा!"

प्रिया की दृष्टि मेरे कस के तने हुए लिंग पर जमी हुई थी।

जैसा की मैंने पहले भी उल्लेख किया है, मेरा शरीर शरीर इकहरा और कसरती है। और उसमें से इतने गर्व से बाहर निकले हुए मेरा लिंग देखकर वह निश्चित रूप से घबरा गयी थी। चड्ढी नीचे सरकाने की क्रिया में मेरे लिंग का शिश्नग्रच्छद स्वयं ही थोड़ा पीछे सरक गया और लिंग के आगे का गुलाबी चमकदार हिस्सा कुछ-कुछ दिखाई देने लगा। प्रिया को मेरे लिंग को इस प्रकार देखते हुए देख कर मेरा शरीर कामाग्नि से तपने लग गया - संभवतः प्रिया भी इसी तरह की तपन खुद भी महसूस कर रही थी।

उसको अचानक ही अपनी कही हुई बात, अपनी स्थिति, और अपने साथ होने वाले क्रिया कलाप का ध्यान हो आया। उसने लज्जा से अपना मुंह तकिये में छुपा लिया। लेकिन उसका हाथ मुक्त था - मैंने उसको पकड़ कर अपने लिंग पर रख दिया। उसकी हथेली मेरे लिंग के गिर्द लिपट गई। घेरा पूरा बंद नहीं हुआ। मेरा संदेह सही था - प्रिया का हाथ तप

रहा था। उसके हाथ को पकडे-पकडे ही मैंने अपने लिंग को घेरे में ले लिया और ऐसे ही घेरे हुए अपने हाथ को तीन चार बार आगे पीछे किया, और अपना हाथ हटा लिया। प्रिया अभी भी मेरे लिंग को पकडे हुए थी, हाँलाकि वह आगे पीछे वाली क्रिया नहीं कर रही थी। मेरे लिंग की लम्बाई का कम से कम आधा हिस्सा उसके हाथ की पकड़ से बाहर निकला हुआ था। लेकिन इस तरह से सजे हुए कोमल हाथ से घिरा हुआ मेरा लिंग मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

"जी.... हमें शरम आती है" उसने अंततः तकिये से अपना चेहरा अलग करके कहा। उसकी आवाज़ पहले जैसी मीठी नहीं लगी - उसमे अब एक तरह की कर्कशता थी - मैंने सोचा की शायद वह खुद भी उत्तेजित हो रही है। लिहाजा मैंने इस तथ्य को नज़रंदाज़ कर दिया।

"अपने पति से शर्म? हम्म्म ... चलिए, आपकी शर्म दूर कर देते हैं।" कहते हुए मैंने उसकी चड्ढी को नीचे सरका दी। मेरी इस हरकत से प्रिया शरम से दोहरी होकर अपने में ही सिमट गयी। कहाँ मैंने उसकी शरम मिटानी चाही थी, और कहाँ यह तो और भी अधिक शरमा गयी। कोई दो पल बाद ही मुझे उसका शरीर थिरकता हुआ लगा - ठीक वैसे ही जैसे सुबकने या सिसकियाँ लेते समय होता है। मारे गए..... संभवतः मेरी हरकतों ने उसकी भावनाओ को किसी तरह से ठेस पंहुचा दी थी।

"प्रिया ..."

कोई उत्तर नहीं! मेरे मन में अब उधेड़बुन होने लगी - 'क्या यार! सब कचरा हो गया। एक तो यह एक छोटी सी लड़की है, और ऊपर से इतने धर्म-कर्म मानने वाले परिवार से। इसको आज तक शायद ही किसी लड़के ने छुआ हो। मेरी जल्दबाजी और जबरदस्ती ने सारा मज़ा खराब कर दिया।'

सारा मज़ा सचमुच ख़राब हो चला था - मेरा लिंगोत्थान तेज़ी से घटने लग गया। खैर अभी इस बात की चिंता नहीं थी। चिंता तो यह थी, की जिस लड़की को मैं प्रेम करता हूँ, वह मेरे ही कारण दुखी हो गयी थी। अब यह मेरा दायित्व था की मैं उसको मनाऊँ, और अगर किस्मत ने साथ दिया तो संभवतः सहवास भी किया जा सके। मैं प्रिया के बगल ही लेट गया, और प्यार से उसको अपनी बाहों में भर लिया। थोड़ी देर पहले उसका तपता शरीर अपेक्षाकृत ठंडा लग रहा था। अच्छा, एक बात बताना तो भूल ही गया - मैं पलंग पर अपने बाएं करवट पर लेटा हुआ था, और प्रिया मेरे ही तरफ मुंह छुपाए लेटी हुई थी।

"प्रिया ... मेरी बात सुनिए, प्लीज!"

उसने मेरी तरफ देखा - मेरा शक सही था, उसकी आँखों में आँसू उमड़ आये थे, और उसके काजल को अपने साथ ही बहाए ले जा रहे थे।

"श्ह्ह्ह्ह .... प्लीज मत रोइये। मेरा आपको ठेस पहुचाने का कोई इरादा नहीं था। आई ऍम सो सॉरी! ऑनेस्टली ! मैंने आपको प्रोमिस किया था की मैं आपको किसी भी ऐसी चीज़ को करने को नहीं कहूँगा, जिसके लिए आप रेडी नहीं हैं। शायद इसके लिए आप रेडी नहीं हैं। मैं आपको बहुत प्यार करता हूँ, और आपको कभी दुखी नहीं देख सकता।"

ऐसी बाते करते हुए मैं प्रिया को चूमते, सहलाते और दुलारते जा रहा था, जिससे उसका मन बहल जाए और वह अपने आपको सुरक्षित महसूस करे।

मेरा मनाना न जाने कितनी देर तक चला, खैर, उसका कुछ अनुकूल प्रभाव दिखने लगा, क्योंकि प्रिया ने अपने में सिमटना छोड़ कर अपने बाएँ हाथ को मेरे ऊपर से ले जाकर मुझे पकड़ लिया - अर्ध-आलिंगन जैसा। उसके ऐसा करने से उसका बायाँ स्तन मेरी ही तरफ उठ गया। मेरा मन तो बहुत हुआ की पुनः अपने कामदेव वाले बाण छोड़ना शुरू कर दूं, लेकिन कुछ सोच कर ठहर गया।

"अगर आप चाहें, तो हम लोग आज की रात ऐसे ही लेटे रह कर बात कर सकते हैं।"

उसने मुझे प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा।

"ऐसा नहीं है की मैं आपके साथ सहवास नहीं करना चाहता - अरे मैं तो बहुत चाहता हूँ। लेकिन आपको दुखाने के एवज़ में नहीं। जब तक आप खुद कम्फ़र्टेबल न हो जाएँ, तब तक मुझे नहीं करना है यह सब ..."

मेरी बातो में सच्चाई भी थी। शायद उसने उस सच्चाई को देख लिया और पढ़ भी लिया।

"नहीं ... आप मेरे पति हैं, और आपका अधिकार है मुझ पर। और हम भी आपको बहुत प्यार करते हैं और आपका दिल नहीं दुखाना चाहते। मैं डर गयी थी और बहुत नर्वस हो गयी थी।" उसकी आँखों से अब कोई आंसू नहीं आ रहे थे।

'सचमुच कितनी ज्यादा प्यारी है यह लड़की!' मैंने प्रेम के आवेश में आकर उसकी आँखें कई बार चूम ली।

"आई लव यू सो मच! और इसमें अधिकार वाली कोई बात नहीं है। हम दोनों अब लाइफ पार्टनर हैं – बराबर के। मैं आपके साथ कोई जबरदस्ती नहीं कर सकता हूँ।"

"नहीं.........” वह थोडा रुकते हुए बोली, “आपको मालूम है की मैंने कभी शादी के बारे में सोचा ही नहीं था। सोचती थी, की खूब पढ़ लिख कर माँ, पापा और अश्विनी को सहारा दूँगी। माँ और पापा बहुत मेहनत करते हैं, लेकिन यहाँ पहाड़ो में उस मेहनत का फल नहीं मिलता। ...... लेकिन, फिर आप आये - और मेरी तो सुध बुध ही खो गयी। सब कुछ इतना जल्दी हुआ है की मैं खुद को तैयार ही नहीं कर सकी ..."

मैंने समझते हुए कहा, "प्रिया, मैंने आपसे पहले भी कहा है की मैं आपको पढने लिखने से नहीं रोकूंगा। मैं तो चाहता हूँ की आप अपने सारे सपने पूरे कर सकें। बस, मैं उन सारे सपनो का हिस्सा बनना चाहता हूँ।"

प्रिया ने अपनी झील जैसी गहरी आँखों से मुझे देखा - बिना कुछ बोले। उसने अपनी उंगली से मेरे गाल को हलके से छुआ - जैसे छोटे बच्चे जब किसी नयी चीज़ को देखते हैं, तो उत्सुकतावश उसको छूते हैं। "आपसे एक बात पूछूँ?" आखिरकार उसने कहा।

"हाँ .. पूछिए न?"

"आपके जीवन में बहुत सी लड़कियां आई होंगी? ... देखिये सच बताइयेगा!"

"हाँ ... आई तो थीं। लेकिन मैंने उनके अन्दर जिस तरह की बेईमानी और अमानवता देखी है, उससे मेरा स्त्री जाति से मानो विश्वास ही उठ गया था। शुरू शुरू में मीठी मीठी बाते वाली लड़कियों की हकीकत पर से जब पर्दा हटता है, तो दिल टूट जाता है। फिर मैंने आपको देखा ... आपको देखते ही मेरे दिल को ठीक वैसे ही ठंडक पहुंची, जैसे धूप से बुरी तरह तपी हुई ज़मीन को बरसात की पहली बूंदो के छूने से पहुंचती होगी। आपको देख कर मुझे यकीन हो गया की आप ही मेरे लिए बनी हैं - और आपका साथ पाने के लिए मैं अपनी पूरी उम्र इंतज़ार कर सकता था।" मेरे बोलने का तरीका और आवाज़ बहुत ही भावनात्मक हो चले थे।

यह सब सुन कर प्रिया ने मेरे चेहरे को अपने हाथों में ले लिया और मेरे होंठो पर एक छोटा सा मीठा सा चुम्बन दे दिया।

"आई लव यू ...." उसने बहुत धीरे से कहा, ".... मैं आपसे एक और बात पूछूं? .... आपने ... आपने कभी.... पहले भी .... आपने कभी सहवास किया है?" प्रिया ने बहुत हिचकिचाते हुए पूछा।

"नहीं ... मैंने कभी किसी के साथ सहवास नहीं किया।"

यह बात आंशिक रूप से सच थी - ऐसा नहीं है की मैंने मेरी भूतपूर्व महिला मित्रों के साथ किसी भी तरह का कामुक सम्बन्ध नहीं बनाया था। मेरा यह मानना था की यदि किसी चीज़ में समय और धन का निवेश करो, तो कम से कम कुछ ब्याज़ तो मिलना ही चाहिए। इसलिए, मैंने कम से कम उन सभी के स्तनों का मर्दन और चूषण तो किया ही था। एक के साथ बात काफी आगे बढ़ गयी थी, तो उसके दोनों स्तनों के बीच में अपने लिंग को फंसा कर मैथुन का आनंद भी उठाया था, और एक अन्य ने मेरे लिंग को अपने मुंह में लेकर मुझे परम सुख दिया था। लेकिन कभी भी किसी भी लड़की के साथ योनि मैथुन नहीं किया।

मैंने कहना जारी रखा, "...... कुछ एक के साथ मैं क्लोज था, लेकिन उनके साथ भी ऐसा कुछ नहीं किया है। मेरा यह मानना है की फर्स्ट-टाइम सहवास को एक स्पेशल दिन और एक स्पेशल लड़की के लिए बचा कर रखना चाहिए।"

.... प्रिया चुप रही ... लेकिन उसके चेहरे पर एक गर्व का भाव मुझे दिखा।

"और मैं सोच रहा था की वह स्पेशल दिन आज है .... क्या मैं सही सोच रहा हूँ?" मैंने अपनी बात जारी रखी।

प्रिया ने कुछ देर सोचा और फिर धीरे से कहा, "जी .....? हाँ ... लेकिन .. लेकिन मुझे लगता नहीं की 'ये' मेरे अन्दर आ पायेगा।"

"वह मुझ पर छोड़ दो ... बस यह बताइए की क्या हम आगे शुरू करें ..?" मैंने पूछा, तो उसने सर हिला कर हामी भरी।

मेरा मन ख़ुशी के मारे नाच उठा। बीवी तो तैयार है, लेकिन मुझे सावधानी से आगे बढ़ना पड़ेगा। इसके लिए मुझे इसके सबसे संवेदनशील अंग को छेड़ना पड़ेगा, जिससे यह खुद भी उतनी कामुक हो जाए की मना न कर सके। इसके लिए मैंने प्रिया के स्तनों पर अपना दाँव फिर से लगाया। जैसा की मैंने पहले भी बताया है की प्रिया के स्तन अभी भी छोटे थे - मध्यम आकार के सेब जैसे और उन पर गहरे भूरे रंग के अत्यंत आकर्षक स्तनाग्र थे। वाकई उसके स्तन बहुत प्यारे थे .... खास तौर पर उसके स्तनाग्र। इतने प्यारे और स्वादिष्ट, जैसे कस्टर्ड भरी कटोरी पर चेरी सजा दी गयी हो। उसके स्तनों को अगर पूरी उम्र भर चूसा और चूमा जाए, तो भी कम है।

अतः मैंने यही कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया। मैंने पहले प्रिया के बाएं स्तनाग्र को अपनी जीभ से कुछ देर चाटा, और फिर उसको मुंह में भर लिया। प्रिया के मुह से हलकी सिसकारी निकल पड़ी। मैं बारी बारी से उसके दोनों स्तनों को चूसता जा रहा था। जब मैं एक स्तन को अपने होंठो और जीभ से दुलारता, तो दूसरे को अपनी उँगलियों से। साथ ही साथ मैंने अपने खाली हाथ को प्रिया की योनि को टटोलने भेज दिया। प्रिया के समतल पेट से होते ही मेरा हाथ उसकी योनि स्थल पर जा पहुंचा। उसकी योनि पर बाल तो थे, लेकिन वह अभी घने बिलकुल भी नहीं थे। योनि पर हाथ जाते ही कुछ गीलेपन का एहसास हुआ। कुछ देर तक मैंने उसकी योनि के दोनों होंठों, और उसके भगनासे को सहलाया, और फिर अपनी उंगली प्रिया की योनि में धीरे से डाल दी। मेरे ऐसा करते ही प्रिया हांफ गयी। उंगली मुश्किल से बस एक इंच जितनी ही अन्दर गयी होगी, लेकिन उसके यौवन का कसाव इतना अधिक था, की प्रिया को हल्का सा दर्द महसूस हुआ। उसके गले से आह निकल गयी।

मैंने अपनी उंगली रोक ली, लेकिन उसको योनि से बाहर नहीं निकलने दिया। साथ ही साथ उसके स्तनों का आनंद उठाता रहा। कोई एक दो मिनट में मैंने महसूस किया की प्रिया अब तनाव-मुक्त हो गयी है। मैंने धीरे धीरे अपनी उंगली को उसकी योनि के अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया। इन सभी क्रियाओं का सम्मिलित असर यह हुआ की प्रिया अब काफी निश्चिन्त हो गयी थी और उसकी योनि कामरस की बरसात करने लगी। मेरी उंगली पूरी तरह से भीग चुकी थी और आसानी से अन्दर बाहर हो पा रही थी।

उंगली अन्दर बाहर होते हुए मुश्किल से दो मिनट हुए होंगे की इतने में ही प्रिया ने पहली बार चरमसुख प्राप्त कर लिया। उसकी सांस एक पल को थम गयी, और जब आई तो उसके गले से एक भारी और प्रबल आह निकली। मुझे पक्का यकीन है की बाहर अगर कोई बैठा हो या जाग रहा हो, तो उसने यह आह ज़रूर सुनी होगी। फिर वह निढाल होकर

बिस्तर पर गिर गयी और गहरी गहरी साँसे भरने लगी। मैंने उंगली की गति धीमी कर दी, जिससे उसकी योनि का उत्तेजन ख़तम न हो।

"जस्ट रिलैक्स! अभी ख़तम नहीं हुआ है। असली काम तो बाकी है।" मैंने प्यार से बोला।

लगता है अभी अभी मिले आनंद से वह प्रोत्साहित हो गयी थी, लिहाजा उसने हाँ में सर हिलाया।

मैं उठ कर बैठ गया, और थोड़ा सुस्ताने लगा। थोड़ी देर के आराम के बाद मैंने उसकी दोनों जांघो को फैला दिया, जिससे उसकी योनि के होंठ खुल गए थे। उसकी योनि के बाहर का रंग उसके स्तनाग्र के जैसा ही था, लेकिन योनि के अन्दर का रंग 'सायमन' मछली के रंग के जैसा था। मेरा मन हुआ की कुछ देर यहीं पर मुख-मैथुन किया जाए, लेकिन मेरी खुद की दशा ऐसी नहीं थी की इतनी देर तक अपने आपको सम्हाल पाता। मुझे यह भी डर लग रहा था की कहीं शीघ्रपतन जैसी समस्या न आ खड़ी हो। मेरा लिंग अब वापस खड़ा हो चुका था, और अपने गंतव्य को जाने को व्याकुल हो रहा था। एक गड़बड़ थी - मेरा लिंग उसकी योनि के मुकाबले बहुत विशाल था, और अगर मैं जरा सी भी जबरदस्ती करता, या फिर अगर लिंग अन्दर डालने में कोई गड़बड़ हो जाती तो यह लड़की पूरी उम्र भर मुझसे डरती रहती।

मेरे पास अपने लिंग को चिकना करने के लिए कुछ भी नहीं था ..... 'एक सेकंड ... मैं अपने लिंग को ना सही, लेकिन उसकी योनि को तो अच्छे से चिकना कर सकता हूँ न!' मेरे दिमाग में अचानक ही यह विचार कौंध गया।

मैंने उसकी योनि पर हाथ फिराया - प्रिया की सिसकारी छूट पड़ी। उसके शरीर के सबसे गुप्त और महफ़ूज़ स्थान में आज सेंध लगने जा रही थी। यहाँ छूना कितना आनंददायक था - कितना कोमल .. कितना नरम! मैं वासना में अँधा हुआ जा रहा था .. मैंने उसके भगोष्ठ के होंठों को अपनी उँगलियों से पुनः जांचना आरम्भ कर दिया। मैंने उसकी योनि से रस निकलता हुआ देखा, और समझ गया की अब यह सही समय है।

मैंने बिस्तर पर लेटी प्रिया के नग्न रूप का पुनः अवलोकन किया। उसकी आँखें बंद थी, लेकिन लिंग प्रवेश की स्थिति में होने वाली पीड़ा की घबराहट में उसके शरीर की विभिन्न माँस-पेशियाँ कसी हुई थी। उसको पूरी तरह शांत और शिथिल करने के लिए मैंने उसके

कान को चूमना आरम्भ किया। ऐसे करते करते, धीरे धीरे उसकी ठोढ़ी की तरफ बढ़ते हुए मैं उसके होंठो को चूम रहा था, और गले से होते हुए शरीर के ऊपरी भाग को चूमना और हलके हलके चाटना जारी रखा। कुछ देर ऐसे ही करते हुए, इस समय मैं प्रिया के स्तनाग्र को चूम और चूस रहा था। प्रिया की आहें छूट पड़ीं और मेरे होंठो पर एक मुस्कान आ गई। चूसते चूसते मैंने उसके स्तन पर दांत से हल्का सा काट लिया और उसकी सिसकी निकल गयी। प्रिया अब मूड में आने लग गयी थी - उसकी साँसे भारी हो गयी थी, बढ़ते रक्त-संचालन के कारण उसके गोरे शरीर में लालिमा आ गयी थी। लेकिन अभी मैं उसको अभी छोड़ने के मूड में नहीं था, और लगातार उसके शरीर के साथ लगातार छेड़-छाड़ करता जा रहा था।

प्रिया को चूमते, चाटते और छेड़ते हुए जब मैं उसके योनि क्षेत्र पर पहुंचा तो उसने योनि द्वार को दो तीन बार चाटा और फिर उसकी जांघो के अंदरूनी हिस्से को चूमने और चाटने लगा। प्रिया वापस अपनी उत्तेजना के चरम बिंदु पर पहुच चुकी थी। मैं कभी उसकी जांघों, तो कभी उसकी योनि को चूमता-काटता जा रहा था। प्रिया का शरीर अब थर थर कांप रहा था और साँसे भारी हो गयी। लेकिन फिर भी मैं अगले दो तीन मिनट तक उसकी योनि के साथ खिलवाड़ करता रहा। उसकी आँखें अब बंद थी और शरीर बुरी तरह थरथरा रहा था।

यह मेरे लिए संकेत था की अब वाकई सही समय आ गया है। मैंने उसकी टांगो को फैला दिया। उसकी योनि का खुला हुआ मुख काम-रस से भीगने के कारण चमक रहा था।

"जस्ट ट्राई टू रिलैक्स! ओके?" कह कर मैंने एक हाथ से उसकी योनि को थोडा और फैलाया और अपने लिंग को उसकी योनि मुख से सटा कर धीरे-धीरे आगे की तरफ जोर लगाया, जिससे मेरा लिंग अपने गंतव्य की ओर चल पड़ा। मेरे लिंग का सुपाड़ा, लिंग के बाकी हिस्सों से बड़ा है, अतः प्रिया को सबसे अधिक पीड़ा शुरू के एक दो इंच से ही होनी चाहिए थी। लेकिन यह लड़की अभी भी छोटी थी, और उसके शरीर की बनावट परिपक्वता की तरफ भी अग्रसर थी। यह बात मुझसे छिपी हुई नहीं थी। इसलिए मैंने सुपाड़े का बस आधा हिस्सा ही अन्दर डाला और उसकी योनि से निकलते रस से उसको अच्छी तरह से भिगो लिया। सबसे खतरनाक बात यह थी की मुझमें अब इतना धैर्य नहीं बचा हुआ था। मुझे लग रहा था की अगर कुछ देर मैंने यह क्रिया जारी रखी तो इसी बिस्तर पर स्खलित हो जाऊँगा। न जाने क्यों, प्रिया के अन्दर अपना वीर्य डालना मुझे इस समय दुनिया का सबसे ज़रूरी कार्य लग रहा था।

मेरा लिंग तैयार था। मैंने एकदम से जोरदार धक्का लगाया और मेरा आधा लिंग प्रिया की योनि में समा गया।

"आआह्ह्ह ..." प्रिया की गहरी चीख निकल गयी। मुझे तो मानो काटो तो खून नहीं! मैं एकदम से सकपका गया, 'कहीं इसको चोट तो नहीं लग गयी?' मैंने एक दो पल ठहर कर प्रिया की प्रतिक्रिया भांपी - लेकिन भगवान् की दया से उसने आगे कुछ नहीं कहा। बाहर लोगों ने सुना तो ज़रूर होगा ...

'भाड़ में जाएँ सुनने वाले! लड़की के साथ यह तो होना ही है!आज तो...' मैंने रुकने का कोई उपक्रम नहीं किया। मैंने अपना लिंग प्रिया की योनि से बाहर निकालना शुरू किया, लेकिन पूरा नहीं निकाला ... इसके बाद पुनः थोडा सा और अन्दर डाला और पुनः निकाल लिया।

ऐसे ही मैंने कम से कम पांच छः बार किया। प्रिया चीख तो नहीं रही थी, लेकिन मेरी हर हरकत पर कराह ज़रूर रही थी। लेकिन इस समय मेरे पास इन सब के बारे में सोचने का धैर्य बिलकुल भी नहीं था। मैंने अपना लिंग प्रिया के अन्दर और भीतर तक घुसा दिया और सनातन काल से प्रतिष्ठित पद्धति से काम-क्रिया आरम्भ कर दी। प्रिया का चेहरा देखने लायक था - उसकी आँखें बंद थीं, लेकिन मुंह पूरा खुला हुआ था। इस समय उसके लिए साँसे लेने, हिचकियाँ लेने और सिसकियाँ निकालने का यही एकमात्र साधन और द्वार था। मेरे हर धक्के से उसके छोटे स्तन हिल जाते। और नीचे का हिस्सा, जहाँ पेट और योनि मिलते हैं, मेरे पुष्ट मांसल लिंग के कुटाई से लाल होता जा रहा था।

मैंने प्रिया को भोगने की गति तेज़ कर दी । प्रिया अपनी उत्तेजना के चरम पर थी, लेकिन अभी उसको इसकी अभिव्यक्ति करनी नहीं आती थी - बस उसने मेरे कन्धों को जोर से जकड रखा था। संभवतः उसको अपनी कामाभिव्यक्ति करने में लज्जा आ रही हो। मुझको भी महसूस हुआ की उसका खुद का चरम-आनंद भी पास में है। हमारे सहवास की गति और तेज़ हो गई - प्रिया की रस से भीगी योनि में मेरे लिंग के अन्दर बाहर जाने से 'पच-पच' की आवाज़ आने लग गई थी। पलंग के पाव ज़मीन पर थोड़ा थोड़ा घिसटने से किकियाने की लयबद्ध आवाज़ निकाल रहे थे, उसी के साथ हमारी कामुकता भरी आहें भी निकल रही थीं। कमरे में एक कामुक माहौल बन चला था।

इस पूरे काम में इतना समय लग चुका था की मेरा कुछ क्षणों से अधिक टिकना संभव नहीं था। और हुआ भी वही। मेरे लिंग से एक विस्फोटक स्खलन हुआ, और उसके बाद तीन

चार और बार वीर्य निकला। हर स्खलन में मैंने अपना लिंग प्रिया की योनि के और अन्दर ठेलने का प्रयत्न कर रहा था। मेरे चरमोत्कर्ष पाने के साथ ही प्रिया पुनः चरम आनंद प्राप्त कर चुकी थी। इस उन्माद में उसकी पीठ एक चाप में मुड़ गयी, जिससे उसके स्तन और ऊपर उठ गए। मैंने उसका एक स्तनाग्र सहर्ष अपने मुह में ले लिया और उसके ऊपर ही निढाल होकर गिर गया।

मेरा प्रिया की मखमली गहराई से निकलने का मन ही नहीं हो रहा था। इसलिए मैंने अपने लिंग को उसकी योनि के बाहर तब तक नहीं निकाला, जब तक मेरा पुरुषांग पूरी तरह से शिथिल नहीं पड़ गया। इस बीच मैंने प्रिया को चूमना, दुलारना जारी रखा। अंततः हम दोनों एक दुसरे से अलग हुए। मैंने प्रिया को मन भर के देखा; वह बेचारी शर्मा कर दोहरी हुई जा रही थी और मुझसे आँखे नहीं मिला पा रही थी। उसके चेहरे पर लज्जा की लालिमा फैली हुई थी।

मैंने पूछा, "प्रिया! आप ठीक हैं?" उसने आँखें बंद किये हुए ही हाँ में सर हिलाया।

"मज़ा आया?" मैंने थोड़ा और कुरेदा - ऐसे ही सस्ते में कैसे जाने देता? प्रिया का चेहरा मेरे इस प्रश्न पर और लाल पड़ गया - वह सिर्फ हलके से मुस्कुरा सकी। मैंने उसको अपनी बांहों में कस के भर कर उसके माथे को चूम लिया, और अपने से लिपटा कर बिस्तर पर लिटा लिया।

हम लोग कुछ समय तक बिस्तर पर ऐसे ही पड़े पड़े अपनी सांसे संयत करते रहे। लेकिन कुछ ही देर में वह बिस्तर पर उठ बैठी। वह इस समय आराम में बिलकुल भी नहीं लग रही थी। मुझे लगा की कहीं सहवास की ग्लानि के कारण तो वह ऐसे नहीं कर रही है? मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि उसकी ओर डाली।

"क्या हुआ आपको?"

"जी ... मुझे टॉयलेट जाना है ...." उसने कसमसाते हुए बोला।

दरअसल, प्रिया को सहवास करने के बाद मूत्र विसर्जन का अत्यधिक तीव्र एहसास होता है। निःसंदेह उसको और मुझको यह बात अभी तक नहीं मालूम थी। हम लोग अभी तो एक दूसरे को जानने की पहली दहलीज पर पाँव रख रहे थे। उसकी इस आदत का उपयोग

हम लोगों ने अपने बाद के सहवास जीवन में खूब किया है। खैर, उसको टॉयलेट जाना था और तो और, मुझे भी जाना था। मैंने देखा की कमरे से लगा हुआ कोई टॉयलेट नहीं था।

"इस कमरे से लगा हुआ कोई टॉयलेट नहीं है क्या?" प्रिया ने न में सर हिलाया ...

"तो फिर कहाँ जायेंगे ..?"

"घर में है ..."

"लेकिन ... मुझे तो अन्दर से लोगों के बात करने की आवाज़ सुनाई दे रही है। लगता है लोग अभी तक नहीं सोये।" मैंने कहा, "... और घर में ऐसे, नंगे तो नहीं घूम सकते न? सिर्फ टॉयलेट जाने के लिए पूरे कपडे पहनने का मन नहीं है मेरा।"

प्रिया कुछ बोल नहीं रही थी।

"वैसे भी सबने अन्दर से हमारी आवाजें सुनी होंगी ... मुझे नहीं जाना है सबके सामने ..." मैंने अपनी सारी बात कह दी।

"इस कमरे का यह दूसरा दरवाज़ा बाहर बगीचे में खुलता है ..."

"ओ के .. तो?"

".... हम लोग बगीचे में टॉयलेट कर सकते हैं ... वहां एकांत होगा .." एडवेंचर! लड़की तो साहसी है! इंटरेस्टिंग!

"ह्म्म्म .. ठीक है। चलिए फिर।" मैंने पलंग से उठते हुए बोला। प्रिया अभी भी बैठी हुई थी - शायद शरमा रही थी, क्योंकि उठते ही वह (मनोवैज्ञानिक तौर पर) पूरी तरह से नग्न हो जाती (बिस्तर पर चादर इत्यादि तो थे ही, जिनके कारण आच्छादित (कपड़े पहने रहने) होने का एहसास तो होता ही है)।

मैंने अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ाया, "चलो न .." प्रिया ने सकुचाते हुए मेरा हाथ थाम लिया और मैंने उसको सहारा देकर पलंग से उठा लिया।

अपनी परी को मैंने पहली बार पूर्णतया नग्न, खड़ा हुआ देखा। मैंने उसके नग्न शरीर की अपर्याप्त परिपूर्णता की मन ही मन प्रशंशा की। उसके शरीर पर वसा की अनावश्यक मात्रा बिलकुल भी नहीं थी। उसके जांघे और टाँगे दृढ़ मांस-पेशियों की बनी हुई थीं। एक बात तो तय थी की आने वाले समय में यह लड़की, अपनी सुन्दरता से कहर ढा देगी। मेरे लिंग में पुनः उत्थान आने लगा। प्रिया की दृष्टि पुनः लज्जा के कारण नीची हो गयी। लेकिन उसने दूसरे दरवाज़े का रुख कर लिया।

मैंने उसको दरवाज़ा खोलने से रोका और स्वयं उसको खोल कर बाहर निकल आया, सब तरफ देख कर सुनिश्चित किया की कोई वहां न हो और फिर उसको इशारा देकर बाहर आने को कहा। वह दबे पाँव बाहर निकल आई, किन्तु इतनी सावधानी रखने के बाद भी उसकी पायल और चूड़ियों की आवाजें आती रही। बगीचा कमरे से बाहर कोई आठ-दस कदम पर था। रात में यह तो नहीं समझ आ रहा था की वहां पर किस तरह के पेड़ पौधे थे, लेकिन यह अवश्य समझ आ रहा था की किस जगह पर मूत्र किया जा सकता है। प्रिया किसी झाड़ी से कोई दो फुट दूरी पर जा कर बैठ गयी। अँधेरे में कुछ दिखाई तो नहीं दिया, लेकिन मूत्र विसर्जन करने की सुसकारती हुई आवाज़ आने लगी। मेरा यह दृश्य देखने का मन हो रहा था, लेकिन कुछ दिख नहीं पाया।

मैंने प्रिया के उठने का कुछ देर इंतज़ार किया। उसने कम से कम एक मिनट तक मूत्र किया होगा, और फिर कुछ देर तक ऐसे ही बैठी रही। मैंने फिर उसको उठ कर मेरी तरफ आते देखा। यह सब होते होते मेरा लिंग कड़क स्तम्भन प्राप्त कर चुका था। इस दशा में मेरे लिए मूत्र करना संभव ही नहीं था।

"आप भी कर लीजिये .."

"चाहता तो मैं भी हूँ, लेकिन मुझसे हो नहीं पा रहा है ..."

"क्यों .. क्या हुआ?" प्रिया की आवाज़ में अचानक ही चिंता के सुर मिल गए। अब तक वह मेरे एकदम पास आ गयी थी।

"आप खुद ही देख लीजिये ..." कहते हुए मैंने उसका हाथ पकड़ कर अपने लिंग पर रख दिया। उसके हाथ ने मेरे लिंग के पूरे दंड का माप लिया - अँधेरे में लज्जा कम हो जाती है। उसको समझ आ रहा था की लिंगोत्थान के कारण ही मैं मूत्र नहीं कर पा रहा था।

"आप कोशिश कीजिये ... मैं इसको पकड़ लेती हूँ?" उसने एक मासूम सी पेशकश की।

"ठीक है ..." कह कर मैंने अपने जघन क्षेत्र की मांस-पेशियों को ढीला करने की कोशिश की। प्रिया के कोमल और गर्म स्पर्श से यह काम होने में समय लगा। खैर, बहुत कोशिश करने के बाद मैंने महसूस किया की मूत्र ने मेरे लिंग के गलियारे को भर दिया है ... तत्क्षण ही मैंने मूत्र को बाहर निकलता महसूस किया।

"इसकी स्किन को पीछे की तरफ सरका लो ..." मैंने प्रिया को निर्देश दिया।

प्रिया ने वैसे ही किया, लेकिन बहुत कोमलता से। मैंने भी लगभग एक मिनट तक मूत्र विसर्जन किया। मुझे लगता है की, संभवतः प्रिया ने छोटे लड़कों को मूत्र करवाया होगा, इसीलिए जब मैंने मूत्र कर लिया, तब उसने बहुत ही स्वाभाविक रूप से मेरे लिंग को तीन-चार बार झटका दिया, जिससे मूत्र की बची हुई बूँदें भी निकल जाएँ। मैंने उसकी इस हरकत पर बहुत मुश्किल से अपनी मुस्कराहट दबाई। इसके बाद हम दोनों वापस अपने कमरे में आ गए।

अच्छा, हमारी तरफ शादी की पहली रात को एक रस्म होती है, जिसको ‘मुँह-दिखाई’ कहा जाता है। इसमें दुल्हन का घूंघट उठाने पर उसको एक विशेष स्मरणार्थक वस्तु (निशानी) दी जाती है। मुझे इसके बारे में याद आया, तो मैंने अपने बैग में से प्रिया के लिए खास मेड-टू-आर्डर करधनी निकाली। यह एक १८ कैरट सोने की करधनी थी, जिसमें प्रिया के रंग को ध्यान में रखते हुए इसमें लाल-भूरे, नीले और हरे रंग के मध्यम मूल्यवान जड़ाऊ पत्थर लगे हुए थे। वह उत्सुकतावश मुझे देख रही थी की मैं क्या कर रहा हूँ, और यूँ ही नग्नावस्था में बिस्तर के बगल खड़ी हुई थी। मैं वापस आकर बिस्तर पर बैठ गया और प्रिया को अपने एकदम पास बुलाकर उसकी कमर में यह करधनी बाँध दी, और थोड़ा पीछे हटकर उसके सौंदर्य का अवलोकन करने लगा।

प्रिया के नग्न शरीर पर यह करधनी ही सबसे बड़ी वस्तु बची हुई थी – उसकी बेंदी और नथ तो कब की उतर चुकी थीं, और बिंदी हमारे सहवास क्रिया के समय न जाने कब खो गयी। उसका सिन्दूर और काजल अपने अपने स्थान पर फ़ैल गया, और लिपस्टिक का रंग मिट गया था। किन्तु न जाने कैसे यह होने के बावजूद, वह इस समय बिलकुल रति का अवतार लग रही थी। थोड़ी ऊर्जा होती तो एक बार पुनः सहवास करता। लेकिन अभी नहीं।

“आपको यह उपहार अच्छा लगा?”

प्रिया ने लज्जा भरी मुस्कान के साथ सर हिला कर मेरा उपहार स्वीकार किया। मैंने उसकी कमर को आलिंगन में लेकर उसकी नाभि, और फिर उसकी कमर को करधनी के ऊपर से चूमा।

"आई लव यू!" कह कर मैंने उसको अपने पास बिठा लिया और फिर हम दोनों बिस्तर पर लेट कर एक दूसरे की बाहों में समां कर गहरी नींद में सो गए।

४

मेरी नींद खिड़की से आती चिड़ियों की चहचहाने के आवाज़ से खुली। मैं बहुत गहरी नींद सोया हूँगा, क्योंकि मुझे नींद में किसी भी सपने की याद नहीं थी। मैंने एक आलस्य भरी अंगड़ाई ली, तो मेरा हाथ प्रिया के शरीर पर लगा, और उसके साथ साथ रात की सारी घटनाएं ही याद आ गयीं। मैंने अपनी अंगड़ाई बीच में ही रोक दी, जिससे प्रिया की नींद न टूटे। मैं वापस बिस्तर में प्रिया से सट कर लेट गया । प्रिया के शरीर की नर्मी और गर्माहट ने मेरे अन्दर की वासना पुनः जगा दी। कम्बल के अन्दर मेरा हाथ अपने आप ही प्रिया के एक स्तन पर आकर लिपट गया। अगले कुछ ही क्षणों में मैं उसके शरीर के विभिन्न हिस्सों का जायज़ा लेने लगा। साथ ही साथ यह भी सोचता रहा की क्या प्रिया को भी रात की बातें याद होंगी?

मुझे अपनी सुहागरात की एक एक बात याद आ रही थी, और उसी आवेश में मेरा हाथ प्रिया की आकर्षक योनि पर पर चला गया, और मेरी उंगलियाँ उसके स्पंजी होंठों को दबाने सहलाने लगी। प्रतिक्रिया स्वरुप प्रिया के कोमल और मांसल नितम्ब मेरे लिंग पर जोर लगाने लगे। सोचो! ऐसी सुन्दर लड़की को सहवास के बारे में सिखाना भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। कुछ ही देर की मालिश ने प्रिया के मुंह से कूजन की आवाज़ आने लग गयी - लड़की को नींद में भी मज़ा आ रहा था। मेरे लिंग में कड़ापन पैदा होने लगा। विरोधाभास यह की आज के दिन हमको कुछ पूजायें करनी थी - ये भारतीय शादियों में सबसे बड़ा जंजाल है - खैर, वह सब करने में अभी देर थी। फिलहाल मुझे इस सौंदर्य और प्रेम की देवी की पूजा करनी थी।

मैंने उसकी योनि से हाथ हटा कर उसके कोमल स्तन पर रख दिया और कुछ क्षण उसके स्तनाग्र से खेलता रहा। फिर, मैंने अधीर होकर प्रिया को अपनी तरफ भींच लिया। मेरे ऐसा करने से प्रिया के शरीर में हलचल हुई, लेकिन मैंने उसको छोड़ा नहीं। प्रिया अब तक जाग चुकी थी - लेकिन सूरज की रोशनी, जो कमरे के सामने के पेड़ की पत्तियों से छन छन कर अन्दर आ रही थी, उसकी आँखों को चुंधिया रही थीं, और उसकी आँखें बंद हो रही थीं। मैं उसके इस भोलेपन और प्रेम से अभिभूत हो गया था - मेरे लिए वह निश्छल लालित्य की प्रतिमूर्ति थी। एकदम परफेक्ट!

मैंने अपनी पकड़ ढीली कर दी और हाथ हटा लिया, जिससे वह अपने हाथ पाँव हिला सके और नींद से जाग सके। प्रिया ने सबसे पहले अपना सर मेरी तरफ घुमाया - मैंने देखा की

उसकी आँखों में पल भर में कई सारे भाव आते गए - आश्चर्य, भय, परिज्ञान, लज्जा और प्रेम! संभवतः उसको कल रात के कामोन्माद सम्बन्धी अनुभव याद आ गए होंगे। उसके होंठों पर एक मीठी मुस्कान आ गयी।

"गुड मोर्निंग, हनी!" मैंने दबी हुई आवाज़ में कहा, "सुबह हो गयी है ..."

प्रिया ने थोड़ा उठते हुए अंगडाई ली, इससे ओढ़ा हुआ कम्बल उसके ऊपर से सरक गया, और एक बार फिर से प्रिया के स्तन नग्न हो गए। मेरी दृष्टि तुरंत ही उन कोमल टीलों की तरफ चली गयी। उसने झटपट अपने शरीर को ढकना चाहा, लेकिन मैंने उसके हाथ को रोक दिया और अपने हाथ से उसके स्तन को ढक लिया और उसको धीरे धीरे दबाने लगा।

"हमारे पास कुछ समय है ..." मैंने कहा - मेरी आवाज़ और आँखों में कामुकता थी। मेरा लिंग उसके शरीर से अभी भी लगा हुआ था, लिहाज़ा वह उसके कड़ेपन को अवश्य ही महसूस कर पा रही थी।

प्रिया समझते हुए मुस्कुराई, "जी .... आपने कल मुझे थका दिया ... अभी .... थोड़ा नरमी से करियेगा? वहां पर थोड़ा दर्द है ..."

तब मुझे ध्यान आया ... थोड़ा नहीं, काफी दर्द होगा। कल उसने पहली बार सहवास किया है, और वह भी ऐसे लिंग से। निश्चित तौर पर उसकी हालत खराब होगी। ये बेचारी लड़की मुझे मना नहीं कर सकेगी, इसलिए ऐसे बोल रही है। ऐसे में मुझे हड़बड़ी नहीं करनी चाहिए। लेकिन, मेरा अभी सहवास करने का बहुत मन है ... और हर बार लिंग से ही सहवास किया जाए, यह कोई ज़रूरी नहीं। मैंने सोचा की मैं उसके साथ मुख-मैथुन करूंगा, और अगर लकी रहा, तो वह भी करेगी। देखते हैं।

"ओह गॉड! आई वांट यू सो मच!" कहते हुए मैं प्रिया के ऊपर झुक गया और अपने होंठो को उसकी गर्दन से लगा कर मैंने प्रिया को चूमना शुरू किया - एक पल को वह हलके से चौंक गयी, लेकिन फिर मेरे प्रत्येक चुम्बन के साथ उठने वाले कामुक आनंद का मज़ा लेने लगी। मैंने अपनी जीभ को प्रिया के मुख में डालने का प्रयास किया तो प्रिया ने भी अपना मुख खोल कर पूरा सहयोग दिया। हमारी जिह्वाओं ने एक अद्भुत प्रकार का नृत्य आरम्भ कर दिया, जिसका अंत (जैसी मेरी उम्मीद थी) हमारे शरीर करते। प्रिया ने अपनी बाहें मेरी गर्दन के इर्द-गिर्द डाल कर मुझे अपनी तरफ समेट लिया और मैंने उसको कमर से थाम

रखा था। भाव प्रवणता से चल रहे हमारे चुम्बन ने हम दोनों में ही यौनेच्छा की अग्नि पुनः जला दी।

उसकी गर्दन को चूमते हुए मैं नीचे की तरफ आने लगा और जल्दी ही उसके कोमल स्तनों को चूमने लगा। मुझे उनको देख कर ऐसा लगा की वो मेरे ही प्रेम और दुलार का इंतज़ार कर रहे थे। यहाँ पर मैंने काफी समय लगाया - उसके स्तनाग्रों को अपने मुंह में भर कर मैंने उनको अपनी जीभ से सावधानीपूर्वक खूब मन भर कर चाटा, और साथ ही साथ दोनों स्तनों के बीच के सीने को चूमा। मेरी आवभगत का प्रभाव उसके स्तनाग्रो ने तुरंत ही खड़े होकर प्रदर्शित करना शुरू कर दिया। कुछ और देर उसके स्तनों को दुलार करने के बाद, मैंने अनिच्छा से और नीचे बढ़ना आरम्भ कर दिया। उसके स्तनाग्र को चूमना और चूसना सबसे रोमांचक अनुभव था। मेरा अगला निशाना उसका पेट था, जिसको चूमते हुए मैं अपने चेहरे को उस पर रगड़ता भी रहा।

खैर, जैसा विधि का विधान है, मैं कुछ ही देर में उसके पैरों के बीच में पहुँच गया। मेरे चेहरे पर, मैं उसकी योनि की आंच साफ़ साफ़ महसूस कर रहा था। मैंने उसकी दोनों जांघो को फैला दिया, जिससे उसकी योनि के होंठ खुल गए। उसकी योनि के बाहर का रंग उसके स्तनाग्र के जैसा ही था, लेकिन योनि के अन्दर का रंग 'सामन' मछली के रंग के जैसा था। प्रिया की योनि के दोनों होंठ, उसके जीवन के पहले रति-सहवास के कारण सूजे हुए थे। मैंने उन्ही पर अपनी जीभ का स्नेह-लेप लगान शुरू कर दिया, और बहुत ही धीरे-धीरे अन्दर की तरफ आता गया। मुझे प्रिया के मन का प्रावरोध कम होता हुआ सा लगा - उसने मेरे चुम्बन पर अपने नितम्बों को हिलाना चालू कर दिया था - और मैं यह शर्तिया तौर पर कह सकता हूँ की उसको भी आनंद आ रहा था। कुछ देर ऐसे ही चूमते और चाटते रहने के बाद प्रिया के कोमल और कामुक कूजन का स्वर आने लग गया, और साथ ही साथ उसकी योनि से काम-रस भी रिसने लगा। इसको देख कर मुझे शक हुआ की संभवतः उसका रस मेरे वीर्य से मिला हुआ था। लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं थी - वस्तुतः, यह देख कर मेरा रोमांच और बढ़ गया। मैंने उसकी जांघें थोड़ी और खोल दी, जिससे मुझे वहां पर लपलपा कर चाटने में आसानी रहे।

मेरी जीभ ने जैसे ही उसकी योनि के अन्दर का जायजा लिया उसकी हलकी सी चीख निकल गयी, "ऊई माँ!"

प्रिया के मज़े को देख कर मैंने अपने काम की गति को और बढ़ा दिया - अब मैं उसकी पूरी योनि को अपने मुंह में भर कर चूसने लगा, और अपने खाली हाथों से उसके स्तनों और

स्तनाग्रों को दबाने कुचलने लगा। जब उसके स्तनाग्र दुबारा खड़े हो गए, तब मैंने अपने हाथो को वहां से हटा कर प्रिया के नितम्ब को थाम लिया। फिर धीरे धीरे, मैंने दोनों हाथों से उसके नितंबों की मालिश शुरू कर दी। मेरा मुंह और जीभ पहले से ही उसकी योनि पर हमला कर रहे थे। प्रिया की तेज़ होती हुई साँसे अब मुझे सुनाई भी देने लग गयी थी।

प्रिया धीरे से फुसफुसाई, "धीरे .. धीरे ..." लेकिन मेरी गति पर कोई अंकुश नहीं था … "आअह्ह्ह्ह! प्लीज! बस ... बस ... अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती ...."

प्रत्यक्ष ही है, की यह सब प्रिया के लिए काफी हो चुका था। वह कल रात की गतिविधियों के फलस्वरूप तकलीफ में थी। फिर भी मैंने अभी बंद करना ठीक नहीं समझा - लड़की अगर यहाँ तक पहुंची है, तो उसको अंत तक ले चलना मेरी जिम्मेदारी भी थी, और एक तरह से कर्त्तव्य भी। मेरे हाथ इस समय उसके नितम्बो के मध्य की दरार पर फिर रहे थे। मैंने कुछ देर तक अपनी उंगली उस दरार की पूरी लम्बाई तक चलाई - मन तो हुआ की अपनी उंगली उसकी गुदा में डाल दूँ - लेकिन कुछ सोच कर रुक गया, और उसकी योनि को चूसने - चाटने का कार्य करता रहा।

अब प्रिया के मुख से "आँह .. आँह .." वाली कामुक कराहें निकल रही थी। मानो वह दीन-दुनिया से पूरी तरह से बेखबर हो। अच्छे संस्कारों वाली यह सीधी-सादी लड़की अगर ऐसी निर्लज्जता से कामुक आवाजें निकाले तो इसका बस एक ही मतलब है - और वह यह की लोहा बुरी तरह से गरम है - चोट मार कर चाहे कैसा भी रूप दे दो। पहले तो मेरा ध्यान बस मुख-मैथुन तक ही सीमित था, लेकिन अब मेरा लक्ष्य था की प्रिया को इतना उत्तेजित कर दूं, की सहवास के लिए मुझसे खुद कहे।

- आपको मालूम है "स्पून पोजीशन"? बस ठीक वैसे ही

यह सोच कर मैंने अपना मुँह उसकी योनि से फिर से सटाया, और अपनी जीभ को उसके जितना अन्दर पहुंचा सकता था, उतना डाल दिया। मेरे इस नए हमले से वह बुरी तरह तड़प गयी - उसने अपनी टाँगे पूरी तरह से खोल दी, लेकिन योनि की मांस-पेशियों को सिकोड़ ली। ऐसा नहीं है मेरे मन पर मेरा पूरा नियंत्रण था - मेरा लिंग खुद भी पूरी तरह फूल कर झटके खा रहा था।

आप सभी ने तो देखा ही होगा - 'ब्लू फिल्मों' में हीरो कुछ इस तरह दिखाए जाते हैं की मानो वो चार-चार घंटे लम्बे यौन मैराथन को भी मजे में कर सकते हैं। और इतनी देर तक

उनका लिंग भी खड़ा रहता है और उनकी टांगो और जांघों में ताकत शेष रहती है। संभव है की कुछ लोग शायद ऐसा करते भी होंगे, और उनकी स्त्रियों से मुझे पूरी सहानुभूति भी है। मुझे अपने बारे में मालूम था की मैं ऐसे मैराथन नहीं खेल सकता हूँ। वैसे भी मैं आज तक किसी भी ऐसे व्यक्ति से नहीं मिला हूँ जिसने ऐसा दावा किया हो। खैर, यह सब कहने का मतलब यह है की मेरे लिए यह सब जल्दी ही ख़तम होने वाला था ....

मैंने ऊपर जा कर प्रिया के होंठ चूमने शुरू कर दिए - हम दोनों ही कामुकता के उन्माद के चरम पर थे और एक दूसरे से उलझे जा रहे थे। प्रिया की टाँगे मेरे कंधो पर कुछ इस तरह लिपटी हुई थी की मुझे कुछ भी करने से पहले उसकी टांगो को खोलना पड़ता। मैंने वही किया और उसके सामानांतर आकर उसको पकड़ लिया। ऐसा करने से मेरा उन्नत शिश्न अपने तय निशाने से जा चिपका।

मुझे लगता है की यौन क्रिया हम सभी को नैसर्गिक रूप में मिलती है - चाहे किसी व्यक्ति को वात्स्यायन की विभिन्न मुद्राओं का ज्ञान न भी हो, फिर भी स्त्री-पुरुष दोनों ही सहवास की आधारभूत क्रिया से भली भाँति परिचित होते ही हैं। कुछ ऐसा ही ज्ञान इस समय प्रिया भी दिखा रही थी। वह अभी भी कामुकता के सागर में गोते लगा रही थी और पूरी तरह से अन्यमनस्क थी। लेकिन उसका जघन क्षेत्र धीरे-धीरे झूल रहा था - कुछ इस तरह जिससे उसकी योनि मेरे लिंग के ऊपर चल फिर रही थी और उसके अनजाने में ही, मेरे लिंग को अपने रस से भिगो रही थी।

प्रिया अचानक से रुक गयी - उसने अपनी पलकें खोल कर, अपनी नशीली आँखों से मुझे देखा। और फिर बिस्तर पर लेट गयी।

'कहीं यह आ तो नहीं गयी!' मेरे दिमाग में ख़याल आया। 'ये तो सारा खेल चौपट हो गया।'

मैं एक पल अनिश्चय की हालत में रुक गया और अगले ही पल प्रिया ने लेटे-लेटे ही अपना हाथ बढ़ा कर मेरे लिंग को पकड़ लिया और उसको अपनी योनि की दिशा में खीचने लगी। मैं भी उसकी ही गति के साथ साथ चलता रहा। अंततः, वह मेरे लिंग को पकड़े हुए अपनी योनि द्वार पर सटा कर सहलाने लगी।

यह पूरी तरह से अविश्वसनीय था।

प्रिया मुझे सहवास करने के लिए खुद ही आमंत्रित कर रही थी!!

कामोन्माद का ऐसा प्रदर्शन!

वाह!

अब आगे जो मुझे करना था, वह पूरी तरह साफ़ था। मैंने बिलकुल भी देर नहीं की। प्रिया को मन ही मन इस निमंत्रण के लिए धन्यवाद करते हुए मैंने उसको हौले से अपनी बाँहों में पकड़ लिया। ऐसा करने से उसके दोनों स्तनाग्र (जो अब पूरी तरह से कड़क हो चले थे) मेरे सीने पर चुभने लगे। मैंने प्रिया को फिर से कई बार चूमा - और हर बार और गहरा चुम्बन। चूमने के बाद, मैंने उसके नितम्बों को पकड़ कर हौले हौले दबा दिया; साथ ही साथ मैंने अपने पैरों को कुछ इस तरह व्यवस्थित किया जिससे मेरा लिंग, प्रिया की योनि को छूने लगे।

मैंने लिंग को हाथ से पकड़ कर, पहले प्रिया के भगनासे पर फिराया, और फिर वहां से होते हुए उसके भगोष्ठ के बीच में लगा कर अन्दर की यात्रा प्रारंभ की। मेरे लिंग की इस यात्रा में उसका साथ प्रिया ने भी दिया। जैसे ही मैंने आगे की तरफ जोर लगाया, नीचे से प्रिया ने भी जोर लगाया। इन दोनों प्रयासों के फलस्वरूप, मेरा लिंग, प्रिया की योनि में कम से कम तीन चौथाई समां गया। प्रिया की उत्तेजना इसी बात से प्रमाणित हो जाती है। मैंने प्रिया की गर्मागरम, कसी हुई, गीली, रसीली योनि में और अन्दर सरकना चालू कर दिया। प्रिया की आँखें बंद थी, और हम दोनों में से कोई भी कुछ भी नहीं बोल रहा था। लेकिन फिर भी, ऐसा लगता था मानो हम दोनों इस नए 'केबल-कनेक्शन' के द्वारा बतला रहे हों। इस समय शब्दों की कोई आवश्यकता नहीं थी। मैंने महसूस किया की मैं अपनी डार्लिंग के अन्दर पूरी तरह से समां गया हूँ।

इस छण में हम दोनों कुछ देर के लिए रुक गए - अपनी साँसे संयत करने के लिए। साथ ही साथ एक दूसरे के शरीर के स्पर्श का आनंद भी लेने के लिए। करीब बीस तीस सेकंड के आराम के बाद मैंने लिंग को थोडा बाहर निकाल कर वापस उसकी योनि की आरामदायक गहराई में ठेल दिया। प्रिया की योनि के अन्दर की दीवारों ने मेरे लिंग को कुछ इस तरह कस कर पकड़ लिया जैसे की ये दोनों ही एक दूसरे के लिए ही बने हुए हों। अब मैंने अपने लिंग को उसकी योनि में चिर-परिचित अन्दर बाहर वाली गति दे दी। साथ ही साथ, हम दोनों एक दूसरे को चूमते भी जा रहे थे।

मेरी कामना थी की यह कार्य कम से कम दस मिनट तक किया जा सके, लेकिन मैं सिर्फ पच्चीस से तीस धक्कों तक ही टिक सका। अपने आखिरी धक्के में मैं जितना भी अन्दर जा सकता था, चला गया। शायद मेरे इशारे को समझते हुए प्रिया ने भी अपने नितम्ब को ऊपर धकेल दिया। मेरा पूरा शरीर स्खलन के आनंद में सख्त हो गया - मेरे लिंग का गर्म लावा पूरी तीव्रता से प्रिया की कोख में खाली होता चला गया। पूरी तरह से खाली होने के बाद मैंने प्रिया को बिस्तर से उठा कर अपने से कस कर लिपटा लिया, और उसके कोमल मुख को बहुत देर तक चूमता रहा। यह आभार प्रकट करने का मेरा अपना ही तरीका था।

हम लोग कुछ समय तक ऐसे ही एक दूसरे के आलिंगन में बंधे हुए यौन क्रिया के आनंद रस पीते रहे, की अचानक प्रिया कसमसाने लगी। मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि उसकी ओर डाली।

"क्या हुआ?"

"जी ... टॉयलेट जाना है ...." उसने कसमसाते हुए बोला।

जैसा की मैंने पहले ही बताया है, प्रिया को सहवास करने के बाद मूत्र विसर्जन का अत्यधिक तीव्र एहसास होता है। वैसे भी सुबह उठने के बाद सभी को यह एहसास तो होता ही है ... लिहाज़ा प्रिया को और भी तीव्र अनुभूति हो रही थी। उसके याद दिलाने से मुझे भी टॉयलेट जाने का एहसास होने लगा। और इस कमरे से लगा हुआ कोई टॉयलेट नहीं था - मतलब अब तो कमरे से बाहर घर के अन्दर वाले बाथरूम में जाना पड़ेगा। इतनी सुबह तो बाहर बगीचे में तो जाया नहीं जा सकता न। वैसे भी अब उठने का समय तो हो ही गया था। आज के दिन कुछ पूजायें करनी थी, और उसके लिए नहाना धोना इत्यादि तो करना ही था।

हम दोनों ही उठ गए। मूर्खता की बात यह की हम दोनों के सारे सामान इस कमरे में नहीं थे। प्रिया ने न जाने कैसे कैसे अपने आप को सम्हाल कर साड़ी, पेटीकोट और ब्लाउज पहना। स्पष्ट ही था की वो साड़ी नियमित रूप से नहीं पहनती थी – संभवतः हमारा विवाह पहला अवसर था जब उसने साड़ी पहनी हो। और इस कारण से वो ठीक से पहनी नहीं गयी, और चीख चीख कर हमारी कल रात की हरकतों की सबसे चुगली रही थी। यह सब करते करते हम दोनों को कम से कम दस मिनट लग गए। इस बीच मैंने भी अपना कुरता और पजामा पहन लिया। उस बेचारी का इस समय बुरा हाल हो रहा होगा - एक तो सहवास का दर्द और ऊपर से मूत्र का तीव्र एहसास! प्रिया धीरे-धीरे चलते हुए दरवाज़े तक

पहुंची। दरवाज़ा खोलने से पहले उसको कुछ याद आया, और उसने अपने सर को पल्लू से ढक लिया।

'हह! भारतीय बहुओं के तौर तरीके! ये लड़की तो अपने मायके से ही शुरू हो गयी!' मैंने मज़े लेते हुए सोचा।

"जाग गयी बेटा!" ये हरिहर सिंह थे ... अब उनको क्या बताया जाए की जाग तो बहुत देर पहले ही गए हैं। और ऐसा तो हो नहीं सकता की अपनी बेटी की कामुक कराहें उन्होंने न सुनी हो। प्रिया प्रत्युत्तर में सिर्फ मुस्कुरा कर रह गयी। उसने जल्दी से बाथरूम की तरफ का रुख किया। प्रिया के पीछे ही मैं कमरे से बाहर निकला। मैंने यह ध्यान दिया की वहाँ उपस्थित सभी लोग प्रिया के अस्त-व्यस्त कपड़े और चेहरे को देख कर मंद मंद मुस्कुरा रहे थे।

"... आइये आइये .." हरिहर सिंह जी ने मुझे देख कर कहना जारी रखा, "बैठिये .. अश्विनी बेटा, जीजाजी के लिए चाय लाओ ..... आप जल्दी से फ्रेश हो जाइये ... आज भी काफी सारे काम हैं।"

कम जान पहचान होने के कारण मैं मना नहीं कर सका। वैसे भी, गरम चाय इस ठण्डक में आराम तो देगी ही। अब मैंने अपने चारों तरफ नज़र दौड़ाई - घर में सामान्य से अधिक लोग थे।

'शादी-ब्याह का घर है', मैंने सोचा, '... सारे रिश्तेदार आये होंगे ..'

सभी लोग मेरी तरफ उत्सुकतापूर्वक देख रहे थे... लेकिन अगर मेरी नज़र किसी की नज़र से मिलती तो वो तुरंत अपनी नज़र नीची कर लेते - मानो को कोई चोरी पकड़ी गयी हो। एक-दो औरतें लेकिन बड़ी ढिठाई से मुझे घूरे जा रही थी। मैंने उनको नज़रंदाज़ करना ही उचित समझा। हरिहर सिंह से आगे कोई बात नहीं हो पायी ... वो आगे के इंतजाम के लिए कमरे से बाहर चले गए थे। लिहाज़ा, अब मेरे पास चाय आने के इंतज़ार के अतिरिक्त और कोई काम नहीं बचा था।

मुझे अब ठण्ड लगने लग गयी थी... मेरे पास इस समय कोई गरम कपड़ा नहीं था। मेरा सामान कहीं नहीं दिख रहा था। 'इतनी ठण्ड में तो जान निकल जायेगी' मैंने सोचा।

"जीजू, आपकी चाय...." यह सुन कर मेरी जान में जान आई।

"थैंक यू!" मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

".. और ये है आपके लिए शाल!" अश्विनी ने बाल-सुलभ चंचलता के साथ कहा।

"अश्विनी! यू आर अन एंजेल! .... फ़रिश्ता हो तुम!" मैंने मुस्कुराते हुए मन से आभार प्रकट किया।

अश्विनी के चेहरे पर प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी।

"जीजू ... आपकी स्माइल मुझे बहुत पसंद है ..." अश्विनी ने चंचलता से कहना जारी रखा, "... और आपसे मैं एक बात कहूँ?"

"हाँ .. बोलो न" मैंने चाय की पहली चुस्की लेते हुए कहा।

"मैं आपको जीजू न बोलूँ तो चलेगा?"

"बिलकुल!"

"मैं आपको दाजू कहूँ?"

"कह सकती हो .. लेकिन इसका मतलब क्या होता है?"

"दाजू होता है बड़ा भाई ... आप मेरे बड़े भैया ही तो हैं न..." अश्विनी की इस स्नेह भरी बात ने मेरे ह्रदय के न जाने कैसे अनजान तार छेड़ दिए। मेरा मन हुआ की इस बच्ची को जोर से गले लगा लूँ! एक रोड-ट्रिप पर निकला था, और आज एक पूरा परिवार है मेरे पास!

मेरे चाय पीने, नहा-धो कर नाश्ता करने तक के अंतराल तक प्रिया मेरे सामने नहीं आई। वह अन्दर ही थी ... अपने परिजनों के साथ बात-चीत कर रही होगी। खैर, जब वह बाहर निकली, तो उसने नीले रंग की साड़ी पहनी हुई थी। बाकी का पहनावा कल के जैसा ही था। नई-नवेली दुल्हन को वैसे भी सोलह श्रृंगार करना शोभा भी देता है। बस एक अंतर था

– आज उसने मेरी दी हुई करधनी भी पहनी हुई थी। कोई आश्चर्य नहीं की वहां उपस्थित कई लोगों की नज़र उसी करधन पर थी। मैंने कुर्ता और चूड़ीदार पजामा पहना हुआ था। हम दोनों ने ही शाल ओढ़ा हुआ था। दिन में भी ठंडक काफी थी। आज की व्यवस्था यह थी की इस कसबे की मानी हुई संरक्षक देवी के दर्शन और पूजा-पाठ करनी थी। उनका मंदिर घर से कोई एक किलोमीटर दूर पहाड़ के ऊपर बना था। लिहाज़ा वहां पर जाने के लिए पैदल ही रास्ता था। अगर मुझे मालूम होता, तो प्रिया को इतना परेशान न करता। खैर, अब किया भी क्या जा सकता था।

पहाड़ी रास्ते पर चलते हुए मैंने प्रिया से पूछा की क्या वह ठीक से चल पा रही है .... जिसका उत्तर उसने हाँ में दिया। रास्ते में मेरे ससुर जी, सासु माँ और अश्विनी मुझसे कुछ न कुछ बातें करते जा रहे थे – मुझे या तो उस जगह के बारे में बताते, या फिर अपनी पहचान के लोगो से मेरा परिचय भी करते। कुछ देर चलते रहने के बाद मंदिर आया। वहां पंडित जी पहले से ही तैयार थे, और हमारे आते ही उनके मंत्रोच्चारण शुरू हो गए। कुछ देर में पूजा सम्पन्न हुई और हम लोग मंदिर के बाहर एक चौरस मैदान में आकर रुके। पंडित जी यहाँ भी आकर मंत्र पढने लगे और कुछ ही देर में उन्होंने मुझे एक पौधा दिया, और मुझे उसको रोपने को बोला। मुझे उस समय याद आया की उत्तराँचल में कुछ वर्षो से एक आन्दोलन जैसा चला हुआ है, जिसको "मैती" कहा जाता है।

आज के दौर में "ग्लोबल वार्मिंग" मानवता और धरती दोनों के लिए एक बड़ी समस्या बनकर उभरा, ऐसे में मैती आंदोलन अपने आप में एक बड़ी मिसाल है। कुछ लोगों के लिए यह सिर्फ रस्म भर हो सकता हैं, लेकिन वास्तविकता में यह एक ऐसा भावनात्मक पर्यावरणीय आंदोलन है जिसे अगर व्यापक प्रचार मिले तो पर्यावरण प्रदूषित ही ना हो। इस रीति में शादी के समय वैदिक मंत्रेच्चार के बीच दूल्हा-दुल्हन द्वारा फलदार पौधों का रोपण किया जाता है। जब भी उत्तराँचल के किसी गांव में किसी लड़की की शादी होती है, तो विदाई के समय दूल्हा-दुल्हन को गांव के एक निश्चित स्थान पर ले जाकर फलदार पौधा लगवाया जाता है। दूल्हा पौधो को रोपित करता है और दुल्हन इसे पानी से सींचती है, फिर गाँव के बड़े बूढ़े लोग नव-दम्पत्ति को आशीर्वाद देते हैं।

मुझे पता चला की दूल्हा अपनी इच्छा अनुसार मैती संरक्षकों (जिनको मैती बहन कहा जाता है) को पैसे भी देता है, जो की रस्म के बाद रोपे गए पौधों की रक्षा करती हैं, खाद, पानी देती हैं, जानवरों से बचाती हैं। मैती बहनों को जो पैसा दूल्हों के द्वारा इच्छानुसार मिलता है, उसे रखने के लिए मैती बहनों द्वारा संयुक्त रूप से खाता खुलवाया जाता है। उसमें यह राशि जमा होती है। खाते में अधिक धानराशि जमा होने पर इसे गरीब बच्चों की

पढ़ाई पर भी खर्च किया जाता है। 'ऐसे प्रयास के लिए तो मैं कितने ही पैसे दे सकता हूँ' मैंने सोचा, लेकिन उस समय मेरी जेब में इतने पैसे नहीं थे। इसलिए मैंने उन लोगो को घर पर अपने साथ बुलाया। वहां पर मैंने एक लाख रुपये का चेक काट कर उनको दिया। मुझे लगा की आज का दिन कुछ सार्थक हुआ।

आज का कार्यक्रम अब समाप्त हो गया था, खाना-पीना करने के बाद अब मेरे पास कुछ भी करने को नहीं था। मुझे प्रिया का साथ चाहिए था, लेकिन यहाँ पर लोगों का जमावड़ा था। जो भी अंतरंगता और एकांत मुझे उसके साथ मिला था, वह सिर्फ रात को सोते समय ही था। मैं उसके साथ कहीं खुले में या अकेले बिताना चाहता था। मैं अपनी कुर्सी से उठ कर अन्दर के कमरे में गया, जहाँ प्रिया थी। मैंने देखा की अनगिनत औरतें और लड़कियां उसको घेर कर बैठी हुई थी। मुझे उनको देख कर चिढ़ हो गयी। मुझे वहां दरवाज़े पर सभी ने खड़ा हुआ देखा… प्रिया ने भी। मैंने उसको इशारे से मेरी ओर आने को कहा। प्रिया उठी, और अपना पल्लू ठीक करती हुई मेरी तरफ आई।

"जी?"

"प्रिया… कहीं बाहर चलते हैं।"

"कहाँ?"

"मुझे क्या मालूम? आपका शहर है…. आपको जो ठीक लगे, मुझे दिखाइए…."

"लेकिन, यहाँ पर इतने सारे लोग हैं…"

"अरे! इनसे तो आप रोज़ मिलती होंगी। मुझे आपके साथ कुछ अकेले में समय चाहिए …"

प्रिया के गाल यह सुन कर सुर्ख लाल हो गए। संभवतः, उसको रात और सुबह की याद हो आई हो।

"जी, ठीक है।"

"और एक बात, यह साड़ी उतार दीजिये।"

"जी???"

"अरे! मेरा मतलब है की सलवार कुरता पहन कर आओ। चलने फिरने में आसानी रहेगी। हाँ, मुझे आप सलवार कुर्ते में ज्यादा पसंद हैं …." मैंने उसको आँख मारते हुए कहा।

"जी, ठीक है। मैं थोड़ी देर में बाहर आ जाऊंगी।"

मुझे नहीं पता की उसने सलवार कुर्ता पहन कर बाहर आने के लिए अपने घर में क्या क्या झिक झिक करी होगी, लेकिन क्योंकि यह आदेश मेरी तरफ से आया था, कोई उसका विरोध नहीं कर सका। प्रिया ने हलके हरे रंग का बूटेदार सलवार कुर्ता और उससे मिलान किया हुआ दुपट्टा पहना हुआ था। उसके ऊपर उसने लगभग मिलते रंग का स्वेटर पहना हुआ था। इस पहनावे और लाल रंग की चूड़ियों में वह बला की खूबसूरत लग रही थी। इस समय दोपहर के डेढ़ बज रहे थे। ठंडक और दोपहर होने के कारण आस पास कोई लोग भी नहीं दिखाई दे रहे थे। अच्छी बात यह थी की ठंडी हवा नहीं चल रही थी, नहीं तो यूँ बाहर घूमने से तबियत भी बिगड़ सकती थी। प्रिया मुझे मुख्य सड़क से पृथक, पहाड़ी रास्तों से प्रकृति के सुन्दर दृश्यों के दर्शन करने को ले गयी। कुछ देर तक पैदल चढ़ाई करनी पड़ी, लेकिन एक समय पर समतल मैदान जैसा भी आ गया। प्रिया ने बताया की इसको बुग्याल बोलते हैं। इन चौरस घास के मैदानों में हरी घास और मौसमी फूलों की मानो एक कालीन सी बिछी हुई रहती है। यहाँ से चारों तरफ दूर-दूर तक ऊंचे-ऊंचे देवदार और चीड के पेड़ देखे जा सकते थे।

"क्या मस्त जगह है …" कहते हुए मैंने प्रिया का हाथ थाम लिया, और उसने भी मेरा हाथ दृढ़ता से पकड़ लिया।

"मैं आपको अपनी सबसे फेवरिट जगह ले चलूँ?" प्रिया ने उत्साह के साथ पूछा।

"बिलकुल! इसीलिए तो आपके साथ बाहर आया हूँ।"

इस समय अचानक ही किसी तरफ से करारी ठंडी हवा चली।

"अगर ऐसे ही हवा चलती रही तो ठंडक बढ़ जायेगी" मैंने कहा। प्रिया ने सहमती में सर हिलाया।

"हाँ, इस समय तक पहाडो पर बर्फ गिरनी शुरू हो जाती है.... लेकिन अभी ठीक है... चार बजे से पहले लौट चलेंगे लेकिन, नहीं तो बहुत ठंडक हो जायेगी।" उसने कहा, और बुग्याल में एक तरफ को चलती रही। कोई पांच-छः मिनट चलने पर मुझे सामने की तरफ एक झील दिखने लगी। उसके बगल में ही एक झोपड़ा भी बना हुआ था। प्रिया वहां जा कर रुक गयी। पास से देखने पर यह झोपड़ा नहीं, एक घर जैसा लग रहा था। कहने को तो एकदम वीरान जगह थी, लेकिन कितनी रोमांटिक! एक भी आदमी नहीं था आस पास।

"यहाँ मैं बचपन में कई बार आती थी .... यह घर मेरे दादाजी ने बनवाया था, लेकिन दादाजी के बाद पिताजी नीचे कस्बे में रहने लगे - वहां हमारी खेती है। पिछले दस साल से हम लोग यहाँ नहीं रहते हैं। लेकिन मैं यहाँ अक्सर आती हूँ। मुझे यह जगह बहुत पसंद है।"

"क्या बात है!" मैंने एक बाल-सुलभ उत्साह से कहा, "मैंने इससे सुन्दर जगह नहीं देखी ..." मैंने रुकते हुए कहा, "और मैंने आपसे सुन्दर लड़की आज तक नहीं देखी।"

प्रिया उत्तर में हलके से मुस्कुरा दी। घर के सामने, झील के लगा हुआ पत्थर का बैठने का स्थान बना हुआ था। हम दोनों उसी पर बैठ गए। इसी समय बदल का एक छोटा सा टुकड़ा सूरज के सामने आ गया और एक ताज़ी बयार भी चली। मौसम एकदम से रोमांटिक हो चला। ऐसे में एक सुन्दर सी झील के सामने, अपनी प्रेमिका के साथ बैठ कर आनंद उठाना अत्यंत सुखद था।

"प्रिया, आई ऍम कम्प्लीटली इन लव विद यू! जब मैंने आपको पहली बार स्कूल जाते हुए देखा, तभी से।" मुझे लगा की आज यह पहला मौका है जब हम दोनों पहली बार एक दूसरे से खुल कर बात चीत कर सकते हैं। तो इस अवसर को मैं गंवाना नहीं चाहता था। "मुझे कभी कभी शक भी हुआ की कहीं यह ऐसे ही लालसा तो नहीं – लेकिन मेरे मन ने मुझे हर बार बस यही कहा की ऐसा नहीं हो सकता। और यह की मुझे आपसे वाकई बेहद बेहद मोहब्बत है।"

प्रिया मेरी हर बात को अपनी मनमोहक भोली मुस्कान के साथ सुन रही थी। मैंने उसके हाथ को अपने हाथ में ले लिया और कहना जारी रखा,

“और मैं आपसे वादा करता हूँ की मैं आपको बहुत खुश रखूंगा, और आपके हर सपने को पूरा करूंगा।”

“मेरा सपना तो आप हैं! आप जिस दिन हमारे घर आये, उस दिन से आज तक मैं हर दिन यही सोचती हूँ की ये कोई सपना तो नहीं! वो दिन, वो पल इतना अद्भुत था, की मेरी बोलती ही बंद हो गयी थी।”

“मेरा भी यही हाल था, जब मैंने आपको पहली बार देखा। मैंने उसी क्षण में प्यार महसूस किया।”

हम दोनों कुछ पल यूँ ही चुप-चाप बैठे रहे, फिर मैंने पूछा,

“प्रिया, आपसे एक बात पूछूं? व्हाट डू वांट इन लाइफ?”

मेरे इस प्रश्न पर प्रिया ने पहली बार मेरी आँखों में आँखे डाल कर देखा। वह कुछ देर सोचती रही, और फिर बोली,

“हैप्पीनेस!”

“और आप हैप्पी कैसे होंगी?”

“मेरी ख़ुशी आपसे है – आप मेरे जीवन में आ गए, और मैं खुश हो गयी। आपका प्यार और आपको प्यार करना मुझे ख़ुश रखेगा। आप मेरे सब कुछ है – आपके साथ मैं बहुत सेफ हूँ! ये बात मुझे बहुत ख़ुश करती है। और यह भी की मेरा परिवार साथ में हो और सुरक्षित, स्वस्थ हो।”

प्रिया की भोली बातें सुन कर मैं भाव-विभोर हो गया।

“मैं आपको बहुत प्यार करूंगा! आई विल कीप यू एंड योर फॅमिली सेफ! एंड आई विल बी एवरीथिंग एंड मोर फॉर यू!”

“यू आलरेडी आर द होल वर्ल्ड फॉर मी!”

प्रिया की इस बात पर मैंने उसको जोर से भींच कर अपने गले से लगा लिया। हम लोग काफी देर तक ऐसे ही एक दूसरे को पकडे हुए बातें करते रहे – कोई भी विशेष बात नहीं। बस मैंने उसको अपने रोज़मर्रा के काम, बैंगलोर शहर, और उत्तराँचल में जो भी जगहें देखीं, उसके बारे में देर तक बताता रहा। प्रिया ने भी मुझे अपने परिवार, बचपन, और अन्य विषयों के बारे में बताया। मेरे बचपन में कोई भी ऐसी बात नहीं हुई जिसको मैं वहाँ बताता, और ऐसे अच्छे मौसम में बने मूड का सत्यानाश करता।

प्रिया बहुत ख़ुश थी। वह अभी खुल कर मेरे साथ बात कर रही थी, और लगातार मुस्कुरा रही थी। मैं निश्चित रूप से कह सकता था की वह हमारी इस नयी अंतरंगता को पसंद कर रही थी। जब हम एक रिश्ते में शुरूआती नाज़ुक दौर – जिसमें एक दूसरे को जानने की प्रक्रिया चल रही होती है – को पार कर लेते हैं, तो हममें एक प्रकार की शान्ति और ताजगी आ जाती है। इस समय हम दोनों अपने सम्बन्ध के दूसरे चरण में थे, जिसमें हम हमारे मासूम प्रेम का कोमल एहसास था।

मेरे मन में एक कल्पना थी - और वह यह की खुले में - संभवतः किसी खेत में या किसी एकांत, निर्जन जगह में - सहवास करना। यह स्थान कुछ वैसा ही था। वैसे यह बहुत संभव था की गाँव और कसबे का कोई व्यक्ति यहाँ आ सकता, लेकिन मेरे हिसाब से इस समय और इस मौसम में यह होने की सम्भावना थोड़ी कम थी। यह देख कर मेरे दिमाग में अपनी कल्पना को मूर्त रूप देने की संभावना जाग उठी। ताज़ी, सुगन्धित हवा ने मेरे अन्दर एक नया जोश भर दिया था। कुछ तो बात होती है नए विवाहित जोड़ों में – उनमें उत्साह और जोश भरा हुआ रहता है। हमने अभी कुछ ही घंटों पहले ही सहवास किया था, लेकिन अभी पुनः करने की तगड़ी इच्छा जाग गयी।

मैंने प्रिया की छरहरी कमर में अपनी बाँह डाल कर उसको अपने से चिपटा लिया। प्रिया भी बहुत ही मुश्किल से मिले इस एकांत का आनंद उठाना चाहती थी - वह भी मुझसे सिमट सी गयी। मैंने अपना गाल, प्रिया के गाल से सटा दिया और सामने के सुन्दर दृश्य का आनंद लेने लगा। ऐसे सुन्दर पर्वतों की गोद में, दुनिया के भीड़-भाड़ से दूर …. यह एक ऐसी दुनिया थी, जहाँ जीवन पर्यन्त रहा जा सकता था।

"आई लव यू" मैंने कहा और प्रिया के गाल को चूम लिया। प्रिया ने फिर से मुझे अपनी भोली मुस्कान दिखाई। उसके ऐसा करते ही मैंने उसके मुखड़े को अपनी बाँहों में भरा और उसके सुन्दर कोमल होंठों को चूम लिया। मैंने उसको विशुद्ध प्रेम और अभिलाषा के साथ चूम रहा था। प्रिया मेरे लिए पूरी तरह से "परफेक्ट" थी। हाँलाकि वह अभी नव-तरुणी ही

थी, और उसके शरीर के विकास की बहुत संभावनाएं थी। मुझे उसके शरीर से बहुत लगाव था - लेकिन मेरे मन में उसके लिए प्रेम सिर्फ शारीरिक बंधन से नहीं बंधा हुआ था, बल्कि उससे काफी ऊपर था। लेकिन यह सब कहने का यह अर्थ नहीं है की मुझे उसके शरीर के भोग करने में कोई एतराज़ था। मैं उससे जब भी मौका मिले, प्रेम-योग करने की इच्छा रखता था। प्रिया मेरे चुम्बन से पहले तो एकदम से पिघल गयी - उसका शरीर ढीला पड़ गया। उसकी इस निष्क्रियता ने असाधारण रूप से मेरे अन्दर की लालसा को जगा दिया।

मैंने उसके होंठो को चूमना जारी रखा - मेरे मन में उम्मीद थी की वह भी मेरे चुम्बन पर कोई प्रतिक्रिया दिखाएगी। मुझे बहुत इंतज़ार नहीं करना पड़ा। उसने बहुत नरमी से मेरे होंठो को चूमना शुरू कर दिया, और मुझे अपनी बांहों में बाँध लिया। मैंने उसको अपनी बांहों में वैसे ही पकड़े रखा हुआ था, बस उसको अपनी तरफ और समेट लिया। हम दोनों के अन्दर से अपने इस चुम्बन के आनंद की कराहें निकलने लगीं। पहाड़ की ताज़ी, सुगन्धित हवा ने हम दोनों के अन्दर स्फूर्ति भर दी।

न जाने कैसे और क्यों मैंने इन चुम्बनों के बीच प्रिया के स्वेटर को उसके शरीर से उतार दिया। प्रिया पहाड़ो पर ही पली बढ़ी थी - यह ठंडक वस्तुतः उसके लिए सुखदायक थी। स्वेटर तो उसने बस किसी अप्रत्याशित ठंडक से बचने के लिए पहना हुआ था। ठंडी ताज़ी बयार के सुख से प्रिया के मुंह से सुख वाली आह निकल गयी। मैंने उसको पुनः चूमना शुरू कर दिया और साथ ही साथ उसके कुर्ते के ऊपरी बटन खोलने लगा। मुझे ऐसा करते देख कर प्रिया चुम्बन तोड़ कर पीछे हट गयी।

"रुकिए! प्लीज!" उसने अपनी आँखें सिकोड़ते हुए कहा, "... यहाँ नहीं। अगर कोई देख लेगा तो?"

"मुझे नहीं लगता यहाँ कोई इस समय आएगा।"

"लेकिन दिन में ....?"

"क्यों? दिन में क्या बुराई है? सब कुछ साफ़ साफ़ दिखता है!" मैंने शैतानी भरा जवाब दिया।

"आप भी न… आपकी बीवी को अगर कोई ऐसी हालत में देखेगा तो क्या आपको अच्छा लगेगा?" बात कहने का उसका अंदाज़ शिकायत वाला था, लेकिन स्वर में किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं थी।

"ह्म्म्म… इस बारे में सोचा नहीं कभी। लेकिन अभी लग रहा है की मेरी इतनी कामुक बीवी है, तो कोई अगर देख भी ले, तो क्या ही बुराई है?" मैंने उल्टा जवाब देना जारी रखा।

"प्लीज…." प्रिया ने विनती की। लेकिन मेरे हाथ तब तक उसके कुर्ते के सारे बटन खोल चुके थे (सिर्फ तीन बटन ही तो थे)।

“यू आर स्मोकिंग हॉट! आपका साथ मुझे इतना उत्तेजित कर देता है की मैं अपने आपको रोक ही नहीं पाता!” मैं सुन नहीं रहा था, और उसके कुरते को हटाने की चेष्टा कर रहा था।

उसने हथियार डाल ही दिए, "अच्छा ठीक है… लेकिन प्लीज एक बार देख लीजिये की कोई आस पास नहीं है।" वो बेचारी मेरी किसी भी बात का विरोध नहीं कर रही थी।

"ओके स्वीट हार्ट!" मैंने अनिच्छा से उससे अलग होते हुए कहा। मैंने जल्दी से चारों तरफ का सर्वेक्षण किया। वैसे मेरे ऐसा करने का कोई फायदा नहीं था। मुझे पहाड़ी इलाको की कोई जानकारी नहीं थी। कोई भी व्यक्ति, जो इस इलाके का जानकार हो, अगर चाहे तो बड़ी आसानी से मेरी दृष्टि से बच सकता था। मुझे यह पूरा काम समय की बर्बादी ही लग रहा था। मैं जल्दी ही वापस आ गया।

कोई नहीं है…." मैंने ख़ुशी ख़ुशी उद्घोषणा की, और वापस उसको चूमने में व्यस्त हो गया। मैंने देखा की प्रिया ने अपने कुर्ते के बटन वापस नहीं लगाए थे, मतलब यह की वह भी तैयार थी। मैंने उसके कुर्ते के अन्दर हाथ डाल कर उसके स्तनों को हलके हलके से दबाया और फिर उसके कुर्ते को उसके शरीर से उतारने लग गया।

"वाकई कोई नहीं है न?" प्रिया ने घबराई आकुलता से पूछा - अब तक कुर्ते का दामन उसके स्तनों के स्तर तक उठ चुका था।

मैंने उसको फिर से चूम लिया।

"यहाँ बस दो ही लोग आने वाले थे… जो की आ चुके हैं" मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

प्रिया भी उत्तर में मुस्कुराई और मुस्कुराते हुए उसने अपने दोनों हाथ उठा दिए, जिससे मैं उसके कुर्ते को उतार सकूं। कुरता उतरते ही उसके सुन्दर और दिलचस्प स्तन दिखने लग गए। उसके स्तनाग्र पहले ही खड़े हुए थे - या तो यह ठंडी हवा का प्रभाव था, या फिर कामुक उत्तेजना का। मैंने उसके स्तनों को अपने हाथों में समेट लिया। प्रिया के दृदय के स्पंदन, उसके स्तनों की कोमलता और उसके स्तनाग्रों के कड़ेपन को महसूस करके मुझे उसकी उत्तेजना का अनुमान हो गया। हम वापस अपने कामुक चुम्बनों के आदान प्रदान में व्यस्त हो गए।

प्रिया की उत्तेजना बढती ही जा रही थी - वह मेरे चुम्बनों का उत्तर और भी भूखे चुम्बनों से दे रही थी। उसके होंठ मेरे होंठो को बुरी तरह चूम रहे थे, और अब उसके हाथ मेरे पजामे के नाड़े को टटोल कर खोलने की कोशिश कर रहे थे। उसकी इस हरकत से मुझे आश्चर्य हुआ।

'प्रकृति और उसके अजीब प्रभाव' मैंने मन ही मन सोचा।

नाडा खुलते ही मेरा पजामा नीचे सरक गया, और सामने अंडरवियर को उभारता हुआ मेरा लिंग दिखने लगा। ठंडी हवा से मेरे जांघो और अन्य संवेदनशील स्थानों पर रोंगटे खड़े हो गए। प्रिया ने कल रात की दी हुई शिक्षा का पालन करते हुए मेरे अंडरवियर को नीचे सरका दिया। मेरा उत्तेजित लिंग अब मुक्त था। बिना कोई देर किये उसने लिंग को अपने गरम हाथो में पकड़ कर प्यार से सहलाने लगी। अब तक मैंने भी उसकी सलवार को नाड़े से मुक्त कर दिया था। मैं उससे अलग हुआ और उसकी चड्ढी और सलवार को एक साथ ही नीचे सरका कर उसके शरीर से अलग कर दिया। अब पूर्णतया अनावृत प्रिया इस निर्जन प्राकृतिक सौन्दर्य का एक हिस्सा बन चुकी थी। मैंने भी अपना कुरता और अन्य वस्त्र तुरंत अपने शरीर से अलग कर दिए। हम दोनों ही अब पूर्णरूपेण नग्न हो गए थे - प्रेम-योग में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए।

प्रिया की कशिश ही कुछ ऐसी थी की मैं उसके साथ कितनी भी बार सहवास कर सकता था। हमारे इस संक्षिप्त सम्बन्ध में मुझे प्रिया के संग का आनंद आने लगा - उसके शरीर का भोग करना, उसके शरीर के हर अंग और उसकी हर भावनाओं का अन्वेषण करना - यह सब मुझे बहुत आनंद देने लग गया था। प्रिया का हाथ मेरे लिंग पर था, और उसको सहला रहा था। मुझे उसकी इस क्रिया से आनंद आने लग गया। उसने ऐसा बस दस बारह सेकंड

ही किया होगा की उसने अपना हाथ मेरे लिंग से हटा लिया और पत्थर पर लेट गयी - सहवास की मुद्रा में - अपनी टाँगे थोड़ा खोल कर।

"ये क्या है? छोड़ क्यों दिया?" मैंने उसको छेड़ा।

"आइये न!" क्या बात है!

"नहीं! ऐसे नहीं। कुछ अलग करते हैं!"

"अलग? क्या?"

"अरे! यह कोई ज़रूरी नहीं है की पीनस हमेशा वेजाइना के अन्दर ही जाए!"

"जी .... पीनस क्या होता है? और वो दूसरा आपने क्या कहा?"

"पीनस होता है यह," मैंने अपने लिंग को पकड़ कर दिखाया, "... और वेजाइना होती है यह ...." मैंने उसकी योनि की तरफ इशारा किया।"अब समझ में आया आपको?"

"जी! आया .... लेकिन 'ये' 'इसके' अन्दर नहीं आएगा, तो ... फिर .... कहाँ .... जाएगा?" प्रिया थोड़ी अस्पष्ट लग रही थी।

"अगर बताऊँगा तो आप नाराज़ तो नहीं होंगी?"

"आप तो मेरे मालिक है ... आपकी बात मानना मेरा फ़र्ज़ है!"

"हनी!" मैंने थोड़ा जोर देते हुए कहा, "मैं तुमको एक बात बोलना चाहता हूँ - और वह यह की किसी शादी में पति-पत्नी दोनों का दर्ज़ा बराबर का होता है। लिहाज़ा, कोई मालिक और कोई गुलाम नहीं हो सकता। और, सहवास जितना मेरे मज़े के लिए है, उतना ही आपके मज़े के लिए है। इसलिए हम दोनों को ही अपने और एक-दूसरे के मज़े का ध्यान रखना होगा। समझी?"

"जी .... समझ गयी .... आप कुछ बताने वाले थे?"

"हाँ … मैं यह कह रहा था की क्यों न आज आप मेरे 'इसको', अपने मुंह में लें?"

"जीईई!!? मुंह में?"

"हाँ! अगर आप ऐसा करेंगी तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा …. लेकिन तभी करियेगा, जब आपका मन करे। मैं कोई दबाव नहीं डालूँगा।"

"नहीं … दबाव वाली बात नहीं है। लेकिन …." बोलते बोलते प्रिया रुक गयी।

"हाँ हाँ …. बताइए न?"

"जी … लेकिन माँ ने बोला था की.…" कहते कहते प्रिया के गाल सुर्ख होने लगे।

मैंने उसको आगे बोलने का हौसला देते हुए सर हिलाया।

"यही की …. आपका … 'बीज' …… बेकार … खर्च न होने दूँ!" प्रिया ने जैसे तैसे अपनी बात ख़तम की।

"ह्म्म्म! माँ ने ऐसा कहा?" प्रिया ने सर हिलाया, "अच्छा, मुझे एक बात बताइए …." प्रिया ने बड़े भोलेपन से मुझे देखा, "…. आपको इससे क्या समझ आया?"

उसने कुछ देर सोचा और कहा, "यही की आपका … वीर्य …. मेरे अन्दर …" वह शर्म से इतनी गड़ गयी की आगे कुछ नहीं बोल पायी।

"हाँ! लेकिन, वीर्य को 'अन्दर' लेने का सिर्फ यही तो एक रास्ता नहीं है …", प्रिया मेरी बात को ध्यान से सुन रही थी, "…. जहाँ तक मुझे मालूम है, तीन रास्ते हैं - पहला तो यह की आप इसको अपनी योनि में जाने दें, जैसे की हमने पहले किया है," प्रिया इस बात से शर्म से और भी लाल हो गयी, लेकिन मैंने अपनी बात कहनी जारी रखी, "दूसरा यह की 'इसको' आप अपने मुँह में लें, और जब मैं वीर्य छोड़ूँ तो आप उसको पी जाएँ …." प्रिया का चेहरा अनिश्चितता और जुगुप्सा से थोडा विकृत हो गया, "… और तीसरा 'गुदा मैथुन'…"

"गुदा?" उसके पूछने पर मैंने उसके नितम्बों पर अपना हाथ फिराया।"

मतलब आपका लिंग मेरे पीछे! बाप रे!" वह थोडा सा रुकी, फिर बोली "न बाबा! मुझे नहीं लगता की यह 'वहां' पर फिट होगा।"

मैंने कुछ नहीं कहा। उसने कहना जारी रखा, "क्या आप वहाँ डालना चाहते हैं?"

"देखो, कुछ लोग ऐसा करते हैं, और कुछ स्त्रियाँ इसको पसंद भी करती हैं - अगर ठीक ढंग से किया जाए तो!"

"आप… ?"

"अगर आप ट्राई करना चाहती हैं तो… ."

"जी …. मुझे नहीं मालूम। लेकिन अगर ठीक लगा तो कर भी सकती हूँ। आप मुझे वह सब बताइए जिससे मैं आपको खुश रख सकूं।"

"हनी! मैंने पहले ही कहा है, की यह सिर्फ मेरे लिए नहीं है - आपके लिए भी उतना ही है। आप मुझे खुश करना चाहती हैं, यह एक अच्छी बात है.. लेकिन, मैंने भी आपको खुश करना चाहता हूँ।"

इतना कह कर मैं चुप हो गया.. इस सारे वार्तालाप में मेरे लिंग का उत्थान जाता रहा.. प्रिया ने मन ही मन में कुछ तय किया, और फिर हलकी कंपकंपी के साथ मेरे लिंग को अपने हाथ में ले लिया। उसकी छोटी छोटी उंगलिया मेरे लिंग के चारों तरफ लिपटी हुई थीं, जिनसे वो इसको कभी दबाती, तो कभी हलके से खींचती। वह कुछ देर तक यूँ ही खेलती रही - उसने मेरे वृषण को भी अपने हाथ में लिया - उनकी हलकी हलकी मालिश की और उनको कुछ इस प्रकार अपनी हथेली में उठाया जैसे की वह उनका भार जानना चाहती हो। फिर उसने लिंग की जड़ को पकड़ कर धीरे धीरे ऊपर-नीचे वाला झटका देने लगी - मेरे लिंग के आकार में अब तक खासा बढ़ोत्तरी हो चली थी।

प्रिया ने मेरी तरफ एक शरारती मुस्कान फेंकी, "मुझे नहीं लगता की यह मेरे वहां पर फिट हो पायेगा।"

उसने मेरे लिंग के साथ छेड़-खानी करनी बंद नहीं करी। इस समय वह उसकी पूरी लम्बाई पर अपना हाथ फिरा रही थी, जिसके कारण मेरे शिश्न का शिश्नग्रच्छद पीछे सरक गया और उसका गुलाबी चमकदार हिस्सा दिखने लगा। उसने अचानक ही मेरे लिंग की नालिकपथ से रिसते हुए द्रव को देखा।

"ये यहाँ से क्या निकल रहा है?" उसने उत्सुकतावश पूछा।

"इसको 'प्री-कम' कहते हैं" मैंने बताया।

उसने कुछ देर मेरे लिंग को यूँ ही देखा, और फिर धीरे से आगे झुक कर, मानो एक प्रयोगात्मक तरीके से प्री-कम को चाट लिया, और फिर मेरी तरफ देखा। मैंने उस पर प्रश्नवाचक दृष्टि डाली।

उसने मुस्कुराते हुए कहा, "थोड़ा नमकीन है .... लेकिन, आपका टेस्ट अच्छा है।"

फिर, थोड़ा रुक कर, "मुझे बताइये की आपको कैसा पसंद है?"

मुझे लगा की जैसे वह मुझसे पूछ रही हो की वह मुख-मैथुन कैसे करे।

मैंने पूछा, "आपने लोलीपॉप खाया है?" उसने हाँ में सर हिलाया।

"बस इस गुलाबी हिस्से को लोलीपॉप के जैसे ही चूसो और चाटो। आप चाहे तो लिंग का और हिस्सा भी अन्दर ले सकती हैं..... लेकिन, ध्यान से - यह बहुत ही नाज़ुक होता है - दांत न लगने देना।

"प्रिया ने समझते हुए अपनी जीभ पुनः बाहर निकाली और धीरे धीरे से मेरे लिंग के इस गुलाबी हिस्से को चारो तरफ से चाटा, और फिर इस प्रक्रिया में पुनः निकले हुए प्री-कम को चाट लिया। मेरे सात इंच लम्बे लिंग को बीच से पकड़ कर उसने अपने मुंह को धीरे धीरे खोलना शुरू किया। जब मेरा लिंग उसके मुंह के बिलकुल करीब आया, तब मुझे उसकी गरम साँसे अपने लिंग पर महसूस हुई। यह कुछ ऐसा संवेदन था, जिससे मुझे लगा की मैं अभी स्खलित हो जाऊँगा।

इस संज्ञान से मेरा स्खलन बहुत ही तीव्र हुआ - मेरे गले से साथ ही साथ एक भारी कराह भी निकली। संभवतः उसको यह उम्मीद नहीं थी की मैं इस तीव्रता के साथ स्खलित होऊंगा। उसको थोड़ी सी उबकाई आ गयी, और इस कारण से मेरे दुसरे और तीसरे स्खलन का कुछ वीर्य उसके होंठो से बाहर ही छलक गया। लेकिन उसने अपने आपको संयत किया और आगे आने वाले स्खलनों को पी गयी। तत्पश्चात उसने मेरे लिंग को पम्प की तरह से चला कर बाकी बचा हुआ वीर्य भी निकाल कर गटक गयी।मेरे घुटने कमज़ोर होकर कांपने लगे - मुझे लगा की मैं अभी चक्कर खाकर गिर जाऊँगा।

ऐसा ख़याल आते ही, मैंने प्रिया के दोनों कंधे थाम लिए, लेकिन फिर भी मेरे पैरों का कम्पन गया नहीं। प्रिया ने मेरा लिंग अभी भी अपने मुंह से बाहर नहीं निकाला था, लेकिन अभी वह उसको बहुत ही नरमी से चूस रही थी। उसको संभवतः महसूस हुआ होगा की अब कुछ भी नहीं निकल रहा है - उसने मेरी तरफ देखा और अपने मुंह को मेरे लिंग से अलग कर के कहा,

"मैंने ठीक से किया?"

मैंने हामी भरी तो उसने आगे कहा, "आपने कितना ढेर सारा छोड़ा! … आप अभी खुश हैं?"

"बहुत!" मैं बस इतना ही बोल पाया।

वह खिलखिला कर हंस पड़ी.… मैं नीचे प्रिया के बराबर आकर बैठ गया और उसको चूमने लगा। मुझे अपने वीर्य का स्वाद आने लगा.. लेकिन प्रिया के स्वाद से मिलने के कारण मुझे ये अभी स्वादिष्ट लग रहा था। उसको चूमते हुए मैं उसकी पीठ सहलाने लगा - हवा की ठंडी के कारण उसकी त्वचा की सतह ठंडी हो गयी थी, लेकिन शरीर के अन्दर की गर्मी ख़तम नहीं हुई थी।

मुझे अचानक ही वातावरण की ठंडी का एहसास हुआ, तो मैंने उठ कर प्रिया को अपने साथ ही उठा लिया और चट्टान पर अपने कपड़े बिछा कर फिर उसको बैठने को बोला।

जब वो बैठ गयी, तो मैंने कहा, "अब मेरी बारी है …. आपको खुश करने की!"

यह कहते हुए मैंने प्रिया को हल्का सा धक्का देकर उस जुगाड़ी बिस्तर पर लिटा दिया, और उसके मुख को पूरी कामुकता के साथ चूमने लगा। मेरे मुख को जगह देने के लिए प्रिया का मुख भी पूरी तरह से खुला हुआ था। उसकी जीभ मेरी जीभ के साथ टैंगो नृत्य कर रही थी। कुछ देर उसके मुख को चूमने के बाद मैंने उसके दाहिने कंधे को चूमना शुरू किया और उसके ऊपरी सीने को चूमते हुए उसके बाएँ स्तन पर आकर टिक गया। प्रिया ने अपने हाथो की गोद बना कर मेरे सर को सहारा दिया, और मैंने उसके स्तन को शाही अंदाज़ में भोगना आरम्भ कर दिया - पहले मैंने उसके बाएं स्तन को चूसा, चूमा और दबाया, और फिर यही क्रिया उसके दायें स्तन पर की।

काफी समय स्तनों को भोगने के बाद मैं उसके धड़ को चूमते हुए उसके पेट तक आ गया। वहां मैंने उसकी नाभि के चारों तरफ अपनी जीभ से वृत्ताकार तरीके से चाटा, और फिर नाभि के अन्दर जीभ डाल कर कुछ देर चाटने का प्रोग्राम किया। मेरी इस हरकत से प्रिया की खिलखिलाहट छूट गयी। इसके बाद मैंने उसको सरल रेखा में चूमना शुरू किया और उसकी योनि के दरार के एकदम शुरूआती को चूम लिया। प्रिया के गले से आनंद की चीख निकल गयी और साथ ही साथ उसने अपने नितम्ब कुछ इस तरह उठा दिए जिससे उसकी योनि और मेरे मुख का संपर्क न छूटे! इस निर्जन स्थान में निर्बाध प्रेम संयोग करने के कारण वह बहुत ही आश्वस्त लग रही थी। लेकिन मैंने वह हिस्सा फिलहाल छोड़ दिया और उसके जांघ के भीतरी हिस्से को चूमने लगा। प्रिया ने अपनी जांघे खोल दी - इस उम्मीद में की मैं उसकी योनि पर हमला करूंगा। मैंने देखा की प्रिया की योनि के दोनों होंठ उसके काम-रस से भीग गए थे। मैंने उसके दाहिने पैर को उठाया और उसको चूमना शुरू किया - मैं उसकी पिंडली चूमते हुए टखने तक पहुंचा और उसके मेहंदी से सजे पैर को चूमा।

चूमते हुए मैंने उसके पैर के अंगूठे को कुछ देर चूसा भी। मेरे ऐसा करने से प्रिया ने खिलखिलाते हुए अपना पैर वापस खीच लिया, और बोली, "गुदगुदी होती है!" मैंने फिर यही क्रिया उसके बाएं पैर पर करनी शुरू की। कुछ देर ऐसे ही खिलवाड़ करने के बाद मैं वापस जांघो के रास्ते होते हुए उसकी योनि की तरफ बढ़ने लगा। हाँलाकि, हम लोग पहले भी सहवास कर चुके थे, लेकिन प्रिया की योनि का ऐसा प्रदर्शन नहीं हुआ था। दिन के उजाले में मुझे उसका आकार प्रकार ठीक से दिखा - उसकी योनि के मांसल होंठ उसके टांगों के बीच के हिस्से की तरफ झुके हुए थे और चिकने और स्थूल थे (जैसा मैं पहले भी कह चुका हूँ, इनका रंग सामन मछली के मांस के रंग का था)। इनके ऊपरी हिस्से में गुलाबी मूंगे के रंग का हुड था, जिसमे से उसका भगनासा दिख रहा था। प्रिया की साँसे अब तक बहुत भारी हो चली थीं।

मैंने प्रिया की टाँगे पूरी तरह से खोल दीं - उसके शरीर का लचीलापन मेरे लिए बहुत ही आश्चर्यजनक था! उसकी जांघे लगभग एक-सौ-साठ अंश तक खुल गयी थीं! मैंने अपनी जीभ से उसकी योनि के निचले हिस्से को ढंका और नीचे से ऊपर की तरफ चाटा - बहुत ही धीरे धीरे! जैसे ही मेरी जीभ का संपर्क उसके भगनासे से हुआ, उसकी सिसकी छूट गयी, और साथ ही साथ उसके शरीर में एक थरथराहट भी।

"हे भगवान!" वो बस इतना ही बोल पायी। लेकिन मेरे लिए यह काफी था।मैंने अपने मुख को वहां से हटाया और बैठे हुए ही अपने दोनों अंगूठों की सहायता से उसके योनि पुष्प की पंखुड़ियों को खोल कर उसके भगनासे को अनावृत कर दिया। उसकी योनि के अंदरूनी होंठ पतले थे और काफी छोटे थे। योनि-छिद्र गुलाबी लाल रंग का था, और उसका व्यास करीब करीब चौथाई इंच रहा होगा। उसकी योनि में से जिसमे दूधिया, लेकिन पारभासी द्रव रिस रहा था और योनि से होते हुए उसकी गुदा की तरफ जा रहा था।

मैंने अपनी जीभ से उसके योनि रस का आस्वादन करते हुए, भगनासे को चाटना आरम्भ कर दिया।

"आऊऊ!" प्रिया कराही, "थोडा थोड़ा दर्द होता है!"

अरे! अगर मज़ा लेना है तो कुछ तो सहना पड़ेगा न! लेकिन मेरे पास प्रिया को यह समझाने का समय और संयम नहीं था। मैंने उस छोटे से बिंदु को चाटना जारी रखा। प्रिया ने एक गहरी सांस छोड़ी, और अपने नितम्बो को मेरे चाटने की ताल में ऊपर की तरफ हिलाना शुरू कर दिया - मानो वह स्वयं ही अपनी योनि का भोग चढ़ा रही हो। कुछ देर तक यूँ ही चाटने के बाद मैंने अचानक से उसके समस्त गुप्तांग को अपने मुंह में भर कर कास के चूस लिया और अपनी जीभ को बड़े ही हिंसात्मक तरीके से उसके भगनासे पर फिराने लगा।

प्रिया की गले से एक अत्यंत कामुक सिसकारी छूट गयी और उसका शरीर कामोत्तेजना में दोहरा हो गया। उसके हाथ मेरे सर को बलपूर्वक पकड़ कर अपनी योनि में खीचने लगे। उसके हाँफते हुए गले से आहें निकलने लगीं।

उसका शरीर एक कमानी जैसा हो गया, और मेरे सर पर उसकी पकड़ और भी मजबूत हो गयी और अचानक ही उसका शरीर एकदम से कड़ा हो गया। प्रिया के शरीर में तीन बार

झटके आये, और तीनो बार उसके मुंह से "ऊउह्ह्ह्ह!" निकला। अंततः, वह निढाल होकर लेट गयी।

प्रिया मुख मैथुन के ऐसे प्रहार के आघात के बाद अपनी आँखे बंद किये लेटी हुई थी - उसके स्तन उसकी तेज़ चलती साँसों के साथ ही उठ बैठ रहे थे और उसकी साँसे अभी भी उसके मुंह से आ-जा रही थीं। उसकी जांघे वापस खुल गयी थीं और उसकी छोटी सी योनि मेरे मौखिक परिचर्या के कारण पूरी तरह से गीली हो गयी थी - उसकी योनि से काम-रस अभी भी निकल रहा था।

हलकी ठण्ड होने के बावजूद प्रिया का शरीर पसीने की एक पतली परत से ढक गया था। मैंने उसके हाँफते हुए मुख को अपने मुख में लेकर भरपूर चुम्बन दिया - हमारे तीन संसर्गों में ही हमारे बीच के गुणधर्म और ऊर्जा कई गुना बढ़ चुके थे। इस विस्तीर्ण निर्जन प्राकृतिक स्थान में अपनी भावनाएँ अवरुद्ध करने का कोई अर्थ नहीं था। लिहाज़ा, हमारा जोश पाशविक जुनून तक पहुँच गया। हमारा चुम्बन कामोन्माद की पराकाष्ठ पर था - चुम्बनों के बीच में हम एक दूसरे के होंठों को हल्के हलके चबा भी रहे थे। मुझे लगा की हमारी जिह्वाएँ एक कठिन मल्लयुद्ध में भिड़ने वाली थी की प्रिया कसमसाते हुए बोली, "जी .... मुझे टॉयलेट करना है।"

टॉयलेट? मुझे अब कुछ कुछ समझ आ रहा था। अवश्य ही प्रिया को सहवास के बाद मूत्र करने का संवेदन होता है। हो सकता है। ये सब सोचते हुए मुझे एक विचार आया। हम लोग इतने दुष्कर कार्य कर रहे थे, क्यों न एक कार्य और जोड़ लें?

"टॉयलेट जाना है? और अगर मैं न जाने दूँ तो?" कहते हुए मैंने उसको अपनी बाँहों के घेरे में पकड़ कर और जोर से पकड़ लिया। प्रिया कसमसाने लगी।

"प्लीज! जाने दीजिये न! नहीं तो यहीं पर हो जाएगा!" कहते हुए प्रिया शरमा गयी।

.

"हा हा! ठीक है, कर लो .... लेकिन, मुझे देखना है।"

मेरी बात सुन कर प्रिया की आँखें आश्चर्य से फ़ैल गयीं! मेरी कामासक्ति के प्रयोग में प्रिया ने अभी तक पूरा साथ दिया था, लेकिन उसके लिए ये एक नया विषय था।

"क्या?! छी! आप भी न!"

"क्या छी? मैंने तो आपका सब कुछ देख लिया है, फिर इसमें क्या शर्म?" मेरी बात सुन कर प्रिया और भी शरमा गयी। मैं अब उठ कर बैठ गया और साथ ही साथ प्रिया को भी उसकी बाँहे पकड़ कर बैठा लिया, और इसके बाद मैंने प्रिया की टाँगे थोड़ी फैला दीं। मेरी इस हरकत से प्रिया खिलखिला कर हंस दी।

"इस तरह से?" मैंने सर हिल कर हामी भरी.... "मुझे नहीं लगता की मैं ऐसे कर सकती हूँ!"

"जानेमन, अगर इस तरह से नहीं कर सकती, तो फिर बिलकुल भी नहीं कर सकती।" मैंने ढिठाई से कहा।

मैंने प्रिया का टखना जकड़ रखा था, और दृढ़ निश्चय कर रखा था की मैं उसको मूत्र करते हुए अवश्य देखूँगा - और अगर हो सका तो उसकी मूत्र-धार को स्पर्श भी करूंगा। उस समय नहीं मालूम था की यह अनुभव मुझे अच्छा भी लगेगा या नहीं - बस उस समय मुझे यह तजुर्बा लेना था। अंग्रेजी में जिसे 'किंकी' कहते हैं, वही! प्रिया ने थोड़ी कसमसाहट करके मेरी पकड़ छुड़ानी चाही, लेकिन नाकामयाब रही और अंततः उसने विरोध करना बंद कर दिया। उसने अपनी मुद्रा थोड़ी सी व्यवस्थित करी - पत्थर पर ही वह उकडू बैठ गयी - उसके ऐसा करने से मुझे उसकी योनि का मनचाहा दर्शन होने लगा।

"आप सचमुच मुझे ये सब करते देखना चाहते हैं?" मैंने हामी भरी, ".... ये सब कितना गन्दा है!"

"जानू! इसीलिए! मैं बस एक बार देखना चाहता हूँ। अगर हम दोनों को अच्छा नहीं लगा तो फिर नहीं करेंगे! ओके? जैसे आपने मेरी बात अभी तक मानी है, वैसे ही यह बात भी मान लीजिये।"

"जी, ठीक है... मैं कोशिश करती हूँ।"

यह कहते हुए प्रिया ने अपनी आँखें बंद कर लीं, और मूत्र पर ध्यान लगाया। उसकी योनि के पटल खुल गए - मैंने देखा की वहां की माँस पेशियाँ थोडा खुल और बंद हो रही थीं

(मूत्राशय को मुक्त करने का प्रयास)। प्रिया के चमकते हुए रस-सिक्त गुप्तांग को ऐसी अवस्था में देखना अत्यंत सम्मोहक था।

मैंने देखा की मूत्र अब निकलने लगा है - शुरू में सिर्फ कुछ बूँदें निकली, फिर उन बूँदों ने रिसाव का रूप ले लिया, और कुछ ही पलों में मूत्र की अनवरत धार छूट पड़ी। प्रिया का मुँह राहत की साँसे भर रहा था। उसकी आँखें अभी भी बंद थीं - मैंने अपना हाथ आगे बढ़ा कर उसके मूत्र के मार्ग में लाया और तत्क्षण उसकी गर्मी को महसूस करने लगा।

कोई दस सेकंड के बाद प्रिया का मूत्र त्यागना बंद हुआ। वह अभी भी आँखें बंद किये हुई थी - उसकी योनि की पेशियाँ सिकुड़ और खुल रही थीं और उसमें से मूत्र निकलना अब बंद हो चला था। मेरे दिमाग में न जाने क्या समाया की मैंने आगे बढ़ कर उसकी योनि को अपने मुंह में भर लिया, और प्रिया के मूत्र का पहला स्वाद लिया - यह नमकीन और थोड़ा तीखा था। मुझे इसका स्वाद कोई अच्छा नहीं लगा लेकिन उसका स्वाद अद्वितीय था और इसलिए मुझे बहुत रोचक लगा। मैंने उसकी योनि से अपना मुँह कास कर चिपका लिया और उसको चूस कर सुखा दिया।

मेरी इस हरकत से प्रिया मेरे ऊपर ही गिर गयी - उसकी टांगों में कम्पन सा हो रहा था। उसने जैसे तैसे अपने शरीर का भार व्यवस्थित किया, जिससे मुझे परेशानी न हो, और फिर मुझे भावुक हो कर जकड कर एक ज़ोरदार चुम्बन दिया, "हनी … आई लव यू! …. ये … बहुत …. अजीब था। मेरा मतलब … यह बहुत उत्तेजक है, लेकिन बहुत ही …. अजीब!"

प्रिया को इस प्रकार अपनी भावनाएँ बताते हुए देखने से मुझे बहुत अच्छा लगा। एक प्रेमी युगल को अपनी अपनी काम भावनाएं एक दूसरे को बतानी चाहिए। तभी एक दूसरे को पूर्ण रूपेण संतुष्ट किया जा सकता है।

"आई लाइक्ड इट! इसको थोड़ा और आगे ले जायेंगे!" मैंने कहा और प्रिया को पुनः चूमने लगा।

५

अश्विनी की नजर में:

अश्विनी कोई पाँच मिनट से झाड़ी के पीछे खड़ी हुई अपने दीदी और जीजाजी के रति-सहवास के दृश्यों को देख रही थी। उसके माँ और पिताजी ने उसको उन दोनों के पीछे भेज दिया था की उनको वापस ले आये, क्योंकि मौसम कभी भी गड़बड़ हो सकता है। अश्विनी रास्ते में लोगो से पूछते हुए इस तरफ आ गयी थी - उसको प्रिया की इस फेवरिट स्थान का पता था। अश्विनी उस जगह पर पहुँचने ही वाली थी की उसको किसी लड़की के कराहने और सिसकने की आवाज़ आई।

वह आवाज़ की दिशा में बढ़ ही रही थी की उसने झील के बगल वाले प्रस्तर खंड पर दीदी और जीजू को देखा - वह दोनों पूर्णतः नंग्युल (नग्न) थे - दीदी लेटी हुई थी - उसके पाँव फैले हुए थे और आँखें बंद थीं - जीजू का सर दीदी की रानों (जाँघों) की बीच की जगह सटा हुआ था और वो उसकी पेशाब करने वाली जगह को चूम, चाट और पलास (सहला) रहे थे। उनके इस हरकत से ही दीदी की कराहटें निकल रही थीं।

'छिः! जीजू कितने गंदे हैं! दीदी दर्द से कराह रही है और वो हैं की ऐसी गन्दी जगह को पलास रहे हैं!' ऐसा सोचते हुए अश्विनी की निगाहें अपने जीजू के निचले हिस्से पर पड़ी - उनका छुन्नू और अंडे दिख रहे थे। वह पहले सोचती थी की दीदी बहुत दुबली है, लेकिन उसको ऐसे निरावृत देख कर उसको समझ आया की वो तो एकदम गुंट (सुन्दर और सुडौल) है। जीजू भी बिना कपड़ों के कितने सुन्दर लगते हैं!

अश्विनी को कुछ ही पलों में समझ आ गया की उसका यह आंकलन की दीदी दर्द से कराह रही है, दरअसल गलत था - वह वस्तुतः मज़े में आहें भर रही है। कोई चाहे कितना भी मासूम क्यों न हो, सयाना होते होते रति क्रिया का नैसर्गिक ज्ञान उसमें स्वयं आ जाता है। अश्विनी को स्त्री पुरुष के शारीरिक बनावट का अंतर मालूम था और उसको यह भी मालूम था की लिंग और योनि का आपस में क्या सम्बन्ध है।

लेकिन उसको यह नहीं ज्ञात था की इस संयोजन में आनंद भी आता है। इस कारण से उसको अपनी भोली-भाली दीदी को इस प्रकार आनंद प्राप्त करने को उद्धत देख कर आश्चर्य हुआ।

'कितनी निर्लज्जता से दीदी खुद भी अपनी योनि को जीजू के मुँह में ठेले जा रही थी! कैसी छंछा (चरित्रहीन औरत) जैसी हरकत कर रही है दीदी!'

एक बात देख कर अश्विनी को काफी रोमांच आया - जीजू के हाथ दीदी के दोनों दुदल (स्तन) और दुदल-घुंडी (स्तनाग्र) को रह रह कर मींज भी रहे थे। इस समय दीदी जीजू के सर को पकड़ कर अपनी योनि में खीच रही थी और हाँफ रही थी। अश्विनी ने देखा की अचानक ही दीदी का शरीर कमानी जैसा हो गया, और उसके शरीर में झटके आने लगे। फिर वह निढाल होकर लेट गयी।

कुछ देर दीदी लेटी रही और फिर उठ कर जीजू से कुछ बाते करने लगी। फिर वह ऐसी मुद्रा में बैठ गयी जैसे पेशाब करते समय बैठते हैं - लेकिन पत्थर पर और वह भी जीजू के सामने? दीदी को ऐसा करते हुए तो वह सोच भी नहीं सकती थी - लेकिन जो प्रत्यक्ष में हो रहा है उसका क्या?

'इसको बिलकुल भी शर्म नहीं है क्या?'

अश्विनी को अपनी दीदी को ऐसे खुलेआम पेशाब करते देख कर झटका लगा और एक और झटका तब लगा जब जीजू ने अपना हाथ आगे बढ़ा कर उसके पेशाब की धार को छुआ। और उसका मन जुगुप्सा से भर गया जब उसने देखा की जीजू ने दीदी के पेशाब वाली जगह को अपने मुंह में भर लिया।

'ये दीदी जीजू क्या कर रहे हैं? कितना गन्दा गन्दा काम!'

अश्विनी वहां से वापस जाने ही वाली थी की उसने देखा की दीदी और जीजू आपस में कुछ बात कर रहे हैं और जीजू का छुन्नू तेजी से उन्नत होता जा रहा है - उसका आकार प्रकार देख कर अश्विनी का दिल धक् से रह गया।

'यह क्या है?' अश्विनी ने सिर्फ बच्चों के शिश्न देखे थे, जो की मूंगफली के आकार जैसे होते हैं। वो भी कभी कभी उन्नत होते हैं, लेकिन जीजू का तो सबसे अलग ही है। अलग… और बहुत सुंदर… और और बहुत… बड़ा भी! ये तो उसकी स्कूल की स्केल से भी ज्यादा लम्बा लग रहा था और मोटा भी था - बहुत मोटा।

दीदी ने बहुत ही प्यार से जीजू के छुन्नू को धीरे धीरे पलासना शुरू कर दिया था, और साथ ही साथ वो चट्टान पर कुछ इस तरह से लेट गयी की उसकी उसकी रानें पूरी तरह से खुल गयी। लेकिन फिर भी दीदी अपने उस हाथ से, जो जीजू के छुन्नू पर नहीं था, अपनी पेशाब करने वाली जगह को और फैला रही थी। दीदी की फैली हुई योनि को देख कर अश्विनी के दिल में एक आशंका या डर सा बैठ गया।

'क्या करने वाली है ये?'

और फिर वही हुआ जिसकी उसको आशंका थी - जीजू अपना छुन्नू दीदी की योनि में धीरे धीरे डालने लगे। दीदी की छाती तेज़ साँसों के कारण धौंकनी जैसे ऊपर नीचे हो रही थी।

'दीदी को कितना दर्द होगा! बेचारी देखो कैसे उसकी साँसे डर के मारे बढ़ गयी हैं!'

दीदी नीचे की तरफ, जीजू के छुन्नू को देख रही थी - जीजू अब साथ ही साथ दीदी के दुदल मींज रहे थे और चुटकी से दबा रहे थे। अंततः जीजू का पूरा का पूरा छुन्नू दीदी के अन्दर चला गया - दीदी के गले से एक गहरी आह निकल गयी। अश्विनी को वह आह सुनाई पड़ी - उसके दिमाग को लगा की दीदी दर्द के मारे कराह रही है, लेकिन उसके दिल को सुख भरी आह सुनाई दी।

जीजू ने दीदी से कुछ कहा। जवाब में दीदी ने सर हिला कर हामी भरी।

'दीदी ठीक तो है? बाप रे! इतनी मोटी और लम्बी चीज़ कोई अगर मेरे में डाल दे तो मैं तो मर ही जाऊंगी!' अश्विनी ने सोचा।

"करिए न … रुकिए मत।" अश्विनी को दीदी की हलकी सी आवाज़ सुनाई दी।

'दीदी क्या करने को कह रही है? और वो ऐसी हालत में बोल भी कैसे पा रही है। मेरी तो जान ही निकल जाती और मैं रोने लगती।'

दीदी की बात सुन कर जीजू की कमर धीरे धीरे आगे पीछे होने लगी - लेकिन ऐसे की उनका छुन्नू पूरे समय दीदी के अन्दर ही रहे और बाहर न निकले।

'हे भगवान्!' अश्विनी अब मंत्रमुग्ध होकर अपने दीदी और जीजा के यौन संसर्ग का दृश्य देख रही थी।

प्रिया की नजर में : :

प्रिया को पिछले के रति-संयोगों में वैसा नहीं महसूस हुआ था, जैसा की उसको अभी हो रहा था। उसके पति का बृहद लिंग उसकी नन्ही सी योनि का इस प्रकार उल्लंघन और उपभोग कर रहा था जिसकी व्याख्या करना अत्यंत कठिन था! वह लिंग जिस तरह से उसकी योनि द्वार को फैला रहा था और इस क्रिया से होने वाला कष्ट भी अब उसको प्रिय लगने लगा था। उस लिंग के प्रत्येक प्रवेशन से उन दोनों के जघन क्षेत्र एकदम ठीक जगह पर, एकदम ठीक बल के साथ टकरा रहे थे। और उसके पति के वृषण उसके नितम्बो पर नरम नरम चपत लगा रहे थे।

ऐसा सुख प्रिया को पहले नहीं महसूस हुआ। यह संवेदना थी आनंद की, कष्ट की, आनंदातिरेक की और एक तरह की हानि की। और कुछ भी हो, इस काम में मज़ा बहुत आ रहा था।

जब प्रिया के विवाह का दिन निकट आने लगा, तो पास पड़ोस की तीन चार 'भाभियों' ने उसको अंतहीन और अधकचरी यौन शिक्षा प्रदान की। उनके हिसाब से पुरुष का लिंग सामान्यतः संकरा, थोड़ा लटकता हुआ, पतली ककड़ी जैसे आकार का होता है। किन्तु उसके पति का लिंग तो उनके बताये जैसा तो बिलकुल ही नहीं था - बल्कि उसके विपरीत कहीं अधिक प्रबल, लम्बा और मोटा था। उन्होंने यह भी बताया था की यौन क्रिया तो बस दो से चार मिनट में ख़तम हो जाती है, और ऐसा कोई घबराने वाली बात नहीं होती, और यह भी की ये तो पुरुष अपने मज़े के लिए करते हैं। लेकिन उसका पति इस विभाग में भी निश्चित रूप में लाखों में एक है - एक तो उनके बीच का एक भी यौन प्रसंग कम से कम पंद्रह बीस मिनट से कम नहीं चला … और तो और 'उन्होंने' उसके आनंद को हर बार वरीयता दी। भाभियों के हिसाब से सहवास का मतलब लिंग का योनि में अन्दर बाहर जाना और तीन चार मिनट में काम ख़तम। लेकिन अब तक उन दोनों ने जितनी भी बार भी सहवास किया, उतनी ही बार सब कुछ नया नया था।

आखिर कितनी विषमता हो सकती है, इस चिरंतन काल से चली आ रही नैसर्गिक क्रिया में? प्रिया को अपनी योनि में एक तेज़ धक्का महसूस हुआ - उसने ध्यान किया की उसके पति का लिंग कुछ और फूल रहा था। और जिस तरह से वह लिंग उसके क्रोड़ को निःशेष कर रहा था, उससे वह अपने पति और उसके लिंग, दोनों की ही मुरीद बन चुकी थी। उसको मन ही मन ज्ञात हो चला था की अथर्व की वो पूरी तरह गुलाम बन गयी है। पहले तो अपने व्यक्तित्व, फिर अपने व्यवहार और अब अपने यौन-सामर्थ्य से उसके पति ने उसको

पूरी तरह से जीत लिया था। इसके एवज़ में वह कुछ भी कहेंगे तो वह करेगी। अगर अथर्व चाहे तो दिन के चौबीसों घंटे उसके साथ सहवास कर सकता है और वो मना नहीं कर सकती थी।

मेरी नजर में : :

आमतौर पर पुरुष एक स्खलन के आधे घंटे तक पुनः संसर्ग के लिए नहीं तैयार हो पाते। लेकिन प्रिया की कशिश ही कुछ ऐसी है की मैं तुरंत तैयार हो जाता हूँ। उसका अद्वितीय रूप, उसका भोलापन, उसकी सरलता और उसका कमसिन शरीर मेरी कामातुरता को कई गुना बढ़ा देता है। कभी कभी मन होता है की उसकी योनि में अपने लिंग का इतने बल से घर्षण करूँ की वहां लाल हो जाए। लेकिन, स्त्रियाँ हिंसा से नहीं, प्रेम से जीती जाती है। लिहाज़ा, मैं अपने मन के पशु पर लगाम लगा कर लयबद्ध तरीके से उसकी योनि का मर्दन कर रहा हूँ। उसकी कसी हुई और चिकनी योनि में मेरे लिंग का आवागमन बहुत ही सुखमय लग रहा है।

प्रिया की नजर में :

प्रिया की कामाग्नि कुछ इस प्रकार से धधक रही है की उसको न तो अपने नीचे के शिलाखंड की शीतलता महसूस हो रही है और न ही अपने पर्यावरण की। इस समय उसके पूरे अस्तित्व का केंद्र उसकी योनि थी, जहाँ पर उसके पति का लिंग अपन कर्त्तव्य कर रहा था। उसके हर धक्के में आनंद और पीड़ा की ऐसी मधुर झंकार छूट रही थी की उसको लग रहा था की वह स्वयं ही कोई वाद्य-यन्त्र हो। ऐसे ही आनंद के सागर में हिचकोले खाते हुए उसकी दृष्टि झाड़ियों के पीछे चली गयी।

'कोई तो वहां है!' हाँलाकि उसके नेत्रों में खींचे वासना के डोरे उसकी अवलोकन को धुंधला बना रहे थे, लेकिन थोडा जतन करने से उसको कुछ स्पष्ट दिखने लगा। जो व्यक्ति था, उसके कपडे बहुत ही जाने पहचाने थे। पर समझ नहीं आ रहा था की ये है कौन!

किन्तु, अपने आपको ऐसे नितांत नग्न और यौन की ऐसी प्रच्छन्न अवस्था में किसी और के द्वारा देखे जाने के एहसास से प्रिया की कामुकता और बढ़ गयी।

'कोई देखता है तो देखे! आखिर वह अपने पति के साथ समागम कर रही है, किसी गैर के साथ थोड़े ही! और देखना ही क्या? जा कर सबको बताये की प्रिया और उसका पति किस तरह से सहवास करते हैं। और यह भी की उसके पति का लिंग कितना प्रबल है!'

यह सोचते हुए कुछ ही पलों में वह रति-निष्पत्ति के आनंदातिरेक पर पहुँच गयी। उसकी योनि से काम रस बरस पड़ा और अथर्व के लिंग को भिगोने लगा। आनंद की एक प्रबल सिसकारी उसके होंठों से निकल गयी। लेकिन अथर्व का प्रहार अभी भी जारी था - उसके हर धक्के के साथ ही साथ प्रिया उछल जाती। उसको इस समय न तो अपने आस पास का अभिज्ञान था और न ही भौतिकता के किसी भी नियम का। पूर्ण आनंद से ओत प्रोत होकर प्रिया इस समय अन्तरिक्ष की सैर कर रही थी।

अश्विनी की नजर में:

अश्विनी का दिल एकदम से बैठ गया - 'दीदी उसी की तरफ देख रही है! क्या उसने मुझको देख लिया होगा? चोरी पकड़ी गयी? ऐसा लगता तो नहीं! अगर देखा होता तो शायद वो अपने आपको ढकने की कोशिश करती?' उसकी दृष्टि इस समय इस अत्यंत रोचक मैथुन के केंद्र बिंदु पर मानो चिपक ही गयी थी। जीजू का विकराल लिंग दीदी की छोटी सी योनि के अन्दर बाहर जल्दी जल्दी फिसल रहा था, और दीदी उसके हर धक्के से उछल रही थी, और आहें भर रही थी।

मेरी नजर में : :

मैंने अचानक ही प्रिया की योनि में चिकनाई बढती हुई देखी, जो की मेरे अगले धक्कों में ही मेरे लिंग के साथ बाहर आने लगी। प्रिया के शरीर की थरथराहट, गहरी गहरी साँसे, पसीने की परत, यह सब एक ही और संकेत कर रहे थे, और वह यह की प्रिया को चरम सुख प्राप्त हो गया है। लेकिन मेरी मंजिल अभी भी दो तीन मिनट दूर थी, इसलिए मैंने धक्के लगाना जारी रखा। कोई एक मिनट बाद प्रिया के शरीर की थरथराहट काफी कम हो गयी और वह अपनी आँखें खोल कर मेरी तरफ देखने लगी। कुछ देर और धक्के लगाने के बाद मुझे अपने अन्दर एक परिचित दबाव बनता महसूस हुआ। मैंने तत्क्षण कुछ नया करने का सोचा। ठीक तभी जब मेरा स्खलन होने वाला था, मैंने अपना लिंग बाहर निकाल लिया और हाथ से अपने लिंग को पकड़ कर मैथुन जैसे गति देने लगा। प्रिया ताज्जुब से मेरी इस हरकत को देखने लगी। उसके चेहरे के हाव भाव बड़ी तेजी से बदल रहे थे। मुझे उसको देख कर ऐसा लगा की उसको समझ आ गया है की मेरा प्लान अपने वीर्य को बाहर फेंकने का है। और यह एक निरादर भरा कार्य था।

वह कुछ कर या कह पाती उससे पहले ही मैंने अपने आप को छोड़ दिया - मेरे गर्म, सफ़ेद वीर्य के लम्बे मोटे डोरे उसके पेट और जाँघों पर छलक गए। वीर्य की कुछ छोटी-छोटी बूँदें उसके योनि के बालों पर उलझ गईं। ऐसा करते हुए मेरी भरी हुई साँसों के साथ कराहें भी निकल गयीं - मेरे पाँव इस तरह कांपे की मुझे लगा की मैं अभी गिर जाऊँगा। मैंने पकड़ कर अपने आप को सम्हाला।

प्रिया ने मेरे वीर्य से सने और रक्त वर्ण लिंग को देखा, फिर अपने पेट पर पड़े वीर्य को देखा और फिर बड़े अविश्वास से मेरी तरफ देखा। कुछ देर ऐसे ही घूरने के बाद उसने हाँफते हुए बोला,

"आपने ऐसे क्यों किया? मैंने आपको बोला था की आपका बीज मुझे मेरे अन्दर चाहिए!"

मैं अभी भी अपने आनंद के चरम पर था।

"जानेमन! सॉरी! आगे से सारा सीमन आपके अन्दर ही डालूँगा!"

मेरी बात सुन कर पहले तो उसको संतोष हुआ और फिर यह सोच कर की मेरा वीर्य लेने के लिए उसको सहवास करना पड़ेगा, उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया।

"इन द मीनटाइम, क्लीन दिस …" मैंने लिंग की तरफ इशारा करते हुए कहा।

प्रिया मेरे यह कहने पर उठी और मेरे अर्ध उत्तेजित लिंग को अपने मुंह में लेकर चूसने लगी।

अश्विनी की नजर में : :

अश्विनी ने जो कुछ देखा, उससे उसका मन जुगुप्सा से पुनः भर गया। दीदी जीजू के छुन्नू को मुँह में भर कर चूस रही थी।

'पहले जीजू, और अब दीदी! ये शादी करते ही क्या हो गया इसको? कितना गन्दा गन्दा काम! और वो भी ऐसे खुले में? और वो जीजू ने दीदी के ऊपर ही पेशाब कर दिया! (अश्विनी की अथर्व का वीर्यपात पेशाब करने जैसा लगा)? अरे इतनी जोर से लगी थी तो वहां बगल में कर लेते!'

अश्विनी ने देखा की कुछ देर चूसने के बाद दीदी जीजू से अलग हो गयी और दोनों ही उठ कर झील की तरफ चलने लगे। वहां पहुँच कर जीजू और दीदी अपने अपने शरीर को धोने लगे, और कुछ देर में वापस आकर उसी टीले पर बैठ गए। और आपस में एक दूसरे को गले लगा कर चूमने और पलासने लगे। लेकिन दोनों ने कपडे अभी तक नहीं पहने।

'अरे! ऐसे तो दोनों को ठंडक लग जाएगी और इनकी तबियत ख़राब हो जाएगी। कुछ तो करना पड़ेगा! ये दोनों तो न जाने कब तक कपडे नहीं पहनेंगे - मैं ही उनके पास चली जाती हूँ। जब इन्ही लोगो को कोई शर्म नहीं है तो मैं क्यों शरमाऊँ?'

मेरी नजर में : : :

"दीदी?" यह आवाज़ सुन कर हम दोनों ही चौंक गए - हमारा चुम्बन और आलिंगन टूट गया और उस आवाज़ की दिशा में हड़बड़ा कर देखने लगे। मैंने देखा की वहां तो अश्विनी खड़ी है।

"अरे! अश्विनी?" प्रिया हड़बड़ा गयी - एक हाथ से उसने अपने स्तन और दूसरे से अपनी योनि छुपाने का प्रयास किया। "…. तू कब आई?" यह प्रश्न उसने अपनी शर्मिंदगी छुपाने के लिए किया था। प्रिया को समझ आ गया था की उन दोनों की गरमागरम रति-क्रिया अश्विनी बहुत देर से देख रही है।

मैंने अश्विनी को देखकर अपनी नितांत नग्नता को महसूस किया और मैं भी हड़बड़ी में अपने शरीर को ढकने का असफल प्रयास करने लगा। हमारे कपडे उस चट्टान पर थोड़ा दूर रखे हुए थे, अतः चाह कर भी हम लोग जल्दी से कपडे नहीं पहन सकते थे।

"दीदी मैं अभी आई हूँ …. माँ ने आप दोनों के पीछे भेजा था मुझे, आप लोगो को वापस लिवाने के लिए। वो कह रही थी की मौसम खराब हो जाएगा और आप लोगो की तबियत न ख़राब हो जाए!"

कहते हुए उसने एक भरपूर नज़र मेरे शरीर पर डाली। मुझे मालूम था की अश्विनी ने मुझे और प्रिया को पूरा नग्न तो देख ही लिया है, तो अब छुपाने को क्या ही है? अतः मैंने भी अपने शरीर को छुपाने की कोई कोशिश नहीं की - उसने हमको काफी देर तक देखा होगा - संभव है की सहवास करते हुए भी। संभव नहीं, निश्चित है। लिहाज़ा, अब उससे छुपाने को अब कुछ रह नहीं गया था।

अश्विनी के हाव भाव देख कर मुझे लगा की वह हमारी नग्नता से काफी नर्वस है। हो सकता है की हमारे सहवास को देख कर वह लज्जित या जेहनी तौर पर उलझ गयी हो। उधर प्रिया बड़े जतन से अपने स्तनों को अपने हाथों से ढँके हुए थी।

"अच्छा …" प्रिया ने शर्माते हुए कहा। वो बेचारी जितना सिमटी जा रही थी, उसके अंग उतने अधिक अनावृत होते जा रहे थे। "…. वो हमारे कपड़े यहाँ ले आ …. प्लीज!" प्रिया ने विनती करी। अश्विनी बात मान कर हमारे कपड़े लाने लगी।

"आप लोग ऐसे नंग्युल .... मेरा मतलब ऐसे नंगे क्यों हैं? ठंडक लग जायेगी न! कर क्या रहे थे आप लोग?" उसने एक ही सांस में पूछ डाला।

"हम लोग एक दूसरे को प्यार कर रहे थे, बच्चे!" मैंने माहौल को हल्का बनाने के लिए कहा।

"प्यार कर रहे थे, या मेरी दीदी को मार रहे थे। मैंने देखा ... दीदी दर्द के मारे कराह रही थी, लेकिन आप थे की उसको मारते ही जा रहे थे।"

'ओके! तो उसने हम दोनों को सहवास करते देख लिया है।' मुझे लगा की अश्विनी हम दोनों को ऐसे देख कर संभवतः चकित हो गयी है - वैसे जब बच्चे इस तरह की घटना घटते देखते हैं, तो समझ नहीं पाते की क्या हो रहा है। कई बार वे डर भी जाते हैं, और उस डर की घुटन से अजीब तरह से बर्ताव करने लगते हैं। अश्विनी सतही तौर पर उतनी बुरी हालत में नहीं लग रही थी, लेकिन कुछ कह नहीं सकते थे। मुझे लग रहा था की उसमें इस घटना को समझने की दक्षता तो थी, लेकिन अभी उचित और पर्याप्त ज्ञान नहीं था।

उसने पहले प्रिया को, और फिर मुझको हमारे कपड़े दिए, मैंने कपडे लेते हुए उसका हाथ पकड़ लिया और अपने ओर खींच कर उसकी कमर को पकड़ लिया और उसकी आँख में आँख डाल कर, मुस्कुराते हुए, बहुत ही नरमी से कहा,

"तुम्हारी दीदी को मारने की मैं सपने में भी नहीं सोच सकता - वो जान है मेरी! उसकी ख़ुशी मेरे लिए सब कुछ है और मैं उसकी ख़ुशी के लिए कुछ भी करूंगा। हम लोग वाकई एक दूसरे को प्यार कर रहे थे - वैसे जैसे की शादीशुदा लोग करते हैं। लेकिन, तुम अभी यह बात नहीं समझोगी। जब तुम्हारी शादी हो जायेगी न, तब तुमको मालूम होगा की दाजू सही कह रहे थे। तब तक मेरी कही हुई बात पर भरोसा करो .... ओके? तुम्हारी दीदी और मैं, हम दोनों एक हैं!"

अश्विनी ने अत्यंत मिले जुले भाव से मुझे देखा (मुझे स्पष्ट नहीं समझ आया की वह क्या सोच रही थी) और फिर सर हिला कर हामी भरी। मैंने उसके माथे पर एक छोटा सा चुम्बन दिया। मैंने देखा की उधर प्रिया कपड़े पहनते हुए हमको ध्यान से देख रही है, और जब मैंने अश्विनी को चूमा, तो प्रिया मुस्कुरा उठी। उस मुस्कान में मेरे लिए प्रशंसा और प्यार भरा हुआ था। अश्विनी मेरे द्वारा इस तरह खुले आम चूमे जाने से शरमा गयी - उसके गाल सेब

जैसे लाल हो गए, अतः मैंने उसको जोर से गले से लगा लिया, जिससे उसको और शर्मिंदगी न हो।

जब वो अलग हुई तो बोली, "दाजू, आप बहुत अच्छे हो! … और एक बात कहूं? आप और दीदी साथ में बहुत सुन्दर लगते हैं!" इसके जवाब में अश्विनी को मेरी तरफ से एक और चुम्बन मिला, और कुछ ही देर में प्रिया की तरफ से भी, जो अब तक अपने कपडे पहन चुकी थी।

कोई दो मिनट में हम दोनों ही शालीनता पूर्वक तरीके से कपड़े पहन कर, अश्विनी के साथ वापस घर को रवाना हो रहे थे।

वापस आते समय हम बिलकुल अलग रास्ते से आये और तब मुझे समझ आया की प्रिया मुझे लम्बे और एकांत रास्ते से लायी थी - यह सोच कर मेरे होंठों पर शरारत भरी मुस्कान आ गयी। खैर, इस नए रास्ते के अपने फायदे थे। यह रास्ता अपेक्षाकृत छोटा था और इस रास्ते पर घर और दुकाने भी थीं। वैसे अगर मन में मौसम खराब होने की आशंका हो तो अच्छा ही है की आप आबादी वाली जगह पर हों - इससे सहायता मिलने में आसानी रहती है।

इस छोटी जगह में मैं एक मुख़्तलिफ़ इंसान था। ऐसा सोचिये जैसे की स्वदेस फिल्म का 'मोहन भार्गव'। मैं स्थानीय नहीं था, बल्कि बाहर से आया था; मेरे हाव भाव और ढंग बहुत भिन्न थे; मुझे इनकी भाषा नहीं आती थी, इन्ही लोगो को दया कर के मुझसे हिंदी में बात करनी पड़ती थी - मुझसे ये लोग कई सारे मजेदार प्रश्न पूछते जिनसे इनका भोलापन ही उजागर होता; और तो और बहुत सारे लोग मुझे बहुत ही जिज्ञासु निगाहों से देखते थे - मुझसे बात करने के बजाय मुझे देख कर आपस में ही खुसुर पुसुर करने लगते। लेकिन, अब सबसे बड़ी बात यह थी की मैं यहाँ का दामाद था। इसलिए लोग ऐसे ही काफी मित्रवत व्यवहार कर रहे थे। यहाँ जितने भी लोगों ने हमको देखा, सभी ने हमसे मुलाक़ात की, अपने घर में बुलाया और आशीर्वाद दिया। नाश्ते इत्यादि के आग्रह करने पर हमने कई लोगो को टाला, लेकिन एक परिवार ने हमको जबरदस्ती घर में बुला ही लिया और हमारे लिए चाय और हलके नाश्ते का बंदोबस्त भी किया। वहां करीब आधे घंटे बैठे और जब तक हम लोग वापस आये तब शाम होने लगी थी।

इस समय तक मुझे वाकई ठंडक लगने लगी थी - और लम्बे समय तक अनावृत अवस्था में रहने से ठण्ड कुछ अधिक ही लग रही थी।

घर आकर देखा की आस पास की पाँच-छः स्त्रियाँ आकर रसोई घर में कार्यरत थी। पता चला की आज भी कुछ पकवान बनेंगे! मैंने सवेरे जो मैती आन्दोलन के लिए जिस प्रकार का सहयोग दिया था, उससे प्रभावित होकर स्त्रियाँ कर-सेवा करने आई थी और साझे में खाना बना रही थी। वो सारे परिवार आ कर एक साथ खाना खायेंगे। मैंने प्रिया से गुजारिश करी की कुछ स्थानीय और रोज़मर्रा का खाना बनाए। वो तो तुरंत ही शुरू ही किया गया था, इसलिए मेरी यह विनती मान ली गयी।

खाने के पहले करीबी लोग साथ बैठ कर हंसी मजाक कर रहे थे। एक भाई साहब अपने घर से म्यूजिक सिस्टम ले आये थे और उस पर 'गोल्डन ओल्डीस' वाले गीत बजा रहे थे। उन्होंने ने ही बताया की प्रिया गाती भी है, और बहुत अच्छा गाती है। उसकी यह कला तो खैर मुझे मालूम नहीं थी। वैसे भी, हमको एक दूसरे के बारे में मालूम ही क्या था? मुझे उसके बारे में बस यह मालूम था की उसको देखते ही मेरे दिल ने आवाज़ दी की यही वह लड़की है जिसके साथ तुम्हे पूरी उम्र गुजारनी है।

मेरे अनुरोध करने पर प्रिया ने गाना आरम्भ किया ---

'तेरा मेरा प्यार अमर, फिर क्यो मुझ को लगता हैं डर ,

मेरे जीवन साथी बता, क्यो दिल धड़के रह रह कर'

उसकी आवाज़ का भोलापन और सच्चाई मेरे दिल को सीधा छू गया। उसकी आवाज़ लता जी जैसी तो नहीं थी, लेकिन उसकी मिठास उनकी आवाज़ से सौ गुना अधिक थी। मेरा मन उस आवाज़ के सागर में गोते लगाने लगा।

'कह रहा हैं मेरा दिल अब ये रात ना ढले,

खुशियों का ये सिलसिला, ऐसे ही चला चले"

मेरे मन में हमारे साथ बिताये हुए इन दो दिनों की घटनाएं और दृश्य चलचित्र की भाँति चलने लगे। मन में एक हूक सी हो गयी। प्रिया के बगैर एक भी पल नहीं चाहिए मुझे मेरे जीवन में!

'चलती हू मैं तारों पर, फिर क्यो मुझ को लगता हैं डर'

वही डर जो मुझे भी लगता है। प्यार में होना, जहाँ अत्यधिक संतोषप्रद और परिपूरक होता है, वहीँ अपने प्रेम को खोने का डर भी लगता है। गाना ख़तम हो गया था, और मैं प्रिया की आँखों में देख रहा था - और वो मुझे! उसकी आँखों में यकीन दिलाने वाली चमक थी - इस बात का यकीन की मैं तुम्हारे साथ हूँ, हमेशा! मेरे ह्रदय में एक धमक सी हो गयी। ऐसा कभी नहीं हुआ। हमारा प्रेम बढ़ता ही जा रहा था, और हमारे साथ के प्रत्येक पल के साथ और प्रगाढ़ होता जा रहा था।

जब थाली परोसी गयी तो मैं घबरा गया - ये रोज़मर्रा की थाली है?! मुझको जो परोसा गया वह था - पुलाव, राजमा दाल, स्वांटे के पकौड़े, स्वाले (एक तरह के परांठे), और खीर - जो प्रिया ने बनायी। सबसे अच्छी बात मुझको यह लगी की सभी लोग टाट-पट्टी पर साथ में बैठ कर साथ में खाना खा रहे थे। यहाँ लगता है की स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ बैठ कर खाना नहीं खाती, लेकिन मेरे दबाव में प्रिया मेरे साथ ही खाने बैठ गयी। वह सलज्ज, लेकिन संयत लग रही थी। पहले तो शादी होने के बाद भी सलवार-कुर्ता पहनना, फिर खुलेआम एक रोमांटिक गाना, और अब साथ में बैठ कर खाना - इस छोटी सी जगह के लिए बहुत बड़ा अपवाद था।

पहाड़ पर चढ़ने, और ठंडक में इतनी देर तक अनावृत रहने से मेरी भूख काफी बढ़ गयी थी, इसलिए मैंने छक कर खाया, और प्रिया को भी आग्रह कर के खिलाया। खाने के बाद कस्बे के बड़े-बूढ़े लोग भी साथ आ गए - हम लोग अलाव जला कर उसके इर्द-गिर्द बैठे और कुछ देर यूँ ही इधर उधर की बात की। यहाँ पर कल और रहना था और परसों वापस अपने शहर - कंक्रीट जंगल - को! मेरे पास वैसे तो छुट्टियाँ काफी थीं, लेकिन अभी तक हनीमून का कोई प्लान नहीं बनाया था।

मैंने प्रिया से शादी के पहले पूछा था की वो कहाँ जाना पसंद करेगी, लेकिन यह प्रतीत होता था की उसको हनीमून जैसी चीज़ के बारे में कुछ भी नहीं मालूम था। और उस समय हम दोनों इतनी कम बाते करते थे की यह संभव नहीं था की इसके बारे में प्रिया को तफसील से बता पाऊँ! मुझे यह अचानक ही याद आया की हनीमून का तो कोई प्लान ही नहीं बनाया है।

'ठीक है .... अभी प्रिया से इस विषय में चर्चा करूँगा।' मैंने सोचा।

वैसे भी विदेश में जा कर हनीमून करना संभव नहीं था, क्योंकि एक तो प्रिया के पास पासपोर्ट नहीं था, और दूसरा उसके लिए काफी योजना करनी होती है। खैर उसी से यह

बात करने पर कोई हल निकलेगा। मैंने अपने शादी-शुदा दोस्तों को एस एम एस भेजे की मुझे हनीमून आईडिया भेजें - जो भारत में हों - वो भी तुरंत। मैंने वैसे भी कहीं मनोरंजन के इरादे से यात्रा नहीं करी थी - बस एक बार की, तो उसी में मुझको अपनी जीवन संगिनी भी मिल गयी।

अगले पन्द्रह मिनट में शादी की बधाई के साथ मुझे कम से कम बीस अलग अलग जगहों के बारे में मालूम हो गया - पहाड़ो से लेकर रेगिस्तान तक, धर्म स्थानों (आखिर हनीमून के लिए कौन गधा धर्म-स्थान जाता है?) से लेकर नग्न-बीचों तक। पहाड़, धर्म-स्थान, रेगिस्तान, और जंगल वाले आईडिया मैंने नकार दिए (हाँलाकि जंगल वाला आईडिया मुझे बहुत अच्छा लगा - लेकिन मैंने सोचा की उसको बाद में देखा जाएगा।

नग्न बीच तो भारत में तो होते नहीं - लेकिन बीच का आईडिया मस्त है, मैंने सोचा। प्रिया के लिए एकदम नया होगा। उसने अभी तक सिर्फ पहाड़ ही देखे हैं - इस जगह से आगे कभी गयी ही नहीं। उसने बस किताबों में ही पढ़ा होगा। मैंने अपने दोस्तों को पुनः एस एम एस भेजे की मुझे बीच के विभिन्न आईडिया बताएं।

अगले आधे घंटे में मुझको गोवा, केरल, अंडमान और लक्षद्वीप के बारे में मालूम हो गया। लगभग सभी ने गोवा के बारे में बोला अवश्य। इसी से मुझे स्पष्ट हो गया की वहां नहीं जाना है - निश्चित रूप से बहुत ही भीड़-भाड़ वाली जगह होगी। कोई ऐसी जगह चाहिए जो साफ़ सुथरी हो, सुरक्षित हो, और जहाँ पर्याप्त एकांत भी मिले।

फिर मैंने अपने बॉस को फ़ोन किया और अपना प्लान बताया। आप लोगो सोचेंगे की ऐसा बॉस सभी को मिले - लेकिन उसने पहले तो मुझे विवाह की बधाइयाँ दीं और फिर बहुत ही ख़ुशी से मुझको वापस आने के लिए 'अपना समय लेने' को कहा (इतने दिनों के काम में मैंने शायद ही कभी छुट्टी ली हो - उसको कभी कभी यह डर लगता था की कहीं मुझे काम के कारण बर्न-आउट न हो जाए। वो मेरे जैसे लाभकर कर्मचारी का क्षय नहीं करना चाहता था। उसने मुझे अंडमान जाने को कहा, और यह भी बताया की उसका एक मित्र है जो वहां एक उम्दा होटल का मालिक है। और यह की वह होटल एकदम फर्स्ट क्लास है (वह खुद भी वहां रह चुका है), और वह अपने दोस्त को मुझे डिस्काउंट देने के लिए भी बोलेगा। मुझे तो उसका सुझाव बहुत अच्छा लगा, लेकिन प्रिया की रजामंदी भी उतनी ही आवश्यक थी। अतः मैंने उसको कहा की मैं सवेरे फोन कर के बताऊँगा।

"यहाँ तो बहुत ठंडक हो जाती है! बाप रे! आप लोग रहते कैसे हैं?" मैंने कमरे के अन्दर आते हुए प्रिया से पूछा। मैं अपने हाथों को रगड़ कर गरम करने का प्रयास कर रहा था। प्रिया इस समय कुछ कपडे तह करके एक तरफ रख रही थी।

"आपको आदत नहीं है न! इसीलिए आपको इतनी ठंडक लग रही है। और आप सिर्फ एक स्वेटर क्यों लाये? पहाडों पर आए और वो भी इस मौसम में! कुछ और गर्म कपडे रखने चाहिए थे न?" प्रिया ने हँसते हुए जवाब दिया।

"आपको कैसे मालूम की मेरे पास सिर्फ एक स्वेटर है? मेरे पीछे पीछे मेरा सामान चेक कर रही थीं क्या?" मैंने मजाक करते हुए कहा।

"हाँ! आपके कुछ कपड़े आपके बैग में रखने थे, इसलिए।" प्रिया ने पत्नी-सुलभ अधिकार और मान वाली आवाज़ में कहा। मैं मुस्कुराया - अब 'मेरा सामान' जैसा कुछ नहीं है!

"आपने कभी बताया ही नहीं, की आप इतना बढ़िया गाती हैं? मैं अब तो रोज़ सुनूँगा गाने!" प्रिया ने कुछ नहीं कहा, बस लज्जा से मुस्कुराई। मेरे चेहरे पर उसके लिए प्रेम, प्रशंसा, और गर्व के कितने ही सारे मिले जुले भाव आये। मेरी आवाज़ आर्द्र हो चली, लेकिन फिर भी मैंने उसको कहा,

"सच कहूं? यू चेंज्ड माय लाइफ! थैंक यू!" मेरी यह बात सुनते सुनते प्रिया की आँखें भर आईं, और वो तेज़ी से मेरे पास आकर मुझसे लिपट गयी। अब 'आई लव यू' कहने की ज़रुरत नहीं थी। हम दोनों इन मामूली औपचारिकताओं से ऊपर उठ गए थे। मैंने उसको अपने से चिपटाए हुए ही कहा, "आपको मालूम है न, की परसों एकदम सवेरे ही हम लोगो को यहाँ से वापस जाना है?"

यह सुन कर प्रिया जाहिर तौर पर उदास हो गयी और उसने बहुत धीरे से सर हिलाया।

"जानू, प्लीज! उदास मत होइए! हम लोग यहाँ हमेशा तो नहीं रह सकते हैं न? जाना तो होगा?" उसने फिर से सर हिलाया।

"माँ बाबा को छोड़ कर जाने से दु:ख तो होगा, लेकिन मैं आपका पूरा ख़याल रखूंगा। आपको मुझ पर भरोसा है न?" प्रिया ने मेरी आँखों में एक गहन दृष्टि डाली और कहा,

"आप पर जितना भरोसा है, मुझे वो खुद पर नहीं है! आपके साथ मैं कहीं भी जाऊंगी। और मुझे मालूम है की आप मुझे हमेशा खुश रखेंगे। इसका उल्टा तो मैं सोच भी नहीं सकती।"

मैंने संतोषप्रद सांस भरी, "चलिए, बिस्तर पर चलते हैं ..."

प्रिया ने बिस्तर को थोडा व्यवस्थित किया और मेरे पहले बैठने का इंतज़ार करने लगी। मैं उसका आशय समझ कर जल्दी से बिस्तर के कगार पर बैठ गया, और उसको इशारे से अपनी तरफ बुलाया। प्रिया मुस्कुराते हुए मेरे पास आकर खड़ी हो गयी। मानव शरीर और मष्तिष्क अपने परिवेश से कितनी जल्दी अनुबन्ध स्थापित कर लेता है! पिछले दो दिवस से चल रही अनवरत यौन क्रिया ने प्रिया के दिमाग का कुछ ऐसा ही अनुकूलन कर दिया था - जैसे ही हमको एकांत मिलता, प्रिया को लगता कि सहवास होने वाला है। वैसे मेरे भी हालत उसके सामान ही थी - प्रिया मेरे आस पास रहती तो मेरे मन में और लिंग में हलचल सी होने लगती।

"कम .... गिव मी अ किस!" मैंने उसकी कमर को थामते हुए कहा। मेरी इस बात से प्रिया के गाल एकदम से सुर्ख हो गए। मैंने बड़ी मृदुलता से उसके सर को मेरी तरफ झुकाया और उसकी आँखों में देखा। वहाँ लज्जा, प्रेम, रोमांच और प्रसन्नता के मिले-जुले भाव थे। मैंने अपने होंठों को उसके होंठो से सटाया और अपनी जीभ को उसके होंठो के बीच धीरे से धकेल दिया। प्रिया के होंठ सहजता से खुल गए, और मेरी जीभ उसके मुख में चली गयी। मैंने अपनी जीभ से उसके मुख के भीतर टटोलना शुरू कर दिया और कुछ ही पलों में उसकी जीभ को महसूस किया। प्रिया ने भी मेरा अनुसरण करते हुए अपनी जीभ चलानी शुरू कर दी।

इस सुंदरी को इस प्रकार चूमने का संवेदन अतुल्य था - मुझे लगा कि मैं पुनः अपने किशोरावस्था में आ गया। मुझे चूमते हुए प्रिया अब और झुक गयी - उसकी बाहें मेरे गले का घेरा डाले थीं। उसके कोमल बालों का मेरे चेहरे पर स्पर्श बहुत ही आनंददायक था। मैंने उसके कपोलों पर अपनी हथेलियों से थोडा और दबाव डाला और उसको फ्रेंच किस करना जारी रखा। कुछ देर बाद मैंने उसकी पीठ को सहलाते हुए अपने चुम्बन को एक भिन्न दिशा देना आरम्भ किया, और अंततः उसके नितम्ब को थाम लिया और उसको अपनी गोदी में बिठा लिया, कुछ इस तरह की उसके दोनों पैर मेरे दोनों तरफ रहें और उसकी योनि वाला हिस्सा मेरे लिंग वाले हिस्से के ठीक सामने रहे।

अद्भुत बात है, मैंने सोचा, कि मैंने पिछले दो दिनों में सहवास का मैराथन किया था और आज की पदयात्रा के कारण थक भी गया था। स्वाभाविक रूप से मुझमें अभी उत्तेजना नहीं आनी चाहिए थी। लेकिन, मेरे लिंग कि अवस्था कुछ और ही कह रही थी। किसी ज्ञानी ने सही ही कहा है कि लिंगों का अपना ही दिमाग होता है - भले ही विज्ञान कुछ और ही कहे। प्रिया का पेडू मेरे लिंग से एकदम सटा हुआ था, लिहाज़ा, उसको निश्चित तौर पर मेरे लिंग का कड़ापन महसूस हो रहा था। मैं निश्चित रूप से बहुत उत्तेजित हो चला था।

मैंने उसके आकर्षक नितम्बो को अपने हथेलियों से सौंदना शुरू किया। प्रिया मत्त होकर मेरे सीने को सहला रही थी - सम्भव है कि उसको भी अब मेरे सामान ही उत्तेजना प्राप्त हो गयी हो। क्रिया को आगे बढ़ाने के लिए मैंने उसके सलवार का नाडा ढीला कर दिया और अपनी तर्जनी से उसके पुट्ठों के बीच की घाटी को सहलाया। वह सम्भवतः मुझे चूमने में अत्यधिक व्यस्त थी, अतः मेरी इस क्रिया कि उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखायी। मैंने अपना हाथ ऊपर सरका कर उसके पेट और पसलियों को सहलाते हुए उसके स्तनों के आधार को छुआ। प्रिया ने थोडा सा हट कर मेरे हाथों समुचित स्थान दिया। मैंने अपने हथेलियों को अपने सीने और उसके स्तन के बीच के स्थान में आगे बढ़ा कर, उसके स्तनो को पुनः महसूस करना शुरू किया। ठोस स्तनो से उसके दोनों स्तनाग्र तन कर खड़े हुए थे, और कुर्ते और स्वेटर के ऊपर से भी अच्छी तरह से टटोले जा सकते थे।

मेरा लिंग पूरी तरह से अब खड़ा हो गया था, और निश्चित तौर पर प्रिया उसको महसूस कर सकती थी। सम्भवतः वह लिंग के कड़ेपन का आनंद भी उठा रही थी, क्योंकि इस समय अपने नितम्ब वह बहुत थोड़ा भी मेरी गोद पर घिस रही थी। यह अविश्वसनीय रूप से कामुक था। इसी उत्तेजना में मैंने उसके कूल्हों पर अपने हाथ चलाना शुरू कर दिया। लेकिन सलवार के ऊपर से यह काम करने में कोई ख़ास मज़ा नहीं आ रहा था, अतः मैंने कुछ इस तरह कि प्रिया को न मालूम पड़े, उसकी सलवार को नीचे कि ओर सरका दिया। प्रिया ने चड्ढी पहनी हुई थी - लेकिन इस समय उसके इस खूबसूरत हिस्से का अधिक अभिगम मिल गया था। मैंने अपनी हथेलियों से उसके नंगे नितंबो का आनंद उठाना आरम्भ कर दिया। अचानक ही मैंने धीरे से मेरी उंगलियों से उसके नितंबों के बीच की दरार को छुआ। मेरे ऐसा करते ही प्रिया का चुम्बन रुक गया, और उसके साँसे अब और गहरी, और तेज हो गयीं। हमारी आँखें आपस में मिलीं। उसका चेहरा संतोष की एक सुंदर नरम अभिव्यक्ति लिए था, और मैं इस दृश्य को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। मैं मुस्कुराया और प्रिया भी। मैंने उसकी सुंदर नाक को चूमा और उसको बताया कि मैं उसको बहुत प्यार करता हूँ।

प्रिया मेरी गोद से उठ खड़ी हुई और मैंने बिना कोई समय खोए उसका सलवार और चड्ढी पूरी तरह से उतार दिया। मैंने देखा की प्रिया की योनि अभी होने वाली रति क्रिया के पूर्वानुमान से गीली हो गयी थी। मैंने उसको वापस अपनी गोद में बैठा लिया और चूमना आरम्भ किया। मैंने अभी तक अपने कपडे नहीं उतारे थे, लिहाज़ा उसकी योनि का गीलापन, अब मेरे कपड़ो को भिगो रहा था। मेरे हाथ इस समय उसके कुर्ते के अंदर था, और मैं उसकी पीठ को सहला रहा था। उसकी पीठ को सहलाते हुए मैं उसकी पीठ के निचले हिस्से को, जहाँ डिंपल होते हैं, अपनी उंगलियों से सहलाने लगा। प्रिया का शरीर स्वयं ही मेरे स्पर्श से ताल मिलाने लगा। मैंने धीरे धीरे अपने हाथों को उसके शरीर के ऊपर की तरफ ले जाने लगा। मेरा परम लक्ष्य उसके छोटे और ठोस स्तनों की सुंदर जोड़ी थी। लेकिन मैं इस काम में कोई जल्दी नहीं करना चाहता था। मैं चाहता था कि प्रिया अपने शरीर को सहलाये और दुलराये जाने की अनुभूति का पूरा आनंद उठाये।

मैंने उसकी पसलियों को सहलाया और सहलाते हुए अपने अंगूठों से उसके स्तनों के बाहरी गोलाइयों को छुआ। उसका शरीर इस संवेदन के जवाब में पीछे को तरफ झुक गया, लेकिन यह कुछ इतनी जल्दी से हुआ कि उसको सम्हालने के चक्कर में मेरे हाथ फिसल कर उसके स्तनो पर जा टिके। प्रिया ने मुझे चूमना जारी रखा, और मेरे हाथों को अपने स्तनों पर महसूस करके पूरी तरह से खुश लग रही थी। मैंने उसके शानदार स्तनों को सहलाया। मेरे हाथों ने उसके स्तनों को पूरी तरह से ढक रखा था और उनको इस तरह से पूरी तरह से प्रवरण करने में सक्षम होने की अनुभूति अद्भुत थी। मैंने कोमलता से उसके स्तनाग्रों को सहलाया - जवाब में प्रिया एक गहरी सांस भरती हुई पीछे कि तरफ मुड़ गयी। उसने चूमना बंद कर दिया था और मुँह से भारी साँसे भर रही थी। उसके शरीर की मेरे स्पर्श की इस तरह से प्रतिक्रिया करते देखना अद्भुत था।

अब समय आ गया था कि प्रिया को पूर्णतया नग्न कर दिया जाए। मैंने उसके कुर्ते का निचला हिस्सा पकड़ कर उसको निकालने लगा। प्रिया ने भी अपने हाथ उठा कर कुर्ते को उतारने में सहयोग किया। इस प्रकार नग्न होने के बाद, प्रिया पीठ के बल लेट गयी - इसके दोनों हाथ उसके दोनों तरफ थे। मैं भी एक करवट में उसके बगल आकर लेट गया और दृष्टि भर कर उसके रूप का रसास्वादन करने लगा। उसके स्तन इतने सुन्दर थे कि मैं उनको अपनी पूरी उम्र देख सकता था - खूबसूरती से तराशे हुए! मैंने अपने सामने चल रहे इस अद्भुत दृश्य की प्रशंसा में दीर्घश्वास छोड़ा। प्रिया ने वह आवाज़ सुन कर मेरी तरफ गर्व और लज्जा के मिले-जुले भाव से देखा।

मैंने लेटे लेटे ही उसके रूप का दृष्टि निरिक्षण करना जारी रखा - और उसके स्तनों, पसलियों और पेट से होते हुए उसके आकर्षक कूल्हे का अवलोकन किया। लेते हुए उसका पेट थोड़ा अवतल लग रहा था (बैठे हुए वह सपाट लगता है) और उसकी कूल्हे की हड्डियां पेट से अधिक ऊपर उठी हुई थीं और स्पष्ट रूप से परिभाषित दिख रही थीं। मेरे लिए इस प्रकार का नारी शरीर अत्यधिक आकर्षक है। दृष्टि थोड़ी और आगे बढ़ी तो उसके जघन क्षेत्र के बाल दिखने लगे। और नीचे देखा तो उसका सूजा हुआ भगोष्ठ और उन दोनों के बीच में स्थित लगभग बाल-विहीन, उसके अन्तर्भाग का द्वार, बहुत ही लुभावना दिख रहा था। मेरे इस निरिक्षण क्रिया के बीच में प्रिया ने कुछ भी नहीं कहा - इस समय उसकी साँसे भी आश्चर्यजनक रूप से शांत थीं। मुझे अचानक ही अपने कार्यस्थल से एक मज़ेदार बात याद आ गयी - कि अगर मैं प्रिया पर कोई रिपोर्ट लिख रहा होता, तो उसको मैं 'अ' मूल्यांकन देता।

उसी समय मुझे ध्यान आया कि मैं तो अभी भी पूरी तरह से कपड़े पहने हुए था। मैंने जल्दी से अपने सारे कपडे उतार दिए, जिससे मुख्य कार्य में कोई विलम्ब न हो। मेरा इरादा प्रिया के शरीर के एक एक इंच का आस्वादन अपने हाथ और मुंह से करने का था। मैंने उसके इस काम के लिए चेहरे से आरम्भ करने कि सोची। मैंने प्रिया को होंठों पर चूमा तो वह भी मुझे चूमने लगी, लेकिन मेरा प्लान अलग था। मैंने उसके पूरे चेहरे को चूमा और फिर उसके कान के निकट गया। मैंने उसके कान को चूमते हुए उसकी लोलकी को धीरे से काटन और चबाना शुरू किया। उसके दूसरे कान के साथ भी यही हुआ। मैंने साथ ही साथ अपने खाली हाथों से उसके शरीर को सहलाना भी शुरू किया। इस सम्मिलित प्रहार का असर यह हुआ कि प्रिया कि साँसे फिर से बढ़ने लगीं। ऐसे ही सहलाते सहलाते मैंने उसके एक स्तन को अपने हाथ से ढक लिया और कुछ देर उनको यूँ ही दबाया। मैंने देखा कि प्रिया कि आँखें अब बमुश्किल ही खुल पा रही थीं।

मैं उसकी गर्दन से होते हुए नीचे कि तरफ जाकर उसके सीने के ऊपरी हिस्से चूमने लगा। नीचे बढ़ते हुए मैंने उसके स्तनों के बीच के हिस्से, उनके नीचे और आसपास चूमा और जीभ से छेड़ा। प्रिया की सांस अब काफी बढ़ गयीं थीं और उसकी आँखें कास कर बंद हो गयी थीं। उसके दोनों हाथ अभी भी उसके बगल में ही थे, लेकिन उन्माद में उसकी मुट्ठियां बंध गयीं थीं। मैंने एक और बात देखी, और वह यह कि उसने अपनी कामुक अवचेतना में अपनी टाँगे थोड़ी खोल दी थीं जिससे मैंन उसके योनि-क्षेत्र का अन्वेषण कर सकूं, मैंने अभी तक उसके स्तनों पर अपना कार्य समाप्त नहीं किया गया था।

मैंने उसके एक स्तनाग्र पर अपनी जीभ फिराई - प्रिया ने कांपते हुए तेज़ सांस भरी। उसकी छाती एकदम से ऊपर उठ गयी, जिससे उसका स्तन मेरे मुंह में अनायास ही भर गया। मैंने उसके चेहरे को देखा, उसकी आँखें अभी भी कस कर बंद थीं, लेकिन सांस भरने के कारण उसके होंठ थोड़ा जुदा थे। मैंने पुनः उसके स्तनाग्र को चाटा तो एक बार फिर से उसकी छाती मेरे उठ कर मेरे छेड़ते हुए मुंह में भर गयी। मैंने उस स्तनाग्र को मुंह में भरा और धीरे से चूसने, चबाने और काटने लगा। उसकी साँसे अब और अधिक तेजी से चलने लगीं साँस ले रहा था और बेचैनी में अपने सर को इधर उधर चलाने लगी। ऐसा करने से उसके बाल बिस्तर पर फ़ैल गए। वाह! क्या गज़ब की कामुक लग रही थी वह! कुछ देर उसके स्तन को इसी प्रकार छेड़ने के बाद मैंने दूसरे स्तन पर भी यही क्रिया आरम्भ कर दी, लेकिन पहले वाले स्तन को छोड़ा नहीं - उसको अपने हाथ से लगातार मसलता, दुलारता रहा। प्रिया की कामोत्तेजना देखने लायक थी - उसका पूरा शरीर कसमसाने लगा, और उसने अपने दोनों पैर और ऊपर खींच लिए थे। मैंने समय देख कर उसके स्तन को छोड़ा और ऊपर पहुँच कर होंठ पर उसे चूमा। प्रिया ने पहले की तुलना में कहीं अधिक शक्ति के साथ मेरे मुंह में अपनी जीभ डाल कर मुझे वापस चूमा। उसने उन्माद में आ कर मुझे पकड़ लिया था।

कुछ देर ऐसे ही चूमने के बाद मैंने पुनः उसके स्तनो का भोग लगाना आरम्भ कर दिया। उसके शरीर पर वह दोनों स्वादिष्ट स्तन जिस तरह से परोसे हुए थे, मैं ही क्या, कोई भी होता तो अपने आपको रोक न पाता। मुझे लगा कि प्रिया कुछ कुछ कह रही थी, लेकिन उसकी आवाज़ मेरे एक तो स्तनपान कि क्रिया के कारण धीरे-धीरे आ रही थी और ऊपर से मेरे स्वयं के उन्माद के कारण मुझे लग रहा था कि बहुत दूर से आ रही है।

"हँ?" मैंने बड़े प्रयास के बाद उसके स्तन से मुंह हटा कर पूछा।

"काश .... इनमें ..... दूध होता ..." प्रिया ने दबी हुई आवाज़ में कहा।

'वाकई! काश इनमे दूध होता!' मैंने सोचा, तो मुंह में और स्वाद आ गया। मैंने और जोश में आकर उनको चूमना, चूसना और दबाना जारी रखा। मैंने कब तक ऐसा किया मुझे ध्यान नहीं, लेकिन एक समय ऐसा भी आया की प्रिया दर्द भरी सिसकी भरने लगी। मुझे समझ आ गया की अब दूसरे स्तन की बारी है, और यही क्रिया उस पर भी आरम्भ कर दी। निश्चित तौर पर अब तक प्रिया का संकोच समाप्त हो चला था, और वह कामुक आनंद से पूर्णतया अभिभूत हो गयी थी।

अब आगे बढ़ने का समय हो चला था। मैं उसके पेट को लगातार चूमते हुए उसके गुप्तांग तक पहुँचने लगा। मेरे हर चुम्बन के जवाब में प्रिया कसमसाने लगती। इस समय उसके दोनों हाथ मेरे बालों में घुस कर मेरे सर को कभी पकड़ते तो कभी सहलाते। मैं चूमते हुए जल्दी ही उसकी योनि तक पहुँच गया। मैंने उसके जघन क्षेत्र को चूमा तो प्रिया ने अपने कूल्हों को मेरे मुंह में ठेल दिया। मैंने अपनी जीभ से कुछ देर चाटा। उसकी योनि के इतने करीब होने के कारण मैं उसकी मंद स्त्रैण-गंध सूंघ सकता था। मेरा लिंग अविश्वसनीय ढंग से कड़ा हो गया था, और मैं चाहता था कि प्रिया उसको महसूस कर सके।

ऐसे ही समय के लिए महान ऋषि वात्स्यायन जी ने "कोकिला योग" कि खोज की थी। कोकिला - जिसको आज कल कि भाषा में ६९ कहा जाता है। "६९" सहवास क्रीड़ा के पूर्व का वह कामुक विन्यास है जो आप और आपके साथी को, एक दूसरे को, एक साथ मौखिक सहवास देने के लिए अनुमति देता है। इस योग में आप और आपका साथी अपने मुंह से एक दूसरे के जननांगों को एक अभूतपूर्व निजता के साथ काम-सुख प्रदान कर सकते हैं। अतः, मैं उठ कर पूरी तरह से प्रिया के ऊपर औंधा हो गया - जिससे मेरे दोनों पाँव उसके दोनों तरफ रहे और मेरा मुंह उसकी योनि पर और मेरा लिंग प्रिया के मुंह के सामने रहे।

"अ… अ… आप क… क… क्या कर रहे ह… हैं?" प्रिया के मुख से अस्फुट से स्वर निकले। पता नहीं उसको कैसा लगेगा, जब वह अपने चेहरे के सामने मेरा योनिड़ देखेगी! मेरी एकमात्र उम्मीद यह थी कि प्रिया मेरे लिंग पर अपना ध्यान केंद्रित करे, न कि किसी अन्य हिस्से पर।

"जो मैं कर रहा हूँ, आप भी वही करो।" मैंने भी हाँफते हुए कहा, और अपने नितम्ब को नीचे कि तरफ दबाया जिससे मेरा लिंग उसके मुख के पास पहुँच जाए। प्रिया पहले भी मेरा लिंग अपने मुंह में ले चुकी थी, अतः उसको दोबारा यह करने में कोई समस्या नहीं हुई। अगले ही छण मुझे अपने लिंग पर एक गर्म, नम और मखमली एहसास हुआ।

प्रिया की योनि पहले से ही रसीली हो गयी थी। मैंने अपने अंगूठों से उसकी योनि द्वार को सरकाया और अपनी जीभ को उसकी स्वादिष्ट योनि द्वार में सरका दिया। स्त्रियों के गुप्तांग (मूलाधार, भगशेफ और योनि) बहुत संवेदनशील होते हैं और मामूली उत्तेजन से भी कामुक प्रतिक्रिया दिखाने लगते हैं। अतः मैंने अपनी जीभ को सौम्य और धीमी गति से चलना शुरू किया - ठीक इस प्रकार जैसे कि आइसक्रीम को चाटा जाता है। मैंने धीरे धीरे शुरुआत करके, चाटने की गति बढ़ा दी - और साथ ही साथ चाटने का तरीका और चाटने

का दबाव भी बदलता रहा। मैंने धीरे-धीरे, अपनी उँगलियों से उसके भगोष्ठ को फैला कर उसकी स्वादिष्ट योनि के अंदर अपनी जीभ से अन्वेषण किया और ऐसा करने से मैंने उसके समस्त कामुक क्रोड़ के तार झनझना दिए।

हांलाकि प्रिया के मुख में मेरा लिंग था लेकिन फिर भी मुझे उसके गले से निकलती संतुष्टि की सिसकारी सुनायी दी। उसने कुछ देर तक तो शिश्नाग्र को चाटा और चूसा, लेकिन जैसे जैसे वह चरम सुख तक पहुँचने लगी, उसकी क्रिया धीमी पड़ गयी। कुछ देर में उसका सर पीछे की तरफ लुढ़क गया। प्रिया अपनी कामेन्द्रियों पर होने वाले इस इस भारी भरकम हमले से अभिभूत हो गयी। वह इस समय मुंह से साँसे भर रही थी। उसके लिए यह निश्चित रूप से स्वर्ग की सैर करने जैसा था।

मुझे वैसे भी अपना वीर्य प्रिया की योनि के अंदर डालना था - याद है न, उसकी माँ का आदेश था! अपने स्खलन के तुरंत बाद ही प्रिया ने मेरा लिंग अपनी कोमल उँगलियों से पकड़ लिया था। मेरे उन्माद की भी यह सीमा ही थी। अगर वह आठ-दस बार मेरे लिंग को दबा ही देती तो मैं स्खलित हो जाता। अतः मैं जल्दी से अपनी अवस्था से हट गया और वापस पहले जैसे ही उसके सामने बैठ गया। मैंने कुछ एक क्षण गहरी साँसे भरी, जिससे की अपने लिंग पर मुझे और व्यापक नियंत्रण मिल सके।

इसी विराम वेला में मैंने प्रिया को देखा - एक तरुण, विवाहित, और सहवास-तृप्त हिन्दू नारी का सौंदर्य अतुलनीय होता है। प्रिया का दोषरहित, सुन्दर और नितांत नग्न शरीर - उसकी छाती पर सजे हुए प्यारे स्तनों का जोड़ा, एकहरा शरीर, सुडौल नितम्ब, और स्वस्थ, नरम जांघें (जो इस समय मेरे दोनों तरफ फैली हुई थीं); हाथों में रची मेहंदी और चूड़ियाँ, गले में मंगलसूत्र, कानो में कर्णफूल, नाक में एक छोटी सी चमकती हुई कील, मांग में नारंगी सिन्दूर और फैले हुए बाल - वह इस समय स्वयं रति देवी का ही रूप लग रही थी।

मैंने उसका चेहरा अपने दोनों हथेलियों में लेकर उसके होंठों पर एक भरपूर चुम्बन दिया और कहा, "वाह! तुम एक बहुत खूबसूरत लड़की हो!" अब तक मेरी साँसे मेरे नियंत्रण में आ गयी थीं और मेरा लिंग भी। उसकी उत्तेजना बरकरार थी लेकिन बेकाबू नहीं। फिर मैंने प्रिया कि टाँगे सावधानी से अलग करीं और जगह बनायी और अपने लिंग को हाथ में लेकर उसकी योनि में धीरे धीरे सरका दिया। लिंग का सर अपने गंतव्य में प्रवेश कर चुका था।

"आर यू रेडी?" मैंने प्रिया से पूछा। उसने तेजी से सर हिला कर हामी भरी।

योनि बुरी तरह से चिकनी थी, अतः लिंग को कोई भी प्रतिरोध नहीं मिलना था। वैसे भी प्रिया अभी अभी संपन्न हुए सहवास कि पृष्ठभूमि में लस्त पड़ी हुई थी। उसको जागृत करने के लिए इससे अच्छा तरीका और नहीं हो सकता था। मैंने अपने लिंग को एक तेज़ धक्का दिया - दो बातें एक साथ हुईं - एक तो प्रिया के मुख से एक लम्बी सीत्कार निकल गयी और दूसरा, चूंकि मेरा लिंग अभूतपूर्व तरीके से स्तंभित था, इसलिए प्रिया के योनि मार्ग ने अत्यंत शानदार तरीके से मेरे लिंग कि पूरी लम्बाई को जकड लिया। मैंने बिना रुके धक्के लगाना आरम्भ कर दिया और नीचे से प्रिया ने अपने धक्को से उनका मिलान करना। मैंने प्रिया के चेहरे को देखा। उसकी आँखें बंद थीं और उसके होठ कामुकता से पृथक थे। हम दोनों ही इस रति-क्रिया का बराबर आनंद ले रहे थे।

प्रिया अपने नितम्बो को इस समय न केवल ऊपर नीचे, वरन, एक गोल गति में भी घुमा रही थी - इससे मेरे लिंग का दो-आयामी दोहन होने लगा था। इससे उसके भगनासे का भी बराबर उत्तेजन हो रहा था। उसकी गति भी बढ़ने लगी थी - सम्भवतः वह दूसरी बार स्खलित होने वाली थी। यह तो एकदम अद्भुत घटना थी। लेकिन मैंने सपने हाथों से उसके नितम्बो को पकड़ कर उसकी गति को थोडा नियंत्रण में लाया। मैं चाहता था कि हमारा यह सहवास थोडा और देर तक चले। उसकी गति पर तो मैं बस कुछ ही पल ठहर पाता। कुछ देर तक हम नियंत्रित रहे लेकिन पुनः प्रिया कि गति तेज हो गयी - इस बार मैंने उसको रोका नहीं, बल्कि मैंने खुद भी अपनी गति बढ़ा दी।

"कम ऑन स्वीटी! कम विद मी!" मुझे मालूम पड़ गया था कि अब हम दोनों ही स्खलन के बेहद करीब हैं। अतः मेरी इच्छा यह थी कि हम दोनों साथ साथ आयें।

"कम ऑन गर्ल! कम फॉर मी!"

मैंने यह बहुत ऊंची आवाज़ में बोला था। भगवान् ही जाने कि बगल के कमरे में बैठे मेरे ससुराल वाले क्या सोच रहे होंगे। मेरी हर 'कम ऑन' पर प्रिया के धक्के और तीव्र हो जा रहे थे - वह मेरा मंतव्य समझ रही थी। उसके उसके नाखून मेरी पीठ में गड़ने लगे थे - लेकिन मुझे यह पीड़ा भी इस समय मनोहर लग रही थी।

अचानक ही मैंने उसकी योनि में एक बदलाव महसूस किया - उसकी दीवारें तेजी से संकुचित / कम्पित होने लगीं और योनि रस की एक धारा मेरे लिंग को भिगोने लगी। पहले प्रिया ने हलकी हलकी सिसकारी भरी और फिर एक बड़ी सांस भरी। उसके बाद एक लम्बी "आँह" जैसी आवाज़ आयी। मुझे अच्छा लगा कि प्रिया अब अपने रति-निष्पत्ति के

आनंद का निर्लज्ज्ता से आस्वादन करने लगी है। उसके बाद कोई चार पांच धक्कों में मेरे स्खलित वीर्य का पहला माल बड़ी प्रचंडता से मेरे लिंग से निकल कर प्रिया की गहराई में चला गया। प्रिया ने भी इसको महसूस किया होगा, क्योंकि उसी के साथ उसने भी उच्च स्वर में सांस भरी। प्रिया कि रति निष्पत्ति का उन्माद अभी बस शुरू ही हुआ था - उसने अपने दोनों पैर मेरे इर्द-गिर्द कस कर जकड लिए और पूरे जोश से धक्के लगाने लगी। उसके हर धक्के के साथ मैंने वीर्य का कुछ कुछ माल उसकी योनि में छोड़ा। उसकी योनि मेरे लिंग पर कुछ इस तरह संकुचित को रही थी जैसे उसको पूर्णतयः दुह लेगी - और उसने किया भी वही। कुछ देर ऐसे ही करने के बाद हम दोनों पूरी तरह से निढाल पड़ गए।

मैं प्रिया के बगल ही गिर गया - उसके शरीर कि तपन को मैं महसूस कर पा रहा था। इस ठंडक में भी हम दोनों का शरीर पसीने से ढक गया था। हम दोनों ही जम कर हांफ रहे थे। मैंने उसको अपनी बाँह के घेरे में लेकर कस के पकड़ लिया। हम न जाने कब तक ऐसे ही पड़े रहे, और जब चेतना लौटी तो हम लोग पुनः एक दूसरे को चूमने लगे - लेकिन इस बार कोमलता से।

अंततः मैंने उसके कोमल होंठो को चूमना छोड़ कर उससे पूछा, "सो गर्ल, डू यू लाइक मेकिंग लव?"

प्रिया ने थोड़ी देर सोचकर कहा, "यस, ओह यस!" उसकी आँखें चमक रही थीं। प्रिया को इस तरह से खुश देखना बहुत ही सुखदाई था।

६

आज का पूरा दिन हमारी विदाई की तैयारियों में ही बीत गया।

सुबह सवेरे ही सबसे पहला कार्य हमारी शादी का पंजीकरण करवाने का किया। मैंने नहा-धो कर पैन्ट-शर्ट और शाल पहनी, और प्रिया ने साड़ी,ब्लाउज और स्वेटर! पंजीकरण का कार्य पड़ोस के बड़े कसबे में होना था, इसलिए दफ़्तर खुलने से पहले ही हम सब वहां पहुँच गए। इतने मामूली काम के लिए भी पूरी मंडली साथ आई – कहने का मतलब यह काम सिर्फ २ गवाह और मियां-बीवी के रहने मात्र से ही हो जाता है। खैर, हमने दफ़्तर के बगल ही एक ढाबे में नाश्ता किया और सबसे पहले अपना नंबर लगवा दिया। विवाह के अभिलेखी (रजिस्ट्रार) बहुत ही मज़ेदार व्यक्ति थे – उन्होंने हम सबको चाय पिलाई, समोसे खिलाए और अपने अनुभव की कई सारी मज़ेदार बातें बतायीं। उनके साथ बहुत देर तक बात चीत करने के बाद हमने उनकी अनुमति मांगी, जिसके उत्तर में उन्होंने हमको दफ़्तर के दरवाजे तक छोड़ा और एक बार फिर से हम दोनों को हमारी शादी की बहुत बहुत बधाइयाँ दी। करीब दोपहर तक वापस आते हुए हमने प्रिया के स्कूल में जा कर उसका पहचान पत्र बनवाया और घर वापस आ गए।

हमको अगले दिन बड़े सवेरे ही निकलना था, इसलिए विदाई देने के लिए मिलने वाले लोग दोपहर बाद से ही आने लगे। मेरे दोस्त लोग तो खैर कब के वापस चले गए थे, अतः ड्राइविंग करने का सारा दारोमदार मुझ पर ही था। दोपहर का भोजन समाप्त करने तक हमारे लिए ससुराल वालों ने न जाने क्या-क्या पैक कर दिया था, जिसका पता मुझे दो-ढाई बजे हुआ। इसलिए बैठ कर मैंने बड़ी मेहनत से पैक किया हुआ सारा फालतू का सामान बाहर निकाला और सिर्फ बहुत ही आवश्यक वस्तुएँ ही रखी। प्रिया का शादी का जोड़ा, दो जोड़ी सलवार कुरता और एक स्वेटर रखा। मुझे उसकी सारी साड़ियाँ बाहर निकालते देख कर मेरी सासू माँ विस्मित हो गयी।

'ससुराल (?) में क्या पहनेगी?... शादी के बाद कोई सलवार-कुरता पहनता है क्या!!... विवाहिता को साड़ी पहननी चाहिए... संस्कार भी कोई चीज़ होते हैं!... विधर्मी लड़की!...' इत्यादि इत्यादि प्रकार की उन्होंने हाय तौबा मचाई! उनको मनाने में कुछ समय और चला गया। मैंने समझाया की प्रिया के ससुराल में सिर्फ पति है – ससुर नहीं! तो ससुराल नहीं, पाताल बोलिए! यह भी समझाया की साड़ी अत्यंत अव्यावहारिक परिधान है... मानिए किसी स्त्री को कोई सड़क-छाप कुत्ता दौड़ा ले, तो साड़ी में वह तो भाग ही न पाएगी! और

तो और शरीर भी पूरा नहीं ढकता है, और छः-सात मीटर कपड़ा यूँ ही वेस्ट हो जाता है!! मेरी दलीलों से मेरी सासू माँ चुप तो हो गईं, लेकिन मन ही मन उन्होंने मुझे खूब कोसा होगा, क्योंकि सब मेरी बात पर हँस-हँस कर लोट-पोट हो गए!

खैर, आवश्यकता की समस्त वस्तुएँ जैसे विवाह प्रमाणपत्र, प्रिया का हाई-स्कूल प्रमाणपत्र और स्कूल पहचान-पत्र, मेरा पासपोर्ट, हवाई टिकट इत्यादि सबसे पहले ही रख ली; उसके बाद में कपड़े, आवश्यकतानुसार अन्य सामग्री, और तत्पश्चात कुछ वैवाहिक भेंट! कुल मिलकर दो बैग बने! मेरे बैग मिलाकर चार! सासू माँ इसी बात से दुखी थी की हम लोगो ने कुछ रखा ही नहीं और यह की लोग क्या कहेंगे की ससुराल वालों ने कुछ भेंट ही नहीं दी। उनको और समझाना मेरे लिए न केवल बेकार था, बल्कि मेरी खुद की क्षमता से बाहर भी था।

शाम को कोई चार - साढ़े चार बजे किसी ने बताया की भारी बारिश का अंदेशा है – केदार घाटी और बद्रीनाथ में हिमपात हो रहा था और उसके नीचे बारिश। ऐसे में भूस्खलन की संभावना हो सकती है। कुछ देर के विचार विमर्श के पश्चात सबने यह निर्णय लिया की मैं और प्रिया तुरंत ही नीचे की तरफ निकल लेते हैं, जिससे आगे ड्राइव करने में आसानी रहे। सासू माँ को यह ख़याल अच्छा नहीं लगा, लेकिन ससुर जी व्यवहारिक व्यक्ति थे, अतः मान गए। वैसे भी आठ-दस घंटो में ऐसा क्या ही अलग होने वाला था। इस अप्रत्याशित व्यवस्था के लिए कोई भी तैयार नहीं था – एक तरह से यह अच्छी बात साबित हुई। क्योंकि विदाई के नाम पर अनावश्यक रोने-धोने का कार्यक्रम करने के लिए किसी को मौका ही नहीं मिला। एक दो महिलाओं ने कोशिश तो ज़रूर करी की मगरमच्छी आंसू बहाए जायँ, लेकिन ससुर जी ने उनको डांट-डपट कर चुप करा दिया। हम दोनों ने सारे बुजुर्गों के पांव छुए और उनसे आशीर्वाद लिया। मैंने अश्विनी को छेड़ने के लिए (आखिर जीजा हूँ उसका!) दोनों गालों पर ज़ोर से पप्पी ली, और उसको एक लिफ़ाफ़ा दिया, जो मैं सिर्फ उसके लिए पहले से लाया था। अश्विनी को बाद में मालूम पड़ेगा की उसमें क्या है, लेकिन उसके पहले ही आपको बता दूं की उसमें बीस हज़ार एक रुपए का चेक था। इसी बहाने अश्विनी के नाम में एक बैंक अकाउंट खुल जाएगा और उसके पढाई, और ज़रुरत के कुछ सामान आ जायेंगे।

एक संछिप्त विदाई के साथ ही प्रिया और मैंने वापस देहरादून के लिए प्रस्थान आरम्भ किया। वैसे भी आज देहरादून पहुँचना संभव नहीं था – इसलिए कोई दो तीन घंटे के ड्राइव के बाद कहीं ठहरने, और फिर सुबह देहरादून को निकलने का प्रोग्राम था। मेरी किराए की कार एक एस यु वी थी – न जाने क्या सोच कर लिया था। लेकिन, मौसम की ऐसी

संभावनाओं में एस यु वी बहुत ही कारगर सिद्ध होती है। वैसे भी पहाड़ों पर ड्राइव करने में मुझे कोई ख़ास अनुभव तो था नहीं, इसलिए धीरे ही चलना था। यात्रा आरम्भ करने के पंद्रह मिनट में ही मुझे अपनी कार के फायदे दिखने लगे – एक तो काफी बड़ी गाड़ी है, तो सामान रखने और आराम से बैठने में आसानी थी। बड़े पहिये होने के कारण खराब सड़क पर आसानी से चल रही थी। शाम होते होते ठंडक काफी बढ़ गई थी, तो कार का वातानुकूलक अन्दर गर्मी भी दे रहा था। मैंने प्रिया से कुछ कुछ बातें करनी चाही, लेकिन वो अभी अपने परिवार वालो के बिछोह के दुःख से बात नहीं कर रही थी – ऐसे में गाड़ी का संगीत तंत्र मेरा साथ दे रहा था।

बारिश अचानक ही आई, और वह भी बहुत ही भारी – सांझ और बादलों का रंग मिल कर बहुत ही अशुभ प्रतीत हो रहा था। एक मद्धम बूंदा-बांदी न जाने कब भारी बारिश में तब्दील हो गयी। न जाने किस मूर्खता में मैं गाड़ी चलाये ही जा रहा था – जबकि सड़क से यातायात लगभग गायब ही हो गया था। भगवान् की दया से वर्षा का यह अत्याचार कोई दस मिनट ही चला होगा – उसके बाद से सिर्फ हलकी बूंदा-बांदी ही होती रही। घर से निकलने के कोई एक घंटे बाद बारिश काफी रुक गई। प्रिया का मन बहलाने के लिए मैंने उसको अपने घर फोन करने के लिए कहा। उसने ख़ुश हो कर घर पे कॉल लगाया और सबसे बात करी – हम लोग कहाँ है, उसकी भी जानकारी दी और देर तक बारिश के बारे में बताया। और इतनी ही देर में घुप अँधेरा हो गया था, और अब मेरे हिसाब से गाड़ी चलाना बहुत सुरक्षित नहीं था।

“आगे कोई धर्मशाला आये, तो रोक लीजियेगा”, प्रिया ने कहा, “काफी अँधेरा है, और बारिश भी! अगर कहीं फंस गए तो बहुत परेशान हो जायेंगे।“

“बिलकुल! वैसे भी आज रात में ड्राइव करते रहने का कोई इरादा नहीं है मेरा। कोई ढंग का होटल आएगा तो रोक लूँगा। आज दिन की भाग-दौड़ से वैसे भी थक गया हूँ।“

ऐसे ही बात करते करते मुझे एक बंगला, जिसको होटल बना दिया गया था, दिखाई दिया। बाहर से देखने पर साफ़ सुथरा और सुरक्षित लग रहा था। इस समय रात के लगभग आठ बज रहे थे, और इतनी रात गए और आगे जाने में काफी अनिश्चितता थी – की न जाने कब होटल मिले? देखने भालने में ठीक लगा, तो वहीँ रुकने का सोचा। यह एक विक्टोरियन शैली में बनाया गया बंगला था, जिसमें चार कमरे थे – कमरे क्या, कहिये हाल थे। ऊंची-ऊंची छतें, उनको सम्हालती मोटे-मोटे लकड़ी की शहतीरें, दो कमरों में अलाव भी लगे हुए थे। साफ़ सुथरे बिस्तर। रात भर चैन से सोने के लिए और भला क्या चाहिए? होटल में

हमसे पहले सिर्फ एक ही गेस्ट ठहरे हुए थे – इसलिए वहां का माहौल बहुत शांत, या यूँ कह लीजिये की निर्जन लग रहा था। गाड़ी पार्क कर के प्रिया और मैं कमरे के अन्दर आ गए। पता चला की वहां पर खाना नहीं बनाते (मतलब कोई रेस्त्राँ नहीं है, और खाना बाहर से मंगाना पड़ेगा)। मैंने परिचारक को कुछ रुपये दिए और गरमा-गरम खाना बाहर से लाने को कह भेजा। मेनेजर को यह कहला दिया की सवेरे नहाने के लिए गरम पानी का बंदोबस्त कर दें!

एक परिचारक गया, तो दूसरा अन्दर आ गया। उसने कमरे के अलाव में लकड़ियाँ सुलगा दी, जिससे कुछ ही देर में थोड़ी थोड़ी ऊष्मा होने लगी और कमरे के अन्दर का तापमान शनैः-शनैः सुहाना होने लगा। इस पूरी यात्रा के दौरान न तो मैं प्रिया से ठीक से बात कर पाया, और न ही उसकी ठीक से देख-भाल ही कर पाया। उसकी शकल देख कर साफ़ लग रहा था की वह बहुत ही उद्विग्न थी। सम्भंतः बिछोह का दुःख और बीच की भीषण वर्षा का सम्मिलित प्रभाव हो!

“हनी! थक गई?” मैंने पूछा। प्रिया ने ‘न’ में सर हिलाया।

“तो फिर? तबियत तो ठीक है?”

प्रिया ने ‘हाँ’ में सर हिलाया।

“अरे तो कुछ बात तो करो! या फिर साइन लैंग्वेज में बात करेंगे हम दोनों?”

अपना वाक्य ख़तम करते करते मुझे एक तुकबंदी गाना याद आ गया, तो मैंने उसको भी जोड़ दिया,

“साइन लैंग्वेज में बात करेंगे हम दोनों!

इस दुनिया से नहीं डरेंगे हम दोनों!

खुल्लम खुल्ला प्यार करेंगे हम दोनों!”

प्रिया मुस्कुराई, “सबकी बहुत याद आ रही है – और शायद थोड़ा थक गयी हूँ और...... डर भी गई! ऐसी बारिश में हमको रुक जाना चाहिए था!” उसने बोला।

“अरे! बस इतनी सी बात? लाओ, मैं तुम्हारे पांव दबा देता हूँ।“

“नहीं नहीं! क्यों मुझे पाप लगवाएंगे मेरे पैर छू कर?”

“अरे यार! तुम थोड़ा कम बकवास करो!” मैंने मजाकिए लहजे में प्रिया को झिड़की लगाई। “शादी करते ही तुम अब मेरी हो – मतलब तन, और मन दोनों से! मतलब तुम्हारा तन अब मेरा है – और इसका मतलब तुम्हारा पांव भी मेरा है। और मेरे पांव में दर्द हो रहा है! समझ में आई बात?”

“आप माँ वाली दलीलें मुझे भी दे रहे हैं! आपने आज उनको बहुत सताया!”

“आपको भी सताऊँ?”

और कोई चार-पांच मिनट तक मनुहार करने के बाद वो राज़ी हो गई।

मैंने प्रिया को कुर्सी पर बैठाया और सबसे पहले उसकी सैंडल उतार दी – यह कोई कामुक क्रिया नहीं थी (हांलाकि मैंने पढ़ा है की कुछ लोग इस प्रकार की जड़ासक्ति रखते हैं और इसको फुट-फेटिश भी कहा जाता है), लेकिन फिर भी मुझे, और प्रिया को भी ऐसा लगा की जैसे उसको एक प्रकार से निर्वस्त्र किया जा रहा हो। प्रिया की उद्विग्नता इतने में ही शांत होती दिखी। चाहे कैसी भी तकलीफ हो, पांव की मालिश उसको दूर कर ही देती है। मैंने प्रिया के दाहिने पांव के तलवे के नीचे के मांसल हिस्से को अपने अंगूठे से घुमावदार तरीके से मालिश करना आरम्भ किया। कुछ देर में उसके पांव की उँगलियों के बीच के हिस्से, तलवे और एड़ी को क्रमबद्ध तरीके से मसलना और दबाना जारी रखा। पांच मिनट के बाद, ऐसा ही बाएँ पांव को भी यही उपचार दिया। इस क्रिया के दौरान मैंने प्रिया को देखा भी नहीं था, लेकिन मैंने जब दूसरे पांव की मालिश समाप्त की, तो मैंने देखा की प्रिया की आँखें बंद हैं, और उसकी साँसे तेज़ हो चली थीं।

प्रिया की अवस्था तनाव-मुक्ति से आगे की ओर जा रही थी – वह उत्तेजित हो रही थी। प्रिया के दोनों स्तनाग्र कड़े हो गए थे और उनका उठान उसके कुरते के वस्त्र से साफ़ दिखाई दे रहा था। उसके होंठों पर एक बहुत ही हल्की मुस्कान भी दिख रही थी – मैं जो भी कुछ कर रहा था, बिलकुल सही कर रहा था। मैंने अब उसके दोनों टखनों को एक साथ अपनी उंगली और अंगूठे से पकड़ कर दबाना जारी रखा, और कुछ देर मसलने के बाद

वापस उसके अंगूठों और तलवों की मालिश करी। अब तक मालिश के करीब पंद्रह मिनट हो गए थे। मैंने मालिश रोक दी, और बारी बारी से प्रिया के दोनों अंगूठों को चूमा। प्रिया की साँसे अब तक काफी उथली हो चली थीं। संभवतः यह मेरा भ्रम हो, लेकिन मुझे ऐसा लगा की मानो हवा में प्रिया की 'महक' घुल गई हो।

प्रिया की आँखें अभी भी बंद थी। इस परिस्थिति का लाभ उठाया मेरी उँगलियों ने, जिन्होंने उसकी सलवार के नाड़े को ढूंढ कर ढीला कर दिया। अगले पांच सेकंड में उसकी सलवार उसके घुटनों से नीचे उतर चुकी थी, और मेरी उंगलियाँ उसकी योनि रस से गीली हो चली चड्ढी के ऊपर से उसकी योनि का मर्दन कर रही थीं। मेरी इस हरकत से प्रिया की योनि से और ज्यादा रस निकलने लगा।

मैं और भी कुछ आगे करता की दरवाजे पर दस्तक हुई। प्रिया मानो मूर्छा से जागी हो। उसने झटपट अपनी सलवार सम्हाली और पुनः बाँध ली, और कुर्सी में और सिमट कर बैठ गयी। दरवाजे पर परिचारक था, जो हमारे लिए खाना लाया था। उसने टेबल पर खाना और प्लेटें व्यवस्थित कर के सजा दिया – मैंने देखा की उसने दो प्लेट रसगुल्ले, और पानी की बोतल भी लाई थी। इस बात से ख़ुश हो कर मैंने उसको अच्छी टिप दी और उससे विदा ली। जाते-जाते उसने मुझको खाने के बाद ट्रे को दरवाज़े के बाहर रख देने को कह दिया।

"आप मुझको कितनी आसानी से बहका देते हैं!" मेरे वापस आने पर प्रिया ने लजाते, सकुचाते कहा।

"बहका देता हूँ?" मैंने बनावटी आश्चर्य में कहा, "जानेमन, इसको बहकाना नहीं कहते – यह तो मेरा प्यार है। और आप अभी नई-नई जवान हुई हैं, इतनी कामुक और हॉट हैं, इसलिए आपकी सहवास-ड्राइव, मेरा मतलब सहवास में दिलचस्पी, थोड़ी अधिक है। अच्छा है न? सीखने की उम्र है – जो मन करे, जितना मन करे, सब सीख लो।" मैंने आँख मारते हुए कहा।

"आप हैं न मुझे सिखाने के लिए!" प्रिया की लज्जा अभी भी कम नहीं हुई थी। "आप के जैसे ओपन माइंडेड तो नहीं हूँ, लेकिन जितना भी हो सकेगा, आपको ख़ुश रखूंगी।"

"जानू, सिर्फ मुझे ही नहीं, हम दोनों को ही ख़ुश रहना है। ओके? अरे भाई – हमारे शास्त्रों में भी यही बताया गया है!"

“शास्त्रों में यह सब बाते होती है?”

“बिलकुल! यह सुनो... यह मनु ने कहा है –

संतुष्टो भार्यया भर्ता भर्ता भार्या तथैव च:। यस्मिन्नैव कुले नित्यं कल्याण तत्रेव ध्रुवम्।।

जिस कुल - मतलब घर या परिवार - में, पुरुष स्त्री से प्रसन्न रहता है, और पुरुष से स्त्री, उस परिवार का अवश्य ही कल्याण होता है! कहने का मतलब बस यह, की एक दूसरे को पूरी तरह से ख़ुश करने की हम दोनों की ही बराबर की जिम्मेदारी है। न किसी एक की ज्यादा, न कम! समझ गयी?”

मेरी बात सुन कर प्रिया ने ‘हां’ में सर हिलाया और फिर हमने खाना आरम्भ किया। गरमागरम खाना और रसगुल्ले खा कर पेट अच्छे से भर गया। दिन भर की थकावट के कारण खाना ख़तम करते करते नींद आने लग गयी। मैंने ट्रे बाहर रखी और वापस आ आकर बिस्तर पर ढेर हो गया।

प्रिया का सपना

अथर्व ने तेल से चुपड़ी अपनी दोनों हथेलियाँ मेरे स्तनों पर रख दी। उनके हाथों की छुवन मात्र से ही मेरे दोनों चूचक तन कर खड़े हो गए। अथर्व जितनी भी बार मेरे स्तनों को छूते हैं, लगता है की पहली बार ही छू रहे हों। उनके छूते ही मेरे पूरे शरीर में झुरझुरी दौड़ जाती है। मेरी साँसें तुरंत तेज़ हो गई – लाज के मारे मैंने अपनी आँखें बंद कर ली, और आगे होने वाले आक्रमण के लिए अपने मन को मज़बूत कर लिया।

उन्होंने पहले मेरे स्तनों पर अच्छे से हाथ फिराया, जिससे वे तेल से पूरी तरह से सन जाएं, और फिर धीरे धीरे स्तनों को अपनी मुट्ठी में भर कर दबाना आरम्भ कर दिया। मुझे ऐसा लगा की सिर्फ चूचक ही नहीं, पूरे स्तन ही अपनी नाज़ुकता खोकर कड़े होते जा रहे हैं! अथर्व तो जैसे इन सब बातों से बेखबर थे – उनकी मेरे स्तनों पर हाथ फिराने, उनको सहलाने और मसलने की गतिविधि बढती ही जा रही थी। न चाहते हुए भी मेरी सिसकियाँ छूट गईं! मैं कितनी कोशिश करती हूँ की अथर्व के सामने मैं बेबस न होऊँ, लेकिन उनकी उपस्थिति, उनकी छुवन, उनकी बातें – मानो उनकी हर एक गतिविधि प्रेम भरा दंश हो। उनके प्रेमालाप आरम्भ करने मात्र से मेरे पूरे शरीर में काम का मीठा ज़हर फैलने लगता है। मैं अब तक अपना आपा खो चुकी थी और काम के सागर में आनन्द भरे गोते लगा रही थी। मुझे लूटने के तो उनके पास जैसे हज़ार बहाने हों – आज मालिश का है!

‘सीईई! आह! यह क्या!’ ऐसी निर्दयता से मत मसलो मेरे साजन! ये कोमल कलियाँ है, ज़रा बचा कर!

अथर्व पिछले कोई १० मिनट से मेरे स्तनों की मालिश किये ही जा रहे हैं, और इस बीच उन्होंने उनको न जाने कितनी ही बार मसला, दबाया और रगड़ा होगा! सिर्फ इतना ही नहीं, बीच बीच में वो मेरे स्तनों को अपनी मुट्ठी में पकड़ कर अपने दूसरे हाथ की हथेली से मेरे चुचकों पर फिराते तो मेरी सिस्कारियां ही निकल जाती। अथर्व कुछ कुछ कह भी रहे हैं! क्या कह रहे हैं, कुछ भी समझ नहीं आ रहा है! मुझे तो लगता है की मेरे होश ही उड़ गए हैं! लेकिन उनकी बातो पर कुछ तो प्रतिक्रिया करनी ही पड़ेगी न! इसलिए मैं बेसुध सी आँखें बंद किये, हाँ... हूँ... और सिस्कारियां ले रही थी। मेरी साँसों की गति बहुत बढ़ गई है और मेरे स्तन भी उन्ही के ताल पर तेजी से ऊपर-नीचे हो रहे है!

अथर्व ने मेरे होंठों पर अपने होंठ लगा दिए हैं! उनके चुम्बन लेने का तरीका कितना अनोखा है! उनके होंठ और जीभ मेरे पूरे मुख की टोह ले डालते है! मुझे बहुत आनंद आता

है और मैं भी उनके चुम्बनों का मज़ा लेने से नहीं चूकती... उन्होंने इस समय मेरे स्तन छोड़ रखे थे और एक हाथ से मेरी नंगी पीठ सहला रहे थे और दूसरे हाथ से मेरे बाल सहला रहे थे। आंखें बंद किये मैं उनके होंठों को चूमती और चूसती रही, और उनको जैसा जी चाहे करने देती रही। इस प्रकार के प्रेम-प्रसंग में जब भी मेरी आँखें खुलती हैं, तो मुझे बहुत लज्जा आती है। उनकी आँखों के वासना के लाल डोरे साफ़ दिख रहे हैं और चेहरे पर शरारती भाव स्पष्ट थे। उस अन्तरंग चुम्बन के बाद उन्होंने मेरी गर्दन पर हमला किया – यह संभवतः पहली बार था! एक दो मधुर चुम्बनों के बाद उन्होंने मेरी गर्दन पर अपने दांत ही गड़ा दिए – लेकिन ऐसे नहीं की मुझे कोई नुकसान हो... बल्कि ऐसे जिससे मेरे शरीर की आग और भी बढ़ जाय!

मेरी साँसें इस समय बहुत तेज़ चल रही थी और आँखों में खुमार सा आने लग गया। अथर्व ने मुझे अपनी बांहों में भर कर बिस्तर से उठा लिया, तो मैं भी अपनी बाहें उनके गले में डाल कर उनके आलिंगन में झूल सी गई। अनजाने ही सही, ऐसा करके मैंने उनके सामने अपने स्तन परोस दिए और उनको भोज का निमंत्रण भी दे दिया। और रुद ऐसे तो नहीं है की इस प्रकार के भोज निमंत्रण तो ठुकरा दें। उन्होंने मुझे एक हाथ (बाएँ) से पकड़ कर सम्हाला, और दूसरे (दाहिने) से मेरे बाएँ स्तन को पकड़ कर थोड़ा दबाया। ऐसा करने से मेरा स्तनाग्र एकदम से बाहर निकल आया। उन्होंने उसको कुछ देर ऐसे निहारा जैसे की उसका मूल्यांकन कर रहे हों और फिर धीरे से अपने होंठ उस पर लगा दिए।

अपने शरीर के किसी अंग को किसी और के मुख में ऐसे कामुक ढंग से लीले जाते हुए देखना अत्यंत रोमांचक होता है। मेरे चूचक से एक काम की एक मीठी धारा निकली और वहां से होते हुए पूरे शरीर में बहने लगी। लज्जा और रोमांच के कारण मेरी आँखें मुंद गईं! अथर्व मेरे स्तन की धीरे-धीरे चुस्की लगा रहे थे और साथ ही साथ स्तन को मुँह में भरते भी जा रहे थे। कुछ ही देर में मेरे स्तन का ज्यादातर हिस्सा उनके मुँह में समां गया। कामोन्माद ने मुझे पूरी तरह से बेबस कर दिया था... मैं अब क्या कर रही थी, उस पर मेरा कोई भी नियंत्रण नहीं था।

मैं उनका सर अपने हाथों से पकड़ कर अपनी छाती की तरफ दबाने लगी। अथर्व ने भी ठीक उसी अनुरूप अपना आभार प्रकट किया। वे अब बारी बारी से मेरे दोनों स्तनों को चूम और चूस रहे थे - कभी वो उनको अपने मुँह में पूरा भर लेते तो कभी चूसते हुए मेरे चूचक अपने दांतों से हल्के से काट लेते! उनकी इन हरकतों से मेरी कराह, सिसकियाँ, किलकारी – या जो भी कुछ है – निकल जाती!

आश्चर्य की बात है की प्रहार मेरे स्तनों पर हो रहा था और प्रभाव मेरी योनि पर पड़ रहा था। कामरस की बारिश से बिस्तर पर बिछा चद्दर गीला हो चला था। अथर्व मेरे दोनों स्तनों पर प्रयोग पर प्रयोग किये जा रहे थे – वो कभी उनको चूमते, कभी मेरे चूचकों पर जीभ फिराते, कभी चाटते, कभी मसलते तो कभी दबाते। और तो और वो बीच-बीच में स्तनों को छोड़ कर मेरे होंठों पर जोरदार और अन्तरंग चुम्बन लेटे और फिर वापस अपने काम पर लग जाते। अथर्व को स्तनपान कराने की मेरे अन्दर ऐसी तीव्र इच्छा थी की मन में बस यही आया की मेरे दोनों स्तन मीठे मीठे दूध से भर जाएँ, और अथर्व जीवन भर उनका पान कर सकें! अथर्व के स्पर्श में वह जादू था की वो मुझे कुछ ही पलों में मतवाला बना देते। मैं इस कदर रोमांचित हो चली थी कि मैं उनकी गोद में ही उछलने लगी।

प्रिया की आँखें एक झटके से खुली।

‘कैसा सपना देखा! कितना कामुक! और कितना वास्तविक!’

इतना वास्तविक सपना की उसको अपने स्तनाग्रों पर अभी भी मीठी मीठी पीड़ा महसूस हो रही थी। उसका हाथ उनको सहलाने के लिए अपनी छाती पर गया।

‘अरे! ये तो खुले हुए हैं!! और ये बाएँ तरफ?’ सोचते हुए प्रिया का ध्यान अपने बाएँ स्तन पर गया। इस स्तनाग्र को चूसते हुए मैं सो गया था।

‘अच्छा, तो यह सब इन जनाब की कारस्तानी है! कोई सपना वपना नहीं था – सब हकीकत थी। लेकिन वह तेल...?’ सोचते हुए प्रिया ने अपने स्तनों की त्वचा पर उंगली फिराई, ‘नहीं.. यहाँ कोई तेल-वेल नहीं लगा है! सपने में क्या क्या सोच लिया मैंने!’ सोचते हुए प्रिया ने अपने शरीर का और जायजा लिया, लेकिन इतने ध्यान से की मेरी नींद न टूटे।

‘बस कुरता ही उतारा है – सलवार तो ज्यों की त्यों बंधी हुई है! लेकिन यह कुरता इन्होने उतारा कैसे की मुझे पता ही नहीं चला?! और... वहां तो जम कर गीलापन है! बदमाश...!!’ सोचते हुए प्रिया लजा गई, और प्यार से मेरे बालों में उँगलियों से सहलाने लगी। उसके इस संकेत पर मैं सोते हुए ही कुनमुनाया और पुनः उसके स्तनाग्र का चूषण करने लगा। पांच छः बार चूसने के बाद पुनः मैं गहन निद्रा में लीन हो गया। मुझको ऐसे अबोधपन से ऐसी बदमाशी भरा काम करते देख कर प्रिया हौले से हँस दी और मुझे प्यार से अपने स्तन पर भींच कर पुनः सो गयी।

७

मेरे निर्देशों के अनुसार, मेनेजर ने सवेरे ६ बजे मुझको जगा लिया और साथ ही साथ नहाने का पानी भी पेश किया। कोई साढ़े सात बजते बजते प्रिया और मैं नहा धो कर और हल्का नाश्ता कर के आगे की यात्रा पर निकल गए। अगर सब ठीक रहा तो ग्यारह बजे से पहले हम लोग देहरादून में होंगे।

इतने सवेरे यात्रा करने का यह लाभ होता है की सड़क खाली मिल जाती हैं, इस कारण से हमारी रफ़्तार भी काफी तेज़ रही। आज प्रिया मुझसे कुछ ज्यादा खुलकर बाते हर रही थी। रास्ते में उसने बताया की वो पहले भी दो बार देहरादून आ चुकी है। यह भी पता चला की उनका परिवार हरिद्वार से आगे कभी नहीं गया। मैंने भी उसको अपने बारे में इधर उधर की काफी बाते बतायी – ऐसे तो मुझे घूमने का कोई ख़ास अनुभव नहीं था, लेकिन काम को लेकर देश-विदेश में काफी घूम चुका हूँ। प्रिया विदेश के बारे में सुनकर काफी आश्चर्यचकित हुई। संछेप में कहा जाय तो आज की यात्रा बहुत अच्छे से हो रही थी। बिना रुके हम लोग साढ़े दस पर ही देहरादून पहुँच गए। वहां पहुँच कर मैंने अपनी एस यु वी को उसके असली मालिक को सौंप दिया और हिसाब-किताब बराबर कर के एक रेस्त्राँ में खाने पहुंचे।

“आप क्या लेंगी?” मैंने मेन्यू देखते हुए पूछा।

“आप क्या लेंगे?”

“आज तो हम वही लेंगे जो आप लेंगी।“

इस प्रकार की पहले आप – पहले आप होटल/रेस्त्राँ के बैरा लोगो के लिए रोज़ की ही बात होती है, लिहाज़ा वो बेचारा पूरी धीरता के साथ हमारे आर्डर का इंतज़ार करता रहा। खैर, हमने रोटी-सब्ज़ी और मीठा मंगाया। कोई पौने एक बजे हम दोनों एक किराए की गाड़ी में बैठ कर हवाई-अड्डे पहुँच गए। प्रिया के लिए आज एक नया ही अनुभव होने वाला था। न तो उसने कभी इस प्रकार से सड़क यात्रा करी थी, और न ही कभी हवाई यात्रा। मुझे संदेह था की हवाई अड्डे पर प्रिया को लेकर कुछ ज्यादा पूछ-ताछ हो सकती है, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। खैर, मैं यहाँ पर ‘मेरी पहली हवाई यात्रा’ पर कोई निबंध तो लिखने बैठा नहीं हूँ, और न ही आप उसको पढने! कोई चार घंटे की यात्रा के बाद, हम लोग बैंगलोर पहुँच

गए और वहां से कोई डेढ़ घंटे बाद (करीब आठ बजे रात को) अपने घर पहुँच गए। लेकिन प्रिया ने ऐसी बदहवासी अपने पूरे जीवन में कभी नहीं देखी – इतनी भीड़, इतने सारे वाहन, इतना प्रदूषण, इतना शोर, इतनी गंदगी, और इतनी अराजकता – उसके लिए एकदम नया भी था, और थोड़ा डरावना भी। अच्छी बात यह रही की गाड़ी की खिड़कियाँ बंद थीं, और वातानुकूलन चल रहा था... नहीं तो मुझे पूरा शक था की उसको खाँसी हो जाती। उसको तभी राहत मिली जब हम अपनी हाउसिंग सोसाइटी के दायरे में आ गए।

अरे! मैंने आपको मेरी हाउसिंग सोसाइटी के सेक्रेटरी के बारे में कुछ बताया ही नहीं!

श्री हेगड़े जी और उनकी पत्नी अत्यंत सज्जन लोग थे, और बुज़ुर्ग भी। वो सेना के सेवानिवृत अधिकारी थे, और बहुत ही जिंदादिल और मजाकिया किस्म के इंसान थे। उनकी एकमात्र संतान, उनका पुत्र था, जो विवाह कर के सपत्नीक अमेरिका में ही बस गए थे। वो दोनों मेरे फ्लैट के बगल वाले ३ कमरे वाले फ्लैट में रहते थे। इसलिए उनसे अच्छी जान-पहचान थी, और इसीलिए मैंने उनको अपने घर की चाबी भी सौंपी थी। उनको मालूम था की हम लोग इस समय पर उपस्थित हो जायेंगे, इसलिए उन्होंने और उनकी धर्मपत्नी ने पहले ही सारे इंतजाम कर रखे थे। मैंने देखा की वो दोनों मेरे घर ही विराजमान हैं, और अन्दर से काफी सारे फूलों की महक आ रही है, तो तुरंत ही समझ में आ गया की माजरा क्या है। उनकी पत्नी ने हम दोनों को तिलक लगाया; हम दोनों ने उनका आशीर्वाद लिया। उसके बाद उन्होंने प्रिया को अन्दर आने को कहा। दरवाज़े पर एक चावल भरा कलश रखा था। प्रिया को मानो इसका सहज ज्ञान हो – उसने अपने दाहिने पांव से उस कलश को आगे की तरफ धकेल दिया। उसके साथ ही एक परात में गुलाबी-लाल रंग का घोल करके रखा हुआ था। प्रिया ने उसमे दोनों पांव रख कर घर की फर्श पर निशान बनाए, और वहीँ बैठक में खड़ी हो गई।

श्रीमती हेगड़े जी ने ही उसको पकड़ कर सोफे पर बैठाया और स्वयं भी सभी बैठ गए। इस समय मेरा महत्व लगभग नगण्य था, क्योंकि वो दोनों ही मेरी पत्नी से बात करने में मगन थे। अब चूंकि श्री और श्रीमती हेगड़े जी को हिंदी का ज्ञान बहुत ही कम था और वो लोग सहज नहीं थे, इसलिए आगे की बातें सब अंग्रेजी में हुईं!

श्रीमती हेगड़े जी ने श्री हेगड़े जी से कहा, “Is she not a thing of beauty! (कितनी सुन्दर हैं यह, है न?)”

श्री हेगड़े जी: "Oh she is! Such a lovely child! What is your good name, my child? (ओह बिलकुल! बहुत प्यारी बच्ची है! तुम्हारा शुभ नाम क्या है बेटे?)"

"जी, प्रिया!"

श्री हेगड़े जी: "Such a beautiful name - as precious as you are! (कितना सुन्दर नाम! ठीक तुम्हारे जैसा!)" फिर मेरी तरफ मुखातिब हो कर, "You married a child, you old goat! (तुमने एक बच्चे से शादी कर ली!?)" इस बात पर मेरे चेहरे पर उठने वाले भावों को देख कर उनको खूब हंसी आई। उन्होंने मेरी और खिंचाई करते हुए आगे कहा, "Are you sure that she is of legal age to wed? (पक्का, यह बालिग़ ही है न?)"

"Shut up old man! (तुम चुप करो)" ये श्रीमती हेगड़े जी की मीठी झिड़की थी, "Stop teasing him! (बहुत हो गयी इसकी खिचाई)" फिर उन्होंने प्रिया को देख कर कहा, "But yes, she is so beautiful, and I am so happy for you both. (लेकिन हाँ, बहु बहुत सुन्दर है, और मैं तुम दोनों के लिए बहुत ख़ुश हूँ)"

खैर, मैंने ही उनको बताया की प्रिया अभी कॉलेज में पढ़ रही है, और जैसे ही वो शादी लायक हुई, मैंने उसको लपक लिया। फिर मैंने उन दोनों को मेरी ससुराल के बारे में बताया। मैं उन सबसे कैसे मिला, यह भी बताया। मेरी बातें सुनने के बाद श्री हेगड़े जी ने मुझसे कहा,

"You are a lucky fellow, my boy! And oh yes we are very happy for both of you! And I must tell you young man that you are going to take good care of this little doll. (तुम बहुत ही भाग्यशाली हो बेटा! और हाँ, हम दोनों ही तुम्हारे लिए बहुत ख़ुश हैं... और एक बात, इस गुड़िया जैसी लड़की का ठीक से ख़याल रखना!)"

श्री हेगड़े जी ने मुझे हिदायद दी, "... for us you are like a son, but she is now our daughter too. (तुम हमारे बेटे जैसे ही हो, लेकिन यह अब हमारी बेटी है)"

फिर प्रिया की तरफ मुखातिब होकर, "My dear child, you heard what I just said. Treat us as your own parents. We will not let you feel alone, when this nocturnal, workaholic husband of yours is away slogging. If you need anything at all, you come to us. Okay? (बच्चे, तुमने सुना की मैंने अभी क्या कहा?

हमको अपने माता-पिता जैसा ही समझना। जब भी ये तुम्हारा पति ऑफिस में मेहनत कर रहा हो, हमारे पास आ जाना - हम तुमको कभी भी अकेला नहीं महसूस होने देंगे! कुछ भी ज़रुरत हो, तो तुरंत आ जाना। ओके?"

प्रिया को न जाने कितना समझ आया, लेकिन उसने सर हिला कर हामी भरी।

"Very well then, both of you on your feet. Clean up and get ready... Tonight's dinner is with us. So, if you have any other plans for dinner, scrap them. (बहुत अच्छा! अब चलो, जल्दी से फ्रेश होकर तैयार हो जाओ – आज का खाना हमारे साथ हैं। अगर बाहर जाकर खाने का कोई प्लान था, तो भूल जाओ।)"

और यह कह कर दोनों उठ कर अपने घर को चल दिए। मैंने सबसे पहले प्रिया को अपना घर दिखाया – यह २ कमरे का फ्लैट था, जिसमें बैठक कक्ष, रसोई घर, भोजन करने के लिए जगह, २ स्वच्छता घर और एक बालकनी भी थी। मुझे यह देखकर बहुत अच्छा लगा की श्री और श्रीमती हेगड़े जी ने घर की अच्छी तरह से साफ़ सफाई करवा दी थी और बड़े शयनकक्ष को फूलों की वेणियों से सजा दिया था – आज एक और सुहागरात होने वाली है, ऐसा सोच कर मैं मन ही मन मुस्कुरा दिया। खैर, घर दिखाने के बाद, मैंने प्रिया के घर फोन लगाया और सबसे बात करके प्रिया को फोन पकड़ाया, और हाथ मुँह धोने गुसलखाने में चला गया।

अगले आधे घंटे में हम दोनों श्री और श्रीमती हेगड़े जी के घर प्रीतिभोज करने पहुँच गए। आज तक किसी के घर इतना विस्तृत भोज मैंने कभी नहीं देखा था। विभिन्न प्रकार के सुस्वाद भोज्य थाली में परोसे गए, और हमारे मेजबानों ने इतने प्रेम और आग्रह से खिलाया की हम दोनों ने आवश्यकता से अधिक खा लिया। चलने से पहले श्रीमती हेगड़े जी ने प्रिया को सोने की चेन भेंट में दी। कुछ देर और बात-चीत करने के बाद, हम अपने घर वापस आ गए।

दरवाजे बंद कर मैंने प्रिया का हाथ पकड़ कर उसको हमारे कमरे के अन्दर ले आया। देर भी हो गयी थी, और एक लम्बी यात्रा के कारण थकावट भी थी, इसलिए आज कोई ख़ास प्रोग्राम (मेरा मतलब समागम) नहीं सोचा। लेकिन प्रिया से बात करने का मन तो था ही, इसलिए मैंने उससे पूछा,

"आपको घर अच्छा लगा?"

“बहुत अच्छा है” (उसने बहुत पर थोडा जोर देकर कहा), “और आपने बहुत अच्छे तरीके से रखा भी है।“

“थैंक यू! अच्छा, एक बात – कल मैंने एक रिसेप्शन रखा है। मेरे जान पहचान के लोग आयेंगे – ज्यादातर ऑफिस से। आपके पास कल पहनने के लिए कुछ है न?”

इतना तो मुझे मालूम था की प्रिया इतने दिनों से सिर्फ साड़ियाँ ही पहन रही है, और वो भी नई। संभव है की उसके पास कुछ न हो। मेरे प्रश्न पर उसका चेहरा उतर गया, और मेरा शक यकीन में बदल गया। उसने उत्तर में सिर्फ न में सर हिलाया।

“कोई बात नहीं, कल हम दोनों शौपिंग करने चलेंगे। ओके? इसी बहाने आपको अपना शहर भी दिखा दूंगा!”

“जी ठीक है!” कोई खास उत्साह नहीं।

“अरे यार! आप भी न! हम लोग आपके लिए नई ड्रेस लेंगे – मिनी मिडी टाइप! अंग-प्रदर्शन करने वाली। लोगो को भी मालूम पड़े, की मेरी बीवी कितनी हॉट है!”

“छी!” उसका मूड अब अच्छा हो गया।

मैं बिस्तर पर बैठ गया और प्रिया को भी अपने बगल बैठा कर आलिंगनबद्ध कर लिया।

“आई लव यू!” कह कर मैंने उसकी साड़ी का पल्लू उसके सीने से नीचे ढलका दिया, और एक गहरी, प्रशंसक दृष्टि डाली। मेरी इस हरकत से प्रिया की नजर नीचे झुक गयी। मैं कुछ मज़े लेने के लिए अनायास ही उसकी ब्लाउज का सबसे ऊपरी बटन खोलने लगा। ऐसे सहवास करने का कोई मूड नहीं था – प्रिया के पूरे चेहरे पर शर्म का रंग गहरा गया।

“आपको और आपकी शर्म को देख कर मुझे एक कहानी याद आ जाती है।“

प्रिया के होंठो पर एक मद्धिम सी मुस्कान आ जाती है, “कौन सी?”

“आप सुनेंगी?” प्रिया ने हामी भरी।

मैंने कहानी शुरू करी:

“बहुत पहले एक राजकुमार हुआ। वह ऐसे तो बहुत ही अच्छा था और प्रजा उसको बहुत चाहती भी थी, लेकिन उसकी एक बात के लिए लोग उससे बहुत ही डरते थे, ख़ासतौर पर लड़कियाँ और औरतें। और वह इसलिए क्योंकि उसकी यौन-शक्ति में बहुत ही बल था। उसको संतुष्ट करने के लिए उसके पास कम से कम १०० रखैलें थीं। फिर भी उसको चैन नहीं आता था। एक रात उसकी एक रखैल उसको संतुष्ट नहीं कर सकी, तो राजकुमार ने उसको भगा दिया। अगले दिन उसने अपने नौकरों को आदेश दिया की पूरा देश ढूंढ कर सबसे सुन्दर स्त्री को लाओ।

इस काम में बहुत महीने लग गए, लेकिन अंततः एक बहुत ही सुन्दर, जवान, लेकिन श्यामवर्ण लड़की मिली। राजकुमार ने उसको देखा तो कहा, ‘यह लड़की वाकई बहुत सुन्दर है। लेकिन इसका रंग इतना श्याम वर्ण क्यों है?’”

कहानी सुनाते-सुनाते मैंने प्रिया की ब्लाउज के सारे बटन खोल दिया, और उसके पट अलग कर उसके सुन्दर स्तनों को मुक्त भी कर दिया। प्रिया के झुके हुए चेहरे पर शरम वाली मुस्कान आ गयी थी और उसके उसके स्तनों और स्तनाग्र के इर्द-गिर्द लालिमा भी आ चली थी। मैंने कहानी आगे जारी रखी,

“इस बात पर एक चतुर नौकर बोला, ‘राजकुमार, वह इसलिए क्योंकि यह लड़की काम-देवी है। इसके अन्दर कामाग्नि इतनी धधकती है की उसकी तपन से इसका रंग इतना गहरा हो गया है।‘ राजकुमार इस बात से दंग रह गया। उसने पूछा, ‘अगर यह बात सच है तो मुझे इन रखैलों की ज़रुरत ही नहीं! है न?’ नौकर ने सहमती दिखाई।

इस बात पर राजकुमार ने तुरंत ही उस लड़की से ब्याह कर लिया और बाकी सभी औरतों की छुट्टी कर दी। और अब दोनों सुहाग-सेज पर आ कर बैठ गए। राजकुमार बिना देरी किये अपनी पत्नी से सहवास करना चाहता था। उसने शीघ्र ही राजकुमारी के कपड़े उतार दिए।“

इतना कहते हुए मैंने भी प्रिया की ब्लाउज उतार कर अलग कर दी, और उसको खड़ा कर के साथ ही साथ साड़ी भी उतार दी।

“राजकुमारी ने नंगा होते ही राजकुमार को अपने आकर्षण और यौन-दक्षता से मस्त कर दिया। अगले तीस दिन और तीस रात तक पूरे राजमहल में उन दोनों की कामुक और आनंद भरी आहें सुनाई देती रहीं। राजकुमारी ने राजकुमार को पूरी तरह से तृप्त कर दिया। और जब दोनों राजकुमार के महल से बाहर निकले, तो दोनों पूरी तरह से निर्वस्त्र, राजकुमार अपने हाथ-पैर पर घोडा बना हुआ था और राजकुमारी उसकी सवारी कर रही थी। राजकुमार ऐसे ही घोडा बने हुए उसको अपने सिंहासन तक ले गया। राजकुमारी वहां जा कर खुद तो सिंहासन पर विराजमान हो गयी, लेकिन राजकुमार उसके पैरों के पास ही बैठा रहा।“

इस समय तक प्रिया पूर्ण निर्वस्त्र हो गयी थी और मैं उसकी योनि को अपनी उंगली से सहला रहा था। प्रिया ने सहज प्रतिक्रिया दिखा कर अपनी दोनों टांगों को सिमटा लिया था और मेरी उंगली उसकी टांगो के शिकंजे में फंसे हुए ही उसकी योनि को सहला रही थी। मैंने उसके होंठों को गहराई से कुछ देर चूमा, तब जा कर उसकी पकड़ थोड़ी ढीली पड़ी। मैंने फिर उसकी पूरी योनि को अपनी मध्यमा उंगली से सहलाया। प्रिया अब भारी साँसे भर रही थी और उसकी टाँगे भी कांप रही थीं। फिर भी मैंने उसको बैठने नहीं दिया और उसकी योनि को सहलाता रहा। उसकी योनि से अब काम-रस की भारी वर्षा होने लग गई।

मैंने कहा, “तो डार्लिंग, इस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?”

“हंह?”

“इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है?”

“आआअह्ह्ह.... आप... आह्हह.. आप बहुत बदमाश हैं! आह!”

“ये शिक्षा मिलती है?” कहते हुए मैंने अपनी उंगली जोर से उसकी योनि के अन्दर घुसा दी।

“आआह्ह्ह!” प्रिया चिहुँक गयी।

“आआह्ह्ह!” वह अपने उन्माद के चरम पर पहुँच रही थी। यह बात मुझे भी समझ आ रही थी इसलिए मैंने अब उसके भगनासे को भी अपने अंगूठे से छेड़ना शुरू कर दिया। प्रिया के दोनों हाथ मेरे दोनों कन्धों को पकडे हुए थे, उसकी आँखें बंद थीं और मुँह से कामुक

आवाजें निकल रही थीं। मेरी उंगली के अन्दर बाहर आने जाने से वह उचक भी रही थी। कामाग्नि के कारण प्रिया के चेहरे पर पसीने की बूंदे चमकने लगी – उसकी साँसे छोटी, गहरी और धौंकनी जैसी चलने लगी।

“आह्ह्ह!” मैंने उसको कमर से पकड़ कर अपनी गोद में बैठा लिया, लेकिन उसकी योनि का मर्दन जारी रखा। प्रिया का पूरा शरीर कामोत्तेजना में कांप रहा था।

“उई माँ!” कह कर प्रिया का शरीर ऐंठ सा गया, और कराह की आवाज़ के साथ वह स्खलित हो गयी। प्रिया का पूरा शरीर ढीला पड़ गया – सर पीछे के तरफ ढलक गया और बाहें मेरे कन्धों से सरक कर निढाल गिर गयीं। योनि रस से मेरे जांघ पर पजामे का कपड़ा पूरी तरह से गीला हो गया। प्रिया अपने होंठ काट रही थी और अपनी साँसों को संयत करने, और अभी-अभी संपन्न हुए कन्मोनामाद सुख से वापस बहाल होने का प्रयास कर रही थी। जैसे-जैसे उसकी साँसे वापस आई, वैसे-वैसे वह शांत होने लगी – उसने अपनी भाषा में बहुत धीरे-धीरे कुछ कहा, जो मुझे समझ नहीं आया।

“ओ माँ! मैं तो मर गई!”

“आप हमारी बातों में माँ को क्यों लाती हैं - हमारे बीच का मामला है, हम ही सुलझा लेंगे? और..... अगर उन्होंने आपको ऐसे लुटते हुए देखा तो डर जाएँगी!” मैंने आँख मारते हुए चुटकी ली।

“धत्त!” प्रिया ने तुरंत प्रतिकार किया, लेकिन उसको लगा की शायद कोई गलती हो गयी, “सॉरी!” फिर उसको अपनी नग्नावस्था का आभास हुआ – मेरी बांहों में ढलक कर लेटने के कारण उसके स्तन आगे की ओर उठ गए। उसने झट से अपने हाथ से अपने स्तनों को ढक लिया – इस तथ्य के बावजूद की मैं अब तक उसके हर अंग-प्रत्यंग को देख, छू, चूम और प्यार कर चुका हूँ। फिर उसको अपने नितम्बों पर गीलेपन का आभास हुआ।

“अरे! आपका पजामा तो गीला हो गया। आई ऍम सॉरी!” कह कर वह मेरी गोद से उठने लगी।

“सॉरी? लेकिन मैं तो बहुत ख़ुश हूँ!” मेरा अर्थ समझ कर प्रिया पुनः शर्मा गई। उठने के बाद उसने देखा की मेरे लिंग ने मेरे पजामे में बड़ा सा तम्बू बनाया हुआ है।

“मैं इसको उतार दूं?” उसने पूछा, और मेरे हाँ कहने से पहले ही मेरे पजामे का नाड़ा ढीला करने लगी। मैंने भी अपने नितम्ब को थोडा सा उठा कर पजामा उतारने में उसकी मदद करी। पजामा उतारने के बाद उसने एक बार मेरी तरफ देखा, और फिर मेरा अंडरवियर भी उतारने लगी। मंद मंद मुस्कुराते हुए उसने फिर मेरे कुरते को भी उतार दिया। मुझे पूर्णतया निर्वस्त्र करने का उसका यह पहला अनुभव था।

“इसका.... क्या करें?” प्रिया ने आँख से मेरे पूरी तरह से तने हुए लिंग की तरफ इशारा किया।

“अभी नहीं... अभी सो जाते हैं। कल करते हैं?”

“ठीक है!”

हम दोनों ने बाथरूम में जा कर मूत्र त्याग किया और अपने गुप्तांगो को पानी से साफ़ किया और वापस बिस्तर पर आ कर नग्न ही लेट गए। प्रिया ने अपने आप को मुझसे लिपटा लिया – उसका सर मेरे कंधे पर, एक जांघ मेरी जांघ पर, एक स्तन मेरे सीने से सटा हुआ और एक बाँह मेरे सीने के ऊपर। मैंने प्रिया को सहलाते और पुचकारते हुए देर तक प्यार की बातें करता रहा और फिर पूरी तरफ अघा कर सो गया।

८

रात को सोते-सोते हमको काफी देर हो गई, इसलिए सवेरे उठने में भी समय लगा। शॉपिंग मॉल सवेरे १० बजे तक पूरी तरह से चलने लगते हैं, और चूंकि हमारे पास समय का काफी अभाव था, इसलिए मेरा लक्ष्य यह था की जल्दी से जल्दी सब सामान खरीद लिया जाय। वैसे भी हनीमून के लिए कल सवेरे ही निकलना था (अरे! उसकी टिकट भी बुक करनी है!)। अंडमान द्वीप-समूह चूंकि बीच वाली जगह हैं, इसलिए उसी के मुताबिक़ कपड़े-लत्ते भी लेने होंगे।

खैर, जल्दी से उठ कर और तैयार हो कर हम लोग ठीक १० बजे ही पास के एक बड़े मॉल पहुँच गए। पूरे माल में हम लोग ही पहले ग्राहक थे। हम लोग सबसे पहले एक पारंपरिक परिधानों वाले शो-रूम में पहुंचे। वहां के मालिक को मैंने अपनी ज़रुरत के बारे में आगाह किया, तो उन्होंने वायदा किया की वो एक घंटे के अन्दर ही कपड़ों को पूरी तरह से नाप के अनुसार नियोज्य करके दे देंगे। अपना काम तो हो गया – प्रिया के लिए कोरल-पिंक रंग का और नीले बार्डर वाला शिफॉन का लेहेंगा-चोली खरीदा। शो-रूम के मालिक (जो खुद भी एक ड्रेस-डिज़ाइनर हैं, और महिला भी) ने खुद ही प्रिया की नाप ली और अधोवस्त्रों के लिए उसको सुझाव दिया। चोली एक बैक-लेस प्रकार की थी, अतः अन्दर कुछ पहन नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने सिलिकॉन ब्रैस्ट पैड्स दिए, जो त्वचा के रंग के ही होते हैं। उन्होंने ही प्रिया के स्तनों की माप भी ली और बताया की हम ३२ बी साइज़ की ब्रा खरीद सकते हैं।

वहां से हम प्रिया के लिए अंतर्वस्त्र, बीच-वियर, और नाइटी लेने दूसरे शो-रूम को गए। वहां भी हम लोग पहले ही ग्राहक थे। वहां पर एक ब्रा-फिटर हमारे साथ हो ली – मैंने उनको बताया की प्रिया ने पहले कभी भी ब्रा नहीं पहनी है और जाहिर है की उसको उनकी आदत नहीं है, इसलिए ऐसी ब्रा दिखाए, जो आरामदायक हों, और साथ ही कामुक भी, क्योंकि यह हमारा हनीमून भी है। साथ ही मैचिंग पैंटीज भी दिखाएँ। वो ब्रा-फिटर पक्की पेशेवर थीं। वो अपना मापक-टेप लेकर आयीं, और प्रिया के साथ चेंज-रूम में चली गयी, और मुझे भी साथ आने को बोला। फिटिंग रूम में पहुँच कर उन्होंने प्रिया को निर्वस्त्र होने को कहा। प्रिया पहले ही इस पूरे अनुभव से अभिप्लुत थी – यह सब कुछ उसने पहली बार ही देखा था, और शॉपिंग इस तरह से भी होती है उसको मालूम ही नहीं था। और अब, उसको एक अज्ञात महिला निर्वस्त्र होने को कह रही थी – मैंने प्रिया को माथे पर चूमा, और

कपड़े उतारने को कहा। मेरे कहने पर प्रिया को थोड़ी स्वान्त्वना मिली और उसने कुछ और हिचकिचाहट के बाद अपना कुर्ता और सलवार उतार दिया।

“शी इस सो ब्यूटीफुल, सर!” प्रिया के रूप का अवलोकन और आंकलन करते हुए उसने कहा।

“थैंक यू सो मच! शी इस इन्डीड! एंड, आई ऍम इन लव विद हर!” मुझे समझ नहीं आया की और क्या कहा जाए।

“श्योर! नाउ सर, प्लीज़ सिट एंड वेट! लेट अस सरप्राइज यू!” उसने मुस्कुराते हुए कहा। उन दोनों को कुछ देर लगने वाली थी, इसलिए मैंने ब्रा-फिटर को बीच-वियर, और स्विम-वियर भी चुनने को कह दिया और अपने लिए भी कुछ सामान लेने चला गया। कोई डेढ़-दो घंटे के बाद हमारे पास तीन बैग भर कर सामान हो गया।

ब्रा-फिटर ने बिल का भुगतान लेते हुए मुझसे फुसफुसा कर कहा, “सर, यू आर अ वेरी लकी मैन टू हैव अ गर्ल लाइक योर वाइफ! एंड, यू आर गोइंग टू बी अ वेरी वेरी हैप्पी मैन ऑन योर हनीमून!”

‘ऐसा क्या खरीद लिया!?’ मैने सोचा।

अगली दुकान में मैंने प्रिया के लिए कुछ जीन्स, स्कर्ट, हाफ-पैन्ट्स, और टी-शर्ट खरीदीं। उसने मुझे ऐसी फ़िज़ूल-खर्ची के लिए बहुत मना किया, लेकिन मेरे लिए यह पहला मौका था जब मैं किसी अपने को किसी भी तरह का उपहार दे पाया, इसलिए मैं रुकना नहीं चाहता था। अगला पड़ाव जूते खरीदने के लिए था – प्रिया के लिए एक जोड़ी सैंडल, स्पोर्ट-शूज, और स्लिपर्स खरीदीं। हमने खाना खाया, प्रिया की लहँगा-चोली ली, और वापस घर आ गए।

घर आते ही सबसे पहले पोर्ट-ब्लेयर जाने का टिकट लिया। सामान पैक करने के लिए कुछ तैयारी नहीं करनी थी – ज्यादातर सामान नया था और तुरंत ही पैक किया जा सकता है। मैंने अपना डिजिटल कैमरा और पर्सनल लैपटॉप भी बाहर ही रख लिया, और फिर अपने रिसेप्शन के इवेंट आर्गेनाइजर से बात की। उसने बताया की सब पूरी तरह नियत रूप से चल रहा है और शाम को बहुत अच्छा रिसेप्शन होगा।

हमारा रिसेप्शन बिलकुल मॉडर्न समारोह था। बहुत ज्यादा लोग नहीं बुलाये गए थे – बस मेरे सोसाइटी के कुछ परिवार, हेगड़े जी दंपत्ति, मेरे ऑफिस के ज्यादातर सहकर्मी, मेरे बॉस और उसका परिवार आये थे। प्रिया के लिए यह रिसेप्शन वाली संकल्पना ही पूरी तरह से नई थी – वह हाँलाकि नर्वस थी, लेकिन सारे लोग उससे इतने प्यार, अदब और प्रशंसा से मिल रहे थे की धीरे-धीरे वह समारोह का आनंद उठाने लगी। हमेशा की तरह वह आज भी बेहद सुन्दर लग रही थी। एक अप्रत्याशित बात हुई - मेरी दो भूतपूर्व प्रेमिकाएँ भी बिना बुलाए आ गईं, लेकिन अच्छी बात यह, की उन्होंने कोई बखेड़ा नहीं खड़ा किया। उलटे, वो दोनों मेरे लिए बहुत ख़ुश थीं – दोनों ने ही प्रिया को गाल पर चूमा, शादी की बधाइयाँ और उपहार भी दिए! मुझे भी बधाइयाँ मिली और दोनों ने ही मुझको बताया की मेरी बीवी बहुत सुन्दर है! अब यह दिखावा था, या सचमुच की ख़ुशी, कह नहीं सकता।

रिसेप्शन में होता ही क्या है? खाना-पीना, नाच-गाना, और मदिरा। कोई तीन घंटे तक सबने खूब मस्ती करी। मेरे मित्र-गण मुझे और प्रिया को पकड़ कर डांस-फ्लोर पर ले गए जहाँ हमने दो-तीन धुनों पर नृत्य किया। नाचने में मैं तो खैर काफी बेढंगा हूँ, लेकिन प्रिया को सुर-ताल-और-लय पर नाचना आता है। बड़ा मज़ा आया। समारोह के बाद सबने विदा ली। मैंने अपने बॉस को बोला की वो अपने मित्र को कह दें की हम कल सवेरे पोर्ट ब्लेयर पहुँच जायेंगे, और हमारे लिए इंतजाम कर दे। बॉस ने कहा की उन्होंने पहले ही अपने मित्र को कह दिया है, और अभी वो फिर से बात कर लेंगे। फिर उन्होंने अपने मित्र का भी नंबर दिया और मुझसे बात करायी। उन्होंने फ़ोन पर मुझे बताया की उन्होंने एक कमरा बुक कर रखा है और हमारे आनंद की पूरी व्यवस्था कर दी गयी है। उन्होंने मुझे आगे का प्लान बताया और कहा की हम लोग पोर्ट ब्लेयर से सीधा हेवलॉक द्वीप पहुँच जाएँ। हमारे लिए फेरी का टिकट भी प्लान कर लिया गया है। ये होती है निर्बाध व्यवस्था!

लोगों के दिए गए उपहारों को समेट कर घर आते-आते पुनः रात के बारह बज गए। देर तक सोने का समय ही नहीं बचा। सबसे पहले अपने कपड़े बदले, दो बैग तैयार किये, अपना कैमरा और लैपटॉप रखा। सोने का कोई सवाल ही नहीं था, इसलिए मैं प्रिया को लेकर अपनी बालकनी में आ गया।

“कितनी शान्ति है – लगता ही नहीं की यह वही शहर है जहाँ दिन भर इतना शोर होता रहता है।“ प्रिया ने कहा।

“हा हा! हाँ, रात में ही लोगो को ठंडक पड़ती है यहाँ तो! पूरा दिन बदहवासी में भटकते रहते हैं सब! आपने अभी मुंबई शहर नहीं देखा – देखेंगी तो डर जाएँगी।”

“इतना खराब है?”

“खराब छोटा शब्द है! बहुत खराब है।”

कुछ देर चुप रहने के बाद,

“आप क्यों इतना खर्च कर रहे हैं? मैं ... हम, अपने घर में, मतलब यहीं क्यों नहीं रह सकते?”

“जानेमन, अपने ही घर में रहेंगे। हनीमून घर में नहीं मनाते! और इसी बहाने कहीं घूम भी आयेंगे!! मैंने अपनी पूरी लाइफ में सिर्फ एक ही यात्रा की है – और उसमें ही भगवान को इतनी दया आ गयी की आपको मेरे जीवन में भेज दिया। सोचा, की एक बार और अपने लक को ट्राई कर लेता हूँ। न जाने और क्या क्या मिल जाए! हा हा!”

“अच्छा, तो आपका मन मुझसे अभी से भर गया, की अब दूसरी की खोज में निकल पड़े?” प्रिया ने मुझे छेड़ा।

“दूसरी की खोज! अरे नहीं बाबा! फिलहाल तो पहली की ही खोज चल रही है! न तो आपने कभी बीच देखे, और न ही मैंने! बीच भी देखेंगे, और.... और भी काफी कुछ!” मैंने आँख मारते हुए कहा।

“काफी कुछ मतलब?”

उत्तर में मैंने प्रिया के कुरते के ऊपर से उसके स्तन को उंगली से तीन चार बार छुआ।

“आप थके नहीं अभी तक?” प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा।

“ऐसी बीवी हो तो कोई गधा हस्बैंड ही होगा जो थकेगा! तो बताओ, मैं गधा हूँ क्या?”

प्रिया ने प्यार से मेरे गले में गलबैंयां डालते हुए कहा, “नहीं... आप तो मेरे शेर हैं!”

“आपको मालूम है की शेर और शेरनी दिन भर में कोई ४०-५० बार सहवास करते हैं?”

“क्या?... आप सचमुच, बहुत बदमाश हैं! न जाने कैसे ऐसी बाते मालूम रहती हैं आपको!”

“इंटरेस्टिंग बाते मुझको हमेशा मालूम रहती हैं!”

“तो, जब आपने मान ही लिया है, की मैंने आपका शेर हूँ.... और आप... मेरी शेरनी... तो....”

“हःहःहःह...” प्रिया हल्का सा हंसी, “शेर आपके जैसा हो, और शेरनी मेरे जैसी, तो शेरनी तो बेचारी मर ही जाए!”

मैंने कुछ और खींचने की ठानी, “मेरे जैसा मतलब?”

“जब हमारी शादी पास आ रही थी, तो पास-पड़ोस की 'भाभियां' मुझे.... सहवास... सिखाने के लिए न जाने क्या-क्या बताती रहती थीं।“

“आएँ! आपको भाभियाँ यह सब सिखाती है?”

“तो और कौन बतायेगा? उनके कारण मुझे कम से कम कुछ तो मालूम पड़ा – भले ही उन्होंने सब कुछ उल्टा पुल्टा बताया हो! अब तो लगता है की शायद उनको ही ठीक से नहीं मालूम!”

मुझे प्रिया की बात में कुछ दिलचस्पी आई, “अच्छा, ऐसा क्या बताया उन्होंने जो आपको उल्टा पुल्टा लगा? मुझे भी मालूम पड़े!”

प्रिया थोड़ा शरमाई, और फिर बोली, “उन्होंने मुझे बताया की पुरुषों का... ‘वो’.. ककड़ी के जैसा होता है। मैं तो उसी बात से डर गयी! मैंने तो सिर्फ बच्चों के ही... ‘छुन्नू’ देखे थे, लेकिन उस दिन जब मैंने पहली बार आपका.... देखा, तो समझ आया की ‘वो’ उनके

बताये जैसा तो बिलकुल भी नहीं था। आपका साइज़ तो बहुत बड़ा है! मुझे लगा की मेरी जान निकल जाएगी। और फिर आप इतनी देर तक करते हैं की.....!"

"मतलब आपको मज़ा नहीं आता?" मैंने आश्चर्य से कहा – मुझे लगा की मैंने प्रिया को बहुत मज़े दे रहा हूँ! कहीं देर तक करने के कारण उसको तकलीफ तो नहीं होती!

"नहीं! प्लीज! ऐसा न कहिये! मैं सिर्फ यह कह रही हूँ की आप वैसे बिलकुल भी नहीं हैं, जैसा मुझे भाभियों ने मर्दों के बारे में बताया है! भाभियों के हिसाब से सहवास.... बस दो-चार मिनट में ख़तम हो जाता है, और यह भी की यह मर्दों के अपने मज़े के लिए है। लेकिन आप.... आप एक तो कम से कम पंद्रह-बीस मिनट से कम नहीं करते, और आप हमेशा मेरे मज़े को तरजीह देते हैं। और बात सिर्फ सहवास की नहीं है......"

प्रिया थोड़ी भावुक हो कर रुक गई, "मेरे शेर तो आप ही हैं!" कहते हुए प्रिया ने मेरे लिंग को अपने हाथ की गिरफ्त में ले लिया – मेरा लिंग फूलता जा रहा था।

"आई ऍम सो लकी! .... और अगर मैं यह बात आपको बोलूँ, तो आप मेरे बारे में न जाने क्या सोचेंगे! लेकिन फिर भी मुझे कहना ही है की मैं आपकी फैन हूँ! फैन ही नहीं, गुलाम! आप मेरे हीरो हैं... आप जो कुछ भी कहेंगे मैं करूंगी। आज आपने मुझे जब कपड़े उतारने को कहा, तो मुझे डर या शंका नहीं हुई। मुझे मालूम था की आप मेरे लिए वहां हैं, और मुझे कोई नुक्सान नहीं होने देंगे। और... आप चाहे तो दिन के चौबीसों घंटे मेरे साथ सहवास कर सकते हैं, और मैं बिलकुल भी मना नहीं करूंगी!"

"हम्म्म्म! गुड!" फिर कुछ सोच कर, "... लगता है आपकी भाभियों को मेरे पीनस (लिंग) का स्वाद देना पड़ेगा!"

"न न ना! आप बहुत गंदे हैं!" प्रिया ने मेरे लिंग पर अपनी गिरफ्त और मज़बूत करते हुए कहा, "ऐसा सोचिएगा भी नहीं। ये सिर्फ मेरा है!"

कह कर प्रिया ने मेरे लिंग को दबाया, सहलाया और हल्का सा झटका दिया।

"ये करना आपकी भाभियों ने सिखाया है?" मैंने शरारत से पूछा।

“चलिए, आपको थकाते हैं!” प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा।

मैंने भी मुस्कुराते हुए प्रिया को चूमने के लिए उसकी कमर को पकड़ कर अपनी तरफ खीचा और उसके मुँह में मुँह डाल कर उसको चूमने लगा। कुछ देर चूमने के बाद मैंने प्रिया का कुरता उसके शरीर से खींच कर अलग किया और अपना भी टी-शर्ट उतार दिया। मेरी हुस्न-परी के स्तन अब मेरे सामने परोसे हुए थे – मैंने प्रिया के दाहिने स्तनाग्र को अपनी जीभ से कुछ देर तक चुभलाया, फिर मुँह में भर लिया। प्रिया के मुँह से मीठी सिसकारी निकल पड़ी। मैं बारी-बारी से उसके स्तनों को चूमता और चूसता गया - जब मैं एक स्तन को अपने मुँह से दुलारता, तो दूसरे को अपनी उँगलियों से। उसके स्तनाग्र उत्तेजना से मारे कड़े हो गए, और सांसे तेज हो गईं। अब समय था अगले वार का - मैंने अपने खाली हाथ को उसकी सलवार के अन्दर डाल दिया, और उसकी योनि को टटोला। योनि पर हाथ जाते ही मुझे वहां पर गीलेपन का एहसास हुआ। कुछ देर उसको सहलाने के बाद मैंने अपनी उंगली प्रिया की योनि में डाल कर अन्दर-बाहर करना शुरू कर दिया।

प्रिया कुछ देर आँखें बंद करके आनंद लेती रही, फिर उसने मेरे लिंग को मुक्त कर दिया – मैं पूरी तरह उत्तेजित था। कुछ देर प्रिया ने मेरे लिंग को अपने हाथ से पकड़ कर मैथुन किया, और फिर झुक कर उसको अपने मुँह में भर लिया। दोस्तों, लिंग को चूसे जाने का एहसास अत्यंत आंदोलित करने वाला होता है। उत्तेजना के उन्माद में मैं बालकनी की रेलिंग के सहारे आधा लेट गया, और लिंग चुसवाता रहा। प्रिया कोई निपुण नहीं थी – लेकिन उसका अनाड़ीपन, और मुझे प्रसन्न करने की उसकी कोशिश मुझे अभूतपूर्व आनंद दे रही थी। कुछ देर के बाद प्रिया ने चूसना रोक दिया, और अपनी सलवार और चड्ढी उतार फेंकी। फिर उसने वो किया जो मैंने कभी सोचा भी नहीं – मेरे दोनों तरफ अपनी टांगे फैला कर वह मेरे लिंग को अपनी नम योनि में डाल कर धीरे-धीरे नीचे बैठने गयी।

“आअह्ह्ह्ह....” उन्माद में प्रिया की साँसे उखड गयी।

प्रिया ने उत्साह के साथ मैथुन करना प्रारंभ कर दिया – मैं वैसे भी दो दिन से भरा बैठा था, इसलिए वैसे भी बहुत कामोत्तेजित हो गया था। मेरा लिंग एकदम कड़क हो गया, और प्रिया की पहल भरी यौन-क्रिया से और भी दमदार हो गया। मैं बस प्रिया के स्तनों और नितम्बो को बारी-बारी से दबाता रहा। इस बीच प्रिया पूरे अनाड़ीपन में मेरे लिंग पर ऊपर-नीचे होती रही – कभी कभी लिंग उसकी योनि से बाहर भी निकल जाता। वैसा होने पर मैं वापस उसको अन्दर डाल देता। प्रिया को संभवतः एक पूर्व संसर्ग की याद हो आई हो – वह अपने नितम्बो को न केवल ऊपर नीचे, बल्कि गोलाकार गति में भी घुमा रही थी -

इससे मेरे लिंग का दो-आयामी दोहन होने लगा था। इससे उसके भगनासे का भी बराबर उत्तेजन हो रहा था। उसकी गति भी बढ़ने लगी थी - सम्भवतः वह स्खलित होने ही वाली थी। बस अगले २ ही मिनटों में प्रिया का शरीर चरमोत्कर्ष पर पहुँच कर थरथराने लगा, और उसी समय मैं भी अपने उन्माद के आखिरी सिरे पर पहुँच गया। कुछ ही धक्को में मैं स्खलित हो गया। प्रिया जैसी सौंदर्य की देवी की योनि में वीर्य की धाराएँ छोड़ने का एहसास बहुत ही सुखद था।

सहवास का ज्वार थमते ही प्रिया मेरे सीने पर गिर कर हांफने लगी! मेरे तेजी से सिकुड़ते लिंग पर उसकी योनि का मादक संकुचन – मानो उसकी मालिश हो रही हो।

“बाप रे! आप कैसे करते हैं, इतना देर! ..... आपका तो नहीं मालूम, लेकिन मैं थक गयी! आअह्ह!”

हम दोनों ही इस बात पर हंसने लगे। फिर प्रिया को कुछ याद आया,

“अच्छा, आपने बताया ही नहीं की उस कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है?”

“किस कहानी से?” मैंने दिमाग पर जोर डाला, “अच्छा, वो! हा हा हा! तो आपको याद आ ही गया। इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है की साँवली लड़कियाँ सहवास में बहुत तेज़ होती हैं... और... गोरी लड़कियों को सिखाना पड़ता है!”

“छी! धत्त! आप न! आपके साथ दो दिन क्या रह ली, मैं भी बेशरम हो गई हूँ!”

“हा हा! बेशरम? कैसे?”

“ऐसे ही आपके सामने नंगी पड़ी हूँ।“

“तो फिर किसके सामने नंगा पड़ा होना था आपको?”

“किसी के सामने नहीं! नंगा होना क्या ज़रूरी है? और तो और, उस दिन तो अश्विनी ने भी देख लिया। और आप भी पूरे बेशरम हो कर उसको दिखाते रहे।”

“अरे! देख लिया तो देख लिया! बच्ची है वह! सीखने के दिन हैं... अच्छा है, हमसे सीख रही है!”

“जी नहीं! कोई ज़रुरत नहीं!”

हम लोग ऐसी ही फ़िज़ूल की बातें कुछ देर तक करते रहे। नव-विवाहितों के बीच में शुरू शुरू में एक दीवार होती है। हमारे बीच में वह दीवार अब नहीं थी। ये सब शिकायतें, छेड़खानी, हंसी-मज़ाक, सब कुछ मृदुलता और नेकदिली से हो रहा था। हमारे बीच की अंतरंगता अब सिर्फ शारीरिक नहीं रह गई थी। मैंने एक कैब सर्विस को फ़ोन कर बैंगलोर हवाई अड्डे के लिए टैक्सी मंगाई, और हम दोनों एक साथ नहाने के लिए गुसलखाने में चले गए।

प्रिया भले ही न दिखा रही हो, लेकिन वह हनीमून को लेकर उतना ही रोमांचित थी, जितना की मैं। मैंने जब भी द्वीपों के बारे में सोचा, मुझे बस यही लगता की वह कोई ऐसी एकांत जगह होगी, जहाँ सफ़ेद बलुई बीच होंगे, लहराते ताड़ और नारियल के पेड़ होंगे, और गरम उजले दिन होंगे! सच मानिए, उन तीन चार दिनों की ठंडी में ही मेरा मन भर गया। इतने दिनों तक बैंगलोर की सम जलवायु में रहते हुए उस प्रकार की कड़क ठंडक से दो-चार होने की हिम्मत मुझमे नहीं थी। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बिलकुल वैसी जगह थी, जहाँ मैं अभी जाना पसंद करता। प्रिया का साथ, इस यात्रा में सोने पर सुहागा थी।

९

बैंगलोर हवाई-अड्डे पर पुनः कोई समस्या नहीं हुई। बस यही की चेक-इन काउंटर पर बैठी ऑफिसर, प्रिया जैसी अल्पवय तरुणी को विवाहित सोच कर उत्सुकता पूर्वक देख रही थी। मेरे लाख मन करने के बावजूद आज भी प्रिया ने साड़ी-ब्लाउज़ पहना हुआ था – हाथों में मेहंदी, सुहाग की चूड़ियाँ, सिन्दूर, मंगलसूत्र, इत्यादि सब पहना हुआ था उसने। मैंने लाख समझाया की गहनों की सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है, फिर भी! अल्प-वय पत्नी होने के अपने ही नुकसान हैं – लोग कैसी कैसी नज़रों से देखते रहते हैं! और तो और, सारे मॉडर्न कपड़े-लत्ते खरीदना बेकार सिद्ध हो रहा था। जवान लोगो के शौक होते हैं... लेकिन ये तो परंपरागत परिधान छोड़ ही नहीं रही है।

फ्लाइट अपने निर्धारित समय पर निकली – मैंने प्रिया को विंडो सीट पर बैठाया, जिससे वो बाहर के नज़ारे देख सके। बंगाल की खाड़ी पर उड़ते समय कुछ भी साफ़ नहीं दिख रहा था – अधिक रोशनी और धूल-भरी धुंध के कारण कुछ भी नहीं समझ आ रहा था। लेकिन, जब हम द्वीप समूह के निकट पहुंचे, तब नजारे एकदम से अलग दिखने लगे। नीले रंग का पानी, उसके बीच में अनगिनत हरे रंग के टापू, नीला आसमान, उसमें छिटपुट सफ़ेद बादल! फ्लाइट पूरा समय सुगम रूप से चली, लेकिन आखिरी पंद्रह मिनट किसी एयर-पॉकेट के कारण हमको झटके लगते रहे। बेचारी प्रिया ने डर के मारे मेरा हाथ कस के पकड़ रखा था (अब कोई किसी को कैसे समझाए की अगर हवाई जहाज गिर जाए, तो कुछ भी पकड़ने का कोई फायदा नहीं!)।

खैर, उतरते समय नीचे का जो भी दृश्य दिखा वो अत्यंत मनोरम था। एअरपोर्ट पर हवाई पट्टी के चहुँओर छोटे-छोटे पहाड़ी टीले थे, जिन पर प्रचुर मात्रा में हरे हरे पेड़ लगे हुए थे। देख कर ऐसा लग रहा था की यहाँ बहुत ठंडक होगी, लेकिन सूरज की गर्मी और समुद्री प्रभाव के कारण वातावरण गुनगुना गरम था। उत्तराँचल की ठंडी (जो की मेरे दिलोदिमाग में बस गई थी) से तुरंत ही बहुत राहत मिली।

हमने पूरे दस दिनों का प्रोग्राम बनाया था (दरअसल, बॉस ने बनाया था... और एक बात, मेरे ऑफिस के सभी सहकर्मियों ने हमारे हनीमून के लिए योगदान किया था। यह एक अभूतपूर्व घटना थी, और लोगो के प्रेम के इस संकेत से में पहले ही बहुत प्रभावित और

भावुक था), और उसका सारा दारोमदार बॉस के मित्र पर था। उन्होंने पूरी दयालुता से हमारे हनीमून को अविस्मरणीय अनुभव बनाने की गारंटी ली थी।

पोर्ट ब्लेयर आते ही एक टैक्सी ने हमको एक जेटी (जलबंधक) तक पहुँचाया, जहाँ एक उत्तम प्रकार की फेरी में फर्स्ट-क्लास में हमारी बुकिंग थी। यह सब कुछ हम दोनों के लिए ही नया था और रोमांचक भी। फिरोज़ी नीला समुद्री जल, उसमें उठती अनंत लहरें, हमारे जहाज द्वारा छोड़े जाने वाला फेन और शोर – सब कुछ रोमांचक था। फर्स्ट क्लास में हमारे अलावा एक और नव-विवाहित जोड़ा भी था, लेकिन वो दोनों अपने में ही इतना मगन थे, की उनसे बात करने का अवाल ही नहीं उठा, और ऐसा भी नहीं है की मुझको उनसे बात करने की तीव्र इच्छा थी। खैर, इन सब में समय यूँ ही निकल गया, और हम लोग वहां के हेवलॉक द्वीप पर पहुँच गए।

वहां जेटी पर हमें लेने होटल की गाड़ी आई। कार की खुली खिड़की से गुनगुनी धूप मिली हुई हवा और समुद्री महक बहुत अच्छी लग रही थी। कोई दस मिनट में ही हम लोग अपने रिसोर्ट पर पहुँच गए। आज सवेरे हवाई अड्डे पर ही जो खाया था, वही था, इसलिए अभी बहुत तेज भूख लग रही थी। हमने होटल में चेक-इन किया और अपने कमरे में पहुँच गए। यह रिसोर्ट एक विस्तृत क्षेत्र में बना हुआ था – उसमे कुछ टेंट लगे हुए कमरे थे, और कुछ झोपड़े-नुमा कमरे। टेंट और झोपड़े सिर्फ कहने के लिए है – दरअसल ज्यादातर कमरों में वातानुकूलन लगा हुआ था। पूरे रिसोर्ट में नारियल के पेड़ और बहुत सारे फूल लगे हुए थे, जिससे दृश्य बहुत ही सुन्दर बन पड़ता था। इस समय मुझे जितने भी ग्राहक वहां दिखे, वो सारे ही विदेशी थे। इस रिसोर्ट में खूबी यह भी थी की यहाँ पर समुद्री एडवेंचर स्पोर्ट्स का भी बंदोबस्त करते थे। हमारा कमरा उनके सबसे अच्छे कमरों में से एक था, और रिसोर्ट के अपने बीच के ठीक सामने था। कमरे को सफ़ेद रंग से रंग गया था, और लिनेन फिरोज़ी नीले रंग के विभिन्न शेड्स के थे। पेंटिंग में भी समुद्र ही दिख रहा था। बिस्तर के सामने की तरफ फ्लैट-स्क्रीन टीवी लगी हुई थी, और दाहिनी तरफ लकड़ी का ड्रेसर – कुल मिला कर एक स्टैण्डर्ड रख रखाव!

“हियर वी आर!” बेलहॉप ने हमारा सामान ड्रेसर में रखते हुए कहा, और फिर दरवाज़े की तरफ बढ़ते हुए, “कान्ग्रेचुलेशंस ऑन योर वेडिंग! आपको अगर कुछ आर्डर करना है तो मेनू साइड टेबल पर है और रेस्त्राँ का नंबर १० है।“

कह कर वह कमरे से बाहर चला गया। खैर, मैंने अपने आपको बिस्तर पर पटका और खाने का मेनू उठाया, और प्रिया को पूछा की वो क्या खाएगी।

जैसा पहले भी हो चुका है, अंततः मुझे ही आर्डर करना पड़ा। खाने के साथ-साथ फ्रेश लाइम सोडा भी मंगाया।

“चलिए, आपको इन कपड़ों से छुट्टी दिलाते हैं?” आर्डर देते ही मैंने जैसे ही प्रिया की तरफ हाथ बढाया, वह झट से पीछे हट गई।

“धत्त! आप भी न, जब देखो तब शुरू हो जाते हैं! आपके छुन्नू पर आपका कोई कंट्रोल नहीं है!”

“छुन्नू? ये छुन्नू है?” कहते हुए मैंने प्रिया का हाथ पकड़ कर अपने सख्त होते लिंग पर फ़िराया.... “जानेमन, इसको लिंग कहते हैं.... क्या कहते हैं?”

“मुझे नहीं मालूम।“ प्रिया ने ठुनकते हुए कहा।

“अरे! अभी तो बताया – इसको ल्ल्ल्लिंग कहते हैं।“ मैंने थोडा महत्व देकर बोला। “अब बोलो।“

अब तक मैं बिस्तर के कोने पर बैठ गया था, और प्रिया मेरे बांहों के घेरे में थी।

“नहीं नहीं!.. मैं नहीं बोल सकती!”

मैंने प्रिया के नितम्ब पर एक हल्की सी चपत लगाई, “बोलो न! प्लीईईज! क्या कहते हैं इसको?”

प्रिया, हिचकते और शर्माते हुए, “ल्ल्ल्लिंग...”

“वेरी गुड! और लिंग कहाँ जाता है?”

“मेरे अन्दर...”

“नहीं, ऐसे कहो, ‘मेरी योनि के अन्दर..’ .... कहाँ?”

प्रिया अब तक शर्मसार हो चली थी, लेकिन गन्दी भाषा का प्रयोग हम दोनों के ही लिए बहुत ही रोमांचक था, “मेरी .. योनि.. के अन्दर...”

“गुड! कल ही आपने कहा था की मैं चाहूँ तो दिन के चौबीसों घंटे आपकी योनि में अपना लिंग डाल सकता हूँ, और आप बिलकुल भी मना नहीं करेंगी! कहा था न?”

“मैंने कहा था? कब?” प्रिया भी खेल में शामिल हो गई।

“जब आप मेरे लिंग को अपनी योनि में डाल कर उछल-कूद कर रहीं थी तब...” मैंने प्रिया की साड़ी का फेंटा उसके पेटीकोट के अंदर से निकाल लिया और ज़मीन पर फेंक दिया। “बोलिए न, मुझे रोज़ डालने देंगी?”

“आप भी न! जाइए, मैं अब और कुछ नहीं बोलूंगी..”

“अरे! मुझसे क्या शर्माना? यहाँ मेरे सिवाय और कौन है यह सब सुनने को? बोलिए न!”

“नहीं! आप बहुत गंदे हैं! और, मैं अब कुछ नहीं बोलूंगी.... जो बोलना था, वो सब बोल दिया।“

अब उसकी पेटीकोट का नाडा खुल गया और खुलते ही पेटीकोट नीचे सरक गया। प्रिया सिर्फ ब्लाउज और चड्ढी में मेरे सामने खड़ी हुई थी।

“ऐसे मत सताओ! प्लीज! बोलो न!”

“हाँ!”

“क्या हाँ? ऐसे बोलो, ‘हाँ, मैं तुमको रोज़ डालने दूंगी’...”

“छी! मुझे शरम आती है।“

“कल तो बड़ी-बड़ी बाते कह रही थी, और आज इतना शर्मा रही हैं! अब क्या शरमाना? ये देखो, मेरी उंगली आपकी योनि के अन्दर घुस रही है! और कुछ ही देर में मेरा लिंग भी घुस

जाएगा! अब बोल दो प्लीज। मेंरे कान तरस रहे हैं!” प्रिया की चड्ढी मैंने थोड़ा नीचे सरका दी और उसकी योनि को अपनी तर्जनी से प्यार से स्पर्श कर रहा था।

“बोलो न!”

“हाँ, मैं रोज़ डालने दूंगी।“

“कभी मना नहीं करोगी?”

“कभी नहीं... जब आपका मन हो, तब डाल लीजिये!”

“क्या डाल लीजिये?”

“जो आप थोड़ी देर में डालने वाले हैं!”

“क्या डालने वाले हैं?”

इस बार थोड़ी कम हिचक से, “ल्ल्ल्लिंग...”

“गुड! और कहाँ डालने वाले हैं?” कहते हुए मैंने प्रिया के भगोष्ट को सहलाते हुए उसकी योनि में अपनी तर्जनी प्रविष्ट करा दी।

“अआह्हह! मेरी योनि में!”

“वेरी वेरी गुड! अब पूरा बोलो!”

प्रिया फिर से सकुचा गई, “मैं रोज़ आपका लिंग.... अपनी योनि में... डालने दूँगी! और.... कभी मना नहीं करूँगी।”

यह सुन कर मैंने प्रिया को अपनी ओर भींच लिया और उसके सपाट पेट पर एक जबरदस्त चुम्बन दिया। हमारी ‘डर्टी टॉक’ से वह बहुत उत्तेजित हो गयी थी। एक दो और चुम्बन

जड़ने के बाद मैंने प्रिया को बिस्तर पर पेट के ही बल पटक दिया और उसकी चड्ढी उतार फेंकी।

प्रिया को बिस्तर पर लिटा कर मैंने उसकी दोनों जांघें कुछ इस प्रकार फैलाईं जिससे उसकी योनि और गुदा दोनों के ही द्वार खुल गए। इससे एक और बात हुई, प्रिया के नितम्ब ऊपर की तरफ थोडा उभर आये और थोड़ा और गोल हो गए। सुडौल नितम्ब..! स्वस्थ और युवा नितम्ब। जैसा की मैंने पहले भी बताया है, प्रिया के नितम्ब स्त्रियोचित फैलाव लिए हुए प्रतीत होते थे, जिसका प्रमुख कारण यह है की उसकी कमर पतली थी।

मैंने पहले अधिक ध्यान नहीं दिया, लेकिन प्रिया के नितम्ब भी उसके स्तनों के सामान ही लुभावने थे। मैंने उसके दोनों नितम्बों को अपनी दोनों हथेलियों में जितना हो सकता था, भर लिया और उनको प्रेम भरे तरीके से दबाने कुचलने लगा। कुछ देर ऐसे ही दबाने के बाद उसके नितम्बों के बीच की दरार की पूरी लम्बाई में अपनी तर्जनी फिराई। उसकी योनि पर जैसे ही मेरी उंगली पहुंची, मुझे वहां पर उसकी उत्तेजना का प्रमाण मिल गया – योनि रस के स्राव से योनि मुख चिकना हो गया था। मैंने उसकी योनि रस में अपनी तर्जनी भिगो कर उसकी गुदा पर कई बार फिराया। हर बार जैसे ही मैं उसकी गुदा को छूता, स्वप्रतिक्रिया में उसका द्वार बंद हो जाता।

“और इस काम को क्या कहते हैं?”

“आह! ... सहवास!”

“नहीं, बोलो, ठुकाई! क्या कहते हैं?”

“ठुकाई! आह!”

“हाँ! अभी पक्का हो गया। मुझे रोज़ आपकी योनि में मेरा लिंग डाल कर ठुकाई करने का एग्रीमेंट मिल गया है... क्यों ठीक है न?”

“आह... जीईई..!”

हम आगे कुछ और करते, की दरवाज़े पर दस्तक हुई, “रूम सर्विस!”

मैंने हड़बड़ा कर बोला, “एक मिनट!”

प्रिया सिर्फ ब्लाउज पहने हुए ही भाग कर बाथरूम में छुप गई। वो तो कहो मैंने भी अपने कपड़े नहीं उतारे थे, नहीं तो बहुत ही लज्जाजनक स्थिति हो जाती। खैर, प्रिया के बाथरूम में जाते ही मैंने दरवाज़ा खोल दिया। वेटर खाने की ट्रे, पानी, टिश्यु इत्यादि लेकर आ गया था। उसने अन्दर आते हुए एक नज़र फर्श पर डाली, और वहां पर साड़ी, पेटीकोट, चड्ढी यूँ ही पड़ी हुई देख कर उसने एक हल्की सी मुस्कान फेंकी – उसको शायद ऐसे दृश्य देखने की आदत हो गयी होगी। उसने अब तक न जाने कितने ही नवदंपत्ति देख लिए होंगे!

उसने टेबल पर खाने की प्लेट, डिशेस, पानी इत्यादि रखा और जाते-जाते कह गया की शाम को एक ऑटोरिक्शा हमको राधानगर बीच ले जाने के लिए बुक कर दिया गया है। मैंने उसको धन्यवाद कहा और उससे विदा ली। दरवाज़ा बंद करने के बाद मैंने प्रिया को बाहर आने को कहा – उसको ऐसे सिर्फ ब्लाउज पहने देखना बहुत ही हास्यकर प्रतीत हो रहा था।

“मैं इसीलिए कह रहा था की आपके कपड़ों की छुट्टी कर देते हैं.. लेकिन आप ही नहीं मानी!”

“और वो आप जो मुझे वो नए नए शब्द सिखाकर टाइम वेस्ट कर रहे थे, उसका क्या?”

“हा हा! अरे! आपने कुछ नया सीखा, उसका कुछ नहीं!”

“आप मुझे कुछ भी सिखा नहीं रहे हैं, ... बल्कि सिर्फ बिगाड़ रहे हैं! अब चलिए, मुझे कुछ पहनने दीजिये!”

“अरे, मैं तो यह ब्लाउज भी उतारने वाला था – आराम से, फ्री हो कर लंच करिए!”

“आपका बस चले तो मुझे हमेशा ऐसे नंगी ही करके रखें!”

“हाँ! आप हैं ही इतनी खूबसूरत!”

“हाय मेरी किस्मत! मेरे पापा ने सोचा की लड़की को अच्छे घर भेज रहे हैं। कमाऊ जवैं और एकलौता लड़का देख कर उन्होंने सोचा की उनकी लाडली राज करेगी! और यहाँ असलियत यह है की उस बेचारी को तो कपड़े पहनना भी नसीब नहीं हो रहा!” प्रिया ने ठिठोली की।

“उतना ही नहीं, उस बेचारी के ऊपर तो न जाने कैसे कैसे सितम हो रहे हैं! बेचारी की योनि में रोज़....”

मैंने जैसे ही उस पर हो रहे अत्याचारों की सूची कुछ जोड़ना चाहा तो प्रिया ने बीच में ही काट दिया, “छीह्ह! आपकी सुई तो वहीँ पर अटकी रहती है।”

“सुई नहीं... ल्ल्ल्लिंग... सब भूल जाती हो!”

प्रिया ने कृत्रिम निराशा में माथा पीट लिया – वह अलग बात है की मेरी बात पर वह खुद भी बेरोक मुस्कुरा रही थी। खैर, मैंने जब तक खाना सर्व किया, प्रिया ब्लाउज उतार कर, और एक स्पोर्ट्स पजामा और टी-शर्ट पहन कर खाने आ गयी। खाते-खाते मैंने प्रिया को अपने हनीमून के प्लान के बारे में बताया – उसको यह जान कर राहत हुई की हमारे हनीमून में सिर्फ सहवास ही नहीं, बल्कि काफी घूमना-फिरना और एडवेंचर स्पोर्ट्स भी शामिल रहेंगे।

भोजन समाप्त कर हम बीच की सैर पर निकले – इस समय समुद्र में भाटा आया हुआ था, जिसके कारण काफी दूर तक सिर्फ गीली, बलुई और पत्थरों से अटी भूमि ही दिख रही थी। हम लोग यूँ ही बाते करते, शंख, सीपियाँ और रंगीन पत्थर बीनते काफी दूर निकल गए। बातों में हमारे सर पर चमक रहे चटक सूर्य का भी ध्यान नहीं रहा – कहने का मतलब यह, की उन डेढ़-दो घंटों में ही धूप से हम लोगों का रंग भी साँवला हो गया। और आगे जाते, लेकिन अचानक ही हमको पानी वापस आता महसूस हुआ, तो हमने वापस रिसोर्ट जाने में ही भलाई समझी। हम दोनों के हाथ शंख और सीपियों से भर गए थे, इसलिए यह उचित था, की उनमें से सबसे अच्छे वाले चुन लिए जाएँ और बाकी सब वापस समुद्र के हवाले कर के हम वापस आ गए।

वापस आते हुए मैंने दो-तीन विदेशी जोड़ों से बात-चीत करी और उनके अंडमान के अनुभवों के बारे में पूछ-ताछ की। प्रिया के लिए भी यह एक नया अनुभव था – शायद ही

उसने किसी विदेशी से पहले कभी बात करी हो, इसलिए उसको थोडा मुश्किल लग रहा था। लेकिन फिर भी, वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रही थी। कमरे में आ कर मैंने दो कप चाय मंगाई – चाय पीते-पीते ही ऑटो-रिक्शा वाला भी आ गया। मैंने हाफ-पैंट और टी-शर्ट पहना और प्रिया को भी स्कर्ट और टी-शर्ट पहनने को कहा। प्रिया की स्कर्ट, दरअसल, सूती के हलके कपड़े की बनी हुई थी और उसके हलके हरे रंग के कपड़े पर काले रंग के छोटे छोटे बिखरे हुए प्रिंट्स थे। यह स्कर्ट मैंने बीच पर पहनने की दृष्टि से ही लिया था। वैसे, प्रिया के लिए ऐसी स्कर्ट पहनना, जो उसके घुटने तक भी न आ सके, थोड़ा सा भिन्न, या यह कह लीजिये की अटपटा अनुभव था। लेकिन, मेरे साथ बिताये गए कुछ ही दिनों में उसको समझ आ गया था की इस प्रकार के अनुभवों का होना अभी बस शुरू ही हुआ है। इसलिए, उसने कोई हील-हुज्जत नहीं करी और कुछ ही देर में हम लोग राधानगर बीच की तरफ रवाना हो गए।

रिसोर्ट से बीच का रास्ता काफी अधिक था – या यह कह लीजिये की ऑटो की टरटराती तीव्र गति और खाली सड़क के कारण अधिक लग रहा हो। यह रास्ता भी बहुत ही मनोरंजक था – सड़क के दोनों तरफ हरे भरे पेड़ और दूर दूर तक सिर्फ हरियाली ही दिख रही थी। खैर, कोई पंद्रह मिनट में हम राधानगर बीच पहुँच गए। यहाँ की एक ख़ास बात है – इस बीच को टाइम मैगज़ीन ने एशिया के सबसे सुन्दर बीचों में एक घोषित किया है। वहां पहुँच कर तुरंत ही समझ आ गया की ऐसा क्यों है – मुलायम सफ़ेद बालू, शुद्ध फ़िरोज़ी समुद्र, साफ़ सुथरा और सुन्दर बीच, और ऊपर से अपूर्व शान्ति – कुल मिला कर एक बहुत ही असाधारण अनुभव! प्रिया के चेहरे पर आते-जाते भाव देखते ही बन रहे थे। पहाड़ों पर रहने वाली लड़की, आज अथाह समुद्र का आनंद ले रही थी।

नम और हल्की गर्म हवा बहुत ही अच्छी लग रही थी। सूर्यास्त होने में कुछ और समय था, इसलिए मैंने समुद्र में नहाने की सोची – प्रिया डर रही थी, इसलिए कैमरा देखने का बहाना कर के तट पर ही खड़ी रही। लेकिन इसमें क्या मज़ा! मैंने अपनी टी-शर्ट उतारी, और अपने कैमरा बैग में रख कर बीच के ही एक दूकानदार के पास रख दिया। उसने मुझे आश्वस्त किया की उसके पास यह सुरक्षित रहेगा, और प्रिया को खींच कर समुद्र में ले गया। बीच की गीली रेत जब पानी के आवागमन से पैरों के नीचे से खिसकती है तो संतुलन बनाना बहुत मुश्किल होता है, ख़ास-तौर पर तब जब आप इस अनुभव के लिए बिलकुल नए हों। न तो मुझे, और न ही प्रिया को समुद्र और बीच का कोई अनुभव था, इसलिए पहली बार में ही हम दोनों पानी में गिर गए। नहाने ही आये थे, इसलिए गीला होने में कोई बुराई नहीं लगी।

हम दोनों को ही तैरना आता था, इसलिए कुछ ही देर में समुद्री लहरों से निपटने का तरीका आ गया और हमने कोई आधे घंटे तक तट पर ही तैराकी करी। इतने में ही सूर्यास्त होने का समय भी निकट आ गया इसलिए मैंने वापस बीच पर खड़े होकर कुछ फोटोग्राफी करने की सोची।

दूकानदार से कैमरा बैग लेकर मैंने सबसे पहले प्रिया पर फोकस किया। प्रिया की टी-शर्ट जगह के ही मुताबिक़ सफ़ेद रंग की थी – ब्रा तो उसने पहना ही नहीं था, इसलिए गीले और उसके शरीर से चिपक गए कपड़े से उसका शरीर पूरी तरह से दिख रहा था - उसके स्तनाग्र स्पष्ट दिख रहे थे, और, चूंकि उसकी स्कर्ट भी पूरी तरह से उसके इर्द-गिर्द चिपक गयी थी और अन्दर की काले रंग की चड्ढी, और जांघें साफ़ दिख रही थी। अब चलने वाली हवा शरीर पर ठंडक दे रही थी – लिहाज़ा, प्रिया के स्तनाग्र भी कड़े हो गए। इससे पहले की प्रिया अपनी इस स्थिति पर ध्यान दे पाती, मैंने दनादन उसकी कई दर्जन फोटो खींच डाली! और एक अच्छी बात यह दिखी की वहां पर जो भी लोग थे, किसी का भी व्यवहार लम्पटों जैसा नहीं था – न तो किसी ने प्रिया की तरफ कामुक दृष्टि डाली और न ही किसी प्रकार की छींटाकशी करी। एक और हनीमूनर को मैंने कैमरा पकडाया जिससे वह हम दोनों की कुछ फोटो ले सके।

मैंने प्रिया के नितम्ब पर एक चिकोटी काट कर उसके कान में गुनगुनाया,

‘समुन्दर में नहा के, और भी नमकीन हो गयी हो!

अरे लगा है प्यार का मोरंग, रंगीन हो गयी हो हो हो!’

मेरे हो हो करने से प्रिया खिलखिला कर हंसने लगी, “अपनी बीवी को सबके सामने नंगा करने में आपको अच्छा लगता है?”

मैंने भी बेशर्मी से जवाब दिया, “बहुत अच्छा लगता है!” और गुनगुनाना जारी रखा,

“हंसती हो तो दिल की धड़कन हो जाए फिर जवान!

चलती हो जब लहरा के तो दिल में उठे तूफ़ान...”

इतने में सूर्यास्त प्रारंभ हो गया – बीच पर सूर्यास्त अत्यंत नाटकीय होता है। उन पंद्रह-बीस मिनटों में प्रकृति विभिन्न रंगों की ऐसी सुंदर छटा बिखेरती है की उसका शब्दों में बखान

नहीं किया जा सकता। जब मैंने प्रिया को पहली बार देखा था, तो मुझे भी ऐसी ही सांझ की अनुभूति हुई थी - मन को आराम देती हुई, पल-पल नए रंग भरती हुई! यह उचित था की ऐसी सुन्दर प्राकृतिक छटा के अवलोकन में मेरी प्रेयसी, प्रिया, जो खुद भी इस ढलती शाम के समान सुन्दर थी, मेरे साथ खड़ी थी। मैं जब फोटो खींचने और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद उठाने की तन्द्रा से बाहर निकला तो देखा की बीच लगभग वीरान हो चली है। कमाल की बात है न, लोग सूर्य के अस्त होते होते गायब हो गए! लेकिन मैं और प्रिया वहां कुछ और देर बैठे रहे। पास की चाय-पानी की दुकान वाला हमारे पास आया और पूछा की हम लोग कुछ लेंगे, तो हमने उसको चाय लाने के लिए बोल दिया। अभी लगभग अँधेरा हो गया था और कुछ दिख भी नहीं रहा था, इसलिए चाय पीकर, हमने वापसी करी।

रिसोर्ट वापस जाने के रास्ते में एक एटीएम से कुछ रकम निकाली और कुछ देर बाद हम लोग अपने रिसोर्ट में आ गए। हनीमून का पहला दिन बहुत बढ़िया बीत रहा था। ऑटो वाले को पैसे देकर मैंने रिसेप्शन पर एडवेंचर स्पोर्ट्स की बात करी। उन्होंने हमको स्कूबा-डाइविंग, स्नोर्केलिंग, और ट्रेकिंग के बारे में विस्तार में बताया। पुनः, चूंकि यह सब कुछ हमारे लिए नया था, इसलिए हम सबसे आसान और सुरक्षित कार्य करना चाहते थे। रिसेप्शनिस्ट ने हमको डाइविंग प्रशिक्षकों से मिलवाया। ये दोनों विदेशी महिलाएं थीं – सुजेन और आना! दोनों बत्तीस से पैंतीस वर्षीय पेशेवर डाइवर थीं – सुजेन ऑस्ट्रेलिया की मूल निवासी थी और आना इंग्लैंड की। और सबसे ख़ास बात – दोनों समलैंगिक थीं और साथ ही रहती थीं। यह सब बातें मुझे बाद में मालूम पड़ीं। खैर, उन्होंने बताया की फिलहाल दोनों फ्री हैं, और इसलिए वे अगले दो तीन दिनों में प्रिया और मुझे विभिन्न प्रकार के डाइव करवा सकती हैं। मैंने कहा की फिलहाल तो हम लोग स्नोर्केलिंग से शुरू करना चाहते हैं – एक बार पानी की समझ आनी ज़रूरी है। सुजेन ने कहा की वह हमको स्नोर्केलिंग करवाएगी और अगले सवेरे तैयार रहने को बोला।

देर शाम प्रिया ने अपने घर पर फ़ोन लगाया और देर तक अपनी शादी के रिसेप्शन, हवाई यात्रा और अंडमान के बारे में बाते बताईं। प्रिया का उत्साह देखते ही बन रहा था – स्पष्ट रूप से वह बहुत ख़ुश थी और यह एक अच्छी खबर थी। मैंने उसके बात करने के बाद कुछ देर अपने ससुराल पक्ष के लोगो से बात कर अपनी औपचारिकता निभाई। अब आप लोग ही बताइए "आप क्या कर रहे हैं?" जैसे प्रश्नों का क्या उत्तर दूं? कभी कभी मन में आता है की कह दूं की आपकी बेटी के साथ सहवास कर रहा हूँ... लेकिन!

खैर, शाम को रिसोर्ट में लाइव म्यूजिक का कार्यक्रम आरम्भ हुआ – बैंड के लोग अंग्रेजी और हिंदी के विभिन्न शैलियों के गाने गा-बजा रहे थे। बगल में ही एक बार था, जहाँ पर बैठ

कर मदिरा और संगीत का आनंद उठाया जा सकता था।

“जानेमन, कॉकटेल पियोगी?” मैंने पूछा।

“वो क्या होता है?”

“कॉकटेल यानी अल्कोहलिक मिक्स्ड ड्रिंक... पियोगी?”

“मतलब शराब!? न बाबा! आप पीते हैं?” जब मैंने हामी भरी तो, “हाय राम! और क्या क्या करते हैं?”

“अबे! मैं कोई शराबी थोड़े ही न हूँ! मैं पीता हूँ तो बस कभी-कभार... किन्ही ख़ास मौकों पर! जैसे की हमारा हनीमून!”

“आप पीजिये, मैं ऐसे ही ठीक हूँ!”

“अरे एक बार ट्राई तो करो – यह कोई देसी ठर्रे की दूकान नहीं है। ये जो बार में बैठा है वह एक प्रोफेशनल मिक्सर है। इसको ख़ास ट्रेनिंग मिली हुई है.. एक कॉकटेल ट्राई करो, मज़ा न आये तो मत पीना! ओके?”

ऐसे न जाने कितनी ही देर मनाने के बाद आखिरकार प्रिया ने हथियार डाल ही दिए। मैंने बारमैन को दो ‘लांग आइलैंड आइस्ड टी’ बनाने को कहा।

“आप तो कॉकटेल कह रहे थे, और अभी चाय मंगा रहे हैं!”

“चाय नहीं है – दरअसल इस ड्रिंक का नाम ऐसा इसलिए है क्योंकि इसका रंग और स्वाद ‘आइस्ड टी’ जैसा लगता है... जी हाँ, चाय को ठंडा भी पिया जाता है!”

“और यह लांग आइलैंड क्यों?”

“शायद इसलिए क्योंकि इस ड्रिंक के आविष्कारक को इसका आईडिया न्यूयॉर्क के ‘लांग आइलैंड’ नाम के द्वीप में आया था।“ मैं इस बात को छुपा गया की ‘लांग’ दरअसल

अल्कोहल की सामान्य से कुछ ज्यादा ही मात्रा को दर्शाता है।

"हम्म्म... लेकिन, अगर पापा को मालूम पड़ेगा तो वो बहुत नाराज़ होंगे।"

"पहला, पापा को क्यों मालूम पड़ेगा? और दूसरा, अगर मालूम पड़ भी जाय, तो क्या? अब आप मेरी हैं! मेरी गार्जियनशिप में!" मैंने आँख मारते हुए कहा।

कुछ ही देर में हमारी ड्रिंक्स आ गईं।

"आराम से पीना... धीरे धीरे! ओके?" मैंने हिदायद दी।

प्रिया ने बहुत ही सावधानीपूर्वक पहला सिप लिया – अनजान स्वाद! मीठा, खट्टा, कड़वा! आखिर किस श्रेणी में रखा जाय इस स्वाद को? अगली चुस्की कुछ ज्यादा ही लम्बी थी। कॉकटेल का आनंद उठाने का वैसे यही सही तरीका है – जीभ के सामने वाले हिस्से में कम स्वादेन्द्रियाँ होती हैं, इसलिए अगर ड्रिंक पूरी जीभ में फ़ैलेगी तो अधिक स्वाद आएगा।

"कैसा लगा?"

"पता नहीं..."

"खराब?"

"नहीं.. खराब तो नहीं.. अलग!"

"हम्म्म.. इसको अक्वायर्ड टेस्ट बोलते हैं... दूसरी ड्रिंक आपको ज्यादा अच्छी लगेगी।"

मेरी हिदायद के बावजूद, और शायद इसलिए भी क्योंकि मीठे स्वाद में इस ड्रिंक के जोखिम का पता नहीं चलता, प्रिया ने मुझसे पहले ही अपना ड्रिंक ख़तम कर लिया। मैंने मना भी नहीं किया – वो कहते हैं न, अपने सामने किसी और को नशे में धुत्त होते हुए देखना ज्यादा मजेदार होता है। मैंने प्रिया के लिए दूसरा ड्रिंक मंगाया। दूसरे के आते-आते, पहले का असर प्रिया पर होने लग गया। उसकी पलकें भारी हो रही थीं, और वह अब ज्यादा ख़ुश दिख रही थी।

“आपने मुझसे मिलने के पहले तक, सबसे वाइल्ड, मतलब, सबसे पागलपन वाला काम क्या किया है?”

“मैं...ने..? कुछ नहीं – मैं बहुत अच्छी बच्ची हूँ!” प्रिया ने दूसरी घूँट भरते हुए कहा।

“फिर भी... बच्ची ने कुछ तो किया होगा?”

“ऊम्म्म... हाँ, एक बार मैंने और मेरी सहेलियों ने मिल कर पास के रामदीन चाचा की बकरियां छुपा दी थीं। उन्होंने पूरे दिन भर बकरियां ढूँढी.. लेकिन उनको मिलती कैसे? हमने उनको कहा की दस रूपये दो, हम ढूंढ कर ले आएँगी! उनको समझ तो आ गया की हमारी शैतानी है, लेकिन उन्होंने शर्त मान ली। फिर हमने ढूँढने का नाटक करने के बाद देर शाम को बकरियां वापस की और उनसे दस रूपया भी लिया।“

“रामदीन चाचा आये थे शादी में?”

“हाँ – गाँव के सब लोग ही आये थे! सभी आपको देखना चाहते थे।“ उसकी दूसरी ड्रिंक आधी ख़तम भी हो गई।

“जानू, आराम से पियो! चढ़ जायेगी!”

“लेकिन मुझको तो नहीं चढ़ी...! और ये ‘लांग टी आइलैंड’ बहुत मजेदार है! अरे, अभी तक आपने पहला भी ख़तम नहीं किया?”

“हा हा!” मुझे समझ आ गया की प्रिया को चढ़ गयी है। “आपको कोई जोक आता है?”

“जोक – हाँ! आप सुनेंगे?” मैंने हामी भरी।

“एक बार संता शादी की दावत में गया, लेकिन सामने रखे सलाद की टेबल को देख कर वापस आ गया। और बंता से बोला, “ओये बंता... अभी मत जा! अभी तो सब्जियां ही कट रही हैं!”

“हा हा! एक और?”

“हाँ –एक बार संता कहता है, “यार बंता, मेरी बीवी मुझको नौकर समझने लगी है... बोल क्या करूँ? बंता कहता है, अरे मौके का फायदा उठा... दो-चार घर और पकड़ ले और अपना धंधा जमा ले!”

“आपको सब ऐसे ही जोक्स आते हैं?”

“हाँ! मुझको संता-बंता के बहुत से जोक आते हैं! बहुत मजाकिया होते हैं!”

“संता-बंता नहीं... कोई और जोक सुनाइये!”

“अच्छा..... कोई और? उम्म्म...... हाँ याद आया.... एक बार एक पत्नी अपने पति को कहती है, “चलो एक खेल खेलते हैं, मैं छुपती हूँ और आप मुझे ढूंढ़ना। अगर आपने ढून्ढ लिया तो मैं आपके साथ शॉपिंग करने चलूंगी।“ पति कहता है, “अगर नहीं ढूंढ पाया तो?” पत्नी कहती है, “ऐसा मत कहो जानू, बस दरवाज़े के पीछे ही छुपूंगी।“”

“अब आप भी तो कुछ सुनाइए... सारे मैं ही सुना दूँ?”

“अच्छा! आपने कभी कोई एडल्ट जोक सुना है?”

“एडल्ट जोक? वो क्या होता है?”

“अभी समझ आ जायेगा... यह सुनो....

“दिल्ली के एक मोहल्ले में एक बच्चा अपने घर में हमेशा नंगा घूमा करता था। घर में कोई भी आता, तो बच्चा नंगा ही मिलता और उसकी मां को ताने सुनना पड़ते। उसकी इस आदत से परेशान होकर मां ने एक उपाय सोचा और अपने बच्चे से कहा, “बेटा, जब भी कोई घर में आए, तो मैं कहूँगी, ‘दिल्ली बंद’ और तुम तुरंत निक्कर पहनकर बाहर आ जाना।“

बच्चा समझ गया। एक दिन उस बच्चे की मौसी उसके घर आई, तो मां ने आवाज लगाई, “बेटा, दिल्ली बंद।“ बच्चा निक्कर पहनकर बाहर आ जाता है और कहता है, “मौसी, आप यहां किसलिए आये हो?” मौसी कहती है, “बेटा, मैं दिल्ली देखने आई हूं।“

बच्चा कहता है, “ये लो! वो तो अभी-अभी मम्मी ने बंद करवा दी!” और कहते हुए उसने अपना निक्कर उतार दिया। मौसी हंसते हुए कहती है, “बेटा, मैं यह वाली दिल्ली नहीं, बड़ी वाली दिल्ली देखने आई हूं।“

बच्चा तुरंत कहता है, “कोई बात नहीं मौसी, मैं अभी पापा को बुलाता हूं!””

“ये भी क्या जोक है? धत्त! .....और मुझे मालूम है, वो बच्चा आप ही हैं... आपका ही निक्कर हमेशा उतरा रहता है!”

“हा हा हा!! एक और जोक सुनो - शादी के बाद सुहागरात के लिए पति और उसकी पत्नी अपने कमरे में गये। पत्नी बेड पर बैठ गई और पति “कैडबरी चॉकलेट” अपने लिंग पर लगाने लगा। पत्नी ये देखकर बोली, “क्या कर रहे हो जी?” पति कहता है, “अरे! वो कहते हैं न? शुभ काम करने से पहले कुछ मीठा हो जाये।“

प्रिया खिलखिला का हँस पड़ी - दो गिलास भर के कॉकटेल गटकने के बाद प्रिया अब पूरी तरह से रिलैक्स्ड और आरामदायक हो गई थी। मैंने देखा की उसकी मुस्कराहट बढती ही जा रही थी और अब वह खुल कर बातें कर रही थी। मैंने अंदाज़ा लगाया की एक और पेग, और बस! लड़की ढह जायेगी!

मैंने एक बार फिर से पांसा फेंका, “अच्छा, और क्या-क्या वाइल्ड काम किया है?”

“और क्या? ऐसे कुछ तो याद नहीं आ रहा!”

“कुछ सहवास? मेरे से पहले!”

“मेरे साथ जो भी सहवास है सब आपने ही किया है!” इतनी स्पष्ट स्वीकारोक्ति!

“लेकिन...” मैं तुरंत चौकन्ना हो गया, “... जब पड़ोस की भाभियों ने मर्दों के लिंग और उसके काम के बारे में बताया तो मैं बहुत घबरा गई। उनके बताने के एक दिन बाद मैंने.. उंगली डालने का ट्राई किया था...”

“उंगली? कहाँ?” मुझे अच्छी तरह से मालूम था की कहाँ, लेकिन फिर भी चुटकी लेने से बाज़ नहीं आया।

“जाइए हटिये! आप मुझे सताते हैं!”

“अरे! बिलकुल नहीं! क्यों सताऊँगा? बोलो न, कहाँ?”

“यहाँ… नीचे!” प्रिया ने दबी हुई आवाज़ में कहा।

“पीछे?” मैंने फिर छेड़ा!

“हटो – मुझे नहीं कहना कुछ भी!” प्रिया रूठ गई।

“अरे मेरी जान .. ठीक है, अब नहीं छेडूंगा.. बोल भी दो!”

“मेरी…” एक पल को हिचकिचाई, “… वेजाइना में! यही नाम बताया था न आपने? आधा इंच भी नहीं जा पाई, और दर्द हुआ! मैंने डर के मारे वहीँ छोड़ दिया!”

“अच्छा बेटा! मेरे पीठ पीछे यह सब करती थी? वेजाइना के साथ एक और नाम बताया था – याद है?”

“हा हा! नहीं नहीं… मैं तो बस यह देख रही थी की… की मेरी वेजाइना कितनी चौड़ी है, और कितनी फ़ैल सकती है! बस! सच्ची! बस और कुछ नहीं!”

“हा हा हा!”

“एक्सैक्ट्ली मेरी पहली उंगली जितनी ही तो चौड़ी है! और ये देखिये,” उसने उत्साह से अपनी तर्जनी दिखाते हुए कहा, “ये उंगली ही कितनी पतली है! और इतने में ही दर्द हो गया! उस दिन आपका पहली बार देखा तो मेरी सांस ही अटक गयी की यह कैसे अन्दर जाएगा!”

“देखो – उस दिन आपकी यह पतली सी उंगली ही ठीक से नहीं जा पा रही थी, और आज देखिये, मेरा ल्ल्लिंग भी आराम से चला जाता है!”

“कोई आराम वाराम से नहीं जाता, आपका...!” बोलते बोलते प्रिया रुक गयी, और फिर, “.. मेरी जगह पर होते तो आपको मालूम पड़ता सारा आराम!”

“अच्छा, आपने मुझसे तो सब पूछ लिया – अब आप बताइए – आपने क्या किया?”

“जानेमन, मेरे पास तो ऐसे कारनामों की एक लम्बी फेहरिस्त है! बताने लग गया तो कई दिन निकल जायेंगे!”

“अच्छा जी! हम्म्म.. वैसे मुझे याद है, आपने बताया था की आपकी कई सारी गर्लफ्रेंड थीं। उनके साथ क्या क्या किया? सच बताइयेगा – मैं बुरा नहीं मानूंगी।“

"नहीं... सच ही बताऊँगा। आपसे झूठ बोलने वाला काम मैं कभी नहीं करूंगा। मैं आपसे यह वायदा करता हूँ की मैंने आपसे पहले कभी भी किसी लड़की के साथ सहवास नहीं किया। सहवास का मतलब अगर लिंग और योनि से है तो! लेकिन मैंने उनके साथ बहुत सारे अन्तरंग क्षण बिताये हैं। हमारे रिसेप्शन में आपको वो ‘निकिता’ याद है? जिसने गुलाबी-हरे रंग की ड्रेस पहनी हुई थी... वो जिसके थोड़े बड़े-बड़े स्तन थे?”

“न...ही..!”

“अरे जिसने आपको चूमा था।“

“मुझे तो दो लोगो ने चूमा था – हाँ याद आया! अच्छा! वो आपकी गर्लफ्रेंड थी?”

“हाँ – उसका नाम निकिता है। आपसे सच कहूँगा, मुझे किसी भी स्त्री में स्तन बहुत प्यारे लगते हैं। इसलिए जब मेरी निकिता के साथ घनिष्ठता बढ़ी तो मैं उसके स्तनों को अक्सर ही चूमता, चूसता था। एक दिन बात काफी आगे बढ़ गई। मैंने उसके स्तनों के बीच में अपने लिंग को फंसा कर मैथुन किया – बड़ा आनंद भी आया! लेकिन सच कहता हूँ की इसके आगे कभी नहीं गया।”

“चलिए... मान लिया की आप सच कह रहे हैं! वैसे भी, आपके जीवन में मेरे आने से पहले जो हुआ, उससे मुझे क्या सरोकार होगा? लेकिन...”

“लेकिन?”

“लेकिन मेरे स्तन तो बहुत छोटे हैं।“

“छोटे नहीं हैं जानू – आप भी तो अभी छोटी हैं! धीरे-धीरे यह भी बढ़ेंगे! लेकिन, सच कहूँ तो अभी जैसे हैं, मुझे वैसे ही पसंद हैं ये दोनों!” कह कर मैंने आँख मार दी।

यहाँ लिखने में आसानी हो, इसलिए मैं बेहिसाब लिखा जा रहा हूँ। लेकिन सच तो यह है की प्रिया की जुबान यह सब बातें करते हुए बुरी तरह लड़खड़ा रही थी और उसकी आँखें भी ढलकी जा रही थीं। मैंने हम दोनों के लिए दो और गिलास लांग आइलैंड आइस्ड टी मंगाई, लेकिन ड्रिंक आते आते प्रिया को पूरी तरह से चढ़ गयी। अतः, मुझे ही दोनों ड्रिंक्स ख़तम करनी पड़ी। मेरे अन्दर चार, और प्रिया के अंदर दो गिलास मदिरा आ गयी थी – मुझे भी कोई ख़ास स्टैमिना तो था नहीं, और आखिरी दोनो ड्रिंक्स मुझे जल्दी जल्दी ख़तम करनी पड़ी। इसलिए मुझे भी नशा आ गया। मैंने बैरा को एक प्लेट कबाब का आर्डर दिया, जिससे अगर भूख लगे तो खाया जा सके और एक और बैरा की मदद से प्रिया को कमरे में ले आया।

प्रिया नशे के कारण सो गयी थी – लेकिन उसके माथे और सीने पर पसीने की बूंदे साफ़ दिख रही थीं। कमरे

के वातानुकूलन से प्रिया को ठण्ड लग सकती थी, इसलिए मैंने बिना उसको अधिक हिलाए डुलाये उसके सारे कपड़े उतार दिए। मुझे भी गर्मी सी लग रही थी (जैसा की मुझे हर बार मदिरा पीने से होता है) इसलिए मैंने भी अपने सारे कपड़े उतार दिए, और प्रिया के बगल बैठ कर, तौलिये से उसके शरीर से पसीना पोछने लगा।

वो कहते हैं न की नशे में स्वयं पर वश नहीं रहता। जब मैं प्रिया को पोंछ रहा था, तभी दरवाज़े पर दस्तक हुई। मैंने बिना सोचे समझे ‘कम-इन’ बोल दिया। और परिचारक को एक पूर्णतया नग्न युगल को देखने का आनंद प्राप्त हो गया। जब तक मुझे हम दोनों की नग्नावस्था का भान होता तब तक इतनी देर हो चली थी की कुछ करने का कोई लाभ न होता। खैर, उसके जाने के बाद मुझे एक विचार कौंधा की क्यों न प्रिया की ऐसी हालत में कुछ तस्वीरें उतार ली जाएँ! मैंने झटपट अपना डी एस एल आर उठाया और प्रिया की नग्नता की कलात्मक और अन्तरंग कई तस्वीरें ले डाली। उसके बाद मैं सो गया।

१०

अगली सुबह सुजेन ने मुझे सुझाव दिया की स्नॉर्कलिंग के लिए एक बहुत ही सुन्दर जगह है। उसको ‘इंग्लिश आइलैंड’ कहते हैं और उधर बहुत ही कम लोग जाते हैं। इस कारण से वहां का स्थानीय पर्यावरण सुन्दर है और बहुत ही अच्छे नज़ारे दिखते हैं। रकम थोड़ी अधिक लगती है, लेकिन आनंद भी बहुत आता है। मैंने सोचा, और हाँ बोल दिया। वैसे भी हम लोग यहाँ पर हनीमून के लिए आये हैं – अकेलापन तो चाहिए ही!

मैंने हल्की टी-शर्ट, स्विमिंग ट्रंक, कैप और सन-ग्लासेज पहने, और प्रिया ने नायलॉन-लाइक्रा का स्विमसूट पहना – वह बिना बाँह का, वी-गले वाला परिधान था, जिसको पीछे डोरी से बाँधा जाता था। इस पर बहुरंग प्रिंट्स बने हुए थे। उसके ऊपर (जिससे उसको अटपटा न लगे) प्रिया ने एक लम्बी बीच मैक्सी, जिसका रंग पीला और हल्का हरा था, स्लीव-लेस, वी-गले और बैक वाला परिधान पहना हुआ था। इसमें स्तनों के नीचे से रिब केज तक करीब चार इंच चौड़ा कोमल इलास्टिक लगा हुआ था। आज प्रिया को इस प्रकार के परिधान में देख कर मुझे कुछ-कुछ होने लगा। मन तो यही था की उसको वहीँ पटक कर सहवास करने लगूं, लेकिन जैसे तैसे मैंने खुद को जब्त कर लिया। लेकिन बोट पर चढ़ने और उसके बाद आइलैंड के करीब स्नोर्केलिंग वाले स्थान तक पहुँचने तक मैंने उसकी अनगिनत तस्वीरें खींच डाली।

सुजेन हमारी गाइड भी थी और प्रशिक्षक भी। उसने हम दोनों को स्नोर्केलिंग की विधि के बारे में बताया और उपकरणों से जानकारी कराई – ऐसा कुछ खास तो होता नहीं, बसे एक आँखों पर लगाने के लिए मास्क और साँस लेने के लिए मुँह में लगाने वाली पाइप। खैर, गोत लगाने की बारी आई तो हम तीनों ने तैराकी की पोशाक में आने का उपक्रम करना आरम्भ किया। प्रिया बहुत झिझक रही थी, इसलिए मैंने उसको मैक्सी उतारने में मदद करी, और खुद की भी टी-शर्ट उतारी। सुजेन ने टू-पीस स्विमिंग कॉस्टयूम पहना हुआ था। मैंने बोट चालक को कैमरा पकड़ा कर हम तीनों की तस्वीरें लेने को कहा – खुद बीच में खड़ा हुआ, दाहिनी तरफ प्रिया और बाईं तरफ सुजेन!

और फिर हम तीनों समुद्र में उतर गए।

उस स्थान पर मूंगा-चट्टानों की बहुतायत थी – यह अनुभव जैसे समुद्र के अन्दर झाँकने जैसा था। समुद्र का ठंडा पानी, कानों में पानी के हलचल की आवाज़, और आँखों के

सामने एक अलग ही दुनिया का अद्भुत नज़ारा!! आपने 'फाइंडिंग निमो' फिल्म देखी है? यहाँ पर वो वाली मछलियाँ बहुत दिख रही थीं। पानी यहाँ पर बहुत गहरा था – कम से कम २०-२५ फीट गहरा। विभिन्न प्रकार की रंग-बिरंगी मछलियाँ हमारे चरों तरफ तैर रही थीं – मैंने कई बार कोशिश करी की एक को कम से कम छू लिया जाय – लेकिन मछलियाँ मुझसे कहीं तेज और चपल थीं। लेकिन यह खेल बड़ा ही मज़ेदार रहा। हमने अचानक ही एक बड़ी, ग्रे रंग की मछली देखी, जो कम से कम ३ फीट लम्बी रही होगी। ज्यादातर मछलियाँ ८ इंच से लेकर डेढ़ फीट तक की ही थीं। एक बार तो कोई सौ-डेढ़ सौ मछलियाँ हमारे इर्द गिर्द वृत्ताकार विन्यास में तैरने लगीं। उनको देखते देखते मानो समय ही रुक गया हो – न जाने कितनी ही देर वो हमारे चारो ओर चक्कर लगाती ही रही। और फिर अचानक ही सारी की सारी एक ओर निकल गईं। स्टार फिश, जेली फिश, एनिमोनी, और न जाने कौन कौन सी मछलियाँ दिखीं, जिनके नाम याद रखना अभी मेरे लिए संभव नहीं है। समुद्र तल भी साफ़ दिख रहा था – मूंगे की कई प्रकार की संरचनाएं, समुद्री सिवार, और तल पर बड़े आकार के सीपियाँ और शंख यूँ ही पड़े हुए थे। हमने कोई तीन घंटे तक इसी प्रकार से प्रकृति का आनंद उठाया। प्रिया इस नज़ारे को देख कर स्तब्ध हो गयी थी और अति प्रसन्न थी। खैर, हम लोग वापस बोट में बैठ कर इंग्लिश आइलैंड को चल दिए।

यह एक एकांत और छोटा टापू था और पूरी तरह निर्जन! इसके बीच में काफी पेड़ थे और इसका बीच नरम सफ़ेद रेत का बना हुआ था। सुजेन ने बताया था की पांच मिनट में ही टापू पर पहुँच जायेंगे, इसलिए हमने कपड़े भी नहीं बदले थे, और ऐसे ही गीले गीले टापू पर पहुंचे। उस समय समुद्र में लहरें काफी ऊंची ऊंची उठ रही थी, इसलिए नाव को थोडा दूर ही लंगर दिया गया और टापू पर जाने के लिए एक बार फिर से समुद्र में कूदना पड़ा। नाविक और सुजेन हमारे खाने पीने का सामान हमारे पास रखा, और हमें बताया की हम लोग यहाँ पर दो तीन घंटे आराम से रह सकते हैं, और दोनों टापू पर ही हमसे कुछ दूर पर बैठ कर अपना खुद खाने पीने लगे।

प्रिया और मैंने सोचा की इस टापू को थोडा और देखना चाहिए, और तट पर ही चलने लगे। प्रिया और उसका स्विमसूट पूरी तरह से गीला था और हवा के कारण उसको ठण्ड लग रही थी – रह रह कर उसके शरीर में झुरझुरी दौड़ जा रही थी। मैंने ऐसा देखा तो पीछे से उसकी कमर में हाथ डाल कर, उसे अपनी तरफ खींच कर चलना शुरू किया। चलते चलते मैंने देखा की उसका सूट उसके नितम्बो को ढक कम, और प्रदर्शित ज्यादा कर रहा था। अतः, मैंने उसके नितंबो को थोड़े जोश से रगड़ना शुरू कर दिया।

"आप यह क्या कर रहे हैं?"

“गर्मी पैदा कर रहा हूँ, जानू! आपके कपड़े पूरी तरह से गीले हैं, और हवा भी चल रही है। ऐसे में आपको ठंड लग सकती है।"

“आप बहुत ख़याल रखते हैं मेरा!”, प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा।

‘कैसी नासमझ लड़की है यह! – ऐसी अवस्था में कोई लड़की राका डाकू को मिल जाए, तो वह भी इसी प्रकार गर्मी पैदा करेगा।‘ हम लोग चलते चलते एक एकांत वाली जगह पर आ गए – वहां पर बीच काफी चौड़ा और समतल था। सूर्य की गर्म भी अच्छी आ रही थी।

"क्या इसे उतार सकती हो?" मैंने प्रिया को पूछा।

"क्यों?"

"आपकी बॉडी जल्दी सूख जायगी, अगर उसको गर्मी और हवा लगेगी।"

"लेकिन, वो लोग?”

“वो पीछे ही ठहरे हुए हैं। इधर नहीं आयेंगे... चिंता न करो!”

"अरे? ऐसे कैसे? अगर उनमे से कोई भी आ गया... और हमको ऐसी हालत में देखेगा तो क्या सोचेगा? और उनकी छोड़िए... मुझको ऐसे कोई और देखे तो मैं तो शरम से मर ही जाऊंगी!"

"आप भी क्या मरने मारने वाली बातें करती हैं? हनीमून पर आए हैं ... हमको कुछ तो मज़ा करना चाहिए? और पूरे इंडिया में ऐसी सूनसान जगह नहीं मिलेगी! जितना कपड़े उतार सको, उतना ही मस्त!!" मैंने समझाया, "कोई नहीं आएगा ... अब उतार दो न.."

“ठीक है। लेकिन यह डोर आपको खोलनी पड़ेगी...” कहकर प्रिया मुड़ कर खड़ी हो गई।

मैंने उसकी यह बात सुनकर आश्चर्यचकित हो गया। दिमाग में उत्तराँचल की वादियों में नग्न होकर आनंद उठाने का अनुभव याद आ गया। मैंने उसकी सूट की डोर खोली और जैसे केले का छिलका उतारते हैं वैसे ही स्विमसूट को उतार दिया। कुछ ही पलों में प्रिया पूर्ण

नग्न होकर बीच पर खड़ी थी। मैंने उसका सूट सूखने के लिए बीच पर फैला दिया, और उसके बाद खुद भी अपना स्विमिंग ट्रंक उतार कर पूर्ण नग्न हो गया।

हम दोनों कुछ देर ऐसे ही नंगे पुंगे वहां पर खड़े होकर पानी सुखाते रहे, लेकिन वहां ऐसे रहते हुए भी (चाहे कितने भी अकेले हों), बेढंगा लग रहा था। खैर, ऐसे निर्जन बीच पर होने का फायदा यह है की वहां पर खूब सारे समुद्री तोहफे ऐसे ही बिखरे पड़े रहते हैं। मैंने प्रिया को बीच-वाक करने और सीपियाँ बीनने के लिए तैयार कर लिया,

"अरे, चलो, यहाँ पर ज़रूर अच्छे वाले शंख और सीपियाँ मिलेंगी – चल कर उनको ढूंढते हैं, और बीनते हैं।"

मैंने कहा और हम दोनों ऐसे ही पूर्ण नग्न, उस वीरान और निर्जन द्वीप पर घूमने चल दिए। अपना सब सामान उसी स्थान पर छोड़ दिया – भला किससे डरना? सूर्य की गर्मी शरीर पर बहुत अच्छी लग रही थी – अब तक सारा पानी सूख गया था और हवा भी थोड़ी सी ऊष्ण लगने लगी थी। मैंने सोचा की एक गलती हो गयी – बिना किसी प्रकार के सन-स्क्रीन क्रीम के ऐसे ही बीच पर घूमने से सन-बर्न हो सकता है। कुछ और नहीं तो सांवलापन बढ़ जाएगा – खैर, यही सोच के संतुष्टि कर ली की चलो कुछ विटामिन डी ही बन जायेगा शरीर में।

सबसे आनंददायक बात यह थी की प्रिया इस प्रकार से नग्न होने में पूरी तरह से आश्वस्त थी – यह मैं मान ही नहीं सकता की उसको यह संज्ञान न हो की कम से कम दो अजनबी लोग कभी भी उसके सामने सामने आ सकते हैं और उसको उसकी पूर्ण नग्नता वाली स्थिति में देख सकते हैं। लेकिन मेरे साथ रहते हुए उसको अब ज्यादा आत्मविश्वास हो गया था। खैर, कोई तीन चार मिनट चलते रहते हुए ही हमको बढ़िया किस्म की बड़ी सीपियाँ और शंख मिलने लग गए – एक बार फिर से हमारे पास उनको एकत्र करने के लिए हमारे पास हाथों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। हम लोग ऐसे ही कोई पंद्रह बीस मिनट तक घूमते रहे और फिर वापस अपने स्थान की ओर चल दिए। वापस आकर हमने खाना खाया और नर्म और गरम रेत पर लेट कर धूप सेंकने लगे और कुछ ही देर में हम दोनों को ही झपकी आ गई।

सुजेन कब वहां आई, हमको इसका कोई ज्ञान नहीं। लेकिन उसने हम दोनों को न केवल एक दूसरे से गुत्थमगुत्था होकर सोते देखा, वरन उसी अवस्था में मेरे ही कैमरे से हमारी कई तस्वीरें भी उतार लीं।

(सुजेन, जैसा की मैंने पहले ही बताया है, एक ऑस्ट्रेलियाई है और अंग्रेज़ी में बात करती है। हमारे वार्तालाप को अंग्रेज़ी और हिंदी, दोनों में ही लिखने की ऊर्जा नहीं है मुझमें, इसलिए यहाँ सिर्फ हिंदी में ही लिखूंगा। लेकिन कुछ शब्द अंग्रेजी के भी होंगे)

“अरे सोते हुए बच्चों, उठो... चलना भी है।“

“कक्या? ओह... सुजेन? क्या हुआ?” सुजेन ने मुझे ही हिला कर उठाया ... मैं हड़बड़ा गया।

“कुछ हुआ नहीं! लेकिन हमको कभी न कभी वापस भी तो चलना है न? ...और, देख रही हूँ की तुम दोनों बड़े मजे ले रहे हो! है न? हे हे हे!”

“कोई मज़ा वज़ा नहीं, सुजेन। बस, थोड़ा धूप सेंकते सेंकते सो गए थे।“ सुजेन के सामने ऐसे ही नग्न पड़े रहना लज्जाजनक तो था, लेकिन चूँकि वह भी ब्रा-पैंटीज में ही थी, इसलिए मैंने खुद को या प्रिया को छुपाने का कोई प्रयास नहीं किया। सुजेन को जो भी कुछ देखना था, वह अब तक विस्तार से देख चुकी होगी।

“जैसा तुम कहो!” फिर प्रिया को देखते हुए उसने मुस्कुरा कर कहा, “वेल, हेल्लो ब्यूटीफुल! नींद हो गई?” फिर मेरी तरफ मुखातिब होकर, “तुम्हारी पत्नी बहुत सुन्दर और कामुक है। तुम बहुत ही भाग्यशाली हो, दोस्त...!मेरे कहने का यह मतलब कतई मत निकालना की तुम किसी भी तरह से कम हो... लेकिन, ये बहुत सुन्दर हैं!”

“हाँ – यह बात मुझे मालूम है। इसीलिए तो मैंने इनसे शादी की है।“ हमारी बातों के बीच ही प्रिया ने अपना स्विमसूट उठा कर अपने शरीर पर इस तरह से डाल लिया जिससे उसकी जाहिर नग्नता छुप जाय। “हे! हम लोग यहाँ कुछ देर और नहीं रुक सकते? यहाँ बहुत अच्छा लग रहा है।“ मैंने आगे जोड़ा।

“बिलकुल रुक सकते हैं... लेकिन हमको एक निर्धारित समय के बाद रिसोर्ट में इत्तला देनी होती है। और यहाँ पर कोई दूरसंचार की सुविधा तो है नहीं... लेकिन.. मेरे पास एक विचार है। उसको बताने से पहले मैं तुमको एक बात बताना चाहती हूँ की जब आप लोग सो रहे थे, तो मुझे आप दोनों को ऐसे देख कर इतना अच्छा लगा की मैंने आप लोगो की ऐसी न्यूड फोटोज खींच ली...”

“क्या?!! दिखाना ज़रा!”

“आपके ही कैमरे से ली हैं... देख लीजिये।“ कह कर सुजेन ने मेरा कैमरा मेरे हाथ में सौंप दिया।

मैंने कैमरा ऑन कर, तुरंत ही रिव्यु बटन दबाया – प्रिया भी अपनी छाती पर अपनी बिकिनी चिपकाए, उत्सुकतावश कैमरे की तस्वीरों को देखने मेरे बगल आ गई... इस बात से बेखबर की उसकी योनि से बिकिनी का वस्त्र हट गया है। खैर, जब हमने वो तस्वीरें देखीं तो हमको लज्जा, आश्चर्य और गर्व तीनों प्रकार के ही भाव आए।

ज्यादातर तस्वीरों में हम पूर्णतः नग्न अवस्था में आलिंगनबद्ध होकर सो रहे थे – मैं प्रिया की तरफ करवट करके लेटा हुआ था, ऐसे की मेरा बायाँ पाँव प्रिया के ऊपर था, और इस कारण मेरा लिंग और वृषण स्पष्ट दिख रहे थे। मेरा लिंग अर्ध स्तम्भन में खड़ा हुआ था और उसकी स्किन थोड़ी पीछे खिसकी हुई थी। प्रिया चित लेटी हुई थी और उसका सारा शरीर प्रदर्शित था। उसके छोटे छोटे स्तन, और उन पर आकर्षक स्तनाग्र! सुन्दर, स्वस्थ और पतली बाहें और सपाट पेट! उसका बायाँ पाँव थोडा अलग हो रखा था जिस कारण उसका योनि द्वार थोडा खुला हुआ था।

“थैंक्स फॉर दीस पिक्चर्स! लेकिन, आप क्या कहने वाली थीं?”

“मैं यह कह रही हूँ की आप दोनों अपने हनीमून पर आये हैं... क्यों न मैं आप दोनों के और भी अन्तरंग फोटोस कैमरे में उतारूँ..? वैसी जैसी २-एक्स या ३-एक्स फिल्मों में होता है? यू नो... जैसे आपका लिंग, इनकी योनि में...? क्या कहते हैं? वस्तुतः, मेरे ख़याल से आपके हनीमून की यह एक अच्छी यादगार निशानी बनेगी! इन तस्वीरों को जब आप लोग बीस साल बाद देखेंगे तो वापस एक और हनीमून करने का मन हो जायगा!”

मैंने प्रिया को संछेप में सुजेन के सुझाव के बारे में बता दिया।

“नहीं बाबा! मैं नहीं कर पाऊंगी! इनके सामने कैसे ऐसे...?”

“जानू, देखो न... इनके सामने हम दोनों ही तो नंगे ही हैं...”

“लेकिन अगर उन तस्वीरों को कोई और देख ले तो?”

“अरे कौन देखेगा? हमारे बच्चे? हा हा! तो उनको बताएँगे की हमने उनको ऐसे बनाया था।“ मैंने शरारत भरी दलील दी।

प्रिया वैसे भी मेरी किसी भी बात का कोई विरोध तो करती नहीं... अतः उसने अंत में हामी भर दी। लेकिन एक शर्त पर की सुजेन भी हमारे साथ निर्वस्त्र होकर कुछ तस्वीरें निकलवाए। सुजेन ने कुछ सोचने के बाद हामी भर दी।

“अच्छी बात है!” मैंने कहा, “हम लोग क्या करें?”

“सबसे पहले तो रिलैक्स होने की कोशिश करिए... आपकी पत्नी तो अभी भी नर्वस लग रही हैं। पहले इन्ही की कुछ तस्वीरें निकाल लेती हूँ... ठीक है न?” अभी भी हम तीनों में सिर्फ सुजेन ने ही कपड़े पहने हुए थे।

सुजेन प्रिया को कभी मुस्कुराने, तो कभी कोई पोज़ बनाने को कहती – ‘हैंड्स इन एयर... हैंड्स ऑन हिप्स... लिक योर लिप्स... मेक अ पाउट.. शो सम ब्रैस्ट..’ प्रिया की इन झिझक और लज्जा भरी अदाओं का असर मुझ पर होने लग गया और मेरा लिंग जीवित होने लगा। प्रिया इस समय सुजेन के निर्देशन में एक पेड़ के तने से टिक कर अपने दाहिने हाथ से खुद को और बाएँ हाथ से अपने बाएँ पैर को घुटने से मोड़ कर ऊपर की तरफ खींच रही थी। इसका प्रभाव यह था की प्रिया की पूरी सुन्दरता अपने पूरे शबाब पर प्रदर्शित हो रही थी।

ऐसा तो मैंने कभी सोचा ही नहीं... ‘यह सुजेन तो वाकई एक कलाकार है!’

‘पिंच योर निपल’ प्रिया पर भी इस प्रकार के देह प्रदर्शन का अनुकूल प्रभाव पड़ रहा था। उसके स्तनाग्र उत्तेजना से खड़े हो गए थे। ‘टर्न अराउंड... शो में सम हिप्स..’

फोटो खींचते हुए सुजेन अब मेरी तरफ मुखातिब हुई – मैं सम्मोहित होकर प्रिया के उस नए रूप को निहार रहा था और अपने उत्तेजित लिंग पर प्यार से हाथ फिरा रहा था।

सुजेन: “एक्साइटेड? अब तुम्हारी बारी...” मेरे किसी प्रतिक्रिया से पहले ही मेरी चार-पांच फोटो उतर चुकी थी। “ये इसकी देखभाल कैसे कर पाती है? उसके लिए बहुत बड़ा है! उसके क्या, मेरे लिए बहुत बड़ा है...” एक पल को जैसे सुजेन फोटो लेना ही भूल गयी – और फिर जैसे तन्द्रा से जाग कर उसने मेरे लिंग की कुछ क्लोज-अप तस्वीरें भी ले डालीं।

फिर उसने प्रिया को रेत पर लेटने को कहा और मुझको प्रिया के दोनों ओर अपने घुटने टिका कर इस तरह बैठने को कहा जिससे मेरा स्तंभित लिंग प्रिया के मुख के ऊपर आ जाय। अब प्रिया को कुछ बताने की आवश्यकता नहीं थी – उसने स्वतः ही मेरा लिंग अपने मुँह में भर लिया और इस पूरी हरकत को सुजेन ने पूरी निपुणता से कैमरा में कैद कर लिया। मुझसे रहा ही नहीं जा पा रहा था – मैंने अपने लिंग को प्रिया के मुख में थोडा और अन्दर तक घुसेड दिया।

"एनफ़ नाउ! प्लीज लिक हर निपल..."

मैंन प्रिया के ऊपर आकर उसको अपनी बाहों में कस कर चूमना शुरू कर दिया – प्रतिक्रिया स्वरुप संद्य ने अपना हाथ बढ़ा कर मेरे लिंग को पकड़ लिया और सहलाने लगी। मैं कभी उसके होंठो को चूमता, तो कभी उसके स्तनों को। सुजेन हमारे बिकुल करीब आकर बेहद अन्तरंग तस्वीरें उतारने में व्यस्त थी। मेरी और प्रिया की हालत बहुत खराब थी – मेरा लिंग इस समय ऐसा अकड़ा हुआ था जैसे की बस एक हलके से दबाव से फट जाए। प्रिया की योनि भी पूरी तरह से गीली हो चुकी थी। मुझसे रहा नहीं जा रहा था और मैंने बिना किसी निर्देशन के प्रिया के होंठ चूमते हुए अपने लिंग को प्रिया के योनि द्वार पर सटा कर एक ज़ोर का धक्का लगाया .... लिंग उसकी योनि में ऐसे सरकता चला गया जैसे मोम में गरमागरम चाकू घुसा दिया गया हो। प्रिया के मुँह से एक कामुक सीत्कार निकल गई।

"मेरी जान... आह! मेरी हिरनी.." मैं न जाने क्या क्या बड़बड़ाते हुए पूरी गति से प्रिया के साथ सहवास करने में व्यस्त हो गया। हमारा खेल ३-४ मिनटों में अपने पूरे शबाब पर पहुँच गया। मैंने प्रिया को भोगते हुए उसके घुटनों को ऊपर की तरफ उठा कर मोड़ दिया और उसके नितम्बों को सहलाना आरम्भ कर दिया। मैं जल्दी ही स्खलित होने वाला था, लेकिन कुछ और देर यह खेल खेलना चाहता था। इसलिए मैंने धक्के लगाना रोक कर, अपने लिंग को बाहर निकाल लिया। योनि रस से सना हुआ मेरा लिंग, सूर्य की रौशनी में शामक रहा था। मैंने प्रिया के नितम्बों के नीचे अपनी हथेलियाँ रखीं और उस हिस्से को ऊपर की तरफ़ इस तरह उठाया की उसकी योनि मेरे मुख के सामने आ जाय। और फिर उसकी योनि पर अपने मुख को ले जाकर उसको चूमा। प्रिया किलकारी भरने लगी।

कुछ देर चूमने के बाद, मैंने खुद को व्यवस्थित किया और अपने लिंग को प्रिया की योनि में पुनः समाहित कर के धक्के लगाने आरम्भ कर दिए। अगले २-३ मिनटों की मेहनत में मेरा वीर्य प्रिया की योनि में की गहराइयों में छूट गया। आहें भरते हुए मैंने प्रिया की कमर को कस कर अपने जघन क्षेत्र से चिपका लिया। प्रिया भी संयत होकर गहरी साँसे भारती हुई

लेट गई – मैं उसके ऊपर ही लेट गया। लेकिन उसके होंठों, आँखों, कानों, गले और स्तनों पर चुंबनो की झड़ी लगा दी। कुछ ही देर बाद मेरा लिंग सिकुड़ कर खुद ही प्रिया की योनि से बाहर आ गया।

सुजेन की नजर में:

सहवास के इस सजीव प्रसारण ने मुझे इस प्रकार मन्त्र-मुग्ध कर दिया की मैं अपनी सुध-बुध ही खो बैठी। मेरे हाथों से कैमरा गिरते गिरते बचा। मैं एक समलैंगिक हूँ, लेकिन इस इतर्लैंगिक मैथुन ने मुझे बहुत प्रभावित कर दिया था। अथर्व अब उठ कर बैठ गया था और मेरी तरफ मुखातिब था, और प्रिया अपने अभी अभी संपन्न हुए मर्दन के कारण थक कर लेटी हुई थी और सुस्ता रही थी। आखिरी कुछ तस्वीरें लेते समय मुझे झुक कर बैठना पड़ा, जिसके कारण मेरे स्तन ब्रा के कपों से थोड़ा बाहर ढलक रहे थे। अथर्व नजरें इस समय उनको ही सहला रही थी। मैंने उसकी आँखों का पीछा किया तो तुरंत समझ गयी की वो कहाँ घूम रही हैं। मैं हांलाकि थोड़ा सचेत हो गई, लेकिन मैंने उनको छिपाने की कोई कोशिश नहीं की – वैसे भी मैंने वायदा किया था की हम तीनों नग्न तस्वीरे खिचायेंगे – तो देर-सबेर इन वस्त्रों से छुट्टी तो होनी ही थी। अथर्व ने इशारे से मुझे अपने पास बुलाया और मैं यंत्रवत उसके पास आकर बैठ गई। अथर्व है भी कितने आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक! और इसकी पत्नी, प्रिया, जब कम उम्र में ऐसी बला की सुन्दर है, तो फिर जब उसका यौवन पूरा निखरेगा, तब क्या होगा!!?

अथर्व ने अपनी बाहें मेरी कमर में डाल कर मुझे कस कर दबोच लिया और अपने होंठों से मेरे होंठ सटा कर चूमने लगा। इस स्त्यंत अप्रत्याशित हमले से मैं सकते में आ गई। उसने मेरे होंठ काट लिये और उनको चूसने लगा। एक क्षण को तो मैं अपनी लैंगिकता और सुध-बुध दोनों भूल गई और चुम्बन में उसका सहयोग करने लगी। उनके सहवास के दृश्य से मेरा शरीर पहले से ही कामाग्नि भड़क उठी थी, और अब इस चुम्बन ने मुझे दहकाना शुरू कर दिया। उसने मेरे होंठों को अपने दांतों के बीच दबा कर धीरे धीरे काटना शुरू किया, और फ़िर अपनी जीभ मेरे मुँह में डाल दी। मैंने भी इनकार किये उसकी जीभ को रसीले फल के जैसे ही चूसना शुरू कर दिया।

कुछ देर तक इसी प्रकार चूमने के बाद जब उसके हाथ मेरी ब्रा को खोलने लगे... तब मैंने अपने होंठ झटक कर उससे अलग किए।

“यह क्या कर रहे हो...? बस अब बहुत हुआ... अब चलते हैं यहाँ से!” मैंने नाटक किया।

पर वह ऐसे मानने वाला नहीं था – उसने ब्रा के ऊपर से ही मेरे दोनों स्तन अपनी गिरफ़्त में ले लिया। उसकी पकड़ बहुत मज़बूत थी – और उनको इस प्रकार दबा रहा था की मेरी उत्तेजना बढ़ती ही जा रही थी। मेरे दिल की धड़कन तेज होती जा रही थी। वैसे चाहती तो मैं वहां से हट सकती थी, लेकिन वस्तुतः मेरी कोशिश भी बस सतही तौर पर ही थी, और मैंने उसकी हरकतों का कोई ख़ास विरोध नहीं किया। कुछ ही पलों में उसने मेरी ब्रा खींच कर मेरे शरीर से अलग कर दी और मैं ऊपर से पूरी नंगी हो गई। मेरे स्तन उभर कर बाहर हो आये – स्तनाग्र पहले ही उत्तेजना के मारे कठोर हो गए थे।

मेरे गोरे बदन पर तने हुये स्तनों देख कर उसकी आँखों में एक चमक आ गई। उसने मेरे स्तनों को अपनी उंगली से हल्के हल्के सहलाते हुए कहा, "तुम बहुत ख़ूबसूरत हो।"

उसने मुझे खीच कर अपनी गोद में बैठा लिया, ऐसे जिससे मेरे दोनों पांव उसकी कमर के अगल बगल होते हुए उसकी पीठ के पीछे आ गए। उसकी हिम्मत की दाद देनी होगी – इस समय वह मेरे बाएँ स्तन के स्तनाग्र को अपने मुँह में भर कर बच्चों की तरह चूस रहा था और उत्तेजनावश मेरे होंठों पर सिस्कारियां फूटने लगी। मैंने उत्तेजनावश अथर्व के सर को अपने स्तनों में भींच लिया। मेरे दिमाग में इस समय गहरी उलझन हो रही थी – मैं समलैंगिक हूँ, इतलैंगिक हूँ, या उभयलैंगिक हूँ? इस लड़के ने मुझे भरमा दिया है।

अपने स्तनों के चूषण के आनंद के दौरान मेरी आँख अचानक ही खुली – देखा की प्रिया मेरी तरफ कुछ अजीब से भाव से देख रही है। क्या वह गुस्सा है? लगता तो नहीं! उत्सुक? नहीं! लालसा? पता नहीं! प्रिया की नज़र देख कर उसके भाव कुछ समझ नहीं आये – मैंने अपने आपको उसके किसी भी प्रकार के आवेग के लिए मन ही मन तैयार कर लिया। प्रिया उठी, मेरे पास आकर मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा और आँखों में उसी प्रकार के भाव लिए मेरी तरफ गहरी दृष्टि डाली।

'कहीं ये मेरी गर्दन तो दबाने वाली नहीं है?' मैंरे मन में एक तनाव देने वाला विचार कौंधा। लेकिन बस एक दो क्षणों के लिए ही। मैं लगभग तुरंत ही तनाव मुक्त हो गई – प्रिया की छरहरी उंगलियाँ मेरे दाहिने स्तन को छू रही थीं। ऐसे ही दो तीन बार छूने के बाद उसने मेरे स्तन को अपनी हथेली में भर कर दबाया। मेरे स्तन का आकार उसकी हथेली के लिए काफी बड़ा था, लेकिन फिर भी उसकी पकड़ दृढ़ थी। बीच बीच में वह मेरे स्तनाग्र को अपने अंगूठे और उंगली के बीच पकड़ कर चुटकी ले रही थी।

उधर अथर्व आँखें बंद किये मजे से मेरे बाएँ स्तन का पान कर रहा था, और इधर उसकी पत्नी मेरे दाहिने स्तन से खेल रही थी। उसकी आँखों के भाव मुझे अब समझ आये – वह भी अपने पति की ही तरह मेरे स्तनों का पान करना चाहती है! मैंने अथर्व के सर को ज़रा हिलाया, तब जाकर वह अपने उन्माद से बाहर निकला, लेकिन उसकी सिर्फ आँखें ही खुली, मुँह में अभी भी मेरा स्तनाग्र भरा हुआ था। उसने एक नज़र मेरी तरफ देखा तो उसको भान हुआ की प्रिया मेरे दूसरे स्तन से खिलवाड़ कर रही थी। वह मेरे स्तनाग्र को मुँह में लिए मिलये ही मुस्कुराया, और फिर प्रिया को कुछ बोला। ज़रूर उसने उसको मेरे स्तन पीने को कहा होगा क्योंकि अगले ही पल प्रिया ने मेरे स्तनाग्र को अपने मुँह में रख लिया।

प्रिया के मुँह की गर्मी का एहसास अथर्व से अलग था और बहुत अच्छा भी। कुछ देर उसने अपनी जीभ से उस पर दुलराया और फिर चूसना शुरू किया। मेरे दोनों स्तनाग्र पूरी तरह से कड़े हो गए थे, अतः प्रिया को वह पूर्ण सुगमता से उपलब्ध हो गया। प्रिया स्तनाग्र को मुँह में भरे हुए अपने दोनों हाथों से मेरे स्तन को धीरे धीरे दबाने और सहलाने लगी।

"तुमको यह पसंद है?" प्रिया बिना स्तनाग्र को छोड़े मुस्कुराई। "जब तक मन करे, पियो" मैंने कहा। यह सीन बड़ा ही हास्यास्पद था – मेरे दोनों स्तनों से दोनों इस प्रकार चिपके थे जैसे अबोध बच्चे! कुछ देर चूसने के बाद अथर्व ने मेरे स्तन को छोड़ दिया और मेरे पीछे जा कर मेरी चड्ढी उतारने लगा। एक तरीके से यह सही भी था – हम तीनों में सिर्फ मैं ही थी, जिसने कुछ भी पहन रखा था। मैंने भी अपने पैर इधर उधर उठा कर उसकी मदद करी – अब हम तीनों ही पूर्ण निर्वस्त्र हो गए।

मैं तो एक समलैंगिक हूँ, और जब प्रिया जैसी सुन्दर, कामुक लड़की मेरे सामने इस प्रकार रहे, तो मेरा मन भी कुछ तो करने का बनेगा ही। मुझे यह नहीं मालूम था की हम तीनों की इस कामुक क्रिया की निष्पत्ति कैसे होगी, लेकिन उसके बारे में कुछ सोचना भी बेकार था। मैंने प्रिया के मुख से अपना स्तन मुक्त कर उसको पीछे ही तरफ धकेला, जिससे वह रेत पर पीठ के बल गिर गयी। मैंने कुछ पल उसको निहारा, फिर अपना चेहरा प्रिया के पास ला कर अपने होंठ उसके होंठो से सटा दिए। तुरंत ही मुझे दो अत्यंत कोमल होंठो का स्वाद मिलने लगा।

मैं नहीं चाहती थी की प्रिया इस नए अनुभव से डर जाए या घबरा जाए, इसलिए मैंने उसके होंठों पर हलके हलके कई चुम्बन जड़ दिए। मैंने देखा की प्रिया बुरा नहीं मान रही है तो थोड़ी और तेज़ी और जोश के साथ उसको चूमना आरम्भ कर दिया। मैंने उसके दोनों गाल

अपने हाथो में लेकर से थोडा दबा दिया, जिससे उसके होंठ खुल गए। मैंने अपनी जीभ प्रिया के मुँह में डाल कर अन्दर का जायजा लेना और चूसना शुरू कर दिया।

मैंने एक हाथ उसके गाल से हटाया तो प्रिया का मुँह फिर से बंद हो गया – हो सकता है की उसको मेरा इस तरह से चूमना पसंद न आया हो। खैर, मुझे भी उसके स्तनों का स्वाद चाहिए था – मेरा हाथ इस सामय उसके एक स्तन पर टिका हुआ था, और उसको धीरे धीरे दबा रहा था। अब एक साथ ही उसके होंठों और दोनों स्तनों का मर्दन आरम्भ हो गया। प्रिया का पूरा शरीर पहले से ही कामोन्माद के कारण काफी संवेदनशील हो गया था, और अब इस नए प्रहार के कारण अब वह असहज होने लगी। उसके मुँह से कराहें निकलने लगीं। फिर भी, मैंने उसके दोनों स्तनाग्र बारी बारी से अपने मुँह में भर कर चूसना आरम्भ कर दिया। वो अब बहुत कड़े हो गए।

फिर मैंने उसकी योनि पर अपनी उंगलियाँ सटा दी, और उसे मसलने लगी। मेरी खुद की हालत कोई ख़ास अच्छी नहीं थी – प्रिया और अथर्व के मैथुन, मेरी खुद की यौन भ्रान्ति (पता नहीं की मैं समलैंगिक हूँ या इतरलैंगिक?), और अब प्रिया जैसी सुंदरी को इस प्रकार दुलारने से मेरी खुद की योनि भी काम रस टपकाने लगी। मुझ पर भी प्रिया के सामान ही मदहोशी छा रही थी। मुझे प्रिया की योनि का स्वाद भी लेना ही था – मैंने उसके पैरों के बीच में अपना मुँह लाकर उसकी योनि से सटा दिया और जीभ से उसका रस चाटने लगी। प्रिया की योनि से बहुत सारा तरल निकल रहा था – उसकी योनि का रस, जिसमे अथर्व का वीर्य भी सम्मिश्रित था! अनोखा स्वाद!

मुझे अचानक ही अपने पीछे एक और जिस्म की अनुभूति हुई – किसी ने मेरे कंधे को पकड़ कर खुद को मुझसे चिपका लिया था। और उसी के साथ ही मुझे मेरी योनि की दीवार पर अभूतपूर्व खिंचाव महसूस हुआ। मुझे समझ आ गया की क्या हुआ है – अथर्व का लिंग मेरी योनि की दीवारों को फैलाता हुआ अंदर घुस रहा था। थ्रीसम का ऐसा अनुभव तो मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था।

जैसे ही उसका लिंग मेरी योनि में आगे बढ़ा मेरे मुँह से एक गहरी आआअह्ह्ह निकल पड़ी। उसका लिंग मेरी योनि की गहराइयों में उतर गया, और फिर बाहर भी निकल पड़ा – लेकिन मेरे राहत की एक भी सांस लेने से पहले ही वह वापस घुस गया। मुझे यकीन हो गया की अथर्व मेरे साथ सहवास कर ही लेगा, लेकिन फिर भी मैंने उसको रोकने की एक आखिरी कोशिश करी।

"अथर्व.... आह्ह्ह! आई ऍम अ लेस्बियन!"

"हह हह हह ... ट्राई स्ट्रैट वन्स। देन डिसाइड... ओके?"

फिर शायद उसको कुछ याद आया,

"आर यू सेफ? आई मीन..."

"यस... आह! आई ऍम सेफ! एंड आर यू?"

"यस! नो एस टी डी!"

कह कर अथर्व ने धक्के लगाने आरम्भ कर दिए। क्या बताऊँ! उस वक्त मुझे ऐसा मज़ा आ रहा था जैसे की मैं आसमान मैं उड़ रही हूँ। मेरे मुँह में प्रिया की क्लिटोरिस थी, जिसको मैं अपनी जीभ से सहला रही थी और उधर मेरी योनि की कुटाई हो रही थी।

"आह ऊह! इट इस हर्टिंग! इट इस सो बिग! माई वेजाइना इस स्मार्टिंग! हाऊ डस शी टेक इट इन?"

मैंने उसके आगे पीछे वाले धक्के से अपनी लय मिलानी शुरू कर दी। हर धक्के से उसका लिंग मेरी योनि के पूरी भीतर तक घुस जाता। वो जोर-जोर से मुझे भोगने लगा – और मैं प्रिया को भोगना भूल गई। वह मुझे पीछे से होकर मेरे स्तनों को दबोच दबोच निचोड़ रहा था। उसके रगड़ने से मेरे पूरे शरीर में सिहरन सी दौड़ने लगी। उसके जोरदार धक्के मुझे पागल बना रहे थे। कोई चार पांच मिनट तक वह मुझे ऐसे ही ठोंकता रहा - उसके धक्कों से मैं निढाल होकर पूरी तरह थक गई। फिर मुझे मेरी योनि में गरम गरम वीर्य की बूँदें गिरती महसूस हुई। कम से कम बीस साल बाद किसी पुरुष ने मुझे भोगा था – लेकिन ऐसा मज़ा मुझे पूरे जीवन में कभी नहीं आया।

११

हम तीनों बुरी तरह से थक कर वही गिर कर एक दूसरे की बाहों में कुछ देर लेटे रहे। और फिर सुस्ताने के बाद हमने कैमरे को ऑटो-मोड में सेट कर हम तीनों की वैसी ही नग्नावस्था में विभिन्न प्रकार की तस्वीरें खींची, एक दूसरे के गले लगे और फिर अपने कपड़े पहन कर वापस रिसोर्ट जाने के लिए तैयार हो गए। अगले दस मिनट में हम लोग वापस हेवलॉक द्वीप के लिए रवाना हो गए।

जैसे जैसे हम लोग अपने रूम की तरफ आ रहे थे, मैंने देखा, की प्रिया का चेहरा उतरता जा रहा था। उसके चेहरे पर उदासी, गुस्सा, निराशा, खीझ, घृणा, और जुगुप्सा जैसे मिले जुले भाव आते और जाते जा रहे थे। उसके चेहरे को देख कर मेरे खुद के मजे का नशा पूरी तरह से उतर गया था और समझ नहीं आ रहा था की क्या करूँ! मैं जानना चाहता था की उसके मन में क्या चल रहा है, लेकिन उस समय मैंने खुद तो जब्त कर लिया और रूम तक पहुँचने तक का इंतज़ार किया। हम दोनों जैसे ही अन्दर आये प्रिया के सब्र का बाँध टूट गया,

“आपका अपनी बीवी से मन भर गया?”

“क्या! ... आप ऐसे क्यों कह रही हैं, जानू?” मुझे तो जैसे काटो खून नहीं।

“आप प्लीज सच सच बताइये... मैं बुरा नहीं मानूंगी! मुझसे आपका मन भर गया है न?”

“क्या बकवास कर रही हो?”

“बकवास नहीं है! देखिये.... आपने मुझ पर पहले कभी भी गुस्सा नहीं किया.. और आज यह भी शुरू हो गया। क्या मैं आपके लिए ठीक नहीं हूँ?“ कह कर प्रिया सुबकने लगी।

“जानू, मैं आप पर नहीं, आपकी बात पर गुस्सा हो रहा हूँ! आप ऐसा सोच भी कैसे सकती हैं? क्यों भरेगा मेरा मन आपसे? इसका तो सवाल ही नहीं उठता! आप यह सब क्या बातें कर रही हैं?” अब तक मेरी हवाइयां उड़ने लगी।

“क्या सोच रही हैं आप? क्या चल रहा है दिमाग में? प्लीज बताइए न? ऐसे मत करिए मेरे साथ!” मैं गिड़गिड़ाया।

“आप वो सुजेन के साथ .... कर रहे थे! अब मैं इसको क्या समझूं?”

“ओह गॉड! ... शिट! तो यह बात है!?” मैंने माथा पीट लिया।

“जानू! मैंने वो सब कुछ प्लान नहीं किया था - ऑनेस्टली ! गॉड प्रोमिस! वो कुछ भी नहीं है! सुजेन कोई भी नहीं है! मैंने सुजेन को कुछ भी नहीं कहा – वो हम दोनों को सहवास करते देख कर खुद भी उत्तेजित हो गई..... और इसलिए उसने आपके साथ...... दरअसल, आप दोनों को ऐसी हालत में देख कर मेरा खुद पर कोई काबू ही नहीं रहा। वह सब कुछ ऐसा लग रहा था जैसे की किसी ने मुझ पर सम्मोहन डाल दिया हो। सच में जानू! प्लीज... मुझ पर विश्वास करो!” मैंने अपनी तरफ से सफाई दी।

“आप दोनों ने मेरे साथ यह करने का प्लान किया था?”

“नहीं जानू! मैंने आपको कहा न! और तो और, सुजेन एक लेस्बियन है ... मतलब वह आदमियों से नहीं, औरतों से सहवास करती है। पहले तो हम दोनों को सहवास करते देख कर, और फिर आपको देखकर ... आई मीन, आप इतनी कामुक हैं की वह अपने आपको रोक नहीं पाई।“

“तो आपने उसको मेरे साथ यह सब इसलिए करने दिया?”

“मैंने उसको यह सब करने को नहीं कहा था जानू! प्लीज बिलीव मी!!” मेरी दलील उलटी पड़ रही थी।

“तो इसका मतलब उसने मेरे साथ वह सब कुछ यूँ ही कर लिया?”

“हाँ!” मैंने अनिश्चय के साथ हामी भरी।

“और आपने उसको रोका भी नहीं?” प्रिया की आँखों से आंसू गिरने लगे।

“जानू… अररर … आपको देख कर ऐसा लग रहा था की आप भी एन्जॉय कर रही हैं.. इसलिए मैंने नहीं रोका।“ इससे बे-सर-पैर वाला बहाना या सफाई मैंने कभी नहीं दी!

“तो आपका यह कहना है की कोई भी मेरे साथ सहवास कर लेगा…. क्योंकि मैं…. कामुक हूँ?”

“ऐसे कैसे कर लेगा, कोई भी! मेरे कहने का मतलब था की कोई भी आपके साथ सहवास करना चाहेगा! आप सुन्दर हैं, जवान हैं…! कोई क्यों नहीं चाहेगा? हाँ – कुछ एक अपवाद हो सकते हैं।”

“इसका मतलब आप भी किसी सुन्दर और जवान लड़की को देख कर उसके साथ सहवास करना चाहेंगे?”

“मैंने कहा न, कुछ एक अपवाद हो सकते हैं?”

“मतलब आप एक अपवाद हैं?”

“हाँ!”

“कैसे?”

“क्योंकि मैं आपसे प्यार करता हूँ!”

“अच्छा! और कोई कारण?”

“और हम दोनों मैरिड हैं!”

“हम्म… और?”

“और क्योंकि मैं आपसे झूठ नहीं बोलूँगा, और आपको किसी भी तरह की तकलीफ नहीं होने दूंगा!”

“अच्छा – तो आप किसी और लड़की को ‘मेरे लिहाज’ के कारण नहीं .... करेंगे! नहीं तो कर लेते?”

“जानू... मैं आपका गुस्सा समझ सकता हूँ.. लेकिन यह सब क्या है?”

“आप मुझे सीधा सीधा जवाब क्यों नहीं दे रहे हैं? अच्छा, सच सच बताइए, जब आप किसी सुन्दर दिखने वाली लड़की को देखते हैं, तो उसके साथ सहवास करने का मन नहीं होता?”

“जानू, मैंने कभी आपसे मेरे पिछले अफेयर्स के बारे में छुपाया? चाहता तो छुपा लेता! आपको कैसे मालूम होता? बताइए?”

“आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया?”

“क्या जवाब चाहिए आपको?”

“सच..”

“सच जानना है आपको? तो सुनो – हाँ बिलकुल मन में आता है की ऐसी लड़की दिखे तो पटक कर ठोक दूं! लेकिन मुझमें और किसी रेपिस्ट या जानवर में कोई अंतर है... और वह अंतर है की मैं मानवता के बताये रास्ते पर चलता हूँ। मेरे अपने संस्कार हैं... और किसी की मर्ज़ी के खिलाफ जोर-जबरदस्ती करना गलत है।“

“.... और अगर लड़की चाहे, तो?”

“ज्यादातर लड़कियाँ ऐसे नहीं चाहती!”

“अच्छा! तो अब आपको ज्यादातर लड़कियों के मन की बातें भी पता हैं! वह! और आप ऐसा कह सकते हैं क्योंकि?”

“क्योंकि, मेरे ख़याल से, आदमी और औरतों की प्रोग्रामिंग बिलकुल अलग होती है!”

“अच्छा जी! आदमी चाहे तो कितनी ही लड़कियों की कोख में अपना बीज डालता रहे .. लेकिन औरतें बस एक ही आदमी की बन कर रहें, और उनके बच्चे पालें?”

“नहीं ... यह तो बहुत ही रूढ़िवादी सोच है! इस तरह से नहीं, लेकिन मेरे ख़याल से लड़कियाँ पहले प्रेम चाहती हैं, और फिर सहवास!”

“अच्छा, एक बात बताइए.... अगर सुजेन की जगह कोई आदमी होता तो?” प्रिया लड़ाई का मैदान छोड़ ही नहीं रही थी।

“तो उसकी टाँगे तोड़ कर उसके हाथ में दे देता। मैं आपसे सबसे ज्यादा प्रेम करता हूँ... और आपके प्यार को किसी के साथ नहीं बाँट सकता।“ मैंने पूरी दृढ़ता और इमानदारी से कहा।

“मतलब जो सुजेन ने किया वह गलत था.. है न?”

“नाउ दैट यू पुट इट लाइक दैट (अब जब आप ऐसे कह रही हैं तो)... यस! हाँ .. वह गलत था।“ मैंने अपना दोष मान लिया।

“आपके लिए इतना काफी नहीं था की अपनी बीवी की नुमाइश लगा रखी थी...?” लेकिन प्रिया का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था, “.... शी वायलेटेड मी!” प्रिया चीख उठी! दिल का गुबार उस एक चीख के साथ निकल गया... प्रिया अब शांत होकर रो रही थी। मैंने उसको रोने दिया – मेरी गलती थी ... लेकिन मेरी माफ़ी के लिए उसको संयत होना आवश्यक था।

मैंने आगे बढ़ कर प्रिया को अपने आलिंगन में बाँध लिया और कहा,

"श्ह्ह्ह्ह .... प्लीज मत रोइये। मेरा आपको ठेस पहुचाने का कोई इरादा नहीं था। आई ऍम सो सॉरी! ऑनेस्टली ! आपको याद है न, मैंने आपको प्रोमिस किया था की मैं आपको किसी भी ऐसी चीज़ को करने को नहीं कहूँगा, जिसके लिए आप राज़ी न हों? मैं आपको बहुत प्यार करता हूँ, और आपको कभी दुखी नहीं देख सकता।"

ऐसी बाते करते हुए मैं प्रिया को चूमते, सहलाते और दुलारते जा रहा था, जिससे उसका मन बहल जाए और वह अपने आपको सुरक्षित महसूस करे। जिस लड़की को मैं प्रेम

करता हूँ, वह मेरे मूर्खता भरी हरकतों से दुखी हो गयी थी।

"प्रिया ... मेरी बात सुनिए, प्लीज!"

“जानू, आई ऍम सॉरी! आई ऍम वेरी सॉरी! प्लीज मुझे माफ़ कर दीजिये। मैंने कभी भी यह सोच कर कुछ भी नहीं किया जिससे की आपकी बेइज्जती हो। मैं आपको बहुत प्यार करता हूँ – अपनी जान से भी ज्यादा! और आपकी बहुत रेस्पेक्ट भी करता हूँ। प्लीज मेरी बात पर विश्वास करिए।“

“एंड, आई ऍम रियली वेरी सॉरी! अपने मज़े की धुन में मैंने यह नहीं सोचा की आपको और आपकी भावनाओं को ठेस लग सकती है। काम के वशीभूत होकर मैंने न जाने क्या क्या गुनाह किए हैं। मैं सच कहता हूँ मेरे मन में बस एक ही धुन सवार रहती है की किसी तरह आपके साथ सहवास किया जाय..”

मैंने कहते हुए उसके माथे को चूमा और उसके बालों को सहलाया, “... पर अब मुझे लगने लगा है की मैं अपनी परी के साथ ठीक नहीं कर रहा हूँ। मैं सच कहता हूँ की मैं आपको प्यार करता हूँ – और इसका मतलब है की सिर्फ आपके शरीर को नहीं .. आपके मन, दिल और पूरी पर्सनालिटी को! लेकिन आप मेरे पास रहती हैं तो अपने को रोक नहीं पाता – और सहवास को स्पाइसी बनाने के लिए न जाने क्या क्या करता हूँ।“

प्रिया का रोना, सुबकना अब तक ख़तम हो गया था। वह अब तक संयत हो गयी थी और मेरी बातें ध्यान से सुन रही थी। उसने कुछ देर तक मेरी आँखों में देखा – जैसे, मेरे मन की सच्चाई मापना चाहती हो।

“जानू.. मैं भी आपके साथ प्यार की दुनिया बनाना चाहती हूँ। मेरा मन है की जैसे आपने मुझे अभी पकड़ा हुआ है, वैसे ही हम एक दूसरे को बाहों में जकड़े सारी जिन्दगी बिता दें। और आप मेरे साथ जितना मन करे, सहवास करिए – जैसे मन करे, वैसे करिए। मुझे अपनी प्यार की बारिश से मेरे तन मन को इतना भर दीजिये कि मैं मर भी जाऊं तो मुझे कोई गम ना हो। ... बस, मुझे किसी और के साथ शेयर मत करिए!”

"हाँ मेरी जान! अब मैं ऐसी गलती कभी नहीं करूँगा! आई ऍम सॉरी!"

मैं प्रिया को आलिंगनबद्ध किये हुए ही बिस्तर पर बैठने लगा, और प्रिया भी मेरी गोद में आकर बैठ गई और अपनी बाहें मेरे गले में डाल दी। वो इतनी प्यारी लग रही थी की मैंने उसके होंठों को चूम लिया।

"आई लव यू! एंड, आई ऍम सॉरी! अब ऐसी गलती कभी नहीं होगी।"

"आई लव यू टू! और आपको सॉरी कहने की ज़रुरत नहीं।"

प्रिया को चूमने के साथ साथ मुझे समुद्री नमकीन स्वाद महसूस हुआ – मतलब, नहाने का उपक्रम करना चाहिए था। लेकिन उसको चूमने – उसके होंठो का रस पीने – से मेरा मन अभी भरा नहीं था। प्रिया मेरी गोद में बैठी थी और हमारे होंठ आपस में चिपके हुए थे। हम दोनों ही इस समय अपनी जीभें एक दूसरे के मुंह में डाल कर इस समय कुल्फी की तरह चूस रहे थे। मैं कभी उसके गालों को चूमता, तो कभी होंठो को, तो कभी नाक को, तो कभी उसके कानो को, या फिर उसकी पलकों को। इसी बीच मैंने कब उसकी बीच मैक्सी उतार दी, उसको शायद पता भी नहीं चला (ढीला ढाला हल्का कपड़ा शरीर पर पता ही नहीं चलता)। कोई ५ मिनट के चुम्बन के आदान प्रदान के बाद जब हमारी पकड़ कुछ ढीली हुई तो प्रिया को अपने बदन पर मैक्सी न होने का आभास हुआ।

"जानू, आँखें खोलो।"

"नहीं पहले आप मेरी मैक्सी दीजिये.... मुझे शर्म आ रही है।"

"अरे शरम! मेरी रानी .... कैसी शरम? तुम इस कास्ट्यूम में कितनी खूबसूरत लग रही हो! मेरी आँखों से देखो तो समझ में आएगा!"

"धत्त!"

"और वैसे भी यह भी उतरने ही वाला है... नहाना नहीं है?"

उसने मुझे चिढ़ाते हुए कहा, "अच्छा जी... और आपको नहीं नहाना है? आपके कपडे तो ज्यों के त्यों हैं।"

मुझे क्या आपत्ति हो सकती थी? मैं तो इसी ताक में था। प्रिया को अलग कर मैंने लगभग तुरंत ही कपडे उतार दिए और बेड पर सिरहाने की ओर आकर बैठ गया। मेरा लिंग इस समय अपने पूरे आकार में आकर निकला हुआ था। प्रिया ने पहले तो अपनी उँगलियों से उसे प्यार से छुआ और फिर सहलाया और फिर अप्रत्याशित रूप से उस पर एक चुम्बन रसीद कर दिया। मेरे लिंग ने उसकी इस क्रिया के अनुकूल उत्तर दिया और पत्थर की तरह कठोर हो गया। अब प्रिया मेरे ऊपर लगभग औंधी लेट कर मेरे लिंग के साथ खेल रही थी, और मैं उसके चिकने नितम्बों के साथ - मैंने उन पर कपड़े के ऊपर से ही प्यार से हाथ फिराना शुरू कर दिया। मैंने उसकी स्विमसूट को थोडा सा खिसका कर अपनी उँगलियों से उसकी नितम्बों के बीच की दरार पर सहलाना शुरू कर दिया। और उधर, प्रिया मेरे लिंग को मुँह में रख कर चूस रही थी।

उसकी नरम मुलायम जीभ का गुनगुना अहसास मेरे लिंग पर महसूस कर के मुझे फिर से मदहोशी छाने लगी। दोस्तों, कुछ भी हो – अपने जीवन में कम से कम एक बार अपनी प्रेमिका/पत्नी को अपने लिंग का चूषण करने को अवश्य कहिये। यह एक ऐसा अनुभव होता है, जिससे आगे और कुछ भी नहीं। उसने कोई ५-६ मिनट उसने मेरा लिंग चूसा होगा, फिर वो अपने होंठो पर जीभ फेरती हुई उठ खड़ी हुई। उसकी आँखों में एक शैतानी चमक थी।

मैंने प्रिया को पुनः अपनी बाहों में भर लिया, और फिर से उसके होंठो पर अपने होंठ रख दिए। उसके मुंह से मुझे मेरे ही रस की खुशबू और स्वाद महसूस हुई।

मैंने उसके स्विमसूट के ऊपर से उसके स्तन को छूते हुए कहा, “मेरी जान, अब इसका क्या काम है? ज़रा अपने मीठे मीठे, रसीले संतरों को आज़ाद करो ना... प्लीज!”

“आप ही आज़ाद कर दो...” प्रिया ने कहा।

मैंने झटपट उसकी कास्ट्यूम की डोरी खोल दी और उसके तन से उतार कर अलग कर दी। प्रिया के दोनों स्तन तन कर ऐसे खड़े हो गए, मानो उन्हें बरसों के बाद आजादी मिली हो। मैंने आगे बढ़ कर उन पर तड़ातड़ उनपर चुम्बनों की बरसात कर दी। प्रिया के पूरे शरीर में सिहरन को लहर दौड़ गयी। मैंने उसके स्तनाग्र पर धीरे से जीभ फिराई और उसको पूरे का पूरा अपने मुंह में भर कर चूसने लगा। प्रिया सिसकारियां गूंज उठीं। वह मेरी गोद में बैठी थी - मेरा एक हाथ उसके नग्न नितम्बों पर घूम रहा था, तो दूसरा हाथ उसका दूसरा स्तन दबा-कुचल रहा था।

मेरे चूसने के कारण उसके स्तनाग्र तन कर पेन की तरह एकदम तीखे हो गए। मैंने उसे बेड पर लिटा दिया और उसके एक हाथ को थोडा ऊपर उठा कर उसकी कांख पर चूमने और चाटने लगा। समुद्री पानी की महक, और नमकीन स्वाद से मेरे मन में मादकता और भर गयी। मेरे चाटने और चूमने से प्रिया उतेजना और गुदगुदी से रोमांचित हो चली। उसको वहां पर चूमने के बाद, मैंने पुनः उसका चेहरा अपनी हथेलियों में थाम कर उसके होंठ, माथे, आँखों, गालों, नाक और कानों को चूमता चला गया। प्रिया पलकें बंद किये एक अलग ही दुनिया की सैर कर रही थी - उसकी साँसे तेज चल रही थी होंठ कंपकपा रहे थे। मैंने उसके गले और फिर उसके स्तनों को चूमा, और फिर दोनों स्तनों के बीच के हिस्से को जीभ लगा कर चाटा। प्रिया बस सिसकारियां भर रही थी।

मैंने धीरे से उससे कहा, "जानू, आँखें खोलो!"

लेकिन उससे हो नहीं पाया। खैर, मैंने उसे एक बार फिर बाहों में भर कर पुनः उसकी पलकों पर एक चुम्बन दिया। काम और प्रेम का मिश्रित प्रभाव प्रिया पर अब साफ़ देखा जा सकता था। सचमुच, ऐसी अवस्था में लिप्सा रस में डूबी, नवयौवना, नवविवाहिता भारतीय नारी सचमुच रति का ही अवतार लगती है। मैंने उसके गालों को चूमते हुए उसके होंठों पर फिर से होंठ लगा दिए। उसने भी मुझे चूम लिया और अपनी बाहों में मुझे जोर से कस लिया। उसका शरीर कांप रहा था। मैंने धीरे धीरे उसके गले को चूमा और फिर से नीचे की तरफ उतरते हुए उसके स्तनों को चूमता हुआ उसकी नाभि के छेद को चूमने और अपनी जीभ की नोक से सहलाने लगा – प्रिया बस मीठी सीत्कार किये जा रही थी।

"आह! ओह..! जानू! ये आप क्या कर रहे हो? प्लीज बस करो! मैं मर जाउंगी।"

मैं बिना कुछ बोले उसकी नाभि में अपनी जीभ की नोक लगा कर झटके दे रहा था। प्रिया ने कस कर अपनी जांघें भींच ली और मेरे सिर के बाल पकड़ लिए। फिर नीचे आते हुए मैंने जैसे ही उसके पेडू पर जीभ लगाई, उसने एक जोर की किलकारी मरी – उसमे हंसी, पीड़ा, आनंद और वासना की मिश्रित ध्वनि निकली। उसका शरीर बेकाबू होकर कांपने लगा और कांपता ही गया। मुझे समझ आ गया की प्रिया अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी है। मैंने इतनी देर में पहली बार उसकी योनि पर चुम्बन लिया – वह हिस्सा कामरस से पूरी तरह से भीग गया था। जैसे ही मैंने वहां पर अपने होंठ रखे, उसकी जांघें चौडी होती चली गई।

मैने अपनी दोनों हाथों की उँगलियों से उसकी योनि की पंखुडियों को थोडा फैलाया – उत्तेजना के मारे रक्तिम हो चली उसकी क्लिटोरिस और वाकई प्रिया की छोटी उंगली की

परिधि वाली योनि छेद मेरे सामने उपस्थित हो गयी। मैं अब भला कैसे रुक सकता था? मैने अपने होंठ उन फंको पर रख दिए – इस छुवन से प्रिया का पूरा शरीर काँप गया, और मुंह मीठी सिसकारियां निक़ल रही थी। मैने उसके भगनासे को जैसे ही अपनी जीभ से टटोला, उसकी योनि से कामरस की आपूर्ति होने लगी। प्रिया का ओर्गास्म अभी भी जारी था – कमाल है! मैंने दो तीन मिनट तक उसका योनि-रस-पान किया और फिर उठ कर अपने लिंग को उसके द्वार पर स्थापित किया।

इस लम्बे फोरप्ले के दौरान मेरा खुद की उत्तेजना अपने शिखर पर थी, लिहाजा, मेरा स्वयं पर काबू रखना बहुत ही मुश्किल था। कोई तीन-चार मिनट तक जोरदार ताबड़-तोड़ धक्के लगाने के बाद मैं उसके अन्दर ही स्खलित होकर शांत हो गया। आज यह तीसरी बार था – इसलिए वीर्य की मात्रा अत्यल्प थी। ऊपर से थकावट बहुत अधिक हो गयी थी, इसलिए मैं प्रिया के ऊपर ही गिर गया।

“हटो गंदे बच्चे!” प्रिया ने मुझे अपने ऊपर से हटाया, और आगे कहना जारी रखा, “आपने तो मुझे मार ही डाला।“ प्रिया अपनी योनि को सहलाते हुए बोली, “कोई इतनी जोर से करता है क्या? आःहह..!”

“हा हा हा!”

दूसरे हाथ की उँगलियों से उसने मेरे सिकुड़ते हुए लिंग को पकड़ कर मुझे चिढाते हुए कहा, “हाँ हाँ ... हँस लीजिये! मुसीबत तो मेरी है न! ये आपका जो केला है न, उसको काट कर छोटा कर देना चाहिए... और कटर से छील कर पतला भी कर देना चाहिए! मेरी तकलीफ़ कम हो जाएगी!”

“ये केला कट गया तो आपकी तकलीफ़ के साथ साथ आपका मज़ा भी कम हो जायेगा!” फिर थोड़ा रुक कर,

“क्या वाकई आपको बहुत तकलीफ होती है?”

“नहीं जानू... मजाक कर रही थी मैं। ऐसी कोई तकलीफ तो नहीं होती – मुझे अभी ठीक से आदत नहीं है न.. इसलिए, लगता है की थोड़ा .... कैसे कहूँ... उम्म्म... जैसे घिस गया हो, ऐसा लगता है। वो भी काफी बाद में!”

कुछ देर हम लोग बिस्तर पर पड़े हुए अपनी साँसे ठीक करते रहे, और फिर प्रिया ने बोला,

"जानू, हमको थोड़ा सावधान रहना होगा।" वह थोड़ा शरमाई, "... पिछले एक हफ्ते से हम दोनों बिना किसी प्रोटेक्शन के सहवास कर रहे हैं।" मेरे कान सावधानी में खड़े हो गए। "अगर आप चाहते हैं तो ठीक है... लेकिन मैं.... प्रेग्नेंट... हो जाऊंगी!"

बात तो सही है – मैं भी इतना भोंपा हूँ की बिना किसी जिम्मेदारी के बस पेलम-पेल मचाये डाल रहा हूँ और एक बार भी नहीं सोचा की इतनी छोटी लड़की के कुछ अरमान होंगे जिंदगी जीने के! अगर इतनी छोटी सी उम्र में वह माँ बन गयी तो सब चौपट!

"आप माँ बनना चाहती हैं?"

"अगर आप कहेंगे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।"

"लेकिन अभी नहीं... है न?"

"कम से कम.. पढाई पूरी हो जाए?" प्रिया ने शर्माते हुए कहा।

"आपके पीरियड्स कब हैं?"

"तीन चार दिन बाद...!" यह इतना व्यक्तिगत सवाल था की प्रिया को और नग्नता का एहसास होने लगा – उसके चेहरे पर शर्म की लालिमा साफ़ दिख रही थी।

"आई ऍम सॉरी जानू! आई ऍम वेरी सॉरी! मैं बहुत ही गैर-जिम्मेदार आदमी हूँ!"

"आप ऐसा न कहिए.. प्लीज! मैं भी आपसे बहुत प्यार करती हूँ। आप जैसे कह रहे थे... लड़कियाँ वैसे नहीं होतीं... कम से कम मैं नहीं हूँ... जैसे आप नहीं रह पाते हैं, वैसे ही मैं भी नहीं रह पाती हूँ... तो क्या हुआ की आप मुझे इस तरह से झकझोर देते हैं..."

"दिस इस द सेक्सिएट थिंग आई एवर हर्ड इन माई होल लाइफ! (यह मेरे जीवन की सबसे कामुक बात है, जो मैंने सुनी है)।" कह कर मैंने उसको अपनी बाहों में समेट लिया।

“बस... हमें सतर्क रहना चाहिए।“ प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा।

हमने साथ में ही नहाया – कोई और समय होता तो संभव है की सहवास का एक और दौर चलता... लेकिन शरीर में खुद की एक सुरक्षा प्रणाली होती है, जिसके कारण आप लगातार सहवास नहीं कर सकते। वैसे भी आज जो भी कुछ हुआ वह अत्यंत अप्रत्याशित था, इसलिए मैं खुद भी जल्दी जल्दी उत्तेजित होकर तैयार भी हो गया। यदि किसी बहुत भूखे इंसान को अचानक ही छप्पन भोग परोस दिया जाय तो वह पागल कुत्ते के समान उसको निबटा लेगा... लेकिन वही छप्पन भोग यदि उसको रोज़ परोसा जाय, तो उसकी भूख नियंत्रण में आ जाती है।

नहा धोकर मैंने सिर्फ अपना अंडरवियर पहना और फोन कर के हल्का फुल्का खाना मंगाया – खाकर आराम करने की इच्छा हो रही थी। प्रिया ने कफ्तान स्टाइल वाला बीच वियर पहना हुआ था – यह पॉलिएस्टर का बना एक पारदर्शी पहनावा था, जो समुद्री नीले-हरे रंग का था और जिस पर फूलों के प्रिंट बने हुए थे। गले के नीचे एक लूप जैसा था जहाँ पर डोर से इसको बाँधा जा सकता था। काफी ढीला ढाला परिधान था - उसकी लम्बाई जाँघों के आधे हिस्से तक आती थी और हाथ का ऊपर वाला हिस्सा ही ढकता था। उसके अन्दर प्रिया ने काले रंग की विस्कोस और एलास्टेन की पैडेड पुश-अप ब्रा और काले ही रंग की पैंटीज पहनी हुई थी। उसने अपने बाल शैम्पू किये थे, जिसके कारण वह अभी भी गीले थे और उनसे रह रह कर पानी टपक रहा था। बाला की ख़ूबसूरत!

इस समय वह अपने बालों को तौलिये से रगड़ कर सुखाने की कोशिश कर रही थी। मेरे मुँह से अनायास ही यह गाना निकल गया,

“ना झटको ज़ुल्फ़ से पानी, ये मोती फूट जायेंगे।

तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा, मगर दिल टूट जायेंगे।“

“हा हा! आपको हर सिचुएशन के लिए कोई न कोई गाना याद है!”

“आप हैं ही ऐसी – हर सिचुएशन को एकदम से कामुक बना देती है, तो गाना ख़ुद-ब-ख़ुद निकल पड़ता है! आपकी इस हालत में कुछ फोटो निकालने का तो बनता है! इजाज़त है?”

प्रिया ने सर हिला कर अनुमति दे दी।

मैंने उसकी कई सारी तस्वीरें निकाली, की इतने में ही परिचायक खाना लेकर आ गया। मैंने उसको कैमरा देकर हम-दोनों की कुछ तस्वीरें लेने को बोला। मुझे पक्का यकीन है की साले ने कैमरे के व्यू-फाइंडर से प्रिया के जिस्म से अपनी खूब नैन-तृप्ति करी होगी...

'खैर, कर ले बेटा, अपनी नैन-तृप्ति! तुझे यह लड़की बहुत दूर से सिर्फ देखने को नसीब होगी। ऐसे ही तरसते रहियो!'

कोई सात-आठ तस्वीरें क्लिक करने के बाद उसने बेमन से विदा ली। उसको ज़रूर कल रात वाले परिचायक ने बताया होगा, लेकिन हर-एक की किस्मत सामान थोड़े न होती है।

हमने अपना खाना पीना समाप्त किया और फिर मैंने प्रिया को कहा की वो चाहे तो आराम कर ले, क्योंकि मैं भी कैमरे से तस्वीरें अपने कंप्यूटर में कॉपी कर के आराम करने के मूड में हूँ!

“कंप्यूटर? किधर है कंप्यूटर?”

“मेरा मतलब मेरा लैपटॉप!”

“वो क्या होता है?” अच्छा, अब समझा – प्रिया ने अभी तक वो बड़े वाले डेस्कटॉप के बारे में ही जाना होगा। खैर, मैंने लैपटॉप बाहर निकाल कर उसको दिखाया। वो उसको देख कर प्रत्यक्ष रूप से काफी उत्साहित हो गयी।

“आप मुझे इसके बारे में सिखायेंगे?”

“अरे! क्यों नहीं... बिलकुल सिखाऊँगा!”

मैंने अपना लैपटॉप ऑन कर के उसे इसके बारे में बताना शुरू किया। प्रिया को थोड़ा-बहुत ज्ञान था, लेकिन वह सब पुराना और किताबी ज्ञान था। मैंने उसे कंप्यूटर चालू करने, ऑपरेट करने, और फिर बंद करने के बारे में विस्तार से बताया। फिर मैंने उसे विन्डोज़, इंटरनेट और ईमेल के बारे में भी बताया – दरअसल आम आदमी के काम की चीज़ें तो यही होती हैं! फाइल्स कैसे खोली जाएँ, प्रोग्राम्स कौन कौन से होते हैं, गाने सुनना, फिल्म

देखना, विडियो-चैट इत्यादि! उसको सबसे ज्यादा उत्साह ईमेल और इंटरनेट के बारे में जान कर हुआ।

खैर, फिर मैंने कैमरे को लैपटॉप से जोड़ कर तस्वीरें कॉपी करनी शुरू करी। कोई पंद्रह मिनट बाद सारी तस्वीरें जब कॉपी हो गईं तो वह जिद करने लगी की चलो तस्वीरें देखते हैं। मेरा मन था की कोई आधे घंटे की नींद ले ली जाय, लेकिन उसके उत्साह को देखकर उसको मना करने का मन नहीं हुआ। कैमरे में हमारी शादी की तस्वीरें (जो मेरे दोस्तों ने खींची थीं), कुछ तस्वीरें उसके कसबे की, कुछ हमारे रिसेप्शन की (जो मेरे दोस्तों और पड़ोसियों ने खींची थीं), और फिर ढेर सारी तस्वीरें हमारे हनीमून की! हमारी जो तस्वीरें सुजेन ने खींची थी, उनको देख कर प्रिया के मुँह से 'बाप रे' निकल गया.... वाकई, सारी की सारी बहुत ही कलात्मक और कामोद्दीपक तस्वीरें थीं। वाकई यादगार तस्वीरें! खैर, कॉपी कर के मैंने चुपके से उन तस्वीरों का एक बैक-अप भी बना लिया की कहीं ऐसा न हो की प्रिया शरम के मारे उनको डिलीट कर दे। इसके बाद हम दोनों लैपटॉप पर ही गाने सुनते हुए कुछ देर के लिए सो गए।

डिनर के लिए हमने सोचा की नीचे सबके साथ करेंगे - लाइव म्यूजिक के कार्यक्रम, और अन्य युगलों और अतिथियों के साथ बैठ कर मदिरा, संगीत और भोजन का आनंद उठाएंगे। प्रिया ने आज मदिरा पीने से साफ़ मना कर दिया – तो मैंने मोकटेल और मसालेदार खाना मंगाया।

"सीईईईई हाआआ!"

"क्या हुआ? कुछ तीखा था?"

"उई माँ!.... सीईई! मिर्ची खा ली... बहुत तीखी है...!"

"अरे! देख कर खाना था न! जल्दी से पानी पी लो! नहीं... एक मिनट.. जब मिर्ची लगे, तो दूध पीना चाहिए।"

मैंने जल्दी से वेटर को बुलाया और थोड़ा दूध लाने को बोला।

पानी पीने से प्रिया के मुँह की जलन कुछ कम हो गई। लेकिन मेरे दिमाग में एक कीड़ा कुलबुलाया, “वैसे, मिर्ची की जलन का एक बहुत अचूक इलाज है मेरे पास!”

“क्या? सीईईई!” उसकी जलन कम तो हो गई थी पर फिर भी वो सी... सी.... कर रही थी।

“आपके होंठों और जीभ को अपने मुँह में लेकर चूस देता हूँ, जलन ख़त्म हो जायेगी... क्या कहती हो?” मैंने हंसते हुए कहा। मैं जानता था की सबके सामने ऐसा करने से वह मना कर देगी, लेकिन जब उसने अपनी आँखें बंद करके अपने होंठ मेरी ओर बढ़ा दिए, तो मेरी हैरानी की कोई सीमा न रही। मैंने देखा उसकी साँसें भी तेज़ हो गई थी और उसके स्तन साँसों के साथ साथ ही ऊपर-नीचे हो रहे थे। मैंने आगे बढ़ कर उसके नर्म होंठों पर अपने होंठ रख दिए।

प्रिया को चूमना तो खैर हमेशा ही आनंददायक अनुभव रहता है, लेकिन ऐसे सबके सामने उसको चूमना – मानो नशे के समान था। उसके नर्म, गुलाब की पत्तियों जैसे नाज़ुक होंठो की छुअन से मेरा तन मन पूरी तरह तक तरंगित हो गया। प्रिया ने भी अपनी बाहें मेरे गले में डाल दी और मेरे होंठों को चूसने लगी। मैंने भी दोनों हाथों से उसके गाल थाम कर पता नहीं कब तक चूमता रहा, मुझे ध्यान नहीं। लेकिन जब हमारा चुम्बन टूटा तो हमारे चारों तरफ लोगो ने ताली बजा कर हमारा हौसला बढाया। मैंने भी हाथ हिला कर सभी का अभिवादन किया।

खाने के बाद हम दोनों ने कोई एक घंटे तक संगीत का आनंद उठाया और फिर उठ कर समुद्र के किनारे नारियल के पेड़ों पर बंधे हमक (जालीदार झूलों) पर लेट कर रात्रि-आकाश का अवलोकन करने लगे। हम दोनों के झूले सामानांतर बंधे हुए थे, कुछ ऐसे जैसे प्रेमी युगल आपस में हाथ पकड़ कर आराम कर सकें। नवचन्द्र निकला हुआ था, इसलिए आकाश में चमकते, टिमटिमाते तारे और नक्षत्र साफ़ दिख रहे थे। मुझे खगोलशास्त्र में खासी रूचि भी है और ज्ञान भी। लिहाजा, मैंने तुरंत ही बीवी पर इम्प्रैशन झाड़ने के लिए अपना ज्ञान बघारना शुरू कर दिया।

“वह देखिये.. वो जो लाल सा सितारा दिख रहा है, वो मंगल ग्रह है... और वहां पर बृहस्पति या जुपिटर! वही जहाँ से साबू आया है...”

“साबू?”

“अरे.. वो चाचा चौधरी वाला? आप कॉमिक्स नहीं पढ़तीं?” मुझे निराशा हुई... चाचा चौधरी तो मेरे बचपन में लगभग हर बच्चे को मालूम था।

“नहीं... लेकिन चाचा चौधरी नाम सुना तो ज़रूर है..”

“ओके.. अच्छा उधर देखिये.. वहां है उम्म्म... कृत्तिका नक्षत्र... दिखने में जैसे हीरे के चमकते गुच्छे हों! और वो देखो... उधर है तुला नक्षत्र..”

“हाँ.. कहते हैं की तुला राशि धरती पर हो रहे पाप-पुण्य का पूरा लेखा जोखा उधर स्थित ध्रुव तारे को देती

जाती है.. ध्रुव तारा अपना स्थान नहीं बदलता..”

“अरे वाह! आपको मालूम है!?”

“हाँ... कुछ कुछ मालूम है!” प्रिया ने उत्साह से कहा।

“गुड! तो मुझे भी बताइए...?”

“ह्म्म्म.. अच्छा... वह जगमग रेखा.. वहाँ ... उधर... वह आकाश-गंगा है। इसके जल में स्नान कर के देवी-देवता और अप्सराएं हमेशा युवा बने रहते हैं...”

‘क्या बात है!’ मैंने सोचा, ‘ऐसा काव्यात्मक दृष्टिकोण?’

प्रिया ने कहना जारी रखा, “इसी के जल से घड़ा भर कर रोहिणी, आषाढ़ मास में धरती पर उड़ेल देती है.. जिससे धरती पर जीवन हरा-भरा हो जाता है.. पेड़ पौधे खेत सब हरे भरे हो जाते हैं...”

“अरे वाह! क्या बात है!!”

प्रिया अपनी प्रशंसा सुन कर उत्साह से बोली, “वहाँ उस ध्रुव तारे को आधार बना कर चलने वाले सप्तर्षि तारा-मंडल हैं... आप की भाषा में शायद उनको ‘बिग डिपर’ कहते हैं...

उसमें वो हैं वशिष्ठ और उनके बगल हैं अरुंधती... कहते हैं की विवाहित जोड़े को इनके दर्शन करने चाहिए! शुभ होता है!”

मैंने विस्मय से देखा.. जिन तारों को मैं मिज़ार और अल्कोर के नाम से जानता हूँ, उनको प्रिया एकदम सही पहचान कर एक भिन्न दृष्टिकोण रख रही है। मैंने उसको आगे उकसाया,

“ऐसा क्यों?”

“एक कहानी है.. आप सुनेंगे?”

“हाँ हाँ.. बिलकुल!”

“ये जो सातों ऋषि हैं, दरअसल उन्ही सूर्य का उदय-अस्त नियंत्रित करते हैं। इन सभी का विवाह सात बहनों से हुआ था जिनको कृत्तिका कहते हैं। ये सभी साथ साथ रहते थे। लेकिन एक दिन एक हवंन के दौरान अग्नि देवता प्रकट हुए और उन सातों कृत्तिकाओं के रूप से मुग्ध हो गए और उसी पागलपन में इधर उधर भटकने लगे। ऐसे में एक दिन उनकी मुलाकात स्वाहा से हुई। स्वाहा को अग्नि से प्रेम हो गया और उनका प्रेम पाने के लिए स्वाहा एक एक कर उन सातो बहनों के रूप में अग्नि से मिलन करने लगी। उसने छः बहनों का रूप तो धर लिया, लेकिन अरुंधती का रूप नहीं ले पाई। और वह इसलिए क्योंकि अरुंधती इतनी पतिव्रता थीं, की उनका रूप लेना असंभव हो गया। इस संयोग से स्वाहा ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम स्कंद पड़ा... बात फ़ैल गई की उन छः बहनों में से कोई उसकी माता है। सिर्फ अरुंधती और वशिष्ठ ही साथ रह गए।“

“क्या बात है! यह सच है की इस प्रकार के तारों में एक तारा स्थिर और दूसरा उसके चक्कर लगाता है... लेकिन ये दोनों साथ में चक्कर लगाते हैं..।“

“हाँ.. इसीलिए अरुंधती को देखना शुभ है.. पति और पत्नी – उन दोनों को हर काम साथ में करना चाहिए। यही तो विवाह की नींव है!” प्रिया कुछ देर तक रहस्यमयी ढंग से रुकी और फिर आगे बोली, “आपको एक बात पता है?”

“क्या?” जाहिर सी बात है की मुझे नहीं पता!

“शिव-पुराण में अरुंधती को... प्रिया कहा गया है... और, वे ब्रह्मा की पुत्री थीं। वशिष्ठ के कहने पर उन्होंने तप करके शिवजी को प्रसन्न कर लिया और स्वयं को काम से मुक्त करने का आग्रह किया। शिव जी ने उनको मेधातिथि ऋषि के हवन-कुण्ड में बैठने को कहा। ऐसा करने से प्रिया उनकी पुत्री के रूप में पैदा हुई और फिर उन्होंने वशिष्ठ से विवाह किया।“

“बाई गॉड! तो मेरी जानू स्वयं ब्रह्मा की पुत्री हैं?”

प्रिया मुस्कुराई, “नहीं.. मैं तो बस अपने पापा की पुत्री हूँ.. और अब आपकी पत्नी!” फिर कुछ रुक कर, “और मैं हमेशा आपकी निष्ठावान रहूंगी – ठीक अरुंधती की तरह!”

उसने यह बात इतनी ईमानदारी और भोलेपन से कही, की दिल में एक टीस सी उठा गई.. मन भावुक हो गया। सच में, प्रिया जैसी जीवनसाथी पाकर मैं धन्य हो गया था, और मुझे यकीन हो चला था की मेरे अच्छे दिनों का आरम्भ उसके आने के साथ ही हो गया।

“मैं भी...” कह कर मैंने उसके हाथ को अपने हाथ में ले लिया, और उसके साथ ही देर तक जगमगाते आकाश को यूँ ही देखते रहा।

१२

प्रिया की नजर में :-

रात का समय,

पिछले कुछ दिनों से मिल रहे अनवरत सुख के कारण मुझमें अपार स्फूर्ति और ताज़गी आ गई जान पड़ती है। नींद ही नहीं आ रही है। कमरे में बाहर से हल्का हल्का उजाला आ रहा है – 'कितना बजा होगा?' मैंने घड़ी में देखा : रात के साढ़े बारह ही बजे थे अभी तक। 'ये' तो सो गए जान पड़ते हैं! हमको सोए हुए कोई एक घंटा ही तो हुआ है अभी तक! और मुझे लग रहा है की जैसे न जाने कितनी देर तक सो गई! 'एकदम फ्रेश लग रहा है.. क्या करूँ?'

'क्यों न खिड़की खोल दी जाए!? समुद्र का शोर बहुत सुहाना होता है।' ऐसा सोच कर मैं उठी और समुद्र के सामने खुलने वाली खिड़की के पल्ले खोल दिए और पर्दे हटा दिए, और वापस आकर बिस्तर पर सिरहाने की टेक लेकर बैठ गई। समुद्र की लहरों की गर्जना, रात्रिकाल की चुप्पी और रिसोर्ट की लाइटों से उठने वाले मृदुल उजासे से माहौल और भी शांतिमय हो चला था। नींद तो बिलकुल ही गायब थी, इसलिए मैं बैठे बैठे बस पिछले कुछ दिनों की बातें सोचने लग गई...

वास्तव में, यह सबकुछ एक परिकथा जैसा ही तो था! परिकथा! सपनों का राजकुमार!!

एक सजीला, सुन्दर, और नौजवान राजकुमार घोड़े पर सवार होकर आया और एक गरीब लड़की को अपनी रानी बना कर अपने महल में ले गया! शायद ही कोई ऐसा हो जिसने अपने बचपन में ऐसी, या इससे मिलती-जुलती कहानी न सुनी हो! और इन कहानियों को सुनते सुनते बचपन में ही लड़कियों के मन के किसी कोने में एक लालसा जागृत हो ही जाती है की एक दिन उनके भी सपनो का राजकुमार आएगा और उन्हें अपने साथ अपने महल ले जाएगा।

पर यथार्थ में क्या ऐसा कहीं होता है? मुझे तो मालूम भी नहीं की मेरे सपनो का राजकुमार कैसा होता! इसके बारे में मैंने वाकई कुछ भी नहीं सोचा था। अभी तक मैंने देखा ही क्या था? पिछले साल की ही तो बात है जब मैंने माँ और पापा को खुसुर-पुसुर करते हुए चुपके से सुना था – चर्चा का विषय था 'मेरी शादी'! पापा मेरे लिए आये किसी विवाह प्रस्ताव की

बात माँ को बता रहे थे... उस दिन मुझे पहली बार महसूस हुआ की लड़कियां अपने माँ-पापा के लिए चिंता का विषय भी हो सकती हैं। उस दिन मैंने निर्णय किया की अपने बूते पर कुछ कर दिखाऊंगी और अपनी ही पसंद के लड़के से शादी करूंगी... माँ बाप की चिंता ही ख़तम! लेकिन अगर सोचो तो कैसी बचकानी बात है? एक पिछड़े इलाके के छोटे कस्बे रहने वाले औसत परिवार की लड़की भला क्या ढूंढेगी अपने लिए पति! हमको क्या अधिकार है? अपनी हैसियत के हिसाब से जैसे तैसे कोई मिल जाय, वही बहुत है। लेकिन सोचने में क्या कोई दाम लगता है? मैं भी अपने लड़कपन में कुछ भी सोचती, ओर सोच सोच कर खुश होती की यह कर दूँगी, वह कर दूँगी।

लेकिन अथर्व ने अचानक ही हमारे जीवन में आकर यह सारे समीकरण ही बदल डाले। सच कहूं तो अथर्व कोई मेरे सपनो के राजकुमार नहीं हैं... वे उससे कई गुणा ज्यादा बढ़-चढ़ कर हैं... मैं सपने में भी उनके जैसा सुन्दर वर सोच नहीं सकती थी। इसके साथ साथ ही वह एक योग्य और लायक हमसफर भी हैं। उन्होंने अपना सब कुछ अपने ही हाथों से बनाया है... उनमें इंसानियत हैं... उनमें सभी के लिए उचित सम्मान भाव है और आत्म-सम्मान भी। और सबसे बड़ी बात, जो उनके सभी प्रकार के योग्यता और धन- दौलत से अधिक है – और वह है उनका चरित्र! उन्होंने ही बताया था की उन्होंने मुझे विद्यालय जाते हुए देखा था... अगले दिन मैंने कई बार पीछे मुड़ कर देखा, की शायद वो कहीं से मुझे देख रहे हों, लेकिन वो दिखे ही नहीं। खैर, फिर उनके बारे में पता लगाने के लिए पापा ने कई लोग भेजे, और जैसे जैसे उनके बारे में और पता चला, मेरे मन में उनके लिए प्रेम और आदर दोनों बढ़ते चले गए।

पापा सभी को कहते फिर रहे थे की प्रिया के लिए अथर्व के जैसा वर वो ढूंढ ही नहीं सकते थे.. मजे की एक बात यह है की पापा को शुरू शुरू में उन पर बहुत शक हुआ – न जाने कहाँ से आया है? क्या पता कोई लम्पट, शोहदा या उचक्का हो – हमें ठगने आया हो? बेचारी प्रिया को ब्याह कर ले जाय, और कहीं बेच दे – अखबार तो ऐसे अनगिनत किस्सों से आते पड़े हैं! मेरी फूल सी बच्ची! अगर उसको कुछ भी हो गया तो उसकी माँ को क्या जवाब देंगे! ऐसे न जाने कैसे बुरे बुरे ख्याल पिताजी को दिन-रात आते.... लोगो ने उनको समझाया की सब के बारे में सिर्फ बुरा नहीं सोचा जाता.. सतर्क रहना अच्छी बात है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं की सभी को बुरी और शक की निगाह से जांचा जाय। और फिर, बंगलौर में तो हमारे कस्बे और जान-पहचान के कितने सारे लोग हैं.. पता लगा लेंगे। सब कुछ। प्रिया तो पूरे कस्बे की बिटिया है.. ऐसे ही उसका बुरा थोड़े न होने देंगे!

फिर आई हमारी शादी.....

हमारी शादी जैसे एक किंवदंती बन गई... पूरा गाँव शामिल हुआ – सिर्फ दिखाने के लिए नहीं, बल्कि सभी ने अपनी अपनी तरफ से कुछ न कुछ मदद भी करी। पापा ने तो सब की सब रीतियाँ निभा डालीं – कहीं भी कोई कोर कसर नहीं! सब के सब देवताओं की पूरी दया बनी रहे बिटिया और दामाद पर! ऐसी शादी होती है कहीं भला? देखने वाले हम दोनों को राम-सीता जैसी जोड़ी बताते। सभी ने मन से ढेरों आशीर्वाद दिए – सच में, भाग्य हो तो ऐसा! और सभी ने हमको बोला की शादी ऐसी होनी चाहिए!

हमारे मिलन की रात!

वैसे तो लड़की शादी के बाद ससुराल चली जाती है, लेकिन ये तो इतनी दूर रहते हैं! इसीलिए हमारे लिए घर में ही सारी व्यवस्था कर दी गई थी.. कहा जाता है की पति-पत्नी की यह पहली अन्तरंग रात उनके वैवाहित जीवन के भविष्य का निर्णय कर देता है। सुहागरात में पति-पत्नी का यह पहला मिलन शारीरिक कम, बल्कि मानसिक और आत्मिक अधिक होता है। इस अवसर पर दो अनजान व्यक्तियों के शरीरों का ही नहीं बल्कि आत्माओं भी मिलन होता है। जो दो आत्माएँ अब तक अलग थीं, इस रात को पहली बार एक हो जाती हैं।

एक बार टीवी पर मैंने वो गाना देखा था... “आज फिर तुम पे प्यार आया है...” उसमें माधुरी दीक्षित और विनोद खन्ना के बीच प्रथम प्रणय का संछिप्त दृश्य दिखाया गया था। उस दृश्य को देख कर मेरे मन में भी एक अनजान तपन, एक बेबस इच्छा और न जाने कितने कोमल सपने अंकुर लेने लगे। अथर्व से विवाह की बात पक्की हो जाने पर वह सारे सपने परवान चढ़ गए ... लेकिन, भाभियों के बताये यौन ज्ञान ने सब पर पानी फेर दिया। ज्यादातर स्त्रियों के यौन जीवन, या कह लीजिये वैवाहिक जीवन की सच्चाई तो वैसी ही है... मुझे उनकी बातों से जो एक बात समझ में आई थी वह यह थी की स्त्रियों के लिए सहवास का आनंद उठाने जैसी कोई व्यवस्था नहीं है। पतिदेव आयेंगे, और कुछ कुछ करके सो जायेंगे! स्त्री के लिए तो बस पूरे दिनभर चौका-चूल्हा, सेवा-टहल, बस यही सब चलता रहता है। हमारी (स्त्रियों की) तो बस नींद ही पूरी हो जाय, यही बहुत है।

‘क्या अथर्व भी ऐसे ही होंगे?’ यह विचार मेरे मन में अनगिनत बार आता... लेकिन मुझे इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं मिल पाता.. मिलता भी कैसे? आखिर उनके बारे में मुझे मालूम ही क्या था? मन में बस डर सा लगा रहता। मेरा भविष्य तो तय हो गया था। ठीक है,

अथर्व अच्छे इंसान हैं, और मैं संभवतः बहुत भाग्यशाली हूँ की मुझे उनसे विवाह कर उनकी संगिनी बनने का अवसर मिला था। परन्तु फिर भी, समाज में स्त्रियों की स्थिति और अन्य भाभियों के अनुभव – इन सबने मेरे मन में एक अनजान सा डर भर दिया था।

माँ ने हमारी सुहागरात से पहले मुझे इनकी हर बात मानने की हिदायद दे दी और फिर सभी मुझे कमरे में अकेला छोड़ कर चले गए। मैं अकेली ही डरी, सहमी सी उनका इंतजार करने लगी। समय के एक एक पल के बढ़ते हुए मेरे दिल की धड़कन भी बढती जा रही थी और इंतजार का एक-एक पल मानो एक-एक घंटे जैसा बीत रहा था। खैर, अंततः अथर्व कमरे में आये और मेरे पास आकर बैठ गए। उनकी उपस्थिति मात्र से ही मेरे शरीर का रोम रोम रोमांचित हो गया।

"मैं आपका घूंघट हटा सकता हूँ?" उन्होंने पूछा...

'आप को जो करना है, करेंगे ही!' ऐसा सोचते हुए मेरे दिमाग में भाभियों की बताई हुई शिक्षा, सहेलियों की नटखट चुहल और छेड़खानी और मेरी खुद की न जाने कितनी ही कोमल इच्छाएँ कौंध गईं ... मैंने सिर्फ धीरे से हाँ में सर हिलाया।

'क्या मैं इनको पसंद आऊंगी? इन्होने तो मुझे दूर से ही देख कर पसंद कर लिया! आज इतने पास से मुझे पहली बार देखेंगे..' वो मुझे आँखें खोलने को बोल रहे थे – लेकिन रोमांच के मारे मेरी आँखें ही नहीं खुल रही थीं। जब मेरी आँखें खुली तब इनका मुस्कुराता हुआ चेहरा दिखाई दिया। राम-सीता का नहीं मालूम, लेकिन ये सचमुच मेरे लिए कृष्ण का रूप थे... मेरी आँखें तुरंत ही नीचे हो गयीं। फिर उन्होंने मुझे चुम्बन के लिए पूछा! कहाँ दूँ चुम्बन? गाल पर, या होंठ पर? फिल्मों में देखा है की हीरो-हेरोइन होंठों पर चूमते हैं.. लेकिन, क्या इनको यह पसंद आएगा? खैर, मैंने इनके होंठो पर जल्दी से एक चुम्बन दिया, और पीछे हट गयी। शरम आ गई...।

लेकिन इनका मन नहीं भरा शायद... इन्होने मेरी ठुड्डी पकड़ कर मुझे कुछ देर निहारा और फिर मेरे होंठो को चूमना शुरू कर दिया। मैं तो सिहर ही गई, मेरे शरीर पर किसी मर्द का यह पहला चुम्बन था। मेरा उनके होंठों के स्पर्श से ही कांप गया, गाल लाल हो गये, और रौंगटे खड़े हो गए। उनके गर्म होठों का स्पर्श – एकदम नया अनुभव! मेरे पूरे बदन में झुरझुरी सी दौड़ गई। समय का सारा एकसास न जाने कहीं खो गया। कुछ याद नहीं की यह चुम्बन कब तक चला। लेकिन, उतनी देर में मेरा हाल बहुत बुरा हो चला था – मैं बुरी तरह कांप रही थी, उसके गालों से गर्मी छूट रही थी और साँसे भारी हो गयी थी।

न जाने क्या सोच कर उन्होंने मेरी नथ उतार दी। पारंपरिक विवाहों में सुहागरात में पति सहवास से पहले अपनी पत्नी की नथ उतारता है। सहवास! सहसा ही मुझे ऐसा एहसास हुआ जैसे मुझे किसी ने नग्न कर दिया हो। डर और लज्जा की मिली-जुली भावाना के कारण सहवास क्रिया तो दूर की बात है, उनका आलिंगन, चुम्बन और स्पर्श में भी मेरे दिल को दहला दे रही थी। मन में बस यही भावना आ रही थी की उनके सामने पूरी नंगी न होना पड़े। लेकिन जिस निर्लज्जता से उन्होंने मेरा ब्लाउज उतारा था, मैं तो समझ गई की मेरी भी दशा मेरी भाभियों जैसी ही होने वाली है। उन्होंने धीरे-धीरे एक-एक करके मेरे सारे कपड़े मेरे शरीर से उतार दिए और मुझे उसी डर की खाईं में धकेल दिया। सब कुछ बहुत ही अस्वाभाविक प्रतीत हुआ। जिस आकर (खज़ाना) को मैं अब तक सुरक्षित रखे हुए थी, वह उसी पर सीधी सेंधमारी कर रहे थे। लेकिन जब उन्होंने मुझे प्रेम से आलिंगनबद्ध कर दुलराया, तो मन में कुछ साहस आया।

और फिर वह हुआ जिसकी कल्पना मैंने अपने सबसे सुखद स्वप्न में भी नहीं करी थी... उनके होंठ, जीभ, हाथ, उँगलियों और लिंग ने एक समायोजित ढंग से मेरे सर्वस्व पर कुछ इस प्रकार आक्रमण किया की मैं सब कुछ भूल गई। मेरे यौवन के खजाने को पहली बार कोई मर्द ऐसे लूट रहा था, और उस समय होने वाले सुखद अहसास को मेरे लिए शब*्दों में बयान करना नामुमकिन है। मेरे चुचक पहले भी कभी-कभी कड़े हो जाते थे – जब अधिक ठंडक होती, या फिर तब जब मैं नहाते समय अपने स्तनों पर कुछ ज्यादा ही साबुन रगड़ लेती.. लेकिन उस समय तो कुछ और ही बात थी। मेरे चुचक उनके मुँह में जाकर पत्थर के सामान कड़े हो गए थे। वह उनको किसी बच्चे की तरह चूसते हैं.... मैं तो जैसे होश ही खो देती हूँ। पता नहीं उनको मेरे स्तन इतने स्वादिष्ट क्यों लगते हैं! उनको पिए जाने पर मेरा मन भी नहीं भरता... मन में बस यही आता है की अथर्व मेरे दोनों चुचक लगातार पीते रहें। हालांकि उनके चूसने और पीने से मेरी दोनों स्तनाग्रों में दर्द होने लगता है, लेकिन उनके ऐसा करने से जो मुझे जो असीम आनन्द का अनुभव होता है, उसके लिए यह दर्द कुछ भी नहीं।

मैंने सोते हुए अथर्व को देखा – वो एकदम से बेख़बर, एक भोले बच्चे के समान सो रहे थे। नींद में भी वो कितने मासूम और प्यारे लग रहे थे... चेहरे पर संतोष के भाव एकदम स्पष्ट। मैं मुस्कुराई... इतने दिनों में यह एक अनोखी रात थी, जब मेरे शरीर पर कपड़े थे!

‘मेरे कपड़ो के दुश्मन...!’

मैंने प्यार से सोचा और उनके गाल पर धीरे से अपनी उंगलियाँ फिराईं। मेरे स्पर्श से वे थोड़ा कुनमुनाए और फिर अपने गाल को स्वतः ही मेरी उँगलियों से सटा कर सो गए।

'अरे मेरे मासूम साजन!' मैंने मन ही मन सोचा और मुस्कुराई, '....कैसे बच्चों के सामान सो रहे हो! यही बच्चा रोज़ मेरे क्रोड़ में उथल पुथल मचा देता है! '

'और इनका लिंग! बाप रे! पहली बार उनके लम्बे तगड़े अंग को देखते ही मुझे दहशत सी हो गई! इतना मोटा! मेरे कलाई से भी अधिक मोटा! उसकी त्वचा पर नसें फूल कर मोटी हो रही थी और आगे का गुलाबी हिस्सा भी कुछ कुछ दिख रहा था... आखिर यह मुझमें समाएगा कैसे?' उस समय मुझे पक्का यकीन हो गया की आज तो दर्द के मारे मैं तो मर ही जाऊंगी! यह सब सोचते हुए मेरी दृष्टि अथर्व के जघन भाग पर चली गई, जहाँ चद्दर के नीचे से उनका अंग सर उठा रहा था।

मेरे होंठों से एक हलकी सी हंसी छूट पड़ी, 'हे भगवान्! क्या ये कभी भी शांत नहीं रहता?!'

मुझे याद है जब मैंने इसको पहली बार छुआ था... मैंने छुआ क्या था, दरअसल उन्होंने ही मेरे हाथ को पकड़ कर अपने आग्नेयास्त्र पर रख दिया।

आग्नेयास्त्र! हा हा! सचमुच! मानो अग्नि की तपन निकल रही थी उसमें से!! मेरी हथेली उनके लिंग के गिर्द लिपट तो गई, लेकिन घेरा पूरा बंद ही नहीं हुआ। इतना मोटा! बाप रे! और तो और, उनके लिंग की लम्बाई का कम से कम आधा हिस्सा मेरी पकड़ से बाहर निकला हुआ था। शरीर और मन की इच्छाएँ जब अपने मूर्त-रूप में जब इस प्रकार उपस्थित हो जाती हैं, और उनसे दो-चार होना पड़ता है तो डर और लज्जा – बस यही दो भाव मन में आते हैं। मैं भी डर गई...!

लेकिन उनके अंतहीन मौखिक प्रेम प्रलाप ने मेरा सारा डर खींच कर बाहर निकाल दिया! ऐसा तो कुछ भी भाभियों ने नहीं बताया था। न जाने कितनी देर बाद अंततः वह समय आ ही गया जब हम दोनों संयुक्त होने वाले थे। मन में अनजान सा डर था की उनका लिंग मेरी क्या दुर्दशा करेगा, लेकिन एक विश्वास भी था की वे मुझे कोई परेशानी नहीं होने देंगे। एक आशंका थी की अगर भाभियों की बात सच हो गई तो..? और साथ ही साथ एक चिंता थी

की यदि उनकी बात सच न हुई तो..?? इस प्रकार के विरोधी भाव आते जाते गए, और फिर मैंने स्वयं को उनकी निपुणता के हवाले कर दिया।

जब उन्होंने मेरी जांघें फैला दीं तो मुझे लगा की जैसे मेरी योनि तरल हो गई है... पूरी तरह से भिन्न आभास! जब उन्होंने अपनी उँगलियों से उसको फैलाया, तब जा कर मुझे वापस आभास हुआ की मेरी योनि स्नायु, ऊतकों और पेशियों से बनी है। वो कुछ कहते, लेकिन मुझे कुछ भी सुनाई न देता! मानो, सब इन्द्रियों की संवेदनशीलता सिमट कर मेरी योनि और चुचक में ही रह गई हो।

उनका लिंग!

पहली बार उसको अपनी योनि में महसूस करना अद्भुत था! उनके जोर लगाने से वह धीरे-धीरे मेरे अन्दर आने लगा। मुझे लगा की जैसे एक नया जीव मेरे अन्दर घर बना रहा हो। भराव का ऐसा अनुभव मेरी कल्पना से परे था। मैंने नीचे देखा – अभी तो लिंग के आगे के हिस्से का सिर्फ आधा भाग ही अन्दर घुसा था! उन्होंने एक क्षण रुक कर एक जोरदार धक्का लगाया और उनके विकराल अंग का आधा हिस्सा मेरी योनि के भीतर समा गया।

"आआह्ह्ह..." ऐसी क्रूरता! मेरी चीख निकल गयी – जो की मुझे भी सुनाई दी। वो एक दो पल ठहर कर मुझे देखने लगे.. उनकी आँखों में चिंता थी – किस बात की यह तो नहीं मालूम, लेकिन इतना कह सकती हूँ की मेरे लिए नहीं। क्योंकि एक दो पल रुकने के बाद ही उन्होंने अपना लिंग मेरी योनि से थोड़ा बाहर निकाला और फिर पुनः और अन्दर डाल दिया। ऐसे ही उन्होंने कई बार अन्दर बाहर किया। ह्म्म्म.. दर्द कुछ कम तो हुआ! लेकिन उनके हर धक्के से मेरी कराह ज़रूर निकल रही थी। फिर अचानक ही उन्होंने पूरे का पूरा लिंग मेरे भीतर ठेल दिया और मेरा विधिवत भोग करना आरम्भ कर दिया। वासना और आनंद के सम्मिश्रण से मेरी आँखें बंद हो गईं – सांस और कराह का आवागमन मुंह से ही हो रहा था। उत्तेजना के मारे मैंने उनके कन्धों को जोर से जकड रखा था। अजीब अजीब सी आवाजें – कुछ हमारी कामुक आहों की, तो कुछ पलंग के पाए के भूमि पर घिसने की, तो कुछ हमारे जननांगों के घर्षण की! मुझे अचानक ही मेरे अन्दर गर्म तरल की बूँदें गिरती महसूस हुईं – और ठीक उसी समय मुझे एक बार पुनः कामुक आनंद के अनोखे स्वाद का आभास हुआ। मेरी पीठ एक चाप में मुड़ गयी.. और मेरे भोले साजन मेरे चुचक को एक बार फिर से पीने लग गए और मुझ पर ही गिर कर सुस्ताने लगे! मुझे नहीं मालूम था की मर्दों को स्त्रियों के स्तनों का स्वाद लेने की ऐसी इच्छा हो सकती है। मैंने उनके लिंग को

अपने अन्दर मुलायम होते महसूस किया; ऊपर से उनका दुलार, चुम्बन और चूषण जारी रहा।

रति निवृत्ति जहाँ अति आनंददायक हो सकती है, वहीँ पहली बार करने पर एक प्रकार की लज्जा भी होती है। उनको तो खैर नहीं हो रही थी, लेकिन मैं शरम से दोहरी हुई जा रही थी और उनसे आँखे ही नहीं मिला पा रही थी। पता नहीं क्यों! आखिर इस खेल में हम दोनों ही बराबर के भागीदार थे, लेकिन फिर भी शरम मुझे ही आ रही थी। एक वो दिन था, और एक आज का दिन है! मैं भी किसी छंछा (निर्लज्ज स्त्री) की तरह निर्बाध यौन आनंद उठा रही हूँ।

सपनों के ब्रह्माण्ड में विचरण करते हुए अगला पड़ाव मेरी विदाई का आया...

अप्रत्याशित रूप से मुझे एक दिन पहले ही अपने पिया के घर को निकलना पड़ा। एक पल के लिये भी मुझे अपने पिता के घर को छोड़ने का मलाल नहीं हुआ। अथर्व के साथ जीवन के हसीन सपने संजोंते हुए मैंने सबसे खुशी-खुशी विदा ली। मन में कई प्रकार की खुशियाँ घर करने लगी। मुझे मालूम था की अथर्व जैसे पति को पाकर मैं धन्*य हो गई थी। बंगलौर पहुँच कर मेरा ऐसा स्वागत हुआ कि मैं खुद को किसी राजकुमारी से कम नहीं मान रही थी। लेकिन इस घर का अहसास कुछ ही घंटों में मुझे अपना सा लगने लगा। मैं तो एक दिन में ही पापा का घर भूल गई। यह मेरा घर था... अद्वितीय वास्*तु शिल्*प से निर्मित घर! मैं दंग रह गई थी। सब कुछ जैसे मीठा स्वप्न हो! मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक ऐसे स्थान में हूँ, जहां रिश्*तों की तपिश का संसार बसाया जा सकता है। प्रेम के इन्*द्रधनुषी रंगों की वितान (शामियाना) के नीचे हम दोनों की देहों के मिलन से सृष्*टि सृजन को गति दी जा सकती है।

सच है.... एक वो दिन था, और एक आज का दिन है! निर्बाध यौन आनंद! जब मैं उनकी बांहों में जाती हूँ तो पूर्णतः तनाव मुक्*त हो जाती हूँ। साहचर्य की कायापलट करने वाली ऊर्जा की कांति मानो मेरी त्*वचा से फूट फूट कर निकलने लगी है। सचमुच, यौन क्रिया, संसर्ग के अतिरिक्त भी ऐसी प्राप्*य है जो चेतना को सुकून और शरीर को पौष्*टिकता देती है। कुछ लोग कहते हैं की जब स्*त्री शरीर, पुरुष रसायन प्राप्त करता है, तो देह गदरा जाती है।

मैं इस सोच पर मुस्कुराई... एक हाथ अनायास ही मेरे स्तन पर चला गया। 'ये दोनों जल्दी ही बड़े हो जाएँ!' मन में एक विचार कौंधा। कैसा हास्यास्पद विचार है यह... कुछ दिनों

पहले तक ही मैं सोचती थी की बड़े स्तन कितने तकलीफदेय हो सकते हैं... लेकिन जिस प्रकार से अथर्व मेरे दोनों स्तनों का भोग प्रयोग करते हैं.. यदि, ये थोड़े बड़े होते तो उनको और आनंद आता। और यदि ये दोनों मीठे मीठे दूध से भर जाएँ, और अथर्व जीवन भर उनका पान कर सकें! आह!

मेरे मन में एक शरारत उठी। मैंने अथर्व से सट कर, चद्दर के अंदर हाथ बढ़ा कर उनके लिंग पर धीरे से हाथ फिराया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसको मेरी छुवन का ही इंतज़ार था – मेरा हाथ लगते ही तुरत-फुरत उसका आकार अपने पूर्ण रूप में बढ़ गया।

'ऐसा पुष्ट अंग! हाथ में ठीक से आता ही नहीं..! कितना सख्त हो गया है!'

मैंने पूरे हाथ को उनके लिंग पर कई बार फिराया और फिर उसको पकड़ कर हिलाने लगी। कुछ ही देर में उनका लिंग मेरी योनि में जाने के लायक एकदम खड़ा और सख्त हो गया।

दुर्भाग्य से मेरी योनि इस समय थकी हुई थी, और हमने सावधानी बरतने का प्रण भी किया था, इसलिए मैंने सोचा की क्यूँ न हाथ से ही इनको निवृत्त कर दिया जाय! मैंने अथर्व के लिंग को थोड़ा मजबूती से पकड़ कर अपनी मुट्ठी को उसकी पूरी लम्बाई पर आगे-पीछे चलाना आरम्भ कर दिया। सोते हुए भी अथर्व के गले से कामुक आहें निकलने लगीं! फिर मुझे याद आया की उनका वीर्य निकलेगा तो बिस्तर को ही खराब करेगा, अतः मैं घुटनों और कोहनी के बल इस प्रकार बैठ गई जिससे उनका लिंग मेरे मुंह के सामने रहे। कुछ देर और उनके लिंग को पकड़ कर आगे पीछे करने के बाद मैंने उसके सामने वाले हिस्से को अपने मुंह में भर लिया। अब हाथ की ही ले में मेरा मुंह भी उनके लिंग पर आगे पीछे हो रहा था। मैंने अपनी जीभ से उनके लिंग के आगे वाले चिकने हिस्से पर कई बार फिराया।

अथर्व 'आऊ आऊ' करते हुये मेरे सिर को अपने हाथ से सहला रहे थे। 'हो गया सोना!'

"यस बेबी! यस!!" उन्होंने बुदबुदाते हुए मेरा हौसला बढाया।

मैंने उत्साह में आकर उनके लिंग को अपने मुंह के और भीतर जाने दिया – एक बार तो उबकी सी आ गई, लेकिन मैंने गहरी सांस भर कर उसको चूसना जारी रखा। उधर अथर्व भी उत्तेजना में आकर लेटे हुए नीचे से धक्के लगाने लगे – वो तो अच्छा हुआ की मैं अभी भी उसकी गति और भेदन नियंत्रित कर रही थी, नहीं तो मेरा दम घुट जाता। खैर, कुछ ही

देर में मैं अपने मुंह में उनके लिंग की उपस्थिति और चाल की अभ्यस्त हो गई और अब मुझे इस प्रकार मैथुन करना अच्छा लगने लगा। मुझको यह क्रिया आरम्भ किये कोई चार-पांच मिनट तो हो ही गए थे.... अतः कुछ और झटके मारने के बाद वो स्खलित हो गये और मेरा मुख उनके गरम गरम वीर्य से भर गया, जिसको मैंने तुरंत ही पी लिया। कुछ ज्यादा नहीं निकला... संभवतः आज कुछ ज्यादा ही खर्च हो गया। एक अजीब स्वाद! हो सकता है की कुछ और बार ऐसे करने के बाद मैं उसकी भी अभ्यस्त हो जाऊं! अथर्व भी स्खलित होने के बाद निढाल से लेटे रहे।

‘पता नहीं उनको क्या लगा होगा! सपना या हकीकत! हा हा!’

मैं कुछ देर तक उनका सिकुड़ता हुआ लिंग मुंह में लिए ऐसे ही लेटी रही, और फिर अलग हट कर सिरहाने की छोटी मेज पर रखी बोतल से पानी पीने लगी। और फिर उनके चेहरे पर नज़र डाली... वो मुस्कुरा रहे थे। क्या ये जाग गए हैं और उनको मेरी इस हरकत का पता चल गया? या वो इसको एक सपना ही सोच कर मगन हो रहे हैं! क्या पता!

'आज की रात क्यों अनोखी हो भला?' यह सोचते हुए मैंने अपने सारे कपड़े उतारे, और अपने पिया से चिपक कर लेट गई.. रात में कब नींद आई, कुछ भी याद नहीं।

१३

आज सुबह से ही बदली वाला मौसम था – सूरज बादलो के साथ लुका-छिपी खेल रहा था। हल्की बयार और ढले हुए तापमान से मौसम अत्यंत सुहाना हो गया। मन में आया की क्यों न अगर ऐसे ही मौसम रहे, तो आज दिन भर बीच पर ही आराम किया जाय? आखिर आये तो आराम करने ही है! मैंने प्रिया को यह बात बताई तो उसको बहुत पसंद आई – वैसे भी हिमालय की हाड़ कंपाने वाली ठंडक से छुटकारा मिलने से वह वैसे भी बहुत खुश थी। प्रिया ने भी कहा की आज बस आराम ही करने का मन है... खायेंगे, सोयेंगे और हो सका तो रात में फिल्म देखेंगे, इत्यादि... मेरे लिए आज का यह प्लान एकदम ओके था।

हमने जल्दी जल्दी फ्रेश होने, और ब्रश करने का उपक्रम किया। ब्रेकफास्ट के लिए आज मैंने रिसोर्ट के सार्वजानिक क्षेत्र में जाने का निर्णय लिया – कम से कम कुछ और लोगों से बातचीत करने को मिलेगा। नाश्ते पर हमारे साथ एक तमिल जोड़ा बैठा। हमारी ही तरह उनकी भी अभी अभी ही शादी हुई थी और वे हनीमून के लिए आये थे। उनसे बात करते हुए पता चला की दोनों ही बंगलौर में काम करते हैं! लड़का लड़की दोनों की उम्र पच्चीस से सत्ताईस साल रही होगी। खैर, हमने अपने फ़ोन नंबर का आदान प्रदान किया और मैंने शिष्टाचार दिखाते हुए उन दोनों को अपने घर आने का न्योता दिया। नाश्ता कर के हम होटल के रिसेप्शन पर चले गए और उनसे प्लान के बारे में पूछा।

वहां पर रिसेप्शनिस्ट ने बताया की बहुत से लोग आज यही प्लान कर रहे हैं.. उसने हमको काला-पत्थर बीच जाने को कहा.. एक तो वहां बहुत भीड़ भी नहीं रहेगी और दूसरा वह रिसोर्ट से आरामदायक दूरी पर था। आईडिया अच्छा था। फिर मेरे मन में एक ख़याल आया – मैंने रिसेप्शनिस्ट से पूछा की दो साइकिल का इन्तेजाम हो सकता है? क्यों न कुछ साइकिलिंग की जाय – वैसे भी इतने दिनों से किसी भी तरह का व्यायाम नहीं हुआ था.. बस आराम! खाओ, पियो, सोवो, और सहवास करो! ऐसे तो कुछ ही दिन में तोन्दूमल हो जायेंगे हम दोनों।

रिसेप्शनिस्ट ने कहा की है और कुछ ही देर में हमारे सामने दो साइकिल (एक लेडीज और एक जेंट्स) मौजूद थीं। बहुत बढ़िया! प्रिया को पूछा की उसको साइकिल चलाना आता है? उसने बताया की आता है.. उसने छुप छुपा कर सीखी है। भला ऐसा क्यों? पूछने पर प्रिया ने कहा की पहले तो माँ, और फिर पापा दोनों ही उसको मना करते थे। माँ कहती थीं की लड़कियों की साइकिल नहीं चलानी चाहिए... उससे 'वहाँ' पर चोट लग जाती है। कैसी

कैसी सोच! न जाने क्यों हम लोग अपनी ही बच्चियों को जाने-अनजाने ही, दकियानूसी पाबंदियों में बाँध देते हैं!

खैर, साइकिल चलाने और चलाना सीखने का मेरा खुद का भी ढेर सारा आनंददायक अनुभव रहा है। जब मैं छोटा था, उस समय मेरठ में वैसे भी साइकिल से स्कूल जाने का रिवाज था। स्कूल ही क्या, लोग तो काम पर भी साइकिल चलाते हुए जाते थे उस समय तक! लड़का हो या लड़की... ज्यादातर बच्चे साइकिल से ही स्कूल जाते थे। पांचवीं में था, और उस समय मैंने साइकिल चलाना सीखी।

शुरू शुरू में मोहल्ले के कई सारे मुंहबोले भइया और दीदी मुझे साइकिल चलाना सिखाने लगे - कैसे पैडल पर पैर रखकर कैंची चलते है... कैसे सीट पर बैठते है... कैसे साइकिल का हैंडल सीधा रखते हैं... इत्यादि इत्यादि! शुरू शुरू में कोई न कोई पीछे से कैरियर पकड़ कर गाइड करता रहता... साईकिल चलाते समय यह विश्वास रहता की अगर बैलेंस बिगड़ेगा तो कोई न कोई मुझे गिरने से बचा ही लेगा। ऐसे में न जाने कब बड़े आराम से अपने मोहल्ले मे साइकिल चलाना सीख लिया... पता ही नहीं चला।

एक वह दिन था और एक आज! न जाने कितने बरसों के बाद आज साइकिल चलाने का मौका मिलेगा! कभी कभी कितनी छोटी छोटी बातें भी कितने मज़ेदार हो जाती हैं! मैंने हाफ-पैन्ट्स और टी-शर्ट पहनी, चप्पलें पहनी और एक बैग रखा.. जिसमें फ़ोन, सन-स्क्रीन लोशन, कैमरा, किताब, मेरा आई-पोड, पानी की बोतलें, चादर और खाने का सामान था। प्रिया ने हलके आसमानी रंग का घुटने तक लम्बा काफ्तान जैसा पहना हुआ था और उसके अन्दर नारंगी रंग की ब्रा और चड्ढी पहनी हुई थी.. क्या बला की खूबसूरत लग रही थी! बालों को उसने पोनीटेल में बंद लिया था – उसकी मुखाकृति और रूप लावण्य अपने पूरे शबाब पर था।

कोई पंद्रह बीस मिनट की साइकिलिंग थी.. तो मैंने सोचा की रस्ते में इसको चुटकुले सुनाते चलूँ...

हरयाणवी जाट का बच्चा साइकिल चलाते-चलाते एक लड़की से टकरा गया। लड़की बोली: क्यों बे! घंटी नहीं मार सकता क्या? जाट का बच्चा कहता है: री छोरी, बावली है के? पूरी साइकिल मार दी इब घंटी के अलग ते मारुं के?

प्रिया: “हा हा! ये तो बहुत मज़ेदार जोक था! .... आप तो सुधर गए!”

मैं: “सुधर गया मतलब? अरे मैं बिगड़ा ही कब था?”

प्रिया: “आपके ‘वो’ वाले जोक्स की केटेगरी में तो नहीं आता यह!”

मैं: “अच्छा! तो आपको ‘वो’ जोक सुनना है? तो ये लो...

प्रिया: “नहीं नहीं बाबा! आप रहने ही दीजिये!”

मैं: “अरे आपकी फरमाइश है..! अब तो सुनना ही पड़ेगा.. शादी के फेरे लेने के बाद लड़की ने झुक कर पंडित जी के पैर छुए और कहा "पंडित जी कोई ज्ञान की बात बता दीजिए।" पंडित जी ने उत्तर दिया "बेटी, ब्रा अवश्य पहना करो.. क्योंकि जब तुम झुकती हो तो ज्ञान और ध्यान, दोनों ही भंग हो जाते हैं।“”

“हा हा हा!”

“हा हा हा हा हा!”

ऐसे ही हंसी मज़ाक करते हुए कुछ देर बाद हम दोनों काला पत्थर बीच पर पहुँच जाते हैं। वहाँ पर हमारे अलावा कोई चार पांच जोड़े और मौजूद थे.. लेकिन सभी अपने अपने आनंद में लिप्त थे।

एक साफ़ सुथरा (वैसे तो सारे का सारा बीच ही साफ़ सुथरा था) स्थान देख कर अपना चद्दर बिछाया और बैग रख कर मैं कैमरा सेट करने लगा। उसके बाद प्रिया की ढेर सारी तस्वीरे उतारीं.. मैं उसको सिर्फ ब्रा-पैंटीज में कुछ पोज़ बनाने को बोला, तो वह लगभग तुरंत ही मान गई। किसी मॉडल की भांति सुनहरी रेत और फिरोज़ी पानी की पृष्ठभूमि में मैंने उसकी कई सुन्दर तस्वीरे उतारी। उसके बाद मैंने भी सिर्फ अपनी अंडरवियर में प्रिया के साथ कुछ युगल तस्वीरे एक और पर्यटक से कह कर उतरवाई।

यह सब करते करते कोई एक घंटा हो गया हमको बीच पर रहते हुए.. बादल कुछ कुछ हटने लगे थे, इसलिए मैंने प्रिया को कहा की मैं उसके शरीर पर सनस्क्रीन लोशन लगा देता

हूँ.. नहीं तो वो झुलस कर काली हो जायेगी। मैंने प्रिया को पानी की एक बोतल पकड़ाई और वह चद्दर पर आ कर लेट गई। सूरज इस समय तक ऊर्ध्व हो गया था। उसमें तपिश तो थी, लेकिन फिर भी, समुद्री हवा, और लहरों का गर्जन बहुत ही सुखकारी प्रतीत हो रहे थे। हम दोनों चुप-चाप इस अनुभव का आनंद लेते रहे, और कुछ ही देर में मैंने प्रिया और अपने के पूरे शरीर पर सनस्क्रीन लगा लिया।

कुछ देर ऐसे ही लेटे लेटे प्रिया बोली, "आप ग़ज़ल पसंद करते हैं?"

"ग़ज़ल!? हा हा! हाँ... जब भी कभी बहुत डिप्रेस्ड होता हूँ तब!"

"डिप्रेस्ड? ऐसी सुन्दर चीज़ आप डिप्रेस्ड होने पर पसंद करते हैं?"

"सुन्दर? अरे, वो कैसे?"

"अच्छा, आप बताइए, ग़ज़ल का मतलब क्या है?"

"ग़ज़ल का मतलब? ह्म्म्म... हाँ! वो जो ग़मगीन आवाज़ में धीरे धीरे गाया जाय?"

"ह्म्म्म अच्छा! तो आप जगजीत सिंह वाली ग़ज़ल की बात कर रहे हैं? फिर तो भई शाल भी ओढ़ ही ली जाय!"

हम दोनों इस बात पर खूब देर तक हँसे... और फिर प्रिया ने आगे कहना शुरू किया,

"एक बहुत बड़े आदमी हुए थे कभी... रघुपति सहाय साहब! जिनको फिराक गोरखपुरी भी कहा जाता है! खैर, उन्होंने ग़ज़ल को ऐसे समझाया है – मानो कोई शिकारी जंगल में कुत्तों के साथ हिरन का पीछा करे, और हिरन भागते-भागते किसी झाडी में फंस जाए और वहां से निकल नहीं पाए, तो वह डर के मारे एक दर्द भरी आवाज़ निकालता है। तो उसी करूण कातर आवाज़ को ग़ज़ल कहते हैं। समझिये की विवशता और करुणा ही ग़ज़ल का आदर्श हैं।"

"हम्म... इंटरेस्टिंग! कौन थे ये बड़े मियां फ़िराक?"

“उनकी क्वालिफिकेशन सुनना चाहते हैं आप? मेरिटोक्रेटिक लोगो में यही कमी है! अपने सामने किसी को भी नहीं मानते! अच्छा.. तो रघुपति सहाय जी अंग्रेजों के ज़माने में आई सी एस (इंडियन सिविल सर्विसेज) थे, लेकिन स्वतंत्रता की लड़ाई में महात्मा गाँधी के साथ हो लिए। उनको बाद में पद्म भूषण का सम्मान भी मिला है। समझे मेरे नासमझ साजन?”

“सॉरी बाबा! लेकिन वाकई जो आप बता रही हैं बहुत ही रोचक है! आपको बहुत मालूम है इसके बारे में! और बताइए!”

“ओके! ग़ज़ल का असल मायने है ‘औरतों से बातें’! अब औरतों से आदमी लोग क्या ही बातें करते हैं? बस उनकी बढाई में कसीदे गढ़ते हैं! शुरू शुरू में ग़ज़लें ऐसी ही लिखते थे...

‘नाज़ुकी उसके लब की क्या कहिये, पंखडी एक गुलाब की सी हैं।‘”

“किस गधे ने लिखी है यह! आपकी तो दो-दो गुलाब की पंखुड़ियाँ हैं!”

“हा हा हा! वेरी फनी! इसीलिए पुराने सीरियस शायर ग़ज़ल लिखना पसंद नहीं करते थे। इसको अश्लील या बेहूदी शायरी कहते थे। लेकिन जैसे जैसे वक्त आगे बढ़ा, और इस पर और काम हुआ, जीवन के हर पहलू पर ग़ज़लें लिखी गयी।“

“अच्छा – क्या आपको मालूम है की उर्दू दरअसल भारतीय भाषा है?”

आज तो मेरा ज्ञान वर्धन होने का दिन था! मैं इस ज़रा सी लड़की के ज्ञान को देख कर विस्मित हो रहा था! क्या क्या मालूम है इसको?

“न.. हीं..! उसके बारे में भी बताइए?”

“बिलकुल! जब मुस्लिम लोग भारत आये, तब यहाँ – ख़ास कर उत्तर भारत में खड़ी-बोली या प्राकृत भाषा बोलते थे.. और वो लोग फ़ारसी या अरबी! साथ में मिलने से एक नई ही भाषा बनने लगी, जिसको हिन्दवी या फिर देहलवी कहने लगे। और धीरे धीरे उसी को आम भाषा में प्रयोग करने लगे। उस समय तक यह भाषा फ़ारसी में ही लिखी जाती थी – दायें से बाएँ! लेकिन जब इसको देवनागरी में लिखा जाने लगा, तो इसको हिंदी कहने लगे। लेकिन इसमें भी खूब सारी पॉलिटिक्स हुई – उस शुरु की हिंदी से संस्कृत बहुल शब्द

हटाए गए तो वह भाषा उर्दू बनती चली गयी, और जब फारसी और अरबी शब्द हटाए गए तो आज की हिंदी भाषा बनती चली गयी। लेकिन देखें तो कोई लम्बा चौड़ा अंतर नहीं है।“

“क्या बात है! लेकिन आप ग़ज़ल की बात कर रही थी?”

“हाँ! तो उर्दू की बात मैंने इसलिए छेड़ी क्योंकि ग़ज़ल सुनने सुनाने का असली मज़ा तो बस उर्दू में ही हैं!”

“आप लिखती है?”

“नहीं! पापा लिखते हैं!”

“क्या सच? वाह! क्या बात है!! तो अब समझ आया आपका शौक कहाँ से आया!” प्रिया मुस्कुराई!

“आप क्या करती हैं? बस पापा से सुनती हैं?”

“हाँ!”

“लेकिन आपको गाना भी तो इतना अच्छा आता है! कुछ सुनाइये न?”

“फिर कभी?”

“नहीं! आपने इतना इंटरेस्ट जगा दिया, अब तो आपको कुछ सुनाना ही पड़ेगा!”

“ह्म्म्म! ओके.. यह मेरी एक पसंदीदा ग़ज़ल है ... मीर तकी मीर ने लिखी थी – कोई दो-ढाई सौ साल पहले! आप तो तब पैदा भी नहीं हुए होंगे! हा हा हा हा!”

प्रिया को ऐसे खुल कर बातें करते और हँसते देख कर, और सुन कर मुझे बहुत मज़ा आ रहा था!

“हा हा! न बाबा! उस समय नहीं पैदा हुआ था! बूढ़ा हूँ, लेकिन उतना भी नहीं...”

“आई लव यू! एक फिल्म आई थी – बाज़ार? याद है? आप तब शायद पैदा हो चुके होंगे? उस फिल्म में इस ग़ज़ल को लता जी ने बहुत प्यार से गाया है!”

“बाज़ार? हाँ सुना तो है! एक मिनट – आप भी कुछ देर पहले कह रही थीं की ग़ज़ल औरतों की बढाई के लिए होती है.. और अभी कह रही हैं की लता जी ने गाया?”

“अरे बाबा! लेकिन लिखी तो मीर ने थी न?”

“हाँ! ओह! याद आया! ओके ओके ... प्लीज कंटिन्यू!”

“तो जनाब! पेशे-ख़िदमत है, यह ग़ज़ल...” कह कर प्रिया ने गला खंखार कर साफ़ किया और फिर अपनी मधुर आवाज़ में गाना शुरू किया,

“दिखाई दिए यूं, के बेखुद किया... दिखाई दिए यूं, के बेखुद किया,

हमे आप से भी जुदा कर चले... दिखाई दिए यूं....”

प्रिया के गाने का तो मैं उस रात से ही दीवाना हूँ! लेकिन इस ग़ज़ल में एक ख़ास बात थी – वाकई, करुणा और प्रेम से भीगी आवाज़, और साथ में उसकी मुस्कुराती आँखें! मैं इस रसीली कविता ओह! माफ़ करिए, ग़ज़ल में डूबने लगा!

प्रिया गाते गाते खुद भी इतनी भाव-विभोर हो गयी, की उसकी आँखों से आंसू बहने लगे ... उसकी आवाज़ शनैः शनैः भर्राने लगी, लेकिन फिर भी मिठास में कोई कमी नहीं आई... मैंने उसके कंधे पर हाथ रख अपनी तरफ समेट लिया।

ग़ज़ल समाप्त हो गयी थी, लेकिन मेरे दिल में एक खालीपन सा छोड़ कर चली गयी।

“आई लव यू!” प्रिया बोली – लेकिन इतनी शिद्दत के साथ की यह तीन शब्द, तीन तीर के जैसे मेरे दिल में घुस गए... “आई लव यू सो मच!” उसकी आवाज़ में रोने का आभास हो रहा था, “मुझे आपके साथ रहना है... हमेशा! आपके बिना तो मैं मर ही जाऊंगी!”

प्रिया ने मेरे मुँह की बात छीन ली। उसकी बात सुन कर मेरी खुद की आँख से आंसू की बूँद टपक पड़ी। हाँ! मर्द को दर्द भी होता है, और मर्द रोते भी हैं.. प्यार कुछ भी कर सकता है।

मैं कुछ बोल नहीं पाया – कुछ बोलता तो बस रो पड़ता। मैंने प्रिया को जोर से अपने में भींच लिया। जो उसका डर था, वही मेरा भी डर था। इतनी उम्र निकल जाने के बाद, मेरे साथ पहली बार कुछ ठीक हो रहा था।

आप कहेंगे की 'अरे भई, अच्छी पढाई लिखाई हुई, अच्छी नौकरी है, अच्छा कमा रहे हो – घर है, गाड़ी है, बैंक बैलेंस है! फिर भी कैसे गधे जैसी बात कर रहे हो! यह सब अच्छी बाते नहीं हुई?'

तो मैं कहूँगा की 'बिलकुल! यह सब अच्छी बाते हैं! लेकिन यह सब मैं इसलिए कर पाया की मेरे मन में एक प्रतिशोध की भावना थी! जिनके कारण मेरा बाल्यकाल उजड़ गया, उनको नीचा दिखाना मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य बन गया। भोगवादी परिमाणों और मापदंडो पर ही मेरा जीवन टिका हुआ था! एक अजीब तरह का चक्रव्यूह या कहिये भंवर! जिसमें मैं खुद ही घुस गया, और न जाने कितने अन्दर तक चला गया था। लेकिन प्रिया ने आते ही मुझे ऐसा अनोखा एहसास कराया की मानो पल भर में उस भंवर से बाहर निकल आया।'

'अब समझ आया इस खालीपन का रहस्य! मैं अब तक बिना वजह का बोझ, जो अपने सर पर लिए फिर रहा था, वह न जाने कहाँ मेरे सर से उतर गया था। मुझे प्रिया और उसके परिवार के रूप में एक अपना परिवार मिल गया था, जिसको मैं किसी भी कीमत पर सहेज कर रखना चाहता था।'

''आई ऍम सॉरी जानू! मैं आपको रुलाना नहीं चाहती थी। ... मैं भी कितनी गधी हूँ .. इतने अच्छे मूड का सत्यानाश कर दिया।''

''नहीं जानू! सॉरी मत बोलो! और ऐसा कुछ भी नहीं है। बस, आपके आने से यह समझ आ गया की मैं क्या मिस कर रहा था मेरी लाइफ में! यू आर वेरी प्रेशियस फॉर मी! और मुझे भी आपके ही साथ रहना है।''

कह कर मैंने प्रिया को और जोर से अपने में दुबका लिया। मुझे मेरे जीवन में साफ़ उजाला दिख रहा था।

हम दोनों काला पत्थर बीच पर कम से कम छः घंटे तो रहे ही होंगे.. उस समय तो पता नहीं चला, लेकिन वापस रिसोर्ट आने पर जब आँखें थोड़ी अभ्यस्त हुईं, तो साफ़ दिख रहा था की प्रिया और मैं, सूरज की तपन से पूरी तरह से गहरे रंग के हो गए। वैसे भी भारतीय लोगों की त्वचा धूप को बढ़िया सोखती है, लिहाजा हम दोनों काले कलूटे बन गए थे। लेकिन एक अपवाद था... प्रिया ने टू-पीस बिकिनी पहनी हुई थी, इसलिए जो हिस्सा (दोनों स्तन, जघन क्षेत्र और नितम्बो का ऊपरी हिस्सा) ढका हुआ था, वह अभी भी अपने मूल, हलके रंग का था। इसको बिकिनी टेन कहते हैं। प्रिया ने कपड़े उतारे तो यह बात समझ आ गई। लेकिन शायद प्रिया ने देखा न हो, इसलिए उसने किसी भी तरह का विस्मय नहीं दिखाया। खैर नहा-धोकर हमने पकौड़े और चाय मंगाया, और खा-पीकर दोपहर में एक छोटी सी नींद सो गए।

जब मैं उठा तो देखा की सामने प्रिया कमर पर अपने हाथ टिका कर, और कूल्हा एक तरफ निकाल कर बड़ी अदा से खड़ी हुई थी। उसने कोका-कोला रंग का काफी पारदर्शक नाइटी (जिसको टेडी भी कहते हैं) पहना हुआ था। कमर से बस कुछ अंगुल ही नीचे तक पहुंचेगा लम्बाई में। स्तनों के ऊपर से जाने वाले स्ट्रैप बहुत पतले थे। स्तन पर बस यही कपड़ा था, इसलिए उसके अन्दर से चमकदार स्तनाग्र साफ़ दिख रहे थे... और नाभि भी। उसने टेडी के नीचे चड्ढी पहनी हुई थी... एक बहुत ही कामुक ड्रेस!

“ओहो! हू इस अ बिग गर्ल नाउ? कम हियर!”

प्रिया मुस्कुराते हुए मेरे पास आई।

“न्यू ड्रेस?” मैंने प्रिया की ड्रेस को छूते हुए कहा।

“यस! प्रीटी न्यू! ओनली फॉर यू!”

“ह्म्म्म... आई लाइक दिस वन!” और फिर हँसते हुए मैंने कहा, “... एंड आई सी दैट यू आर वेअरिंग सम प्रीटी पैंटीज अंडरनीथ इट!”

“यस! वांट टू सी इट?”

मैंने सर हिला कर हामी भरी।

प्रिया ने हँसते हुए टेडी का निचला किनारा पकड़ कर ऊपर उठा दिया। उसकी गहरे कोका कोला रंग की चड्ढी साफ़ दिखने लगी। उसकी चमक और बनावट देख कर मुझे लगा की शायद सिल्क की बनी होगी। सिल्क! एक अत्यंत अन्तरंग कपड़ा! पुरुष, सिल्क पहनी हुई स्त्रियों को छूने की परिकल्पना करते रहते हैं। एक तरीके का सहवास-सिंबल! प्लेबॉय जैसी मगज़ीनों में सिल्क पहनी हुई लड़कियों को देख कर अनगिनत लडको और आदमियों में हस्त-मैथुन किया होगा! वही सिल्क! वही परिकल्पना!

"ओह! दे आर रियली प्रीटी पैंटीज!" मेरी आँखों में एक इच्छा जाग गई, "विल यू माइंड, अगर मैं इसको छू कर देख लूं?"

"ओके!" कह कर प्रिया ने अपनी ड्रेस को कुछ और ऊपर उठा दिया.. चड्ढी का पूरा हिस्सा दिखने लगा। मैंने उंगली से चड्ढी के ऊपर से ही प्रिया की योनि का आगे वाला हिस्सा छुआ, और दूसरे हाथ से उसके नितम्बो के ऊपर से।

"फील्स गुड?" प्रिया ने पूछा।

"ओह! दे फील अमेजिंग! सो नाइस! सो स्मूद.. सो कामुक!" मैंने हँसते हुए पूछा, "डू दे मेक यू फील कामुक, हनी?"

"कामुक? ओह यस! दे डू!"

"आई ऍम श्योर! इट इस सो स्मूद! हम्म्म्म!" अपनी उंगली को प्रिया के पैरों के बीच में दबाते हुए मैंने कहा, "ज़रा अपने पैर फैलाइये.. देखूं तो 'वहां' पर छूने पर यह कैसी लगती हैं!"

"ओके!" कहते हुए प्रिया ने अपने पैर थोड़ा और खोले। और मैं बढाई करते हुए उंगली से योनि के ऊपर से उसकी चड्ढी का मखमली एहसास महसूस करने लगा।

"डोंट दे फील सो नाइस?" प्रिया ने अपनी आवाज़ थोड़ी कामुक बना कर पूछा।

"दे श्योर डू! नॉट ओन्ली नाइस, बट आल्सो अमेजिंग!" कहते हुए मैंने प्रिया की योनि की झिर्री के ऊपर से अपनी उंगली रगड़ कर फिरानी शुरू की। "आई रियली लाइक हाउ योर

पैंटीज फील हियर, डार्लिंग!”

प्रिया खिलखिला कर हंसने लगी.. और साथ ही साथ मेरी उंगली की हरकतों को भी देखती रही। मैंने कुछ देर आहिस्ता आहिस्ता सहलाने के बाद अपनी उंगली की लम्बाई को उसकी योनि की पूरी दरार के अन्दर फिरानी शुरू कर दी।

“आह्ह्ह! आई रियली लाइक हाउ इट फील्स व्हेन आई रब योर पैंटीज हियर, हनी! दिस इस वेयर दे फील बेस्ट टू मी। तुझे अच्छा लगता है?“

“हा हा... हाँ! उम्म्म्म!!” कहते हुए उसने अपने नितंब मटकाए, जिससे मेरी उंगली ठीक से उसकी दरार में फिट हो जाय।

“आई कैन नॉट स्टॉप फीलिंग यू! इस दैट ओके?”

प्रिया हंसी।

“यू कैन फील अस मच अस यू वांट!”

“थैंक्स डिअर!” कह कर मैंने कुछ और दृढ़ता से योनि के ऊपर से दबाना और सहलाना आरम्भ कर दिया।

और फिर, “विल यू लेट मी सी हाउ दिस थिंग अंडर योर पैंटीज फील?” कह कर बिना किसी उत्तर का इंतज़ार किए, मैंने प्रिया की चड्ढी के अन्दर हाथ डाल कर, उसकी योनि की दरार की पूरी लम्बाई पर अपनी उंगली सटा कर थोड़ा बल लगाया। योनि के दोनों होंठ खुल गए और उनके बीच मेरी उंगली स्थापित हो गई।

“आह! दिस फील्स सो वार्म... एंड नाइस! डस इट फील गुड टू यू टू?” मैंने पूछा।

प्रिया खिलखिला कर हंस पड़ी, “यू आर अ नॉटी बॉय!”

“आई ऍम श्योर दैट इट फील्स गुड एंड सेक्सी बोथ..! आई बेट इट डस!”

“पुसी मीन्स योनि, जानेमन! तेरी योनि बहुत क्यूट है!” मैंने बहुत ही नंगई से यह बात फिर से दोहराई। एक बात तो है, अंग्रेजी में ‘डर्टीटॉक’ करना बहुत मज़ेदार होता है... न जाने क्यों हिंदी में वही बातें बोलने पर अभद्र सा लगता है! खैर!

“देखो न! कैसे हाईलाइट हो रही है...” दिन भर धुप सेंकने के कारण चड्ढी से ढंका हुआ हिस्सा अभी भी गोरा था, और ऊपर नीचे का बाकी हिस्सा साँवला हो गया था.. इसलिए ऐसा लग रहा था की जैसे अलग से उसकी योनि पर लाइट डाली जा रही हो! मैंने अपने दोनों अंगूठे से उसके होंठों को कुछ और फैलाया और अपनी उंगली को अन्दर के भाग पर फिराया.. और फिर अपनी उंगली को चाट लिया।

“ह्म्म्म... सो वैरी टेस्टी!”

“स्टॉप टीसिंग मी!” प्रिया कुनमुनाई।

“यू डोंट बिलीव मी? हियर यू आल्सो टेस्ट योर ओन जूसेस...” कह कर मैंने उसके रिश्ते हुए रस का एक और अंश अपनी उंगली पर लगाया और उसके होंठों के सामने रख दिया, “डोंट बी शाई! लिक इट!”

प्रिया ने मुंह नहीं खोला तो मैंने ही उसके दोनों गालो को दबा कर उसके होंठ खोल दिए और अपनी उंगली उसके मुंह में डाल दी। मरता क्या न करता! प्रिया ने पहले तो बेमन से, और फिर उत्सुक स्वेच्छा से मेरी उंगली चाट कर साफ़ कर दी।

“क्यों? मज़ा आया? है न स्वादिष्ट तुम्हारा ‘योनि-रस’?” मेरे इस तरह कहने से प्रिया के गाल शर्म से सुर्ख हो गए।

“तुम बोलो या नहीं.. है तो स्वादिष्ट!” कह कर मैंने वही उंगली अपने मुंह में डाल कर कुछ देर चूसा।

इंटिमेसी / अंतरंगता / निजता.. इन सबके मायने हमारे लिए बहुत बदल गए थे, इन कुछ ही दिनों में!

मैं बिना कुछ पहने ही सो गया था। और इस समय मेरे लिंग का बुरा हाल था, और स्पष्ट दिख भी रहा था। वह इस समय एकदम सख्त स्तम्भन की स्थिति में था। प्रिया ने अब तक मेरी उत्तेजना महसूस कर ली होगी, इसलिए उसका हाथ मेरे लिंग की पूरी लम्बाई पर चल-फिर और दौड़ रहा था। कभी वह यह करती, तो कभी मेरे वृषणों के साथ खेलती।

“यू हैव अ वैरी नाइस पुसी डिअर!” मैंने वापस अपनी उंगली को उसकी योनि पर फिराया, “... इट इस सो हॉट... एंड वेट! यू आर सो रेडी टू फ़क!”

कह कर मैंने अपनी मध्यमा उंगली को उसकी योनि के अन्दर तक ठेल दिया और एक पम्पिंग एक्शन से उसको अन्दर बाहर करने लगा... इसमें एक ख़ास बात यह थी की एक तरफ तो मेरी मध्यमा उसकी योनि के अन्दर बाहर हो रही थी, वहीँ दूसरी तरफ बाकी उंगलियाँ रह रह कर उसके भगनासे को सहला रही थीं।

दोहरी मार! प्रिया की साँसे इसके कारण भारी हो गई, और रुक रुक कर चलने लगीं। उसका चेहरा उत्तेजना से तमतमा गया। कभी वह मुंह खोल कर सांस भारती, तो कभी अपने सूखे होंठों को जीभ से चाटती.. उसका सीना भारी भारी साँसों के कारण ऊपर नीचे हो रहा था।

“कैसा लग रहा है, जानू?” मैंने पूछा।

“आह! सोओओ गुड! उम्म्म्मम...!” वह बस इतना ही कह पाई।

“ह्म्म्म... सो द लिटिल गर्ल इस ग्रोन नाउ! लुक अट हर पुसी... आल जूसी एंड हॉट!” मैं रह रह कर अपनी उंगली की गति कभी धीमी, तो कभी तेज़ कर देता। प्रिया कभी सिसियती तो कभी रिरियाती। कुछ ही देर में रति-निष्पत्ति के चरम पर पहुँच कर उसका शरीर कांपने लगा। उसकी बाहें मेरी गर्दन पर कस गईं और उसका माथा मेरे माथे पर आकर टिक गया। इस पूरे प्रकरण में पहली बार मैंने प्रिया के होंठ चूमे!

“मज़ा आया हनी?”

प्रिया उन्माद के आकाश में तैरते हुए मुस्कुराई।

“देखो न.. तुमने मेरी क्या हालत कर दी है! कितना कड़ा हो गया है मेरा लिंग!” कह कर मैंने प्रिया का एक हाथ अपने लिंग पर लाकर रख दिया। प्रिया की उंगलियाँ स्वतः ही उस पर लिपट गईं। उधर मैं प्रिया के टेडी के ऊपर से ही उसके स्तनाग्र को बारी बारी से चूमने और चूसने लगा। फिर दिमाग में एक आईडिया आया।

प्रिया को पकड़े पकड़े ही मैं बिस्तर पर लेट गया और प्रिया को अपने लिंग पर कुछ इस तरह से स्थापित किया की उसकी योनि मेरे लिंग की पूरी लम्बाई पर सिर्फ चले, लेकिन उसको अन्दर न ले। प्रिया भी इस इशारे को समझ गई, उसने अपनी ड्रेस काफी ऊपर उठा दी – अब उसके स्तन भी दिख रहे थे, और पूरे उत्साह के साथ मेरे लिंग को अपनी योनि-रस से भिगाते हुए सहवास करने लगी। बहुत ही अलग अनुभव था यह.. लिंग को योनि की कोमलता और गरमी तो मिल ही रही थी, साथ ही साथ कमरे की ठंडी हवा भी। योनि का कसाव और पकड़ नदारद थी, लेकिन दो शरीरों के बीच में पिसने का आनंद भी मौजूद था।

प्रिया के लिए भी उन्मादक अनुभव था – इस प्रकार के मैथुन से उसके जननांगों के सभी कोमल, संवेदनशील और उत्तेजक भाग एक साथ प्रेरित हो रहे थे। साथ ही साथ, मेरे ऊपर आकर मैथुन क्रिया को नियंत्रित करना उसके लिए भी एक अलग अनुभव रहा होगा... पिछली बार तो वह शर्मा रही थी, लेकिन इस बार वह एक अभिलाषा, एक प्रयोजन के साथ मैथुन कर रही थी। यह क्रिया अगले कोई पांच-छः मिनट तो चली ही होगी.. मेरे अन्दर का लावा बस निकलने को व्याकुल हो गया। मेरा शरीर अब कांपने लग गया था।

“जानू.. निकलने वाला है!”

मेरे बस इतना ही बोलने की देर थी की प्रिया ने अपनी बाहें मेरी गर्दन पर कस लीं और मेरे होंठों को मुँह में भर कर जोर से चूमने चूसने लगी। उसके ऐसा करते ही एक विस्फोट के साथ वीर्य का पहला खेप स्खलित हो गया और फिर उसके बाद ही ताबड़ तोड़ चार पांच बड़ी गोलिकाएं और निकलीं। प्रिया ने इस क्रिया के दौरान अपने कूल्हे चलाने जारी रखा। और मेरे स्खलन के कुछ ही देर बाद प्रिया का शरीर भी कुछ अकड़ा और एक बार फिर झटके खाते हुए वो भी शांत पड़ने लगी और मुझ पर निढाल होकर गिर गई। मेरा शरीर अभी भी उत्तेजना में कांप रहा था.. मैंने प्रिया को अपने में जोर से भींच लिया – कभी उसके होंठ चूमता, तो कभी गाल, तो कभी माथा! मेरी हरकतों पर मीठी मीठी सिसकियाँ निकल जातीं। इस अनोखे सहवास की संतुष्टि उसके चेहरे पर साफ़ झलक रही थी।

जब हमारी उत्तेजना का ज्वार कुछ थमा, तो मैंने कहा, “देखो न.. मैंने कहा था न की साँवली लड़कियाँ सहवास में बहुत तेज़ होती हैं... और... गोरी लड़कियों को सिखाना पड़ता है! याद है?”

प्रिया को पहले कुछ समझ नहीं आया, लेकिन फिर मेरा इशारा समझ कर मुस्कुरा दी। उसके गाल सेब के जैसे लाल हो गए।

सहवास की निवृत्ति के बाद हम दोनों ने जल्दी जल्दी अपनी सफाई करी और फिर कपड़े बदल कर अपनी साइकिल उठा कर द्वीप के पश्चिम दिशा की तरफ चल दिए.. जिससे सूर्यास्त के दर्शन हो सकें। प्रिया ने मुझे बताया था की सूर्यास्त ऐसा सुन्दर हो सकता है, उसको मालूम ही नहीं था। पहाड़ों पर क्या सूर्योदय और क्या सूर्यास्त! सब एक जैसा ही दिखता है। हम दोनों जल्दी ही एक साफ़ सुथरे निर्जन बीच पर पहुँच गए.. ऐसा कोई निर्जन भी नहीं था.. कोई पांच छः जोड़े वही बैठे हुए थे, सूर्यास्त के इंतज़ार में।

प्रिया और मैं बाहों में बाहें डाल कर सुनहरी रेत वाले इस बीच के एक तरफ बैठ गए।

“जानू, मैं आपसे एक बात कहूं?”

“हाँ.. पूछो मत, बस कह डालो” मैंने रोमांटिक अंदाज़ में कहा।

“मैं आपके साथ ही रहना चाहती हूँ.... हनीमून के बाद भी।“

“हयं! तो और कहाँ रहने वाली थी? अरे भई, हम लोग हस्बैंड-वाइफ हैं.. साथ ही तो रहेंगे?”

“नहीं वो बात नहीं... एक्जाम्स के लिए पढना भी तो है। इतने दिनों से कॉलेज नहीं गई हूँ.. और जो भी कुछ पढ़ा लिखा था, वो सब गायब है! हा हा!”

“हा हा! अच्छा, कब हैं एक्जाम्स?”

“मार्च – अप्रैल के महीने में ही होंगे.. लेकिन आप कुछ न कुछ कर के मुझे अपने साथ रखिए न, प्लीज!”

“अरे! यह भी कोई कहने वाली बात है? एग्जाम तो वही जा कर देने होंगे... लेकिन उसके पहले के लिए एक काम तो कर ही सकते हैं.. आपके प्रिंसिपल से पूछ के ‘होम-स्कूल’ की अनुमति ले सकते हैं.. वो अलाऊ कर दें, तो फिर बस एग्जाम देने के लिए आपको मार्च में वापस जाना होगा... उतना तो ठीक है न? उसके बाद फिर से यहाँ? ओके?”

“हाँ... ठीक तो है... लेकिन हो जाएगा न?”

“अरे क्यों नहीं? मुझसे ज्यादा पढ़े लिखे लोग हैं क्या वहां? मैं कन्विंस कर लूँगा आपके प्रिंसिपल को! और जहाँ तक पढाई की बात है, हमारे पड़ोसी बहुत ही क्वालिफाइड हैं.. उनसे कह कर दिन में आपकी पढाई का इंतज़ाम कर दूंगा... कुछ कोर्स तो मैं ही पढ़ा सकता हूँ.. मुझे नहीं लगता कोई प्रॉब्लम होगी। क्या पता आप टापर हो जाएँ! हा हा!”

प्रिया मुस्कुराई।

“वैसे आप आगे क्या करना चाहती हैं? मेरा मतलब कैरियर के बारे में कुछ सोचा है? आप कह रही थी न.. हमारी सुहागरात को, की आप कुछ करना चाहती हैं.. कुछ बनना चाहती हैं?”

“करना तो चाहती हू, लेकिन क्या करूंगी.. कुछ मालूम नहीं..!”

“अच्छा, मैं आपसे कुछ सवाल पूछूंगा... आप सोच कर उसमें जो पसंद है बताइयेगा.. ओके?”

“ओके..”

“खूब पैसे चाहिए, की रुतबा?”

“उम्म्म...” प्रिया ने कुछ देर तक सोचा और फिर कहा, “..आप!”

मैं मुस्कुराया, “खूब मेहनत या फिर आराम?”

“मेहनत.. लेकिन आपका साथ चाहिए।“

“ओके! नौकर, या अपना खुद का बॉस?”

“अपना खुद का..”

“नौकरी या बिजनेस...”

“नौकरी या बिजनेस...”

“पता नहीं...”

“हम्म.. मेरे मन में यह बकवास करते करते एक ख्याल आया। क्यूँ न आप अपना खुद का बिजनेस शुरू करो? साथ में ग्रेजुएशन की पढाई करते रहना? अगर दिमाग में बढ़िया आईडिया हो, तो बिजनेस ज़रूर करना चाहिए। पैसे की जो ज़रुरत होगी, वो मैं करूंगा... मेरे बहुत से दोस्त भी है, अगर वो आपके बिजनेस आईडिया से सहमत हों, तो वो भी पैसे लगा सकते हैं। बैंगलोर वैसे भी उद्यमियों का शहर है! प्रोफेशनल हेल्प मिल जाएगी। सोचना... कोई जल्दी नहीं है! ओके?”

“बाप रे! आप मुझ पर इतना भरोसा करते हैं?”

“देखो, जानू, भरोसा तो मुझे आप पर है.. लेकिन जब तक आईडिया सॉलिड नहीं होगा, मैं पैसे नहीं लगाऊँगा!” मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

“लेकिन... मुझे तो अभी तक कुछ मालूम ही नहीं! क्या करना है, क्या नहीं..”

“तो क्या हुआ.. अभी कोई जल्दी नहीं है.. अपना टाइम लीजिये.. जब समझ आयें तभी कुछ करेंगे! ओके?”

मैंने प्रिया के बालों में अपने हाथ से सहलाया.. और फिर आगे कहा, “देखो, यह बात सच है की कम उम्र में शादी करने से बहुत सी समस्याएँ खड़ी हो जाती है। लेकिन मैं आपसे आज कुछ वायदे करता हूँ। पहला तो यह की आपको अपने व्यक्तितत्व के विकास के लिए पूरा समय, और सहयोग दूंगा। आपको जो भी कुछ करना है, जो भी कुछ बनना है, उसमें मैं पूरी मदद करूंगा। आप पर किसी भी तरह की पारिवारिक जिम्मे*दारी तब तक नहीं

आने दूंगा, जब तक आप उसके लिए पूरी तरह से तैयार न हों – मतलब पढाई लिखाई पूरी करनी होगी, और उसके बाद आपका अगर मन हो तो आप अपना पूरा ध्यान कैरियर पर लगाइए। और बच्चा तभी जब आप तैयार हों।"

अब तक आसमान में जीवंत और चटक गुलाबी, लाल, नारंगी और पीले रंगों की छटा छा गई। सूरज का लाल गोला धीरे धीरे बादलों के पीछे से नीचे आ रहा था।

प्रिया ने मेरी तरफ उचक कर मेरे होंठों को चूम लिया।

"थैंक यू!" उसने कहा।

मैंने उसकी आँखों में देखा और फिर मुस्कुराते हुए कहा, "नो! थैंक यू!"

मैंने उसकी आँखों में ध्यान से देखा – आंसू से प्रिया की आँखें डबडबा गईं थीं। प्रिया कोशिश कर रही थी की आंसू न निकालें, लेकिन फिर भी एक-एक बूँद आँखों से निकल कर उसके गालों पर ढलक ही गई। मैंने बिना कुछ कहे प्रिया का हाथ थाम लिया... निशब्द भाषा में बस यह कहने के लिए की मैं उसके साथ हूँ... जीवन की कड़वी सच्चाईयाँ अभी दूर थीं... जो इस समय हमारे पास था वह था हम दोनों का साथ और यह सुन्दर सूर्यास्त!

"आई लव यू!" कहते हुए प्रिया का गला भर आया। उसने बड़े प्रयत्न से अपना गला साफ़ किया और स्वयं पर नियंत्रण किया।

"पता है आप मेरे कौन है?" भावुक माहौल था.. नहीं तो किसी न किसी तरह की चुहलबाजी ज़रूर करता।

"आप मेरे कृष्ण है! मेरे सम्पूर्ण पुरुष! जब ज़रुरत हुई तब प्रेमी, जब ज़रुरत हुई तब सारथी, और जब ज़रुरत हुई तब सखा! मैंने सच में कोई बहुत पुण्य के काम किए होंगे, जिसके कारण मुझे आप मिले।"

"बाप रे!"

"सच में!"

“आई लव यू!”

“आई लव यू टू!!”

मैंने प्रिया को अपनी बाहों के घेरे में कस कर दुबका लिया – जैसे मेरा आलिंगन उसके लिए सबसे सुरक्षित स्थान बन जाय.. हम दोनों वैसे ही काफी देर तक सूर्यास्त का अद्भुत् नज़ारा देखते रहे। सूरज ढलने के साथ साथ ही धीरे धीरे सांझ का धुंधलका बढ़ने लगा, और उसके साथ ही आसमान में गहरे लाल, काले नीले इत्यादि रंग उभरने लगे। कई लोग अब जाने की तैयारी कर रहे थे और जो लोग रुके हुए थे, उनकी भी बस पार्श्व आकृति ही दिख रही थी।

“अभी कैसी हो जानू?” मैंने पूछा।

“मैं ठीक हूँ!”

“घर बात करना है?”

“मेरा घर तो आप हैं!”

“ओहो! मेरा मतलब माँ से? या अश्विनी से? ... बात करनी है वहाँ? वहां कॉल किए दो दिन हो गए शायद?”

“हाँ! मुझे तो ध्यान ही नहीं रहा! आपके संग तो मैं सब कुछ भूल गई हूँ!”

“अच्छी बात है... ये लो फ़ोन.. बात कर लो!”

“आप नहीं करेंगे?”

“अरे.. कॉल मैं ही लगा कर आपको दे दूंगा.. ओके?”

मैंने उत्तराँचल कॉल लगाया। चूँकि फ़ोन तो हरिहर सिंह जी के ही पास रहता है, इसलिए उनको ही उठाना था।

“हल्लो!” मैंने कहा..

“हल्लो अथर्व.. कैसे हैं आप बेटा?”

‘बेटा!’ रिश्ते में तो हम बाप-बेटा ही तो हैं!

“जी.. पापा..” मैंने हिचकिचाते हुए कहा, “हम दोनों ठीक हैं..”

“स्वास्थ्य ठीक है आप दोनों का? मौसम कैसा है वहाँ?”

“स्वास्थ्य एकदम ठीक है... मुझे लगा था की ठन्डे गरम के कारण कहीं जुकाम न हो जाय, लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। यहाँ का मौसम तो गरम ही है.. चारों ओर समुद्र से घिरा है, इसलिए बारहों मास ऐसे ही रहता है यहाँ। .. और आप कैसे हैं? माता जी कैसी हैं?”

“हम सब ठीक हैं बेटा.. आप लोगो की बहुत याद आती है। बस और क्या!”

मैं इसके उत्तर में क्या ही बोलता! “लीजिये, प्रिया से बात कर लीजिए..” कह कर मैंने प्रिया को फ़ोन थमा दिया।

लाडली बेटी का फ़ोन आते ही वहां पर सब लोग आह्लादित हो गए होंगे – मैंने सोचा।

प्रिया की नजर में :

कैसे सब कुछ इतनी जल्दी बदल जाता है! हफ्ता भर पहले ही मैं माँ पापा को छोड़ कर कहीं जाने की सोच भी नहीं सकती थी.. और आज का दिन यह है की उनकी याद भी नहीं आई! क्या जादू है! सहेलियों की बातों, कहानियों और फिल्मों में देखा सुना तो था की प्यार ऐसा होता है, प्यार वैसा होता है.. लेकिन, अब समझ में आया की प्यार कैसा होता है! प्यार का एहसास तो हमेशा ही नया रहता है - हमेशा ताज़ा!

पापा से कुछ देर बात करने के बाद माँ फ़ोन पर आई.. उनसे बात करनी शुरू ही की थी की 'इनका' हाथ मेरे स्तनों पर आ टिका! 'हाय' मेरे मुंह से अनायास ही निकल पड़ा। उधर से माँ ने पूछा की क्या हुआ.. अब उनको क्या बताती? मैं जैसे तैसे उनसे बात करने की कोशिश कर रही थी, और उधर मेरे पतिदेव मेरे स्तनों से खेल रहे थे – वो बड़े इत्मीनान से मेरे स्तन दबा और धीरे धीरे सहला रहे थे। चाहे कुछ भी हो, ऐसा करने से स्त्रियों के चूचक कड़े होने ही लगते हैं। मेरे भी होने लगे। शरीर में जानी पहचानी गुदगुदी होने लगी। मैं अन्यमनस्क सी होकर बाते कर रही थी, लेकिन सारा ध्यान उनके इस खेल पर ही लगा हुआ था। वे कभी मुझे चूमते, तो कभी मेरे बालों को सहलाते, तो मेरे स्तनों से खेलते! अंततः उनका हाथ मेरी पैंट के अन्दर और उनकी उंगली मेरी योनि की दरार पहुँच गई। उनके टटोलने से मैं बेबस होने लग गई.. माँ क्या कह रही थी और फिर कब अश्विनी फ़ोन पर आ गई, मुझे कुछ याद नहीं! मदहोशी छाने लगी। सच में मैं अथर्व की दासी हूँ.. अगर वो उस समय मुझे नग्न होने को कहते तो मैं तुरंत हो जाती... बिना यह सोचे की वहां पर और लोग भी उपस्थित थे। इतना तो तय है की मैं उनकी किसी बात का विरोध कर ही नहीं सकती!

खैर, ऐसा कुछ नहीं हुआ.. अश्विनी ने अपने जीजू से बात करने को कहा तो मैंने फ़ोन इनको दे दिया।

"मेरी एंजेल कैसी है?" इन्होने प्रेम और वात्सल्य भरी बात कही.. एक बात तो है, ये जो कहते हैं, उनकी आँखे भी वही कहती हैं। न कोई लाग लपेट, और न कोई फरेब! सच्चा इन्सान!

उधर से अश्विनी ने कुछ बात कही होगी, तो ये मुस्कुरा रहे थे.. बहुत देर तक मुस्कुरा कर सुनने के बाद इन्होने कहा, "अरे तो फिर हमारे पास आ जाओ! दो से भले तीन! है न?"

फिर उधर से अश्विनी ने कुछ कहा होगा, जिसके उत्तर में इन्होने ‘आई लव यू टू’ कहा, और बाय कर के फ़ोन काट दिया।

“क्या बाते हो रही थीं जीजा साली में? रोमांटिक रोमांटिक... ईलू ईलू वाली!” मैंने ठिठोली करी।

“हा हा हा! अरे जो भी हो रही हो... आपको इससे क्या? हमारी आपस की बात है! हा हा!” फिर कुछ देर रुक कर, “.. जानू, क्यों न एग्जाम के बाद वहां से सभी लोग यहीं बैंगलोर में रहें? अश्विनी की पढाई भी अच्छी जगह हो जायेगी.. और माँ पापा भी आराम से रह लेंगे! क्या कहती हो?”

“आप को लगता है की माँ पापा आयेंगे यहाँ?”

“क्यों! क्या प्रॉब्लम है?”

“वो लोग बहुत पुराने खयालो वाले हैं, जानू! बेटी के घर का पानी भी नहीं पीते!”

“हंय! इसका मतलब वो लोग यहाँ आयेंगे तो कहीं और से पानी लाना पड़ेगा?”

“आप भी हमेशा मजाक करते रहते हैं! आप ट्राई कर लीजिए.. आ जाते हैं तो इससे अच्छा क्या?” मैंने कहा, और आगे जोड़ा, “... और अभी आप क्या कर रहे थे, बदमाश! माँ और अश्विनी ने क्या कहा, कुछ याद नहीं!”

१४

बीच से मैंने सीधा मेडिकल शॉप का रुख लिया। प्रिया के पूछने पर उसको बताया की उसके लिए सेनेटरी नैपकिन लेने जा रहे हैं। मुझे यह जान कर घोर आश्चर्य हुआ की उसको नैपकिन के बारे में हाँलाकि मालूम तो था, लेकिन उसका प्रयोग प्रिया ने कभी नहीं किया था। कुछ देर तक उससे प्रश्नोत्तर करने के बाद सब कुछ समझ में आ गया। एक तो छोटा सा क़स्बा, और उसमें निम्न मध्यम वर्गीय और रूढ़िवादी परिवार! पुराने रूढ़िवादी विचार, रीति-रिवाज और अंध-विश्वासों को मानने के कारण उसकी माँ ने भी प्रिया को वही सब सिखाया था।

बाद में और पढने पर मुझे समझ आया की यह हालत खली एक प्रिया की ही नहीं है... देश की कम से कम सत्तर प्रतिशत लड़कियाँ, और महिलाएं सेनेटरी पैड का इस्तेमाल नहीं करती हैं – या तो खर्च वहन नहीं कर सकने के कारण, और या तो अपने रूढ़िवादी विचारों के कारण! हालत यह है की भारत की अनगिनत महिलाएं और लड़कियाँ आज भी पीरियड के दौरान गंदे कप़ड़े का उपयोग करती हैं, जिसके कारण वे संक्रमण की चपेट में आ जाती हैं। ग्रामीण इलाकों में महिलाओं में सर्वाइकल कैंसर की एक बहुत ब़ड़ी वजह यौनांग की साफ-सफाई न होना है।

जहाँ तक प्रिया का प्रश्न है, पीरियड्स के दौरान उसके और अश्विनी के साथ अछूतों जैसा व्यवहार किया जाता है। दोनों लडकियां पूजाघर और रसोई से दूर रहती हैं। रक्त-स्त्राव रोकने के लिए रद्दी कप़ड़ों का इस्तेमाल करती हैं, जिससे संक्रमण की आशंका बढ़ जाती है। इस कारण से हर महीने तीन चार दिन पढने भी नहीं जा पाती। ऐसा नहीं है की प्रिया के परिवार वाले उसके लिए सेनेटरी पैड खरीद नहीं सकते थे – सस्ते उत्पाद तो मौजूद ही हैं। लेकिन पुरानी परम्पराओं को जैसे का तैसा निभाना, और यह सोचना की दूकान पर जाकर पैड खरीदने से परिवार की प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा.. यह दोनों सबसे बड़े कारण बने – न खरीदने के।

खैर, यहाँ पर जब हम मेडिकल शॉप पहुंचे, तो दुकानदार ने नैपकिन के पैकेट को अखबार में लपेटकर, काली पोलीथिन बैग में डाल कर दिया.. जैसे वह मुझे दारू बेच रहा हो! सच में! देश की महिलाओं को क्या कुछ सहना पड़ता है! दुकानदार से क्या बहस करता? बस, सामान लेकर वापस रिसोर्ट आ गए।

वापस आकर देखा तो रिसेप्शन पर सुजेन और आना खड़े थे... वहां पर उनसे कुछ देर बात चीत की। सुजेन ने मुझे आँख के इशारे से कुछ न कहने को कहा था, इसलिए मैंने किसी भी तरह से आना को यह अहसास नहीं होने दिया की सुजेन और हमारे बीच में कुछ भी हुआ था। वैसे भी यह कोई ऐसी बात नहीं थी जिसको मैं याद रखना चाहता।

रात में ऐसा कुछ उल्लेखनीय नहीं घटा। बस खाया पिया, और आराम से सो गए।

सवेरे उठा, तो अपने ऊपर एक अतिरिक्त भार महसूस हुआ। आँखें खुलीं तो देखा की प्रिया मुझसे पूरी तरह चिपकी सो रही थी – करवट के कारण उसका बायाँ पाँव मेरे जांघों के ऊपर आराम कर रहा था। मैंने उस पर प्यार से हाथ फिराया तो समझ आया की वह पूर्ण-रूप से निर्वस्त्र है।

मैं मुस्कुराया, 'बढ़िया!'

और उसको अपने आलिंगन में समेट कर उसके माथे पर जोरदार चुम्बन दिया। मेरी इस हरकत से उसकी नींद भी खुल गई। मैंने अपनी घड़ी में देखा.. सवेरे के सात बज रहे थे।

"उठो जानू! आज का प्रोग्राम क्या है?" मैंने प्रिया के दोनों नितम्बों के बीच में अपना हाथ फिराते हुए पूछा। पांव मेरे ऊपर इस प्रकार रखने के कारण उसका योनि द्वार थोड़ा खुल गया था, इसलिए मेरी तर्जनी उंगली अनायास ही उसके योनि के अन्दर दो-तीन मिलीमीटर चली गई।

"उई अम्मा!" प्रिया चिहुंक गई, "धत्त! आप भी न.. जब देखो तब इसी में घुसना चाहते हैं.." अपनी उनींदी आवाज़ में प्रिया ने कहा।

"जानेमन, जब इसके जैसी नरमी, इसके जैसी गरमी और इसके जैसा स्वाद मिले, तो मैं कहीं और क्यों घुसूँ? यहीं न घुसूँ?" (मैंने 'आपकी पारखी नज़र और निरमा सुपर' वाले प्रचार की तर्ज पर अपना जुमला ठोंक दिया।)

"धत्त...!" वह शर्मा कर मेरे सीने में छुप गई।

“मेरी जान, मेरी ऐसी हरकतों में मेरी कोई गलती नहीं। तुम्हारी योनि वाकई बहुत खूबसूरत है!” मैंने सफाई पेश करी। उसने कोई उत्तर नहीं दिया... बस मेरे सीने में सर छुपा कर हंसने लगी।

“अच्छा, एक बात बताइए... आपको शेविंग करनी आती है?” मैंने पूछा।

“शेविंग करना? नहीं.... क्यों? मुझे क्या ज़रुरत है, शेविंग करने की? मुझे दाढ़ी थोड़े न आती है!”

“दाढ़ी नहीं... ये तो आती है न?” कह कर मैंने उसके योनि पर उगे बालों को उंगली से पकड़ कर खींचा – ऐसे नहीं की प्रिया को दर्द हो, बस इतना जिससे प्रिया को उनका एहसास हो जाय।

“हाय राम! इसकी शेविंग?”

“हाँ! और क्या? आपको अच्छे लगते है क्या ये बाल?”

“नहीं, ऐसे कोई अच्छे तो नहीं लगते!”

“तो फिर इनको साफ़ क्यों नहीं करती?”

“मैं कैसे साफ़ करूँ?”

“अरे! रेज़र से.. या फिर कैंची से!”

“बाप रे!”

“बाप रे?”

“और क्या? कहीं कट गया तो?”

“हम्म... तो ठीक है... चलो, मैं ही काट देता हूँ। क्या कहती हो?” मैं हंसने लगा।

“नहीं जी, रहने दीजिये! जैसा है, उसी से काम चलाइए!” प्रिया ने मुझे चिढ़ाते हुए कहा।

“जानू, प्लीज! मैं इनको साफ़ कर देता हूँ। मैं शेविंग करने में एक्सपर्ट हूँ। साफ़ हो जायेगी तो फिर आप ही बोलोगी, की कितनी ख़ूबसूरत योनि है मेरी!”

“धत्त! न बाबा! मुझे शर्म आती है!”

“अरे भाड़ में गई शर्म! तो फिर तय रहा... नाश्ते के बाद आज मैं तुमको नहलाता हूँ... ओके? ठीक से! चलो उठो... जल्दी से नाश्ता करने चलते हैं...” कह कर मैं बिस्तर से उठा, और प्रिया को भी उठाया। मैंने उठ कर कमरे की खिड़कियाँ खोल दीं और वातानुकूलन बंद कर दिया। आज भी मौसम अच्छा था – बढ़िया हवा चल रही थी। परदे खींच दिए, जिससे कोई कमरे के अन्दर यूँ ही आनायास न देख सके...

फ्रेश हो कर और ब्रश करने के बाद नाश्ता समाप्त किया और जल्दी से अपने कमरे में चले आए।

मैंने अपने बैग से शेविंग किट निकाली – रिसेप्शन वाले दिन से मैंने अब तक शेविंग नहीं बनाई थी, इसलिए चेहरे पर कड़े बाल की ठूंठ निकल आई थी। मैंने जल्दी से अपनी शेविंग ख़तम करी – वैसे भी मुझे अपनी दाढ़ी बनाना बहुत ही ऊबाऊ काम लगता है। समय की बर्बादी! फिर रेजर में नए ब्लेड-कार्टरिज लगा कर प्रिया को पुकारा,

“आओ.. मैंने तुमको नहलाता हूँ।“

प्रिया ने सर हामी में हिलाया, और पहनने के लिए कपड़े तह कर के बाथरूम के अन्दर आई।

“ये क्या? नहाने के बाद कपड़े पहनने का इरादा है क्या?”

“क्यूँ जी? नहलाने के बाद बच्ची को नंगी रखने का इरादा है क्या आपका?”

‘‘जानेमन शेविंग और नहाने के बाद ऐसी चिकनी हो जाओगी, तो खुद ब खुद नंगी होने का मन करेगा।‘‘ मेरी बात सुन कर प्रिया का चेहरा शर्म से सुर्ख लाल हो गया।

प्रिया की नजर में :

जघन क्षेत्र की शेविंग जैसा तो मैंने अपने पूरे जीवन में कभी नहीं सुना। ये भी न जाने क्या क्या आईडिया लाते हैं... नित नए प्रयोग, नित नए अनुभव! बाप रे! क्या दिमाग है इनके पास!

बाथरूम में वैसे कोई स्टूल या कुर्सी तो थी नहीं, इसलिए मैं खुद ही टॉयलेट के कमोड की सीट पर कवर रख कर के उसी पर बैठ गई। कपड़े उतारने का काम मेरे श्रीमान ने ही कर दिया। इस समय मैं नितांत नग्न थी, और मन ही मन सोच रही थी की कैसा अनुभव होगा! न जाने कैसे दिल में हमारे प्रथम मिलन के पहले होने वाला अनजान भय घर कर गया। फिर मैंने सोचा की ये हैं, तो फिर क्या डर? मैंने अपने पांव यथा-संभव खोल दिए, जिससे इनको मेरी योनि के सारे हिस्से में अभिगमन करने में आसानी हो। उन्होंने मुझको ऐसे ही बैठे रहने को कहा, और फिर अपनी शेविंग क्रीम और ब्रश की सहायता से मेरी योनि पर देर तक ढेर सारा झाग बनाया। उन्होंने समझाया की वह इसलिए ऐसा कर रहे हैं जिससे मेरे बाल पूरी तरह से मुलायम हो जाएँ। वो सब तो ठीक है, लेकिन समस्या यह थी की इनके शेविंग ब्रश की मेरी योनि पर मीठी मीठी रगड़ाई और ठन्डे ठन्डे पानी के स्पर्श से मेरा मन बेबस हुआ जा रहा था। 'बैजर हेयर' हाँ... शायद यही बताया था... किसी जानवर के बाल से बना हुआ था ब्रश! मुलायम! अनजाने ही मेरी टाँगे और खुलती चली गईं...

"वेल," उन्होंने मेरी उत्तेजना ज़रूर कह्सूस करी होगी.. लेकिन फिर भी बिना किसी भाव के कहा, "थैंक यू! इससे शेव करने में ज्यादा आसानी होगी!"

फिर उन्होंने रेजर की मदद से सावधानीपूर्वक धीरे धीरे मेरी योनि पर से बाल की परत हटाने का उपक्रम आरम्भ किया। कभी वे त्वचा को इधर खींचते तो कभी उधर, कभी फैलाते, तो कभी दबाते, तो कभी योनि के दोनों होंठों को उँगलियों से फैलाते। उनके लिए यह शायद सिर्फ शेविंग करना हो, लेकिन उत्तेजना के मारे मेरी हालत खराब हुई जा रही थी। बहुत ज्यादा बाल नहीं थे, इसलिए कोई पांच मिनट के बाद उन्होंने अपना काम समाप्त कर दिया... कमरे की हवा का स्पर्श मेरी योनि ठंडा ठंडा महसूस हो रहा था, इसलिए मुझे समझ आया की मेरी योनि पूरी तरह बाल-विहीन हो गई है। लेकिन उन्होंने मुझे इसको देखने से मना कर दिया – कहने लगे की जब मैं कहूं, तभी देखना। ठीक है! इंतज़ार और सही!

उन्होंने काम होने के बाद एक छोटे तौलिये से मेरी योनि पोंछी और कहा, “अरे वाह जानेमन! हाय! मैं मर जावां!”

इनकी इस निर्लज्ज उद्घोषणा से मैं बहुत शर्मा गई... लेकिन फिर भी उत्सुकतावश मैंने नीचे देखने की कोशिश करी। लेकिन उन्होंने फिर से मना कर दिया और कहा की अब मैं तुमको नहलाऊँगा। उन्होंने मेरी कलाई पकड़ कर मुझे कमोड से उठाया और फिर बाथरूम के नहाने वाले स्थान पर ले गए। उन्होंने पानी का फौव्वरा चलाया और खुद भी निर्वस्त्र होकर मेरे साथ शामिल हो गए। हम नहाने के लिए रिसोर्ट के साबुन का प्रयोग नहीं कर रहे थे – ये ही न जाने कौन सा बेहद सुगन्धित साबुन लाये थे।

खैर, अथर्व ने बड़े इत्मीनान से मेरे पूरे शरीर पर साबुन रगड़ा – ख़ास तौर पर मेरे बगल में, मेरे स्तनों पर और मेरी योनि और नितम्बों के बीच के हिस्से पर!

“ज़रा अपने पैर खोल कर सीधी खड़ी हो जाना तो.. तुम्हारी योनि और नितंब की सफाई कर देता हूँ।“ मुझे उनकी गन्दी भाषा सुन के बुरा तो लगता है, लेकिन एक तरह की उत्तेजना भी आती है। अब इस विरोधाभास की व्याख्या कैसे करूँ, समझ नहीं आता।खैर, उनके आदेश का पालन करते हुए मैं अपनी टाँगे खोल कर सीधी खड़ी हो गई.. और उनकी उंगलियाँ निर्बाध रूप से मेरी योनि, उसके भीतर और मेरी गुदा के भीतर सफाई के बहाने सेंध लगाने लगीं।

“आह! क्या कर रहे हैं..!?”

“चुप!” उन्होंने मीठी झिड़की लगाई।

इस क्रिया के दौरान उनका खुद का लिंग खड़ा हो गया.. मैंने हाथ बढ़ा कर उसको पकड़ने की कोशिश करी।

“नहीं.. अभी नहीं..” कह कर उन्होंने मुझे रोक दिया।

उन्होंने खुद पर भी साबुन लगाया और फिर हम दोनों साथ में फौव्वारे के नीचे नहाने लगे। उसमे ज्यादा समय नहीं लगा। उन्होंने एक बड़ी तौलिया उठाई और पहले मेरा और फिर

अपना शरीर पोंछ कर मुझे वापस बेडरूम में ले आये, और मुझे बड़े शीशे के सामने खड़ा कर बोले,

“अब देखो..!”

शीशे के सामने खड़े हुए मैं अपने को निहारती हूँ - मेरा स्वयं का अनावृत्त शरीर! एक पल को मैं खुद को पहचान ही नहीं पाती हूँ... कब देखा है मैंने खुद को इस तरह? इतने इत्मीनान से? न तो एकांत मिलता है और न ही इस प्रकार के संसाधन! ऐसा लगा की आईने में दिखने वाली लड़की मैं नहीं हूँ। यह एक कमसिन और बाल-रहित योनि वाली लड़की थी - जैसे कोई छोटी बच्ची!

हे भगवान्! मेरी योनि के होंठों के सिलवटें साफ़ साफ़ दिख रही थीं। ऐसे तो मैंने इनको कभी नहीं देखा था। ऐसे लग रहा था की जैसे उनकी नुमाइश लगा दी गई हो। बाप रे! अपने आपको इतनी नंगी मैंने कभी नहीं महसूस किया। मैंने शर्मा कर अपनी योनि को अपने हाथों से छुपा लिया और कहा, “मुझे बहुत शरम आ रही है।“

युवा वक्ष, छोटे कंधे, गोलाकार नितंब, और केशों से टपकती पानी की बूंदें...! मैं खुद पर मुग्ध हुई जाती हूँ... खुद के शरीर पर! इतनी खूबसूरत हूँ क्या मैं... सचमुच? क्या सचमुच अथर्व रोज़ निर्बाध इसी सौन्दर्य का पान करते हैं? मैंने कनखियों से उनकी तरफ देखा... उनकी आंखों में मेरे लिए कामना थी - उद्दीप्त कामना! एक चाहत थी - उद्दाम चाहत...!

“मज़ा आया, जानेमन?”

उत्तर में मैं सिर्फ मुस्कुराई...

“अब बताओ... इस बच्ची को नंगा नहीं, तो फिर कैसे रखा जाए?” उनकी आवाज़ एक परिचित रूप से कर्कश हो गई थी... इस कर्कशता की मैं पहचानती हूँ.. वो खुद भी उत्तेजित थे – मुझमें आसक्त!

“आओ इधर और बिस्तर पर लेट जाओ।“ उन्होंने अगला आदेश दिया।

मैं बिस्तर की तरफ जाते हुए देखती हूँ की अथर्व अपने बैग से किसी प्रकार की बोतल निकाल रहे थे। मैं लेट जाती हूँ और वे मेरे पास आकर कहते हैं, "तुम्हारी स्किन ड्राई हो गई होगी। मैं क्रीम लगा देता हूँ.. अच्छा लगेगा!"

मैं मूर्खों के जैसे पूछती हूँ, "आप मेरे पूरे बदन पर क्रीम लगायेंगे?"

"बस देखती जाओ..."

अथर्व मेरे सर के नीचे दूसरी सूखी तौलिया रख देते हैं, जिससे बिस्तर गीला न हो और फिर अपनी हथेली में ढेर सारी क्रीम लेकर मेरे स्तनों, हाथों और पेट पर धीरे धीरे रगड़ देते हैं। अगला राउंड मेरी जांघों और पैरों का था। फिर उन्होंने मेरी योनि को निशाना बनाया – क्रीम लगते ही हलकी सी चुनचुनाहट हुई। शायद शेविंग करने में कहीं कुछ कट गया होगा। मेरी सिसकियाँ निकल गई, लेकिन मैं उनको रोका नहीं।

उन्होंने तीन चार मिनट तक अपनी उँगलियों से मेरी योनि पर अच्छी तरह से क्रीम लगाया.. इतनी अच्छी तरह की मैं उसी बीच एक बार परम सुख भी पा गई। उन्होंने मुझे कुछ देर सुस्ताने दिया और फिर कहा,

"अभी पेट के बल लेट जाओ.."

मैं उनकी आज्ञापालन करते हुए पलट गई। उन्होंने पहले पीठ पर क्रीम लगाई और फिर पैर और जाँघों के पिछले हिस्से पर लगाई। माँ के बाद मुझे इतने अन्तरंग तरह से शायद ही किसी ने मालिश की हो... और मुझे वो तो याद भी नहीं! शरीर भर में सिहरन दौड़ गई। उसके बाद उन्होंने एक तकिया उठाकर मेरे जघन क्षेत्र के नीचे लगा दी। इससे यह हुआ की मेरे नितंब काफी उठ से गए।

'क्या करने वाले हैं ये?' मैंने सोचा।

"जानू, मेंढ़क के जैसे हो जाओ.."

मुझे समझ नहीं आया..., "मतलब? कैसे?"

अथर्व ने पीछे से ही मेरे पैर ऊपर की तरफ उठा दिए, इस प्रकार जैसे मेरे घुटने मेरे पेट के बराबर हो जाएँ, और हाथ को मेरे सर (मस्तक) के नीचे रख दिया। बहुत बेढब सी अवस्था थी... घुटने पेट के बराबर, पैर फैले हुए – मेरी योनि और ... गुदा दोनों ने खुल कर निर्लज्ज प्रदर्शनी लगा रखी थी इस समय।

"आप क्या करने वाले हो?" मैं बच्चे जैसे रिरियाई।

"श्श्श्हह्ह... कुछ देर शांत रहो.. अगर मज़ा न आए, तब कहना। ओके?"

मज़ा क्या आएगा? मुझे तो कुछ समझ ही नहीं आ रहा है। एक तो जिस तरह से अथर्व ने रोज़ रोज़ मेरे अंग-प्रत्यंग की जाँच करी है, और जिस तरह का परिचय उनका मेरे गुप्तांगों से है, वैसा तो मुझे भी नहीं है। उन पर विश्वास करने के अतिरिक्त मेरे पास कोई चारा नहीं था। उनके ही निर्देशों पर मैंने अपनी टाँगे और चौड़ी खोल दीं...

'क्या देखना चाहते हैं ये? भला 'वो' भी कोई देखने की चीज़ है?!'

अथर्व इस समय मेरे नितम्बों पर क्रीम लगा रहे थे.. कभी हथेली से, तो कभी उंगली से। मुझे कुछ कुछ संशय हो रहा था, उनके इरादों पर। लेकिन फिर भी मैंने सोचा की साथ देती हूँ, जब तक हो पाता है तब तक! जल्दी ही उनकी क्रीम से भरी उंगली मेरी गुदा-द्वार पर फिरने लगी और फिर अन्दर जाने लगी। हर बार जैसे ही उंगली अन्दर आती, स्वप्रतिक्रिया में मेरी गुदा का द्वार बंद हो जाता।

'मेरी गुदा को भी भंग करना चाहते हैं क्या?' मेरे दिमाग में एक विचार कौंधा।

"क्या करना चाहते हो?" मैंने याचना भरी आवाज़ में कहा, और साथ ही साथ पीछे की तरफ मुड़ी। उनका तना हुआ प्रबल लिंग इस तरह से उठा हुआ था की मानो मेरी गुदा को ही देख रहा हो।

"जानू, थोड़ा वेट तो करो!"

उन्होंने कुछ और क्रीम उंगली पर लेकर मेरी गुदा में प्रविष्ट कराया और देर तक भीतर ही चलाते रहे। कुछ देर में मुझे गुदा पर अभूतपूर्व फैलाव महसूस हुआ... तुरंत समझ में आ

गया की इस बार उंगली नहीं, उनका लिंग अन्दर जाने की कोशिश कर रहा है!

“न न नहीं..! प्लीज! वहां पर नहीं! प्लीज! मैं मर जाऊंगी!”

“जानू! एक बार ट्राई तो करते हैं?”

“नहीं! आगे से आपका मन भर गया क्या, जो आप पीछे डालना चाहते हैं? प्लीज प्लीज! मैं आपकी हर बात मानूंगी, लेकिन ये नहीं! मैं मर जाऊंगी सच में! आप उंगली ही डाल रहे हैं और उसी में मेरी जान निकल रही है।“ मैं बुरी तरह गिड़गिड़ा रही थी। इनका जो भी प्लान था, मैं उसमे भाग नहीं लेना चाहती थी।

“अच्छा ठीक है... ठीक है! मैं कुछ नहीं करूंगा! भरोसा रखो। सॉरी! तुमको दर्द देकर मुझे कोई मज़ा थोड़े ही मिलेगा!” उन्होंने मेरे नितंब सहलाते हुए भरोसा दिलाया। लेकिन मन में डर बैठ गया...

इतना सब होते हुए भी मैंने जो मेंढकी वाला आसन लगाया था, वह अभी तक लगा हुआ था। अथर्व मेरे पीछे आकर मुझ्ह्से चिपक गए और पीछे से ही मेरे स्तनों को पकड़ कर भींचने लगे। साथ ही साथ वह अपने कमर को कुछ इस तरह से चक्कर में घुमा रहे थे जिससे उनके लिंग का अग्रिम भाग मेरी योनि और कभी कभी गुदा पर छू जाता। जैसे ही मेरी योनि को उनका लिंग छूता, मेरा मन होता की एक झटके से उनके लिंग को अन्दर ले लूं.. लेकिन स्त्रियोचित संकोच और लज्जा मुझे रोक लेती। इसी पूर्वानुमान में मेरी योनि से रस निकलने लगा।

उन्होंने बहुत देर तक मुझे ऐसे ही सताया... और इस पूरे घटनाक्रम में मैं सोच रही थी और उम्मीद लगाए बैठी थी की कभी तो इनका धैर्य छूटेगा, और कभी तो वो मेरे अन्दर प्रविष्ट होंगे। यही सब सोचते हुए मैंने इतने में ही एक बार और चरमोत्कर्ष प्राप्त कर लिया।

‘क्या स्टैमिना है इनमें! लगता है एक जबरदस्त सहवास होने वाला है! एक तगड़ी ठुकाई..!’ मन में कैसे कामुक विचार! अजीब सी मस्ती छाने लगी... इस समय मेरा अंग-अंग थरथरा रहा था, घुटनों में सम्हलने की ताकत ही नहीं बची थी.. इन्होने पीछे से मुझको थाम रखा था, इसलिए मैं अभी भी उसी अवस्था में टिकी थी.. नहीं तो अब तक गिर चुकी होती।

उनको मेरे चरमोत्कर्ष का पता अवश्य चला होगा, क्योंकि अब वो मेरी योनी को चाट रहे थे। उत्तेजना के वशीभूत होकर मैं अपने नितम्ब जोर जोर से हिलाने लगी। मेरी हालत बहुत बुरी थी। एकदम छंछा जैसी हरकतें! इस समय अथर्व मेरी योनि के भगोष्ठों को खोलकर जीभ से अन्दर तक कुरेद और चाट रहे थे। न चाहते हुए भी मेरे गले से कामुक सिस्कारियां छूट गईं। उधर उन्होंने चूसना जारी रखा। कुछ ही देर में मैं दूसरी बार चरम आनंद को प्राप्त कर कांपने, और आहें भरने लगी। मेरे होशो-हवास सब गायब हो गए - उनका इस तरह चाटना मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। इस बार अथर्व ने मुझे छोड़ दिया, तो मैं निढाल होकर बिस्तर पर गिर गई – इतनी भी ताकत नहीं बची की ठीक से लेट जाऊं.. बस उसी अवस्था में लेटी रही।

मैंने देखा की अथर्व बैग में से कुछ और भी निकाल रहे थे... कोई शीशी! वापस आकर उन्होंने मुझे बिस्तर पर चित्त लेटा दिया और मेरी जांघे थोड़ा और फैला दीं। मैं तो निढाल पड़ी थी, उन्ही के रहमो करम पर! ऐसे नीचे से देखने पर अथर्व का तना हुआ लिंग दिख पड़ रहा था। ऐसा भयावह वह पहले दीं भी नहीं दिखा। निःसंदेह उसकी लम्बाई और मोटाई कुछ ज्यादा ही लग रही थी। उसकी नसें भी फूल कर मोटी हो रही थी, और उसका आगे का चमकदार गुलाबी भाग भी दिख रहा था। अपनी ताकत बटोर कर मैंने उस माँसल अस्त्र को पकड़ लिया। इतना गर्म! बहुत अद्भुत सी बात थी – नहाने के बाद संभवतः कमरे के वातानुकूलन के कारण उनके वृषण सिकुड़ कर उनके जघन क्षेत्र के काफी अन्दर छुप गए से मालूम हो रहे थे, लेकिन लिंग की अलग ही बात थी! इतना गर्म, और सामान्य उत्तेजना से भी अधिक उत्तेजित!

उन्होंने मुझे कुछ देर अपना लिंग पकड़ने दिया और फिर अलग होकर अपने काम के अगले हिस्से को अंजाम देने लगे। शीशी खोलकर उन्होंने मेरी योनी पर उड़ेल दिया।

“क्या ... है.. यह?” मैंने टूटी फूटी कामुक आवाज़ में पूछा!

“हनी... यह हनी है!”

एक और प्रयोग! योनि एक स्वादिष्ट भोज्य भी बनायीं जा सकती है! उन्होंने उंगली से शहद को मेरी पूरी योनी पर फैलाया और फिर जीभ की नोक से धीरे धीरे चाटने लगे।

"आहह…!" अभी अगर मैं इस समय मर भी जाऊं, तो कोई दुःख न होगा! ऐसा सुखद एहसास! "हम्*म्*म्*म*" उनका मेरी योनि का यूँ भोग लगाना मुझे पागल किए जा रहा था। मन में इच्छा जागी की वो लगातार ऐसे ही चाटते रहें। अनायास ही मैं अपनी बची खुची ताकत लगा कर अपने नितम्बो को उठा उठा कर योनि को उनके मुंह में और पहुँचाने की कोशिश कर रही थी। इसी बीच मैंने देखा की वो अपने लिंग पर भी शहद लगा रहे थे। शहद लगाने के बाद वह मेरे ऊपर उल्टा होकर लेट गए.. लेट नहीं गए... लेकिन कुछ ऐसे की उनका लिंग मेरे मुँह की तरफ रहे, और उनका मुँह मेरी योनि के ऊपर! मैंने भी बिना किसी पूर्वाग्रह के उनका लिंग अपने मुँह में भर लिया।

'स्वादिष्ट!' मैं उनके शहद से चिपुड़े लिंग पर जीभ फेर फेर कर स्वाद ले रही थी, और अथर्व मेरी योनि का!

इतना मजा जीवन में कभी नहीं आया – मानों मैं स्वर्ग की सैर कर रही हूँ! मुझे तो किसी भी चीज़ का आभास नहीं था – बस यह की योनि के रास्ते से आनंद का उन्माद मेरे पूरे शरीर में फ़ैल रहा था। तीसरी बार मेरी योनि में जबरदस्त चिंगारी पनपी – इस बार मुझे वहां से द्रव छलकता महसूस हुआ... मेरा पूरा शरीर अकड़ने लगा। मैंने दोनों हाथों को बिस्तर पर पटक रही थी, और हांफ रही थी! बेबस... लाचार! लेकिन संतुष्ट!

अथर्व खुद भी न जाने कब से मुझे भोगने को तैयार थे, लेकिन सिर्फ मेरी ख़ुशी के लिए अभी तक खुद को जब्त किए हुए थे। लेकिन अब बस! वो मेरे ऊपर से उतरकर, मेरी दोनो टांगों को चौड़ा करके, और एक तकिये को उठाकर मेरे नितम्बों के नीचे लगा कर उनके बीच में बैठ गए। अपने लिंग को उन्होंने मेरी योनि पर सटाया, और दोनों हाथों से मेरी कमर थाम कर अपने लिंग को अनादर की तरफ धकेला।

"आहहह..." अन्दर इतनी चिकनाई हो गई थी की पहले ही वार में उनका ज्यादातर लिंग मेरी योनि में समां गया। उन्होंने फिर मेरे होंठों को चूमते हुए, पहले तो धीरे धीरे, और बाद में तेज़ गति से मुझे भोगना आरम्भ कर दिया। एक के बाद एक तीव्र रति-निष्पत्ति के बाद मेरी दशा निर्जीव जैसी हो गई थी। लेकिन उनके सहवास के तरीके में कुछ ख़ास बात थी, की कुछ ही देर में मैं भी अब कुछ होश में आकर अपने नितम्बों को उन्ही की गति से, धीरे धीरे ही सही, गति मिलाने लगी। कोई तीन मिनट के बाद अचानक ही उन्होंने सहवास की गति बढ़ा दी। मुझे भी अपने अन्दर एक और लावा बनता हुआ महसूस होने लगा! घोर आश्चर्य! ये चौथा होगा.. और इनका पहला!

मुझे एक और बार चरम सुख मिल गया। लेकिन ये नहीं रुके। निष्पत्ति के सुख के बाद मेरी सांसे अभी तक सम्भल भी नहीं पाई थी कि इन्होने मुझे अपने आलिंगन में भर लिया और बहुत तेज गति से धक्के चलाने लगे। ऐसे तो उन्होंने कभी नहीं किया। तीन चार बार तो मुझे चोट भी लग गई! फिर अचानक ही ये भी स्खलित हो गए – मुझे मेरे अन्दर बेहद गरम द्रव गिरता हुआ महसूस हुआ! गहरी साँसे भरते हुए अथर्व निढाल हो कर मेरे ही ऊपर गिर गए। हम दोनों देर तक अपनी साँसे नियंत्रित करते रहे। मुझे मूत्र की तीव्र इच्छा हो रही थी, लेकिन थकावट इतनी ज्यादा थी की हिलने का भी मन नहीं कर रहा था।

लेकिन रूकती भी तो कितनी देर! कुछ तो बात है – यौन संसर्ग के बाद न जाने क्यों मुझे मूत्र की तीव्र इच्छा होने लगती है। मैं कुनमुनाई। इनको जैसे तुरंत समझ आ गया।

“टॉयलेट जाना है?” इन्होने पूछा।

“हाँ.. जल्दी!” कहते हुए मैं मुस्कुराई। कितना कुछ बदल गया इतने ही दिनों में! अब कोई संकोच नहीं लगता!

“आओ मेरे साथ..” कह कर ये उठे और मुझे भी हाथ पकड़ कर बिस्तर से उठा लिया।

‘फिर कोई नया खेल क्या? बाप रे!’

मैं ठीक से चल नहीं पा रही थी – एक तो मेरे पाँव अभी तक कांप रहे थे, और ऊपर से बहुत ज्यादा थकावट! इसलिए अथर्व ने मुझे सहारा देकर बाथरूम तक पहुँचाया। बाथरूम तक, लेकिन कमोड तक नहीं। वो मुझे नहाने वाले स्थान पर लेकर गए... मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैंने उनकी तरफ देखा, लेकिन जब उन्होंने कुछ नहीं कहा तो मैं बैठने लगी।

“रुको..” इनकी आँखों में एक बार फिर से एक शैतानी चमक जाग गई। मैं समझ गई की अब मैं फिर से मरने वाली हूँ!

अथर्व वहीँ बाथरूम की फ़र्श पर लेट गए, और मुझे इशारे से अपने ऊपर बैठने को कहने लगे।

“छी! आप भी न! न जाने क्या क्या करवाते हैं मुझसे!”

"अरे यार! क्या छी? एक बार मेरा कहा मानो.. मज़ा न आये तो फिर शिकायत करना!" उनकी बात सुन कर मुझे हंसी आ गए! बच्चों जैसी जिज्ञासा, उन्ही के जैसी शैतानी, उन्ही के जैसी मासूमियत! उन्होंने मुझे हाथ से पकड़ कर अपने जघन क्षेत्र पर बैठाने में मेरी मदद करी। मैं क्या ही करती? मैं भी जैसे तैसे उनपर उकडूं बैठ गई – बहुत ही बेढब तरीका था.. लेकिन अब समझ आया की अथर्व क्या चाहते थे। एक तो मेरे उनके ऊपर इस तरह बैठने से मेरी योनि पूरी तरह से प्रदर्शित होती, और मूत्र उन्ही के ऊपर ही गिरता!

"जानू! आप श्योर हैं? मुझे बहुत जोर से आ रही है।"

उन्होंने सर हिला कर हामी भरी, “बिलकुल श्योर! शुरू करो।"

उन्होंने दोनों हाथ से मैंरे दोनों टखने पकड़ लिए और मैंने अपने दोनों हाथ उनके सीने पर टिका दिए – सहारे के लिए। दिक्कत यह है की कुछ देर अगर मूत्र को रोक लिया जाए, तो फिर तुरंत ही नहीं हो पाता – कुछ देर इंतज़ार करना पड़ता है। मैंने कुछ देर तक अपनी साँसे नियंत्रित करीं, और अपनी मांस-पेशियाँ कुछ शिथिल करीं।

मैं अपनी आँखें मूँद लीं, और मूत्र करने पर ध्यान लगाया।

मेरी नजर में:

जैसा पहले भी किया था (याद है न? बुग्याल पर? झील के बगल?), आज पुनः कुछ नया करने की इच्छा जाग गई थी। ठीक हैं, गंदे हो जायेंगे, लेकिन तो क्या? बाथरूम में ही हैं न? फिर से नहा लेंगे!

मैंने देखा की प्रिया की योनि के पटल खुल गए - वहां की माँस पेशियाँ रह रह कर खुल और बंद हो रही थीं (मूत्राशय को मुक्त करने का प्रयास)। सम्मोहक दृश्य!

कुछ ही पलों में मूत्र की धार छूट पड़ी। अनवरत धार! प्रिया अभी राहत की साँसे ले रही थी। उसकी आँखें बंद थीं। गरम गरम द्रव मेरे शरीर पर पड़ा – अनोखा अनुभव! काफी गरम! मूत्र गिर कर मेरे सीने पर से होकर फ़र्श पर रिसने लगा। और उसकी गंध! कोई तीक्ष्ण गंध नहीं। लेकिन ऐसी भी नहीं जिसको मन-भावन गंध कहा जाय। खैर, कुछ देर के बाद प्रिया का मूत्र त्यागना बंद हुआ। वह अभी भी आँखें बंद किये हुई थी - उसकी योनि की पेशियाँ सिकुड़ और खुल रही थीं और उसमें से मूत्र निकलना अब बंद हो चला था। इस अनुभव का एक असर मुझ पर हुआ – मेरा लिंग फिर से कड़ा होने लगा, और साथ ही साथ मुझे भी मूत्र की इच्छा होने लगी।

मैंने प्रिया के कंधे पकड़े, और उसी के सहारे उठ कर पहले तो उसको गले से लगा लिया। प्रिया खुद के ही मूत्र में सन गई। नहाने के अतिरिक्त अब कोई चारा नहीं था हम दोनों के ही पास। मैंने अपनी उंगली से उसकी योनि को कुछ देर टटोला, और फिर खड़ा हो गया।

प्रिया ने प्रश्नवाचक दृष्टि पहले मेरे चेहरे पर डाली और फिर मेरे लिंग पर, जो की उचक उचक कर जैसे सन्देश दे रहा हो। इसके पहले की वह कुछ कहती, या कोई प्रतिरोध करती, मैंने भी अपनी मूत्र की धार छोड़ दी। पहला छपाका उसके चेहरे पर ही पड़ा – स्वप्रतिक्रिया स्वरुप उसने आँखें और मुँह को कस कर भींच लिया। और अपने एक हाथ के सहारे से फ़र्श पर ही थोड़ा पीछे झुक गई। लेकिन इससे वो बचने वाली तो थी नहीं। मुझे भी अपना ब्लैडर खाली करना ही था। और साथ ही साथ मैं खिलवाड़ के भी मूड में था। मैंने लिंग को पकड़ कर उसके पूरे शरीर को अपने मूत्र से नहला दिया। और कुछ देर बाद मैं भी खाली हो गया।

प्रिया ने एक आँख खोल कर मुझे देखा, “छी गंदे! ये क्या है? बता तो देते!”

मैंने उत्तर में कुछ कहा नहीं। बस आगे बढ़ कर उसको फ़र्श पर लिटाया, और उसकी योनि को अपने मुंह में भर कर चूस चूस कर सुखा दिया। अब वह क्या ही शिकायत कर पाती भला? बस भावुक हो कर उसने मुझे जोर से अपने आलिंगन में जकड़ लिया और कहा, "आई लव यू!"

इस समय तक मैं एक बार पुनः सहवास के लिए तैयार हो गया था। इस बार मैंने न कोई औपचारिकता दिखाई, और न ही कोई फोरप्ले किया। बस इस समय प्रिया को एक और बार 'ठोकने' का मन था। एकदम पाशविक इच्छा! वासना की नग्न अभिलाषा!

प्रिया की नजर में:

यह मूत्र स्नान सुनने या सुनाने में भले ही बहुत ही गन्दा सा लगता हो, और संभव है की ज्यादातर युगल इसको नहीं आजमाते, लेकिन यह एक नए प्रकार का ही अनुभव होता है। मैं अथर्व की आँखों में वासना के डोरे साफ़ देख रही थी। अपने ऊदेश्य में स्पष्ट! इसमें प्रेमी जैसा भाव नहीं था – बस वही प्राचीन नर-मादा वाला भाव दिख रहा था। मतलब, आज तो मेरी जान निकल कर ही रहेगी!

उन्होंने मेरी बाईं टांग को अपने कंधे के ऊपर रखा और अपने लिंग को मेरी योनि के बीच रखा। मैंने उनके लिंग को पकड़ लिया, जिससे वह अपने मार्ग पर ही रहे। उन्होंने ऐसे जोर के धक्के के साथ मुझमें कभी प्रवेश नहीं किया! मेरी चीख निकल गई। मैं सम्हलती, उससे पहले ही उन्होंने दूसरा धक्का लगाया – मैंने देखा उनका लिंग और मेरी योनि दोनों आपस में चिपके हुए थे। मुझे दर्द हुआ! लेकिन मैं उसको पी गई – यह अनुभव भी सही।

मैंने महसूस किया की मेरी योनि उनके लिंग को मसल रही है। मेरी सांसे तेज़ हो गईं। अथर्व समझ तो रहे थे की मुझे दर्द हुआ है, लेकिन वो बस चार पांच सेकंड ही रुके। और फिर उन्होंने अपनी कमर हिलानी शुरु कर दी। उनका लिंग तेजी से मेरी योनि के अंदर-बाहर होने लगा। देखते ही देखते उनकी गति तेज़ होती चली गई। तेज़ गति के कारण लिंग का विस्थापन कम ही हो रहा था, लिहाज़ा, पूरे समय, मेरी योनि में उनका लिंग लगभग पूरा ही समाया रहा। मूत्र ने संभवतः अन्दर से काफी चिकनाई निकाल दी थी, इसलिए कुछ कुछ टीस सी उठ रही थी। लेकिन मैं क्या करती – अथर्व मुझे वाकई 'ठोक' रहे थे।

चूंकि वो कुछ ही मिनटों पहले स्खलित हुए थे, इसलिए मुझे लगा की उनका दुबारा स्खलित होने अभी दूर था। लेकिन गति इतनी तेज थी की दस मिनट के अन्दर ही वो अपनी मंजिल पर पहुँच गए। आश्चर्य मुझे इस बात का हुआ की स्खलित होने के बाद भी उनका कडापन कम नहीं हुआ और उन्होंने मुझे दो और मिनट तक भोगा। और मुझे एक और घोर आश्चर्य तब हुआ जब मैं आज पांचवीं बार रति के उच्चतम शिखर पर पहुंची। पाशविक सहवास का ऐसा नंगा नाच! और इनकी कुशलता तो देखिए! न जाने कैसी भूख! लेकिन इतना तो तय है की मैं पूरी तरह अघा गई थी।

हम दोनों बहुत देर तक यूँ ही विभिन्न शारीरिक तरलों से सने हुए, आलिंगनबद्ध फ़र्श पर पड़े रहे। अंततः अथर्व ने उठा कर फ़व्वारा चलाया, और हम दोनों ने फ़र्श पर बैठे बैठे ही

एक बार और नहाया। और फिर अपने अपने शरीर पोंछ कर बिस्तर पर लुढ़क कर गहरी नींद सो गए।

१५

अगले चार दिनों तक प्रिया के पीरियड्स थे। यह समय हमने बीच पर टहलने घूमने, नौका-विहार करने, लैपटॉप और टीवी पर फिल्म्स इत्यादि देखने में बिताये। सुजेन और आना हमारे बहुत अच्छे दोस्त बन गए – हमारे, मतलब मेरे और प्रिया दोनों के। प्रिया उन दोनों की ही आत्मनिर्भरता और बिंदास अंदाज़ से बहुत प्रभावित हुई, और उनसे उनके काम, जीवन इत्यादि के बारे में कई बार बातें करीं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैंने उनके साथ दो बार स्कूबा डाइविंग करी।

स्कूबा डाइविंग बहुत ही अधिक रोमांचल खेल है। सुजेन और आना, दोनों ने ही मुझे बताया की उनकी हर डाइविंग में नयापन होता है – एकदम नए अनुभव, नयी चुनौतियाँ! अंडमान में चहुओर फैले जल क्षेत्र में प्रवाल भित्ति (कोरल रीफ) जल-पर्यावरण प्रणाली का घर हैं! एक और बात है, अंडमान में बहुत कुछ जो बना है, वह ज्वालामुखी की गतिविधियों के कारण बना है। उनके कारण डाइविंग के दौरान अभूतपूर्व अनुभव होता है। हम समुद्र में करीब करीब साथ फीट तक अंदर गए। इस दौरान मैंने प्रवाल और उनमे रहने वाली अनेकानेक मछलियाँ और उनकी अनोखी दुनिया को बहुत नजदीक से देखा। वाकई, यह एक अलग ही दुनिया थी। खैर, मैं तो बस रंग बिरंगी मछलियों के झुण्ड, नीले पानी, और अपने कानों में पानी की गुलगुलाहट सुन कर रोमांचित हो गया! छोटे बड़े, हर आकार की मछलियाँ प्रचुर मात्रा में बिना रोक टोक तैर रही थी। पानी के भीतर फोटोग्राफी भी करी। मुझे बताया गया था की शार्क की भी कई सारी प्रजातियाँ यहाँ होती हैं, लेकिन दिखी एक भी नहीं!

प्रिया और मैंने पहले स्नोर्केलिंग की थी – यूँ तो दोनों ही वॉटर स्पोर्ट हैं, लेकिन दोनों में काफी अंतर है। स्कूबा शब्द अंग्रेजी में सेल्फ कंटेंड अंडरवॉटर ब्रीदिंग अपरेटस का शॉर्ट फॉर्म है। स्कूबा डाइविंग में ऑक्सीजन टैंक, तैराकी पोशाक और मास्क इत्यादि पहनकर पानी की काफी गहराई में उतरना होता है, जबकि स्नोर्केलिंग में छोटा मास्क पहना जाता है। सांस लेने के लिए इस मास्क का एक हिस्सा पानी की सतह से बाहर निकला रहता है, और तैराकी के दौरान तैराक सतह पर तैरता है, और मुँह की सहायता से सांस लेता है। स्कूबा डाइविंग एक बार में कम से कम आधे घंटे तक तो चलती ही है। स्नोर्केइलिंग में पानी के दो-तीन फीट अंदर ही जाते हैं, जबकि स्कूबा डाइविंग में तो लोग सौ फीट से भी अन्दर तक चले जाते हैं, और पानी की गहराई में उतरकर अन्दर के तमाम नजारों को करीब से देख सकते हैं। मैंने मन ही मन सोचा की स्कूबा डाइविंग की ट्रेनिंग ज़रूर लूँगा।

इतने में हमारे हनीमून का समय भी लगभग समाप्त हो गया और वापस आने का दिन भी पास आने लगा।

इस बीच मैंने प्रिया के कॉलेज में कॉल कर के उसके प्रिंसिपल से बात करी। उन्होंने मेरी उम्मीद और सारी दलीलों के विपरीत प्रिया को होम-स्कूल करने से मना कर दिया, और यह याद भी दिलाया की उसकी उपस्थिति कम हो जाएगी, और एग्जाम लिखने में दिक्कत होगी। फिर उन्होंने मुझे बताया की यदि वो अगले हफ्ते तक वापस आ जाय, तो उसको शीतकालीन अवकाश के पहले करीब चार हफ्ते मिल जायेंगे, जिसमें काफी कोर्स निबटाया जा सकता है। फिर वो छुट्टी में बंगलौर जा सकती है, और कोर्स रीवाइज कर सकती है। मैंने छुट्टी के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया की दिसम्बर के आखिरी सप्ताह में होगी, और जनवरी के मध्य तक चलेगी।

कोई बुराई नहीं थी.. मैंने मन में सोचा। वैसे भी प्रिया बंगलौर में रुक कर क्या ही करती, इसलिए मैंने सोचा की वापस जा कर एक दो दिन में ही प्रिया को उत्तराँचल भेज दूंगा। वो अपना अब तक का कोर्स भी कर लेगी, और घर वालो से मिल भी लेगी। उसके बाद तीन हफ्ते मेरे पास.. और फिर बोर्ड एग्जाम के बाद परमानेंट मेरे पास!! मैंने प्रिया को बताया तो उसका मुँह उतर गया। रोने धोने की ही कमी थी बस.. लेकिन जैसे तैसे उसको समझाया बुझाया और राजी कर लिया।

खैर, रिसोर्ट में रहने के आखिरी दिन मैंने जो भी बिल था, वो भरा और फिर हेवलॉक द्वीप से विदा ली। क्रूज़ बोट से वापस पोर्ट ब्लेयर आ गए। शाम की फ्लाइट थी, सो विमानपत्तन पर ही खाना पीना किया, और यादगार के लिए कुछ सामान खरीदा। वीर सावरकर विमानपत्तन काफी छोटा है, और उसके लिहाज से वहां बहुत भीड़ होती है। उस दिन तो वहां ठीक से खड़े होने की भी जगह नहीं थी। खैर, वहां से उड़ान भरने के कोई छः घंटे के अन्दर, प्रिया और मैं बंगलौर पहुँच गए।

घर पहुँचने के बाद हमने श्री और श्रीमती हेगड़े जी जी से मुलाकात करी। उन्होंने हमारा कुशलक्षेम पूछा, कुछ इधर उधर की बात करी.. और फिर अंत में यह टिप्पणी करी की हम दोनों ही कौव्वे जैसे काले हो गए हैं! मैं और श्री हेगड़े जी, दोनों इस बात पर खूब हँसे.. लेकिन श्रीमती हेगड़े जी ने अपने पति को मीठी झिडकी लगायी। खैर, मैं उनको बताया की दो दिन बाद प्रिया को वापस उत्तराँचल भेज आऊँगा.. नहीं तो पढाई का बहुत नुकसान हो जाएगा। बेचारों को इस बात से बहुत दुःख हुआ, लेकिन इस बात से बहुत खुश हुए की एक महीने में ही प्रिया वापस भी आ जाएगी।

घर में आकर मैंने पास के ही एक होटल से खाना माँगा लिया। प्रिया चाहती थी की वह कुछ बनाए, लेकिन घर में कोई राशन पानी तो था ही नहीं... मैंने उसको कहा की कल हम दोनों मियां बीवी मिल कर लंच बनायेंगे, और पड़ोसियों को भी बुलाएँगे! मेरे इस सुझाव पर प्रिया बहुत खुश हुई।

जब तक खाना आता, प्रिया नहाने चली गई, और मैं हमारी देहरादून फ्लाइट के लिए टिकट बुक करने लगा। मजेदार बात यह दिखी की दो दिन बाद का टिकट, एक महीने के बाद वाले टिकट से सस्ता था! उसके बाद मैंने बॉस को फ़ोन करके कल के लंच के लिए आमंत्रित किया। उसके बाद मैंने अपने दोस्तों को बुलाया जो शादी में सम्मिलित हुए थे, और उनको साथ में खींची हुई तस्वीरें भी लाने को बोला। फिर अपने फोटोग्राफर को रिसेप्शन की तस्वीरें लाने को बोला। यह सब काम करने के बाद मैंने भी नहाया और इतने में ही खाना भी आ गया। दिन भर बहुत यात्रा हुई थी, इसलिए हम दोनों थक कर सो गए।

सवेरे मैं काफी जल्दी उठा। घर के पास ही सब्जी-हाट लगता है.. कभी कभी मैं वहां से सब्जियां लेता था। अच्छी बात यह है की वहां ताज़ी सब्जियां मिलती हैं। न जाने कितने ही दिनों बाद आज खरीददारी कर रहा था। वापस आते आते साढ़े सात बज गए थे – अभी भी सवेरा ही था। लेकिन वहां खरीदने वालो की भीड़ अच्छी खासी थी। वापस आते आते मैंने श्री हेगड़े जी को लंच पर आमंत्रित किया। घर आया तो देखा प्रिया अभी उठने के कगार पर ही थी। उठते ही उसने पूछा, आज खाने में क्या पकाएँगे?

एक बात आपको बता दूं, जब से उत्तराँचल – या यह कहिये की गढ़वाल से नाता जुड़ने वाली बात चली है, तब से मैंने वहां की ज्यादा से ज्यादा बाते जानने का ध्येय बना लिया है। खासतौर पर वहां के खाने का। जब मैंने प्रिया को बताया, की क्या बनने वाला है, तो वह बड़ी खुश हुई। आखिर, मैंने आज के लंच के लिए गढ़वाली और अवधी खानों का कोर्स तैयार किया था। लंच की तैयारी शुरू करने से पहले, मैंने प्रिया के तैयार होते होते हम दोनों के लिए आलू सैंडविच, और चाय तैयार कर दी।

“बाप रे! आपको तो कुकिंग भी आती है!”

“बिलकुल आती है.. आपको क्या लगा? इतने दिन ऐसे ही सर्वाइव कर लिया मैंने?”

“मुझे तो मालूम ही नहीं था!”

“प्रिये, पति के गुण धीरे धीरे मालूम होने चाहिए। इससे प्रेम में प्रगाढ़ता आती है।“ मैंने फ़िल्मी डायलॉग बोल कर ठिठोली करी।

“ओके, प्राणप्रिय! तो फिर तैयारी करें?” प्रिया ने भी मेरी ठिठोली में अपना जुमला भी जोड़ा।

रसोई शुरू करने से पहले कपडे इत्यादि वाशिंग मशीन में धोने में डाल दिए, जिससे कल की यात्रा से पहले कोई दिक्कत न हो।

हमेशा से कहा जाता है की पति के दिल का रास्ता पेट से होकर गुजरता है। मेरे ख़याल से यह बहुत ही गैर-जिम्मेदाराना सोच है, और खाने की तैयारी का सारा ठीकरा स्त्रियों के सर पर पटकने जैसा है। मेरा मानना यह है की यदि खाने का शौक हो, तो बनाने में भी पतियों को कुछ तो सहयोग करना ही चाहिए। जरा सोच कर देखिए, यदि रसोई में बढ़िया, स्वादिष्ट पकवान पति पत्नी साथ में बनाएँ, तो उनके बीच की नजदीकियां बढने़ लगती हैं। जब पति-पत्नी साथ साथ रसोई में पहुंच जाएं तो वो पल अभूतपूर्व अपनत्व में बदल जाते हैं। हमारे यहाँ कुकिंग को काम बना दिया गया है... लेकिन अगर ध्यान से देखें तो दरअसल कुकिंग तो एक कला है। नहीं तो कैसे संजीव कपूर जैसे लोग ‘मेस्ट्रो’ कहलाते? अगर पति-पत्नी साथ मिलकर इस कला में सहयोग करें, तो कुछ भी संभव है।

गढ़वाली व्यंजन बहुत अलंकृत और जटिल नहीं होते। लेकिन मोटे अनाजों के इस्तेमाल से उनका स्वाद अनोखा, और बहुत पौष्टिक होता है। अब चूंकि मेरा और प्रिया का मेल भी अनोखा था, इसलिए आज का कोर्स भी बहुत अनोखा था – रेशमी पनीर (पनीर, प्याज, रंग-बिरंगी शिमला मिर्चों पर आधारित सूखी सब्जी), फ़ानू (एक प्रकार की गढ़वाली पंचमेल दाल), लेसु (गेहूँ और रागी की रोटी), केसर हलवा, पुलाव और सलाद।

खाना बनाने में समय लगा, लेकिन मेहमानों के आने से पहले खाना तैयार हो गया, और हम लोग भी। भोज पर कुल मिला कर आठ लोग आये थे। मेरे दो दोस्त, उनमे से एक की पत्नी, बॉस, उनकी पत्नी और पुत्र, श्री और श्रीमती हेगड़े जी! ये सभी इतने अच्छे लोग थे, की अपने साथ कुछ न कुछ खाने पीने का सामान लाये थे – यह जानते हुए भी की भोज हमने आयोजित किया था। कुंवारा दोस्त तो अपने साथ वाइन की बोतल लाया था, लेकिन बॉस अपने साथ मिठाइयाँ, और पड़ोसी पुलियोगरे चावल (कर्नाटक का एक डिश) लाये थे। या फिर अपने घर से प्रिया ने कहा की वह सबको खिलने के बाद खा लेगी – लेकिन मैंने इस बात से साफ़ इनकार कर दिया। खायेंगे तो हम सब परिवार और मित्र एक साथ...

नहीं तो खाने की कोई ज़रुरत नहीं। सप्ताहांत भोज अगर हित-मित्रो के साथ करने को मिले, तो इससे अच्छा क्या हो सकता है? कुछ ही देर में हम सभी गप्प लड़ाते हुए, घर में बने स्वादिष्ट भोजन का आनंद उठा रहे थे। मेरी खूब खिंचाई हुई जब बॉस और पड़ोसियों ने प्रिया के परिवार वालो के द्वारा मेरी जांच पड़ताल की बाते उसको सुनायीं। बहुत मज़ा आया – देर तक (कोई तीन घंटे) चले इस भोज से मुझे पहली बार अपने पड़ोसियों, और बॉस को इतने करीब से जानने का मौका मिला।

जैसी की मुझे उम्मीद थी, सभी ने शादी, रिसेप्शन और हनीमून की तस्वीरें देखने की मांग की। मैंने पहले ही हम दोनों की अन्तरंग तस्वीरें अलग कर ली थीं, और दोस्तों की खींची हुई तस्वीरें अपने लैपटॉप में कॉपी कर के मैंने सबको सिलसिलेवार तरीके से तस्वीरें दिखा दीं। सभी ने एक बार तो ज़रूर कहा, की हम दोनों ही अंडमान की धूप में साँवले हो गए। खैर, इन सब बातो के बाद, मैंने सबको आने के लिए धन्यवाद दिया और फिर विदा किया।

हम दोनों टहलते घूमते पास के एक दूकान पर जा कर प्रिया के लिए दो जोड़ी सलवार कुर्ता खरीद लाये। हनीमून पर जो कुछ पहना था, अगर अपने घर पर पहनती तो वहां लोग विस्मित और नाराज़ दोनों हो जाते। अश्विनी के लिए कई प्रकार के कपड़े जिनमें स्कर्ट-टॉप, जीन्स-टी-शर्ट, और एक बहुत खूबसूरत सूट शामिल थे - आखिर मेरी एकलौती साली है। एक कलर-लैब से मैंने दो-तीन छोटे-बड़े एल्बम, और प्रिंट करने के लिए ग्लॉसी फोटोग्राफी पेपर, और कुछ कलर कार्ट्रिज खरीद लिए। मेरे घर में लेज़र प्रिंटर पहले से ही है, जिसका इस्तेमाल मैं विभिन्न कार्यों में करता रहता था। एक मेडिकल की दूकान से मैंने दो पैकेट सेनेटरी नैपकिन, और अपने लिए कंडोम खरीदा – प्रिया के जाते जाते एक बार और आनंद लेने की तो बनती थी। यह एक रिब्ड कंडोम था – उसके बाहर की तरफ उभरी हुई धारियां बनी हुई थीं... इसका फायदा यह था की घर्षण के समय आनंद और बढ़ सकता है।

डिनर में कुछ बनाने का काम नहीं था, क्योंकि दोपहर का खाना बचा ही हुआ था। घर आकर मैंने सबसे पहले लैपटॉप पर ख़ास ख़ास तस्वीरें चुन कर प्रिंट करने पर लगा दीं। कई सारी तस्वीरें थीं, इसलिए समय लगता। इसलिए मैंने एक बैग में प्रिया का सामान पैक किया और अपने लिए एक अलग छोटे बैग में। इस बीच में प्रिया नहाने चली गई – दींन भर प्रदूषण, और गर्मी!

‘हा हा,’ मैंने सोचा, ‘वापस जा कर पानी छूने की भी हिम्मत नहीं पड़ेगी!’ उत्तराँचल में ठंडक तो अब अपने पूरे शबाब पर होगी! पैक करते समय मेरा मन बहुत ख़राब हो रहा था

– यह सोच कर की ‘मेरी जान’ कल जाने वाली है... लेकिन क्या ही करता? मेरे पास दो फोन थे – एक ऑफिस के लिए, और एक मेरा पर्सनल। प्रिया जब वापस आई, तो मैंने पर्सनल वाला प्रिया को दे दिया, जिससे वह मुझसे जब भी मन करे, बात कर सके। यह सुन कर हाँलाकि प्रिया का गला भर आया, लेकिन उसके रोने से पहले ही मैंने उसको मना लिया और संयत कर दिया। कुछ देर तक हमने बालकनी में जाकर बात चीत करी, और फिर मैं भी नहाने चला गया। वापस आकर देखा, की सारी तस्वीरें प्रिंट हो गई हैं। एक बड़े एल्बम में हम दोनों मिल कर अपने शादी, रिसेप्शन, और अंडमान की तस्वीरें लगाने लगे, जिसको प्रिया घर पर दिखा सके। एक छोटे एल्बम में मैंने हमारी बेहद अन्तरंग और नग्न तस्वीरें लगाईं – सिर्फ प्रिया के लिए... जब उसको हमारी ‘वैसी’ वाली याद आये तो उन तस्वीरों को देख कर धैर्य धर सके।

मैंने कहा, “जानू, तुम्हारा मन तो अपनी किताबो के साथ बहल जाएगा... हो सकता है की पढाई, घर और सहेलियों के साथ मेरी याद भी न आए... लेकिन मैंन तुम्हारे बिना एक दिन भी न रह पाऊँगा!”

प्रिया मेरी बात पर भावुक हो गई और मुझसे आकर लिपट गई... मैंने भी अपनी बांहें उसके चारों ओर कस दीं।

“आपको ऐसा लगता है की मुझे आपकी याद नहीं आएगी? मुझे आपकी बहुत याद आएगी!!” प्रिया भावुक हो कर बोली। “... लेकिन मैं बहुत जल्दी ही आपकी बाहों में फिर से आ जाऊंगी!”

मैं बेबसी में मुस्कुराया, “अच्छा, मुझे प्रोमिस करो की अपना खूब अच्छे से ख्याल रखोगी!”

“प्रोमिस! आप भी रखना..”

“आई लव यू!” बिछोह के गहरे दर्द का अहसास करते हुए मैंने कहा। फिर आगे सोच कर कहा, “अच्छा, जाते जाते ‘गुडबाय किस’ तो दो!”

“अरे मैं अभी कहाँ जा रही हूँ? कल सवेरे जाना है न?”

“अरे तो मुझे भी कौन सा आपके होंठों पर किस करना है?” मैंने इतने ग़मगीन माहौल में भी शैतानी नहीं छोड़ी। लेकिन आगे जो प्रिया ने किया, वो मेरी उम्मीद के विपरीत था।

प्रिया ने एक टेडी नाइटी पहनी हुई थी। मेरे कहते ही उसने अपनी टेडी का निचला घेरा ऊपर उठा लिया – और उसकी चड्ढी से ढकी योनि मेरे सामने परोस गई। ऐसा आमंत्रण हो तो भला कौन मना कर पाए? मैंने प्रिया को चूमने के लिए उसकी कमर को पकड़ कर अपनी तरफ खीचा, और मेरी बाहों में आते ही उसके स्तन मेरे सीने से टकराए। उसने प्यार से मेरे गले में बाहें डाल दी, और मुँह में मुँह डाल कर मुझे चूमने लगी। कुछ देर चूमने के बाद मैंने प्रिया की टेडी के ऊपर से ही उसके स्तनों का पान आरम्भ कर दिया। उनको बारी बारी से देर तक चूसा, चुभलाया और चूमा। टेडी का कपडा रेशमी और नायलॉन मिला हुआ था (मतलब मुलायम नहीं था), इसलिए मेरी मुँह की हरकतों का प्रभाव उसके स्तनाग्रों और स्तनों पर कई गुणा अधिक हो रहा था। टेडी के ऊपर से ही मैंने जीभ की नोक से उसके स्तनाग्रों को छेड़ा.. मेरे हर वार से उसकी सिसकारी निकल जाती। इसी बीच मैंने अपने खाली हाथ को उसकी चड्ढी के अन्दर डाला और योनि को टटोला - वह पहले ही गीली हो चली थी। कुछ देर वहां सहलाने के बाद मैंने अपनी उंगली प्रिया की योनि में डाल कर अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया।

इस पूरे कार्यक्रम के दौरान मैंने प्रिया को निर्वस्त्र नहीं किया, और न ही अपने ही कपडे उतारे। प्रिया आँखें बंद किए आनंद लेती रही, फिर कुछ देर बाद उसने आगे बढ़ कर मेरे लिंग को पकड़ने की कोशिश करी। मैं पूरी तरह उत्तेजित था।

“आआह्ह्ह्ह…! आज खूब देर तक कीजियेगा…” प्रिया ने उखड़ी हुई आवाज़ में मुझे निर्देश दिया।

मैंने प्रिया को अपनी गोद से उतारा और उसका हाथ पकड़ कर बेडरूम में ले आया। वह अपने कपडे उतारने लगी तो मैंने मना कर दिया।

“नहीं… पहने रहो। आज ऐसे ही करेंगे..”

मैंने भाग कर आज खरीदा हुआ कंडोम का पैकेट निकाला, और एक कंडोम निकाल कर अपने लिंग पर चढाने लगा। पजामा मैंने अभी भी पूरा नहीं उतारा। तो हम लोग पूरे कपडे भी पहने हुए थे, और यथोचित नग्न भी!

“ये... क्या कर रहे हैं आप?”

“कंडोम!” फिर कुछ रुक कर, “प्रोटेक्शन...” कंडोम चढ़ाने के बाद मैंने प्रिया को बिस्तर से उठाया और अपनी गोदी में लेकर उसके नितम्बों को पकड़े हुए, उसकी पीठ को दीवार से लगा दिया। नया आसन! मैंने प्रिया को कहा की वह अपनी टांगो से मेरी कमर को जकड़ ले। प्रिया को कुछ कुछ समझ में आया की मैं क्या करना चाहता हूँ, और उसने निर्देशानुसार सहयोग किया। मैं बलिष्ठ हूँ, नहीं तो बहुत दिक्कत हो जाती।

मैंने उसकी चड्ढी को योनि से थोड़ा अलग हटाया, और बड़ी मुश्किल से अपने लिंग को उसकी योनि में प्रविष्ट कराया। दो तीन बार धक्का लगाने से मुझे समझ आ गया की नीचे से ऊपर धक्के लगाना मुश्किल है.. एक तो उसका भार सम्हालना, और ऊपर से यह सुनिश्चित करना की लिंग योनि के भीतर ही रहे! मैंने प्रिया को धक्*का लगाने को कहा। प्रिया ने उत्साहपूर्वक धक्के लगाने आरम्भ किए..

यह वाकई एक आनंददायक आसन था – मुश्किल, लेकिन आनंददायक! एक तो मेरा लिंग पूरी तरह से प्रिया के भीतर जा पा रहा था, और इससे एक नए तरह के घर्षण का अहसास हो रहा था। हर धक्के में प्रिया की पूरी योनि मेरे लिंग पर घर्षण रही थी... बहुत ही आनंददायक!

और इसका सबूत प्रिया की कामुक आहों में था, "आअह्ह्ह्ह.... मस्त लग रहा है...." उसकी साँसे उन्माद के कारण उखड रही थीं। हमने पूरे उत्साह के साथ मैथुन करना प्रारंभ कर दिया। प्रिया वैसे भी मुझे कामोत्तेजना के शिखर पर यूँ ही ले जा सकती है। लिहाजा, मेरा लिंग एकदम कड़क हो गया था और इस नए आसन की चुनौती से और भी दमदार हो गया था। रह रह कर मैं प्रिया के होंठ चूम लेता, या अपने सीने के प्रिया के स्तन कुचल देता।

चाह कर भी तीव्र गति में मैथुन संभव नहीं हो पा रहा था, इसलिए हम लोग बहुत देर तक एक दूसरे में गुत्थम-गुत्था होते रहे! समय का कोई ध्यान नहीं.. लेकिन जब मैं स्खलित हुआ, तब तक प्रिया दो बार अपने चरम पर पहुँच चुकी थी, और उसका शरीर चरमोत्कर्ष पर आकर थरथरा रहा था, और वह रह रह कर कामुकता से चीख रही थी। स्खलन के बाद भी मेरा लिंग उन्माद में था, इसलिए मैंने प्रिया के शिथिल हो जाने पर धक्के लगाने शुरू कर दिए। कुछ और समय बीत जाने के बाद अंततः मेरे लिंग का कड़ापन समाप्त हुआ और मैंने अपना लिंग बाहर निकाला और प्रिया को प्रेम से वापस बिस्तर पर लिटा दिया। जब

मैंने कंडोम को कचरा पेटी में, और अपने लिंग को साफ़ कर वापस बिस्तर पर आया, तो देखा की प्रिया थक कर सो गई थी।

अगले दिन सवेरे सवेरे ही हमने वापस उत्तराँचल की यात्रा आरम्भ कर दी। घर वापस जाने के कारण प्रिया ने साड़ी पहनी हुई थी। देहरादून में किराए पर एस यु वी लेकर हमने प्रिया के घर की यात्रा आरम्भ करी। बीच में एक जगह रुक कर हमने लंच किया, और पुनः आगे चल पड़े। हवाओं में ठंडक काफी बढ़ गई थी। इसलिए मैंने एस यु वी में हीटर चला दिया था, जिससे गर्मी रहे।

प्रिया के घर हम लोग कोई चार बजे पहुँचे! एक बात तो कहना भूल ही गया, प्रिया के घर हमने किसी को भी इत्तला नहीं दी थी की हम आने वाले हैं! वो सभी लोग हमारे इस सरप्राइज से दंग रह गए और बहुत खुश भी हुए। मैंने ससुर जी को बताया की प्रिया की पढाई का हर्जा हो रहा था, इसलिए जब तक शीतकालीन अवकाश नहीं शुरू हो जाते, तब तक प्रिया यहीं रहेगी, और अब तक का कोर्स पूरा कर लेगी। और उसके बाद छुट्टियों में वापस बैंगलोर आ जाएगी, और फिर वापस आ कर एग्जाम इत्यादि लिख कर वापस बैंगलोर आ जायेगी। उनको सुन कर काफी तसल्ली हुई। उसका वापस आने का टिकट मैंने पहले ही बुक कर दिया था। इतनी सारी फ्लाइट लेने, और हवाई यात्रा करने के बाद मुझे उम्मीद थी की प्रिया खुद हवाई यात्रा करने में अब सक्षम थी।

मैं वापस निकलना चाहता था, लेकिन सभी ने रोक लिया। वैसे भी मेरी फ्लाइट कल दोपहर बाद की थी, इसलिए अभी शुरू कर के मुझे कोई खास फायदा नहीं होना था। इसलिए मैं रुक गया। मौसम काफी ठंडा हो गया था – और रात में ठंडक और बढ़नी ही थी। खैर, सासु माँ तुरंत ही हमारे सत्कार में लग गईं – चाय पकोड़े इत्यादि! और उसके बाद रात का खाना। इसी बीच में हमने सभी को शादी इत्यादि के एल्बम दिखाए। प्रिया ने पहले से ही बड़ी चतुराई से अपना 'छोटा वाला' एल्बम छुपा लिया था।

हमारे आने की खबर हमारे कसबे में आने के साथ ही सभी को हो गई थी। तो मुझे बहुत आश्चर्य नहीं हुआ जब प्रिया की कई सारी सहेलियाँ मुझसे मिलने घर आईं। वो सभी प्रिया को चिढाने के लिए मुझसे बहुत देर तक हंसी मज़ाक करती रहीं,

'जीजू, हमारी बहना को आपने ज्यादा सताया तो नहीं?'

'हाय राम, आपने तो इसका मुँह काला कर दिया!'

'जिज्जू, इस बार अपने साथ आचार लेते जाइएगा!'

इत्यादि!

जब प्रिया की माँ ने उनको डांट लगाई, तो फिर जाते जाते मुझसे काफी सट कर तस्वीरें भी खिंचायीं, और एक गुस्ताख ने मेरा मुँह प्यार से नोंच कर चुम्बन दिया। बदमाश लड़कियाँ!

जाड़ों में, खासतौर पर पहाड़ों पर बहुत ही जल्दी सूर्यास्त और अँधेरा हो जाता है। इसलिए सासू माँ खाने की जल्दी कर रही थीं। खैर, डिनर करीब सवा सात बजे ही परोस दिया गया, और करीब आठ बजे तक अपने सास-ससुर से बात करने के बाद, प्रिया और मैं, प्रिया के (हमारे सुहागरात वाले) कमरे में आ गए। मैंने अश्विनी को भी कमरे में बुला लिया।

“क्या हुआ जीजू?”

“अरे, पहले अन्दर तो आओ... फिर बताएँगे!”

मैंने एक एक कर के अश्विनी के उपहार उसके सामने सजा कर रख दिए! अश्विनी नए नए कपड़ों को देख कर बहुत खुश हुई, “ये सब कुछ मेरे लिये हैं?”

“हाँ!”

“दीदी के लिए क्या लिया, आपने?”

“अरे! तुम अपना देखो न!” प्रिया बोली...

“नहीं.. बस ऐसे ही पूछा! ... थैंक यू, जीजू!” कहते हुए उसने मेरे दोनों गालो पर चुम्बन भी लिया। मेरे बगल में प्रिया मुस्कुराती हुई अपनी बहन को देख रही थी। अश्विनी ने फिर प्रिया को भी चूमा।

“इनको पहन कर देखो तो! ठीक फिट आते भी हैं, या नहीं?”

“ठीक है!” कह कर अश्विनी ने एक जोड़ी कपडा उठाया और दूसरे कमरे में चली गई। मैंने ध्यान नहीं दिया की कौन सा उठाया था.. प्रिया और मैं किसी बात में मशगूल हो गए और कुछ ही देर में अश्विनी कमरे में आई। मैंने देखा की वह सकुचाते हुए चल रही थी – ह्म्म्म उसने स्कर्ट और टॉप पहना हुआ था। सकुचाने की वजह भी थी। यह स्कर्ट किसी और जगह के लिए मॉडेस्ट कहलाती, लेकिन यहाँ, इस छोटी जगह के लिए हो सकता है उचित

न हो! स्कर्ट की लम्बाई उसके घुटने के ठीक नीचे तक ही आई। मैंने और प्रिया दोनों ने ही उसकी ड्रेस का जायजा लिया और फिर मैंने अश्विनी को मुड़ने का इशारा किया। पीछे मुड़ कर हमको पूरा जायज़ा करने देने के बाद अश्विनी ने पूछा, “ठीक है?”

मेरे बोलने से पहले प्रिया ने की कहा, “अरे बहुत बढ़िया! मैंने नहीं सोचा था की इतना अच्छा लगेगा, है न?”

“बिलकुल! यह तो बहुत ही अच्छा फिट हुआ है..” मैंने कहा, “अब ये जीन्स पहन कर दिखाओ।“

अश्विनी पूरे उत्साह से अपना अगला कपड़ा ले कर कमरे से बाहर निकल गई, लेकिन बहुत जल्दी ही वापस आ गई। उसने अभी भी स्कर्ट और टॉप ही पहना हुआ था।

“क्या हुआ?” मैंने पूछा।

“वहाँ जगह नही है.. मम्मी पापा आ गए हैं। कल पहन कर दिखा दूं?”

“अरे! कल तो मैं सवेरे सवेरे ही चला जाऊँगा। कैसे देखूँगा?“ मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

“अश्विनी, यही बदल ले न?” प्रिया ने सुझाया!

“यहीं? तुम दोनों के सामने?”

“हाँ! क्यों क्या हुआ?”

“धत्त! मुझे शर्म आएगी!”

“अरे, इसमें शरम वाली क्या बात है? हम दोनों को तुम पहले ही ‘वैसे’ देख चुकी हो... और ‘ये’ तो तुम्हारे जीजू ही हैं।”

अश्विनी ने कुछ देर तक प्रिया की बात को तौला – संभवतः वह यह बात माप रही हो की अपने जीजा के सामने कपड़े बदलना, या निर्वस्त्र होना – क्या यह एक सहज क्रिया है?

दीदी तो ऐसे ही कहती हुई मालूम हो रही है... अगर उसको कोई दिक्कत नहीं है, और मुझे नहीं है, तो फिर बिलकुल किया जा सकता है। लेकिन ये लोग कहीं शरारत में किसी को इसके बारे में कुछ बता न दें!

"पक्का? आप दोनों किसी को बताओगे तो नहीं? पापा को मालूम पड़ गया तो मेरी टाँगें तोड़ देंगे।" ये अश्विनी ने मुझसे कहा था... बहुत विश्वास चाहिए, ऐसे कामों के लिए! मुझे अच्छा लगा की अश्विनी हम दोनों पर इतना विश्वास करती है। ठंडक में इतनी देर तक ऐसे कम कपड़े पहने रहने के कारण वह थोड़ा कांपने भी लग गई थी।

"अरे, हम लोग क्यों बताएँगे? बस जल्दी जल्दी चेंज कर के दिखा दो। ठीक है?" मैंने कहा।

"ठीक है!"

कह कर अश्विनी ने जा कर कमरे का दरवाज़ा बंद दिया, और वापस आ कर कपड़े बदलने का उपक्रम करने लगी। अब यदि कोई ऐसा काम करे तो कोई कैसे न देखे। प्रिया और मैं दोनों की अश्विनी को कपड़े बदलते हुए उत्सुकता से निहारने लगे। किसी के सामने निर्वस्त्र होना उतना आसान नहीं है, जितना कहने सुनने में लगता है। पति पत्नी भी पहली बार बार जब एक दूसरे के सामने निर्वस्त्र होते हैं तो अपनी नग्नावस्था के बोध से कई बार सहवास नहीं कर पाते।

"जीजू, आप उधर देखिए न? मैं कपड़े बदल लूँ!" अश्विनी ने स्कर्ट का हुक खोलते हुए मुझसे कहा।

"रहने दे न! अगर मैं देख सकती हूँ, तो तेरे जीजू के देखने में क्या बुराई है?" प्रिया ने प्रतिरोध किया।

"एक मिनट! अश्विनी, अगर तुमको मेरे देखने में शर्म आती है तो एक बार फिर से कहो। मैं आँखें बंद कर लूँगा। बोलो बंद कर लूं?"

अश्विनी ने मुझे एक बार देखा, दो पल यूँ ही चुप रही, और फिर उसने शर्माते हुए नजरे नीचे कर ली और सर हिला कर 'न' कहा। और अपनी स्कर्ट को नीचे सरका दिया। अश्विनी ने एक साधारण सी चड्ढी पहनी हुई थी। मैं और प्रिया दोनों की अश्विनी को ऐसे देख रहे थे।

“बिलकुल… वी लव यू वैरी मच! और तुम बहुत खूबसूरत हो, अश्विनी!” कह कर मैंने अश्विनी के दोनों गाल बारी बारी चूमे, और एक बार फिर से उसको जोर से अपने गले से लगा लिया। मेरी देखा देखी प्रिया ने भी अश्विनी को बहुत प्यार से कई बार चूमा और ‘आई लव यू’ बोला। अश्विनी शरमाते हुए ऐसे ही नग्न हम दोनों से काफी देर लिपटी रही, और फिर उसने बारी बारी से अपने बचे हुए कपड़े भी पहन कर दिखाए। सारे के सारे परिधान बढ़िया फिटिंग के थे, और उस पर बहुत जच रहे थे।

अश्विनी आखिरी कपड़े उतार कर अपने पहले वाले कपड़े पहनने का उपक्रम कर ही रही थी की बिजली चली गई। कमरे में घुप्प अँधेरा! प्रिया ने कहा की वह बाहर जा कर मोमबत्ती का इंतजाम करती है। इस बीच अश्विनी उसी अवस्था (अर्धनग्न) में कमरे में खड़ी रही। मैंने ही उसको अपने पास बुला कर बिस्तर पर बैठा लिया। तीन चार मिनट बाद प्रिया मोमबत्ती ले कर कमरे में आई। उतने में अश्विनी ने अपना वापस सलवार कुर्ता पहन लिया। जाहिर सी बात है अब सोने का उपक्रम होना था, और अश्विनी के बाहर जाने की बात थी। लेकिन अश्विनी जाने का नाम ही नहीं ले रही थी – बिस्तर पर ही बैठे बैठे संकोच भरी मुस्कान भर रही थी।

“क्या हुआ अश्विनी?”

“जीजू - दीदी!”, अश्विनी ने सकुचाते हुए हम दोनों से कहा, “आज मैं आप लोगो के साथ सो जाऊं?” वो बेचारी लड़की बड़ी उम्मीद और निरीहता से हम दोनों को बारी बारी से देख रही थी। मैंने प्रिया की तरफ प्रश्नवाचक दृष्टि डाली, और प्रिया ने मुझे अत्यंत विनोदी उत्सुकता से देखा।

“मैं पहले हमेशा ही दीदी के साथ सोती थी…” अश्विनी ने कहना जारी रखा, “उसके जाने के बाद मैंने उसको बहुत मिस किया… और कल आप भी चले जायेंगे। और मैं आपको भी बहुत मिस करूंगी। प्लीज़!”

चूंकि प्रिया ने कुछ नहीं कहा, तो मुझे ही इस स्थिति के लिए निर्णय लेना था। ‘क्या फर्क पड़ता है?’ मैंने सोचा।

“हा हा… बस इतनी सी बात? बिलकुल सो जाओ!” मैंने माहौल को थोडा विनोदी बनाते हुए आगे जोड़ा, “मेरी किस्मत तो देखो – एक साथ दो-दो सुन्दर लड़कियों के साथ सोने

का मौका मिल रहा है आज!”

मेरी इस बात पर अश्विनी शरमा गयी। हम दोनों को ही दिन भर कपड़े बदलने का समय ही नहीं मिल पाया था, इसलिए सोने से पहले कुछ आराम-दायक पहनना आवश्यक था। प्रिया ने कहा की वह बड़े कम्बल लेकर आती है, और एक बार फिर से बाहर चली गई, और कुछ ही देर में प्रिया दो बड़े कम्बल और चद्दर लेकर वापस कमरे में आ गई। कपड़े चेंज करने से पहले मैंने अश्विनी को मुँह फेरने को कहने की सोची, लेकिन फिर लगा की यह सही नहीं होगा। उसी के सामने मैंने सब कपड़े उतार कर पजामा कुरता पहन लिया – कमरे में वैसे भी अँधेरा सा ही था, इसलिए बहुत हिचकिचाहट नहीं हुई। मेरी देखा देखी प्रिया ने भी अपनी साड़ी उतार दी... सिर्फ साड़ी।

“अब मुझे यह बताओ की किस तरफ लेटोगी? मेरी तरफ या दीदी की तरफ?” मैंने बिस्तर पर बैठते हुए अश्विनी से पूछा।

“दीदी की तरफ!” अश्विनी ने जब शर्म से दोहरा होते हुए कहा तो मैं और प्रिया दोनों ही हँस पड़े।

जैसा मैंने पहले भी बताया है की हमारा पलंग कोई ख़ास बड़ा नहीं था, लिहाज़ा, तीन लोगो के लेटने का केवल एक ही तरीका हो सकता था, और वह यह की प्रिया बीच में चित हो कर लेटे, और मैं और अश्विनी दोनों करवट लेकर। ऊपर से दोहरे कम्बल और चद्दर की परतें ओढ़ी हुई थीं, और साथ में तीन लोग चिपक कर लेटे थे, इसलिए गर्मी अच्छी हो गई थी। लेटने से पहले मोमबत्ती बुझा दी गई थी। मैंने करवट लेकर प्रिया को अपनी दाहिनी बाँह के घेरे में ले लिया। अश्विनी मुझसे काफी देर तक मेरे, बैंगलोर और अंडमान के बारे में सवाल कर रही थी। उसकी बातों में, और दिन की यात्रा की थकावट के कारण नींद कब आ गई, कुछ याद ही नहीं!

अगली सुबह काफी जल्दी उठ गया, और उठ कर बिस्तर से बाहर निकलते ही कड़ाके की ठंडक का एहसास हुआ। सवेरे का कोई चार साढ़े-चार का समय हुआ था - सूर्योदय अभी भी कोसों दूर था। दरअसल इस बार पूरा प्रदेश भीषण ठंड की चपेट में जल्दी ही आ गया था। गढ़वाल हिमालय में बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री जैसे स्थानों पर बर्फबारी भी आरम्भ हो गई थी। हमारे जाने के बाद, और आने के पहले देहरादून और अन्य निचले इलाकों में रुक-रुक कर बारिश होती रही, जिससे ठिठुरन बढ़ गई थी। खैर, उम्मीद थी की इस कारण से सड़क पर यातायात कुछ कम रहेगा। और हुआ भी वैसा ही। मैंने सवेरे फ्रेश

हो कर चाय नाश्ता किया, उस बीच प्रिया को जरूरी निर्देश दिए (यही की अपना ठीक से ख़याल रखे, पढाई में मन लगाए..), उसको कुछ रुपए थमाये - जिससे वह अपना, अश्विनी और घर का, और यात्रा के अन्य खर्चों का वहां कर सके। उसके पास कोई बैंक अकाउंट अभी तक नहीं था, इसलिए यही एकमात्र साधन था। खैर, नाश्ते के बाद सभी से विदा ली – अश्विनी को प्यार से गले लगाया, और प्रिया को चूमा (सबके सामने ऐसे खुलेपन से प्रेम प्रदर्शित करने से वहां सभी लोग शरमा गए), और माँ-पापा से आशीर्वाद लिया, और वापसी की यात्रा शुरू की।

मैंने देखा की सड़क पर लोगों की आवाजाही काफी कम थी, ठंडक का प्रकोप साफ़ दिख रहा था। एक तो सवेरा था, और ठंडक भी ... इसके कारण ज्यादातर लोग अपने घरों में ही दुबके हुए थे। खैर, मैंने कुछ देर तक गाडी चलाई – नींद का और ठंडक का असर अभी भी था – इसलिए बहुत आलस्य लग रहा था। कोई चालीस मिनट ड्राइव करने के बाद मैंने गाड़ी रोक दी - रास्ते में ही एक ढाबे टाइप रेस्त्राँ था, अतः वहीँ पर रुक कर गरमागरम चाय और बिस्किट का सेवन करने का सोचा। शरीर में गर्मी आई – कुछ भी हो... ठंड में गर्म चाय का आनंद ही कुछ और होता है!

यह ढाबा किसी ने अपने खेत के ज़मीन पर ही बनाया हुआ था – इसके पीछे खुला हुआ खेत था, जिसमें सारस का एक जोड़ा एक अंत्यंत आकर्षक प्रणय नृत्य में मग्न था। सारस पक्षियों का प्रणय नृत्य अत्यंत मनोहारी और सुपरिष्कृत होता है। कभी इनको ध्यान से देखना – कई सारे सारस पक्षी किसी जलाशय में उतरकर अलग अलग जोड़ों में बंट जाते हैं और अपने मनमोहक नृत्यों से अपनी प्रेमिकाओं का मन जीत लेते हैं। देखा गया है की सारस नर और मादा, एक दूसरे के प्रति पूरी तरह से समर्पित होते हैं - एक बार जोड़ा बनाने के बाद ये जीवन भर साथ रहते हैं, और यदि उनमे से एक साथी की मृत्यु हो जाए, तो दूसरा अकेले ही रहता है। इसी कारण से सारस पक्षी को देखना बहुत शुभ माना जाता है, ख़ास तौर से विवाहित जोड़ो के लिए।

पक्षियों का नृत्य जैसे मेरे देखने के लिए ही हो रहा था – कोई एक मिनट के बाद वे वापस खेत में खाने पीने में लग गए। इस नृत्य ने जहाँ मेरे मन को मोह लिया, वही मेरे ह्रदय में एक अजीब सा खालीपन भी छोड़ गया... मेरा तो सब कुछ पीछे ही छूट गया था न! इतनी उम्र हो आई, लेकिन प्रिया से पहले किसी भी व्यक्ति के संग की आवश्यकता मैंने कभी महसूस नहीं करी। मैंने फ़ोन उठाया और एक एस एम एस लिखा :

“Missing you already. Your voice, your touch, your smell, your warmth! How will I spend these days without you?”

और प्रिया को भेज दिया। चाय ख़तम किया और गाड़ी स्टार्ट ही करने वाला था की मेरे फ़ोन पर एक एस एम एस आया :

“Dear husband.. my handsome husband! I also can’t wait to see you again.”

मैं मुस्कुराया – आगे की यात्रा के लिए मुझे भावनात्मक ऊर्जा मिल गई थी। गाड़ी यात्रा का पहला पड़ाव देहरादून था – वहां मैंने गाडी वापस सौंपी, और एक जगह खाने के लिए रुका। वही जगह, जहाँ प्रिया और मैंने साथ में पहले भी लंच किया था। खाना खाते खाते मुझे प्रिया का एक और एस एम एस आया :

“Can’t wait to kiss you when we see each other. Love you.”

‘किस नहीं, इतने दिनों के इंतज़ार के बाद मैं सिर्फ एक काम ही करूंगा!’ मैंने निराश होते हुए सोचा।

देहरादून एअरपोर्ट से बैंगलोर तक का सफ़र... समय मानों हवा में उड़ गया। कुछ याद नहीं। हाँ, जैसे ही बैंगलोर पहुंचा, मैंने तुरंत ही प्रिया को फ़ोन लगाया और देर तक प्यार मोहब्बत की बातें करीं। जब घर पहुंचा तो सन्नाटा बिखरा हुआ था – यही सन्नाटा पहले मेरा साथी था, लेकिन आज एकदम अजनबी जैसा लग रहा था। कायाकल्प! पुनर्जीवन, जो मुझे प्रिया के मेरे जीवन में आने से मिला है, वह एक अनुपम धरोहर है। और, प्रिया भगवन के द्वारा भेजा हुआ उपहार है मेरे लिए। बिलकुल!!

मैंने कंप्यूटर ऑन किया, और प्रिया की सबसे बेहतरीन नग्न तस्वीर ढूंढ कर उसका ए४ साइज़ का प्रिंट लिया और हमारे बेडरूम की दीवार पर लगा दिया। रात में खाना खा कर प्रिया को फ़ोन पर मैंने बहुत देर तक प्यार किया और फिर सोने से पहले एक और एस एम एस किया :

“I can almost feel you here. Kissing me. Touching me. Come in my dreams tonight.. naked!”

सवेरे देर तक सोया और जब उठा तो देखा की एक और संदेशा आया है :

“Honey! Getting ready for school. In my dream last night, we were sleeping together. We were naked and your skin was hot. I never wanted to wake up.”

बस, हमारे बिछोह भरे दिन और रातें ऐसे ही बीतने लगे – फ़ोन पर बातें (ज्यादातर रोमांटिक और कामुक बातें), कभी एस एम एस, तो कभी कभार पत्र-लेखन भी!

खैर, मैं तो भई जब देखो तब, अनायास ही, मैं अपना लिंग बाहर निकाल लेता, और मन ही मन प्रिया के रूप को याद करते करते हस्तमैथुन करने लगता। हमारे पुनः मिलन की बेला बहुत दूर तो नहीं थी, लेकिन इस बीच कम से कम दो सप्ताह तक मैंने हस्तमैथुन कर के ही काम चलाया। लेकिन जिस पुरुष को प्रिया जैसी साक्षात् रति की प्रतिरूप पत्नी मिली हो, उसका मन हस्तमैथुन से कैसे भरे? तो अब मेरे पास क्या चारा था – सिवाय प्रिया के वापस आने के?

१६

प्रिया की नजर में :

आज के दिन का मैं पिछले एक महीने से इंतज़ार कर रही थी। आज मेरे कृष्ण.. मेरे अथर्व से मिलने मुझे बैंगलोर की यात्रा जो करनी थी। जबसे मैं अपने मायके आई (देखिए न... कैसे 'अपना पुराना घर' मायका बन जाता है... यदि पति का ऐसा स्नेह मिले तो कुछ भी संभव है).. तभी से मुझे बस अपने पिया से मिलने की धुन सवार है। मैंने अनगिनत लड़कियाँ देखी हैं, जो शादी के बाद वापस अपने मायके आने के लिए मरती रहती हैं... और एक मैं हूँ जो वापस अपने पति के घर जाने के लिए मरी जा रही हूँ। ऐसा नहीं है की मुझे माँ पापा से कोई कम प्यार मिला – वो दोनों तो जान छिड़कते हैं। माँ तो मुझे घेर कर बैठ गई – 'मेरे घर' की हर बात के बारे में पूछा – क्या है, कैसा है, वहां के लोग कैसे हैं, अथर्व कैसे हैं, घर कैसा है, समुद्र कैसा होता है, अंडमान कहाँ है, हवाई जहाज में कैसा लगता है इत्यादि इत्यादि। एक दो दिन बाद माँ ने दबा-छुपा कर अथर्व और मेरे अन्तरंग संबंधो के बारे में भी पूछ लिया। मेरी शर्म भरी संतुष्ट मुस्कान और संकोच भरी वैवाहिक बातों से वे अवश्य ही संतुष्ट और प्रसन्न हुई होंगी।

वापस मायके आना तो मानो एक मिशन समान था। ढंग की उच्च माध्यमिक शिक्षा और अंक प्राप्त करने का मेरा उद्देश्य और बढ़ गया। ज्यादातर लड़कियाँ शादी के बाद अपनी शिक्षा की इतिश्री कर लेती हैं, लेकिन अथर्व के प्रोत्साहन, मेरी शिक्षा में उनकी रूचि और शिक्षा के लिहाज से उनके 'लायक' बनने की मेरी स्वेच्छा के कारण मैं इस एक महीने और आगे आने वाले समय में ठीक से पढाई करना चाहती थी। परीक्षा के लिए फार्म इत्यादि भरने का कार्य सम्पन्न हो गया था, और मैं अपने शिक्षकों और शिक्षिकाओं के साथ ज्यादातर समय पढ़ने में लगा रही थी। कुछ ही दिनों में छूटा हुस कोर्स मैंने पूरा कर लिया और वर्तमान कोर्स के बराबर आ गयी। मेरी देखा देखी अश्विनी भी पढाई में ही मन लगा रही थी, और यह सब कुछ हमारे माँ पापा को बहुत संतुष्ट कर रहा था। वो दोनों हमेशा की ही तरह हमारी सभी सुविधाओं का ध्यान रख रहे थे, जिससे हमारी पढाई लिखाई में व्यवधान न हो। इसका यह मतलब कतई नहीं की मैंने एक महीना सिर्फ पढाई ही करी – किसी पारिवारिक मित्र के यहाँ कोई प्रयोजन हो तो हम लोग वहाँ ज़रूर गए। सर्दियों में वैसे भी खाने पीने की प्रचुरता हो जाती है, तो मैंने खाने पीने में भी कोई कोताही नहीं बरती। रोज़ अथर्व से फोन पर बात हो ही जाती थी, इसलिए हर रोज़ मुझे अवलंब (सहारा) मिलता।

मजे की बात हो और सखी सहेलियों का जिक्र न हो, ऐसा नहीं हो सकता। उनकी हंसी-चुहल, और मेरी टांग खिंचाई पूरे महीने भर चली। अंततः बात मेरे यौन अनुभवों पर आ कर रुकी। माँ ने यौन संबंधों के बारे में जब मेरे साथ पहली बार (शादी के कुछ हफ़्तों पहले) चर्चा करी थी तो मुझे इतनी शर्म और हिचक महसूस हुई की मैं आपको बता नहीं सकती। ऐसे कैसे मन से 'इन' विषयों पर बात की जाय? अद्भुत है न? हमारे देश में इतने सारे विवाह, और इतने सारे बच्चे होते हैं... फिर भी इन विषयों पर माँ-बाप से बच्चे शायद ही कभी बात करते हैं। संभव है इसीलिए माँ ने पड़ोस की भाभियों को मुझे कुछ ज्ञान देने को कहा होगा। झिझक तो उनके साथ भी हुई, लेकिन कम... लेकिन सहेलियों के साथ इस विषय पर खुल्लम-खुल्ला बात हो जाती है। पिछले चौदह पन्द्रह साल से एक दूसरे के दोस्त होने के कारण हम लोग हम एक-दूसरे की कई सारी निजी बातें भी जानते हैं, और ज़रुरत पड़ने पर सलाह मशविरा भी लेते-देते हैं। हमारे बीच छेड़-छाड़ और हंसी-मज़ाक उम्र के साथ साथ बढ़ती चली गयी। तो आज जब सहवास के बारे में उनको जानने बूझने का मौका मिला, तो मेरी तीन ख़ास सहेलियों ने तो मुझे घेर कर सब कुछ जानने और पूछने की ठान ली।

"शादी के बाद क्या-क्या धमाल किया मेरी बन्नो ने?" एक सहेली ने पूरी बेशर्मी से पूछा।

"अरी, शरमा मत मेरी लाडो! उस दिन हमने तुम्हारी आहें सुनी थीं... जीजू तुमको सवेरे सवेरे ही निबटाये डाल रहे थे! हाय! बता री! क्या क्या किया तुम दोनों ने?" दूसरी सखी ने पूछा – नमक मिर्च लगा कर।

"अरे बता दे! ऐसे क्यों नखरे कर रही है? अरे, हमें भी तो कुछ सीखने को मिले!" तीसरी ने और कुरेदा।

"क्यों री! तुम लोगो को कुछ ज्यादा ही हवा लग गई है जवानी की!" मैंने चुटकी ली।

"अरे वाह! तू तो ब्याह कर के इतने मजे ले रही है.. अपने राजा के साथ महल में रह रही है... और हमको जवानी की हवा भी नहीं लगे! वाह भाई वाह!" तर्क वितर्क जारी था।

मुझे यह नहीं मालूम की पुरुष अपने यौन संबंधो की बाते अपने मित्रों से करते हैं या नहीं, लेकिन स्त्रियों के बीच ऐसी बातें करना बहुत स्वाभाविक सा लगता है। ज्यादातर महिलाएं जब अपनी सहेलियों से मिलती हैं, तो अक्सर यौन संबंधों की बातें करती हैं। मेरी सारी

सहेलियाँ मेरी हम-उम्र थीं, और एक दो की तो शादी की बातें भी चल रही थीं (यह कोई अनहोनी बात नहीं है... पिछड़े इलाकों में सत्रह अठारह की उम्र में शादी तो बहुत ही आम बात है)। उस उम्र में वैसे भी यौन इच्छाएँ अपने पूरे शबाब पर होती हैं – सभी लड़कियाँ अपने अपने (काल्पनिक) साथी के साथ अन्तरंग संबंधो की कल्पना कर रही होती हैं। वैसे, अब उन लड़कियों में मुझे ऊँचा दर्जा मिल गया था – मैं अनुभवी जो हो गई थी। बहुत देर तक न नुकुर करने के बाद मैंने उनको धीरे धीरे सुहागरात और हनीमून से लेकर, यहाँ वापस आने तक की सारी बातें सिलसिलेवार तरीके से बता दीं। इसमें क्या ही बुराई हो सकती है... वो कहते हैं न, ज्ञान बांटने से बढ़ता है। मैंने तो मानो साक्षात् कामदेव से यौन शिक्षा प्राप्त करी थी। इसलिए मैंने उनको सब कुछ विस्तार से बताया की कैसे मेरे पति ने मुझे हर दिन, दोनों हाथों से लूटा। उनको मैंने जब अंडमान के बीच पर सिर्फ अधोवस्त्रों में खुली धूप सेंकने के बारे में बताया तो, किसी ने यकीन ही नहीं किया।

“हाय! शर्म नहीं आती? ऐसे ही... सबके सामने?”

“अरे हम कैसे मान लें? कुछ भी बढ़ा चढ़ा कर बोल देगी, और हम मान लेंगे?”

“नहीं मानना है तो मत मान! हमने जो किया, वो मैंने बता दिया!” कह कर मैंने हाथ झाड़ा, और उठने लगी।

“अरे! तू तो नाराज़ हो गई...” सहेली ने मुझे हाथ पकड़ कर वापस बैठाया, “मान लिया भई! ये तो बता, जीजू तेरे दुद्धू पीते हैं क्या? कामिनी कह रही थी की उसके भैया उसकी भाभी के पीते हैं... उसने उन दोनों को ऐसे करते हुए देखा था। अब तू ही बता भला! दूध पीने का काम तो बच्चों का है, बड़े लोगो का थोड़े ही!”

अन्तरंग सवालों का सिलसिला थमने वाला नहीं था।

“बोल न, प्रिया! जीजू पीते हैं क्या तेरे दूध?”

उत्तर में मैं सिर्फ मुस्कुरा दी।

“पीते हैं? क्या सच में! हाय राम!” उन सबको विश्वास नहीं हुआ।

“बाप रे! बोल री प्रिया! कैसा लगा था तुझे?”

“अरे! मुझे कैसा लगा, तुझे कैसे बताऊँ? सभी के अनुभव अलग अलग होंगे!” मैंने समझदारी दिखाई, और टालने का प्रयास भी किया।

“नखरे करने लगी फिर से! बोल दे न, जब जीजू ने तेरा दूध पिया तो तुझे कैसा लगा?”

“नखरे कैसे? तेरे पिए जायेंगे तो तुझे भी मालूम पड़ेगा!”

“अरे वो तो जब होगा, तब होगा! लेकिन तू भी तो कुछ बता न?”

मुझे शर्म आने लगी, “हाय! कैसे बताऊँ?”

“बन्नो रानी, तुझे करते और करवाते हुए तो शर्म नहीं आई.. लेकिन हमें बताते हुए आ रही है! अब बता भी दे... नहीं तो तेरे पाँव पड़ जाएँगी हम!”

“उम्म्म... ठीक है.. नहाते-धोते समय हम सबने अपने स्तन छुवे ही हैं... लेकिन जब ‘उनके’ गर्म होठों का स्पर्श... उस जैसा अनुभव कभी नहीं हो सकता! एकदम नया एहसास! मेरे पूरे बदन में झुरझुरी सी दौड़ गई.. अभी भी वैसे ही होता है। मेरे चुचक तो उनके मुँह में जाकर मानों पत्थर जैसे कड़े हो जाते हैं। और वो बदमाश, उनको किसी बच्चे की ही तरह चूसते हैं.... मैं तो अपने होश ही खो देती हूँ। उनका हमला अक्सर यहीं से शुरू होता है... शायद उनको मेरे स्तन स्वादिष्ट लगते हों! सच बताऊँ, जब वो इनको पीते हैं तो मेरा भी मन नहीं भरता... बस यही लगता है की वे मेरे दोनों चुचक लगातार पीते रहें। दर्द की भी कोई परवाह नहीं होती... इतना आनन्द जो आता है! उसके सामने यह दर्द कुछ भी नहीं। आनंद आता है, लेकिन मेरा हाल भी बुरा हो जाता है... शरीर बुरी तरह कांपने लगता है और हर अंग से गर्मी छूटने लगती है और साँसे भारी हो जाती हैं। मुझे नहीं लगता की बच्चों को दूध पिलाने पर ऐसा लगेगा!”

मेरी सहेलियाँ मेरी बातों से पूरी तरह मंत्रमुग्ध हो गईं।

“तू है ही इतनी सुन्दर! जीजू ही क्या.. अगर मैं होती तो मैं ही तेरे दुद्धू पीती रहूँ!”

“हट्ट बेशरम! इसीलिए ये सब बातें नहीं करनी चाहिए... कैसे कैसे ख़याल आने लगते हैं!” मैंने फिर से समझदारी से कहा।

मेरी सहेली मेरी बात से हतोत्साहित नहीं हुई.. और मेरे सीने को देखते हुए बोली, “सच प्रिया! एक बार इन्हें छू लूँ क्या... बुरा तो नहीं मानोगी न?”

“नहीं रे! पागल हो गई है क्या? अब ये तेरे जीजू की अमानत हैं!”

लेकिन वो लगता है सुन ही नहीं रही थी। उसने संकोच करते हुए मेरे स्तन पर हाथ लगाया, और फिर कुछ देर हाथ फ़ेर कर सहलाया।

“हाय रे! कितने कड़े हैं तेरे दुद्धू!” उसने कहा। उसकी बात सुन कर जैसे सभी को मेरे स्तन छूने का लाइसेंस मिल गया हो – सभी ने बारी बारी से छुआ और सहलाया।

“अब बस! दूर रहो मुझसे तुम सब!” मैंने उनको प्यारी झिड़की दी।

सहेलियां मान गईं... और फिर एक सहेली दबी आवाज़ में बोली, “अच्छा, एक बात तो बताना, पहली बार में बहुत दर्द होता है क्या?”

अब मैं इस बात का क्या जवाब दूँ! जवाब दूँ भी की न दूँ? मैंने अनजान बनने की सोची,

“पहली बार? बताया तो! जब वो पीते हैं तो दर्द तो होता है... इतनी देर तक जो पीते हैं, इसलिए।“

“अरे यार! जब दूध पीने की बात नहीं कह रही हूँ, जब वो ‘डालते’ हैं, तब दर्द होता है – ये पूछ रही हूँ?” उसने पूरी नंगई से अपनी बात स्पष्ट करी।

“देख... जब उनके जैसा पति तुझे मिलेगा, तब तू समझेगी!” मैंने समझदारी से बात को टालते हुए कहा।

“उनके जैसा मतलब? जीजू का... बहुत बड़ा है क्या?” दूसरी सहेली ने अटखेली करी।

“हट्ट बेशरम!”

“अरी बोल न!! देख, जीजू हैं भी तो कितने हट्टे कट्टे! बहुत बड़ा होगा उनका तो! कैसे सहती है? बोल दे! कौन सा हम उनको नंगा देखे ले रहे हैं?” लड़कियाँ तो ज़िद पर अड़ गईं थीं।

“अच्छा, तो सुन! मुझे देख.. मैं तो हूँ इतनी दुबली पतली सी.. और जैसा तूने कहा, तेरे जीजू हैं एकदम हट्टे कट्टे! तो उनका अंग बहुत बड़ा है मेरे लिए... लेकिन वो इतने प्यार से करते हैं की दर्द का ज्यादा पता नहीं चलता। उनकी कोशिश हमेशा मुझे खुश करने की होती है.. इसलिए बहुत देर तक मुझे प्यार करते हैं। अगर वो ऐसे ही अपने अंग को मेरे में घुसेड़ दें तो मैं तो मर ही जाऊं! इसलिए ऐसे न सोचना की बड़ा और मोटा लिंग होगा तभी तुमको बहुत मज़ा आएगा... तुम्हारे पति को ढंग से करना आना चाहिए, तभी मज़ा आएगा!”

मैंने न जाने किस भावना में आकर यह सब कह दिया!

“आय हाय! मेरी बन्नो! तू तो पूरी वात्स्यायन बन गई है!”

“हा हा हा!” सभी ने अठखेलियाँ भरीं।

“रोज़ रोज़ कामसूत्र की नयी नयी कहानियाँ जो लिखती है...!”

“अच्छा, ये बता.. और क्या क्या करती है तू?”

“और क्या?”

“अब हमें क्या मालूम होगा? देख री, तेरी इस क्लास की हम सब स्टूडेंट्स हैं... जो भी कुछ मालूम है, और जो भी कुछ किया है, वो हमको बता दे प्लीज़! हमारा भी उद्धार हो जाएगा!!”

“अच्छा, एक बात बता तो! तुम दोनों पूरी तरह से नंगे हो जाते हो क्या?”

मैं फिर से शरमा गई, “तेरे जीजू का बस चले तो मुझे हमेशा नंगी ही रखें! बहुत बदमाश हैं वो!”

“सच में? लेकिन तू तो इतनी बड़ी लड़की है, नंगी होने पर शरम नहीं आती?”

“आती तो है… लेकिन मैं क्या करूँ? वैसे भी.. अपने ही पति से क्या शरमाऊँ? वो अपने हाथों से मेरे कपड़े उतारते हैं, और मुझे पूरी नंगी कर देते हैं। लाज तो आती है, लेकिन रोमान्च भी भर जाता है।“

“हाँ! वो भी ठीक है! अच्छा, एक अन्दर की बात तो बता… तूने जीजू का …. लिंग … छू कर देखा?”

“हा हा हा! अरे पगली, अगर छुवूंगी नहीं, तो सब कुछ कैसे होगा? हा हा!” इस नासमझ बात पर मुझे हंसी आ गयी। “शादी की रात को ही उन्होंने मुझे अपना लिंग पकड़ा दिया था… मेरी तो जान निकल गयी थी उसको देख कर…”

“कैसा होता है पुरुषों का लिंग?”

“बाकी लोगों का नहीं मालूम, लेकिन इनका तो बहुत पुष्ट है। इतना (मैंने हवा में ही उँगलियों को करीब सात इंच दूर रखते हुए बनाया) लम्बा, और मेरी कलाई से भी मोटा है!”

“क्या बात कर रही है? ऐसा भी कहीं होता है?”

“वो मुझे नहीं मालूम… लेकिन इनका तो ऐसा ही है। और तुझे कैसे मालूम की कैसे होता है? किस किस का लिंग देखा है तूने?“

“बाप रे! और वो तेरे अन्दर चला जाता है?” उसने मेरे सवाल की अनदेखी करते हुए पूछा।

“मैंने भी यही सोचा! उनका मोटा तगड़ा लिंग देख कर मैंने यही सोचा की यह मुझमे समाएगा कैसे! उस समय मुझे पक्का यकीन हो गया की आज तो दर्द के मारे मैं तो मर ही जाऊंगी! सोच ले, शादी करने के बाद लड़कियों को बहुत सी तकलीफ़ झेलनी पड़ती हैं। और मेरी किस्मत तो देखो…. उनका लिंग तो हमेशा खड़ा रहता है… कभी भी शांत नहीं

रहता! जानती है, मेरी हथेली उनके लिंग के गिर्द लिपट तो जाती है, लेकिन घेरा पूरा बंद नहीं होता। इतना मोटा! बाप रे! और तो और, उनके लिंग की लम्बाई का कम से कम आधा हिस्सा मेरी पकड़ से बाहर निकला हुआ रहता है।" अब मैं भी पूरी निर्लज्जता और तन्मयता के साथ सहेलियों के ज्ञान वर्धन में रत हो गयी।

"अरे तो फिर ऐसे लिंग को तू अन्दर लेती कैसे है?"

"मैंने बताया न... वो यह सब इतने प्यार से करते हैं की दर्द का पता ही नहीं चलता। वो बहुत देर तक मुझे प्यार करते हैं – चूमते हैं, सहलाते हैं, इधर उधर चाटते हैं। जब वो आखिर में अपना लिंग डालते हैं तो दर्द तो होता है, लेकिन उनके प्यार और इस काम के आनंद के कारण उसका पता नहीं चलता।"

ऐसे ही बात ही बात में न जाने कैसे मेरे मुंह से हमारी नग्न तस्वीरों वाली बात निकल पड़ी। कहना ज़रूरी नहीं है की ये सारी लड़कियां हाथ धो कर मेरे पीछे पड़ गईं की मैं उनको ये तस्वीरे दिखाऊँ। किसी तरह से अगले दिन कॉलेज के बाद दिखाने का वायदा कर के मैंने जान छुड़ाई।

अगले दिन कॉलेज के बाद हम चारों लडकियां हमारे बुग्याल/झील वाले झोपड़े की ओर चल दीं। मैं तो आराम से थी, लेकिन बाकी तीनों जल्दी जल्दी चल रही थीं, और मुझे तो मानों घसीट रही थीं। खैर, हम लोग वहां जल्दी ही पहुँच गए।

"जानती हो तुम लोग... हम दोनों ने यहाँ पर भी.... हा हा!" मैंने डींग हांकी।

"क्या!!!? बेशरम कहीं की! और तुम ही क्या? तुम दोनों ही बेशरम हो! अब तो हमको यकीन हो गया है की तुम दोनों ने ऐसी वैसी तस्वीरें खिंचाई हैं। खैर, अब जल्दी से दिखा दे... देर न कर!" तीनों उन तस्वीरों को देखने के लिए मरी जा रही थीं।

मैं भी उनको न सताते हुए 'उन' तस्वीरों को सिलसिलेवार ढंग से दिखाने लगी। शुरुवात हमारी उन तस्वीरों से हुई जब हम बीच पर नग्न लेटे सो रहे थे, और सुजेन ने चुपके से हमारी कई तस्वीरें खींच ली। उन तस्वीरों में हम पूर्णतः नग्न और आलिंगनबद्ध होकर सो रहे थे। अथर्व मेरी तरफ करवट करके लेटे हुए थे – उनका बायाँ पाँव मेरे ऊपर था, और उनका अर्ध-स्तंभित लिंग और वृषण स्पष्ट दिख रहे थे। मैं पीठ के बल लेटी हुई थी और

मेरा नग्न शरीर पूरी तरह प्रदर्शित हो रहा था। सच मानिए, तो कुछ ज्यादा ही प्रदर्शित हो रहा था।

“प्रिया! मेरी जान!” एक सहेली ने कहा, “तुझको मालूम है की तू कितनी सुन्दर है? तुझे देख कर मन हो रहा ही काश मैं मर्द होती तो मैं तुझसे शादी करती! सच में!” कहते हुए उसने मुझे चूम लिया।

“अरे ऐसा क्या है! तुम तीनों भी तो कितनी सुन्दर हो!”

“अगर ये सच होता, मेरी बन्नो, तो जीजू तुझे नहीं, हम में से किसी को चुनते! क्या पैनी नज़र है उनकी!” कह कर एक ने मेरे स्तन पर चिकोटी काट ली।

“चल, अब और सब दिखा..”

आगे की तस्वीरों में मैंने जम कर पोज़ लगाये थे... कभी मुस्कुराती हुई, कभी मादक अदाएं दिखाती हुई! कुछ तस्वीरों में मैं एक पेड़ के तने पर पीठ टिका कर अपने दाहिने हाथ से ऊपर की एक डाली को और बाएँ हाथ से अपने बाएँ पैर को घुटने से मोड़ कर ऊपर की तरफ खींच रही थी। यह तस्वीरें सबसे कामुक थीं – उनमें मेरा पूरा शरीर और पूरी सुन्दरता अपने पूरे शबाब पर प्रदर्शित हो रही थी। कुछ तस्वीरों में मैं अपने चूचक उँगलियों से पकड़ कर आगे की ओर खींच रही थी – शर्म, झिझक, उत्तेजना और गर्व का ऐसा मिला जुला भाव मेरे चेहरे पर मैंने पहले कभी नहीं देखा था। आगे की तस्वीरों में अथर्व अपने आग्नेयास्त्र पर प्रेम से हाथ फिरा रहे थे; फिर उनके लिंग की कुछ अनन्य तस्वीरें आईं, जिसमें पूरे लिंग का अंग विन्यास साफ़ प्रदर्शित हो रहा था।

और फिर आईं वह तस्वीरें जिनको देख कर मेरी सहेलिया दहल गईं। वे तस्वीरें थीं जिनमें मैं अथर्व का लिंग अपने मुंह में लेकर उसको चूम, चूस और चाट रही थी। मुख मैथुन का ऐसा उन्मुक्त प्रदर्शन तो मैंने भी नहीं देखा था पहले... सहेलियों की तो बात ही क्या? वो सभी मत्रमुग्ध हो कर वो सारे चित्र देख रही थीं... उनके लिंग के ऊपर से शिश्नग्रच्छद पीछे हट गया था, जिससे हलके गुलाबी रंग का लिंगमुंड साफ़ दिखाई दे रहा था। आगे की कुछ तस्वीरों में उनका लिंग मेरे मुख की और गहराइयों में समाया हुआ था।

“हाय प्रिया! तुझे गन्दा नहीं लगा?”

“पहली बार तो कुछ उबकाई आई... लेकिन जब इनको गन्दा नहीं लगता (मेरा मतलब अथर्व द्वारा मुझे मुख-मैथुन करने से था) तो मुझे क्यों लगेगा?”

“अरे जीजू को तो मज़ा आ ही रहा होगा!” फिर उसका दिमाग चला, “एक मिनट... उनको क्यों गन्दा लगेगा?” उसने पूछा।

“नहीं.. मेरा मतलब वो नहीं था.. तेरे जीजू भी तो मुझे वहाँ चू...” कहते कहते मैं शर्मा कर रुक गयी।

“क्या? सच में? हाय! प्रिया! तू सचमुच बहुत लकी है!”

आगे की तस्वीरों में अथर्व मुझे भोगने में पूरी तरह से रत थे - वे कभी मेरे होंठो को चूमते, तो कभी मेरे स्तनों को। और फिर आया आखिरी पड़ाव – उनका लिंग मेरी योनि के भीतर!

“बाप रे! ऐसे होता है सहवास?!” सहेलियां बस इतना ही कह सकीं।

जब तस्वीरें ख़तम हो गईं, तब मेरी सभी सखियाँ भी शांत हो गईं। आज उनको ऐसा ज्ञान मिला था, जो वो अपने उम्र भर नहीं भूल सकेंगी।

मैंने उनको प्यार से समझाया की सहवास विवाह का सिर्फ एक छोटा सा हिस्सा है। अगर सिर्फ उसी पर ध्यान लगेगा तो दिल टूटने की पूरी गुन्जाइश है! विवाह तो बहुत ही विस्तीर्ण विषय है... उनका प्यार... वो जिस तरह से मुझे सम्मान देते हैं और मेरी हर इच्छा की पूर्ती करते हैं, वह ज्यादा बड़ी बात है। इसी कारण से उनकी हर इच्छा पूरी करने का मेरा भी मन होता है। जीवन भर के इस नाते को निभाने के लिए पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति वफादार होना बहुत आवश्यक है। सुख तो तभी होता है। अगर विवाह की नींव बस काम वासना की तृप्ति ही है, तो बस, फिर हो गया कल्याण! ये तो मुझे और पढ़ने, आगे बढ़ने और यहाँ तक की अपना खुद का काम करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। और मुझे मेरे खुद के व्यक्तित्व को निखारने के लिए बढ़ावा दे रहे हैं। ...वो मुझे कैसे न कैसे हंसाने की कोशिश करते रहते हैं.. ऐसा नहीं है की उनकी हर बात, या हर जोक पर मुझे हंसी आती है... लेकिन वो कोशिश करते हैं की मैं खुश रहूँ.. यह बात तो मुझे समझ में आती है! अपने माँ बाप का घर छोड़ कर, उस अनजान जगह पर, अनजान परिवेश में, एक अनजान आदमी के साथ मैं रह सकी, और रहना चाह रही हूँ, अपने को सुरक्षित मान सकी, और

उनको मन से अपना मान सकी तो उसके बस यही सब कारण हैं... यह सब कुछ सिर्फ मन्त्र पढ़ने, और रीति रिवाज़ निभा लेने से तो नहीं हो जाता न!

मेरी सहेलियों ने मेरी इस बात को बहुत ध्यान से सुना। उनके मन में क्या था, यह मुझे नहीं मालूम... लेकिन जब मेरी बात ख़तम हुई, तो सभी ने मुझे कहा की वो मेरे लिए बहुत खुश हैं! और चाहती हैं, और भगवान् से यही प्रार्थना करती हैं की हमारी जोड़ी ऐसे ही बनी रहे, और हम हमेशा खुश रहें।

१७

एक महीना ज्यादा भी होता है और कम भी! उसका अंतराल इस बात पर निर्भर करता है की हमारी मनःस्थिति कैसी है? मजे की बात यह है की हम दोनों की मनःस्थिति प्रसन्न भी थी, और बेकल भी। प्रसन्न इस बात से की एक एक कर के महीने के सारे दिन बीत रहे हैं, और बेकल इस बात से की कैसे जल्दी से ये दिन बीत जाएँ। विचित्र बात है न की प्रकृति अपने निर्धारित वेग पर चलती रहती है, लेकिन हम मानव अपने मन में कुछ भी सोच सोच कर उसके विचित्र परिमाण बनाते रहते हैं – 'यह हफ्ता कितनी जल्दी बीत गया', 'इस बार यह साल बहुत लम्बा था' इत्यादि!

मैंने इस माह सिर्फ तीन काम ही किए – अपना ऑफिस का काम (भगवान् की दया से यह बहुत ही लाभकर महीना साबित हुआ), सेहत बनाना (शादी के बाद इस दिशा में कुछ लापरवाही हो गयी थी.. लेकिन अब वापस पटरी पर आ गयी) और प्रिया की बाट जोहना!

शनिवार सवेरे के करीब साढ़े दस बज रहे होंगे – आज वैसे भी बहुत ही आलस्य लग रहा था। सवेरे न तो जॉगिंग करने गया, और न ही कसरत! बस पैंतालीस मिनट पहले ही जबरदस्ती बिस्तर से उठ कर, कॉफ़ी बना कर, अखबार के साथ पीने ही बैठा था की डोरबेल बजी!

'इतने सवेरे सवेरे कौन है!' सोचते हुए मैंने जब दरवाज़ा खोला तो देखा की सामने निकिता खड़ी थी। निकिता याद है न? मेरी भूतपूर्व प्रेमिका!

"हाआआय!" निकिता का मुस्कुराता हुआ चेहरा जैसे सौ वाट के बल्ब जैसे चमक रहा था।

मैं भौंचक्क! 'ये यहाँ क्या कर रही है?' दिमाग में अविश्वास और संदेह ऐसे कूट कूट कर भरा हुआ है की सहजता समाप्त ही हो चली है मेरे अन्दर। मेरे मुंह से बोल नहीं निकली।

"आज बाहर से ही दफ़ा करने का इरादा है क्या?" निकिता ने बुरा नहीं माना। अच्छे मूड में लग रही है।

"हे! हेल्लो! आई ऍम सॉरी! प्लीज... कम इन! यू सरप्राइज्ड मी!" मैंने खुद को संयत कर के जल्दी से उसको अन्दर आने का इशारा किया।

“सरप्राइज होता तो ठीक था... तुम तो शाक्ड लग रहे हो! हा हा!” निकिता हमारे ब्रेकअप से पहले अक्सर घर आती थी, और हम दोनों कई सारे अन्तरंग क्षण साथ में बिता चुके थे... लेकिन वो पुरानी बात है।

“कॉफ़ी पियोगी?” मैंने पूछा।

“अरे कुछ पीना पिलाना नहीं है! आज तो मस्ती करने का मूड है! प्रिया कहाँ है? उसको शौपिंग करवाने लेने आई हूँ..”

“शौपिंग?” निकिता को शौपिंग करना बहुत अच्छा लगता था (वैसे किस लड़की/स्त्री को अच्छा नहीं लगता?)।

“प्रिया तो नहीं है..”

“नहीं है? कहाँ गयी?”

“वो अपने मायके गई है..”

“मायके? अरे, अभी तो तुम दोनों वापस आये हो हनीमून से! अभी से दूरियाँ? या फिर तुमने कुछ कर दिया, यू नॉटी बॉय? यू क्नो! हा हा हा!” निकिता मेरी टांग खींचने से बाज़ नहीं आती कभी भी।

कमाल की बात है! इस लड़की का दिल वाकई बहुत बड़ा है। मैंने ब्रेकअप के बाद, जिस बेरुख़ी से निकिता से किनारा किया था, मुझे कभी नहीं लगता था की वो मुझसे फिर कभी बात भी करना चाहेगी। लेकिन उसको इस तरह से हँसते बोलते देख कर मुझे यकीन हो गया की उसने मुझे माफ़ कर दिया था। लेकिन फिर भी, मैं अपने नए जीवन में कोई भी या किसी भी प्रकार का उलझाव नहीं आने देना चाहता था।

‘इसको जल्दी टरकाओ यार!’ मैंने सोचा।

“ऐसा कुछ नहीं है... उसकी क्लासेज हैं न! इसलिए गयी है।“

“क्लासेज? कौन सी? किस क्लास में है वो अभी?”

“कॉलेज! आएगी वो दस दिन बाद! तब ले जाना उसको शौपिंग!” मुझे लगा की वो यह सुन कर चली जायेगी।

“व्हाट? कॉलेज? तुमने ‘बाल विवाह’ किया है क्या? हा हा हा! ओ माय गॉड! बालिका वधू.. हा हा हा!” निकिता पागलो के तरह सोफे पर हँसते हुए लोट पोट हुई जा रही थी।

“सॉरी सॉरी... हा हा! मेरा वो मतलब नहीं था। मैं बस तुमसे मजे ले रही हूँ.. ओके? डोंट माइंड!” निकिता अंततः चुप हुई.. और कुछ देर रुकने के बाद बोली,

“... प्रिया वाकई बहुत प्यारी है। यू आर अ लकी मैन! उस दिन तुम्हारी रिसेप्शन क्रैश करने के लिए मुझे माफ़ कर देना... लेकिन मैं देखना चाहती थी की तुमने किससे शादी की है.. रहा नहीं गया! पुरानी आदत! सॉरी!” उसकी आवाज़ में निष्कपटता थी।

“लेकिन... उस दिन उसको देखा तो मैं अपना सारा गुस्सा भूल गई! यू डिसर्व्ड हर। वो बहुत प्यारी है... तुम बुरे आदमी नहीं हो... बस थोड़ा बच्चे जैसे हो। वो छोटी है, लेकिन तुमको प्यार करती है – उसकी आँखों में दिखता है। शी विल टेक केयर ऑफ़ यू! और यह मत सोचना की मैं प्रिया से मिल कर तुम्हारी कोई बुराई करूंगी... आई जस्ट वांट टू बी हर फ्रेंड! डू यू माइंड?” निकिता की यह स्पीच बहुत संजीदा थी। कोई बनावट नहीं।

“आई ऍम सॉरी निकिता। आई रियली ऍम! शायद तुम सही हो – और मैं वाकई एकदम बचकाना हूँ..”

निकिता ने मेरी बात बीच में काट दी, “... नहीं बचकाने नहीं.. मेरा मतलब था, तुम मेरे छोटे भाई होने चाहिए थे.. लवर नहीं।“

“तुमने शादी की?”

“तुमको क्या लगता है?”

“ह्म्म्म....” (मतलब नहीं की।)

“प्यार वार के मामले में अपनी किस्मत थोड़ी खोटी है.. खैर, मेरी बात फिर कभी.. तुम बताओ.. नया और एक्साइटिंग तो तुम्हारी लाइफ में चल रहा है.. सबसे पहले ये बताओ की तुमको इतनी प्यारी लड़की मिली कहाँ? ... और हाँ, एक कप कॉफ़ी मेरे लिए भी बना दो!”

निकिता से बात करके ऐसा लगा ही नहीं की उससे आखिरी बार तीन साल पहले मिला। ये लड़की बहुत बिंदास थी – पूरी तरह स्वनिर्भर, बेख़ौफ़, और अपने मन की बात कहने और करने वाली। बहुत कुछ सीखा मैंने इससे... लेकिन होनी को कुछ और ही मंज़ूर था! मैंने अपनी उत्तराँचल रोड-ट्रिप और फिर प्रिया और उसके परिवार वालों से मिलने, और फिर हमारी शादी की बात सिलसिलेवार तरीके से सुना दी। निकिता को यह सुन कर अच्छा लगा की मैंने कम से कम छुट्टियाँ तो लीं..

“ये तो पूरी तरह से फेयरी-टेल है! आई ऍम सो हैप्पी फॉर यू..” फिर घड़ी देखते हुए, “अरे यार! ये तो एक बज रहा है! पूरा प्लान बेकार हो गया... बोलना अपनी बीवी को, की ऐसे इधर उधर रहेगी तो हमारी दोस्ती कैसे होगी?”

जवाब में मैं सिर्फ मुस्कुरा दिया।

“अच्छा... तो हम चलते हैं..” गाते हुए निकिता उठने लगी।

मैं मुस्कुराया, “ओके! बाय! यू टेक केयर!”

“अरे.. दोस्तों को ऐसे विदा करते हैं?” कहते हुए निकिता ने गले मिलने के लिए अपनी बाहें फैला दीं। अब शिष्टाचार के नाते गले तो मिलना ही चाहिए न? मैं झूठ नहीं बोल सकता – निकिता को इतने समय बाद वापस गले लगाना अच्छा लगा... बहुत अच्छा! वही पुराना, परिचित और सुरक्षित अनुभव! मैंने उसके बालों में हाथ फिराया – प्रतिउत्तर में उसके गले से हलकी ‘हम्म्म्म’ जैसी आवाज़ निकली। उसको आलिंगन में ही बांधे, मैंने उसके बाल पर एक चुम्बन लिया।

“अरे.. ये तो गलत बात है! अगर किस करना है, तो लिप्स पर करो! बालों पर क्यों वेस्ट करना?” कहते हुए उसने मुझे होंठों पर चूम लिया। और हँसते हुए मेरे बालों में कई बार

हाथ फिराया। मैं वहीँ दरवाज़े पर हक्का बक्का खड़ा यह सोचता रह गया की यह क्या हुआ?

“ओके! टाटा! प्रिया आ जाय तो बताना... आई विल कम!” कहते हुए वह बाहर निकल गयी। और मैं सोचता रह गया की यह सब हुआ क्या?

और जल्दी ही प्रिया के वापस आने दिन आ गया।

प्रिया ट्राली पर अपना सामान लेकर बाहर निकली। बहुत प्यारी लग रही थी – उसने एक श्वेताभ (ऑफ व्हाइट) कुरता और नीले रंग का सलवार पहना हुआ था। दुपट्टा भी श्वेताभ ही था। नहीं भाई – यह कोई यूनिफार्म नहीं था, लेकिन उससे प्रेरित ज़रूर लग रहा था। मेरे साथ तो मैंने कभी भी प्रिया को सिन्दूर, मंगलसूत्र इत्यादि के लिए जबरदस्ती नहीं की – उसके कारण पूछने पर मैं उसको कहता की उसका पति तो उसके साथ है, फिर ऐसी औपचारिकताओं की क्या आवश्यकता? लेकिन उत्तराँचल में वह पूरी तरह से अपने माता पिता की रूढ़िवादी चौकसी के अधीन रही होगी, लिहाजा उसने इस समय सिंदूर, मंगलसूत्र, चूड़ियाँ और बिछिया सब पहन रखी थी। सलवार कुरता पहनने को मिल गया, यही बहुत है। प्रिया कुछ सहमी सी और उद्विग्न लग रही थी। उसकी आँखें निश्चित तौर पर मुझे ही ढूंढ रही थी।

'बेचारी! पहला लम्बा सफ़र और वो भी अकेले!' लेकिन, हर बार तो मैं उसके साथ नहीं जा सकता न! उसको देखते ही मेरे चेहरे पर ख़ुशी की लहर दौड़ गयी, एक बड़ी सी मुस्कान खुद ब खुद पैदा हो गई।

"जानू! यहाँ!" मैंने पागलों के जैसे हाथ हिलाते हुए उसका ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट करने का प्रयास किया।

प्रिया ने आवाज़ का पीछा करते हुए जैसे ही मुझे देखा, उसकी बाछें खिल गईं। सामान छोड़ कर वो मेरी तरफ भागने लगी। राहत, ख़ुशी और जोश – यह मिले जुले भाव.. जैसे किसी बिछड़े हुए को कोई अपना मिल गया हो!

"जानू... जानू!!" न जाने कितनी ही बार वह यही एक शब्द भावुक हो कर दोहराते हुए मेरी बाहों में समां गयी। बहुत भावुक! कितना प्रेम! ओह! मैं इस लड़की को कितना प्यार करता हूँ! मैंने जोश में आकर उसको अपने आलिंगन में ही भरे हुए उठा लिया। न जाने किस स्वप्रेरणा से, प्रिया ने भी अपनी टांगें मेरे इर्द गिर्द लपेट लीं।

मैंने तुरंत ही अपने होंठ उसके होंठ पर रख दिए – मेरे लिए इससे अधिक स्वाभाविक बात और कुछ नहीं हो सकती थी। कुछ देर तक हमने यूँ ही फ्रेंच किस किया और फिर मैंने प्रिया को वापस ज़मीन पर टिकाया। आस पास खड़े लोग हमारा मेल देख कर ज़रूर लज्जित हो गए होंगे!

"मेरी जान..?"

“ह्म्म्म म्म्म?” वह मेरी आँखों में देख रही थी – कितनी सुन्दर! वाकई! मैंने नोटिस किया की उसका शरीर कुछ और भर गया था, उसके कोमल मुख पर यौवन के रसायनों का प्रभाव और बढ़ गया था, आँखों की बरौनियाँ और लम्बी हो गईं थीं, होंठों में कुछ और लालिमा आ गयी थी... कुल मिला कर प्रिया का रूप और लावण्य बस और बढ़ गया था। पहाड़ों की हवा में कुछ बात तो है!

“तुम बहुत सुन्दर लग रही हो! .. मैं बहुत बहुत हैप्पी हूँ की तुम वापस आ गयी!”

उसके चेहरे पर तसल्ली, खुशी, थकान और मिलन की भाव, एक साथ थे। हम दोनों बहुत दिनों बाद मिले थे... मिले क्या थे, बस यह समझिये की जैसे अन्धे को आखें और प्यासे को पानी मिल गया हो! इतने दिनों बाद उससे मिल कर दिल भर आया! पुरानी प्यास फिर जग गयी!

“मैं भी...!”

घर आते आते देर हो गई – बहुत ट्रैफिक था। रास्ते में मैंने घर पर सभी का हाल चाल लिया और प्रिया की पढाई लिखाई, सेहत और मेरे काम काज, और मौसम इत्यादि की चर्चा करी। घर आते ही सबसे पहले मैंने खाना लगाया (जो की मैंने एअरपोर्ट जाते समय पहले ही पैक करवा लिया था) और हमने साथ में खाया, और फिर टेबल साफ़ कर के बेडरूम का रूख़ किया। प्रिया अभी तक बेडरूम में नहीं आई थी – आकर वह जैसे ही बिस्तर पर बैठी, उसकी नज़र सामने की दीवार पर अपने नग्न चित्र पर पड़ी।

“अरे ये क्या लगा रखा है आपने? कोई अन्दर आकर देख ले तो?”

“क्या? अच्छा यह? यह तो मेरी जानेमन के भरपूर यौवन का चित्र है। आपके वियोग में इसी को देख कर मेरा काम चल रहा था।“

“आआ.. मेरा बच्चा!” प्रिया ने बनावटी दुलार जताते हुए कहा, “... इतनी याद आ रही थी मम्मी की..” और फिर ये कहने के बाद खिलखिला कर हंस दी। फिर अचानक ही, जैसे कुछ याद करते हुए, “पता है.... माँ ने आपके लिए शुद्ध... पहाड़ी फूलों के रस से बना हुआ शहद भेजा है...” कह कर उसने अटैची से एक बड़ी शीशी निकाली,

“रोज़ दो चम्मच शहद पीने को बोला है... दूध के साथ! आपको पता है? शहद से विवाहित जीवन और बेहतर बनता है।“

“अच्छा जी? ऐसा क्या? तो अब ये भी बता दीजिए की कब खाना है?” मैंने भी मज़े में अपना मज़ा मिलाया।

“रात में...” प्रिया ने आवाज़ दबा कर बोला.. जैसे कोई बहुत रहस्यमय बात करने वाली हो, “प्रेम संबंध बनाने से पहले... हा हा हा..!”

“हा हा! अरे मेरा शहद तो तुम हो! इसीलिए तो रोज़ तुमको खाता हूँ...” मैं अब मूड में आ रहा था, “ऊपर से नीचे तक रस में डूबी हुई... प्रेम सम्बन्ध बनाने से पहले मैं तो तुम्हारे अधर (होंठ) रस पियूँगा, फिर स्तन रस.. और आखिर में योनि रस...” कह कर मैंने प्रिया को पकड़ने की कोशिश करी। लेकिन वो छिटक कर मुझसे दूर चली गयी।

“छिः गन्दा बच्चा! अकेले रहते रहते बिगड़ गया है.. मम्मी से ऐची ऐची बातें करते हैं? .. ही ही!”

इस खेल में प्रिया के लिए प्रतिकूल परिस्थिति थी, और वह यह की उसके हाथ में भारी सा शहद का जार था। उसने बहुत सहेज कर उसको हमारे बेड के सिरहाने की टेबल पर रख दिया। मैंने तो इसी ताक में था – इससे पहले प्रिया कुलांचे भरती हुई कहीं और भाग पाती, मैंने उसको धर दबोचा। उसको पीछे से पकड़ने के कारण उसके स्तन मेरे दबोच में आ गए। महीने भर की प्यास पुनः जाग गयी : मैंने उनको बेदर्दी से दबाते और मसलते हुए, उसके खुले गले पर होंठों और दांतों की सहायता से एक प्रगाढ़ चुम्बन लिया। प्रिया सिसकने लगी।

“आह... क्यों इतने बेसब्र हो रहे हो?” चुम्बन जारी है, “...अआह्ह्ह.... आराम से करो न! कहीं भागी थोड़े ही न जा रही हूँ...” मैंने उसके बोलते बोलते ही जोर से चूसा, “...सीईईई! आह!”

“एक महीना तुमने तड़पाया है... आज तो बदला लेने का भी दिन है, और पूरा मज़ा लेने का भी...” और वापस चूमने में व्यस्त हो गया।

प्रिया अभी तक यात्रा वाले कपड़ो में ही थी.. उनसे मुक्त होने का समय आ गया था।

“बच्चे को मम्मी का दुद्धू पीना है...” मेरी आवाज़ उत्तेजनावश कर्कश हो गयी, “... अपनी चूचियां तो खोलो...” गन्दी बात शुरू! और मेरे हाथों की गतिविधियाँ भी!

मैं कभी उसके स्तन दबाता, तो कभी उसके खुले हुए अंगों पर ‘लव बाईट’ बनाता। प्रिया की हल्की हल्की सिसकारियाँ निकलने लगी थी। उसने मुझे इशारे से बताया की लाइट भी जल रही है और खिड़की पर पर्दा भी नहीं खींचा है, कोई देख सकता है।

मुझे इस बात की परवाह नहीं थी... वैसे भी इतनी रात में भला कौन जागेगा? और अगर कोई इतनी रात में जागे, तो उसको कुछ पारितोषिक (ईनाम) तो मिलना चाहिए! मैंने प्रिया को पलट कर अपनी तरफ मुखातिब किया। उसकी आँखें बंद थीं। मैंने अपनी उंगली को उसके नरम होंठों पर फिराया, और फिर उसके होंठों को चूमने लगा। ‘उम्म्म! परिचित स्वाद!’ प्रिया भी चुम्बन में मेरा पूरा साथ देने लगी। एक दूसरे के होठों को प्रगाढ़ता से चूमने चूसने के दौरान मैंने उसकी कमर पर हाथ रख दिया और कुरते के अंदर हाथ डाल कर उसकी कमर को सहलाने लगा। बीच बीच में उसकी नाभि में उंगली से गुदगुदाने लगा।

कपड़े तो खैर मैंने भी अभी तक चेंज नहीं किये थे। प्रिया भी अपनी तरफ से पहल कर रही थी – उसने मेरी पैंट की जिप खोली, और मेरी चड्ढी की फाँक में अपना हाथ प्रविष्ट कर के मेरे लिंग को अपनी मुट्ठी में पकड़ कर बाहर निकाल लिया। ऊपर चुम्बन, नीचे प्रिया की कमर को सहलाना, और मेरे लिंग का सौम्य मर्दन! इन सब में मुझे बड़ा मजा आ रहा था। मैंने एक हाथ को उसके कुरते के अन्दर ही ऊपर की तरफ एक स्तन की तरफ बढाया, और दूसरे हाथ को उसके सलवार और चड्ढी के अन्दर डालते हुए उसकी योनि को छुआ।

‘वैरी गुड! उत्तेजना से फूली हुई... गर्म.... नम... योनि रस निकल रहा था।‘ मैंने कुछ देर अपनी उंगली को योनि की दरार पर फिराया, और फिर उसको निर्वस्त्र करने का उपक्रम शुरू किया। कुरता उतारते ही एक अद्भुत नज़ारा दिखाई दिया। उसके गोरे गोरे शरीर पर, स्तनों को कैद किये हुए काले रंग की ब्रा थी! गले में पड़ा मंगलसूत्र दोनों स्तनों के बीच में पड़ा हुआ था। सचमुच प्रिया का शरीर कुछ भर गया था - कमर और स्तनों में और वक्रता आ गयी थी! इस समय प्रिया किसी परी को भी मात दे सकती थी! मैंने हाथ बढा कर उसके स्तनों को हल्के से दबाया।

“ये दोनों.. थोड़े बड़े हो गए हैं क्या?”

प्रिया खिलखिला कर हंस दी, “और क्या! आप नहीं थे, इसलिए आपके हाथों में समाने के लिए व्याकुल हो रहे थे ये दोनों!” उसकी इस बात पर हम दोनों हँसने लगे। मैं पागलों के जैसे ब्रा के ऊपर से ही उनको दबाने और चूमने लगा।

“अरे रे रे..! ऐसे ही करने का इरादा है क्या?” प्रिया ने कामुक अंगड़ाई लेते हुए कहा, “ब्रा को भी तो उतारिए न!”

“आज तो तुम ही उतारो मेरी जान! हम तो देखेंगे!”

प्रिया मुस्कुराई और फिर बड़े ही नजाकत के साथ हाथ पीछे कर कर के अपनी ब्रा के हुक़ खोले और जैसे ही उसने वह काला कपड़ा हटाया, दोनों स्तन आज़ाद हो गए। मानों रस से भरे दो सिन्दूरी आम उसकी छाती पर परोस दिए गए हों! दोनों स्तनाग्र इरेक्ट! और मेरा लिंग भी!

मैंने इशारे से उसको सलवार भी उतारने को कहा। प्रिया ने नाड़ा खोल कर जैसे ही उसको ढीला किया, सलवार उसकी टांगो से होकर फर्श पर गिर गयी। चड्ढी के सामने वाला हिस्सा कुछ गीला हो रहा था। वही हिस्सा उसकी योनि की दरार में कुछ फंसा हुआ था। अब मुझसे रहा नहीं गया; मैंने तुरंत प्रिया को अपनी गॉड में उठाया और बिस्तर पर पटक दिया और अपने दोनों हाथों से प्रिया की चड्ढी नीचे सरका दी।

मैंने प्रिया को बिस्तर पर चित लेटा कर अपने आलिंगन में भरा, और उसके पूरे शरीर को सहलाना और चूमना आरम्भ कर दिया। प्रिया भी कुछ ऐसे लेटी थी, जैसे उसकी दोनों टाँगे मेरी कमर के गिर्द लिपटी हुई थीं। मैं उसके होंठो को चूमते हुए, उसके पूरे शरीर पर हाथ फिराने और सहलाने लगा।

कुछ देर ऐसे ही प्यार करने के बाद, मैं बिस्तर पर प्रिया के एक तरफ लेट गया और उसकी जांघें यथासंभव खोल दीं, और फिर बारी बारी उसके होंठ और स्तनाग्र चूमते हुए उसकी जाँघों को सहलाने लगा। उत्तेजना के मारे प्रिया की जाघें और खुल गईं। प्रिया के होंठ चूमते हुए मैंने उँगलियों से उसकी योनि का मर्दन आरम्भ कर दिया। योनि मर्दन करते हुए मैं रह

रह कर उसके स्तनाग्र भी चूमता और चूसता। प्रिया भी एक महीने से अतृप्त बैठी हुई थी ... इसलिए फोरप्ले के बहुत मूड में नहीं लग रही थी। फिर भी ऐसी क्रियाओं में सिर्फ आनंद ही आता है।

मैंने कुछ देर उसकी योनि से छेड़खानी करने के बाद वापस उसके स्तनों पर हमला किया। मैंने उसके दोनों स्तनों को अपनी हथेलियों में कुछ इस प्रकार दबाया , जिससे उसके स्तनाग्र पूरी तरह से बाहर निकल आयें, और फिर उनको बारी बारी से देर तक जी भर के पिया। प्रिया उत्तेजक बेबसी में रह रह कर सिर्फ मेरे बाल, पीठ और गाल सहला रही थी। मैं भी दया कर के बीच बीच में स्तनाग्र छोड़ कर उसके होंठों को चूमने लगता। फिर भी स्तनों पर मेरी पकड़ नहीं छूटी।

शीघ्र ही प्रिया अपनी उत्तेजना के चरम पर थी, और उसकी योनि से शहद की बारिश होने लगी। मैंने उसको बिस्तर पर ऐसे ही छोड़ा, जिससे वह अपनी साँसे संयत कर सके। जब वापस आया तो मेरे हाथ में माँ का दिया हुआ शहद का जार और एक चम्मच था।

मैंने दो चम्मच शहद अपने मुंह में डाला (लेकिन निगला नहीं), और वापस बिस्तर पर आ बैठा। बैठने से पहले जार को बिस्तर के साइड में नीचे की तरफ रख दिया था, जिससे आवश्यकतानुसार शहद का सेवन किया जा सके। वापस आकर मैंने संतृप्त प्रिया को अपनी गोद मैं बैठाया और आलिंगन में भर के उसके होंठों को चूमने लगा। इस चुम्बन से माध्यम से मैं प्रिया को अति सुगन्धित पहाड़ी फूलों के रस से बने शहद को पिलाने लगा। सच कहता हूँ, बाजारू उत्पाद इस शहद का क्या मुकाबला करेंगे? ऐसा स्वाद, ऐसी सुगंधि और ऐसी संरचना! थोड़ी देर में मैंने प्रिया को लगभग पूरा शहद पिला दिया (मैंने थोड़ा ही पिया)। उसके बार पुनः बारी बारी से होंठों, और दोनो स्तनाग्रों पर चुम्बन जड़ने लगा। कहने की आवश्यकता नहीं की प्रिया के स्तन मीठे हो गए थे।

आज तो बीवी को तबियत से भोगने का इरादा था! मैंने वापस प्रिया को बिस्तर पर लेटाया और उसकी दोनों जांघे फैला कर प्रिया को रिलैक्स करने को कहा। शहद के जार से एक चम्मच शहद निकाल कर मैंने एक हाथ की उँगलियों की मदद से उसकी योनि के पटल खोले और मीठा गाढ़ा शहद प्रिया की योनि में उड़ेल दिया।

"क्क्क्क्या कर रहे हैं आप..?" प्रिया मादक स्वर में बोली।

"आपके योनि रस को और हेल्दी बना रहा हूँ... जस्ट वेट एंड वाच!"

कह कर मैंने जैसे ही अपनी जीभ उसकी योनि में प्रविष्ट करी, तो उसकी एक तेज़ सिसकारी निकल गई। मैंने जीभ को प्रिया की योनि के भीतर घुसेड़ दिया – योनि के प्राकृतिक सुगंध की जगह पर अब फूलों की भीनी भीनी और मीठी सुगंध आ रही थी... और स्वाद भी.. बिलकुल मीठा! प्रिया इस एकदम नए अनुभव के कारण कामुक किलकारियाँ मारने लगी थी। उसने अपने नितम्ब उठाते हुए अपनी योनि मेरे मुँह में ठेल दी, और मेरे सिर को दोनों हाथों से ज़ोर से पकड़ कर अपनी योनि की तरफ भींच लिया। सिर्फ इतना ही नहीं, उत्तेजना के आवेश में प्रिया ने अपने पाँव उठा कर मेरे गले के गिर्द लपेट लिया। ऐसा करने से मुझे उसकी पूरी की पूरी योनि को अपने मुँह में भरने में आसानी होने लगी। अगले कोई पांच मिनट तक मैंने इस अद्भुत योनि रस को जी भर के पिया – दो चम्मच शहद, जो मैंने डाला था, और दो चम्मच खुद प्रिया का! प्रिया तड़प रही थी, और काम की अंतिम क्रीड़ा करने के लिए अनुनय विनय कर रही थी। लेकिन, उसको और भोगा जाना अभी बाकी था। प्रिया इसी बीच में एक बार और चरम सुख को प्राप्त कर लिया।

खैर, अंत में वह समय भी आया जब हम आखिरी क्रिया के लिए एक दूसरे में गुत्थम-गुत्था हो गये और एक दूसरे को कसकर पकड़ कर होंठों से होंठ मिला कर एक दूसरे का स्वाद लेने लगे। एक महीने की प्यास अब पूरी हो रही थी। मीठे होंठों और मुँह से! चूसते और चूमते हुए हम लोग जीभ से जीभ लड़ा रहे थे, रह रह के मैं उसके स्तनों को चूम, चूस और दबा रहा था, तो कभी उसकी गर्दन को चूम और चाट रहा था। मैंने जल्दी से अपने बचे खुचे कपड़े उतारे, और प्रिया की योनि में मैंने अपने लिंग की करीब तीन इंच लम्बाई एक झटके में अन्दर घुसा दी। प्रिया दर्द से ऐंठ गई, और उसकी चीख निकल गई।

‘यह क्या हुआ?’ संभव है, की एक महीने तक यौन सम्बन्ध न बनाने के कारण, योनि की आदत और पुराना कुमारी रूप वापस लौट आया हो! मतलब, एक और बार एकदम नई योनि को भोगने का मौका! मैंने उसकी कमर पकड़ ली जिससे वो दर्द से डर कर मना न कर दे। मैंने और धक्के लगाने रोक लिए, और लिंग को प्रिया की योनि में ही कुछ देर तक डाले रखा – एक दो मिनट के विश्राम के बाद जब प्रिया को कुछ राहत आई, तब मैंने धीरे-धीरे नपे-तुले धक्के लगाने शुरु किए, और लिंग को पूरा नहीं घुसाया।

मैंने प्रिया को और आराम देने के लिए उसके नितम्बों के नीचे एक तकिया लगा दिया, और पहले उसके होंठों को हलके हलके चूमा और फिर दोनों होंठ अपने मुँह में भर कर चूसने लगा। प्रिया अब पूरी तरह से तैयार हो गयी थी - उसने भी नीचे से हल्के-हल्के धक्के लगाने

शुरु कर दिए। मैंने अंततः अपने लिंग को एक ज़ोरदार धक्का लगा कर पूरे का पूरा उसकी योनि में घुसा दिया। प्रिया ने घुटी-घुटी आवाज़ में चीख़ भरी।

मैंने कहा, "जानू, वाकई क्या बहुत दर्द हो रहा है?"

"बाप रे! पहली बार जैसा फील हुआ! आप करिए ... मैं ठीक हूँ!"

"पक्का?"

"हाँ पक्का! आप करिए न... आगे तो बस आनन्द ही आनन्द है।"

फिर क्या? चिरंतन काल से चली आ रही क्रिया पुनः आरम्भ हो गयी। प्रिया बस मज़े लेते हुए मेरे बाल सहला रही थी। उसके अन्दर कुछ करने की शक्ति नहीं बची थी। वो भले ही कुछ न कर रही हो, लेकिन उसकी योनि भारी मात्रा में रस छोड़ रही थी। इस कारण से लिंग के हर बार अन्दर-बाहर जाने से अजीब अजीब प्रकार की पनीली ध्वनि निकल रही थी। खैर, मेरा भी यह प्रोग्राम देर तक चलाने का कोई इरादा नहीं था। इतना संयम तो नहीं ही है मुझमें! कोई चार मिनट बाद ही मेरे लिंग से वीर्य की पिचकारियाँ निकलने लगीं। प्रिया ने जैसे ही वीर्य को अपने अन्दर महसूस किया, उसने मुझे कस कर पकड़ लिया और मेरे होंठों, आँखों और गालों को कई बार चूमने लगी। थक गया! एक महीने का सैलाब थम गया! मैं उसकी बाँहों में लिपटा हुआ अगले लगभग दस मिनट तक उसके ऊपर ही पड़ा रहा।

जब प्रिया नीचे कसमसाई, तो मैं मानो नींद से जागा! प्रिया ने मेरे होंठों पर दो-तीन चुम्बन और जड़े और कहा, "गन्दे बच्चे! मन भरा? ... अब जल्दी से हटो, नहीं तो मेरी सू सू निकल जायेगी!" कहते हुए उसने उँगलियों से मेरी नाक पकड़ कर प्यार से दबा दी।

"चलो, मैं तुमको ले चलता हूँ.." मैंने प्रिया को गोद में उठाया और बाथरूम की ओर ले जाने लगा। प्रिया तृप्त, अपनी आँखें बंद किये हुए और मुस्कुराती हुई, अपनी बाँहें मेरे गले में डाले हुए थी। उसको बाथरूम में कमोड पर मैंने ही बैठाया। जैसे उसको किसी असीम दर्द से छुट्टी मिली हो! प्रिया आँखें बंद किये, और गहरी आँहें भरते हुए मूत्र करने लगी। मैं मंत्र मुग्ध सा होकर उस नज़ारे को देखने लगा – उसके योनि से मूत्र की पतली, लेकिन तेज़

धार निकल रही थी, और अभी-अभी कूटी जाने के कारण योनि के होंठ सूज गए थे – बढ़े हुए रक्त चाप के कारण उसकी रंगत अधिक लाल हो गयी थी।

प्रिया को इस प्रकार मूतते देख कर मुझे भी इच्छा जाग गई। मैंने उसके सामने खड़ा होकर अपने लिंग को निशाने पर साधा, उसके शिश्नाग्रच्छद (फोरस्किन) को पीछे की तरफ सरकाया और मैंने भी अपने मूत्र की धार छोड़ दी। निशाना सच्चा था – मेरी मूत्र की धार प्रिया की योनि की फाँकों के बीच पड़ने लगी। इस अचानक हमले से प्रिया की आँखें खुल गईं।

“गन्दा बच्चा! ... क्या कर रहा है! उफ्फ़्फ़!” संभव है की मेरे मूत्र में ज्यादा गर्मी हो!

“तुमको मार्क कर रहा हूँ, मेरी जान...! शेर अपने इलाके को ऐसे ही मार्क करता है न! हा हा!”

प्रिया ने कुछ नहीं कहा। हाँलाकि उसका पेशाब मुझसे पहले ही बन्द हो गया था, फिर भी वो उसी अवस्था में बैठी रही जब तक मैं मूत्र करना न बंद कर दूं! प्रिया मेरे मूत्र को भी ठीक उसी प्रकार ग्रहण और स्वीकार कर रही थी, जैसे मेरे वीर्य को! जब मैंने मूत्र करना बंद किया तो वह सीट से उठी, और फिर पांव की उँगलियों के बल उचक कर उसने मेरे होंठ चूम लिए। अब ऐसे मार्किंग (चिन्हित) करने के बाद तो हम लोग बिस्तर पर नहीं लेट सकते थे.. इसलिए हमने साथ ही हल्का शॉवर लिया और बदन पोंछ कर बिस्तर पर आ गए। मैंने लेटने से पहले कमरे की लाइट बंद कर दी थी – खिड़की के बाहर से आती हुई चाँदनी से कमरे में हल्का उजास था। प्रिया मेरे हाथ के ऊपर सर रखे हुए थी, और मेरे गले में बाहें भी डाले हुए थी। हमने उस रात कुछ और नहीं कहा – बस एक दूसरे के होंठों को चूमते, चूसते सो गए!

१८

प्रिया की नजर में:

मुझसे मेरे दोस्त अक्सर पूछते हैं की मैं और अथर्व कब मिले, कैसे मिले.. शादी के बाद का प्यार कैसा होता है, कैसे होता है… आदि आदि! उनको इसके बारे में बताते हुए मुझे अक्सर लगता की कभी मैं और अथर्व एक साथ बैठ कर इसके बारे में बात करेंगे और पुरानी यादें ताज़ा करेंगे! अभी दो दिन पहले मैं रेडियो (ऍफ़ एम) पर एक बहुत पुराना गीत सुन रही थी – हो सकता है की आप लोगों में भी कई लोगों ने सुना हो!

और आज घर वापस आकर मैंने जैसे ही रेडियो चलाया, फिर वही गाना आने लगा:

“चलो एक बार फिर से, अजनबी बन जाएँ हम दोनों!”

मेरे ख़याल से यह दुनिया के सबसे रोमांटिक दस बारह गानों में से एक होगा…!

मुझे पता है की अब आप मुझसे पूछेंगे की प्रिया, आज क्या ख़ास है जो रोमांटिक गानों की चर्चा हो रही है? तो भई, आज ख़ास बात यह है की आज अथर्व और मेरी शादी की दूसरी सालगिरह है! जी हाँ – दो साल हो गए हैं! इस बीच में मैंने कॉलेज की परीक्षा अच्छे अंकों से पास की, और कुछ इस कारण से और कुछ अथर्व की जान-पहचान के कारण से मुझे बैंगलोर के काफी पुराने और जाने माने कॉलेज में दाखिला मिल गया। शुरू शुरू में यह सब बहुत ही मुश्किल था – लगता था की कहाँ आ फंसी! इतने सारे बदलाव! अनवरत अंग्रेज़ी में ही बोल चाल, नहीं तो कन्नड़ में! मेरी ही हम उम्र लड़कियाँ मेरी सहपाठी थीं… लेकिन उनमे और मुझमे कितना सारा अंतर था! कॉलेज के गेट के अन्दर कदम रखते ही नर्वस हो जाती। दिल धाड़ धाड़ कर के धड़कने लगता। लेकिन अथर्व ने हर पल मुझे हौसला दिया – मानसिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक! हर प्रकार का! वो अपने काम में अत्यधिक व्यस्त होने के बावजूद मुझसे मेरे विषयों के बारे में चर्चा करते, जब बन पड़ता तो पढ़ाते (वैसे हमारे पड़ोसियों ने मुझे पढ़ाने में बहुत सहयोग दिया है.. आज भी मैं श्रीमति हेगड़े जी की शरण में ही जाती हूँ, जब भी कहीं फंसती हूँ)। और तो और, सहेलियां भी बहुत उदार और दयालु किस्म की थीं – वो मेरी हर संभव मदद करतीं, मुझे अपने गुटों में शामिल करतीं, अपने घर बुलातीं और यथासंभव इन नई परिथितियों में मुझे ढलने के लिए प्रोत्साहन देतीं। इसका यह लाभ हुआ की मेरी क्लास के लगभग सभी सहपाठी मेरे मित्र बन गए थे। शिक्षक और शिक्षिकाएँ भी मेरी प्रगति में विशेष रूचि लेते। वो सभी मुझे ‘स्पेशल स्टूडेंट’ कह कर

बुलाते थे। मैंने भी अपनी तरफ से कोई कोर कसार नहीं छोड़ी हुई थी – मैं मन लगा कर पढ़ती थी, और मेरी मेहनत का नतीजा भी अच्छा आ रहा था। कहने की कोई ज़रुरत नहीं की मुझे अपना नया कॉलेज बहुत पसंद आया...। अश्विनी के लिए भी अथर्व और मैंने अपने प्रिंसिपल से बात करी थी। उन्होंने मुझे भरोसा दिलाया था की अगर अश्विनी में प्रतिभा है, तो वो उसे अवश्य दाखिला देंगे। अश्विनी इस बार इंटरमीडिएट का एक्जाम् लिखेगी, और उसके बाद अथर्व उसको भी बैंगलोर ही लाना चाहते हैं, जिससे उसकी पढाई अच्छी जगह हो सके।

आप लोग अब इस बात की शिकायत न करिए की कहानी से दो साल यूँ ही निकाल दिए, बिना कुछ कहे सुने! इसका उत्तर यह है की अगर लोग खुश हों तो समय तो यूँ ही हरहराते हुए निकल जाता है। और रोज़मर्रा की बातें लिख के आपको क्या बोर करें? अब यह तो लिखना बेवकूफी होगा की 'जानू, आज क्या खाना बना है?' या फिर, 'आओ सहवास करें!' 'आओ कहीं घूम आते हैं.. शौपिंग करने!' इत्यादि! यह सब जानने में आपको क्या रूचि हो सकती है भला?

इतना कहना क्या उचित नहीं की यह दो साल तो न जाने कैसे गुजर गए! व्यस्तता इतनी है की अब उत्तराँचल जाना ही नहीं हो पाता! कॉलेज की परीक्षा देने के बाद सिर्फ दो बार ही जा पाई, और अथर्व तो बस एक बार ही जा पाए! उनको इस बीच में दोहरी पदोन्नति मिली है। जाहिर सी बात है, उनके पास समय की बहुत ही कमी हो गयी है... लेकिन यह उन्ही का अनुशासन है, जिसके कारण न केवल मैं ढंग से पढाई कर पा रही हूँ, बल्कि सेहत का भी ढंग से ख़याल रख पा रही हूँ। सुबह पांच बजे उठकर, नित्यक्रिया निबटा कर, हम दोनों दौड़ने और व्यायाम करने जाते हैं। वहाँ से आने के बाद नहा धोकर, पौष्टिक भोजन कर के वो मुझे कॉलेज छोड़ कर अपने ऑफिस चले जाते हैं। मेरे वापस आते आते काम वाली बाई आ जाती है, जो घर का धोना पोंछना और खाना बनाने का काम कर के चली जाती है। मैं और कभी कभी अथर्व, सप्ताहांत में ही खाना बनाते हैं.. व्यस्त तो हैं, लेकिन एक दूसरे के लिए कभी नहीं!

उधर पापा ने बताया की खेती में इस बार काफी लाभ हुआ है – उन्होंने पिछली बार नगदी फसलें बोई थीं, और कुछ वर्ष पहले फलों की खेती भी शुरू करी थी। इसका सम्मिलित लाभ दिखने लग गया था। अथर्व ने अपने जान-पहचान से तैयार फसल को सीधा बेचने का इंतजाम किया था.. सिर्फ पापा के लिए नहीं, बल्कि पूरे कसबे में रहने वाले किसानो के लिए! बिचौलियों के कट जाने से किसानो को ज्यादा लाभ मिलना स्वाभाविक ही था। अगले साल के लिए भी पूर्वानुमान बढ़िया था।

खैर, तो मैं यह कह रही थी, की इस गाने में कुछ ख़ास बात है जो मुझे अथर्व से पहली बार मिलने, और हमारे मिलन की पहली रात की याद दिलाती है। सब खूबसूरत यादें! अथर्व ने वायदा किया था की वो आज जल्दी आ जायेंगे – अगले दो दिन तो शनिवार और रविवार हैं... इसलिए कहीं बाहर जाने का भी प्रोग्राम बन सकता है! उन्होंने मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया। लेकिन उनका जल्दी भी तो कम से कम पांच साढ़े-पांच तो बजा ही देता है!

मैं कुर्सी पर आँखें बंद किए, सर को कुर्सी के सिरहाने पर टिकाये रेडियो पर बजने वाले गानों को सुनती रही। और साथ ही साथ अथर्व के बारे में भी सोचती रही। इन दो सालों में उनके कलम के कुछ बाल सफ़ेद हो (पक) गए हैं.. बाकी सब वैसे का वैसा ही! वैसा ही दृढ़ और हृष्ट-पुष्ट शरीर! जीवन जीने की वैसी ही चाहत! वैसी ही मृदुभाषिता! कायाकल्प की बात करते हैं.. इससे बड़ी क्या बात हो सकती है की उन्होंने अपने चाचा-चाची को माफ़ कर दिया। उनके अत्याचारों का दंड तो उनको तभी मिल गया जब उनके एकलौते पुत्र की एक सड़क हादसे में मृत्यु हो गयी। जब अथर्व को यह मालूम पड़ा, तो वो मुझे लेकर अपने पैत्रिक स्थान गए और वहाँ उन दोनों से मुलाकात करी।

अभी कोई आठ महीने पहले की ही तो बात है, जब अथर्व को किसी से मालूम हुआ की उनके चचेरे भाई की एक सड़क हादसे में मृत्यु हो गयी। अथर्व ने यह सुनते ही बिना एक मिनट देर किये भी उन्होंने मेरठ का रुख किया। हम दोनों ही लोग गए थे – उस दिन मैंने पहली बार इनके परिवार(?) के किसी अन्य सदस्य को देखा था। इनके चाचा की उम्र लगभग साठ वर्ष, औसत शरीर, सामान्य कद, गेहुंआ रंग... देखने में एक साधारण से वृद्ध पुरुष लग रहे थे। चाची की उम्र भी कमोवेश उतनी ही रही होगी.. दोनों की उम्र कोई ऐसी ख़ास ज्यादा नहीं थी.. लेकिन एकलौते पुत्र और एकलौती संतान की असामयिक मृत्यु ने मानो उनका जीवन रस निचोड़ लिया था। दुःख और अवसाद से घिरे वो दोनों अपनी उम्र से कम से कम दस साल और वृद्ध लग रहे थे।

उन्होंने अथर्व को देखा तो वो दोनों ही उनसे लिपट कर बहुत देर तक रोते रहे... मुझे यह नहीं समझ आया की वो अपने दुःख के कारण रो रहे थे, या अपने अत्याचारों के प्रायश्चित में या फिर इस बात के संतोष में की कम से कम एक तो है, जिसको अपनी संतान कहा जा सकता है। कई बार मन में आता है की लोग अपनी उम्र भर न जाने कितने दंद फंद करते हैं, लेकिन असल में सब कुछ छोड़ कर ही जाना है। यह सच्चाई हम सभी को मालूम है, लेकिन फिर भी यूँ ही भागते रहते हैं, और दूसरों को तकलीफ़ देने में ज़रा भी हिचकिचाते नहीं।

अथर्व को इतना शांत मैंने इन दो सालों में कभी नहीं देखा था! उनके मन में अपने चाचा चाची के लिए किसी भी प्रकार का द्वेष नहीं था, और न ही इस बात की ख़ुशी की उनको सही दंड मिला (एकलौते जवान पुत्र की असमय मृत्यु किसी भी अपराध का दंड नहीं हो सकती)! बस एक सच्चा दु:ख और सच्ची चिंता! अथर्व ने एक बार मुझे बताया था की उनका चचेरा भाई अपने माता पिता जैसा नहीं है... उसका व्यवहार हमेशा से ही इनके लिए अच्छा रहा। अथर्व इन लोगो की सारी खोज खबर रखते रहे हैं (भले ही वो इस बात को स्वीकार न करें! उनको शुरू शुरू में शायद इस बात पर मज़ा और संतोष होता था की अथर्व ने उनके मुकाबले कहीं ऊंचाई और सफलता प्राप्त करी थी। लेकिन आज इन बातो के कोई मायने नहीं थे)। अथर्व ने उनकी आर्थिक सहायता करने की भी पेशकश करी (जीवन जैसे एक वृत्त में चलता है.. अत्याचार की कमाई और धन कभी नहीं रुकते.. इनके चाचा चाची की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी), लेकिन उन्होंने यह कह कर मना कर दिया की जब ईश्वर उन दोनों को उनके अत्याचारों और गलतियों का दंड दे रहे हैं, तो वो उसमे किसी भी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न नहीं करेंगे। उनके लिए बस इतना ही उचित है की अथर्व ने उनको माफ़ कर दिया। मुझसे वो दोनों बहुत सौहार्द से मिले... बल्कि यह कहिये की बहुत लाड़ से मिले। जैसे की मैं उनकी ही पुत्र-वधू हूँ... फिर उन्होंने मुझे सोने के कंगन और एक मंगलसूत्र भेंट में दिया। बाद में मुझे मालूम हुआ की वो माँ जी (मेरी स्वर्गवासी सास) के आखिरी गहने थे। उस दिन यह जान कर कुछ सुकून हुआ की हमारे परिवार में कुछ और लोग भी हैं।

अथर्व में बदलाव तो थे ही, मुझमें खुद भी बहुत से बदलाव हो रहे थे। मैं तो बढ़ती युवती तो हूँ ही – खान पान की गुणवत्ता, दैनिक व्यायाम और पुरुष हार्मोन की नियमित खुराक से (अथर्व कभी कभी कंडोम का प्रयोग करना 'भूल?' जाते हैं...) मेरी देह अभी भी भर रही है। मेरे स्तन अब ३४सी के माप के हैं, कमर में कटाव, और नितम्बों में उभार साफ़ दिखता है। जब कभी नहाने के बाद मुझे फुर्सत होती है, तो मैं स्वयं का अनावृत्त शरीर देख कर प्रसन्न हो जाती हूँ! कभी कभी लगता है की किसी और को देख रही हूँ - कसे-भरे स्तन, छोटे कंधे, उन्नत नितंब, सपाट पेट, और करीने से कटे केशों से टपकती पानी की बूंदें! मैं कभी कभी खुद के शरीर पर मुग्ध हो जाती हूँ! किसकी कामना नहीं हो सकती ऐसी देह! मुझे गर्व है, की अथर्व मेरा भोग पाते हैं!

स्त्रियों को अक्सर ही छुईमुई जैसा शरमाया, सकुचाया सा दर्शाया जाता है, और उनसे इसी प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा भी करी जाती है। इतने बदलावों के बाद भी मैं अभी तक वैसी ही हूँ.. लेकिन अचरज तब होता है जब मैं अथर्व के साथ प्रणय करते समय बिल्कुल भी नहीं सकुचाती हूँ, बल्कि मैं तो उनकी सहयोगिनी ही बन जाती हूँ! कैसे होता है यह

सब? कभी कभी सोचती हूँ तो लगता है की एक स्त्री किसी पुरुष के साथ ऐसा व्यवहार तभी कर सकती है जब वो पुरुष उस स्त्री का प्रिय हो। जिसकी वो हमेशा कामना करे! जो न केवल उसके सपनों का अधिष्ठाता हो, बल्कि उसका सच्चा साथी बन कर स्त्री के जीवन के हर सुख दु:ख को बाँट कर सही अर्थों में सहचर बने!

अथर्व ने एक दिन मुझे कहा था, "तुमने कभी खजुराहो की मूर्तियां देखी है? यू हैव अ बॉडी लाइक खजुराहो आइडोल्स!"

खजुराहो आइडोल्स? मैंने पहले कभी खजुराहो के चित्र नहीं देखे थे.. हम लोग कभी वहाँ नहीं गए... लेकिन अथर्व ने जब ऐसा कहा तो मेरा मन नहीं माना! इंटरनेट पर खजुराहो के बारे में ढूँढा और वहाँ के मंदिरों और उन पर उकेरी गयी मूर्तियों की तस्वीरों को देखा! स्त्री जीवन के न जाने कितने रूप, न जाने कितने रंग उन शिल्पियों ने पत्थरों में गढ़ डाले थे! और तो और, सभी एकदम जीवंत से लगते! स्त्रियां ही स्त्रियां! उनके हर प्रकार के हाव-भाव, उनके शरीर की हर बनावट, अंगों के लोच, भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन – यह सब कुछ हैं वहाँ! स्त्री चित्त के हर रंग को साकार कर दिया था शिल्पियों ने इस प्राचीन स्वप्नलोक में! इन चित्रों को देखा, तो अथर्व की बात और समझ में आई! मैं पुलक उठी! यह उपमा तो उन्होंने निश्चित रूप से अपनी चाहत दर्शाने के लिए मुझे दी थी।

मैं आँखें बंद किए पुराने गीतों का आनंद ले रही थी, और उस दिन की याद कर रही थी जब अथर्व पहली बार मेरे घर आये थे। एक मजेदार बात है (आप लोगो ने भी कभी न कभी नोटिस किया ही होगा), किसी घटना के हो जाने के बाद (ख़ास तौर पर जब वो महत्वपूर्ण घटना हो) जैसे जैसे समय बीतता जाता है, उस घटना के कई सारे पहलू, या यह कह लीजिये की हमारे देखने का दृष्टिकोण बदल जाता है। मधुर संगीत के प्रभाव में अभी मुझे ऐसे जान पड़ रहा था की उस दिन रेडियो पर कोई रोमांटिक गाना बज रहा था। संभव है की ऐसा न हो! लेकिन इससे क्या ही बदल जाएगा? बस, वो यादें और मधुर बन जाएँगी।

ऐसा नहीं है की हम दोनों सिर्फ एक दूसरे को हमेशा इलू इलू ही बोलते रहते हैं.. अन्य विवाहित जोड़ों के समान ही हम में भी झगड़े होते हैं। लेकिन ऐसे झगड़े नहीं जिनमें मन मुटाव होता हो.. ज्यादातर बनावटी झगड़े! अरे भई, कहते हैं न.. इस तरह के झगड़े विवाहित जीवन में स्वाद भरते हैं! या फिर कभी कभी 'आज फिर से टिंडे बने हैं?' वाले। मारा-पीटी भी होती है (अक्सर अथर्व ही मारते हैं मुझे..) – ओह लगता है आप गलत समझ गए। ये वो वाली बनावटी मार है, जिसमे मुक्का मेरे शरीर के पास आता तो तेज़ से है, लेकिन मुझको छूता ऐसे है जैसे मेरी मालिश की जा रही हो... मारने से पहले अथर्व मुझे

अपने आलिंगन में कस कर बाँध लेते हैं और ऐसे मारते हुए वो अपने मुंह से वो ‘ए भिश्श.. ए भिश्श..” जैसी बनावटी आवाजें भी निकालते हैं। मतलब ऐसी मार जो, चोट तो बिलकुल नहीं देती, उल्टा गुदगुदी लगाती है। मैं हँसते हँसते लोट पोट हो जाती हूँ! कोई वयस्क हमको यह सब करते देखे तो अपना सर पीट ले! इतना प्यार! इतना दुलार! यह सब सोच सोच कर मेरी आँखें भर गईं!

यह दो साल कितनी जल्दी बीत गये! कुछ पता ही नहीं चला!! हम दोनों ने अपने दाम्पत्य जीवन के हर पहलू का आनंद उठाया था! आज भी, अगर अथर्व अपनी पर आ जाए (जो की अक्सर सप्ताहांत में होता ही है), तो मुझे पूरी रात सोने ही नहीं देते – मानो पूरे हफ्ते की कसर निकालते हैं। उनकी प्रयोगात्मक सोच के कारण, घर का कोई ऐसा कोना नहीं बचा जहाँ पर हमने सहवास नहीं किया हो! बिस्तर पर तो होता ही है, इसके अलावा बाथरूम में, दीवारों पर, बालकनी में, फर्श पर, और रसोईघर में भी हमने सहवास किया था। कभी कभी लगता की अति हो रही है.. इस वर्ष मैंने यूँ ही मज़ाक मज़ाक में यह गिनना शुरू किया की हम कितनी बार सहवास करते हैं... तीन सौ का आंकड़ा पार करते करते मैंने गिनती करनी बंद कर दी। ठीक है.. समझ आ गया की मेरे पति मेरे यौवन को दोनों हाथों से लूट रहे हैं! हा हा!

लेकिन ऐसा हो भी क्यों न? उनके छूने से मुझे सुख मिलता है। मन की व्यग्रता, शंकाएँ और कष्ट – सब तुरंत दूर हो जाते हैं। जिस तरह से वो मुझे देखते हैं... एक मादा के जैसे नहीं, बल्कि एक प्रेमिका के जैसे... जैसे मैं किसी स्पर्धा में प्राप्त पुरस्कार हूँ! बेहद इच्छित! उनकी छुवन में एक सकारात्मक ऊर्जा होती है – ऐसा नहीं है की उनकी छुवन लोलुपता विहीन होती है (ऐसा कभी नहीं महसूस हुआ), लेकिन वो लोलुपता निष्छल और ताज़ी होती है। सड़क चलते पुरुषों वाली नहीं... उनमे मैंने वो ज़हरीली लोलुपता देखी है.. कैसे वो अपनी आँखों से ही सामने दिखती महिलाओं और लड़कियों को निर्वस्त्र करते रहते हैं। उनको मेरे शरीर में लिप्सा है, लेकिन ऐसा नहीं है की वो मेरी इज्ज़त नहीं करते!

अथर्व के लिए मेरे दोनों स्तन दिलचस्प रचना के समान हैं.. जैसे एक जोड़ी खिलौने! जब कभी भी हम दोनों अगल बगल बैठते हैं (कहने का मतलब हर रोज़, कम से कम पांच से दस बार), वे उनको उँगलियों की सहायता से छेड़ते हैं और सहलाते हैं। और मेरे शरीर की प्रतिक्रिया भी देखिए – उनके छूते ही मेरे दोनों स्तनाग्र सूजने लगते हैं। सहवास हो या न हो, सप्ताह के हर दिन (मेरा मतलब रात), अथर्व मेरे स्तनों को चूसते हुए ही सो जाते है – कहते हैं की बिना स्तनपान किये उनको नींद ही नहीं आती। हो सकता हो की उनके यह कहने में अतिशयोक्ति हो, लेकिन मेरा भी हाल कुछ कुछ ऐसा ही है – उनके लिंग को पकडे

हुए ही मैं सोती हूँ.. रात में जब भी कभी किसी भी कारणवश उनका लिंग जब मेरे हाथ से छूट जाता है, तो मेरी नींद खुल जाती है। इसलिए मैं बिना हील हुज्जत के उनको अपनी मनमानी करने देती हूँ।

उनका लिंग! बाप रे! शायद ही कभी शांत रहता हो! मैंने पढ़ा है की रक्त प्रवाह बढ़ने से लिंग में स्तम्भन होता है.. अरे भई, कितना रक्त प्रवाह होता है? इनका तो लगभग सदा ही स्तंभित रहता है। मैं सोचते हुए मुस्कुरा दी। इससे मेरा एक अजीब सा नाता है – उसको इस प्रकार अपने भीमकाय रूप में देख कर भय भी लगता है, और प्रसन्नता भी होती है। जी हाँ – शादी के दो साल बाद भी। लगभग रोज़ ही इसको ग्रहण करने के बावजूद जिस प्रकार से उनका लिंग मेरी योनि का मर्दन करता है, वो अनुभव अनोखा ही है! मेरे लिए उनका लिंग ठीक वैसा ही खिलौना है, जैसे की मेरे स्तन उनके लिए। उनके गठे हुए शरीर से निकलती यह मोटी नलिका... जोशपूर्ण और वीर्यवान! वो खुलेआम निर्वस्त्र होकर घर में घूमते हैं... और उनके हर कदम पर उनका स्तंभित लिंग हलके हलके हिचकोले खाता है। हम्म्म...!

अचानक ही मेरे फ़ोन की घंटी बजी – अथर्व!

"हाउ आर यू, डार्लिंग?" और मेरा उत्तर सुने बिना ही, "जानू, जल्दी से तैयार हो जाओ – सरप्राइज है! मैं तुमको घंटे भर में पिकअप कर लूँगा.. ओके.. बाय!" कह कर उन्होंने फ़ोन काट दिया!

सरप्राइज! हा हा! अथर्व के साथ तो हर पल ही सरप्राइज है! एक घंटा? हम्म.. बस इतना समय है की नहा कर, कपड़े बदले जा सकें। नहा कर मैं अपने कमरे में आई, और सोचने लगी की क्या पहना जाय! मेरे जन्मदिन पर अथर्व ने एक लाल रंग की ड्रेस मुझे गिफ्ट करी थी, वो घुटने से बस ठीक नीचे तक जाती थी.. अभी तक पहनने का मौका नहीं मिला था, तो सोचा की आज तो एकदम सही समय है। मैं ड्रेस पहनी, अपने बालों को एक पोनीटेल में बाँधा, गले में एक छोटे छोटे मोतियों की माला पहनी और तैयार हो गयी।

मैं कभी यह नहीं सोचती की मैं कैसी दिखती हूँ – मेरे पति मुझे आकर्षक पाते हैं, मेरे लिए इतना ही काफी है। लेकिन ख़ास मौकों पर सजने सँवरने में क्या बुराई है.. ख़ास तौर पर उसके लिए जिसको मैं बेहद प्यार करती हूँ? हम लोग अक्सर बाहर का खाना नहीं खाते (स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं होता न!), कभी कभी ही खाते हैं (या फिर तब जब हम यात्रा कर रहे होते हैं).. बाहर जाने से याद आया, की मुझे आज उनके प्लान के बारे में कुछ भी

नहीं मालूम था। सरप्राइज का तो मज़ा ही इसी में है! मैं लिफ्ट से नीचे की तरफ उतर कर भवन के प्रांगन में अभी आई ही थी, की गेट से मुझे अथर्व कार में आते हुए दिखे।

ऐसा नहीं है की हम लोग घूमने फिरने कहीं जाते नहीं – अथर्व और मैं कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के जंगल गए। कान्हा शब्द कनहार से बना है जिसका स्थानीय भाषा में अर्थ चिकनी मिट्टी है। यहां पाई जाने वाली मिट्टी के नाम से ही इस स्थान का नाम कान्हा पड़ा। रूडयार्ड किपलिंग की प्रसिद्ध पुस्तक "जंगल बुक" की प्रेरणा इसी स्थान से ली गई थी। यहाँ हमने भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ, बारहसिंघा, हिरण, मोर, भेड़िये इत्यादि जीव देखे। इसके अलावा हमने राजस्थान राज्य की भी यात्रा करी, जहाँ हमने जयपुर, जोधपुर (दोनों जगहें अपनी स्थापत्य और शिल्पकला के लिए और साथ ही साथ हत्कला के लिए प्रसिद्द हैं), जैसलमेर (थार रेगिस्तान) और रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान (फिर से, बाघ, हिरण, सांभर हिरण!) की सैर करी। मेरे लिए यह दोनों जगहें बुल्कुल अद्भुत थीं! एक तरफ तो अंत्यंत घना जंगल, तो दूसरी तरफ कठिन रेगिस्तान! लेकिन अपने देश के इन अद्भुत स्थानों को देख कर न केवल मेरा दृष्टिकोण ही विकसित हुआ, बल्कि भारतवासी होने पर गौरव भी महसूस हुआ। बंगलोर के आस पास भी हम लोग यूँ ही लम्बी ड्राइव पर जाते हैं... मुझे यहाँ का खाना बहुत पसंद है (कभी सोचा नहीं था की दक्षिण भारतीय खाना मुझे इतना पसंद आएगा!)।

अथर्व ने मुस्कुराते हुए मेरे पास गाडी रोकी; मैंने उनके बगल वाली सीट वाला दरवाज़ा खोला और कार में बैठ गयी। उनको मुस्कुराता देख कर मैं भी मुस्कुराने लगी (कुछ तो चल रहा है इनके दिमाग में)! उन्होंने मुस्कुराते हुए मेरे होंठों पर एक चुम्बन जड़ा और फिर कार वापस सड़क पर घुमा दी। हम्म्म.. अभी तक तो सभी कुछ पूर्वानुमेय है – हम एक रेस्त्राँ जा कर रुके, जहाँ हमने मुगलई भोजन किया। आज अथर्व ने कॉकटेल नहीं ली (वो अक्सर लेते हैं, लेकिन आज कह रहे थे की ड्राइव करना है, इसलिए नहीं लेंगे..), लेकिन उन्होंने मुझे दो गिलास पिला ही दी। बाहर आते आते मुझ पर नशा छाने लगा। लेकिन इतना तो होश था ही की समझ आ सके की हम लोग वापस घर की तरफ नहीं जा रहे थे। मैंने जब पूछा की कहाँ जा रहे हैं, तो उन्होंने कहा की यही तो सरप्राइज है..! हम्म्म... लॉन्ग ड्राइव! रात के अंधियारे में, जगमगाती सड़कों और उन पर सरपट दौड़ती गाड़ियों को देखते देखते कब मेरी आँख लग गयी, कुछ याद नहीं।

जब आँख खुली तो मैंने देखा की गाडी रुकी हुई है (शायद इसी कारण से आँख खुली), सुबह का मद्धिम, लालिमामय उजाला फैला हुआ है, हवा में ताज़ी ताज़ी सुगंध और मेरे चहुँओर छोटी छोटी हरी भरी पहाड़ियाँ थीं। मुझे अथर्व की आवाज़ सुनाई दे रही थी – वो

आस पास ही कहीं थे, और किसी से बातें कर रहे थे। मैंने चार पांच गहरी गहरी सांसें लीं – मन और शरीर दोनों में ताजगी आ गयी। नशा काफूर हो गया। मैंने सीट पर बैठे बैठे अंगड़ाई ली और फिर से गहरी सांसें लीं, और फिर कार से बाहर निकल आई और आवाज़ की दिशा में बढ़ दी।

"जानू.. जाग गई?" अथर्व ने मुझे देखा, और मेरे पास आते आते मुझे आंशिक आलिंगन में भरा। उन्होंने फिर हमारे मेज़बान से मुझे मिलवाया।

"हम लोग कहाँ हैं?" मैंने पूछा।

"डार्लिंग, हम लोग कूर्ग में हैं.."

'कूर्ग?'

उनसे मिलते मिलते सूर्योदय हो गया – सूर्य की किरणें पहाडियों के असंख्य श्रृंखलाओं पर लगे वृक्षों से छन छन कर आती हुई दिखाई पड़ रही थी। जादुई समां!

ओह! आपको कूर्ग के बारे में बताना ही भूल गई... कूर्ग कनार्टक राज्य के पश्चिमी घाट पर है। सब्ज़ घाटियों, भव्य पहाड़ों और सागौन की लकड़ी जंगलों के बीच स्थित देश के सबसे खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है। इन पहाड़ियों से होती हुई कावेरी नदी बहती है। यह जगह पर्यटकों को बहुत आकर्षित करती है – शहरों में रहने वाले, खास तौर पर बैंगलोर और मैसूर से अनेक पर्यटक यहाँ आते हैं। शुद्ध ताज़ा हवा और चहुँओर बिखरी हरियाली लोगों के चित्त को प्रसन्न कर देती है। इसके अतिरिक्त, यह स्थान कॉफी, चाय, और इलायची के बागानों के लिए भी जाना जाता है। यह भारत का 'स्कॉटलैंड' भी कहा जाता है... अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण! लगभग १०० साल पहले ब्रिटिश लोगों ने इस स्थान पर भी रिहाइशी बंदोबस्त किए थे।

जिस जगह पर हम रुके थे, वह एक होम-स्टे था। अथर्व का प्लान था की किसी होटल में नहीं, बल्कि प्रकृति के बीच एक शांत जगह पर रहेंगे। यह एक अच्छी बात थी – पहला इसलिए क्योंकि यहाँ कोई भीड़ भड़क्का नहीं था। हमारे मेजबान का घर और होम-स्टे उनके कॉफ़ी और केले के बगान में ही थे। यह एक बहुत ही वृहद् (करीब सौ एकड़) बगान था – इसमें इनके अलावा इलाइची भी पैदा की जाती है। और तो और, हमारे खाने पीने का

इंतजाम भी हमारे मेजबानो ने कर दिया था – सवेरे का नाश्ता तैयार था, तो हमने फ्रेश होकर उनके साथ ही बैठ कर स्थानीय नाश्ता किया और कॉफ़ी की चुस्कियों के साथ देर तक बात चीत करी।

मैंने अथर्व से शिकायत करी की अगर वो पहले बताते तो कम से कम कुछ पहनने को पैक कर लेती। कितनी देर तक इसी कपड़े में रहूंगी? इसके उत्तर में उन्होंने गाड़ी की पिछली सीट पर बहुत ही तरीके से छुपाया हुआ एक पैक निकाला – उसमे मेरे पहनने के लिए जीन्स और टी-शर्ट था। अथर्व के लिए शॉर्ट्स और टी-शर्ट था। क्या बात है!

इस जगह की सैर पर जब हम निकले, तब समझ आया की यह वाकई एक अलग ही प्रकार का हिल स्टेशन है। उतना व्यवसायीकरण नहीं हुआ है अभी तक! साथ ही साथ इस जगह पर अपनी एक मज़बूत संस्कृति, और इतिहास है। सबसे अच्छी बात यहाँ की साफ-सुथरी हवा, लगातार आती पंछियों की चहचहाहट और गुनगुनी धूप! एकदम ताजगी का एहसास! दिन भर में हमने वहाँ के खास खास पर्यटन स्थल (ओमकारेश्वर मंदिर, राजा की सीट, एब्बे झरना) देख डाले। झरने के बगल वाले एस्टेट में कॉफी के साथ साथ काली-मिर्च, और इलायची और अन्य पेड़-पौधे देखने को मिले।

एक बात मैंने वहाँ घूमते फिरते और देखी – यहाँ के लोग बहुत ही ख़ुशमिजाज़ किस्म के हैं। देखने भालने में आकर्षक और बढ़िया क़द-काठी के हैं। ख़ासतौर पर कूर्ग की महिलाएं बहुत सुन्दर हैं। हमने अपने लिए कॉफी, और शुद्ध शहद ख़रीदा (याद है?)। एक और ख़ास बात है यहाँ की, और वह यह की भारतीय सेनाओं में बहुत से जवान और अधिकारी कूर्ग से हैं। यहाँ के लोगो की वीरता के कारण इनको आग्नेयास्त्र (अथर्व वाला नहीं, बंदूक वाला) रखने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता नहीं है।

शाम होते होते हम दोनों घूम फिर कर वापस होमस्टे आ गए, और अपने मेजबानो के साथ देर तक गप्पें लड़ाई, खाना खाया और बॉन-फायर का मज़ा लिया। आज रात यही रुक कर कल सवेरे वापस निकलने का प्रोग्राम था। लेकिन मन हो रहा था की यही पर रुक जाया जाय! घर की याद हो आई – वहाँ भी सब कुछ ऐसा ही था। मिलनसार लोग, शुद्ध वातावरण, पहाड़ी और शांत इलाका! मैं बालकनी में आकर बैठ गयी – एकांत था, दूर दूर तक शांति, न कोई लोग और न कोई आवाज़! रात में पहनने को कुछ नहीं था, इसलिए कमरे की बत्ती बुझा कर, बिना कपड़ों के ही कुर्सी पर बैठी कहे आकाश को देर तक देख रही थी। कम प्रदूषण वातावरण में होने के नाते, रात्रि आकाश असंख्य सितारों जगमगाते हुए दिख रहे थे! शानदार था!

यहाँ प्राकृतिक दृश्यों की भरमार थी... मिटटी से मानो एक जादुई खुशबू निकल रही थी। पेड़ पौधों का अपना निराला अंदाज़, चारों ओर जैसे बस सुगंध ही सुगंध! ऐसे मनभावन वातावरण में किसी भी प्रकार का क्लेश कैसे हो सकता है? लेकिन फिर भी मन आशान्त था! घर की याद हो आई.. एक एक बात! माँ बाप का साथ कितना सुकून देता है! उनकी याद आते ही मन हुआ की जैसे पंख लगाकर पल भर में ही उनके पास पहुँच जाऊँ। पापा तो कितना दुलारते हैं! घर जाने पर मैं आराम से उनके ऊपर पैर पसारकर देर तक बैठी रहती हूँ। माँ कभी एक कप चाय का पकड़ा देती हैं, तो कभी रक प्लेट गरम पकोड़े!

“क्या सोच रही हो?” अथर्व ने मेरे कंधे पर मालिश करते हुए पूछा। न जाने कैसे, अगर मेरे मन में कुछ भी उल्टा पुल्टा होता है तो उनको ज़रूर मालूम पड़ जाता है। एक बार उन्होंने मुझे कहा था की मैं बिलकुल पारदर्शी हूँ...

“कुछ भी नहीं, बस यूं ही मन उदास है।” मैंने सहज होते हुए कहा।

“अरे! ऐसा क्यों? मेरा सरप्राइज पसंद नहीं आया क्या, जो ऐसे जाने कहां खोई हो?”

मैंने संभलते हुए कहा, “कुछ भी तो नहीं हुआ?”

“नहीं... कुछ तो गड़बड़ है... वरना तुम इस तरह उदास और बुझी हुई कभी नहीं रहती।” इनकी पारखी आंखों ने ताड़ ही लिया... और ताड़े भी क्यों न? हम अब तक एक-दूसरे की रग-रग से वाकिफ हो गए थे, और एक-दूसरे की परेशानी की चिंता-रेखाओं को पकड़ लेते हैं। दो साल का अन्तरंग साथ है। चेहरा देख कर तो क्या, अब तो बिना देखे हुए ही मन के भाव समझ जाते हैं। उन्होंने मुझे पीछे से आलिंगन में भरते हुए पूछा, “ए जानू! बोलो न क्या हुआ? कुछ तो बताओ!”

मैंने सहज होने की कोशिश करते हुए कहा, “यूं ही आज रह-रहकर घर की याद आ रही हैं।“

“अरे! बस इतनी सी बात.. अरे भई, कॉल कर लो!”

“ह्म्म्म.. देखा.. लेकिन सिग्नल नहीं हैं..”

“कोई बात नहीं, कल सवेरे कर लेना, जैसे ही नेटवर्क आता है.. ओके?”

मैंने कुछ नहीं कहा... बस डबडबाई हुई आंखों को चुपके से पोंछ लिया। चाहे मैंने कितनी ही चोरी छुपे यह किया हो, वो देख ही लेते हैं।

“ओये, तुम चॉकलेट खाओगी?” मुझे चॉकलेट बहुत पसंद हैं... इसीलिए वो अक्सर अपने साथ दो तीन पैक ज़रूर रखते हैं। मैं मुस्कुराई! मेरी हर परेशानी का इलाज रहता है इनके पास।

“हाँ! बिलकुल! चॉकलेट के लिए मैंने कब मना किया?”

“हा हा! चलो यार! कम से कम तुम कुछ मुस्कुराई तो!” उन्होंने मुझे चॉकलेट पकड़ाते हुए कहा, “... यू नो! तुम्हारे चेहरे के लिए मुस्कुराहट ही ठीक है.. उदास होना, या गुस्सा होना... तुम्हारे लिए नहीं डिज़ाइन किया गया है..।“

“अच्छा जी, तो फिर किसके लिए?”

“मेरे लिए! मुझे देखो न.. अगर इस चेहरे पर एक बार गुस्सा आ जाय, तो सामने वाले की...”

मैंने बीच में ही काटते हुए कहा, “जी हाँ.. समझ आ गया!” फिर कुछ देर रुक कर, “जानू, आप भी कभी गुस्सा या उदास मत होइएगा। आप पर भी सूट नहीं करता!”

“मैं भला क्यों होऊंगा? मेरे साथ तो तुम हो! मेरे पास गुस्सा या उदास होने का कोई रीज़न ही नहीं है!” इन्होने मुझे दुलारते हुए कहा। मैं मुस्करा उठी। इनके स्नेह भरे साथ ने मुझे कितना बदल दिया है!

“यू किस मी...”, मैंने एक बिंदास लड़की के जैसे वर्तमान अन्तरंग क्षणों का भरपूर लुफ्त उठाने के लिए अथर्व का चेहरा अपने चेहरे पर खींच लिया। पिछले एक हफ्ते से हम लोग बहुत ही व्यस्त हो गए थे, और जाहिर सी बात है की इस कारण से सबसे पहले हमारे यौन समागम की बलि चढ़ी। मुझे तो लगता है की जब किसी को सहवास की नियमित खुराक की आदत पड़ जाती है तो किसी भी प्रकार का व्यवधान शरीर और मन पर असर करने

लगता है। ठीक वैसे ही जैसे किसी की नींद गड़बड़ होने से पूरे मानसिक और शारीरिक व्यवस्था पर बुरा असर पड़ता है। मेरा शरीर किसी कसे हुये वीणा की तरह हुआ जा रहा था। मन बेचैन होने लगा था।

हमारे आलिंगन बद्ध शरीरों में जैव रसायनों और संवेदनाओं के समरस प्रभाव से अब तीव्र उत्तेजना प्रवाहित होने लगी थी। ऐसे खुले प्राकृतिक वातावरण में यह यौनजन्*य प्रक्रिया अब अपना असर दिखाने लगी थी – मेरी योनि से वही जाना पहचाना स्राव होने लगा था, और अथर्व का लिंगोत्थान होने लगा। कुछ देर ढंग से चूमने के बाद, अथर्व मुझे अपनी गोद में उठाकर हमारे सुसज्*जित शयनकक्ष में आए। मैं बिस्तर पर बैठ कर चादर की सिलवटें ठीक करने लगी, लेकिन अब तक अथर्व कामासक्त होकर शरारत के मूड में आ गए थे। हमने इन दो सालों में कितनी ही बार अनवरत सहवास किया था, लेकिन आज भी जब भी वो मुझे अपनी बाहों में लेटे हैं तो उनके मनोभाव समझते ही शर्म की लाली मेरे गालों और आँखों में उभर जाती है। मुझे बिस्तर पर लिटा कर जब अथर्व मुझमे प्रविष्ट हुए तब तक मेरा सारा तनाव और उदासी समाप्त हो गयी थी। ताज़ी हवा, चहुँओर फैली शांति और प्रबल साहचर्य की ऊर्जा ने हमारे शरीरों में हार्मोंस की गति इतनी बढ़ा दी कि उत्तेजना की कांति त्*वचा से रिसने लगी। यौन संसर्ग सचमुच मानसिक चेतना को सुकून और शरीर को पौष्*टिकता देती है। देखो न, कैसे उनके पौरुष रसायनों की आपूर्ति से मेरी देह गदरा गयी है! साहचर्य में मैं मदमस्*त होकर अथर्व को अपनी छातियों में समेटे ले रही थी – और देर तक हमारी कामजनित इच्छाओं को मूर्त रूप देते रहे।

सवेरे हम लोग देर से उठे, और जब तक तैयार होकर बाहर आये, तब तक हमारे मेजबानों ने एक बेहतरीन ब्रेकफास्ट बना दिया था। हमने खाना खाया, कॉफ़ी पी, और फिर भुगतान वगैरह करके वापस की यात्रा आरम्भ करी। रास्ते में अथर्व ने कहा की चलो, तुम्हे तिब्बत की सैर कराता हूँ!

तिब्बत! यहाँ कहाँ तिब्बत! फिर कोई एक घंटे में उनका मतलब समझ आया। हम लोग ब्यलाकुप्पे तिब्बती मठ पहुंचे। यह एक बेहद सुन्दर जगह है... अचानक ही इतने सारे तिब्बती चेहरों को देख कर लगता है की भारत में नहीं, बल्कि वाकई तिब्बत पहुँच गए हैं! प्राचीन परम्पराओं को लिए, और आधुनिक सुविधाओं के साथ यह जगह एक बहुत सुन्दर गाँव जैसे है। वैसे भी यह जगह देखने के लिए आज एकदम सही दिन था – गुनगुनी धुप बिखरी हुई थी। परिसर के अन्दर बगीचों का रख रखाव अच्छे से किया गया था। हर भवन के ऊपर रंग-बिरंगी झंडे फहरते दिख रहे थे। आते जाते भगवा वस्त्रों में बौद्ध भिक्षु दिख रहे थे। एक तरफ तिब्बती बच्चे आइसक्रीम का आनंद ले रहे थे। हम लोग वाकई यह भूल गए

की हम लोग कर्नाटक में हैं। मठ इतनी अच्छी तरह से सुव्यवस्थित और शांतिपूर्ण ढंग से सजाया गया था की यहाँ आ कर मेरे मन में अनंत शांति और ऊर्जा का संचार होने लगा।

मठ के अन्दर एक मंदिर है, जिसको स्वर्ण मंदिर कहते हैं। उसमें बहुत सुन्दर तीन मूर्तियाँ हैं - भगवान बुद्ध (केंद्र पर), गुरु पद्मसंभव, और बुद्ध अमितायुस। ये मूर्तियाँ तांबे की बनी हैं, और उन पर सोना चढ़ा हुआ है। मंदिर के अंदरूनी और वाह्य दीवारों पर बारीक डिजाइन और भित्ति-चित्र बनाए गए थे। दीवारों पर बने रंगीन भित्ति चित्र अनेक प्रकार की कहानियां सुना रहे थे। एक तरफ भिक्षु लोग प्रार्थना कर रहे थे और उनकी प्रार्थना से उत्पादित गहरी गुंजार... मानो हम खो गए थे। यहाँ पर बहुत देर रहा जा सकता है, लेकिन काम को कैसे दरकिनार किया जा सकता है? शाम से पहले बैंगलोर पहुंचने के लिए हमको अभी ही शुरू करना चाहिए था, तो इसलिए हमने भगवान बुद्ध को विदाई दी और बाहर आ गए। दोपहर का भोजन हमने वहीँ किया – तिब्बती भोजन! वहाँ ज्यादातर घरों को कैफे और रेस्तरां भोजनालय में बदल दिया गया है। खाने के बाद हमने कुछ हस्तशिल्प सामान खरीदा और वापसी का रुख किया।

अथर्व की खजुराहो वाली उपमा मेरे दिमाग में हमेशा बनी रही। इंटरनेट और अन्य जगहों से उसके बारे में मैंने बहुत सी जानकारी इकट्ठी कर ली थी.. इसलीये जैसे ही अथर्व ने दिसम्बर की छुट्टियाँ मनाने के लिए जगह चुनने की पेशकश करी, मैंने तुरंत ही खजुराहो का नाम ले लिया। अथर्व ने आँख मारते हुए पूछा भी था की 'जानेमन, क्या चाहती हो? अब क्या सीखना बाकी है?' उनका इशारा सहवास की तरफ था, यह मुझे मालूम है.. लेकिन मैंने उनकी सारे तर्क वितर्क को क्षीण कर के अंततः खजुराहो जाने के लिए मना ही लिया। लेकिन अथर्व भी कम चालाक नहीं हैं, उन्होंने चुपके से पन्ना राष्ट्रीय उद्यान को भी हमारी यात्रा में शामिल कर लिया।

खजुराहो के मंदिर भारतीय स्थापत्य कला का सुन्दर और उत्कृष्ट मिसाल हैं! मंदिरों की दीवारों पर उकेरी विभिन्न मुद्राओं को दिखाती मनोहारी प्रतिमाएँ दुलर्भ शिल्पकारी का उदाहरण हैं। खजुराहो मध्यप्रदेश राज्य में स्थित एक छोटा सा गाँव है। मध्यकाल में उत्तरी भारत के सीमांत प्रदेश पर पराये धर्म की ी आक्रांताओं के अनवरत आक्रमण के कारण बड़गुज्जर राजपूतों ने पूर्व दिशा का रुख किया, और मध्यभारत अपना राज्य स्थापित किया। ये राजपूत महादेव शिव के उपासक थे। उन्हीं शासकों द्वारा नवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के बीच खजुराहो के मंदिरों का निर्माण कराया गया। कहते हैं इन मंदिरों की कुल संख्या पच्चासी थी, जिन्हें आठ द्वारों का एक विशाल परकोटा घेरता था और हर द्वार खजूर के विशाल वृक्ष लगे हुए थे। इसी कारण इस जगह को खजुराहो कहते थे। आज उतनी संख्या में मंदिर नहीं बचे हैं। मुस्लिम आक्रमणकारियों की धर्मान्धता और समय का शिकार हो कर अधिकांश मंदिर नष्ट हो गए हैं। आज केवल बीस-पच्चीस मंदिर ही बचे हैं। हर साल लाखों की संख्या में देशी व विदेशी पर्यटक खजुराहों आते हैं व यहाँ की खूबसूरती को अपनी स्मृति में कैद कर ले जाते हैं।

खजुराहो के मंदिरों को 'प्रेम के मंदिर' भी कहते हैं। कहिये तो इन मंदिरों का इतना प्रचार यहाँ की काम-मुद्रा में मग्न देवी-देवताओं प्रतिमाओं के कारण हुआ है। ध्यान से देखें तो इन मूर्तियों में अश्लीलता नहीं, बल्कि प्रेम, सौंदर्य और सामंजस्य का प्रदर्शन है। खजुराहो के मंदिरों को आम तौर पर कामसूत्र मंदिरों की संज्ञा दी जाती है, लेकिन केवल दस प्रतिशत शिल्पाकृतियाँ ही रतिक्रीड़ा से संबंधित हैं। प्रतिवर्ष कई नव विवाहित जोड़े परिणय सूत्र में बँधकर अपने दांपत्य जीवन की शुरुआत यही से करते हैं। लेकिन सच तो यह है की न ही कामसूत्र में वर्णित आसनों अथवा वात्स्यायन की काम-संबंधी मान्यताओं और उनके कामदर्शन से इनका कोई संबंध है।

खजुराहो मंदिर तीन दिशाओं में बने हुए हैं - पश्चिम, पूर्व और दक्षिण दिशा में। ज्यादातर मंदिर बलुहा पत्थर के बने हैं। इन पर आकृतियाँ उकेरना कठिन कार्य है, क्योंकि अगर सावधानी से छेनी हथोडी न चलाई जाय, तो यह पत्थर टूट जाते हैं। खजुराहो का प्रमुख एवं सबसे आकर्षक मंदिर है कंदारिया महादेव मंदिर। आकार में तो यह सबसे विशाल है ही, स्थापत्य एवं शिल्प की दृष्टि से भी सबसे भव्य है। समृद्ध हिन्दू निर्माण-कला एवं बारीक शिल्पकारी का अद्भुत नमूना प्रस्तुत करता है यह भव्य मंदिर। बाहरी दीवारों की सतह का एक-एक इंच हिस्सा शिल्पाकृतियों से ढंका पड़ा है। कंदरिया' - कंदर्प का अपभ्रंश! कंदर्प यानी कामदेव! सचमुच इन मूर्तियों में काम और ईश्वर दोनों की तन्मयता की चरम सीमा देखी जा सकती है... भावाभिभूत करने वाली कलात्मकता! सुचित्रित तोरण-द्वार पर नाना प्रकार के देवी-देवताओं, संगीत-वादकों, आलिंगन-बद्ध युग्म आकृतियों, युद्ध एवं नृत्य, राग-विराग की विविध मुद्राओं का अंकन हुआ है। अन्दर की तरफ मंडपों की सुंदरता मन मोह लेती है। बालाओं की कमनीय देह की हर भंगिमा, और हर भाव का मनोरम अंकन हुआ है। उनके शरीर पर सजे एक-एक आभूषण की स्पष्ट आकृति शिल्पकला के कौशल को दर्शाती है। स्पंदन, गति, स्फूर्ति सब जैसे गतिमान और जीवंत से लगते हैं! मैं एकटक उन मूर्तियों को देखती रही!

मंदिर के गर्भगृह में संगमरमर का शिवलिंग स्थापित है, और उसकी दीवारों पर परिक्रमा करने वाले पथ पर मनोरम शिल्पाकृतियाँ बनी हैं। मंदिर की बाहरी दीवारों पर चारों दिशाओं में देवी-देवताओं, देवदूतों, यक्ष-गंधर्वों, अप्सराओं, किन्नरों आदि का चित्रण किया गया है। सीढ़ी सादी भाषा में कहें तो खजुराहो मंदिर, ख़ास तौर पर कंदरिया महादेव मंदिर हिन्दू शिल्प और स्थापत्य कला का संग्रहालय है। शिल्प की दृष्टि से देश के अन्य सारे निर्माण बौने हैं! मैं इन मंदिर को देखते हुए मैं बार-बार अभिभूत हो रही थी। मंत्रमुग्ध सी निहार रही थी!

विशालता और शिल्प-वैभव में कंदरिया महादेव का मुकाबला करते लक्ष्मण मंदिर है। इसके प्रांगन में चारों कोनों पर बने उपमंदिर आज भी हैं। इस मंदिर के प्रवेश-द्वार के शीर्ष पर भगवती महालक्ष्मी की प्रतिमा है। उसके बाएँ स्तम्भ पर ब्रह्मा एवं दाहिने पर शिव की मूर्तियाँ हैं। गर्भगृह में भगवान विष्णु की लगभग चार फुट ऊँची प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा में आप नरसिंह और वाराह अवतारों का रूप देख सकते हैं। मंदिर की दीवारों पर विष्णु के दशावतारों, अप्सराओं, आदि की आकृतियों के साथ-साथ प्रेमालाप, आखेट, नृत्य, मल्लयुद्ध एवं अन्य क्रीड़ाओं का अंकन किया गया है।

दिन भर इन मंदिरों का भ्रमण करने, थोड़ी बहुत खरीददारी करने और रात का साउंड एंड लाइट शो देखने के बाद जब हम वापस आये तो बहुत थक गए थे! सच कहूं, तो यहाँ आने को लेकर अथर्व मेरी अपेक्षा कम उत्साहित थे। हमने कमरे में ही माँगा लिया और खाना खा पीकर जब हम बिस्तर पर लेटे तो दिमाग में इस जगह के शासकों – चंदेल राजपूतों की उत्पत्ति की कहानी याद आने लगी। चंदेल राजा स्वयं को चन्द्रमा की संतान कहते थे। कहानी कुछ ऐसी है - बनारस के राजपुरोहित की विधवा बेटी हेमवती बहुत सुंदर थी.... अनुपम रूपवती! एक रात जब वह एक झील में नहा रही थी तो उसकी सुंदरता से मुग्ध होकर चन्द्रमा धरती पर उतर आया और हेमवती के साथ संसर्ग किया। हेमवती और चंद्रमा के इस अद्भुत मिलन से जो संतान उत्पन्न हुई उसका नाम चन्द्रवर्मन रखा गया, जो चंदेलों के प्रथम राजा थे।

कहानी अच्छी है, और प्रेरणादायी भी! प्रेरणा किस बात की? अरे, क्या अब यह भी बताना पड़ेगा?

“जानू?”

“हम्मम?”

“हेमवती और चन्द्रमा वाला खेल खेलें?”

“नेकी और पूछ पूछ! लेकिन सेटअप सही होना चाहिए!”

“अच्छा जी! मैंने तो मजाक किया था, लेकिन आप तो सीरियस हो गए!” मैंने ठिठोली करी।

अथर्व ने खिड़की खोल दी। चांदनी रात तो खैर नहीं थी, लेकिन चांदनी की कमी भी नहीं थी। उसके साथ साथ ठंडी हवा भी अन्दर आ रही थी। लेकिन, अगर शरीर में गर्मी हो, तो इससे क्या फर्क पड़ता है? सोते समय मैंने शिफॉन की नाइटी पहनी हुई थी – इसका सामने (मेरे स्तनों पर) वाला हिस्सा जालीदार था। उसकी छुवन और ठंडी हवा से मेरे स्तनाग्र लगभग तुरंत ही तीखे नोकों में परिवर्तित हो गए। अथर्व के कहने पर मैं खिड़की के पास जा कर खड़ी हो गई - क्षण भर को मुझे जाने क्यों लगा की मैं वाकई हेमवती हूँ, वाराणसी के उसी ब्राह्मण पंडित की पुत्री! खुली खिड़कियों से आती हुई चांदनी हमारे कमरे को मानो

सरोवर में तब्दील किये जा रही थी और मैं चंद्रमा की किरणों में नहा रही थी, अंग-अंग डूबी हुई। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं!

'न जाने कितनी स्त्रियों को यह अनुभव हुआ हो!'

मैंने मुड़ कर अथर्व को देखा – वो भी तल्लीन होकर चांदनी में नहाए मेरे रूप का अनवरत अवलोकन कर रहे थे।

'बॉडी लाइक खजुराहो इडोल्स!'

मैं धीरे धीरे खजुराहो की सपनीली दुनिया की नायिका बनती जा रही थी। राग-रंग से भरी हुई... आत्मलीन नायिका! मुझे लगा जैसे की मेरा शरीर किसी कसे हुये वीणा की तरह हो गया हो – उंगली से छेड़ते ही न जाने कितने राग निकल पड़ेंगे! मन अनुरागी होने लगा। क्या यह बेचैनी खजुराहो की थी? लगता तो नहीं! अथर्व तो हमेशा साथ ही रहते हैं, लेकिन आज वाली प्यास तो बहुत भिन्न है! न जाने कैसे, अथर्व के लिये मानो मेरी आत्मा तड़पती है, शरीर कम्पन करता है... अब यह सब सिवाय प्यार के और क्या है?

"कब तक यूँ ही देखेंगे?"

"पता नहीं कब तक! तुम वाकई खजुराहो की देवी लग रही हो! ये गोल, कसे और उभरे हुए स्तन, पतली कमर, उन्नत नितंब! ...बिलकुल सपने में आने वाली एक परी जैसी!"

"अच्छा... आपके सपने में परियां आती हैं?" तब तक अथर्व ने मुझे अपनी बाहों में भर लिया।

वो मुझे बहुत प्यार से देख रहे थे – आँखों में वासना तो थी, लेकिन प्यार से कम! उनकी आँखों में मेरा अक्स! उनकी आँखों के प्रेम में नहाया हुआ मेरा शरीर! सचमुच, मैं हेमवती ही तो थी!

अथर्व ने क्या कहा मुझे सुनाई नहीं दिया – बस उनके होंठ जब मेरे होंठों से मिले, तो जैसे शरीर में बिजली सी दौड़ गई! मैं चुपचाप देखती हूँ की वो कैसे मेरे हर अंग को अनावृत

करते जाते हैं, और चूमते जाते हैं। बस कुछ ही पलों में मैं अपने सपनों के अधिष्ठाता के साथ एक होने वाली थी।

‘बस कुछ ही पलों में....’

अथर्व मेरे स्तनाग्रों को बारी बारी मुंह में भर कर चूस, चबा, मसल और काट रहे थे। मेरी साँसे तेजी से चलने लगीं। मेरा पूरा शरीर कसमसाने लगा। आज अथर्व कुछ अधिक ही बल से मेरे स्तन दबा रहे थे – ऐसा कोई असह्य नहीं, लेकिन हल्का हल्का दर्द होने लगा।

“अआह्ह्ह! आराम से...”

"हँ?" अथर्व जैसे किसी तन्द्रा से जागे!

“आराम से जानू... आह!”

“आराम से? तू इतनी कामुक लग रही है... आज तो इनमें से दूध निचोड़ लूँगा!” कह कर उन्होंने बेरहमी से एक बार फिर मसला।

"आऊ! अगर... इनमें... दूध होता... तो आपको... मज़ा... आआह्ह्ह्ह! आता?" मैंने जैसे तैसे कराहते हुए अपनी बात पूरी करी। मैं अन्यमनस्क हो कर उनके बालों में अपनी उँगलियाँ फिरा रही थी।

उन्होंने एक स्तनाग्र को मुंह में भर कर चूसते हुए हामी में सर हिलाया। कुछ देर और स्तन मर्दन के बाद मेरी दर्द और कामुकता भरी सिसकियाँ निकलने लगी। लोहा गरम हो चला था... लेकिन अथर्व फोरप्ले में बिजी हैं!

“अब... बस...! आह! अब अपना ... ओह! लिंग.. डाल दो! प्लीज़! आऊ! अब न... अआह्ह्ह! सताओ...!”

अथर्व जैसे बहरे हो गए थे। अब वो धीरे-धीरे चूमता हुए मेरे पेट की तरफ आ कर मेरी नाभि को चूमने, चूसने और जीभ की नोक से छेड़ने लगे, दूसरे हाथ से वो मेरी योनि का

जायजा लेने लगे। और फिर अचानक ही, उन्होंने मुझे अपनी गोद में उठाया और लाकर बिस्तर पर पटक दिया। कपड़े मेरे तो न जाने कब उतर चुके थे... अथर्व के कहने पर मैंने अपनी योनि पर से बाल हटवा लिए थे – स्थाई रूप से! अथर्व अभी पूरी तन्मयता के साथ बेतहाशा मेरी योनि को पागलों की तरह चूस रहे थे। अपनी जीभ यथासंभव अन्दर घुसा घुसा कर मेरा रस पी रहे थे। मैं बेचारी क्या करती? मैं आनन्द के मारे आँखें बंद करके मजा ले रही थी, और इस बात पर कुढ़ भी रही थी की अभी तक उन्होंने लिंग क्यों नहीं घुसाया। अब मुझसे सहन नहीं हो पा रहा था।

जैसे अथर्व ने मेरे मन की बात सुन ली हो – उन्होंने योनि चूसना छोड़ कर एक बार मेरे होंठों पर एक चुम्बन लिया और फिर खुद भी निर्वस्त्र हो कर मुख्य कार्य के लिए तैयार हो गए। अथर्व ने एक झटके के साथ ही पूरा का पूरा मूसल मेरे अन्दर ठेल दिया – मेरी उत्तेजना चरम पर थी, इसलिए आसानी से सरकते हुए अन्दर चला गया। उत्तेजना जैसे मेरे वश में ही नहीं थी - मैंने नीचे देखा – मेरी योनि की मांसपेशियों ने लिंग-स्तम्भ को बहुत जोर से जकड़ रखा था। अथर्व ने हल्के-हल्के धक्के लगाने शुरू कर दिए थे। और मैं मुँह भींचे, उनके लिंग की चोटों को झेल रही थी।

मैंने कहा, “आप तेज-तेज करो... जितनी तेज कर पाओ.. आह!”

अथर्व ने अपनी गति बढ़ा दी और तेज़-तेज़ झटके मारने लगे। जाहिर सी बात है, इतनी तेज गति से सहवास करने पर हमेशा जैसा मैराथन संभव नहीं था। उनकी गति और भी तेज हो गयी थी, क्योंकि मैं भी अपनी कमर हिला-हिला कर उनका साथ दे रही थी। आख़िरकार एक झटके के साथ अथर्व का ढेर सारा वीर्य मेरे अन्दर भर गया। जब वो पूरी तरह से निवृत्त हो गए तो हम दोनों लिपट गए।

मैंने उनको चूमते हुए कहा, “बाहर मत निकलना!”

अथर्व उसी तरह मुझे अपने से लपेटे लेटे रहे और बातें करते रहे। अंततः, उनका लिंग पूरी तरह से सिकुड़ कर बाहर निकल गया। मैं उठ कर बाथरूम गयी, और साफ़ सफाई कर के अथर्व के साथ रजाई के अन्दर घुस गयी।

“मैं आपसे एक बात कहूं? ... उम्म्म एक नहीं, दो बातें?”

“अरे, अब आपको अपनी बात कहने से पहले पूछना पड़ेगा?”

“नहीं.. वो बात नहीं है.. लेकिन बात ही कुछ ऐसी है!”

“ऐसा क्या? बताओ!”

“आपने एक बार मुझे कहा था न.. की अगर मेरे पास कोई बिज़नस आईडिया होगा, तो आप मेरी हेल्प करेंगे?”

“हाँ.. और यह भी कहा था की आईडिया दमदार होना चाहिए... कुछ है क्या दिमाग में?”

“है तो... आप सुन कर बताइए की बढ़िया है या नहीं?”

“मैं सुन रहा हूँ...”

“एक फैशन हाउस, जिसमे ट्रेडिशनल से इंस्पायर हो कर कंटेम्पररी जेवेलरी मिलें? खजुराहो ओर्नामेंट्स! कैसा लगा नाम? पुरानी मूर्तियों, और चित्रों से प्रेरणा लेकर नए प्रकार के गहने? मेटल, वुड, स्टोन, और बोंस – इन सबसे बना हुआ? क्या कहते हैं? कॉम्प्लिमेंटरी एक्सेसोरीस, जैसे स्टोल, बेल्ट्स, और बैग्स भी रख सकते हैं!”

“ह्म्म्म... इंटरेस्टिंग!” अथर्व ने रूचि लेटे हुए कहा... “अच्छा आईडिया तो लग रहा है.. इस पर कुछ रिसर्च करते हैं। एक स्टोर के साथ साथ इंटरनेट पर भी बेच सकते हैं... ठीक है... मुझे और पता करने दो, और इस बीच में अपने इस आईडिया को और आगे बढाओ... ओके? हाँ, अब दूसरी बात?”

“दूसरी बात... उम्म्म.. कैसे कहूं आपसे..!”

“अरे! मुझसे नहीं, तो फिर किससे कहोगी?” अथर्व ने प्यार से चूमते हुए कहा।

मैं मुस्कुराई, “मुझे इनमें,” कहते हुए मैंने अथर्व का हाथ अपने एक स्तन पर रखा, “दूध चाहिए...”

“हैं? वो कैसे होगा?”

“अरे बुद्धू... मैं माँ बनना चाहती हूँ...”

“माँ बनना चाहती हो? वाकई? ...आई मीन, इस इट फॉर रियल?” मुझे उसकी बात पर यकीन ही नहीं हो रहा था। प्रिया अभी तक अपनी पढाई लिखाई में इतनी मशगूल थी, की इस बात को पचाना ही मुश्किल हो रहा था।

“हाँ! क्यों? आप ऐसे क्यों कह रहे हैं?” प्रिया का स्वर अभी भी उतना ही संयत और शांत था, जितना की यह बात करने से पहले... सहवास की संतृप्ति की उत्तरदीप्ति का असर होगा? ... नहीं.. ये तो सीरियस लग रही है!

“नहीं.. मेरा मतलब.. तुम अभी कितनी छोटी हो!”

“आपका मतलब, आपसे शादी करने के टाइम से भी छोटी?”

“नहीं... ओह गॉड! एक मिनट... जरा ठन्डे दिमाग से सोचते हैं.. माँ बनना एक बात है, लेकिन बच्चे की परवरिश, उसकी देखभाल करना एक बिलकुल अलग बात है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ की तुम हमारे बच्चे का ख्याल नहीं रख पाओगी.. लेकिन उसकी फुल टाइम ज़िम्मेदारी? मुझे नहीं लगता की तुम.. और मैं भी अभी तैयार हैं। अभी तुम्हारी उम्र इन चक्करों में पड़ने की नहीं है... हम ज़रूर बच्चे करेंगे! लेकिन, अभी नहीं। यह समझदारी नहीं है... अभी अपने करियर के बारे में सोचो – बच्चे तो कभी भी कर सकते हैं!”

“जानू.. माना की मैं अभी पढ़ रही हूँ... लेकिन, वो मेरे लिए बहुत आवश्यक नहीं है! पढाई मैं जारी भी रख सकती हूँ.. है की नहीं? वैसे भी मैंने अभी आपको अपना करियर प्लान बताया न? हम लोग एक अच्छी गवर्नेस रख सकते हैं.. मेरी हेल्प के लिए!”

उसने रुक कर मुझे कुछ देर देखा... मैंने कुछ नहीं कहा। तो उसी ने आगे कहना जारी रखा,

“जानू.. पिछले कई दिनों से मुझे माँ बनने की बहुत तीव्र इच्छा हो रही है। और इसमें परेशानी ही क्या है?

यहाँ, हमारी कॉलोनी में ही देख लीजिये.. कितनी सारी महिलाएं माँ बनी, और फिर उसके बाद अपने करियर पर भी काम कर रही हैं.. मेरा सेकंड इयर ख़तम होने ही वाला है.. अगर हेल्थ ठीक रहे और कोई कॉम्प्लिकेशन न हो, तो थर्ड इयर की क्लासेज तो आराम से की जा सकती हैं! ...वैसे... अगर आप पापा बनने को अभी रेडी नहीं है, तो कोई बात नहीं! हम वेट कर लेंगे!"

पापा! और मैं? ऐसे तो मैंने कभी सोचा ही नहीं!

"वेट कर लेंगे? अरे यार! अभी तुम्हारी उम्र ही कितनी है?"

"आपको नहीं मालूम?"

"मालूम है.. ! एकदम कच्ची कली हो तुम! अभी बच्चा जनना ज़रूरी है?"

"कच्ची कली.. ही ही ही...! इस कली को आपने महकता हुआ फूल बना दिया है, मेरे जानू!" हँसते हुए प्रिया ने मेरे गले में गलबहियाँ डाल दीं और मेरे चेहरे को अपने स्तनों की तरफ झुकाते हुए बिस्तर पर लेट गयी।

इशारा साफ़ था – सच में, मेरा भी कितना मन होता था की अगर इसके स्तनों में दूध उतर आये तो कितना मज़ा आये! लेकिन इतनी सी बात के लिए उसको माँ बनाना! ये तो वही बात हुई, खाया पिया कुछ नहीं और गिलास तोड़े बारह आने!

१९

मुझे नहीं मालूम था की प्रिया इस बात का ठीकरा मेरे सर पर, और वो भी इस तरह फोड़ेगी। रात में नींद नहीं आई, और पूरी रात सोचता रहा – क्या बच्चा लाने की बात से मैं डर गया हूँ? प्रिया तो तैयार लग रही है, लेकिन क्या मैं तैयार हूँ? आर्थिक, सामाजिक, शारीरिक दृष्टि से तो अभी तो उत्तम स्थिति है.. लेकिन भावनात्मक रूप से? क्या मैं एक नन्ही सी जान इस संसार में लाने और उसको लाड़-प्यार देने और पाल-पोस कर बड़ा करने के लिए तैयार हूँ? अभी तक तो जब जो जी में आया वो किया वाली हालत है.. लेकिन बच्चा आने पर वो सब कुछ बदल जाएगा! अपनी स्वतंत्रता छोड़ सकता हूँ क्या? उम्र का बहाना तो बना ही नहीं सकता.. मेरी उम्र के कई सहकर्मी बाप बन चुके हैं.. एक नहीं बल्कि दो दो बच्चों के! क्या यह डर मेरा प्रिया पर अपने एकाधिकार के कारण है? बच्चा आने पर वो तो उसी में लगी रहेगी.. फिर... मेरा क्या होगा? अब यह चाहे मेरा डर हो, या फिर प्रिया पर मेरा एकाधिकार, और या फिर उसके लिए मेरी चिंता... मैं उसको सीधे-सीधे मना नहीं करना चाह रहा था, पर इशारों में समझाया कि अभी बच्चे के चक्कर में मत पड़ो! पहले पढ़ाई ख़तम करो, और फिर बच्चे।

माँ बाप बनना कोई मुश्किल काम तो है नहीं... बस निर्बाध रूप से सहवास करते रहें, और क्या? मैं और प्रिया कभी भी इस मामले में पीछे नहीं रहते हैं, और जल्दी ही प्रिया के आग्रह पर क्रिया के दौरान हमने किसी भी प्रकार की सुरक्षा रखना बंद कर दिया। बच्चे के विषय में और ज्यादा बात करने से मैं भी कुछ दिनों में मन ही मन पिता बनने को तैयार हो गया। मार्च का महीना था, और आख़िरी हफ्ता चल रहा था। प्रिया उस रात अपने एक्जाम की तैयारी कर रही थी, और हमेशा की तरह मैं उसके साथ उसके विषय पर चर्चा कर रहा था। मैंने एक बात ज़रूर देखी – प्रिया आज रोज़ से ज्यादा मुस्कुरा रही थी... रह रह कर वो हंस भी रही थी! ये सब मेरा भ्रम था क्या? उसके गाल थोड़ा और गुलाबी लग रहे थे! ये लड़की तो परी है परी! हर रोज़ और ज्यादा सुन्दर होती जा रही है!! दस बजते बजते उसने कहा की तैयारी हो गयी है। साल भर पढ़ने का लाभ यही है की आखिरी रात ज्यादा मशक्कत नहीं करनी पड़ती। किताबों को बगल की टेबल पर रख कर प्रिया मेरा हाथ पकड़ कर मुझे मुस्कुराते हुए देखने लगी।

“क्या बात है जानू? बहुत खुश लग रही हो आज!”

“हाँ.. आज खुश तो बहुत हूँ मैं!”

“अरे वाह! भई, हमें भी तो मालूम पड़े आपकी ख़ुशी का राज़!”

उत्तर में प्रिया ने मेरे हाथ को अपने एक स्तन पर रख कर कहा, “इनमें... दूध... आने वाला है!”

मेरा मुंह खुला का खुला रह गया।

प्रिया ने मुझे समझाते हुए कहा, “जानू.. आप पापा बनने वाले हैं!”

“व्हाट! क्या ये सच है जानू?”

प्रिया खिलखिला कर हंस पड़ी, और देर तक हंसने के बाद उसने सर हिला कर हामी भरी।

“ओओ माय गॉड! वाव! आर यू श्योर?”

“मुझे आज सवेरे मालूम पड़ा.. मिस्ड माय पीरियड्स फॉर सेकंड मंथ.. इसलिए आज होम प्रेगनेंसी किट ला कर टेस्ट किया। रिजल्ट पॉजिटिव है!”

मुझे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था, “वाव!” मैंने धीरे से कहा.. और फिर तेज़ से, “वाव्व्व! ओह गॉड! हनी, आई ऍम सो हैप्पी! अमेजिंग!!” कहते हुए मैंने प्रिया के होंठों पर अपने होंठ रख दिए और अपने दोनों हाथों से उसके गालों को पकड़ कर देर तक चूमता रहा। मेरी बीवी गर्भवती है! अद्भुत! मुझे उसका शरीर देखने की तीव्र इच्छा होने लगी (मेरी मूर्खता देखिए, अभी दो दिनों पहले ही तो हमने सहवास किया था), और मैंने उसकी टी-शर्ट उठा दी... और उसके पेट पर प्यार से हाथ फिराया।

‘इसमें मेरा बच्चा है!’ मैं इस ख़याल से हैरान था। मेरा मन उत्साह से भर गया। मैंने बिना कोई देर किए उसके पेट पर एक चुम्बन दिया – प्रिया मेरी इस हरकत से सिहर उठी और हलके से हंसने लगी।

“आई लव यू सो मच हनी! आज तुमने मुझे कितनी सारी ख़ुशी दी है, तुमको मालूम नहीं!”

“आई लव यू टू.. सबसे ज्यादा! आप मेरे हीरो हैं.. हमारा बच्चा बहुत लकी है की उसको आपके जैसा पापा मिलेगा!”

“नहीं जानू.. मैं लकी हूँ.. की मुझे तुम मिली.. पहले तुमने मुझे पूरा किया, और अब मेरे पूरे जीवन को! थैंक यू!”

पूरी रात मुझे नींद नहीं आई... मुझे क्या, प्रिया को भी रह रह कर नींद आई। मुझे डर लग रहा था की कहीं नींद की कमी से उसका अगले दिन का एक्जाम न गड़बड़ हो जाय.. लेकिन प्रिया ने मुझे दिलासा दिया की वो भी ख़ुशी के कारण नहीं सो पा रही है। और इससे एक्जाम पर असर नहीं पड़ेगा। मैंने अगले दिन से ही प्रिया का और ज्यादा ख़याल रखना शुरू कर दिया – बढ़िया डॉक्टर से सलाह-मशविरा, खाना पीना, व्यायाम, और ज्यादा आराम इत्यादि! डॉक्टर प्रिया की शारीरिक हालत देख कर बहुत खुश थी, और उसने प्रिया को अपनी दिनचर्या बरकरार रखने को कहा – बस इस बात की हिदायद दी की वो कोई ऐसा श्रमसाध्य काम या व्यायाम न करे, जिसमे बहुत थकावट हो जाय। उन्होंने मुझे कहा की मैं प्रिया को ज्यादा से ज्यादा खुश रखूँ। उन्होंने यह भी बताया की क्योंकि प्रिया की सेहत बढ़िया है, इसलिए सहवास करना ठीक है, लेकिन सावधानी रखें जिससे गर्भ पर अनचाहा चोट न लगे। उन्होंने यह भी कहा की इस दौरान प्रिया बहुत ‘मूडी’ हो सकती है, इसलिए उसको हर तरह से खुश रखना ज़रूरी है। मुझे यह डॉक्टर बहुत अच्छी लगी, क्योंकि उन्होंने हमको बिना वजह डराया नहीं और न कोई दवाई इत्यादि लिखी। गर्भधारण एक सहज प्राकृतिक क्रिया है, कोई रोग नहीं। बस उन्होंने समय समय पर जांच करने और कुछ सावधानियां लेने की सलाह दी।

हमने जब उसके घर में यह इत्तला दी, तो वहाँ भी सभी बहुत प्रसन्न हुए। उसकी माँ प्रिया को मायके बुलाना चाहती थीं, लेकिन प्रिया ने उनको कहा की मैं उसका खूब ख़याल रखता हूँ, और बैंगलोर में देखभाल अच्छी है। इसलिए वो यहीं रहेगी, लेकिन हाँ, वो बीच में एक बार मेरे साथ उत्तराँचल आएगी। अश्विनी यह खबर सुन कर बहुत ही अधिक उत्साहित थी। इसलिए प्रिया ने उसको अपनी गर्मी की छुट्टियाँ बैंगलोर में मनाने को कहा। अश्विनी का अप्रैल के अंत में बैंगलोर आना तय हो गया। मुझे इसी बीच तीन हफ़्तों के लिए यूरोप जाना पड़ा – मन तो बिलकुल नहीं था, लेकिन बॉस ने कहा की अभी जाना ठीक है, बाद में कोई ट्रेवल नहीं होगा। यह बात एक तरह से ठीक थी, लेकिन मन मान नहीं रहा था। खैर, मैंने जाने से पहले प्रिया की देखभाल के सारे इंतजाम कर दिए थे और हेगड़े दंपत्ति से विनती करी थी की वो ज़रुरत होने पर प्रिया की मदद कर दें। इसके उत्तर में मुझे लम्बा चौड़ा

भाषण सुनना पड़ा की प्रिया उनकी भी बेटी है, और मैंने यह कैसे सोच लिया की मुझे उनको उसकी देखभाल करने के लिए कहना पड़ेगा। प्रिया के एक्जाम अप्रैल के मध्य में ख़तम हो गए, और अप्रैल ख़तम होते होते मैं भी बैंगलोर वापस आ गया।

जब घर का दरवाज़ा खुला तो मुझे लगा की जैसे मेरे सामने कोई अप्सरा खड़ी हुई है! मैं एक पल को उसे पहचान ही नहीं पाया।

"प्रिया! आज तुम कितनी सुन्दर लग रही हो।"

"आप भी ना..." प्रिया ने शर्माते हुए कहा।

प्रिया तो हमेशा से ही सुन्दर थी, लेकिन गर्भावस्था के इन महीनों में उसका शरीर कुछ ऐसे बदल गया जैसे किसी सिद्धहस्थ मूर्तिकार ने फुर्सत से उसे तराशा हो। बिलकुल जैसे कोई अति सुन्दर खजुराहो की मूरत! सुन्दर, लावण्य से परिपूरित मुखड़ा, गुलाबी रसीले होंठ, मादक स्तन (स्पष्ट रूप से उनका आकार बढ़ गया था), सुडौल-गोल नितंब, और पेट के सामने सौम्य उभार! हमारा बच्चा! और इन सबके ऊपर, एक प्यारी-भोली सी सूरत। आज वह वाकई रति का अवतार लग रही थी। और हलके गुलाबी साड़ी-ब्लाउज में वह एकदम क़यामत ढा रही थी। मैंने भाग कर बिना कोई देर किये अपना कैमरा निकला और प्रिया की ना-नुकुर के बावजूद उसकी कई सारी तस्वीरें उतार लीं। मैंने मन ही मन निर्णय लिया की अब से गर्भावस्था के हर महीने की नग्न तस्वीरें लूँगा... बुढापे में साथ में याद करेंगे!

तीन हफ्ते हाथ से काम चलाने के बाद मैं भी प्रिया के साथ के लिए व्याकुल था। मैंने प्रिया के मुख को अपने हाथों में ले कर उसके होंठों से अपने होंठ मिला दिए। प्रिया तुरंत ही मेरा साथ देने लगती है : मैं मस्त होकर उसके मीठे होंठ और रस-भरे मुख को चूसने लगता हूँ। ऐसे ही चूमते हुए मैं उसकी साड़ी उठाने लगता हूँ। प्रिया भी उत्तेजित हो गयी थी - उसकी सांसे अब काफी तेज चल रही थीं। उन्माद में आकर उसने मुझे अपनी बाहों में जकड लिया। चूमते हुए उसकी सांसो की कामुक सिसकियां मुझे अपने चेहरे पर महसूस होने लगीं। मै इस समय अपने एक हाथ से उसकी नंगी जांघ सहला रहा था। इस पर प्रिया ने चुम्बन तोड़ कर कहा,

“जानू, बेड पर चलते हैं?”

मैंने इस बात पर उसको अपनी दोनों बाहों में उठा लिया और उसको चूमते हुए बेडरूम तक ले जाकर, पूरी सावधानी से बिस्तर पर लिटा दिया। अब मैं आराम से उसके बगल लेट कर उसको चूम रहा था – अत्यधिक घर्षण, चुम्बन और चूषण से उसके होंठ सुर्ख लाल रंग के हो गए थे। हम दोनों के मुँह अब तक काफी गरम हो गए थे, और मुँह ही क्या, हमारे शरीर भी!

मैंने प्रिया की साड़ी पूरी उठा दी – आश्चर्य, उसने नीचे चड्ढी नहीं पहनी हुई थी। मैंने उसको छेड़ने के लिए उसकी योनि के आस-पास की जगह को देर तक सहलाता रहा – कुछ ही देर में वो अपनी कमर को तड़प कर हिलाने लगी। वह कह तो कुछ भी नहीं रही थी, लेकिन उसके भाव पूरी तरह से स्पष्ट थे – "मेरी योनि को कब छेड़ोगे?"

पर मैं उसकी योनि के आस पास ही सहला रहा था, साथ ही साथ उसको चूम रहा था। प्रिया की योनि में अंतर दिख रहा था – रक्त से अतिपूरित हो चले उसके योनि के दोनों होंठ कुछ बड़े लग रहे थे। संभव है की वो बहुत संवेदनशील भी हों! उसका योनि द्वार बंद था, लेकिन आकार बड़ा लग रहा था। अंततः मैंने अपनी जीभ को उसकी योनि से सटाया और जैसे ही अपनी जीभ से उसे कुरेदा, तो उसकी योनि के पट तुरंत खुल गए। अंदर का सामान्यतः गुलाबी हिस्सा कुछ और गुलाबी हो गया था। यह ऐसे तो कोई नई क्रिया नहीं थी – मुख मैथुन हमारे लिए एक तरह से सहवास के दौरान होने वाला ज़रूरी दस्तूर हो गया था.. लेकिन गर्भवती योनि पर मौखिक क्रिया काफी रोचक लग रही थी। कुछ देर प्रिया की योनि को चूमने चाटने के बाद,

"जानू, तेरी योनि तो क्या मस्त लग रही है... देखो, फूल कर कैसी कुप्पा हो गयी है!"

"आह्ह्ह! छी! कैसे गन्दी बात बोल रहे हैं! बच्चा सुनेगा तो क्या सीखेगा? जो करना है चुपचाप करिए!" मीठी झिड़की!

"गन्दी बात क्या है? योनि का मतलब है आम! ये भी तो आम जैसी रसीली हो गयी है.."

"हाँ जी हाँ! सब मालूम है मुझे आपका.. आप अपनी शब्दावली अपने पास रखिए.. ऊह्ह्ह!" मैंने जोर से उसके भगनासे को छेड़ा।

साड़ी का कपड़ा हस्तक्षेप कर रहा था, इसलिए मैंने उठ कर प्रिया का निचला हिस्सा निर्वस्त्र करना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में उसकी साड़ी और पेटीकोट दोनों ही उसके शरीर से अलग हो गए।

"इतनी देर तक, इतनी मेहनत करने के बाद मैंने साड़ी पहनी थी... एक घंटा भी शरीर पर नहीं रही.." प्रिया ने झूठा गुस्सा दिखाया।

"अच्छा जी, मुझे लगा की तुमको नंगी रहना अच्छा लगता है!"

"मुझे नहीं... वो आपको अच्छा लगता है!"

"हाँ... वो बात तो है!" कह कर मैंने उसकी ब्लाउज के बटन खोलने का उपक्रम किया। कुछ ही पलों में ब्लाउज प्रिया की छाती से अलग हो गयी। प्रिया ने नीचे ब्रा नहीं पहनी थी। मैंने एक पल रुक कर उसके बदले हुए स्तनों को देखा – प्रिया की नज़र मेरे चेहरे पर थी, मानो वो मेरे हाव भाव देखना चाहती हो। गर्भाधान के पहले प्रिया के स्तनाग्र गहरे भूरे रंग के थे, और बेहद प्यारे लगते थे। इस समय उनमें हल्का सा कालापन आ गया था – आबनूस जैसा रंग! और areola का आकार भी कुछ बढ़ गया था। सच कहता हूँ, किसी और समय ऐसा होता तो निराशा लगती, लेकिन इस समय उसके स्तन मुझे अत्यंत आकर्षक लग रहे थे। प्यारे प्यारे स्तन!

"ब्यूटीफुल!" कह कर मैंने अपने मुँह से लपक कर उसके एक स्तनाग्र को दबोच लिया और उत्साह से उसको पीने लगा। प्रिया आह-आह कर के तड़पने लगी और मेरे बालों को कस के पकड़ने लगी।

"आह.. जानू जानू.. इस्स्स्स! दर्द होता है.. धीरे आह्ह... धीरे!" वो बड़बड़ा रही थी।

"स्स्स्स धीरे धीरे कैसे करूँ? कितनी सुन्दर स्तन हैं तेरी.." कह कर मैंने उसके स्तनाग्र बारी बारी से दाँतों के बीच लेकर काटने लगा।

"मैं तो इनमें से दूध की एक एक बूँद चूस लूँगा!"

"जानू! सच में.. आह! दर्द होता है.. कुछ रहम करो.. उफ़!"

प्रिया ने ऐसी प्रतिक्रिया कभी नहीं दी.. सचमुच उसको दर्द हो रहा होगा। मैंने उसके स्तनों को इस हमले से राहत दी। प्रिया दोनों हाथों से अपने एक एक स्तन थाम कर राहत की सांसे भरने लगी, और कुछ देर बाद बोली,

“अब आप इन पर सेंधमारी करना बंद कीजिए.. हमारे होने वाले बच्चे की डेयरी है यहाँ!”

“हैं? क्या मतलब? मेरा पत्ता साफ़? इतना बड़ा धोखा!!”

“ही ही ही...” प्रिया खिलखिला कर हंस पड़ी, “अरे बाबा! नहीं.. ऐसा मैंने कब कहा? सब कुछ आप का ही तो है... लेकिन एक साल तक आप दूसरे नंबर पर हैं... आप भी दूध पीना.. लेकिन हमारे बच्चे के बाद! समझे मेरे साजन?” कह कर उसने दुलार से मेरे बालों में हाथ फिराया।

“बस.. एक ही साल तक पिलाओगी?”

“हाँ.. उसको बस एक साल... लेकिन उसके पापा को, पूरी उम्र!”

“हम्म... तो अब मुझे जूनियर की जूठन खानी पड़ेगी..”

“न बाबा... खाना नहीं.. बस पीना...”

प्रिया की बात पर हम दोनों खुल कर हंसने लगे।

“ठीक है... मम्मी की स्तन नहीं तो योनि ही सही..” कह कर मैंने प्रिया की योनि पर हमला किया।

“जानू...!” प्रिया चिहुंक उठी, “लैंग्वेज! ... बिलकुल बेशरम हो!”

मैंने नए अंदाज़ में प्रिया की योनि चाटनी शुरू की – जैसे बाघ पानी पीता है न? लपलपा कर! ठीक उसी प्रकार मेरी जीभ भी प्रिया की योनि से खेल रही थी... प्रिया की सांसें प्रतिक्रिया स्वरुप तेजी से चलने लगी.. उत्तेजना में वो कसमसा मुझे प्रोत्साहन देने लगी.. वह उत्तेजना के चरम पर जल्दी जल्दी पहुँच रही थी, और इस कारण उसका शरीर पीछे

की ओर तन गया था – धनुष समान! उसके हाथ मेरे सर पर दबाव डाल रहे थे। मैने उसके हाथों को अपने सर से हटा कर, उसकी उँगलियों को बारी बारी से अपने मुंह में ले कर चूसने चाटने लगा। प्रिया उन्माद में कराह उठी – उसकी कमर हिलाने लगी... ठीक वैसे ही जैसे सहवास के दौरान करती है। उसके हाथों को छोड़ कर मैंने जैसे ही उसकी योनि पर वापस जीभ लगाई उसकी योनि से सिरप जैसा द्रव बहने लगा, और उसके बदन में कंपकंपी आने लगी। मै धीरे धीरे, स्वाद ले लेकर उस द्रव को चाट रहा था। बढ़िया स्वाद! नमकीन, खट्टा, और कुछ अनजाने स्वाद – सबका मिला-जुला।

प्रिया मुँह से अंग्रेजी का ओ बनाए हुए तेजी से साँसे ले रही थी – इस कारण हलकी सीटी सी बजती सुनाई दी। मैंने सर उठा कर उसकी तरफ देखा – प्रिया ने आंखे कस कर मूंदी हुई थी, और कांप रही थी। मैने वापस उसकी योनि का मांस अपने होठों के बीच लिया और होंठों की मदद से दबाने, और चाटने लगा। इस नए आक्रमण से वो पूरी तरह से तड़प उठी। मैंने विभिन्न गतियों और तरीकों से उसकी योनि के दोनों होंठों और भगनासे को चाट रहा था। उसी लय में लय मिलाते हुए प्रिया भी अपनी कमर को आगे-पीछे हिला रही थी। प्रिया दोबारा अपने चरम के निकट पहुँच गई। लेकिन उसको प्राप्त करवाने के लिए मुझे एक आखिरी हमला करना था – मैंने उसकी योनि मुख को अपनी तर्जनी और अंगूठे की सहायता से फैलाया, और अपने मुँह को अन्दर दे मारा। जितना संभव था, मैंने अपनी जीभ को उसकी योनि के भीतर तक ठेल दिया – उसकी योनि की अंदरूनी दीवारें मानो भूचाल उत्पन्न कर रही थीं – तेजी से संकुचन और फैलाव हो रहा था। शीघ्र ही उसकी योनि के भीतर का ज्वालामुखी फट पड़ा। मुझे पुनः नवपरिचित नमकीन-खट्टा स्वाद एक गरम द्रव के साथ अपनी जीभ पर महसूस हुआ। मै अपनी जीभ को यथासंभव उसकी योनि के अंदर तक डाल देता हूँ।

“आआह्ह्ह्ह!” प्रिया चीख उठती है। उत्तेजनावश वो अपने पैरों से मेरी गरदन को जकड़ लेती है और कमर को मेरे मुंह ठेलने की कोशिश कर रही थी। मैं अपनी जीभ को अंदर-बाहर अंदर-बाहर करना बंद नहीं करता। उसका रिसता हुआ योनि-रस मैं पूरी तरह से पी लेता हूँ। प्रिया का शरीर एकदम अकड़ जाता है; रति-निष्पत्ति के बाद भी उसका शरीर रह रह कर झटके खा रहा होता है। जब उत्तेजना कुछ कम हुई तो प्रिया की सिसकारी छूट गई, “स्स्स्स...सीईइइ हम्म्म्म”

अंततः मैं उसको छोड़ता हूँ, और मुस्कुराते हुए देखता हूँ। प्रिया संतुष्टि और प्रसन्नता भरी निगाहों मुझे देखती है। मैंने ऊपर जा कर उसको एक बार फिर से चूमा, और उसके सर पर हाथ फिराते हुए बोला,

“जानू.. लिंग ले सकोगी?”

प्रिया ने सर हिला कर हामी भरी और फिर कुछ रुक कर कहा, “जानू... बच्चा सुनता है!”

मैं सिर्फ मुस्कुराया। इतनी देर तक यह सब क्रियाएँ करने के कारण, मेरा लिंग अपने अधिकतम फैलाव और उत्थान पर था। मुझे मालूम था की बस दो तीन मिनट की ही बात है.. मैं बिस्तर से उठा और प्रिया को उसके नितम्ब पकड़ कर बिस्तर के सिरे की ओर खिसकाया। कुछ इस तरह जिससे उसके पैर घुटने के नीचे से लटक रहे हों, और योनि बिस्तर के किनारे के ऊपर रहे, और ऊपर का पूरा शरीर बिस्तर पर चित लेटा रहे। मैं प्रिया को घुटने के बल खड़ा हो कर भोगने वाला था। यह एक सुरक्षित आसन था – प्रिया के पेट पर मेरा रत्ती भर भार भी नहीं पड़ता।

सामने घुटने के बल बैठ कर, मैंने प्रिया की टांगों को मेरी कमर के गिर्द घेर लिया और एक जांघ को कस कर पकड़ लिया। दूसरे हाथ से मैंने अपने लिंग को प्रिया की योनि-द्वार पर टिकाया और धीरे धीरे अन्दर तक घुसा दिया। लिंग इतना उत्तेजित था की वो प्रिया की योनि में ऐसे घुस गया जैसे की मक्खन में गरम छुरी! इस समय हम दोनों के जघन क्षेत्र आपस में चिपक गए थे – मतलब मेरे लिंग की पूरी लम्बाई इस समय प्रिया के अन्दर थी। जैसे तलवार के लिए सबसे सुरक्षित स्थान उसका म्यान होती है, ठीक उसी तरह एक उत्तेजित लिंग के लिए सबसे सुरक्षित स्थान एक उतनी ही उत्तेजित योनि होती है – उतनी ही उत्तेजित... गरम गीलापन और फिसलन लिए! काफी देर से उत्तेजित मेरे लिंग को जब प्रिया की योनि ने प्यार से जकड़ा तो मुझे, और मेरे लिंग को को बहुत सकून मिला। हम दोनों प्रेमालिंगन में बांध गए।

इस अवस्था में मुझे बदमाशी सूझी।

मैंने प्रिया के पेट पर हाथ फिराते हुए कहा, “मेरे बच्चे, मैं आपका पापा बोल रहा हूँ! आपकी मम्मी और मैं, आपको खूब प्यार करते हैं... मैं आपकी मम्मी को भी खूब प्यार करता हूँ... उसी प्यार के कारण आप बन रहे हो!”

प्रिया मेरी बातों पर मुस्कुरा रही थी.. मैंने कहना जारी रखा, “जब आप मम्मी के अन्दर से बाहर आ जाओगे, तो हम ठीक से शेक-हैण्ड करेंगे... फिलहाल मैं आपको अपने लिंग से

छू रहा हूँ.. इसे पहचान लो.. जब तक आप बाहर नहीं आओगे तब तक आपका अपने पापा का यही परिचय है..”

प्रिया ने प्यार से मेरे हाथ पर एक चपत लगाई, “बोला न, आप चुप-चाप अपना काम करिए!”

“देखा बच्चे.. आपकी माँ मेरा लिंग लेने के लिए कितना ललायित रहती है?”

“चुप बेशरम..”

मैंने ज्यादा छेड़ छाड़ न करते हुए सीधा मुद्दे पर आने की सोची – मैं सम्हाल कर धीरे धीरे प्रिया को भोग रहा था। हलके झटके, नया आसन, और प्रिया की नई अवस्था! रह रह कर चूमते हुए मैं प्रिया के साथ सहवास कर रहा था। प्रिया ने इससे कहीं अधिक प्रबल सहवास किया है, लेकिन इस मृदुल और सौम्य सहवास पर भी वो सुख भरी सिस्कारियां ले रही थी... कमाल है! वो हर झटके पर सिस्कारियां या आहें भर रही थी!

‘अच्छा है! मुझे बहुत कुछ नया नहीं सोचना पड़ेगा!’

मैंने नीचे से लिंग की क्रिया के साथ साथ, प्रिया के मुख, गालों, और गर्दन पर चुम्बन, चूषण और कतरन जारी रखी। और हाथों से उसके मांसल स्तनों का मर्दन भी! चौतरफा हमला! अभी केवल तीन चार मिनट ही हुए थे, और जैसे मैंने सोचा था, मैं प्रिया के अन्दर ही स्खलित हो गया। कोई उल्लेखनीय तरीके से मैंने आज सहवास नहीं किया था, लेकिन आज मुझे बहुत ही सुखद अहसास हुआ! प्रिया ने मुझे अपने आलिंगन में कैद कर लिया... और मैंने उसे अपनी बाँहों में कस कर भींच लिया।

“जानू हमरे...” कुछ देर सुस्ताने के बाद प्रिया ने कहा, “... आज वाला.. द बेस्ट था..” और कह कर उसने मुझे होंठों पर चूम लिया।

मैंने उसको छेड़ा, “आज वाला क्या?”

“यही..”

“यही क्या?”

“से...क्स...”

“नहीं.. हिन्दी में कहो?”

“चलो हटो जी.. आपको तो हमेशा मजाक सूझता है..” प्रिया शरमाई।

“मज़ाक! अरे वाह! ये तो वही बात हुई.. गुड़ खाए, और गुलगुले से परहेज़! चलो बताओ.. हमने अभी क्या किया?”

“प्लीज़ जानू...”

“अरे बोल न..”

“आप नहीं मानोगे?”

“बिलकुल नहीं...”

“ठीक है बाबा... ठुकाई.. बस! अब खुश?”

“हाँ..! लेकिन... अब पूरा बोलो...”

“जानू मेरे, आज की ठुकाई ‘द बेस्ट’ थी!”

“वैरी गुड! आई ऍम सो हैप्पी!”

“मालूम था.. हमारा बच्चा अगर बिगड़ा न.. तो आपकी जिम्मेदारी है। ... और अगर इससे आपका पेट भर गया हो तो खाना खा लें?“

२०

अश्विनी इस घटना के एक सप्ताह बाद बैंगलोर आई। अकेले नहीं आई थी, साथ में मेरे सास और ससुर भी थे। एक बड़ी ही लम्बी चौड़ी रेल यात्रा करी थी उन लोगों ने! अश्विनी के लिए तो एकदम अनोखा अनुभव था! खैर, गनीमत यह थी की उनकी ट्रेन सवेरे ही आ गई, और छुट्टी के दिन आई, इसलिए उनको वहाँ से आगे कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा! रेलवे स्टेशन पर मैं ही गया था सभी को रिसीव करने… प्रिया घर पर ही रह कर नाश्ता बनाने का काम कर रही थी।

घर आने पर हम लोग ठीक से मिले। अब चूंकि वो दोनों पहली बार अपनी बेटी के ससुराल (या की घर कह लीजिए) आये थे, इसलिए उन्होंने अपने साथ कोई न कोई भेंट लाना ज़रूरी समझा। न जाने कैसी परम्परा या पद्धति निभा रहे थे… भई, जो परम्पराएँ धन का अपव्यय करें, उनको न ही निभाया जाए, उसी में हमारी भलाई है। वो प्रिया के लिए कुछ जेवर और मेरे लिए रुपए और कपड़ों की भेंट लाये थे। घर की माली हालत तो मुझे मालूम ही थी, इसलिए मैं खूब बिगड़ा, और उनसे आइन्दा फिजूलखर्ची न करने की कसमें दिलवायीं। इतने दिनों बाद मिले, और बिना वजह की बात पर बहस हो गयी। खैर! ससुर जी ने कहा की इस बार फसल अच्छी हुई है, और कमाई भी.. इसलिए देन व्यवहार तो करने का बनता है.. और वैसे भी उनका जो कुछ भी है, वो दोनों बेटियों के लिए ही तो है! अपने साथ थोड़े न ले जायेंगे! रुढ़िवादी लोग और उनकी सोच!

अश्विनी अब एक अत्यंत खूबसूरत तरुणी के रूप में विकसित हो गयी थी.. इतने दिनों के बाद देख भी तो रहा हूँ उसको! वो मुझे मुस्कुराते हुए देख रही थी।

मैंने आगे बढ़कर उसकी एक हथेली को अपने हाथ में ले लिया, “अरे वाह! कितनी सुन्दर लग रही है मेरी गुड़िया… तुम तो खूब प्यारी हो गई हो..!” कह कर मैंने उसको अपने गले से लगा लिया। अश्विनी शरमाते हुए मेरे सीने में अपना मुँह छुपाए दुबक गई। लेकिन मैंने उसको छेड़ना बंद नहीं किया,

“मैं तुम्हारे गालों का सेब खा लूँ?”

“नहीईई.. ही ही ही..” कह कर हँसते हुए वो मेरे आलिंगन से बाहर निकलने के लिए कसमसाने लगी..

“अरे! क्यों भई, मुझे पप्पी नहीं दोगी?”

अश्विनी शर्म से लाल हो गई, और बोली, “जीजू, अब मैं बड़ी हो गयी हूँ।“

“हंय? बड़ी हो गयी हो? कब? और कहाँ से? मुझे तो नहीं दिखा!” साफ़ झूठ! दिख तो सब रहा था, लेकिन फिर भी, मैंने उसको छेड़ा! लेकिन मेरे लिए अश्विनी अभी भी बच्ची ही थी।

“उम्म्म... मुझे नहीं पता। लेकिन मम्मी मुझे अब फ्रॉक पहनने नहीं देती... कहती है की तू बड़ी हो गयी है...”

“मम्मी ऐसा कहती है? चलो, उनके साथ झगड़ा करते हैं! ... लेकिन उससे पहले...” कहते हुए मैंने उसकी ठुड्डी को ऊपर उठाते हुए उसके दोनों गालों पर एक-एक पप्पी ले ही ली। शर्म से उसके गाल और लाल हो गए और वो मुझसे छूट कर भाग खड़ी हुई।

प्रिया इस समय सबके आकर्षण का केंद्र थी, इसलिए मैंने कुछ काम के बहाने वहाँ से छुट्टी ली, और बाहर निकल गया। सारे काम निबटाते और वापस आते आते दोपहर हो गई.. और कोई डेढ़ बज गए! सासु माँ के आने का एक लाभ होता है (मेरे सभी विवाहित मित्र इस बात से सहमत होंगे) – और वह है समय पर स्वादिष्ट भोजन! वापस आया तो देखा की सभी मेरा ही इंतज़ार कर रहे हैं। खैर, मैंने जल्दी जल्दी नहाया, और फिर स्वादिष्ट गढ़वाली व्यंजनों का भोग लगाया। और फिर सुखभरी नींद सो गए।

शाम को चाय पर मैंने अश्विनी से उसके संभावित रिजल्ट के बारे में पूछा। उसको पूरी उम्मीद थी की अच्छा रिजल्ट आएगा। मैंने ससुर जी और अश्विनी से विधिवत अश्विनी की आगे की पढाई के बारे में चर्चा करी। स्कूल और एक्जाम की बातें करते करते मुझे अपना बचपन और उससे जुडी बातें याद आने लगीं। पढाई वाला समय तो जैसे तैसे ही बीतता था, लेकिन परीक्षा के दिनों में अलग ही प्रकार की मस्ती होती थी। दिन भर क्लास में बैठने के झंझट से पूरी तरह मुक्ति और एक्जाम के बाद पूरा दिन मस्ती और खेल कूद! मजे की बात यह की न तो टीचर की फटकार पड़ती और न ही माँ की डांट! बेटा एक्जाम दे कर जो आया है! पूरा दिन स्कूल में रहना भी नहीं पड़ता। और बच्चे तो एक्जाम से बहुत डरते, लेकिन मैं साल भर परीक्षा के समय का ही इंतज़ार करता था – सोचिये न, पूरे साल में यही वो समय होता था जब भारी-भरकम बस्ते के बोझ से छुटकारा मिलता था। एक्जाम के लिए मैं एक पोलीबैग में राइटिंग पैड, पेंसिल, कलम, रबर, इत्यादि लेकर लेकर पहुँच

जाता। उसके पहले नाश्ते में माँ मुझे सब्जी-परांठे और फिर दही-चीनी खिलाती ताकि मेरे साल भर के पाप धुल जायें, और मुझ पर माँ सरस्वती की कृपा हो! पुरानी यादें ताज़ा हो गईं!

खैर, जैसा की मैंने पहले लिखा है, मैंने अश्विनी और ससुर जी को यहाँ की पढाई की गुणवत्ता, और इस कारण, सीखने और करियर बनाने के अनेक अवसरों के बारे में समझाया। उनको यह भी समझाया की आज कल तो अनगिनत राहें हैं, जिन पर चल कर बढ़िया करियर बनाया जा सकता है। बातें तो उनको समझ आईं, लेकिन वो काफी देर तक परम्परा और लोग क्या कहेंगे (अगर लड़की अपनी दीदी जीजा के यहाँ रहेगी तो..) का राग आलापते रहे।

मैंने और प्रिया ने समझाया की लोगों के कहने से क्या फर्क पड़ता है? अच्छा पढ़ लिख लेगी, तो अपने पैरों पर खाड़ी हो सकेगी.. और फिर, शादी ढूँढने में भी तो कितनी आसानी हो जायेगी! हमारे इस तर्क से वो अंततः चुप हो गए। अश्विनी को भी मैंने काफी सारा ज्ञान दिया, जो यहाँ सब कुछ लिखना ज़रूरी नहीं है.. लेकिन अंततः यह तय हो गया की अश्विनी अपनी आगे की पढाई यहीं हमारे साथ रह कर करेगी। सासु माँ ने बीच में एक टिप्पणी दी की दोनों बच्चे उनसे दूर हो जाएँगे.. जिस पर मैंने कहा की आपकी तो दोनों ही बेटियाँ है.. कभी न कभी तो उन्हें आपसे दूर जाना ही है.. और यह तो अश्विनी के भले के लिए हैं.. और अगर उनको इतना ही दुःख है, तो क्यों न वो दोनों भी हमारे साथ ही रहें? (मेरी नज़र में इस बात में कोई बुराई नहीं थी) लेकिन उन्होंने मेरी इस बात बार तौबा कर ली और बात वहीँ ख़तम हो गयी।

शाम को हमने पड़ोसियों से भी मुलाकात करी – हेगड़े दम्पत्ति अश्विनी को देख कर इतने खुश हुए की बस उसको गोद लेने की ही कसर रह गयी थी! अश्विनी वाकई गुड़िया जैसी थी!

मेरे सास ससुर बस तीन दिन ही यहाँ रहने वाले थे, इसलिए मैंने रात को बाहर जा कर खाने का प्रोग्राम बनाया – जिससे किसी को काम न करना पड़े और ज्यादा समय बात चीत करने में व्यतीत हो। अश्विनी ख़ास तौर पर उत्साहित थी – उसको देख कर मुझे प्रिया की याद हो आती, जब वो पहली बार बैंगलोर आई थी। सब कुछ नया नया, सम्मोहक! जो लोग यहाँ रहते हैं उनको समझ आता है की बिना वजह का नाटक है शहर में रहना! अगर रोजगार और व्यवसाय के साधन हों, तो छोटी जगह ही ठीक है.. कम प्रदूषण, कम लोग, और ज्यादा संसाधन! जीवन जीने की गुणवत्ता तो ऐसे ही माहौल में होती है। एक और

बात मालूम हुई की अगले दिन अश्विनी का जन्मदिन भी था! बहुत बढ़िया! (मुझे बिना बताये हुए प्रिया ने अश्विनी के जन्मदिन के लिए प्लानिंग पहले ही कर रखी थी)।

खैर, खा पीकर हम लोग देर रात घर वापस आये। मेरे सास ससुर यात्रा से काफी थक भी गए थे, और उनको इतनी देर तक जागने का ख़ास अनुभव भी नहीं था। इसलिए हमने उनको दूसरा वाला कमरा सोने के लिए दे दिया और अश्विनी को हमारे साथ ही सोने को कह दिया। उन्होंने ज्यादा हील हुज्जत नहीं करी (क्योंकि हम तीनों पहले भी एक साथ सो चुके हैं) और सो गए।

“भई, आज तो मैं बीच में सोऊँगा!” मैंने अपने कमरे का दरवाज़ा बंद करते हुए कहा।

“वह क्यूँ भला??” प्रिया ने पूछा!

“अरे यार! इतनी सुन्दर दो-दो लड़कियों के साथ सोने का मौका बार बार थोड़े न मिलता है!”

“अच्छा जी! साली आई, तो साहब का दिल डोल गया?”

“अरे मैं क्या चीज़ हूँ! ऐसी सुंदरियों को देख कर तो ऋषियों का मन भी डोल जाएगा! हा हा!”

“नहीं बाबा! दीदी, तुम ही बीच में लेटो! नहीं तो जीजू मेरे सेब खायेंगे!” अश्विनी ने भोलेपन से कहा। मैं

और प्रिया दो पल एकदम से चुप हो गए, और फिर एक दूसरे की तरफ देख कर ठहाके मार कर हंसने लगे (अश्विनी का मतलब गालों के सेब से था.. और हमने कुछ और ही सोच लिया)।

“मेरी प्यारी बहना! तू निरी बुद्धू है!”

कहते हुए प्रिया ने अश्विनी के दोनों गालों को अपने हाथों में लिया और उसके होंठों पर एक चुम्बन दे दिया।

"आई लव यू!"

"आई लव यू टू, दीदी!" कह कर अश्विनी प्रिया से लिपट गयी।

"हम्म.. भारत मिलाप संपन्न हो गया हो तो अब सोने का उपक्रम करें?"

"कोई चिढ़ गया है लगता है..." प्रिया ने मेरी खिंचाई करी।

"हाँ दीदी! जलने की गंध भी आ रही है... ही ही!"

"और नहीं तो क्या! अच्छा खासा बीच में सोने वाला था! मेरा पत्ता साफ़ कर दिया!"

"हा हा!"

"हा हा!"

"अच्छा... चल अश्विनी, सोने की तैयारी करते हैं। तू चेंज करने के कपड़े लाई है?"

"हैं? नहीं!"

"कोई बात नहीं.. मैं तुमको नाईटी देती हूँ.. वो पहन कर सो जाना। ओके?" कह कर प्रिया ने अलमारी से ढूंढ कर एक नाईटी निकाली – मैंने पहचानी, वो हमारे हनीमून के दौरान की थी! अभी तक सम्हाल कर रखी है इसने!

अश्विनी ने उसको देखा – उसकी आँखें शर्म से चौड़ी हो गईं, "दीदी, मैं इसको कैसे पहनूंगी? इसमें तो सब दिखता है!"

"अरे रात में तुमको कौन देख रहा है.. अभी पहन लो, कल हम तुमको शौपिंग करने ले चलेंगे! ठीक है?"

"ठीक है.." अश्विनी ने अनिश्चय से कहा, और नाईटी लेकर बाथरूम में घुस गयी। इसी बीच प्रिया ने अपने कपड़े उतार कर एक कीमोनो स्टाइल की नाईटी पहन ली (यह सामने से

खुलती है, और उसमें गिन कर सिर्फ दो बटन थे। और सपोर्ट के लिए बीच में एक फीता लगा हुआ था, जिसको सामने बाँधा जा सकता था – ठीक नहाने वाले रोब जैसा), और मैंने भी प्रिया से ही मिलता जुलता रोब पहना हुआ था (बस, अश्विनी के कारण अंडरवियर अभी भी पहना हुआ था, जिसको मैं रात में बत्तियां बुझने पर उतार देने के मूड में था)। खैर, कोई पांच मिनट बाद अश्विनी वापस कमरे के अन्दर आई।

अश्विनी की नजर में:

जीजू बिस्तर के सिरहाने पर एक तकिया के सहारे पीठ टिकाये हुए एक किताब पढ़ रहे थे। दूसरी तरफ दीदी अपने ड्रेसिंग टेबल के सामने एक स्टूल पर बैठ कर अपने बालों में कंघी कर रही थी।

'दीदी के स्तन कितने बड़े हो गए हैं पिछली बार से!' मैंने सोचा। बालों में कंघी करते समय कभी कभी वो बालों के सिरे पर उलझ जाती, और उसको सुलझाने के चक्कर में दीदी को ज्यादा झटके लगाने पड़ते.. और हर झटके पर उसके स्तन कैसे झूल जाते! हाँ! उसके स्तनों को निश्चित रूप से पिछली बार से कहीं ज्यादा बड़े लग रहे थे। उसके पेट पर उभार होने के कारण थोड़ा मोटा लग रहा था, और उसके कूल्हे कुछ और व्यापक हो गए थे। कुल-मिला कर दीदी अभी और भी खूबसूरत लग रही थी। मैं मन्त्र मुग्ध हो कर उसे देख रही थी : अचानक मैंने देखा की दीदी ने आईने से मुझे देखते हुए देख लिया... प्रतिक्रिया में उसके होंठों पर वही परिचित मीठी मुस्कान आ गई।

"आ गई? चल.. अभी सो जाते हैं.. जानू.. बस.. अब पढ़ने का बहाना करना बंद करो! हे हे हे!" दीदी ने जीजू को छेड़ा।

यह बिस्तर हमारे घर में सभी पलंगों से बड़ा था। इस पर तीन लोग तो बहुत ही आराम से लेट सकते थे। जीजू ने कुछ तो कहा, अभी याद नहीं है, और बिस्तर के एक किनारे पर लेट गए, बीच में दीदी चित हो कर लेटी, और मैं दूसरे किनारे पर! मैं दीदी से कुछ दूरी पर लेटी हुई थी, लेकिन दीदी ने मुझे खींच कर अपने बिलकुल बगल में लिटा लिया। कमरे में बढ़िया आरामदायक ठंडक थी (वातानुकूलन चल रहा था), इसलिए हमने ऊपर से चद्दर ओढ़ी हुई थी। कमरे की बत्तियों की स्विच जीजू की तरफ थी, जो उन्होंने हमारे लेटते ही बुझा दी।

मेरी नजर में:

मैंने अपने बाईं तरफ करवट लेकर प्रिया को अपनी बाँह के घेरे में ले कर चुम्बन लिया और ‘गुड नाईट’ कहा – लेकिन मैंने अपना हाथ उसके स्तन पर ही रहने दिया। प्रिया को मेरी किसी हरकत से अब आश्चर्य नहीं होता था, और वो मुझे अपनी मनमानी करने देती थी। उसको मालूम था की उसके हर विरोध का कोई न कोई काट मेरे पास अवश्य होगा। लेकिन अश्विनी की अनवरत चलने वाली बातें हमें सोने नहीं दे रही थीं। 1

बैंगलोर कैसा है? लोग कैसे हैं? यहाँ ये कैसे करते हो, वो कैसे करते हो..? कॉलेज कैसा होता है? बाद में पता चला की वह पूरी यात्रा के दौरान सोती रही थी.. इसीलिए इतनी ऊर्जा थी! अब चूंकि मेरे दिमाग में शैतान का वास है, इसलिए मैंने सोचा की क्यों न कुछ मज़ा किया जाय।

अश्विनी के प्रश्नों का उत्तर देते हुए मैंने प्रिया के दाएँ स्तन को धीरे धीरे दबाना शुरू कर दिया (मैं प्रिया के दाहिनी तरफ था)। मेरी इस हरकत से प्रिया हतप्रभ हो गयी और मूक विरोध दर्शाते हुए उसने अपने दाहिने हाथ से मेरे हाथ को जोर से पकड़ लिया। लेकिन मुझे रोकने के लिए उतना बल अपर्याप्त था, इसलिए कुछ देर कोशिश करने के बाद, उसने हथियार डाल दिए। अश्विनी ने करवट ले कर प्रिया के बाएँ हाथ पर अपना हाथ रखा हुआ था, इसलिए प्रिया वह हाथ नहीं हटाना चाहती थी। अब मेरा हाथ निर्विघ्न हो कर अपनी मनमानी कर सकता था। कुछ देर कपड़े के ऊपर से ही उसका स्तन-मर्दन करने के बाद मैंने उसकी कीमोनो का सबसे ऊपर वाला बटन खोल दिया। प्रिया को लज्जा तो आ रही थी, लेकिन इस परिस्थिति में रोमांच भी भरा हुआ था। इसलिए उसने इस क्रिया की धारा के साथ बहना उचित समझा।

जब उसने कोई हील हुज्जत नहीं दिखाई, मैंने नीचे वाला बटन भी खोल कर सामने बंधा फीता भी ढीला कर दिया। कीमोनो वैसे भी साटन के कपड़े का था – बिना किसी बंधन के, उसके कीमोनो के दोनों पट अपने आप खुल गए। अश्विनी को वैसे तो देर सबेर मालूम पड़ ही जाता की उसकी दीदी के शरीर का ऊपरी हिस्सा निर्वस्त्र हो चला है, लेकिन जब उसने अपने हाथ पर प्रिया की नाईटी का कपड़ा महसूस किया तो उसको उत्सुकता हुई। उसने बिना किसी प्रकार की विशेष प्रतिक्रिया दिखाते हुए अपनी बाईं हथेली से प्रिया के बाएँ स्तन को ढक लिया।

प्रिया इस अलग सी छुवन को महसूस कर चिहुँक गयी, 'अरे! अश्विनी का हाथ मेरे स्तन पर!'

प्रिया आश्चर्यचकित थी, लेकिन वह यह भी समझ रही थी की अश्विनी उसके स्तन को सिर्फ ढके हुए थी, और कुछ भी नहीं। साथ ही साथ वह अपने जीजू से बातें भी कर रही थी – और उधर उसके जीजू का हाथ प्रिया के दाहिने स्तन का मर्दन कर रहा था। लेकिन चाहे कुछ भी हो – अगर किसी स्त्री को इतने अन्तरंग तरीके से छुआ जाय, तो उसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक ही है। प्रिया ने अनायास अपने स्तन को आगे की ओर ठेल दिया, जिसके कारण उसके स्तन का पर्याप्त हिस्सा मेरे और अश्विनी दोनों के ही हाथ में आ गया। संभव है की प्रिया की इस हरकत से अश्विनी को किसी प्रकार की स्वतः-प्रेरणा मिली हो – उसने भी प्रिया के स्तन को धीरे-धीरे दबाना और मसलना शुरू कर दिया। प्रिया के चूचक शीघ्र ही उत्तेजित हो कर उर्ध्व हो गए।

इस समय हम तीनों का मन कहीं और था। हम तीनों ही कुछ देर के लिए चुप हो गए। यह चुप्पी अश्विनी ने तोड़ी –

"जीजू – दीदी! मैं आपसे कुछ माँगूं तो देंगे?"

"हाँ हाँ! बोलो न?" मैंने कहा।

"उस दिन आप दोनों लोग बुग्यल पर जो कर रहे थे, मेरे सामने करेंगे?"

'बुग्याल पर? .. ओह गॉड! ये तो सहवास की बात कर रही है!'

प्रिया: "क्या? पागल हो गयी है?"

मैं: "एक मिनट! अश्विनी, हम लोग बुग्यल पर सहवास कर रहे थे। सहवास किसी को दिखाने के लिए नहीं किया जाता। बल्कि इसलिए किया जाता है, क्योंकि दो लोग - जो प्यार करते हैं – उनको एक दूसरे से और इंटिमेसी, मेरा मतलब है की ऐसा कुछ मिले जो वो और किसी के साथ शेयर नहीं करते। जब तुम्हारी शादी हो जायेगी, तो तुम भी अपने हस्बैंड के साथ खूब सहवास करना।"

अश्विनी: “तो फिर आपने मेरे यहाँ रहने के बावजूद दीदी का ब्लाउज क्यों खोला?”

मेरा हाथ उसकी यह बात सुन कर झट से प्रिया के बाएँ स्तन पर चला गया, जिस पर अश्विनी का हाथ पहले से ही उपस्थित था।

मैं: “व्व्वो.. मैं... तुम्हारी दीदी का दूध पीता हूँ न, इसलिए!”

प्रिया: “धत्त बेशर्म! कुछ भी कहते रहते हो!”

अश्विनी: “क्या जीजू.. आप तो इतने बड़े हो गए हैं.. फिर भी दूध पीते हैं?”

मैं: “अरे! तो क्या हो गया? तेरी दीदी के दूध देखे हैं न तुमने? कितने मुलायम हैं! हैं न?”

अश्विनी: “हाँ.. हैं तो!”

मैं: “तो.. बिना इनको पिए मन मानता ही नहीं.. और फिर दूध तो पौष्टिक होता है!”

अश्विनी: “लेकिन दीदी को तो अभी दूध तो आता ही नहीं..”

मैं: “अरे भई! नहीं आता तो आ जायेगा! पहले से ही प्रैक्टिस कर लेनी चाहिए न!”

प्रिया: “तुम कितने बेशर्म हो! देख न अश्विनी, तुम ही बताओ अब मैं क्या करूँ? अगर न पिलाऊँ, तो तुम्हारे जीजू ऐसे ही उधम मचाने लगते हैं। वैसे तुझे पता है की वो ऐसे क्यों करते हैं?

अश्विनी: “बताओ..”

प्रिया: “अरे तुम्हारे जीजू अपनी माँ जी का दूध भी काफी बड़े होने तक पीते रहे। उन्होंने बहुत प्रयास किया, लेकिन ये जनाब! मजाल है जो ये अपनी मां की छाती छोड़ दें!”

अश्विनी: “तब?”

प्रिया: “तब क्या? माँ ने थक कर ने अपने स्तनाग्र पर मिर्ची या नीम वगैरह रगड़ लिया। और जब भी ये जनाब दूध पीने की जिद करते तो तीखा लगने के कारण धीरे धीरे खुद ही माँ का दूध पीना छोड़ते गए।“

अश्विनी: “लेकिन अभी क्यों करते हैं?”

प्रिया: “आदतें ऐसे थोड़े ही जाती हैं!”

मैं: “अरे यार! कम से कम तुम तो मिर्ची का लेप मत लगाने लगना।“

मेरी इस बात पर प्रिया और अश्विनी खिलखिला कर हंस पड़ीं!

प्रिया: “नहीं मेरे जानू.. मैं ऐसा कुछ नहीं करूंगी! आप मन भर कर पीजिये! मेरा सब कुछ आपका ही है..”

मैं: “सुना अश्विनी..” कहते हुए मैंने प्रिया के एक स्तनाग्र को थोड़ा जोर से दबाया, जिससे उसकी सिसकी निकल गयी। अश्विनी को वैसे तो मालूम ही है की उसके दीदी जीजू कहीं भी अपने प्यार का इजहार करने में शर्म महसूस नहीं करते... फिर जगह चाहे कोई भी हो!

अश्विनी (हमारी छेड़खानी को अनसुना और अनदेखा करते हुए): “जीजू दीदी.. मैं आप दोनों को खूब प्यार करती हूँ। उस दिन जब मैंने आप दोनों को.... सहवास... (यह शब्द बोलते हुए वह थोडा सा हिचकिचा गयी) करते हुए दूर से देखा था। मैं बस इतना कह रही हूँ की आज मुझे आप पास से कर के दिखा दो! यह मेरे लिए सबसे बड़ा गिफ्ट होगा।”

प्रिया: “लेकिन अश्विनी, तेरे सामने करते हुए मुझे शरम आएगी।“ हम सभी जानते थे की यह पूरी तरह सच नहीं है।

अश्विनी: “प्लीज!”

प्रिया: “लेकिन तू अभी बहुत छोटी है, इन सब बातों को समझने के लिए!”

अश्विनी: “मैं कोई छोटी वोटी नहीं हूँ! और तुम भी मुझसे बहुत बड़ी नहीं हो। मैं अभी उतनी बड़ी हूँ, जिस उम्र में तुमने जीजू से शादी कर ली थी! और जीजू, अगर आप दीदी के बजाय मुझे पसंद करते तो?”

मैं (मन में): ‘हे भगवान्! छोटी उम्र का विमोह!’

मैं (प्रत्तक्ष्य): “अगर मैं तुमको पसंद करता तो मैं इंतज़ार करता – तुम्हारे बड़े होने का!”

अश्विनी: “जीजू! मैं बड़ी हूँ... और... और... मैं सिर्फ देखना चाहती हूँ – करना नहीं। आप दोनों लोग उस दिन बहुत सुन्दर लग रहे थे। प्लीज़, एक बार फिर से कर लो!”

मैं: “जानती हो, अगर किसी को मालूम पड़ा, तो मैं और तुम्हारी दीदी, हम दोनों ही जेल के अन्दर होंगे!”

अश्विनी: “जेल के अन्दर क्यों होंगे? मैं अब बड़ी हो गयी हूँ... वैसे भी, मैं किसी को क्यों कहूँगी? अगर आप लोग यह करेंगे तो मेरे लिए। किसी और के लिए थोड़े ही!“

मैं: “अब कैसे समझाऊँ तुझे!”

मैं (प्रिया से): “आप क्या कहती हैं जानू?”

प्रिया (शर्माते हुए): “आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? बिना कपड़ो के तो मैं पड़ी हूँ!”

ऐसे खुलेपन से सहवास की दावत! मेरा मन तो बन गया! वैसे भी, नींद तो कोसों दूर है.. मैं रजामंदी से मुस्कुराया।

अश्विनी (प्रिया से): “दीदी, तुम मुझे एक बात करने दोगी?”

प्रिया: “क्या?”

अश्विनी ने प्रिया के ऊपर से चद्दर हटाते हुए उसके स्तनाग्र को अपने मुँह में भर कर चूसना आरम्भ कर दिया। अश्विनी के मुँह की छुवन और कमरे की ठंडक ने प्रिया के शरीर में एक

बिलकुल अनूठा एहसास उभार दिया। उसके दोनों स्तनाग्र लगभग तुरंत ही इस प्रकार कड़े हो गए मानो की वो रक्त संचार की प्रबलता से चटक जायेंगे! उसकी योनि में नमी भी एक भयावह अनुपात में बढ़ गयी। अपने ही पति के सामने उसके शरीर का इस प्रकार से अन्तरंग अतिक्रमण होना, प्रिया के इस एहसास का एक कारण हो सकता है। प्रिया वाकई यह यकीन ही नहीं कर पा रही थी की वह अपनी ही बहन के कारण इस कदर कामोत्तेजित हो रही थी। उसकी आँखें बंद थी। कामोद्दीपन से अभिभूत प्रिया, अश्विनी को रोकने में असमर्थ थी – इसलिए वह उसको स्तनपान करने से रोक नहीं पाई।

लेकिन जिस तरह से अप्रत्याशित रूप से अश्विनी ने यह हरकत आरम्भ करी थी, उसी अप्रत्याशित तरीके से उसने रोक भी दी। अश्विनी ने प्रिया को देखते हुए कहा,

"आई ऍम सॉरी, दीदी! पता नहीं मेरे सर में न जाने क्या घुस गया! सॉरी? माफ़ कर दो मुझे!"

प्रिया की चेतना कुछ कुछ वापस आई, और वह उठ कर बैठ गयी। इस नए अनुभव से वह अभी भी अभिप्लुत थी। प्रिया और अश्विनी दोनों ही काफी करीब थीं – लेकिन इस प्रकार की अंतरंगता तो उनके बीच कभी नहीं आई। प्रिया को यह अनुभव अच्छा लगा – अपने स्तानाग्रों का चूषण, और इस क्रिया के दौरान दोनों बहनों के बीच की निकटता। प्रिया ने आगे बढ़ कर अश्विनी को अपने गले लगा लिया – उसने भी अश्विनी के कठोर हो चले स्तनाग्र को अपने सीने पर महसूस किया ... 'ये लड़की कब बड़ी हो गई!'

प्रिया: "अश्विनी!"

अश्विनी (झिझकते हुए): "हाँ?"

प्रिया: "प्लीज़, सॉरी मत कहो!"

अश्विनी: "नहीं दीदी! तुम मुझे इतना प्यार करती हो न... एक दम माँ जैसी! इसलिए इन्हें पीने का मन हुआ..। सॉरी दीदी!"

"तू माँ का दुद्धू अभी भी पीती है? उनको भी मिर्ची वाला आईडिया दूं क्या?" प्रिया ने अश्विनी को छेड़ा।

अश्विनी (शरमाते हुए): “नहीं पागल... धत्त! ...लेकिन जीजू भी तो तुम्हारा दूध पीते हैं, और तुम माँ बनने वाली हो न, इसलिए मेरा मन किया। ... लेकिन इनमे तो दूध नहीं है.. प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो!”

प्रिया: “हम्म.. अश्विनी... अब बस! सॉरी शब्द दोबारा मत बोलना मुझसे! ठीक है?”

अश्विनी ने सर हिला के हामी भरी।

प्रिया: “गुड! अब ले... जी भर के पी ले..”

अश्विनी: “क्या... मतलब?”

प्रिया: “अरे पागल! ये बता, क्या तुमको इसे पीना अच्छा लगा?”

अश्विनी ने नज़र उठा कर प्रिया की तरफ देखा और कहा, “हाँ दीदी, बहुत अच्छा लगा!”

प्रिया: “फिर तो! लो, अब आराम से इसे दबा कर देखो और बेफिक्र होकर पियो! मुझे भी अच्छा लगेगा!” प्रिया ने अपने स्तनाग्र की तरफ इशारा किया।

“क्या सचमुच? मुझे लगा की तुमको अच्छा नहीं लगा! ..और... मुझे लगा की तुम मुझसे गुस्सा हो!”

“पगली, मैं तुमसे कभी भी गुस्सा नहीं हो सकती!” कहते हुए प्रिया ने अपना कीमोनो पूरी तरह से उतार दिया, और मेरी तरह मुखातिब हो कर बोली, “ये दूसरा वाला आपके लिए है...”

पता नहीं क्यों, अश्विनी इस बार कुछ हिचकिचा गई। जब कुछ देर तक उसने कुछ नहीं किया, तो प्रिया ने खुद ही उसका हाथ पकड़ कर खुद ही अपने स्तन पर रख दिया। स्वतः प्रेरणा से उसने धीरे धीरे से चार पांच बार उसके स्तन को दबाया, और फिर अपना मुँह आगे बढ़ा कर उसका एक स्तनाग्र मुंह में लेकर चूसने लगी। मैंने भी प्रिया का दूसरा स्तन भोगना आरम्भ कर दिया। उधर प्रिया का हाथ मेरे पाजामे के ऊपर से मेरे लिंग पर फिरने लगा – वो तो पहले से ही पूरी तरह से उन्नत था।

कमरे में अभी भी कुछ संभ्रम था - इतना तो तय है की मुझे यह सब कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन अब मुझे और हमको इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। इतना तो तय था की प्रिया को अश्विनी के साथ अपनी निजता को बांटना बहुत अच्छा लग रहा था। प्रिया के स्तन इस तरह से अनावृत हो जाने से अश्विनी के मन में एक और चाहत जाग गयी – वह बिस्तर से उठी और जा कर एक बत्ती जला आई। पूरी रौशनी से नहाये हुए प्रिया के नग्न स्तनों को आज वह खूब करीब से देखना चाहती थी।

“दीदी, तुम कितनी सुन्दर हो!”

प्रिया को अपने पेट में एक मीठी सी गुदगुदी जैसी महसूस हुई – यहाँ दो लोग, जिनको वो बहुत प्रेम करती है, और जो उसको बहुत प्रेम करते हैं, एक साथ बैठ कर उसके रूप का इस अन्तरंग तरह से आस्वादन कर रहे हैं। उसने बड़े प्रेम से एक एक हाथ से अश्विनी और मेरे गले में गलबाहें डालीं, और हमको अपने स्तनों की तरफ खींचा। अश्विनी उसके स्तनाग्र को मुँह में भर कर चूसने लग गई; मैंने पहले उसके स्तनाग्र के चहुँओर पहले तो मन भर कर चाटा, और फिर इत्मीनान से उसको चूसना आरम्भ किया। कुछ ही मिनटों के स्तनपान के बाद, प्रिया का शरीर अचानक ही एक कमानी के जैसे हो गया और वह बिस्तर पर निढाल हो कर गिर गई और हांफने लगी..

“दीदी, क्या हुआ?” अश्विनी ने चिंता और सहानुभूति से पूछा।

प्रिया कुछ बोली नहीं, बस हाँफते हाँफते मुस्कुराई। मुझे मालूम था की क्या हुआ.. इसलिए मैंने मैदान नहीं छोड़ा। मेरा हाथ उसकी कमर को टटोल रहा था। अगले पांच सेकंड में मेरी उंगलियाँ उसकी योनि रस से गीली हो चली चड्ढी के ऊपर से उसकी योनि का मर्दन कर रही थीं। मेरी इस हरकत से उसकी योनि से और ज्यादा रस निकलने लगा।

अश्विनी को सहवास का कोई बहुत ज्ञान तो था नहीं – उसको बस उतना ही पता था जितना की उसने हमको करते हुए देखा था। और कोई कितनी देर तक सिर्फ स्तनपान कर सकता है? कुछ देर में अश्विनी थक गयी (या बोर हो गई) और प्रिया से अलग हो गयी। इतनी देर में मेरा लिंग भी अपने निर्धारित कार्य के लिए तैयार हो चला था – अश्विनी से यह बात छुपी नहीं।

“जीजू, अब आप दीदी के साथ ‘सहवास’ करिए न?”

किसी के सामने निर्वस्त्र वैसे भी आसान नहीं होता। और यहाँ पर स्थिति थोड़ा भिन्न थी – यहाँ पर एक जिज्ञासु लड़की मुझे अपनी पत्नी के साथ उसके सामने सहवास करने को कह रही थी। खैर, प्रिया को लगभग नग्न देख कर मेरी खुद की अभिज्ञता कुछ कम हो गई थी – लिहाज़ा, मैंने भी अपने कपड़े उतारे, और साथ ही साथ यह आलोकन भी किया की हम तीनों में सिर्फ अश्विनी ही है जिसने सारे कपड़े पहन रखे हैं।

"अश्विनी, यह तो बहुत बेढंगा लगता है की हम दोनों के कपड़े उतर रहे हैं, और तुमने सब कुछ पहना हुआ है। तुम भी तो उतारो!"

"जीजू... ये भी क्या पहना है मैंने! सब कुछ तो दिख रहा है!" मैंने आगे कोई जिद नहीं करी। लेकिन जो कुछ अश्विनी ने आगे किया, उसको देख कर हम दोनों ही मुस्कुरा उठे। उसने जल्दी से अपनी नाईटी उतार फेंकी और अपने जन्मदिन वाले सूट (अर्थात पूर्णतः नग्न) में हमारे सामने बिस्तर पर बैठ गयी। आज पहली बार अश्विनी का वयस्क रूप मैंने और प्रिया ने देखा था। अश्विनी की छाती पर अब संतरे के आकार के दो स्तन बिलकुल तन कर खड़े हो गए थे, और उसके शरीर पर बहुत ही शोभन लग रहे थे। उसके स्तनाग्र गहरे भूरे रंग के थे, और उनके बगल हलके भूरे रंग का कोई डेढ़ इंच व्यास विकसित हो गया था।

"अब करिए..?" अश्विनी कितनी उतावली हो रही थी हमको सहवास करते देखने के लिए!

मेरे मन में द्वंद्व छिड़ गया - क्या यह ठीक होगा? कहीं इसके दिमाग पर बुरा असर न पड़े! बुरा असर क्यों होगा? आखिर यह शिक्षा तो सभी को चाहिए ही न! ऐसी कोई छोटी भी तो नहीं है! जल्दी ही इसकी शादी भी इसके परिवार वाले ढूँढने लग जायेंगे! उसके पहले इसको सहवास के बारे में मालूम हो जाय तो अच्छा है।

अब कहानी आगे बढ़ने से पहले एक सवाल का जवाब आप ही लोग दीजिए : अगर कोई सुन्दर सी लड़की अगर इस तरह अन्तरंग तरीके से आपके सामने निर्वस्त्र हो जाय, तो उसका कुछ तो आदर होना चाहिए की नहीं? मैंने आगे बढ़ कर उसके दोनों चूचुकों पर एक एक चुम्बन ले लिया। अश्विनी सिहर उठी। मुझे मालूम था की प्रिया नीचे लेटी हुई है.. लेकिन अश्विनी को कुछ तो यादगार व्यक्तिगत अनुभव होना ही चाहिए! मैंने अश्विनी की कमर पकड़ कर अपनी तरफ खींचा, और फिर इत्मीनान से उसके स्तनों को बारी बारी से अपने मुंह में भर कर चूसने लगा। कमरे में अश्विनी की हाय तौबा गूंजने लगी। उसको नज़रंदाज़ कर के मैं साथ ही साथ उसके दोनों नितम्बों को मसल भी रहा था।

“जीजू... बस्स्स्स! आह! म्म्मेरे साथ.. न्न्हीं.. दी..दी.. के साथ..” वो उन्माद में न जाने क्या क्या बड़बड़ा रही थी। लेकिन मैंने बिना रुके तबियत से उसके स्तनों को कोई दस मिनट तक चूमा और चूसा। उत्तेजनावश उसके स्तन इस समय साइज़ में कोई बड़े लग रहे थे, और और दोनों चूचक वैसे तन कर खड़े हो गए जैसे रबर-वाली पेंसिल के रबर! एकदम सावधान! खैर अंततः मैंने अश्विनी को छोड़ा – वो बुरी तरह से हांफ रही थी। दोनों स्तनाग्र इस कदर चूसे जाने से लाल हो गए थे, और उसके शरीर पर, ख़ास तौर पर स्तनों, पेट और नितम्बों पर लाल निशान पड़ गए थे।

“हैप्पी बर्थडे!” मैंने मुस्कुराते हुए बस इतना ही कहा। अश्विनी उत्तर में शर्मा गयी।

“ह्म्म्म... तो जीजा और साली आपस में ही बर्थडे बर्थडे खेले ले रहे हैं? अपनी दीदी को ट्रीट नहीं दोगी?” प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा।

“ट्रीट?”

प्रिया भी लगता है अपने स्तन पिए जाने का हिसाब बराबर करना चाहती थी। वह उठ कर अपना हाथ अश्विनी के स्तनों पर रख कर उनको धीरे धीरे सहलाने लगी। अश्विनी के स्तन छोटे छोटे तो थे, लेकिन प्रिया के स्तनों जैसे प्यारे से थे। अश्विनी की सिसकियाँ निकल पड़ीं। प्रिया को अभी ठीक से आईडिया नहीं था – उसने अश्विनी के एक स्तनाग्र को जोश में आकर कुछ ज्यादा ही जोर से मसल दिया।

अश्विनी: “सीईईई... क्या कर रही हो दीदी! आराम से करो न! जीजू ने वैसे ही मेरी जान निकाल दी है।”

प्रिया यह इशारा पा कर अब खुल कर अश्विनी के स्तनों से खेलने लग गई। कुछ तो मेरे सिखाई विद्या, और कुछ उसकी खुद की जिज्ञासा... कभी अश्विनी के प्रोत्साहन से प्रिया भी स्तन-रस-पान करने लगी। अश्विनी के चूचुक को प्यार से रगड़ने के बाद उसके स्तनों को चूसना शुरू कर दिया, तो वो एकदम गरम हो गई थी। मैं क्या करता? मैंने प्रिया के पेट और नाभि के आस पास चूमना और चाटना शुरू कर दिया। कमरे में नग्न पड़े तीन जिस्म अब सुलग उठे थे। कुछ ही पलों के बाद अश्विनी अपने जीवन की प्रथम रति-निष्पत्ति का अनुभव कर के गहरी गहरी साँसे भरने लगी। उसकी योनि के स्राव से निकलती नमकीन सी खुशबू हम दोनों ने महसूस करी। अश्विनी इन सबसे बेखबर, अपनी आँखें बंद किये

मानो जैसे सपनो की दुनिया में खोई हुई थी - उसकी साँसे तेजी से चल रही थीं, और होंठ कांप रहे थे। वो अभी अभी अनुभव किये नए आनंद के सागर के तल तक गोते लगा रही थी।

“वैरी हैप्पी बर्थडे अश्विनी!” कहते हुए प्रिया ने अश्विनी को होंठों पर चूम लिया, और आगे कहा, “... कैसा लगा?”

“आअह्ह्ह्ह दीदी! एकदम अनोखा!” अश्विनी ने गहरी सांस भरी। “... अब आप लोग करो न प्लीज!”

हम लोग तो तैयार थे – बस दर्शक (अश्विनी) के रेडी होने की बात जोह रहे थे। प्रिया के हरी झंडी दिखाते ही मैंने उसको छेड़ना शुरू कर दिया। गर्भधारण करने से स्त्रियों के शरीर में कई सारे परिवर्तन होने लगते हैं। उनमें से एक है - एस्ट्रोजन और प्रोजेस्ट्रोन रसायनों के स्तर में वृद्धि! ये दोनों रसायन स्त्रियों के शरीर को कुछ इस तरह से बदल देते हैं की उनमें गर्भावस्था के दौरान कामेच्छा काफी बढ़ जाती है। इनके कारण गर्भाशय में रक्त का प्रवाह और प्राकृतिक चिकनाई बढ़ जाती है, और स्तनों और स्तनाग्र्स में संवेदनशीलता भी बढ़ जाती है। कहना गलत न होगा, की बहुत सी स्त्रियाँ (जिनका स्वास्थ्य इत्यादि ठीक हो) गर्भधारण के उपरान्त यौन संसर्ग का और अधिक आनंद उठाती हैं! लिहाजा, प्रिया जो पहले से ही रति का अवतार है, अब और भी कामुक हो गयी थी।

प्रिया : “उफ़.. आप क्या कर रहे हैं?”

मैं : “अरे भई! मौके का सही फायदा उठा रहा हूँ। तुम्हारी बहन के लिए अच्छा सा गिफ्ट ला रहा हूँ...” कहते हुए मैंने प्रिया को टांगों से खींच कर अपनी गोद में बिठा लिया, और उसके स्तन दबाने लगा। प्रिया ने अपनी आंखें बंद कर रखी थी। वैसे भी उसके स्तन उत्तेजनावश पहले ही सख्त हो चुके थे।

प्रिया बोली, “हाय! क्या करते हो? आराम से! आपका हाथ बहुत कड़क पड़ता है! ‘ये’ बहुत सेंसिटिव हो गए हैं अब! पहले ही तुम दोनों ने चूस चूस कर इनका हाल बुरा कर दिया है.. अब बस...”

मैंने कहा, “अरे! लेकिन ये सब नहीं करूंगा तो अश्विनी क्या सीखेगी?” कह कर मैं फिर उसके स्तनों का मर्दन करने लगा।

प्रिया बोली, “प्लीज़ जानू ! दर्द होता है! अब आप सीधा मेन काम करिए.. मैं पूरी तरह से तैयार हूँ..”

तैयार तो थी! मैंने प्रिया को अपनी बाँहो में भर लिया, और उसके नरम-नरम होंठों को अपने होंठों में भर कर चूसने लगा। कुछ देर तक ऐसे ही उसके पूरे शरीर को चूमा। अब प्रिया पूरी तरह से तैयार थी। उसके लिए ये फोरप्ले कुछ ज्यादा ही हो गया था।

मैं उसके पेट पर हाथ फिराते हुए उसकी चड्ढी के अन्दर ले गया। उसकी योनि उत्तेजनावश जैसे पाव रोटी की तरह सूजी हुई थी। मैंने चड्ढी के अन्दर से उसकी योनि को सहलाने लगा। प्रिया ने अपनी आंखें बंद कर लीं। कुछ देर ऐसे ही छेड़खानी करने के बाद मैंने उसकी चड्ढी भी उतार दी और अपनी तर्जनी और अंगूठे की मदद से उसकी योनि के होंठों को खोलने और बन्द करने लगा, और साथ ही साथ उसके भगशिश्न को भी छेड़ने लगा। प्रिया के मुँह से कामुक कराहें निकलने लगी, और वो मस्त होकर मेरे लिंग को अपने हाथ में पकड़ कर दबाने और सहलाने लगी।

“बोलो प्रिया रानी! ठुकने का मन हो रहा है या नहीं?”

“छी! जानू.. आप बहुत गंदे हो!”

“अरे बोल न! ऐसे क्यों शर्मा रही है? बोल न... ठुकने का मन हो रहा है?” प्रिया समझ गयी की बिना ‘डर्टी-टॉक’ किये मैं कुछ नहीं करूंगा.. इसलिए उसने पीछा छुडाने के लिए कहा,

“हाँ जानू.. बहुत मन हो रहा है।“

अब आप लोग ही सोचिए – एक लड़की पूरी तरह से नंगी दो लोगों के सामने भोगे जाने हेतु पड़ी हुई है, लेकिन फिर भी माकूल या मुनासिब व्यवहार नहीं छोड़ रही है! भारतीय लड़कियाँ वाकई कमाल होती हैं। मुझे मालूम था की इससे अधिक वो और कुछ नहीं कहेगी। मैंने प्रिया को सावधानी पूर्वक बिस्तर पर वापस लिटाया और अपने लिंग को उसकी योनि की दरार पर कई बार फिरा कर गीला कर लिया। उसकी योनि से कामरस

मानों बह रहा था। जब वो अच्छी तरह से गीला हो गया, तब मैंने अपने लिंग को पकड़ कर उसकी योनि के भीतर धीरे से ठेल दिया। मेरे लिंग का सुपाड़ा उसकी योनि में भीतर तक घुस गया – इतनी चिकनाई थी अन्दर। प्रिया के मुँह से आह निकल पड़ी।

आगे हम एक दूसरे को चूमते हुए वही पुरानी आदि-कालीन क्रिया करने लगे। पहले धीरे धीरे और फिर बाद में तेजी से मैं अपने लिंग को प्रिया की योनि के अन्दर-बाहर करने लगा। कुछ देर बाद प्रिया ने अपनी टांगें ऊपर की तरफ मोड़ ली और मेरी कमर के दोनों तरफ लपेट ली। अब मेरा लिंग प्रिया की योनि में तेजी से अन्दर-बाहर हो रहा था – इस गति में आयाम कम, लेकिन आवृत्ति बहुत ही अधिक थी। मैं अब तेज-तेज धक्के मार रहा था। काम का नशा अब हमारे सर चढ़ गया था। प्रिया भी आनंद लेते हुए मेरे हर धक्के का स्वाद ले रही थी।

प्रिया ने मेरे नितम्बों को अपने हाथों में थाम रखा था और उनको पकड़े हुए ही वो भी नीचे से मेरे धक्कों के साथ-साथ अपने नितम्ब की ताल दे रही थी। योनि सुरंग में पहले से ही काम-रस की बाढ़ आई हुई थी, और इतने मर्दन के बाद अब मेरा लिंग बिना रुके हुए आराम से अन्दर बाहर फिसल रहा था। इस सहवास का आनंद प्रिया महसूस करके, और अश्विनी अवलोकन करके ले रहे थे। इस नए परिवेश में मैंने भी प्रिया को किसी पागल की भांति भोग रहा था।

मैंने पूछा, “जानेमन, अच्छा लग रहा है?”

प्रिया बोली, “हमेशा ही लगता है! आपका लिंग इतना तगड़ा है, और आपके ठुकाई का तरीका इतना शानदार! बहुत अच्छा लग रहा है। बस आप तेज-तेज करते रहो।”

गन्दी बात! वाह! उसके मुंह से यह बात सुन कर मैंने अपनी रफ्तार और बढ़ा दी। मैं वाकई उसको ‘ठोकने’ लग गया। मेरा लिंग सटासट उसकी योनि में तेजी से अन्दर बाहर हो रहा था। प्रिया मस्ती में ‘आअह्ह्ह्ह ओह्ह्ह्ह’ करती रही। कोई पांच मिनट चले इस घमासान के बीच अचानक ही प्रिया ने मुझे कस कर अपनी बाँहो में भर लिया। मैं समझ गया की इसका काम तो हो गया। और अगले ही पल उसने एक जोर से आह भरी और आखिरी बार अपने नितम्ब को मेरे लिंग पर ठेला, और फिर बिस्तर पर अपने पैर पसार कर ढेर हो गयी। मैंने भी जल्दी जल्दी धक्के लगाए और आखिरी क्षण में लिंग को उसकी योनि से बाहर निकाल कर उसके पेट पर अपनी वीर्य की कई सारी धाराएँ छोड़ दीं।

फिर मैं गहरी साँसे भरता हुआ प्रिया के बगल लेट गया और कुछ देर तक सांसों को संयत करता रहा। प्रिया भी मेरे बगल अपनी आँखें बंद करके लेटी हुई थी। इस पूरे वाकए को अश्विनी खामोशी से (और विस्मय के साथ भी) देखती रही। मैंने उसकी तरफ मुखातिब हो कर कहा,

“अश्विनी, ज़रा क्लोजेट से मेरी एक रूमाल निकाल कर देना तो!”

वो तो जैसे किसी सम्मोहन से जागी। फिर मेरी अलमारी से उसने एक रूमाल निकाल कर मुझे सौंप दिया। मैंने रूमाल से प्रिया के पेट पर गिरा वीर्य और अपना लिंग साफ़ किया और उठ कर बाथरूम के अन्दर फेंक दिया। वापस आकर मैं फिर से उसकी बगल में लेट गया, और उसके स्तनों पर हाथ फेरने लगा।

प्रिया : “हो गई तुम्हारे मन की?” यह प्रश्न अश्विनी के लिए था।

अश्विनी ने कुछ नहीं कहा।

“बोल न? गिफ्ट कैसा लगा?”

“दीदी! मैं नहीं करूंगी यह सब कभी भी..” अश्विनी ने रुआंसी आवाज़ में कहा, “... बाप रे! मैं तो मर जाऊंगी!”

“अश्विनी बेटा!” मैंने कहा, “जब तुम्हारे हस्बैंड का लिंग तुम्हारे अन्दर जाएगा न, तब तुम यह कहना भूल जाओगी!”

कह कर मैंने प्रिया को अपनी बाँहो में भर लिया, और कुछ देर तक ऐसे ही अश्विनी को समझाते रहे। फिर प्रिया ने कहा, “मैं तो थक गयी हूँ... चलो अब सो जाते हैं!” और कह कर अगले कुछ ही पलों में वो सो गयी। अश्विनी भी प्रिया के बगल चुपचाप पड़ी रही। मैं कब सोया कुछ याद नहीं।

२१

अगली सुबह नाश्ते पर ससुर जी ने मुझसे कहा की उनके परिवार की भगवान केदारनाथ धाम में बड़ी अगाध श्रद्धा है। और हर शुभ-कार्य अथवा पर्व-प्रयोजन में वो सभी वहाँ जाते रहते हैं। उनका पूरा परिवार कई पीढ़ियों से शुभ प्रयोजनों में यह यात्रा करता रहा है। उनके अनुसार, अब चूंकि प्रिया गर्भवती है, तो यदि संभव हो, तो हम सभी एक बार केदारनाथ जी के दर्शन कर आएँ? इस बात पर सबसे पहले तो मुझे राहत की सांस आई – कल रात की धमाचौकड़ी इन लोगो ने कैसे नहीं सुनी, वही एक अचरज की बात है। अच्छा है.. सवेरे सवेरे धर्म कर्म की बाते हो रही थीं।

"जी पिताजी, एक बार हम प्रिया की डॉक्टर से बात कर लेते हैं। अगर उनकी सलाह हुई, तो ज़रूर चलेंगे। अभी जाना है क्या? मेरा मतलब, कोई मुहूर्त जैसा कुछ है?"

"नहीं ऐसा कुछ भी नहीं है बेटा। जब आप लोगों को सही लगे, आ जाइए। भगवान् के दर्शनों के लिए कैसा मुहूर्त! बस हम सभी एक बार सपरिवार केदारनाथ जी के दर्शन कर लें.. हमारी बहुत दिनों से बड़ी इच्छा है।"

"जी, बिलकुल! मैं अभी कुछ ही देर में डॉक्टर को पूछता हूँ.."

खाने पीने के बाद कोई दस बजे मैंने डॉक्टर को फ़ोन लगाया। उन्होंने कहा की अगले महीने प्रिया यात्रा कर सकती है। तब तक उसका पाँचवाँ महीना शुरू हो जाएगा, और वह सुरक्षित समय है। बस समुचित सावधानी रखी जाय। मैं उन रास्तों पर गया हुआ हूँ पहले भी, और मुझे मालूम है की कुछ स्थानों को छोड़ दिया जाय, तो वहाँ की सड़कें अच्छी हालत में हैं। इसलिए कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। वहाँ ऊपर जा कर पालकी इत्यादि की व्यवस्था तो हो ही जाती है... अतः डरने या घबराने वाली कोई बात नहीं थी।

दो दिन और बैंगलोर में रहने के बाद मेरे सास ससुर दोनों वापस उत्तराँचल को लौट गए। मैंने बहुत कहा की यही रुक जाएँ, लेकिन उनको वहाँ कई कार्य निबटाने थे, इसलिए हमारी बहुत मनुहार के बाद भी उनको जाना पड़ा। खैर, उनके जाते ही मैंने सबसे पहले देहरादून का हवाई टिकट हम तीनों के लिए बुक कर लिया। इस एक महीने में हमने बहुत सारे काम यहाँ पर भी निबटाए – सबसे पहले अश्विनी के दाखिले के लिए उसके संभावित कॉलेज के प्रिंसिपल से मिले, और उन्होंने भरोसा दिलाया की उसको दाखिला मिल जाएगा अगर

बारहवीं में अंक अच्छे आयेंगे! उन्होंने काफी समय निकाल कर उसकी काउंसलिंग भी करी – वो क्या करना चाहती है, क्या पढना चाहती है, कौन से कोर्स वहाँ पढाए जा रहे हैं इत्यादि! मुझे भी काम के सिलसिले में दो हफ्ते घर से बाहर जाना पड़ा, और इस बीच दोनों लड़कियों ने ढेर सारी खरीददारी भी कर ली.. जैसे जैसे प्रिया के शरीर में वृद्धि हो रही थी, उसको नए कपड़ो की आवश्यकता हो रही थी; अश्विनी को भी नए परिवेश के हिसाब से परिधान खरीदने की ज़रुरत थी। खैर, अच्छा ही है.. इसी बहाने उसको नई जगह को देखने और समझने का मौका मिल रहा था।

दोनों ही लड़कियों से रोज़ बात होती थी.. एक बार प्रिया ने कहा की जिस तरह से उसका शरीर बढ़ रहा है, उसको लगता है की नए कपड़े लेने से बेहतर है की वो नंगी ही रहे। इस पर मैंने सहमति जताई, और कहा की यह ख़याल बहुत उम्दा है। प्रिया ने कहा की ख़याल तो उम्दा है, लेकिन आज कल उसकी बहन रोज़ ही उससे चिपकी सी रहती है.. ऐसा नहीं है की प्रिया को अश्विनी का संग बुरा लगता है। बस यह की एक वयस्क लड़की के लिए ऐसा व्यवहार थोड़ा अजीब है। मेरे पूछने पर उसने बताया की अश्विनी अक्सर उसके स्तनों और शरीर के अन्य हिस्सों को छूती टटोलती रहती है। कहती है की उसको प्रिया बहुत सुन्दर लगती है, और उससे रहा नहीं जाता बिना उसको छुए। प्रिया ने ही बताया की,

एक दिन अश्विनी ने प्रिया को कहा, “दीदी, तुम्हारा बच्चा कितना लकी है न! हमें तो बस गिलास से ही...”

“क्या मतलब?” प्रिया समझ तो रही थी.. फिर भी पूछा।

“मेरा मतलब दीदी, हर किसी को तुम्हारे जैसी खूबसूरत लड़की का ... पीने .. को.. नहीं मिलता है न!”

गर्भावस्था के दौरान लड़कियाँ स्वयं को फूली हुई महसूस करती हैं, इसलिए उनकी तारीफ़ इत्यादि करने से उनको ख़ुशी मिलती है। प्रिया भी अपनी तारीफ़ सुन कर मुस्कुराई।

“दीदी, मैं तुमको चूम लूँ?”

“क्या अश्विनी! तू भी! तू अपने लिए एक लड़का ढूंढ ले.. तेरे भाव स्पष्ट नहीं लग रहे हैं मुझे.. हा हा हा!”

“तो ढूंढ दो न तुम ही.. जीजू जैसा कोई! तब तक यही भाव रहेंगे मेरे..”

कहते हुए अश्विनी ने अपना चेहरा प्रिया के चेहरे के पास लाया। प्रिया की आँखें अश्विनी के होंठो पर लगी हुई थीं। प्रिया ने कभी नहीं सोचा था की उसके साथ ऐसा भी कुछ होगा। क्या उसकी ही अपनी, छोटी बहन उसकी तरफ यौन आकर्षण रखती है! ऐसा नहीं है की उसको बुरा लग रहा हो... शादी के बाद के कई अनुभवों के बाद उसकी खुद की अनगिनत वर्जनाएँ समाप्त हो गयी थीं, लेकिन फिर भी, यह सब कुछ बहुत ही अलग था.. अनोखा! अनोखा, और बहुत ही रोचक। अश्विनी ने झुक कर अपने होंठ प्रिया के होंठो से सटा दिए...

“ओह! कितने सॉफ्ट हैं!” एक छोटा सा चुम्बन ले कर उसने कहा।

अश्विनी प्रिया के होंठों पर बहुत ही हलके हलके कई सारे चुम्बन दे रही थी। दे रही थी, या ले रही थी? जो भी है! जब उसने देखा की प्रिया उसकी इस हरकत का कोई बुरा नहीं मान रही है, और साथ ही साथ उसकी इस हरकत के प्रतिउत्तर में वो खुद भी वापस चुम्बन दे रही है, तो उसने कुछ नया करने का सोचा। उसने चुम्बन में कुछ तेज़ी और जोश लाई, और साथ ही प्रिया को अपने आलिंगन में बांध लिया। कुछ तो हुआ दोनों के बीच – दोनों लड़कियाँ अब पूरी तन्मयता के साथ एक दूसरे का चुम्बन ले रही थीं। प्रिया ने भी अपने अनुभव का प्रयोग करते हुए अश्विनी के दोनों गाल अपने हाथों से थोड़ा दबा दिए, जिसके कारण अश्विनी का मुँह खुल गया। और इसी क्षण प्रिया ने अपनी जीभ अश्विनी के मुँह के अन्दर डाल कर चूसना शुरू कर दिया।

उधर, अश्विनी प्रिया की शर्ट के ऊपर से उसके स्तनों को बारी बारी छूने लगी। प्रिया के लिए यह कोई नई बात तो नहीं थी, लेकिन फिर भी सुने आँख खोल कर देखा - अश्विनी तो अपनी आँखें बंद किये इस काम में पूरी तरह मगन थी। एक सहज प्रतिक्रिया में प्रिया ने पुनः अपने स्तन को आगे की ओर ठेल दिया, जिसके कारण उसके स्तन अश्विनी के हाथ में आ गए। अश्विनी ने तुरंत ही खुश होकर उसके स्तन को मसलना चालू कर दिया।

चुम्बन की प्रबलता अब तीव्र हो चली थी और दोनों लड़कियों की साँसे भी। अश्विनी के दोनों हाथ अब प्रिया के शर्ट के अन्दर जा कर उसके स्तनों का मर्दन कर रहे थे। प्रिया के स्तनाग्र गर्भावस्था की संवेदनशीलता के कारण उसके मर्दन से असहज महसूस कर रहे थे। लेकिन वो अश्विनी का मन रखना चाहती थी।

प्रिया ने अश्विनी को अपने से कुछ दूर किया, और फिर अपनी शर्ट के बटन खोल कर उसके पट खोल दिए। वो शर्ट को उतार पाती, उससे पहले ही अश्विनी वापस उससे जा चिपकी और उसको पुनः चूमने लग गई। प्रिया के स्वतंत्र स्तनों को वो बारी बारी से अपने मुंह में भर कर चूसना आरम्भ कर दिया। पहले के मर्दन के कारण उसके स्तनाग्र पहले ही कड़े हो गए थे, और अब इस चूषण के बाद वो और भी कड़े हो गए।

“मैं भी लकी हूँ! ... उह्म्म्म उह्म्म्म (चूसते हुए) ओह दीदी..! आप प्लीज मुझको भी इनसे दूध पिलाना! आह! इतने सुन्दर हैं!” इतना कह कर वह पुनः चूसने में लग गयी।

“हा हा! ये लो... अब एक और दावेदार आ गई! गाँव बसा नहीं, और लुटेरे आ गए!”

अश्विनी ने उसकी बात को जैसे अनसुना कर दिया। उसके हाथ प्रिया के सारे शरीर पर चलने फिरने लगे। कभी वो उसके स्तन दबाती, तो कभी उसके नितम्ब, तो कभी उसकी पीठ! आगे वो उसकी स्कर्ट को नीचे की तरफ सरकाने लगी।

“अरे! ये क्या कर रही है? मुझे पूरा नंगा करने का मूड है क्या?” प्रिया ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"हाँ! मैं तुमको पूरा नंगा भी देखूँगी, और आपके साथ वह सब करूंगी जो जीजू करते हैं।“ कहते हुए अश्विनी प्रिया की स्कर्ट और चड्ढी दोनों एक साथ ही नीचे सरकाने लगी।

“नहीं अश्विनी.. ऐसे मत कर.. बस, इनको पीने की इजाज़त है.. ये तेरे जीजू के लिए है!”

प्रिया अश्विनी के सामने नग्न पड़ी हुई थी, और अपने शरीर का कोई हिस्सा छुपाने का यत्न नहीं कर रही थी। कदाचित, वह यह चाहती थी की अश्विनी उसकी सुन्दरता के रसभरे दृश्य से सराबोर हो जाए। लेकिन, अश्विनी को बस इतनी ही अनुमति थी। उसने एकदम आसक्त हो कर अपनी तर्जनी को प्रिया की सूजी हुई योनि की दरार पर फिराया और फिर बहुत ही अनिच्छा से अपना हाथ वापस खींच लिया। प्रिया मुस्कुराई।

अश्विनी ने वापस आकर प्रिया के स्तनों पर अपना मोर्चा सम्हाला, और पुनः उनको चूसना शुरू कर दिया। कुछ देर चूसने के बाद,

“अरे दीदी! ये क्या..?”

प्रिया की बात सुन कर मुझे बहुत रोचक लगा! और मैं खुद भी काफी उत्तेजित हो गया!! बात तो सही है.. प्रिया है ही इतनी सुन्दर! और अब जब वो माँ बनने वाली है, तो उसकी सुन्दरता और भी निखर आई है! ज्यादातर स्त्रियाँ गर्भ-धारण करने के बाद अतिपक्व दिखने लगती है, और उनके शरीर पर गर्भ का बोझ दिखने लगता है। कहने का मतलब, वे स्थूल, थकी हुई और निस्तेज हो जाती है। लेकिन, कुछ स्त्रियाँ ऐसी होती है, जो पुष्प की तरह खिल जाती हैं.. उनके चेहरे पर उनके अन्दर पनप रहे जीवन का तेज दिखने लगता है। प्रिया इस दूसरी श्रेणी में थी। उसका चेहरा जीवन की आशा से दीप्तिमान होता जा रहा था, और उसका छरहरा शरीर स्थूल तो हो रहा था, परंतु साथ ही साथ अत्यंत आकर्षक भी होता जा रहा था। पहले ही वो रति का स्वरुप लगती थी, अब तो ऐसा लगता है की उसमें कम से कम सौ रतियों का वास हो! कोई भी ऐसी स्त्री को आकर्षक पायेगा ही! इसके लिए अश्विनी से मुझे कोई भी गिला-शिकवा नहीं था।

वापस आने के एक दिन पहले प्रिया ने मुझे फ़ोन पर कहा की वापस आने पर मेरे लिए एक सरप्राइज है! मेरे लाख पूछने पर भी उसने कुछ नहीं बताया की क्या! खैर, बता देती तो कैसा सरप्राइज! घर आने पर मेरा स्वागत एक बेहद झीने नाईटी पहने हुए प्रिया ने एक गर्म कामुक फ्रेंच चुम्बन के साथ किया। दरवाज़े को भी ठीक से बंद नहीं पर पाया मैं। स्पष्ट था की इतने दिनों में प्रिया की यौनरुचि कई गुना बढ़ गयी थी। मुझे भी इस तराशी हुई सुंदरी को नंगा देखने की तीव्र इच्छा हो रही थी, इसलिए तुरत-फुरत मैंने उसकी नाईटी उतार फेंकी। मेरी नज़रों के सामने भरे हुए स्तन और उनके सामने सुशोभित स्थूल चूचक, जैसे किसी पूर्वज्ञान के कारण खड़े हुए, उपस्थित थे। मैंने आँख उठाई, तो मेरी आँखें प्रिया की आँखों से मिलीं। उसकी आँखों में एक संतुष्ट चमक थी – उसको मालूम है की मैं उसके स्तनों की सुन्दरता का दीवाना हूँ। फिर भी वो एक शिकायत भरे लहजे में कहती है,

“बहुत बड़े हो गए न?” और कहते हुए अपने स्तनों के नीचे हथेलियाँ लगा कर उठाती है। उसके इस हरकत में किसी भी प्रकार की लज्जा नहीं है.. वस्तुतः, मुझे ऐसा लगा जैसे वो मुझे अपने स्तनों का चढ़ावा दे रही हो। ऐसे चढ़ावे का भोग तो मैं कभी भी, और कहीं भी लगा सकता हूँ।

मैंने ‘न’ में सर हिलाया, “आई लव देम... आई लव यू!”

“तुम पागल हो..” कह कर प्रिया खिलखिलाते हुए हंसी.. और फिर उसने आगे जो किया उसने मेरे दिमाग और शरीर के सारे तार झनझना दिए। उसने अपने स्तनों को हलके से दबा दिया, और ऐसा करने से दोनों चूचकों में हलके पीले से रंग के दूध की बूँदें निकल आईं। ज़रा सोचिये, उसके प्यारे प्यारे रसभरे स्तनों में से अमृत उतर रहा था, और मैं उसको पीने जा रहा था! यह मेरा दावा है की धरती के प्रत्येक पुरुष के मन की फंतासी होगी की वो अपनी प्रेमिका या पत्नी के स्तनों से दूध पिए! कम से कम मेरी तो थी! और आज यह स्वप्न पूरा होने वाला था। इस दृश्य को देखते ही मेरा लिंग अपने पूरे तनाव पर खड़ा हो गया।

“मेला बच्चा भूखा है?” प्रिया ने मुझे प्यार से छेड़ा।

मैं मंत्रमुग्ध सा इस दृश्य को देख रहा था.. लिहाजा, मैं सिर्फ सर हिला कर हामी भर पाया।

“अले मेला बेटू... इत्ती देर शे उसे कुछ खाने को नहीं मिला... है न? मेला दूधू पिएगा..?”

प्रिया ने दुलराते हुए मुझसे पूछा। मेरे फिर से ‘हाँ’ में सर हिलाने पर प्रिया वहीँ सोफे पर बैठ गई, और उसने मुझे अपनी गोदी में आने का इशारा किया। मैंने उसकी गोदी में सावधानीपूर्वक व्यवस्थित हो जाने के बाद उसके होंठों को कोमलता से चूम लिया और उसके होंठों के अन्दर से होते हुए अपनी जीभ से उसकी जीभ चाट ली।

प्रिया फिर से खिलखिलाई, और बोली, “नीचे और भी टेस्टी चीज़ है...”

और यह कहते हुए उसने मेरे सर को अपने स्तनों की तरफ निर्देशित किया। मैंने उसके स्तनाग्र का पूरा हिस्सा मुँह में भर लिया और जोर से चूसा। कोई पांच छः बार कोशिश करने के बाद मुझे अपने मुंह में एक स्वादरहित द्रव रिसता हुआ महसूस हुआ। और इसी के साथ ही मुझे प्रिया के मुंह से संतुष्टि भरी आह भी सुनाई दी।

“आह्ह्ह मेरे राजा! ऐसे ही चूसते रहो.. आह.. बहुत अच्छा लग रहा है..।“

प्रिया मेरे चूषण से प्रसन्न तो थी – उसकी विभिन्न प्रकार की आहें और उम्म्म आह्ह्ह.. इत्यादि इसका सबसे बड़ा प्रमाण थीं। कुछ देर में द्रव/दूध निकलना बंद हो गय, लेकिन फिर भी मैंने उसके बाद भी एक दो मिनट तक उसके उस स्तन को चूसा। उसके बाद आई

दूसरे स्तन की बारी.. मुझे अनुभव तो हो ही गया था.. या यह कह लीजिये की शेर को खून… (ओह! माफ करियेगा), दूध का स्वाद पता चल गया था।

इधर मैं उसका दूध पी रहा था, और उधर प्रिया मेरी पैंट की ज़िप के अन्दर से मेरे तने हुए लिंग के साथ खिलवाड़ कर रही थी। मैंने यह महसूस किया की जब वो मेरे लिंग को दबाती है, तो मेरा चूषण और बढ़ जाता है। खैर, यह खेल कब तक चलता.. अंततः उसके दोनों स्तनों में दूध समाप्त हो गया, तो मैं उसके पेट पर चुम्बन लेकर सोफे से ज़मीन पर उतर आया।

"कैसा लगा सरप्राइज?"

"बहुत ही बड़ा सरप्राइज था! मज़ा आ गया.."

"कब से बचा के रखा था.. आपका मन भरा?"

"मन कैसे भरेगा इससे मेरी जान! इतना न्यूट्रीशियश, इतना मजेदार! मैंने तो रोज़ पियूँगा!"

ऐसी बातें करते हुए शरीर पर जो प्रभाव होना होता है, वो होने लगा।

"अले ले ले! ये क्या.. मेले बेटू का छुन्नू तो ल्ल्ल्लिंग बन गया है.. कितना बड़ा वाला ल्ल्ल्लिंग.." उसने मुझे चिढ़ाया।

"मम्मी है ही इतनी कामुक!"

"ह्म्म्म? मम्मी इसको जल्दी से वापस छुन्नू बना दे? ठीक है न?"

"ख़याल बहुत ही उम्दा है!"

"मेला बेटू अपनी मम्मी की ठुकाई करना चाहता है?" आज प्रिया को क्या हो गया है! अगर ऐसे ही होता रहा तो उसकी बातें सुन कर ही मैं स्खलित हो जाऊंगा!

"हां.. मम्मी की ज़ोरदार ठुकाई करनी है.."

“स्स्स्सीईई! गन्दा बच्चा! अपनी मम्मी को ठोकेगा!”

मैं ज़मीन पर लेट गया और जल्दी से अपने लिंग को ज़िप के अन्दर से आज़ाद कर दिया।

“मेरे लिंग को अन्दर ले लो और अपनी दोनों टाँगें मेरी दोनों ओर करके बैठ जाओ! आज मम्मी मेरी घुड़सवारी करेगी!”

“इस तरह?”

वह मेरी गोद पर चढ़ते ही पूछती है। वह अपनी दोनों टाँगें मेरी दोनों ओर करके बैठ गयी है, लेकिन अभी भी ज़मीन पर अपने घुटनों के बल टिकी हुई है। उसके योनिड़ मेरी जांघों पर टिके हुए थे, और मेरा लिंग अभी भी बाहर था। मैंने अपने दोनों हाथों से उसके नितम्ब थाम लिए।

“इतना बड़ा लिंग!”

प्रिया पर मानो आज किसी भूत का साया पड़ गया था। ऐसे खुलेपन से उसने गन्दी-बातें कभी नहीं करीं थी। उसने मेरे लिंग को पकड़ कर अपने योनि के चीरे पर से ऊपर-नीचे कई बार फिराया। उसकी योनि में से तेजी से स्राव हो रहा था। फिर उसने धीरे से मेरे लिंग के सुपाड़े को अपने चीरे में लगाया और धीरे धीरे उस पर बैठने लगी। उसका योनि द्वार तुरंत खुल गया, और मेरा लिंग अपनी नियत जगह में आराम से जाने लगा – जैसे गरम चाकू, मक्खन के अन्दर जाता है। आधा लिंग अन्दर जाने तक वह नीचे की तरफ बैठती है, और साथ में हाँफते हुए यह भी कहती जाती है की “यह बहुत बड़ा है”। कहने के लिए शिकायत है, लेकिन उसकी मुस्कान से पता चलता है की वह खुद अपने झूठ से आनंदित है। फिर वह मेरे लिंग पर ऊपर और नीचे होना शुरू कर देती है।

एक मिनट भी नहीं हुआ होता है की मैं अपना वीर्य छोड़ देता हूँ। हैं! यह क्या!! एक मिनट भी नही! मुझे थोड़ी लज्जा आई.. इतने वर्षों के सहवास क्रीड़ा में मैंने कभी भी इतनी जल्दी मैदान नहीं छोड़ा! आज क्या हुआ! फिर मैंने अपने लिंग पर प्रिया के खुद के सहवास निष्पत्ति का स्पंदन महसूस किया।

‘अरे! ये भी आ गई क्या!’

हम दोनों ने कुछ देर तक अपनी साँसे संयत करीं, और फिर प्रिया ने ही कहा, "बेटू मेरा... अपनी माँ को ऐसे आसानी से छोड़ देगा, क्या?" न जाने क्यों उसके इस तरह चिढ़ाने से या फिर यह कह लीजिये की इस स्वांग से मैं जल्दी ही फिर से उत्तेजित हो गया।

"ऐसे सस्ते में जाने देगा? हम्म्म? ऐसे ठोको न, जैसे अपनी बीवी को ठोकते हो... हर रोज़.." मेरा लिंग वापस अपने पूर्ण तनाव पर आ गया। और पूर्ण तनाव आते ही,

"जानू..."

'हैं! इसकी तो भाषा ही बदल गई..!'

"आज एक नया आसान ट्राई करते हैं? कुछ ही दिनों में मेरा पेट फूल कर बहुत बड़ा हो जाएगा। लेकिन, मुझे आपना लिंग अपने अन्दर हमेशा चाहिए... मगर, आपको ठीक लगे तो ही!"

"जानू मेरी! मैं तो बस जो तुम चाहती हो, मुझे बताओ, और मैं वैसे ही कोशिश करूंगा। अगर तुमको अच्छा लगता है तो मैं किसी भी आसन में तुमको ठोकने को तैयार हूँ।"

तब प्रिया ने मुझे श्वान-सहवास आसन (दरअसल इसको कामसूत्र में 'धेनुका' कहा जाता है, लेकिन सामान्य भाषा में डॉगी स्टाइल कहते हैं) लगाने का निर्देश दिया। वो स्वयं अपने हाथों और सर को सोफे पर टिका कर और अपने नितम्बों को बाहर की तरफ निकाल कर घुटने के बल लेट/बैठ गई। जब मैं उसके पीछे जा कर अपना स्थान व्यवस्थित कर रहा था तो उसने बस इतना ही कहा, "जानू, आप सही छेद में ही करना.."

कहने सुनने में हास्यास्पद बात लगती है, लेकिन यह एक गंभीर चेतावनी थी। भगवान् के दिए दोनों छेद इतने करीब होते हैं, की इस आसन में अगर ध्यान नहीं दिया तो एक दर्दनाक और शर्मनाक गलती होने के पूरे आसार होते हैं। वैसे भी प्रिया को मैं आज तक गुदा-मैथुन के लिए मना नहीं पाया था।

मैंने अपने लिंग को प्रिया की योनि से रिसते रस (जो प्रिया के और मेरे रसों का मिश्रण था) से अच्छी तरह भिगोया और उसके पीछे से योनि द्वार पर टिकाया। प्रिया ने अपनी उँगलियों से अपनी योनि की दरार को कुछ फैलाया, जिससे मुझे उचित छेद खोजने में कोई कोई

परेशानी न हो। अन्दर इतनी ज्यादा चिकनाई थी की ज़रा सी हरकत से मैं अन्दर तक समां गया।

प्रिया ने एक कामुक किलकारी भरी, "उईई माँ! आप तो पूरा अन्दर तक घुस गए! आह्ह्ह!"

इस कथन में किसी भी तरह की शिकायत, या दर्द जैसा कुछ नहीं था, इसलिए मैंने इसको सहवास आरम्भ करने की अनुमति के रूप में लिया, और उसकी सूजी हुई योनि की कुटाई आरंभ कर दी। प्रिया ने मेरे लिंग के घर्षण के साथ ही अपना आनंद भरा विलाप करना आरम्भ कर दिया। उधर मैंने पीछे से ही उसके स्तनों को दबाना, मसलना चालू कर दिया, और आराम से धक्के लगाने लगा। पीछे से सहवास करने से नितम्बों की पूरी संरचना स्पष्ट दिखाई देती है.. कमाल की बात यह है की इतने सारे आसन और पोजीशन ट्राई करने के बाद भी यह वाला बचा रह गया! प्रिया के नितम्ब! मैंने उंगली से उसकी गुदा को छुआ और फिर उसके छेद पर अपनी अंगुली फिराने लगा। कुछ प्रतिक्रिया न देखने पर मैंने धीरे से अपनी उंगली अंदर डाली। प्रिया चिहुंक गई, "ओउईई! म्मत क्क़करो.."

मैं रुक गया और कुछ और जोर से धक्के लगाने लगा। पहले स्खलन के बाद मेरा स्टैमिना काफी बढ़ गया था। इस नए काम युद्ध को करते हुए कोई दस-बारह मिनट के ऊपर तो हो ही गए होंगे। और अब मुझे भी लग रहा था की मंजिल निकट ही है। इस बीच में प्रिया एक बार निवृत्त हो चुकी थी। मैं अब ज़ोर का धक्का लगाने लगा – प्रिया भी अपनी तरफ से अपने नितम्ब आगे पीछे कर रही थी। कुछ ही देर में मेरे अन्दर का लावा फ़ूट पड़ा। स्खलन के उन्माद में मैंने अपनी कमर को कस कर प्रिया के नितम्बो से पूरी तरह चिपका लिया।

सहवास का नशा उतरा तो याद आया की अश्विनी भी घर पर होगी! लेकिन प्रिया ने बताया की वो अभी बाहर गयी हुई है किसी काम से। मैंने राहत की साँस ली – कमाल है! सोचा भी नहीं की घर में हमारे अलावा एक और प्राणी रहता है। आगे से सजग रहना होगा।

२२

यात्रा वाले दिनः

प्रिया : “जानू, आप भी साथ आते तो मज़ा आता।“

अश्विनी : “हाँ जीजू! आप भी न.. मौके पर धोखा देते हैं!”

मैं : “मौके पर धोखा! हा हा हा!”

अश्विनी : “और क्या! अब बताइए.. ये सारा लगेज हम दो बेचारी लड़कियों को खुद ही ढोना पड़ेगा..”

मैं : “अच्छा जी.. तो मैं तुम दोनों का कुली हूँ?”

अश्विनी : “नहीं नहीं.. आप तो मेरी दीदी के ‘जाआआनू’ हैं.. (अश्विनी ने मुझे चिढ़ाया) और मेरे प्याआआरे जीजू! लेकिन.. सामान उठाने वाला भी तो कोई चाहिए! ही ही ही!!!”

मैं : “देख रही हो जानेमन.. इस लड़की को सामान उठाने वाला चाहिए.. लगता है की इसके लिए लड़का ढूंढना शुरू कर देना चाहिए..”

अश्विनी : “धत्त जीजू! आपके होते हुए मुझे कोई और क्यों चाहिए?” उफ्फफ़! इस लड़की से जीतना मुश्किल है!

मैं (अश्विनी की बात को नज़रंदाज़ करते हुए): “क्या बताऊँ जानू.. मेरा भी तो कितना मन है आपके साथ आने का! लेकिन यह मीटिंग्स! ये तो अच्छा है की मेरा काम दिल्ली में है.. बस, काम जल्दी से निबटा कर तुरंत आ जाऊँगा। बस यही तीन चार दिन की ही तो बात है... आप लोग एक दो दिन एक्स्ट्रा रह लेना वहाँ.. या एक दो दिन बाद चली जाना। मैं वहीँ सबको मिलूंगा! ओके?“

प्रिया मुस्कुराई, और फिर मेरे पास आ कर दबी आवाज़ में बोली, “वो तो ठीक है.. लेकिन, ये दूध कौन पिएगा?”

अश्विनी : “हाँ हाँ.. सुनाई दे रहा है मुझे!” अश्विनी अँधेरे में तीर मार रही थी।

मैं : “क्या सुन रही है तू?”

अश्विनी : “आप दोनों मेरे खिलाफ कोई साजिश कर रहे हैं..”

प्रिया : “तेरे कॉलेज में कहूँगी की रोज़ तेरे कान उमेठें जाएँ.. सारी चबड़ चबड़ निकल जायेगी!”

अश्विनी : “ठीक है! ठीक है! कर लो आप दोनों पर्सनल बातें! मैं क्यूँ कबाब में हड्डी बनूँ?” कहते हुए अश्विनी कमरे से बाहर निकल गयी।

मैं (मुस्कुराते हुए) : “इसको सम्हाल कर रखिएगा... मैं इत्मीनान से पियूँगा, जब आपसे मिलूंगा!”

प्रिया (खिलवाड़ करते हुए), “गन्दा बच्चा...!” और फिर अचानक गंभीर हो कर, “... जानू.. आपके बिना मेरा मन कहीं नहीं लगता! आप रहते हैं तो ज़िन्दगी में मज़ा रहता है!”

मैं : “क्या जानू.. बस तीन चार ही दिनों की तो बात है! मैं आ जाऊँगा! .. और फिर, मुझे ये डेयरी भी तो खाली करनी है! न्यूट्रीशन!! हेह हेह!”

प्रिया : “मेरा तो बस यही मन रहता है की इनमें लबालब दूध भरा रहे.. जिससे मैं आपको जब मन करे, दूध पिला सकूं!”

केदारनाथ की चढ़ाई काफी कठिन है। करीब सात हज़ार फुट की चढ़ाई चढ़ कर केदारनाथ मन्दिर तक पहुंचते हैं। केदारनाथ जाने की प्रबल इच्छा क्यों थी इसका मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मुझे वैसे तो किसी तीर्थ पर जाने में कोई ख़ास रुचि नहीं है। लेकिन, इन लोगो की आस्था, और उनके परिवार की एक प्रकार की परम्परा के कारण मैंने कोई विरोध नहीं किया। वैसे भी प्रिया की डॉक्टर ने बताया था की इस यात्रा में कोई दिक्कत नहीं है, अगर बस कुछ ख़ास सावधानियाँ बरती जाएँ! मैंने यह सख्त निर्देश दिए थे, की प्रिया को चढ़ाई चढ़ने न दिया जाय – पालकी कर ली जाय, जिससे आसानी रहेगी। यह भी निर्देश दिया की प्रिया लगातार मुझसे बात करती रहे, जिससे मुझे वहाँ की परिस्थिति का मालूम

होता रहे। इस पर प्रिया ने कहा की वो दिन में पांच छः बार मुझसे फ़ोन पर बात ज़रूर करेगी।

दोनों लड़कियों को मैंने बैंगलोर विमानपत्तन तक छोड़ा, और वापस काम पर चला गया। दो दिन बाद मुझे दिल्ली के लिए निकलना था, और वहाँ चार ज़रूरी मीटिंग्स कर के देहरादून, और वहाँ से केदारनाथ की यात्रा करनी थी। प्रिया, अश्विनी के जाने के बाद घर खाली खाली सा लगने लगा तो मेरा ज्यादातर समय ऑफिस में ही बीत रहा था। प्रिया मुझे हर समय फ़ोन या एस ऍम एस पर अपनी जानकारी देती रहती। दिल्ली में मीटिंग्स वगैरह करते हुए मुझे प्रिया ने बताया की केदार घाटी में काफी बारिश हो रही है। मैंने उसको सावधानी बरतने को कहा, और जल्दी मिलने का वायदा करके फोन काट दिया। देहरादून के लिए अगले दिन सवेरे की फ्लाइट थी।

रात में सोने से पहले मैंने प्रिया का नंबर लगाने की कोशिश करी – कई बार कोशिश किया, लेकिन नम्बर नहीं मिला। फिर उसके पापा और होटल का भी नंबर लगाया.. कहीं भी फ़ोन नहीं लग रहा था। निराश हो कर मैं सोने चला गया – रात भर ठीक से नींद नहीं आई। अजीब अजीब सपने आते रहे, और सवेरे उठने के बाद बुरे बुरे ख़याल आते रहे। उठते ही मैंने फिर से फ़ोन लगाने की कोशिश करी, लेकिन अभी भी फ़ोन नहीं लग रहा था। ऐसे ही बुरे मूड में मैं दिल्ली विमानपत्तन पहुंचा और वहाँ जा कर मालूम हुआ की केदारनाथ में भीषण बाढ़ आई हुई है। मेरे पैरों के नीचे से जैसे ज़मीन ही खिसक गई – पेट में जैसे गाँठ पड़ गयी! मन अज्ञात आशंकाओं से घिर गया।

मन में अनजाने डर, और ह्रदय में ढेर सारी प्रार्थनाएँ लिए पूरी यात्रा बीती। लेकिन देहरादून विमानपत्तन पर पहुँचते ही सारे के सारे डर हकीकत में बदल गए। वहाँ मैंने टैक्सी करने की कोशिश करी, तो लोगों ने बताया की केदारनाथ में किसी भी ड्राईवर से उनका संपर्क नहीं हो पा रहा है। पूछने पर उसने आगे जाने से मना कर दिया, यह कह कर की ले तो जा सकता है, लेकिन सड़क की क्या हाल है, और बारिश में न जाने क्या क्या हो सकता है कुछ नहीं मालूम! आज का दिन यूँ ही निकल गया – एक एक मिनट.. एक एक पल ऐसा लग रहा है जैसे की एक एक सदी बीत रही हो! बॉस का भी दिन में कई बार कॉल आ चूका – वो प्रिया के बारे में पूछते हैं! मैं क्या जवाब दूं! एक बार तो मेरी आंखों में आंसू छलक पड़े! मेरी चुप्पी और खामोश रुदन उन्होंने शायद सुन लिया हो! फ़ोन पर मुझे धाड़स बंधाते हुए उन्होंने कहा की उम्मीद मत छोड़ना, और मेरी हर तरह से मदद करने का आश्वासन किया। मुझे इतना तो मालूम पड़ गया की उन्होंने उत्तराखंड आपदा कंट्रोल रूम और अधिकारियों से संपर्क करने की हर संभव कोशिश की है।

एक दिन।

दो दिन।

तीन दिन।

चार दिन।

हर एक दिन गुजरने के बाद मुझे मेरे परिवार के लौटने की आशा भी धूमिल होती नजर आ रही थी। एक एक पल इंतजार की करना मुश्किल होता जा रहा था। न तो भोजन का कोई कौर गले के अन्दर जा पाता, और न ही हलक से पानी की एक बूँद! न जाने उन लोगों ने कुछ खाया पिया होगा या नहीं, बस यही सोच कर कुछ खाने पीने की हिम्मत भी नहीं पड़ रही थी।

ज्यादातर टैक्सी वाले अब मुझे पहचानने लग गए। मुझे देखते ही वह कहते हैं, “साहब, ऊपर के इलाकों में सड़कें ख़त्म हो चुकी हैं... और गाँव के गाँव साफ़ हो गए हैं। हमारे किसी भी साथी की कोई खोज खबर नहीं है। अब तो बस भगवान् और सेना का ही सहारा है। आप बस प्रार्थना करिए की आपका परिवार सही सलामत आपको मिल जाय।“

रात में होटल वाले ने जबरदस्ती एक रोटी मुझे खिला दी। दिन भर आपदा कार्यालय के चक्कर लगाता, फ़ोन की घंटी बजने का इत्नाजार करता, और समाचार में मृतकों की बढ़ती हुई संख्या देख कर मन ही मन मनाता की मेरा कोई अपना न हो! इतनी बेबसी मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं महसूस करी। इतनी बेबसी, और इतनी खुदगर्जी!

इस आपदा में हुई और हो रही जान-माल की क्षति का आंकड़ा विकराल रूप से बढ़ता ही जा रहा है! मन में बस अब एक ही ख़याल आता है की अब बस! अब ये गिनती ख़त्म करो भगवान्! इतने दिन हो गए, और किसी से कोई संपर्क ही नहीं हो पाया है!

'काश! ये लोग ठीक हों! ओह प्रिया! प्लीज प्लीज! काश! तुम ज़िंदा हो..!'

छठा दिन:

राहत और बचाव कार्य बाधित हो रहा है, क्योंकि घाटी में फिर से तेज बारिश हो रही है, और धुंध छाई हुई है। सेना के हेलिकॉप्टर उड़ान ही नहीं भर पा रहे हैं! खबर आई थी की एक हेलिकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया! बचने गए वीर युवक, खुद ही पहाड़ों की भेंट चढ़ गए! एक अफसर से बात हुई, उन्होंने मुझे साफगोई से कह दिया,

“साहब, यह तो एक तरह से 'रेस अगेन्स्ट टाइम' है... मौसम खराब है, हर तरह के जोखिम हैं और अब तो महामारी का खतरा भी पैदा हो गया है... लोग अब बीमारी और भूख–प्यास से मर रहे हैं! कितनी मौतें हुईं, कितने लापता हुए और कितने लोग सुरक्षित निकाले गए - इस पर अब कोई भी बात बेमानी लग रही है, क्योंकि यहाँ कोई समन्वय नज़र नहीं आ रहा है, और न ही कोई एक सूची है। सच्चाई यह भी है कि खुद प्रशासन का कितना नुकसान हुआ है, इसका अंदाजा ठीक-ठीक अभी उन्हें भी नहीं है। इसके शिकार हुए लोगों का पता लगाना ही अपने आप में एक बड़ी चुनौती बन गयी है। हज़ारों की तादाद में लोग मदद की आस लगाए बैठे हैं। आप भी उम्मीद न छोडिए.. कुछ भी हो सकता है!”

सातवाँ दिन:

अब तो कोई उम्मीद ही नहीं बची है.. बस यंत्रवत रोज़ रोज़ राहत शिविर के दफ्तर पहुँच जाता हूँ। वहाँ लोगों से कई बार प्रार्थना भी करी है की मुझे भी सेवा का अवसर दें.. लेकिन वहाँ किसी के पास समय नहीं है। कई सारे लोग बचाए भी जा चुके हैं, लेकिन इन लोगों का कोई नामोनिशान ही नहीं है!

‘अरे! फ़ोन बज रहा है..’

कोई अनजाना नंबर था। स्थानीय! दिल धाड़ धाड़ कर के धड़कने लगा।

“हेल्लो?” मैंने बहुत उम्मीद से बोला।

“जीजू..?” यह तो अश्विनी की आवाज़ थी।

“अश्विनी?”

“जीजू... हू हू हू..” वो बेचारी रोने लगी!

‘हे भगवान्!’

“अश्विनी.. तुम ठीक तो हो न?”

“जीजू.. प्लीज आप मुझे ले चलो.. हू हू हू..” रोते हुए उसकी हिचकियाँ बांध गईं।

“हाँ अश्विनी.. बताओ कहाँ हो? बाकी लोग कैसे हैं?”

उत्तर में अश्विनी सिर्फ रोती रही।

“साहब, आप फलां फलां जगह पहुँच जाइए.. एक्सट्रैक्शन वही हो रहा है..”

“जी हाँ.. जी.. ठीक है.. मैं आ रहा हूँ..”

“ओह भगवान्! तेरा लाख लाख शुक्र है!”

कह कर मैं बिलख बिलख कर रोने लगा। कोई देखे या नहीं.. मुझे कोई परवाह नहीं! जब सब उम्मीदें छूट गईं, तब देखिए! कैसे खुशखबरी आई! कोई तीन घंटे की मशक्कत के बाद मैं राहत शिविर / एक्सट्रैक्शन कैंप में पहुंचा। वहाँ की हालत तो और भी दयनीय थी। बचाए गए सभी लोगों की आँखों में राहत और आस की नमी थी। साफ़ दिख रहा था की वो सभी बेहद भूखे और बेबस थे, और अब उनके अन्दर किसी भी तरह की शक्ति नहीं बची हुई थी। वाजिब भी है - इन लोगों को एक हफ्ता हो गया, कुछ भी खाने को नहीं मिला था.. और पीने के लिए भी सिर्फ गन्दा पानी ही नसीब हुआ होगा। ज़मीन पर एक व्यक्ति लेटा हुआ था... उसकी हालत देखकर मुझे नहीं लगा की उसके बचने की कोई उम्मीद होगी। सभी के कपड़े फटे हुए और मैले-कुचैले हो गए थे... या तो वो खड़े थे, या फिर लेटे हुए थे।

एक वृद्ध मुझे देखते ही बोला, “हे बबुआ, हम हाथ जोड़ित है.. हमका हियाँ से ले चला।”

बेचारे को लगा होगा की मैं उसका पुत्र या कोई सगा सम्बन्धी हूँगा! एक तरफ कुछ लोग उल्टियाँ कर रहे थे।

‘ये लोग दिख क्यूँ नहीं रहे हैं?’ अचानक मेरी नज़र एक तरफ ज़मीन पर लेटी हुई लड़की पर पड़ी.. ‘अश्विनी!’

“अश्विनी?” ‘हे भगवान्! क्या हालत हो गयी है इसकी! इतनी प्यारी बच्ची.. और ये दशा?’ उसके कपड़े बुरी तरह से फटे हुए थे। बुरी तरह से मैली कुचैली, ज़ख़्मी, बेदम!

“जीजू? ओह जीजू!” कहते हुए वो मुझसे लिपट गयी।

“तुम ठीक तो हो अश्विनी?”

उसने सर हिला कर हामी भरी।

“बाकी लोग कहाँ हैं?”

मेरे प्रश्न पर उसकी आँखें भर आईं.. उसने बस ‘न’ में सर हिलाया। मुझे समझ आ गया की वो बात करने की दशा में नहीं है। मैंने वहाँ उपस्थित अधिकारी से बात करी, तो उन्होंने बताया की मेरे परिवार का कोई और सदस्य उनको नहीं मिला.. अश्विनी अकेली ही थी। वही बता सकती है की बाकी लोग किधर हैं! मैंने वहाँ पर सारी ज़रूरी औपचारिकताएं पूरी करीं, और अश्विनी को होटल ले आया। रास्ते में आते आते वो या तो गहरी नींद सो गयी, या फिर बेहोश हो गयी। बेचारी की क्या दशा हो गयी थी!! कोई और समय होता तो ऐसी हालत में किसी लड़की को लाने पर होटल के सभी लोग शक करते, लेकिन आज सभी सहयोग कर रहे थे। सामूहिक विपत्ति में समाज में मित्रों की संख्या बढ़ जाती है।

उन्ही की मदद से मैंने अश्विनी को बिस्तर पर लिटाया, और फिर दरवाज़ा बंद कर के उसके सारे कपड़े उतारे। उसके पूरे शरीर पर चोट, और कटने के निशान दिख रहे थे। शरीर में सूजन तो थी, लेकिन उसके तलवे काफी सूजे हुए थे, और साथ ही साथ उन पर फ़फोले पड़े हुए थे। उनमे से कुछ फूट भी गए थे, और वो घाव खुले भी हुए थे। मैं उसको बिस्तर में लिटा कर उसके लिए ज़रूरी वस्त्र, और डॉक्टर का इंतजाम करने चला गया। डॉक्टर के साथ वापस आया तो देखा की अश्विनी अभी भी सो रही थी, और उसका शरीर तप रहा था।

उन्होंने अश्विनी की पूरी तरह से जांच करी, और उसको इंजेक्शन दिया, और कुछ दवाएं लिख कर दीं। बताया की कोई डरने की बात नहीं लगती, बस अश्विनी को कुछ हल्का खिलाता रहूँ.. जैसे की जूस, सैंडविच इत्यादि, जब तक उसकी ताकत वापस न आ जाय! एक बार ताकत आने पर बुखार खुद ही उतर जाएगा। उनको बस इसी बात का डर है की कहीं उसको डि-हाइड्रेशन न हो जाय!

अश्विनी देर शाम को ही उठ पाई। तब तक मैं उसके लिए जूस, और सैंडविच इत्यादि का इंतजाम कर लाया था। मैं उसको बिस्तर से उठा कर बाथरूम ले गया, जहाँ अन्य ज़रूरी कामों के साथ मैंने उसको नहलाया भी। वापस आ कर मैंने उसको कपड़े पहनाये – वो इतनी कमज़ोर हो गयी थी की खुद के बल पर बैठ भी नहीं पा रही थी। खाना भी मैंने उसको अपने हाथों से ही खिलाया। और सबसे अंत में दवा पिलाई। फिर उसको वापस बिस्तर में लिटाया।

मैंने प्यार से उसके बालों को सहलाते हुए पूछा, “अश्विनी, अब ठीक लग रहा है?”

अश्विनी की आँखों से आंसू टपक पड़े।

“कोई नहीं बचा, जीजू! कोई नहीं..”

मेरे ऊपर मानो बिजली गिरी! ‘कोई नहीं..! मतलब!’

जब तक कोई निश्चित बुरी खबर नहीं मिलती, तब तक आशा बंधी रहती है। मेरी भी आशा बंधी हुई थी की शायद प्रिया और बाकी सभी जीवित होंगे... लेकिन अश्विनी के इस एक वाक्य ने वह आशा भी छीन ली। मैं बुरी तरह से फूट पड़ा – मानो, थमा हुआ बाँध अचानक ही टूट गया हो। मेरे पैर... जैसे उनमें से सारी जान निकल गयी हो। मेरा सर चकराने लगा, और मैं अचेत हो कर गिर गया।

रजनीगंधा की मस्त कर देने वाली खुशबू मेरे नथुनों के रास्ते से आ कर मुझे आंदोलित कर देती है। मेरी चेतना वापस आती है। आँख खुलती है, तो मुझे लगता है की मानो मैं स्वर्ग के नंदन वन में हूँ। चारो तरह चांदनी फैली हुई है, और हरी भरी घास पर ढेर सारे पुष्प खिले हुए हैं! वैसे ही जैसे फूलों की घाटी में देखे थे!

'क्या बात है! लेकिन.. लेकिन, वो रजनीगंधा की खुशबू?'

मैं उठ कर देखता हूँ तो एक तरफ छोटा सा तालाब, जिसमें कई सारी कुमुदनियाँ अभी सुप्त अवस्था में थीं। दूसरी तरफ नज़र दौड़ाई तो देखा की एक बहुत ही सुन्दर सा घर था – उस घर के प्रथम तल पर स्थित एक बड़ी खिड़की से रौशनी छन कर बाहर आ रही थी। दिमाग की एक झटका सा लगा – यह तो वही घर है जैसा मैंने और प्रिया ने साथ में सोचा था! एक बार और मैंने नज़र दौड़ाई, तो देखा की तालाब के समीप ही एक स्त्री, एक छोटी सी लड़की के साथ खेल रही है।

'ओह! रजनीगंधा की सुगंध उसी तरफ से आ रही है।'

अचानक उस स्त्री की दृष्टि भी मेरे ऊपर पड़ती है; वो खेलना बंद कर मेरे पास आती है.. प्रिया को देख कर मैंने मुस्कुरा उठता हूँ। वो खजुराहो की मूर्तियों जैसी सवार्ंग सुंदर दिख रही है - अत्यन्त कमनीय! दरअसल, उसने खजुराहो की मूर्तियों के समान ही वस्त्र पहने हुए हैं – कमर के नीचे धोती है, और स्तनों को ढके हुए कंचुकी! इन वस्त्रों में प्रिया के रूप सौंदर्य और अंग-प्रत्यंग की रचना देखते ही बन रही है। उसके वक्ष गोलाकार थे, और शरीर चांदनी में चमक रहा था। आँखों में वही परिचित चंचलता और मादकता!

वो प्रेम से मेरे सर को अपनी गोद में रखकर मुझसे कहती है, "जानू.. उठ गए!"

मैंने एक गहरी सांस भरी – रजनीगंधा की मादक खुशबू मेरे पूरे वजूद में समां गई। समझ नहीं आ रहा की सो जाऊं या जागूँ?

"आई लव यू!" मैंने आँख बंद किये किये कहा।

उत्तर में प्रिया खिलखिलाई! फिर रुक कर बोली, "अच्छा.. एक बात बताओ.. सुन्दर है न?"

“बहोत!” मैंने प्रिया की कंचुकी में उंगली डाल कर उसको नीचे की तरफ खींचा। उसका बायाँ स्तन कंचुकी के बंधन से मुक्त हो गया। मेरी हरकत पर प्रिया ने मेरे हाथ पर एक हलकी सी चपत लगाई।

“गंदे! मैं नहीं...”,

कहते हुए उसने एक तरफ अपनी उंगली से इशारा किया,

“... हमारी बेटी!”

प्रिया की इस बात पर मेरा सर एक झटके से दूसरी तरफ उस छोटी लड़की को देखने के लिए मुड़ता है। मेरी आँख एक झटके से खुलती है। मेरे चेहरे पर अश्विनी झुकी हुई है और बदहवासी में मेरे दोनों गालों को पीट रही है।

“जीजू.. उठिए.. प्लीज.. उठिए! ओह थैंक गॉड!”

मेरा सर अश्विनी की गोद में था – उसने जब मेरी आँख खुली हुई देखी तो उसके चेहरे पर कुछ राहत के भाव आये।

“जीजू... आप ठीक तो हैं न?”

“ह्ह्ह..हाँ.. मैं ठीक हूँ..” कहते हुए मैं उसकी गोद से उठ कर बैठ जाता हूँ। लेकिन सदमे का असर अभी भी था – मेरा सर फिर से चकरा गया, तो मैं सर थाम कर बैठ गया। अश्विनी मुझे पकड़ कर पुनः रोने लगी।

“सब ख़तम हो गया.. सब..” कहते हुए उसकी एक बार फिर से हिचकियाँ बंध गईं। मैं तो मानो काठ का हो गया! क्या कहूँ? अश्विनी कुछ देर रोने के बाद खुद ही कहने लगी,

“बाढ़ से बचने के लिए हम लोग होटल बाहर निकले। होटल का अहाता बुरी तरह से टूट गया था, और वहाँ से पानी बह रहा था – वहीँ से बाहर निकलते हुए माँ का पैर फिसल गया। पानी की धारा इतनि तेज़ थी की गिरने के बाद वो फिर कभी नहीं दिखाई दीं। पापा

उनको बचने के लिए अहाते में कुछ देर तक गए, और जब वापस आये तो लंगड़ा कर चल रहे थे – शायद उनके पैर में मोच आ गयी थी।

हमने देखा की आस पास के कुछ लोग पहाड़ की ढलान के ऊपर की तरफ जा रहे थे, इसलिए हम लोग भी उधर ही चलने लगे। जैसे-तैसे हम लोग ऊपर पहुंच गए, लेकिन उस चढ़ाई को करने में बहुत समय लगा – न दिन का पता चलता और न रात का! दीदी तो प्रेगनेंसी के कारण पहले ही कुछ कमज़ोर थीं, और भूखी प्यासी रहने के कारण उसकी हिम्मत जवाब दे गई। और वो वहीँ बेहोश होकर गिर गयी। पापा ने कहा की वो कुछ खाने के लिए लाते हैं, लेकिन पूरा दिन भर तलाशने के बाद भी उनको कुछ भी नहीं मिला।

हमारे साथ जो लोग ऊपर जा रहे थे उनमे से उस समय तक कोई नहीं दिख रहा था – शायद वो किसी और तरफ निकल गए, या फिर .. बह गए! मदद देने के लिए अब कोई नहीं था। खैर, पहाड़ पर घास भी उगी हुई थी, और उसको देख कर पापा ने सोचा की शायद उसको खाया जा सकता है। लेकिन उनको कुछ शक था की वो घास खाने लायक है भी, या नहीं! लेकिन, उनका शक सही था... वो वाली घास ज़हरीली थी। उसको खाने पर उनको अच्छा तो नहीं लगा तो उन्होंने उसको थूक दिया – लेकिन लगता है की कुछ ज़हर अन्दर चला गया। दिन भर उल्टियाँ करने के बाद उनकी भी मौत हो गयी।

दीदी अब और चल नहीं सकती थीं.. इसलिए मैंने उसको वहीँ लिटा कर मैं आस पास खाने को ढूँढने गयी। शायद किसी पक्षी ने कुछ मांस गिरा दिया था। वो मैंने और दीदी ने मिल कर खाया। रात में डर लगता - लगातार बारिश, ठंड और जंगली जानवरों का डर बना रहता था। मरने वालों के शवों को कुत्ते और अन्य जानवर खा रहे थे। अगले दिन दीदी की हालत काफी खराब हो गयी। भूख, कच्चा मांस, डिहाइड्रेशन, कमजोरी, संक्रमण... रात में जब वो सोई तो उसका शरीर कांप रहा था। बाहर ठंडक भी बहुत हो रही थी। मैं जब सवेरे उठी तो देखा की दीदी नहीं बची..! रोने के लिए अब तो आंसू भी नहीं बचे थे! दो दिन तक जैसे तैसे जंगली जानवरों से बचते हुए मैं रही... फिर कल मैंने हेलिकॉप्टर की आवाज़ सुनी तो उसको इशारा किया... न जाने कैसे उन्होंने मुझे देखा और वहाँ से निकला। अब यह नहीं समझ आता की मैं लकी हूँ, या एकदम मनहूस!“

जीवन भी अजब है। क्या क्या रंग दिखलाता है। सब कुछ... इसी जन्म में हो जाता है, सब यहीं मिल जाता है! तीन साल भी हम साथ नहीं रह पाए! तीन साल भी नहीं!

‘हे देव! इतनी क्रूरता! ऐसे लेना था, तो दिया ही क्यों? प्रिया ने ऐसा क्या किया था की उसकी इस तरह से मृत्यु हो? वह बेचारी सभी की हंसी ख़ुशी के लिए ही सब कुछ करती थी। किसी के प्रति उसके मन में कोई भी विद्वेष नहीं था। फिर क्यों? कहाँ है भगवान? कैसा भगवान?’

२३

मैं एकदम अकेला हूँ! एकदम अकेला.. मेरे हर तरफ एक भीड़ जैसी है.. घर में रहो, सड़क पर निकालो, या फिर ऑफिस जाओ... हर तरफ लोगों की कोई कमी नहीं है.. लेकिन, मैं नितांत अकेला हूँ! सोसाइटी में लोग जब मुझे देखते हैं तो मानो उनको लकवा हो जाता है.. बात करते करते चुप हो जाते हैं, मुझे देख रहे होते हैं तो किसी और तरफ देखने लगते हैं.. कन्नी काट लेते हैं.. जैसे की मुझे कोई रोग हो!

मुझे भी मुक्ति चाहिए! लेकिन आत्महत्या कर नहीं सकता। ऐसा लगता था मानो पानी की कोई तेज धारा आये और मुझे बहा ले जाये.

वसीयत में मैंने अपना सब सब कुछ अश्विनी के नाम लिख दिया है, और अपनी आखिरी इच्छा के लिए निर्देश दिया है की मृत्यु के बाद मुझे विद्युत् शव-दाह गृह में जलाया जाय। क्यों बेकार में लकड़ियाँ जलाना?

प्रिया की मृत्यु के बाद बीमा राशि और सरकारी सहायता से मिली हुई रकम मिला कर मैंने एक ट्रस्ट-फण्ड बनाया, जिसका एक ही उद्देश्य था – गरीब परिवार की चुनी हुई मेधावी क्षात्राओं को उनकी उच्च शिक्षा (कम से कम स्नातक स्तर तक) तक पूरी सहायता देना। मेरे ऑफिस, और प्रिया के कॉलेज के लोगों ने इस फण्ड में भरपूर योगदान दिया था, जिससे अब यह एक स्थाई क्षात्रवृत्ति बन चुका था। बाकी का सारा निबटारा होने वाली सारी राशि (अश्विनी के माता पिता की बीमा राशि और सरकारी सहायता), और उत्तराँचल की सारी ज़मीन इत्यादि मैंने कानूनी सहायता से अश्विनी के नाम लिखवा दी। कम से कम उसका जीवन तो अब स्थिर हो गया था।

मुझे लग रहा था की अब मेरे जीवन का मकसद पूरा हो गया है.. 'प्रिया! मुझे भी अपने पास बुला लो!' बस मैं यही एक बात रोज़ मन ही मन दोहराता। एक साल हो गया था मेरा परिवार नष्ट हुए! परिवार क्या, पूरा संसार नष्ट हुए! संसार की सबसे निराली लड़की को मुझसे आज से एक साल पहले काल ने छीन लिया। उसके साथ साथ छीन लिया उसने मेरी संतान को – मेरी बेटी! साथ ही चले गए मेरे माता और पिता भी! दोनों माता पिता!

'कैसा क्रूर मजाक!'

कहते हैं की जीवन किसी के लिए नहीं रुकता! चलता ही रहता है.. लेकिन किस ओर? मैं तो अब हर क्षण बस मृत्यु का ही इंतज़ार कर रहा हूँ। हाँ – खाता हूँ, पीता हूँ, सोता हूँ.. टीवी भी देख लेता हूँ.. क्या करूँ? जीना पड़ रहा है! लेकिन क्या जीना! मैं सब कुछ अकेले ही करता हूँ। हाँ – घर में अश्विनी भी रहती है। लेकिन, उससे तो बस नाममात्र की बातें होती हैं। कभी कभी दुःख होता है की इस सब में उसकी क्या गलती! मैं क्यों उसके साथ ऐसे बर्ताव करूँ? आखिर मेरे साथ साथ उसने भी तो अपना परिवार खोया है! लेकिन, फिर भी.. एक अजीब तरह की बेबसी होती है.. अजीब तरह की कसक.. अक अजीब तरह का आक्रोश!! कुल मिला कर, उससे अधिक बात नहीं हो पाती! अब तो लगता है की किसी से भी मैं ठीक से बात नहीं कर पाऊँगा!

उस दुर्घटना के कुछ ही दिन बाद की बात है... मैं कमरे की खिड़की से बाहर किसी अनंत शून्य में देख रहा था।

अश्विनी मेरे पीछे आ कर कहती है, "आप क्या देख रहे हो?"

मैंने कई दिनों से खुद को जब्त किया हुआ था.. उस एक वाक्य ने न जाने कैसे मेरे सब्र के बाँध को ढहा दिया। मैंने चिड़चिड़े ढंग से उसको जवाब दिया, "अपने काम से काम रखो! मुझसे चिपकने की कोई ज़रुरत नहीं!"

वो उसी पल मेरे कमरे से बाहर भाग गई। कुछ समय बाद मैंने उसके रोने सुबकने की आवाज़ सुनी, लेकिन मैंने उसको मनाने की कोई कोशिश नहीं करी। वो मेरी जिम्मेदारी नहीं है। अगर उसको भी इस संसार में गुजारा करना है, तो बिना किसी मोह के ही करना होगा। संसार बहुत क्रूर है! और भगवान उससे भी बड़ा क्रूर! किसी भी प्रकार का मोह न ही हो तो अच्छा! न कोई बंधन होगा, और न कोई बोझ! आराम से चले जाओ.. किसी को पता भी नहीं चलेगा की कब निकल लिए!

सबसे अच्छी बात यह की प्रिया के ही कॉलेज में अश्विनी का दाखिला हो गया था – वहाँ के प्रिंसिपल मुझे अक्सर उसकी उन्नति के बारे में बताते.. कहते की बहुत मेधावी है! मैंने उनको अपनी स्थिति के बारे में बताया, और उनको कहा की वो उसको उचित मार्गदर्शन देते रहें। क्योंकि मुझसे नहीं हो पायेगा।

अच्छे लोगो न भारी अभाव हो रहा है मेरे जीवन में.. अभी कोई सात महीने पहले श्री हेगड़े जी का देहांत हो गया – दिल का दौरा पड़ने से। उनकी श्रीमति को उनकी संताने अपने साथ ले गईं। लिहाजा, अब पड़ोस भी खाली लगता है। घर आने का मन नहीं होता। इसलिए मैं अक्सर अपने टूर बनाता रहता हूँ.. पिछले एक साल में चार महीने मैं बाहर रहा। वो मकान तो बस प्रिया के कारण घर था, अब तो बस एक बेरंग ढांचा सा लगता है! ऐसे यंत्रवत जीवन होने के कारण कार्यस्थल पर तरक्की बहुत तेजी से हो रही है! अब मैं खुद भी मेरे भूतपूर्व बॉस के स्तर पर हूँ। लेकिन उनका मित्रवत व्यवहार अभी भी बरकरार है।

वो अभी भी मुझसे संपर्क में हैं। दुर्घटना के बाद उन्होंने मुझसे प्रिया के बारे में पूछा। क्या बताता! बस फूट फूट कर रोने लगा। उनको मैंने सारा वाकया सुनाया। उसके बाद से उन्होंने कभी भी प्रिया का नाम भी मेरे सामने नहीं लिया, जिससे मुझे दुःख न हो! शुरू शुरू में मैंने दोस्तों के साथ मुलाकात की, और वो लोग भी मुझसे मिलने आये – जैसे की पारंपरिक सामाजिक प्रणाली होती है..। निकिता भी मिलने आई थी... उसने मुझसे दबे छुपे शब्दों में दोबारा शादी करने को भी कहा। मैंने उससे क्या कहा, मुझे कुछ याद नहीं आता अभी! हाँ, लेकिन कोई चार महीने पहले मैंने उसकी शादी का कार्ड देखा – कार्ड मिलने के एक महीना पहले उसकी शादी हो गयी थी। अच्छी बात थी.. मुझे अपने जीवन में किसी भी तरह का उलझाव नहीं चाहिए था।

अकेलेपन के साथ साथ, मैं पिछले छह महीनों में न जाने किस गढ्ढे के अन्दर चला जा रहा हूँ.. वहाँ पर सूर्य का प्रकाश संभवतः कभी नहीं गया है। काश! आत्महत्या करना पाप न होता!

मृत्यु :

बहुत भयावह होता है जब आप देखते हैं की एक निश्चित मृत्यु आपकी तरफ आ रही है, और आपके पास उससे बचने का कोई उपाय नहीं है। तीव्र गति पर अचानक ही लगाम लगाये जाने पर टायरों से उठने वाली चीख, ब्रेक्स के जलने पर उठने वाली कसैली गंध.. और इन सब का उस भयावह सच की तरफ इशारा!! मेरे अंतिम क्षण में मेरे दिमाग में बस एक ही बात आई,

‘आ ही गई मौत!’

वैसे, मृत्यु से मुझे कोई डर वर नहीं लगता.. हाँ, उससे मुझे एक तरह की खीझ सी होती है। लेकिन, प्रिया के बाद मैं जी ही कहाँ रहा था – बस जीवित था। अपने आखिरी क्षण में मुझे बस यही ख़याल आया... और चैन भी। टक्कर बेहद भीषण थी। उस झटके से मेरा हृदय रुक गया, और दिमाग में अनगिनत रुधिर वाहिकाएँ फट गई। चेतना जाते हुए आखिरी बात जो मुझे याद है वह यह है की कार की चेसी कुचलती जा रही थी, और कार की फ़र्श पर मेरा लहू! मेरे सर में एक असहनीय दर्द हुआ, और चेतना लुप्त हो गई।

अगला ख़याल जो मुझे याद है वह यह है की मैं मर गया हूँ। सचमुच मृत! ...लेकिन, फिर दिमाग पर जोर लगाया तो समझ आया की अगर मैं मर गया हूँ, तो फिर सोच कैसे सकता हूँ? सोच तो दिमाग से होती है, और दिमाग जीवित शरीर में! मतलब अभी भी जीवित हूँ!

ग्रेट!

“अथर्व... अथर्ववववव..!” मैंने आवाज तो सुनी, लेकिन पहचान नहीं पाया।

कैसी आवाज़ है? अच्छी आवाज है, लेकिन जानता नहीं..। मेरे सिर में भयंकर दर्द हो रहा था। सिर में ही क्या, पूरे शरीर में! तो क्या मैं उस अतिभारित ट्रक से हुई दुर्घटना से बच गया?

“अथर्व.. बेबी.. मरना नहीं। प्लीज़..? जागते रहो। तुम मुझे सुन रहे हो? मेरे साथ रहो। चिंता मत करो। मैं हूँ यहाँ तुम्हारे साथ। मुझे सुन रहे हो? मुझसे बात करो.. प्लीज़..?”

अरे भई.. कौन हो आप? कौन है मेरे साथ? मुझे तो कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। मेरे सर में जैसे जैसे वो भयंकर दर्द बढ़ रहा था, वैसे वैसे मुझे यह समझ नहीं आ रहा था की ये अथर्व कौन है, और ये औरत (हाँ.. औरत की ही आवाज़ थी) कौन है! मैंने उठने की कोशिश करी.. एक अजीब सा अनुभव हुआ – जैसे चक्कर, उलटी, और एक और भयंकर दर्द की लहर.. ये सब एक साथ! मैं फिर से अचेत हो गया।

रह रह कर प्रिया की बातें याद आतीं.. एक बार मैंने सैंडविच बनाया। और खाते हुए उसको पूछा, “तुम्हारा बनाया हुआ इतना बढ़िया लगता है! ये कैसे हो सकता है!! एक जैसी चीज़ें ही तो डालते हैं – जो तुमने यूज़ करी, वही मैंने भी.. फिर ऐसा क्यों?”

प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा, "जानू.. मैं सैंडविच में प्यार भी डालती हूँ.."

प्रिया बिलकुल ऐसी ही थी। हर चीज़ में प्यार डालती थी। उसका किया हर काम बेहतर होता था! .. यह प्यार नहीं तो और क्या है...?

यू-ट्यूब पर मैं "आगे भी जाने न तू.. पीछे भी जाने न तू.." वाला गाना सुन रहा था। प्रिया को यह गाना बहुत पसंद था। मैं भी साथ में गाने लगा.. प्रिया की याद हो आई.. गला भर गया। और आँखों से आंसू आ गए। मैं रोने लगा – इस तरह मैं कभी नहीं रोया। कम से कम एक घंटा रोने के बाद सारी ऊर्जा क्षीण हो गयी। कब सोया कुछ भी याद नहीं!

'ब्लिप... ब्लिप... ब्लिप...'

'ये क्या चिढ़ाने वाला शोर हो रहा है! और.. प्रिया कहाँ है? अभी तो यहीं थी...'

मैंने आँख खोलने की कोशिश करी। लेकिन बहुत ही असह्य दर्द हुआ। मृत्यु? अह्ह्ह्हहाँ! मतलब मरा तो नहीं हूँ। जैसे जैसे चेतना लौट रही थी, और मैं जाग रहा था, तो मुझे समझ आने लगा की मैं शायद अचेत था।

अचानक ही मेरा संसार निशब्दता से गुंजायमान की तरफ चल दिया। मुझे सुनाई भी दे रहा था, और सुंघाई भी दे रहा था.. लेकिन, दिखाई क्यों नहीं दे रहा है?

मैंने आँख खोलने की कोशिश करी। इस कोशिश में मेरी हर चीज़ दर्द करने लगी – सर, आँख! मेरी कराह निकल गई।

"इनको होश आ गया.." कोई चिल्लाया।

मेरी आँखें उनको खोलने में मेरा साथ ही नहीं दे रही थीं। जैसे तैसे जब वो खुलीं, तो रोशनी की एक तीखी लकीर प्रविष्ट हो गयी। मैंने तुरंत ही आँखें बंद कर लीं.. यह सोच कर, की अभी तो नहीं खोलूँगा। सोचने की कोशिश करने पर दिमाग में सब गड्ड-मड्ड हो गया.. कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। मैंने महसूस किया की आँखें बंद होने के बावजूद मुझे मेरे इर्द गिर्द का सारा संसार धुंधला होता महसूस हो रहा था। और मैं एक बार फिर से सस्ते टंगस्टन के बल्ब के समान बेहोश हो गया।

जब मैं जागा तो काफी रौशनी हो रही थी। आँख बंद होने के बावजूद मैं रौशनी महसूस कर सकता था। मैंने काफी प्रयत्न करने के बाद अपनी आँखें खोलीं, और अपने बिना सर हिलाए, सिर्फ आँखें घुमा कर जायजा लिया। मुझे समझ आया की मैं एक कमरे में हूँ... संभवतः.. नहीं संभवतः नहीं.. निश्चित तौर पर एक अस्पताल के कमरे में। कमरे में सूर्य की रौशनी से ही उजाला हो रहा था। जीवित होने, और उसके एहसास से मुझे अच्छा लगा! कुछ क्षण के लिए मुझे अपने शरीर की विभिन्न हिस्सों से उठने वाले दर्द पर से ध्यान हट गया।

फिर अचानक ही सब याद आ गया। मेरे शरीर ने झटके खाए होंगे..

"श्श्शशश्श्श्ह"

'हँ..? कौन?' मैंने महसूस किया की किसी ने मेरा हाथ थाम रखा है। मैंने उसी तरफ अपना सर घुमाया और कहा,

"हाय!" मेरे इतना कहने मात्र से ही वो बहुत खुश हो गई। कौन है ये? धुंधला सा दिख रहा है.. लेकिन लगता है की जान पहचान की है.. पता नहीं..! थोड़ा अपनी आँखें फोकस करीं तो उस स्त्री का चेहरा दिखा.. स्त्री नहीं.. लड़की। मेरे ज़हन में जो पहली बात आई, वो यह थी की यह लड़की बहुत थकी हुई लग रही थी.. और.. बहुत.. सुन्दर भी! सुन्दर... प्रिया जैसी!

'प्रिया जैसी?' ये ख़याल ज़हन में कैसे आया? जो भी हो, ख़याल तो सच था। यह लड़की वाकई सुन्दर थी.. सौम्य सुन्दर! आकर्षक! वो मुस्कुराई,

"ओह! हेल्लो!" मानों मेरी आवाज़ सुन कर उसकी जान में जान आई हो.. "आपको नहीं मालूम आपको ठीक होता देख कर मैं कितनी खुश हूँ! जब मुझे खबर मिली आपके एक्सीडेंट की तो मेरी तो जान ही निकल गयी थी.. सब को तो खो चुकी हूँ.. और आपको भी नहीं खोना चाहती.. भगवान का लाख लाख शुक्र है!"

'आपको भी? मतलब? मतलब.. ये लड़की मुझे जानती है? लेकिन मुझे क्यों नहीं समझ आ रही है? क्यों नहीं याद आ रही है? मेरा नाम क्या है?'

"मैं... कहाँ हूँ? (इसका उत्तर तो खैर मुझे मालूम है) मेरा.. एक्सीडेंट.. कितना बुरा है? (हाँ.. यह ठीक है..) घर.. कब तक?"

"सब बताऊंगी.. लेकिन पहले डॉक्टर को बुला कर लाती हूँ..." कह कर वो लड़की लगभग भागते हुए कमरे से बाहर चली गयी।

जिस गति से वो लड़की बाहर गई थी, उसी गति से भागते हुए डॉक्टर ने भी कमरे में प्रवेश किया। आते ही उसने मेरी कलाई थाम ली (नब्ज़ लेने के लिए), और मेरे चार्ट का मुआयना किया।

"आपको कैसा लग रहा है?" उसने पूछा।

'मुझे कैसा लग रहा है? हा! कैसा लग रहा है!! मेरी पिछली याद मरने की है साहब! मरने की.. सुना? मृत्यु! निर्जीव! शव! यह है मेरी पिछली याद.. और आप पूछ रहे हो की कैसा लग रहा है! मर के वापस लौट आया हूँ.. कितनी शिद्दत से मरने की इच्छा थी.. लेकिन अभी लग रहा है की अच्छा हुआ की वापस लौट आया! लेकिन अभी कुझे डर भी लग रहा था.. एक बार मरना कैंसिल हो जाय, तो जीने की चाह बहुत बढ़ जाती है!'

न जाने कैसे कैसे ख़याल आ रहे थे दिमाग में! मुझे खुद को नियंत्रण में रखना चाहिए.. यह सब कोई सुनना नहीं चाहता! कम से कम इतनी तो कोशिश करनी ही चाहिए की सामान्य प्रश्नों का सामान्य उत्तर तो दिया ही जाय! वैसे लगता तो है की कुछ कुछ याददाश्त चली गयी है.. खैर...!

प्रत्यक्ष में मैंने कहा, "सब दुःख रहा है! सर में दर्द है.. एक्चुअली, पूरे शरीर में ही दर्द है.. लेकिन फिर भी चलने फिरने का मन करता है। लेकिन सब कुछ स्टिफ भी लग रहा है.. ऐसे लग रहा है की सब कुछ टूट जाएगा!"

फिर कुछ रुक कर, "कुछ खाने को है? बहुत भूख लग रही है.. और पानी भी चाहिए.. मैं तो कम से कम एक लीटर पानी पी सकता हूँ अभी!"

मेरी बात पर डॉक्टर हंसने लगा, और वो लड़की (कौन है भई?) राहत की सांस भरती है, "... अब मुझे पक्का यकीन है की आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे!" उसकी हंसी में

खिलखिलाहट और संतोष का मिला-जुला भाव आ रहा था.. और यह भाव बेहद मनमोहक था।

डॉक्टर ने मुझसे एक दो सवाल पूछे जैसे की मैं किस शहर में हूँ, क्या समय है.. बेहद सामान्य प्रश्न यह जानने के लिए की मेरा दिमाग तो ठीक ठाक चल रहा है.. दिन के सवाल पर मैं उत्तर नहीं दे सका.. उसने पूछा की अंतिम कौन सा दिन याद है.. तो मैंने दुर्घटना वाला दिन बता दिया। उसने संतोषप्रद तरीके से सर हिलाया। फिर काफी देर तक वो मुझे बताता रहा की मैं कितना भाग्यशाली हूँ, और यह कितना अविश्वसनीय है की ऐसी दुर्घटना हो जाने पर, जब मुझे ऐसी भयंकर चोटें आने पर भी मैं बहुत जल्दी रिकवर कर रहा हूँ।

“सच कहता हूँ..” उसने कहा, “आप ऑपरेशन टेबल पर.. यू वोंट बिलीव मी, .. मर गए थे!”

‘क्या सच में! इंटरेस्टिंग!’

उसने कहना जारी रखा, “लेकिन एक मिनट बाद जब आपकी धड़कन वापस चलने लगी तो वो तो मुझे बिलकुल करिश्मा ही लगा! मैंने और मेरे साथियों ने ऐसा कमाल होते कभी नहीं देखा!”

मैं मुस्कुराया।

“नहीं.. आप मजाक मत समझना इसको! यह वाकई अनयूसुअल है! आपके सर पर सबसे ज्यादा चोटें आईं थीं.. हमने उम्मीद छोड़ दी। फिर जब आपके दिल ने धड़कना बंद कर दिया तो हम समझ गए की आब क्या कर सकते हैं.. लेकिन फिर.. करिश्मा नहीं तो और क्या है! लेकिन आपकी पत्नी ने आपका साथ नहीं छोड़ा..”

‘मेरी पत्नी? ... प्रिया! कहाँ हो तुम?’

“.. यहाँ नर्सें कह रही हैं की वो आपको वापस ले आईं.. जैसे सावित्री ले आईं थीं सत्यवान को! हो सकता हो की यह सच भी हो!”

‘सावित्री? प्रिया!!’

“आप भले मेरी बात को मज़ाक मानिए, लेकिन मैंने यह सब कहना अपना फ़र्ज़ समझा.. आगे इनका खूब ख़याल रखिएगा.. यू शुडन्ट भी अलाइव!”

“डॉक्टर.. एक मिनट..” ये लड़की कह रही थी, “मैं इनकी पत्नी नहीं.. साली हूँ....” उसने धीरे से कहा।

‘साली? मेरी साली?’ मेरे दिमाग में घूर्णन शुरू हो गया, ‘मतलब... अश...वी..नि?’

“ओह! आई ऍम सॉरी! मुझे लगा की आप इनकी बीवी हैं.. ऐसी चिंता, ऐसी सेवा तो आज कल बीवियां भी नहीं करतीं।”

“इट इस ओके!” अश्विनी ने धीरे से कहा।

“अश्विनी?” मैंने कमज़ोर आवाज़ में उसको पुकारा। दिल के सारे ज़ख्म हरे हो गए। मेरी प्यारी बीवी नहीं है.. वो तो कब की मुझे छोड़ कर चल दी है.. आँखों से आंसू ढलक गए।

“जी?” उसने मेरा हाथ पकड़ कर पूछा।

“थैंक यू!”

अश्विनी मेरे हाथ को अपने दोनों हाथों में थाम कर अपने आंसुओं से भिगोने लगी।

२४

अश्विनी की नजर में:

मेरी आँखों के सामने एक एक कर मेरी माँ, मेरे पिता, और फिर मेरी प्यारी बहन – जिसका दर्जा बहन से भी ऊपर था – और उसकी संतान कष्टप्रद मृत्यु को प्राप्त हो गए। बहुत से ज्ञानियों को अक्सर यह कहते सुना है की यदि किसी के साथ कुछ बुरा होता है तो उसके द्वारा किये गए पापों के कारण होता है। मैंने बहुत बार सोचा की इन लोगों ने किसका और क्या बुरा किया था, जो इनको इस प्रकार की मृत्यु मिली! माँ ने अपनी तरफ से पूजा पाठ, धार्मिक और सामाजिक कार्यों में कभी भी किसी भी प्रकार की कोर कसर नहीं रखी। पिता जी ने भी सदा ही अपनी मेहनत और इमानदारी का ही खाया, न कभी किसी के साथ बुरा किया और न कभी किसी का बुरा सोचा। और तो और, जितना उनका बस चला औरों की मदद ही की। और माँ उनके सभी कामों में बराबर की संगिनी बन कर चलीं। तो उनको इस प्रकार मृत्यु? यह किस तरह ठीक है? और दीदी! उसने तो अभी अपने जीवन में देखा ही क्या था? उसकी तो हंसती खेलती ज़िन्दगी तो बस शुरू ही हुई थी। उसके जैसी दयावान लड़की मैंने कभी नहीं देखी.. लोग क्या, वो तो पंछियों और जानवरों के लिए भी अच्छा और भला सोचती थी। और उस अजन्मे बच्चे का क्या, जो अपनी माँ के साथ ही तड़पता चल बसा?

और सोचती हूँ, तो लगता है की दरअसल यह उन तीनों को सजा नहीं, हम दोनों को सजा थी। मेरे पापों के बदले मेरे हृदय में त्रिशूल भोंक दिया गया और अथर्व के हृदय में एक दो-धारी तलवार! हाँ! यही तर्क उचित है.. हमने ज़रूर कुछ ऐसा किया है जिसके कारण भगवान ने हमसे हमारे सबसे प्रिय लोग छीन लिए। और दंड स्वरुप हम दोनों को उनका चिर-वियोग सहन करना लिख दिया। खैर, इस दुर्घटना को चाहे किसी भी दृष्टि से देखा जाय, सच तो यह है की मेरे हृदय में एक बड़ा सा हिस्सा अब खाली हो गया है, और लगता है की जैसे मेरे सीने पर एक भारी सिल रख दिया गया हो। यह भी सच है की उम्र भर, इन तीनों के वियोग की पीड़ा नहीं जाने वाली!

कभी कभी मन में एक ग्रंथि सी बनती लगती है.. सोचती हूँ की हो न हो, अथर्व यह यह बात तो ज़रूर सोचते होंगे की अगर उनकी प्रिया की जगह अगर मैं होती तो? अगर मैं मर जाती, तो आज उनके पास कम से कम उनका परिवार तो होता। मुझे पक्का यकीन है की जब भी वो मुझे देखते होंगे, तो उनको यह विचार तो ज़रूर आता होगा। उस दिन जिस तरह से वो उस मामूली बात से मुझ पर गुस्सा हुए थे, उससे मुझे सौ प्रतिशत यकीन हो

गया है की वो मुझसे नफरत करते हैं। लेकिन उनका दिल अच्छा है, इसलिए मुझे बेघर होने, और दर-दर की ठोंकरें खाने से बचाने के लिए अपने घर में पनाह दी। और पनाह ही क्या, मेरी पढाई, लिखाई, खाने, पीने, रहने और हर खर्चे का इंतज़ाम भी किया। बस, कभी मुझसे खुल कर बात नहीं कर सके।

नई जगह, नया कॉलेज.. इन सबके कारण इस झंझावात को सहने की हिम्मत मिली। सहारा – मेरा मतलब, भावनात्मक सहारे से है – तो कोई था नहीं। तो कभी अनवरत अश्रु-धाराओं, तो कभी प्रिंसिपल महोदय के परामर्श और उत्साहवर्धन, तो कभी बस अथर्व के आभासी सान्निध्य को ही अपना अवलंब (सहारा) बना लिया। पड़ोसी श्रीमति हेगड़े जी ने भी कोशिश करी, लेकिन उनकी बात ही समझ नहीं आती.. और अब तो पड़ोस भी खाली है!

वैसे भी मुझे पड़ोसियों से किसी प्रकार के सहारे, और मदद की कोई उम्मीद नहीं है। शुरू शुरू में सभी ने (ख़ास तौर पर पड़ोस की महिलाओं ने) हमारे दुःख में मगरमच्छी आंसू बहाए, लेकिन तीन चार महीने के बाद ही मुझे ऐसे देखने लगे जैसे किसी तरह से मैं इस दुर्घटना के लिए उत्तरदाई हूँ! जैसे मैंने अथर्व का घर उजाड़ा हो! जैसे, प्रिया के जाने के बाद उनमे से किसी का चांस था, लेकिन मैं उस चांस का सूपड़ा साफ़ कर रही हूँ अथर्व पर डोरे डाल कर! यह सब सोच सोच कर दिल और गला भर आता है.. लेकिन यह सब बातें किससे कहूँ? सहेलियों को कितनी बातें बताई जा सकती हैं? हम दो जने एक छत के नीचे रहते हैं, लेकिन मानो बस दो अजनबी हों!

धीरे धीरे अपने गम का इलाज मैं स्वयं ही होती गई। बात तो सच है, की अगर मन में दृढ़ता न बढ़े, तो जीवन मुश्किल हो जाए.. इसलिए मैंने इस अनुभव को जीवन की लम्बी पाठशाला का एक और पाठ समझ कर खुद में समाविष्ट कर लिया। समय के साथ धीरे धीरे मेरा दुःख कम होता गया, और मैं भविष्य के लिए आशान्वित होने लगी। उधर अथर्व अभी तक अपनी इस हानि से उबर नहीं सके हैं.. मैंने अक्सर उनको रात में रोते हुए सुना है। लेकिन उनके कमरे में जाने की मेरी हिम्मत नहीं होती..! कैसे इस शानदार, आकर्षक पुरुष कान्तिविहीन हो जाता है, उसका उदाहरण था अथर्व का क्षय! उनका चेहरा दुःख से खुरदुरा हो गया था; बाल पकने लग गए थे; नींद, आराम और मनःशांति की कमी के कारण वो महज एक वर्ष में ही बूढ़े से लगने लग गए थे। वैसे भी अथर्व ने अपने गम से निपटने का रास्ता ढूंढ लिया है। वो काम के सिलसिले में अक्सर बाहर रहते हैं। हर व्यक्ति का अपने अपने दुखों से निपटने का अपना अपना तरीका है.. और मुझे नहीं लगता की वो अपनी से

बहुत कम उम्र की लड़की से इस विषय में कोई चर्चा करना चाहते हैं। तो अगर, वो ठीक हैं, तो मैं कुछ भी नहीं कहूँगी। मेरे लिए बस इतना ही काफी है!

इसी बीच मुझे एक तरह का आत्म उद्भेद हुआ।

पिछले कुछ महीनों के तनाव, अवसाद और व्यस्त ता के कारण शरीर में बहुत थकावट सी हो गयी थी। उस दिन जब मैं कॉलेज से बाहर निकली तो आसमान में काले घने बादल छाए हुए थे। काफी अँधेरा हो गया था। अथर्व बैंगलोर से बाहर गए हुए थे, और मैं घर में बिलकुल अकेली थी। बारिश का अंदेशा तो था ही.. मंद मंद ठंडी हवा बह रही थी। सप्ताहांत होने के कारण वैसे भी कुछ राहत सी लग रही थी। बिल्डिंग पहुँच कर मैं लिफ्ट के बजाय सीढ़ी चढ़ कर घर पहुंची। अथर्व तो आज आने ही वाले नहीं हैं... दो दिन खुद से! हम्म्म... दीदी होती तो हम दोनों शौपिंग करने जाते। यह सोच कर कुछ दु:ख तो हुआ, लेकिन मैंने जल्दी ही उस पर काबू कर लिया।

घर पर अकेले मन नहीं हुआ, इसलिए सोचा की अपनी किसी सहेली को बुला लेती हूँ अगले दो दिनों के लिए! कम से कम यह घर मुझे काट खाने को नहीं दौड़ेगा! मैंने इसलिए अथर्व को फ़ोन लगाया, जिससे उनकी अनुमति मिल सके। उन्होंने संछिप्त सा उत्तर दिया की मेरा जैसा मन हो, मैं वैसा कर सकती हूँ.. यह घर मेरा भी है, और मुझे किसी काम के लिए उनकी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने यह भी कहा की तीन दिन बाद आयेंगे। अच्छी बात है... मैंने अगला फ़ोन अपनी सबसे करीबी सहेली आरतीश्री (आरती) को लगाया, और घर आने को कहा। वो वैसे तो चार पांच बार यहाँ आ चुकी थी, लेकिन रहने के लिए कभी नहीं।

आरती अपने परिवार के साथ बैंगलोर में रहती थी। वो लोग कन्नडिगा ब्राह्मण थे, और हमारे घर से कोई पन्द्रह किलोमीटर दूर रहते थे। मैंने उसकी माँ से भी बात करी, तो उन्होंने मुझे ही घर रहने को बुला लिया। लेकिन फिर मेरे ही अनुनय विनय से उन्होंने उसको अनुमति दे दी। उनके परिवार वाले मुझे पसंद करते थे, और अथर्व से भी मिले थे.. इसलिए परेशानी वाली बात नहीं थी। आरती ने मुझसे कहा की वो करीब एक-डेढ़ घंटे में आ जाएगी। अच्छा है.. इतनी देर में मैं नहा लेती हूँ!

मैं घर पर छोटे गुसलखाने का प्रयोग करती हूँ.. लेकिन उस दिन मेरा मन था की मैं मास्टर बाथरूम में नहाऊँ। वहाँ पर एक बाथटब था, जिसको दुर्घटना के बाद कभी भी प्रयोग में नहीं लाया गया था (घर की कामवाली ने बताया.. पहले काफी गन्दा हो जाता था, लेकिन

आज कल साफ़ ही रहता है, और महीने में बस एक-आध बार सफाई से ही काम चल जाता है)। आज मेरा उसी में घुस कर नहाने का मन था। मैंने उसमें पानी भरने के लिए नल खोल दिया, और अपनी पसंद का खुशबूदार साबुन डाल दिया। और अपने कमरे में निर्वस्त्र होने चली गयी।

आज मैं वो करने वाली थी जो मैंने कभी नहीं किया था। ऐसा नहीं है की अथर्व मुझ पर मास्टर बाथरूम प्रयोग करने से नाराज़ होते.. बस, मैंने ही कभी उधर नहाने का नहीं सोचा। दरअसल, मैं घर में उस तरफ जाती ही नहीं – मेरे हिसाब से आप सोचें, तो वो एक तरह का पुण्यस्थान था, जहाँ मेरी दीदी की यादें बसी हुई थीं.. और अथर्व की प्यारी पत्नी की! मैं वहाँ जा कर किसी तरह की सेंधमारी नहीं करना चाहती थी। लेकिन, आज यूँ अकेलेपन के कारण मन हुआ की क्यूँ न वहाँ नहाया जाए.. और यही सोच सोच कर मुझे रोमांच हो रहा था। मैं कुछ गुनगुना रही थी.. मैंने अपनी ब्रा उतारी.. आह्ह! स्तनों के उस बंधन से मुक्त होते ही आनंद आ गया। मैंने अपने शरीर का निरिक्षण किया – ब्रा की कसाव के कारण मेरे स्तनों पर लाल निशान पड़ गए थे। उन निशानों, उन रेखाओं को हाथ से मसलने पर काफी आराम मिला। कितना मज़ा आएगा, अगर मैं दो दिन बिना कपड़ों के रहूँ? इस ख़याल से मेरा रोमांच और बढ़ गया!!

मेरे बचपन में घर पर सहवास के बारे में किसी तरह की बातें ही नहीं होती थीं। बड़े बुजुर्गों में सहवास को लेकर इतनी संकुचता थी की इसको सिर्फ संतानोत्पत्ति हेतु एक आवश्यक कार्य ही समझा जाता रहा। मुझे जो भी कुछ मालूम हुआ, वो दीदी और अथर्व के कारण! उनको सहवास का आनंद उठाते देख कर समझ आया की सहवास "मजे" के लिए भी किया जाता है, और प्रेम प्रदर्शन के लिए भी.. और अगर कायदे से किया जाय तो सिर्फ शारीरिक ही नहीं, मानसिक और आत्मिक सतह पर जुड़ने के लिए भी। यही सब सोचते हुए मैं मास्टर बाथरूम में लगे लगभग आदमकद दर्पण के सामने आ कर निर्वस्त्र खड़ी हो गई। और जीवन में पहली बार खुद को पूर्ण-नग्न देखा। बीस की उम्र! और वैसा ही तरुण ताज़ा शरीर! मैंने अपने स्तनों को धीरे से दबाया – एकदम पुष्ट! कहना तो नहीं चाहिए, लेकिन दीदी के स्तनों से भी निखरे और बड़े! अपने सुन्दर नग्न शरीर को आईने में देख कर मैं वाकई खुद ही उत्तेजित सी हो गई।

दीदी की याद आते ही उनके स्तनों का चूषण करना याद आ गया, और साथ ही यह विचार भी की किसी दिन मेरे स्तनों को भी कोई चूसेगा, और उनमें दूध आएगा! प्रकृति की कैसी अद्भुद रचना! सच ही कहते हैं की नारी शरीर एक तिलिस्म होता है। मैंने स्तनों को कुछ देर दबाया, फिर स्तनाग्रों को हल्का सा मसला! प्रतिक्रिया स्वरुप वो तुरंत ही खड़े हो गए। मैं

मुस्कुराई। मेरा ध्यान अब अपने सपाट पेट से होते हुए योनि पर चला गया। वहाँ उँगलियों से टटोलने पर गीलापन महसूस हुआ! ह्म्म्म.. योनि वो पहले ही परिपक्व हो चली थी – उत्तेजना के कारण उसके दोनों पटल फूले हुए थे (कहीं पढ़ा था की लड़के इनकी तुलना पाव-रोटी से करते हैं)। आज से पहले भी मन बहुत बार हो चुका है की अपनी योनि में उंगली डाल कर खुद को संतुष्ट कर लिया जाय, लेकिन बालपन में सिखाई गई वर्जनाएँ ऐसे ही नहीं चली जातीं।

टब में समुचित पानी भर गया था। मैं जा कर उस सुगन्धित झाग-वाले पानी में लेट गई, और इस नए अनुभव का आनंद लेने लगी। यहाँ पर भी दीदी और अथर्व साथ में नहाते रहे होंगे.. मेरे दिमाग में उन दोनों की काम-रत तस्वीर खिंच गई। मेरा हाथ पुनः मेरी योनि पर जा पंहुचा। ऐसा कुछ करने का मैंने कभी सोचा ही नहीं.. लेकिन आज सब कुछ नया है! अपनी आँखें बंद कर मैंने अनायास ही अपने भगनासे को सहलाना प्रारंभ कर दिया। पानी के अन्दर ऐसा करना एकदम अनोखा अनुभव साबित हो रहा था... अनोखा, और कामुक और आनंददायक! कामाग्नि से मेरा शरीर दहकने लग गया - ठीक वैसे ही जैसे की १०२ डिग्री बुखार आने पर तपने लगता है।

'यह कैसी तपन!'

कॉलेज में मेरी सहेलियाँ अक्सर हस्तमैथुन की बातें करतीं। ऐसा नहीं है की मुझे काम/यौन सम्बन्धी ज्ञान नहीं था – भरपूर था। अथर्व और दीदी की काम-क्रीड़ा मैंने देखी थी और मुझे अच्छी तरह से मालूम था की लड़की और लड़के के अंगों का प्रयोग किस प्रकार और किस हेतु होता है। कॉलेज में मेरे सिर्फ लड़कियाँ ही नहीं, बल्कि लड़के भी मित्र थे और उनमें से कई मुझसे प्रणय सम्बन्ध बनाना भी चाहते थे.. लेकिन मेरी दृष्टि में वो सारे सिर्फ अनाड़ी ही नहीं, मूढ़ भी थे। लेकिन अथर्व... हाँ, उनकी बात कुछ और ही थी। धीर और शांत स्वभाव के अथर्व, और उसमें निहित तीव्रता! उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व और उनकी गहन आँखें.. जैसे सामने वाले की आत्मा को ही देख रही हों! और हाँ! वो कसरती देह.. जैसे व्याघ्र! कुछ बात तो थी इस आदमी में!

शारीरिक प्रौढ़ता मैंने दीदी की शादी के आस-पास ही प्राप्त कर ली थी। लेकिन उसके साथ साथ मुझे हार्मोनों का प्रभाव भी झेलना पड़ा। सपने आते। और सपनों में लड़के आते.. उनका कोई चेहरा नहीं होता था। बिना चेहरे वाले नर! उन सपनों में वो मुझे छूते, छेड़ते.. और मेरे साथ अजीब अजीब सी हरकतें करते। आँखें खुली होने पर भी सपने आते - मैं खुद को जवान होते देखने की चाह में अक्सर आईने में अपने आप को निहारती रहती,

अपने नवांकुर वक्षों को देखकर बड़ा अच्छा लगता। माँ देखती, तो डांटती, और किसी अन्य कार्य में लगा देती। खैर, मुझे सबसे अधिक रोमांचित मेरे योनि क्षेत्र में उग आये रोयेंदार बालों ने किया था। रात के अँधेरे में अक्सर उन्हें छूने का आनन्द लेती, और उनके साथ साथ योनि भी सहलाने में आनन्द का अहसास होता। लेकिन डर लगता की कहीं चोट न लग जाय (घर में ऐसे ही तो सिखाते हैं)। नहाते समय जब अपने स्तनों को सहलाती तो ऐसा महसूस होता की छूने पर वो आकार में बढ़ते जा रहे हैं।

बचपन में मैंने देखा था की एक घोड़ा, घोड़ों के झुण्ड में से एक के पीछे पीछे दौड़ रहा था.. दौड़ रहा था, या उसको दौड़ा रहा था। स्पष्टतः वह एक नर था – क्योंकि दौड़ते हुए उसके लिंग का आकार विकराल से विकरालतर होता जा रहा था। भयावह दृश्य था। आगे वाला घोड़ा (दरअसल घोड़ी) अचानक रुक गया, और नर उसके पीछे से उस पर सवार हो गया। उस समय मुझे इस विषय में कोई समझ नहीं थी, लेकिन फिर भी ऐसा लगा की यह दृश्य नहीं देखना चाहिए। मैंने चुपके से अपने चारों तरफ देखा की कोई है तो नहीं! उस नर का विकराल लिंग, मादा के भीतर पूरी गहराई तक घुसा हुआ था, और वह शायद चार पांच धक्के लगाने के साथ ही कांपने लगा, और नथुने की राह से घुरघुराते हुए मादा पर से उतर गया। उसके लम्बे लिंग के आगे से, और मादा के पीछे से सफ़ेद रंग का गाढ़ा द्रव ज़मीन पर गिरने लगा।

और फिर वो वाला दिन.. बुग्याल पर! मुझे अच्छे से दीदी की कराह और सिसकियाँ आज भी याद हैं। याद है की कैसे अथर्व उसकी जाँघों को फैलाए उसकी योनि को चूम, चाट और सहला रहे थे। दीदी भी उनका लिंग अपने मुंह में ले कर कैसे देर तक बदला चुका रही थी। और फिर अथर्व ने भी उसी घोड़े के समान दीदी की चढ़ाई करनी शुरू कर दी थी! कितनी समान, लेकिन कितनी अलग थी दोनों की सहवास क्रिया! वो घोड़ा तो लगभग तुरंत ही ढेर हो गया था, लेकिन अथर्व तो मानो रुकने का नाम ही नहीं जानते! ओह! दीदी वाकई तृप्त रहती होगी।

'हे भगवान्!' उन्ही यादों से मंत्रमुग्ध होकर मेरे बिना सोचे हुए ही योनि को छेड़ने की मेरी गति बढ़ती जा रही थी। हाथ की उंगलियाँ अनियंत्रित होती जा रही थीं, और मेरे गले से दबी घुटी सिस्कारियां निकल रही थी। यह कहने की आवश्यकता नहीं की मेरा पूरा शरीर उत्तेजना के मारे कांपने लग गया था।

हाँ... कॉलेज में मेरी सहेलियाँ अक्सर हस्तमैथुन की बातें करतीं। यह बातें भी होती की यह क्रिया कितनी लाभदायक है! आनंद तो आता ही है, साथ ही साथ अनवरत यौनेच्छा, जो

हम युवाओं में होती रहती है, उससे निजात भी मिल जाती है – बिना किसी पुरुष की आवश्यकता के! मतलब बिलकुल सुरक्षित, और संतोषजनक! शीघ्र ही मेरा कामोन्माद समाप्त हो गया। अनुभव में वह कुछ कुछ वैसा था जब दीदी और अथर्व ने मेरे स्तनों से खिलवाड़ किया था.. लेकिन इसकी तीव्रता कहीं अधिक थी।

"ऐसा आनंद तो पहले कभी नहीं आया", मैंने सोचा और संतोषप्रद गहरी सांस भरी।

अब नहा भी लिया जाय!

आरती मेरी एक बहुत ही करीबी, और प्यारी सहेली है। जाहिर सी बात है की उसकी उम्र भी मेरे ही बराबर थी। वैसे उम्र ही क्या, हम दोनों का डील डौल भी लगभग एक जैसा ही था। लेकिन जहाँ मैं एक पहाड़ी लड़की हूँ, आरती एक दक्षिण भारतीय सुंदरी है। एक बात तो है – दक्षिण भारत की लड़कियों की गढ़न बहुत अच्छी होती है। आरती भी ऐसी ही है... सांवली सलोनी.. सामान्य कद की। लेकिन उसके स्तन ३२ बी साइज़ के हैं, और उस पर खूब फबते हैं। बड़ी बड़ी आँखें और उन्नत नितम्ब! सचमुच, बहुत ही प्यारी लड़की है वो। वो कॉलेज में सबसे पहले मेरी दोस्त बनी, और धीरे धीरे हम दोनों इतने करीब आ गए हैं की हमारी कोई भी बात एक दूसरे से नहीं छुपी है।

एक और बात है, बैंगलोर जैसे शहर में रहने के बावजूद उसका परिवार कुछ रूढ़िवादी किस्म का है। रस्मों, और कर्म-कांडों को निभाने की जैसे सनक सी हैं उनमें! उनके परिवार की सोच यह भी रही है की लड़कियों का ब्याह जल्दी कर देना चाहिए.. लिहाजा, दो साल पहले ही आरती का रिश्ता एक सॉफ्टवेर इंजिनियर के साथ तय कर दिया गया है। इसने तो शुरू शुरू में बहुत नखरे किए, बहुत सी मिन्नतें करीं, लेकिन कुछ हो नहीं सका। माता-पिता के सामने बेबस थी। बस, इतनी ही गनीमत थी की उसको कम से कम स्नातक की पढ़ाई पूरी कर लेने तक की मोहलत दी गई थी। शायद उसकी कुंडली में कुछ गोत्र, मांगलिक वाला चक्कर था, और इस कारण से बस कुछ ही रिश्ते मिल रहे थे। उसके माता-पिता ने सबसे कमाऊ वाले रिश्ते को पकड़ लिया। मजे की बात यह, की उसकी यह बात पूरे कॉलेज में सिर्फ मुझे ही मालूम थी। वैसे उसका मंगेतर अरुण कोई बुरा नहीं था। देखने बोलने में अच्छा था। उन दोनों को अपने अपने परिवार की तरफ से दिन में मिलने की इजाज़त मिली हुई थी। आज भी कॉलेज के बाद वो दोनों किसी कॉफ़ी शॉप पर ही मिल रहे थे।

खैर, नहाने के बाद मैंने हल्का फुल्का कपड़ा पहना (मतलब, सिर्फ पजामा और टी-शर्ट, और अन्दर कुछ भी नहीं) और टीवी देखते हुए आरती के आने का इंतज़ार करने लगी। कुछ ही देर में वो आ गई – उसके हाथ में एक बैग था, जिसमें दो दिनों के लिए ज़रूरी सामान और कपड़े थे। उसके आने के बाद हम दोनों साथ में चाय बनाने लगे, और साथ ही साथ मज़े से बातें भी करने लगे। मैंने उसको पूछा की आज दोनों ने मिल कर क्या किया! उत्तर में वो बस शरमा रही थी। दोनों को अनोखे में ही मिलने का अवसर मिलता था, इसलिए कुछ तो किया होगा न! मेरे खूब जिद करने से उसने बताया की आज अरुण में न जाने कहाँ से इतनी हिम्मत आ गई, की उसने इसे चूम लिया। यह बताते बताते ही उसके सांवले गालों पर लाली आ गयी। मैंने उसे छेड़ते हुए कहा, की बदमाश, इतनी ज़रूरी बात इतनी देर में बता रही है! तो वो शरमा कर हंस दी। (हमारी बात चीत अंग्रेजी, हिंदी और कन्नड़ – इन मिली जुली भाषाओँ में हुई.. लेकिन यहाँ सुविधा के लिए सिर्फ हिंदी में ही बता रही हूँ)..

मैं : "हाय! हमारी किस्मत कहाँ, की कोई हमको चूमे!"

आरती : "अरे है न! तुम्हारे जीजू?"

मैं : "ऐसे मत छेड़ यार! मैं तो उनको दिखती ही नहीं.. उनकी नज़र मुझ पर पड़े, ऐसी किस्मत ही नहीं!"

आरती : "तू किस्मत की बात करती है? तू तो आइटम है.. आइटम! और आइटम ही क्या, पूरी पटाखा है! एक बार इशारा कर दे, बस, आशिकों की लाइन लग जायेगी तेरे सामने!"

मैं : "अच्छा जी! तू जैसे कोई कम है..?"

आरती (गहरी सांस भरते हुए): "मेरा क्या! मेरा डब्बा तो पैक हो गया है!"

मैं : "हा हा हा! वाह भई... यह डब्बा खुलने को इतना बेकरार है क्या? कुछ दिन रुक जा.. फुर्सत से खुलेगी! हा हा हा! अबे बता न.. क्या किया था तुम दोनो ने।"

आरती : "अरे बताया तो! सिर्फ़ किस किया था उसने..."

मैं : “हाँ जी! तुमने कहा, और मैंने मान लिया! आप लोग इतने शरीफ हो!”

आरती : “कुछ बातें परदे के अन्दर रखनी चाहिए!”

मैं (चाय पीते हुए): “मुझसे भी?”

आरती : “हाँ.. तुझसे भी..!”

मैं : “ह्म्म्म... ये सुनो! मैं तो तुमको कुछ बताने वाली थी.. लेकिन.. अब...”

आरती : “हैं? क्या बताने वाली थी?”

मैं (उसको छेड़ते हुए): “रहने दे.. कुछ बातें परदे के अन्दर ही रहनी चाहिए!”

आरती : “अश्विनी.. ऐसे मत छेड़! ठीक है बाबा.. मैं बताऊंगी.. लेकिन पहले तू बता! ओके?”

मैं : “लेकिन पहले तो मैंने पूछा!”

आरती : “तू बहस बहुत करती है.. अब नखरे मत कर, और बता भी दे..”

मैं : “अच्छा.. ठीक है! तो सुन.. मैंने आज अपनी.. इसको (अपनी योनि की तरफ इशारा करते हुए) देर तक सहलाया.. पहली बार...”

आरती : “धत्त तेरे की! खोदा पहाड़, निकली चुहिया! यह बोल न की तूने आज पहली बार मास्चरबेट किया!”

मैं : “हाँ.. वही..”

आरती : “मेरी बुद्धूराम! तूने यह आज किया? अपनी जिंदगी के कितने बरस तूने यूँ ही वेस्ट कर दिए!”

मैं : “मतलब? तूने क्या बहुत पहले ही…?”

आरती : “हाँ जी.. पांच साल पहले..!”

मैं : “पांच साल पहले? बाप रे!”

आरती : “हाँ! और नहीं तो क्या? हम लड़कियाँ तो जल्दी ही जवान हो जाती हैं! लेकिन तू बिना यह सब किए इतना दिन कैसे रही?”

मैं : “पता नहीं..”

आरती : “अपने जीजू को एक इशारा तो देती.. फिर देखती, तू कैसे बचती?”

मैं : “आरती प्लीज! इस बात से मुझे मत छेड़! ठीक है की वो मुझे पसंद हैं.. लेकिन इसका यह मतलब नहीं की वो भी मुझे पसंद करें!” फिर कुछ देर की चुप्पी के बाद, “अरे! मेरी छोड़.. तू बता! क्या क्या किया तुम दोनों ने?”

आरती : “ठीक है बाबा.. सुन! आज मिस्टर मूड में थे! पहले भी उसने मुझे दो तीन बार चूमा था.. लेकिन आज वाला! उसने मेरे दोनों गालों को पकड़ कर चूमा.. नॉट किस.. स्मूच! मेरी जान ही निकल गई जब मैंने उसकी जीभ अपने मुँह में महसूस करी! फिर उसने मेरे बूब्स भी छुए! इतना मना करने पर भी देर तक दबाता मसलता रहा! बड़ी मुश्किल से उससे पीछा छुड़ाया। शॉप में ज्यादातर लोग हमें ही देख रहे थे। मैं तो शर्म के मारे बाहर भाग आई।“

मैं : “बाप रे! तुझे कैसा लगा यार?”

आरती : “कैसा लगा? अरे, मेरी हालत खराब हो गयी! मेरी योनि में चींटियाँ काटने लग गईं। कोई और जगह होती तो आज मेरा केक भी कट जाता!”

मैं : “क्या वैसा लगता है जैसे मास्चरबेट करते समय लगता है?

आरती : "अरे! वो तो कुछ भी नहीं है.. उससे भी पावरफुल! मास्टरबेशन का क्या है? उसमें तो बस अपना ही हाथ है.. लेकिन जब दूसरे का हाथ लगता है न.. पूरा शरीर झनझना जाता है।"

मैं : "बाप रे!"

आरती : "तू जानना चाहती है की कैसा लगता है?"

मैं : "न बाबा! वैसे भी मेरा कोई बॉयफ्रेंड थोड़े ही है!"

आरती : "बॉयफ्रेंड नहीं तो क्या, गर्लफ्रेंड तो है! मैं ही सिखा देती हूँ..."

मैं उसकी बात सुन कर चुप हो गयी।

आरती : "ए अश्विनी.. तू बुरा तो नहीं मान गयी?"

मैं : "नहीं यार!"

आरती : "तो बोल.. तुझे प्यार करूँ?"

मैं हंस पड़ी।

आरती : "तेरे होने वाले बॉयफ्रेंड से बढ़िया करूंगी!"

मैं : "ऐसी बात है? तो आ जा.."

आरती वाकई सीरियस थी। मुझे शुरू शुरू में लगा की वो शायद मजाक कर रही थी। लेकिन जब उसने मेरे पास आकर मेरे होंठों पर अपने होंठ सटाए तो मुझे वाकई एक करंट सा लगा। कुछ देर ऊपर से ही छोटे छोटे चुम्बन लेने के बाद वो उन्हे चूसने लगी। मैंने भी अपनी तरफ से जैसा हो सका, सहयोग किया। कुछ देर चूमने के बाद आरती का मेरे स्तनों पर आ गया और वो उनको टी-शर्ट के ऊपर से ही सहलाने लगी। मैं रोमांचित हो उठी..

दिमाग में पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। सच में, मेरे शरीर में एक अनोखी सी आग आग सुलग गई। आरती मुझे अपनी बाहों में लिए रह रह कर मेरे गाल, होंठ, आंखें, नाक, गर्दन और स्तनों पर चुम्बन देने लगी। एक बारगी कामुक उन्माद में मेरा मुँह खुल गया, तो उसने मौका पाते ही अपने होंठों से वहाँ हमला कर दिया, और अपनी जीभ मेरे मुंह के अन्दर डाल कर मेरी जीभ से खिलवाड़ करने लगी! मैं उचक कर अलग हो गई।

मैं : "ओए! छी! कैसा कैसा तो लगा! गीला गीला!"

आरती : "तुझे अच्छा नहीं लगा?"

मैं : "न रे! कैसा अजीब सा लग रहा था। अब बस कर..।"

आरती : "बस कैसे करूँ मेरी जान? अब तो मुझसे भी रहा नहीं जा रहा है.."

मैं : "हम्म.. तो क्या किया जाय?"

आरती : "तेरा तो नहीं मालूम.. लेकिन मेरा तो अब इन कपड़ों के अन्दर रहना मुश्किल है.."

मैं (हँसते हुए) : "तो बाहर आ जा.. मेरे अलावा कौन है यहाँ तुझे देखने वाला?"

आरती : "अरे ऐसे नहीं! तू उतार! मैं तेरा उतार दूँगी!"

कहते हुए वो फिर से मुझसे लिपट कर मेरे होंठ चूसने लगी और टी-शर्ट के निचले हिस्से को पकड़ कर मेरे शरीर से हटाने लगी। मैं भी उसके कुर्ते के बटन खोल कर उसके कुरते को उतारने लगी। जैसा की मैंने पहले भी बताया है, मैंने टी-शर्ट के नीचे कुछ भी नहीं पहना हुआ था, लिहाजा, उसके उतरते ही मैं अर्धनग्न आरती के सामने सम्मुख हो गयी। आरती का कुर्ता भी उतरा – लेकिन उसने अभी भी ब्रा पहनी हुई थी।

आरती : "अरे भगवान्! अश्विनी.. तेरी स्तन क्या मस्त हैं! कितनी प्यारी प्यारी! देख न! कैसे लाइट मार रही हैं!"

मैं : “हट्ट बेशरम! कैसे बोल रही है!”

आरती : “अरे मैं सच कह रही हूँ..” कहते हुए उसने मेरे हाथ अपने स्तनों पर जमाए, और खुद मेरे दोनों स्तनों को दबाने लगी। मेरी तो जान ही निकल गयी।

मैं : “आऊऊ.. आह्ह नहीं.. धीरे अआह्ह्ह.. धीरे!”

आरती (अनसुना करते हुए) : “अश्विनी, तू भी उतार इसको और खेलो..”

मैंने जैसे तैसे उसके प्रहार झेलते हुए उसकी ब्रा उतारी। तुरंत ही उसके उन्नत वक्ष मेरे सामने उपस्थित थे। मैं सचमुच में उसके स्तन देखती रह गई। कितने प्यारे स्तन! बिलकुल खिलौनों के समान! बड़े-बड़े, शरीर के बाकी हिस्सों जैसा ही साँवला सलोना रंग, उत्तेजना से ओत-प्रोत लम्बे तने हुए गहरे सांवले चूचक, और उसी से मिलता जुलता गोल घेरा। मुझसे रहा नहीं गया.. और मैंने भी अपने हाथ उन पर जमा दिए।

मैं : “हाय रे मेरी आरती रानी! तेरे संतरे कितने मस्त हैं! ठोस.. मुलायम.. और रसीले... दोनों के दोनों! मैं खा लूँ?”

आरती : “नेकी और पूछ पूछ?”

मैंने उसकी इस बात पर उसको सोफे पर ही लिटा दिया, और खुद भी उसके बराबर लेट गई। एक तरीके का आलिंगन – करवट में मेरा दाहिना स्तन उसके बाएं स्तन से टकरा रहा था। मैंने उसकी पीठ और नितम्ब सहलाते हुए उसके एक स्तनाग्र पर अपनी जीभ फिराई। दीदी की याद पुनः हो आई। मैंने पूरा स्तनाग्र अपने मुंह में भरा, और चूसना शुरू किया। मज़ा आ गया। आरती की सिसकी छूट गयी। लेकिन फिर भी उसने मेरे सर को पकड़ कर अपने स्तन में भींच सा लिया।

आरती : “आह्ह्ह्ह! इस्स्स्स... नील्लू.. आह्ह्ह! धीरे... ऊफ़.. मज़ा आ गया! आह्ह! बहुत अच्छा लग रहा है। कस कर चूसो न... उफ्फ्फ़! आआऊऊ ... काटो मत प्लीज। आराम से मेरी जान। अआह्ह्ह.. अरुण सुनेगा, तो जल मरेगा! ऊऊह्ह्ह.. मजे से चूसो! ओह्ह्ह!”

मैंने कोई चार-पांच मिनट तक उसके दोनों स्तनों को बारी बारी से चूसा। एक पल मुझे लगा की आरती का शरीर थरथरा रहा है.. मुझे समझ में आ गया की उसने अपना कामोत्कर्ष प्राप्त कर लिया है, इसलिए जब तक वो शांत न हो जाए, तब तक मैं चूसती रही। निवृत्त होने के बाद आरती भी अब मेरे स्तन दबाने और चूसने लगी।

मैं : "आरती, तेरा मन नहीं हुआ की और कुछ भी किया जाय..?"

आरती : "मन क्यों नहीं हुआ! मैंने बताया न.. बड़ी मुश्किल से भागी वहाँ से.. कोई और जगह होती, तो आज तो अरुण ने मेरा काम तमाम कर दिया होता! खैर, मेरी छोड़.. तू बता, तेरा दिल भी तो तेरे जीजू से लगा हुआ है.. तेरा दिल नहीं चाहता?"

मैं : "दिल तो बहुत चाहता है! मैंने उनका और दीदी का खेल देखा है.. और मुझे मालूम है सब कुछ। लेकिन डर लगता है।"

आरती : "डर? किस बात का?"

मैं : "इस बात का की कहीं मैं उनको चोट न पहुंचा दूं! वो अभी तक दीदी के जाने का गम नहीं मिटा पाए हैं.. कहीं उनको ऐसा न लगे की मैं दीदी की याद मिटाना चाहती हूँ.. उनकी जगह लेना चाहती हूँ.."

आरती : "लेकिन ऐसा तो नहीं है न! तू तो उनसे प्यार करती है!"

मैं : "हाँ! प्यार तो मैं बहुत करती हूँ.. जब से उनको देखा है तब से! बस, प्यार के रूप बदलते गए!"

आरती : "तुम्हारी जैसी लड़की भी तो बड़े नसीब से मिलती है। ये एहसास करा दो अपने जीजू को! प्यार करती हो, तो बता भी दो! क्या बिगड़ेगा भला!"

फिर कुछ देर बाद अचानक ही बोलती है, "एक काम कर.. एक रात को चांस ले। तू पूरी नंगी हो कर उनके रूम में चली जा.. खुद बा खुद लाइन पर आ जायेंगे वो.. जब खुद विश्वामित्र मेनका के सामने मेमना बन गए, तो वो क्या चीज़ हैं?"

मैं : “बस कर.. अपने आइडियाज अपने पास ही रख.. अब तेरा हो गया हो तो छोड़ मेरे दुद्धू..”

आरती : “छोड़ने का मन ही नहीं करता। अश्विनी मेरी जान.. सच सच बताना, कहाँ छुपा रखी थी यह प्यारी प्यारी स्तन?”

उसकी इतनी बेशर्मी भरी बात सुन कर मैं पुनः शरमा गयी।

वो फिर मेरे स्तन जोर जोर से चूसने लगी और उसके कारण उठने वाले आनंद के उन्माद में मैं पागल होने लगी। इसी बीच उसने मेरा पजामा भी नीचे सरकाना शुरू कर दिया। मैं चौंक गई, “अआह्ह्ह.. ओए.. ये क्या कर रही है?”

“अश्विनी.. तेरे यार से पहले मैं देख लूंगी, तो क्या हो जाएगा?”

अब वो पूरी तरह निर्लज्ज हो कर मुझे निर्वस्त्र करने पर उतारू हो गई थी। हलके फुल्के कपड़े उतारने में कितनी ही देर लगती है.. कुछ ही क्षणों में मैं पूर्ण नग्न उसके सामने थी। शर्म के कारण मैंने अपनी दोनों टांगें और पैर एकदम सटा लिए, जिससे आरती मेरी योनि ठीक से न देख सके। कैसी मूर्खता.. निर्वस्त्र हो जाने पर भी क्या छुपना है भला! आरती न जाने कहाँ कहाँ से सीख कर आई है (और कहाँ से सीखी होगी?) लेकिन वो अपनी उँगलियों से मेरी योनि पर मालिश जैसी करने लगी, और साथ ही मेरे स्तन भी पी रही थी। ऐसे में भला कितनी देर रहा जाए? मैं वैसे ही उत्तेजित थी, अब अतिउत्तेजित हो गयी और बिना सोचे मैंने अपने दोनों पैर खोल दिए। आरती अब मेरी योनि एकदम साफ़ साफ़ देख सकती थी।

आरती मेरी योनि की दरार पर अपनी उंगली फिराते हुए बोली, “सच अश्विनी.. जिसे तू ये खज़ाना देगी न, वो धन्य हो जाएगा! कैसी पतली पतली फांकें हैं.. और गोरी भी! बस... ये बाल साफ़ करवा ले.. एकदम मस्त लगेगी!”

वो हल्के हलके हाथों से मेरी योनि को सहलाते हुए, मेरे उसके भगांकुर को रगड़ने लगी, मैं न चाहते हुए भी जोर जोर से आहें भरने लगी! उन्माद की बेचैनी के मारे मैं अपना सिर इधर-उधर करने लगी। लगा की साँसे रुक रुक कर चल रही हैं.. वाकई, कोई और छूता है, तो बहुत ही अलग एहसास होता है। आरती न जाने कब तक मेरी योनि को इस प्रकार

रगडती रही, फिर अचानक ही उसने मेरे छिद्र में अपनी उंगली डाल कर अन्दर बाहर करने लगी। इस प्रहार को मैं नहीं सह पाई, और देखते ही देखते वह दबी घुटी आहें भरते हुए स्खलित हो गई। उसी उन्माद में मैं उठ कर जोर से आरती से लिपट गई। जब वासना का ज्वार थमा, तो मैंने देखा की सोफे के गद्दी पर मेरी योनि के नीचे की जगह गीली हो गई थी। न जाने क्यों मेरी आँखों में आँसू आ गए। आरती बिना कुछ कहे मुझसे लिपटी रही।

जब हम दोनों सहेलियां संयत हो कर एक दूसरे से अलग हुईं, तो आरती ने कहा, "अश्विनी रानी.. चल, तेरी योनि से बाल निकलवाते हैं.. ऐसा चिकना व्यंजन देख कर तेरे जीजू की भूख बढ़ जायेगी!"

मैंने काफी देर न नुकुर की, और नाराज़ होने का नाटक किया, लेकिन कौन लड़की सुन्दर नहीं दिखना चाहती? और कौन लड़की अपने प्रियतम को रिझाना नहीं चाहती? हम दोनों ने अपनी साफ़ सफाई करी, कपड़े पहने और बाहर चल दिए।

आरती मुझे एक वैक्सिंग सैलून लेकर गयी। मैं कभी कभार ब्यूटी पार्लर जाती हूँ, और शरीर की वैक्सिंग भी करवाती हूँ। वैक्सिंग करने में दर्द अधिक हो सकता है, बनिस्बत शेविंग जैसे उपायों के! लेकिन अनगिनत स्त्रियाँ आज कल वैक्सिंग ज्यादा करवाती हैं, क्योंकि उसके परिणाम कई कई सप्ताह तक रह सकते हैं। खास तौर पर गर्मी के मौसम में, जब शेविंग करने के एक-दो दिनों के अन्दर ही छोटे-छोटे बाल आना शुरू हो जाते हैं। वो अटपटा भी लगता है, और मेहनत भी बेकार जाती है। ऐसे में वैक्सिंग लंबे समय तक अनचाहे बालों से निजात दिलाता है। तो कहने का मतलब, मुझे भी अच्छा खासा अनुभव हो गया था अब तक! लेकिन आज कुछ अनोखा होना था। जब योनि और गुदा जैसे अति-संवेदनशील हिस्सों के बाल वैक्सिंग के द्वारा निकलवाए जाते हैं, तो इसको बिकिनी अथवा ब्राज़ीलियन वैक्सिंग करवाना कहते हैं। यह सैलून थोड़ा अप-मार्केट था.. बहुत ही साफ सुथरा और शांत! मुझे यहाँ आने से पहले डर लग रहा था की योनि पर से बाल नोचे जाने पर तो बहुत दर्द होगा, लेकिन यहाँ आ कर उम्मीद बंधी की सब ठीक हो जाएगा। आरती ने बताया की वो अक्सर बिकिनी वैक्सिंग करवाती है, और इसमें डरने जैसी कोई बात नहीं है। मुझे इंतज़ार नहीं करना पड़ा – वैक्सर मुझे एक रोशनी-युक्त छोटे कमरे में ले गई – इसमें कोई खिड़की नहीं थी, और मधुर संगीत भी बज रहा था। उसने मुझे एक टेबल पर लेटने को कहा – वो टेबल भी काफी साफ़ थी, और उस पर एक कागज़ की परत चढ़ी हुई थी.. जैसे कोई अस्पताल हो।

“आप अपनी पैन्ट्स उतार कर इधर लेट जाइए.. सर उधर रख कर..” उसने कहा।

“... और अंडरवियर?”

“आप बिकिनी वैक्सिंग करवाने आई हैं न?”

“हाँ.. पहली बार! इसलिए डर लग रहा है..”

“ओके! डरने जैसी कोई बात नहीं है.. और हाँ, अंडरवियर भी..”

मैंने अनिश्चित होकर अपनी चड्ढी उतार दी, और डरते हुए उस टेबल पर लेट गयी। वैक्सर मुझे बहलाने के लिए मुझसे बात करने लगी (आप यहाँ की लगती नहीं.. कहाँ से हैं? क्या कर रही हैं? कहाँ रहती हैं.. इत्यादि)।

खैर, बिकिनी वैक्सिंग के लिए वैक्सर को अपने गुप्तांगों में ज्यादा से ज्यादा पैठ देने के लिए अपनी जांघ को ऊपर की तरफ मोड़ कर और फैला कर रखना होता है... ठीक वैसे ही जैसे सहवास के समय लड़की लेटती है.. या लगभग वैसा ही! अब ऐसी दशा में कोई कैसे आराम से लेट सकता है? खुली हुई, पूर्णतः प्रदर्शित योनि, खूब सारी रौशनी, और एक अजनबी... न जाने आरती कैसे कह रही है की इतना खराब नहीं होता! झूठ कह रही है! मुझे तो लग रहा है की यह सब बहुत देर तक चलने वाला है.. अपने पैर हवा में उठाना, और अपने शरीर के उस भाग में किसी अजनबी की उंगलियाँ महसूस करना जहाँ अपने कभी सोचा भी ना हो, की कोई छुएगा...

खैर! अब तो भगवान् ही बचाए!

यहाँ इस्तेमाल होने वाला वैक्स कुछ अलग था। यह जल्दी सूख जाता है.. मेरा मतलब बहुत जल्दी। वैक्सर इसको लगाती हैं, और लगभग तुरंत ही यह सूख जाता है। यहाँ तक तो ठीक है, लेकिन जान निकलती है जब वो इसको एक झटके के साथ शरीर से अलग करती है। गनीमत यह थी की वो वैक्स की हुई जगह पर अपने हथेली से थोड़ा दबाव डालती है.. इससे चुभन और दर्द कुछ कम हो जाता है। यदि वो ऐसे न करती तो शायद मैं बेहोश ही हो जाती! कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

अब मुझे यह तो नहीं पता की ब्यूटी पार्लर में काम करने वाली सारी महिलाएं बातूनी होती हैं या वो मुझको कुछ ख़ास ही स्वान्त्वाना दे रही थी, लेकिन अगले एक घंटे तक, जब मैं सिर्फ चीख, चिल्ला और दर्द बर्दाश्त कर रही थी, वो वैक्सर लगातार अपनी ही बातें करने में लगी हुई थी।

“आप पहली बार करवा रही हैं न, इसलिए दर्द तो ज़रूर होगा।“

‘कमीनी.. अभी तो कह रही थी की डरने वाली कोई बात नहीं है..!’

“बाल कुछ छोटे काट कर आती तो कम दर्द होता..”

‘माफ़ कर दो मालकिन..’

“आपको पता है.. अभी कल ही हमारे यहाँ एक दुल्हन आई थी यह वैक्सिंग कराने। कह रही थी की उसके होने वाले पति को सब चिकना चिकना चाहिए था.. हे हे हे!”

“आअह्ह्ह्ह… ह्म्म्म..”

“आपकी भी शादी होने वाली है क्या?”

“इह.. आह.. नहीं.. ऐसे ही..”

“ओह!”

न जाने क्या समझी वो! वैसे ज्यादातर लड़कियाँ तो इसीलिए बिकिनी वैक्सिंग करवाती हैं जब उनको यौन क्रिया करनी होती है.. बिलकुल वह भी यही समझी होगी। वैसे, मन में मेरे भी तो यही था!

“आप तो उससे ज्यादा हिम्मती हैं… उसकी तो चीख चिल्लाहट के साथ साथ कुछ पेशाब भी निकल गयी…”

‘आरती की बच्ची! ठहर.. तेरी खैर नहीं!’

उसने जांघों के ऊपरी हिस्से से शुरू होते हुए योनि तक ऐसे ही वैक्स किया। दर्द भी इसी प्रकार से बढ़ता रहा। योनि तक आते आते दर्द असहनीय हो गया! देखने में तो यहाँ के बाल तो पूरी तरह से बेकार लगते हैं। लेकिन जो दर्द मुझे महसूस हुआ, उससे तो यही लगता है की जघन क्षेत्र के बाल निकालने नहीं चाहिए! उनका कोई तो उपयोग होगा.. पता नहीं! खैर! अच्छी बात यह थी की यह महिला लगातार मुझसे बात कर रही थी.. इससे मेरा ध्यान अपने दर्द से काफी हट सा गया था।

लेकिन इतना होने के बावजूद, परेशानी तो होती ही है। वातानुकूलन चल रहा था, लेकिन फिर भी मुझे पसीने छूट रहे थे। ऐसे की जैसे अभी दौड़ कर आई हूँ! हाथ, चेहरा, छातियाँ.. सब जगह पसीना! और फिर यह नोचना खसोटना बहुत ही अन्तरंग स्थान पर होने लगा – योनिमुख के बेहद समीप! एक बारगी मन में आया की यह कमीनी अपनी एक उंगली भी

अन्दर घुसेड़ देती.. कम से कम ध्यान हट जाता। वो तो जल्दी ही कर रही होगी, लेकिन मुझे लग रहा था की न जाने कितनी देर से यह नोच खसोट चल रही है।

अंततः योनि के ठीक बीच पर वैक्स लगा, और इससे पहले की मैं खुद को तैयार कर पाती, उसने उसे तेजी से उखाड़ दिया। दर्द के अतिरेक से मेरी आँखों में आंसू भर गए। मन हुआ की फूट फूट कर रो दूं। लेकिन जैसे तैसे खुद को ज़ब्त किया।

"वैरी गुड हनी! यू आर सो ब्रेव!! अब पीछे भी कर लें?"

आरती ने कहा था की पीछे वैक्सिंग करने में दर्द नहीं होता। एक तरह से सच ही था – जब पहले ही किसी लड़की की योनि और भगनासे को नोच लिया गया हो, उसको और क्या दर्द महसूस होगा? दर्द क्या.. पहले की तकलीफ़ के आगे यह तो जैसे बगीचे की सैर जैसा लगा! खैर, जैसे तैसे मेरी वैक्सिंग ख़तम हो ही गयी। उस वैक्सर ने वैक्सिंग ख़तम होते ही किसी तरह का लोशन लगा दिया और अपने दराज से एक दर्द निवारक गोली भी दी।

फिर वो मुझे एक आदमकद आईने के पास ले गयी और मुस्कुराते हुए बोली, "देख लीजिये... अपनी योनि को ध्यान से..."

मैंने देखा और अपनी योनि को ऐसे नंगा देख कर खुद ही शर्म से पानी पानी हो गई... मुझे समझ नहीं आया की क्या करूँ, बस उस वैक्सर के गले लग गई, और उसको दोनों गालो पर चूम कर बोली, "यू आर ग्रेट... यू हैव डन अ वंडरफुल जॉब...!"

कुछ देर वहाँ बैठने के बाद मैं आरती के साथ बेढंगी चाल चलती हुई घर तक पहुंची। घर तक आते आते दर्द काफी कम हो गया, और मैं ठीक महसूस करने लगी। बाहर किसी होटल जाने के बजाय घर पर ही खाना मंगाने का निश्चय किया था, यह सोच कर की ऐसे बेढंग चाल चलता हुआ देख कर न जाने लोग क्या सोचेंगे! खैर, इतने दर्द झेलने के बावजूद मुझे साफ़ और चिकना होने का एहसास बहुत अच्छा लग रहा था। मुझे बहुत ख़ुशी मिल रही थी, और एक तरह से वो मेरा प्रतिष्ठा वाला पल भी था।

घर पर आने के बाद आरती ने बड़ी बेशर्मी से मुझे एक बार फिर से नंगा कर दिया और मेरी योनि को ध्यान से देखते हुए बोली, "सच में अश्विनी, तू कितनी सुन्दर है! और.. तेरे जैसी

सुंदर और मस्त योनि शायद ही किसी लड़की की हो! तेरा प्रेमी या पति, जो भी होगा.. वो बहुत भाग्यवान होगा! जो तेरी जैसी सुन्दर लड़की, इतनी सुन्दर योनि भोगेगा!"

और कहते हुए उसने मेरी योनि पर बहुत ज़ोर का चुम्बन लिया।

"सच में.. बेहोश हो जाएगा वो!" कह कर उसने प्यार से मेरी चिकनी सी योनि पर उंगली फिराई।

मैं तो शर्म से पानी पानी हो गई। मैं मन ही मन सोच रही थी, 'क्या वो भी मेरी योनि को ऐसे ही चूमेंगे... ऐसे ही प्यार करेंगे...?"

आरती ने मुझसे कहा भी, "जानेमन, अब तो तुम ठुक ही जाओ!"

मैंने भी मस्ती करी, "आरती यार.. मैं तो कब से तैयार हूँ.. लेकिन मेरे बुद्धू सजन को कैसे समझाऊँ?"

"मैं तुझे रास्ता बताऊंगी.. लेकिन मुझे भी कुछ मिलना चाहिए.. है न?"

"क्या चाहिए तुझे?" मैंने ना-समझी में पूछा।

"तेरी योनि!" और हम दोनों खिलखिला कर हंस दीं।

डिनर के बाद हम दोनों मेरे कमरे में चली गईं। आरती ने इस पूरे समय सिर्फ टी-शर्ट और चड्ढी पहनी हुई थी, तो मेरी भी हिचकिचाहट चली गयी। मैंने भी उसी प्रकार के वस्त्रों में उसके साथ बिस्तर में घुस गई और हम दोनों बातें करने लगी। बातों बातों में वंशिका मुझसे लड़कों के साथ सहवास की बातें करने लगी। हम दोनों कॉलेज के लड़कों, उसके मंगेतर और अथर्व के बारे में बातें करते रहे। मैंने उसे अथर्व के लिए अपने दिल की चाहत के बारे में उसको पहले से ही बता रखा था, और आरती भी मुझे बताने लगी की कैसे एक बार अरुण ने उसके साथ सहवास किया था। यह मेरे लिए एक नई खबर थी। मैंने उससे सारे वृत्तान्त को बताने को बोला, तो वो रस ले लेकर मुझे सब बताने लगी। इतना तो समझ आया की दोनों ने एक झट-पट क्विकी करी है, लेकिन उसके बताने का तरीका इतना मजेदार था, की मुझे अपनी योनि के आस पास फिर एक जाना-माना पिघला सा एकसास होने लगा।

वो कमीनी यह सब बोलते हुए मुझे लगातार छेड़ती भी जा रही थी, और मेरी जाँघ सहला रही थी। मैं जल्दी ही उत्तेजित होने लगी और उसके बताने जैसे ही सहवास के बारे में सोचने लगी। मेरी साँसें भारी होने लगीं और मेरी योनि भी गीली होने लगी। और यह सिर्फ मेरी ही हालत नहीं थी। यह सब कहते करते आरती भी गहरी साँसें ले रही थी, और उसकी छातियाँ साँस लेने के साथ साथ ऊपर नीचे हो रही थीं। मेरे मन में आया की उनको दबा दूँ, और मैंने ऐसा ही किया।

“अआह्ह्ह... मार डालेगी क्या? अरे आराम से दबा.. तेरी सहेली के ही हैं..”

“ओके!” मैंने कहा, और उसके दोनों गालों को बारी बारी से चूम लिया। और जैसी मुझे उम्मीद थी, आरती भी मेरा सर पकड़ कर अपने और पास लाने की कोशिश करने लगी, और मुझे होंठों पर चूमने लगी। आरती ने पिछली बार भी पहल करी थी, तो इस बार वो कैसे पीछे रह जाती? वो कुछ ही देर में मेरे होठों को चूसने लगी। जाहिर सी बात थी, आरती भी उत्तेजित थी।

“ओह मेरी रानी! तू बहुत सैक्सी है! मैं आदमी होती तो तुझे यही पटक कर ठोक डालती! हाय!”

मैं क्या बोलती? बस उसके चुम्बन में साथ देती रही। कुछ देर बाद उसने अपनी बाहें मेरी कांख के नीचे डाल कर मुझे अपने ऊपर की तरफ आने को कहा। मैं इशारा समझ कर उसके ऊपर आ गई और अपनी योनि को उसकी योनि पर दबाने रगड़ने लगी। आरती मेरे होठों को हल्के हल्के काटती हुई, अपने होंठों में दबा कर चूस रही थी।

मैंने कहा, "हाय आरती! तू ही आज आदमी बन जा.. अब तो रहा नहीं जा रहा है..."

आरती मुस्कुराई। उसने कुछ जगह सी बना कर पहले मेरी, और फिर अपनी टी-शर्ट उतार दी। उसके सांवले सलोने और प्यारे खिलौने मेरे सामने थे। मैं उनके रूप का स्वाद ले रही थी, और उसी बीच उसने मेरे नितम्बों पर हाथ फेरते हुए मेरी चड्ढी भी नीचे कर दी। मैंने स्वयं ही उनको उतार दिया और आरती के होठों को चूसने लगी।

आरती मुझको पलट कर नीचे लिटा कर मेरे ऊपर चढ़ गयी, और अपनी चड्ढी उतार कर अपनी योनि से मेरी योनि को रगड़ने लगी। बीच में मैंने एक बार उसके एक स्तनाग्र को अपनी उँगलियों के बीच मसल दिया। वो जोर से चिंहुकी तो मैं हंसने लगी।

"आरती, तुझे ऐसे मज़ा आता है?"

उसने हाँ में सिर हिलाया तो मैं पुनः उनको मसलने कुचलने लग गयी।

"मेरी बन्नो! तेरी योनि तो बहुत गरम हो गई है! देख न! और मेरी भी देख! कैसे उससे पानी निकल रहा है! बोल.. ठुकने का मन हो रहा है न?"

कहते हुए आरती मेरे ऊपर झुक कर मुझे पुनः चूमने लगी। हम दोनों लड़कियाँ साथ ही साथ अपने दोंनों हाथों से एक दूसरे के स्तनों का मर्दन कर रही थीं। मेरी योनि वाकई बहुत गीली हो गयी थी, और मुझे वाकई एक तगड़े सहवास का मन होने लगा था। मैंने आरती के स्तनों को पकड़ कर अपने मुंह की तरफ खींचा और उसके चूचक चूसने लगी।

"आरती, तेरे स्तन कितने बढ़िया हैं! इनको दबाने और चूसने में कितना मज़ा आता है!"

"मेरी रानी! तुझे इतना मज़ा आता है, तो सोच, लड़कों को कितना आता होगा?"

“अरुण के रहते तुझे और लड़के चाहिए क्या?”

“ही ही ही.. जानती है, वो एक दिन कह रहा था की वो मेरे बूब्स के बीच अपना लिंग रगड़ना चाहता है!”

“क्या? होओओओओ!”

“हाँ.. मिस्टर मेरी योनि ही नहीं, मेरे बूब्स भी ठोकना चाहते हैं!”

मैं उत्तेजना में आ कर उसके स्तन खुद जोर से दबा दिए।

“आह्ह्ह्ह अश्विनी! मसल दे! हाय! चूस, और जोर से चूस! काट ले इनको!”

उसके उत्साहवर्धन पर मैं उसके स्तनों को और जोर से दबाना, चूसना और काटना शुरू कर दिया। उधर, वो अपने हाथों से मेरे नितम्बों को मसलने लगी। मैंने इशारा पा कर अपनी एक उंगली उसकी योनि पर रखी, और उसको सहलाने लगी। वाकई, उसकी योनि भी बहुत गीली थी। मैं ज़रा सी हरकत से अपनी उंगली उसकी योनि में डाल दी। आरती सिसक उठी। वो भी मेरे ऊपर से उतर कर मेरे बगल लेट गई और उसने भी मेरी योनि में अपनी एक उंगली डाल दी।

मैं थोड़ा उत्सुक थी। सुना था की सहवास करने से लड़की की योनि का आकार बढ़ जाता है (दरअसल ऐसा होता तो है, लेकिन योनि बहुत लचीली और इलास्टिक होती है.. इसलिए उसके आकार में आया परिवर्तन जल्दी ही वापस हो जाता है। यदि लड़की कुछ दिन सहवास न करे, तो उसकी योनि का आकार पहले जैसा हो जाता है।)। तो, अगर आरती ने सहवास किया है, तो ज़रूर उसकी योनि का आकार बढ़ गया होगा। मैंने चुपके से अपनी दूसरी उंगली भी आरती की योनि में प्रविष्ट करा दी। यह उंगली आसानी से अन्दर नहीं गयी। लेकिन आरती ने हिल डुल कर, जैसे तैसे उसकी अपने अन्दर डालने में मेरी मदद करी। जैसे ही उंगलियाँ उसकी योनि में गईं, मैंने उनको उसकी योनि के अंदर-बाहर करना शुरू कर दिया। उधर आरती ने अपनी उंगली मेरी योनि से निकाल कर मेरे होंठों को जोर जोर से चूसना शुरू कर दिया। मैंने अपनी उँगलियों को उसकी योनि के अंदर-बाहर करने की गति और तेज़ कर दी। जैसे जैसे मेरे हाथ की गति बढ़ती, आरती की सिसकारियों की आवाज़ भी उतनी जोर से आती। कुछ ही देर में उसने अपना चरम सुख प्राप्त कर लिया और वो अपना सिर इधर उधर हिलाते डुलाते हुए आहआह की आवाजें निकालने लगी।

मैं रुक गयी। आरती को ऐसे सुख के आसमान में गोते लगाते देखना बहुत सुखद था। कुछ देर बाद उसने अपनी आँखें खोली, और मुझे चूमते हुए बोली, “हाय रानी! तुमने बहुत मज़ा दिलाया! अब देख, मैं तुझे कैसे मज़ा दिलाती हूँ!”

और वो अपनी साँसें संयत कर के मुझे फिर से चूमने चाटने लगी। और धीरे धीरे मेरे चेहरे से मेरे शरीर के नीचे की ओर जाने लगी।

“तेरी योनि के लिए एक लिंग चाहिए, रानी!” उसने फरमाया!

“ह्म्म्म?” मैंने मस्ती में कहा।

“खीरा है क्या?”

“हं?”

“तू लेटी रह.. मैं आती हूँ!”

मैं पीठ के बल लेटी हुई अपनी साँसे संयत करने लगी। कुछ ही देर में आरती वापस आई.. उसके हाथ में एक खीरा था।

“हैं? इसका क्या करेगी?”

“अरे रानी, तेरी योनि का इलाज है इसमें! आज इसी लिंग से काम चला ले?”

कहते हुए वो बिस्तर पर मेरे पास आई, और उसने खीरे को मेरी योनि पर फिराया। फ्रिज़ में रखा होने के कारण खीरा बहुत ठंडा हो गया था। मैं चिहुंक गयी। और उसी के साथ मेरे होश भी ठिकाने आ गए।

“नहीं.. आरती.. प्लीज! ये मत घुसाना!”

“क्यों डा?”

“नहीं यार! प्लीज! मैं ‘उनके’ अलावा और कुछ अपने अन्दर नहीं लेना चाहती..”

“ओओह्ह्ह्ह! तो आग इतनी भड़की है! मेरी रानी अपने जीजू को अपनी कुंवारी योनि का उपहार देना चाहती है! हाय! ऐसी किस्मत सभी आशिको की हो! कसम से.. हा हा हा!”

आरती की नंगेपन से भरी इतनी बेशर्म बात सुन कर मैं शर्म से पानी पानी हो गयी।

“चुप कर..”

“ही ही ही.. आज खीरे से ठुक जा.. कल अपने जीजू का डलवा लेना!”

“आरती की बच्ची.. तू मरने वाली है अब..!”

“अरे! अभी थोड़ी देर पहले ही तो मैंने अपनी उंगली डाली थी?”

“ये खीरा इसकी शकल बिगाड़ देगा! उंगली तो पतली सी होती है..”

“अरे मेरी मेनका! अपने विश्वामित्र को भी तो पटा पहले.. नहीं तो तेरी योनि सूखी रह जायेगी!”

“सच में आरती! किस्मत ही खराब है मेरी!”

“किस्मत नहीं.. तू गधी है.. पूरी गधी!”

“तो मैं क्या करूँ?”

“स्त्री को करना ही क्या है? भगवान् ने स्त्री को ऐसा ही बनाया है की उसको कुछ न करना पड़े! जो करना है बस मर्द को ही..” कहते हुए उसने आँख मारी!

“लेकिन वो तो मेरी तरफ देखते ही नहीं..”

“जानेमन..” आरती ने मेरे एक नितम्ब को अपने हाथ से दबाते, और मेरे एक स्तनाग्र को चूसते हुए कहा, “.. या तो तेरा जीजू अँधा है.. या फिर नामर्द!”

“क्या कह रही है?” मुझे उनकी बुराई बिलकुल अच्छी नहीं लगी। और ऊपर से यह भी की उसने इसी समय मेरे चूचक काटने शुरू कर दिए।

“हट तू.. छोड़ इसको!” कहत एहुए मैंने झिड़की लगाई।

“गुस्सा मत हो यार! मैंने बस तुझे छेड़ा! लेकिन तू ही बता.. तुझ जैसी लड़की एक ही छत के नीचे है.. उनको उसकी चाहत, उसका प्यार नहीं दिखता? क्यों?”

वो मेरे पेट को चाटती हुई मेरी योनि तक पहुँच गई और मेरी जांघों को चाटने लगी। मैं स्वप्रेरणा से अपने नितम्ब को आगे पीछे करते हुए अपनी योनि को उसके मुँह पर फिराने लगी। अंततः आरती ने अपनी दो उँगलियाँ मेरी योनि में डाल दीं और उन्हें अंदर-बाहर करने लगी। साथ ही साथ वो मेरे भगनासे को अपनी जीभ से धीरे धीरे चाटने लगी।

“अब कैसा लग रहा है?”

“बहुत अच्छा! और... स्स्स्सस..... आअह्ह्ह्ह.... चाटो और चाटो!”

आरती ने बिलकुल वैसे ही किया।

“आह! आरती..” मैं आनंद से मरी जा रही थी, “तू यह क्या जादू कर रही है?” मैं जैसे तैसे अपनी सांस सम्हालने की कोशिश कर रही थी।

“आरती... हाय... कैसा कैसा तो हो रहा है!” मैंने कहा।

“मजे ले मेरी जान! बस मजे ले...” आरती ने कहा।

मेरी आँखें उन्माद के मद में बंद हो गयी थीं और मैं अपने नितम्ब जोर से चला रही थी। मन में बस यही हो रहा था की अथर्व इसी समय आ जाएँ, और मुझे प्यार करें!

“अआह्हह.. ओह्ह्ह!” मैंने अपना मुँह तकिये में दबा लिया। आरती किसी अनुभवी खिलाड़ी की तरह तेजी से मुझे अपनी उँगलियों से ठोकती रही और मैं जल्दी ही रति-निष्पत्ति को प्राप्त हो गयी। मेरी योनि से निकल कर रस की बौछार आरती के हाथ, और साथ ही साथ बिस्तर को भिगोने लगी। जैसे ही आरती ने अपनी उंगलियाँ बाहर निकाली, मैं बिस्तर पर गिर गई और जोर जोर से हांफने लगी।

आरती ने मुझे चूमते हुए कहा, “अश्विनी मेरी जान, मेरे दिमाग में एक आईडिया है... तेरे जीजू को पटाने का!”

कह कर उसने मेरी योनि का रस चाट चाट कर वहाँ सफाई कर दी, और मुझे बाहों में लेकर मुझे अपना प्लान समझाने लगी।

सोमवार सवेरे ही अथर्व की कार दुर्घटना की खबर आई। मुझ पर तो मानो वज्रपात हुआ। खबर सुनते ही मुझे चक्कर आ गया, और मैं जहाँ खड़ी थी, वही गिर गई।

“अथर्व शेखावत को जानती हैं?” फ़ोन के उस तरफ से दो टूक सवाल किया गया।

“...जी हाँ!”

“आप?”

“जी मैं उनकी.. रिलेटिव हूँ” मैंने हिचकिचाते ही कहा, “... क्यों?”

“ओके.. उनका एक्सीडेंट हुआ है मैडम...” उधर से उत्तर सुन कर मेरा मन जोर जोर से धड़कने लगा। सोचने लगी की कहीं अथर्व को कुछ हो तो नहीं गया...।

“आप प्लीज ठीक ठीक बताइए...”

"... आप जल्दी से अपोलो हॉस्पिटल आ जाइए..” उधर फिर से दो टूक आवाज़ आई।

“आप बताएँगे तो?”

“कहा न...”

“हाँ... वो मेरे रिलेटिव हैं..। सब ठीक तो है।“ मैंने घबराते हुए पूछा।

“खबर ठीक नहीं है।“

“...क्या मतलब...?”

“वैसे हम उनका ऑपरेशन कर रहे हैं.. लेकिन...”

“लेकिन क्या...?”

“बचने की कोई उम्मीद नहीं है। खून बहुत निकल चुका है.. और.. और देर भी काफी हो गयी है..।“

इतना सुनना था की मैं बेहोश होकर वही फ़र्श पर ढेर हो गई। सहेलियों ने मेरे चेहरे पर पानी के छींटे दे देकर मुझे होश में लाया। और, थोड़ा होश आने पर मेरे साथ हॉस्पिटल पहुंचे। करने को वहाँ क्या था? बस, अनगिनत कागजों पर दस्तखत करने थे। वैसे भी इंश्योरेंस अथर्व के इलाज का पूरा खर्चा उठा ही रहा था। उनके ऑफिस से कई सारे लोग आ कर मिल चुके हैं.. कोई आश्वासन देता, कोई हिम्मत बढ़ाता, कोई सलाह देता, तो कोई मदद!

लेकिन मुझे कुछ समझ नहीं आता, कुछ सुनाई नहीं देता, कुछ दिखाई नहीं देता। बार बार आँखों के सामने कुछ ही दिनों पहले हुए आतंक के चित्र खिंच जाते। मैं वापस वैसे परिस्थितियां झेलने के लिए बिलकुल भी तैयार नहीं थी। इतने बड़े संसार में ऐसे नितांत अकेली रहना...!! बस मन में एक ख़याल रहता की भगवान्, इनको ठीक कर दो.. जल्दी! न अन्न का दाना खाया जाता, न ही जल की एक बूँद पी जाती! लेकिन जीने के लिए करना पड़ता है.. जैसे तैसे अन्न जल को अपने उदर के अन्दर धकेल कर वापस आई सी यु के सामने बैठ जाती, की न जाने कब इनको होश आ जाए!

‘बचना मुश्किल है..’

‘खून बहुत बह चुका..’

‘बहुत देर से हॉस्पिटल लाये जा पाए..’

‘दुआ करो की बच जाएँ..’

‘अगले बहत्तर घंटे में कुछ सुधार हो तो कुछ गुंजाईश है..’

‘कमाल है.. बस होश आ जाय..’

‘जैसा सोचा था, उतना बुरा नहीं है..’

‘बच जायेंगे अब..’

‘बस, जल्दी से होश आ जाय..’

एक.. दो.. तीन.. ऐसे कर के पूरे अट्ठारह दिन बीत गए! न जाने इस प्रकार के कितने बयान सुने! डॉक्टर भी क्या करे! वो कोई भगवान् या अन्तर्यामी थोड़े ही होते हैं.. और फिर अंततः..

“.. यहाँ नर्सें कह रही हैं की वो आपको वापस ले आईं.. जैसे सावित्री ले आईं थीं सत्यवान को! हो सकता हो की यह सच भी हो!”

सुन कर मेरी आँखों से आंसू ढलक गए! ऐसे क्यों कह रहे हैं डॉक्टर? मैं इनकी पत्नी हूँ नहीं.. लेकिन… लेकिन… ओह!

“आप भले मेरी बात को मज़ाक मानिए, लेकिन मैंने यह सब कहना अपना फ़र्ज़ समझा.. आगे इनका खूब ख़याल रखिएगा.. यू शुडन्ट भी अलाइव!”

“डॉक्टर.. एक मिनट..” मैंने कहा, “मैं इनकी पत्नी नहीं.. साली हूँ….”

“ओह! आई ऍम सॉरी! मुझे लगा की आप इनकी बीवी हैं.. ऐसी चिंता, ऐसी सेवा तो आज कल बीवियां भी नहीं करतीं।”

“इट इस ओके!”

“अश्विनी?” उन्होंने पुकारा! उनकी आँखों में आंसू थे।

“जी?” मेरे दिल ने राहत की सांस ली.. मैंने उनका हाथ पकड़ लिया।

“थैंक यू!”

दिल के सारे बाँध टूट गए.. मैं उनके हाथ को अपने दोनों हाथों में थाम कर अपने आंसुओं से भिगोने लगी।

‘हे भगवान्! आपका लाख लाख शुक्र है!’

२५

अगले सप्ताह मुझे अस्पताल से छुट्टी मिल गयी। हादसे की गंभीरता के विपरीत, मेरे शरीर में टूटी हुई हड्डियों की संख्या काफी कम थी – बस हाथ, पैर और पसलियों में कुछ टूट फूट हुई थी। इस दुर्घटना ने मानसिक और भावनात्मक तौर पर कितनी चोट पहुंचाई थी, वो तो समय के सतह ही मालूम होना था। लेकिन, हाल फिलहाल, सभी का (और मेरा भी) उद्देश्य मुझे वापस अपनी पहले वाली शारीरिक दशा तक लाना था। अस्पताल में पड़े रहने से कोई लाभ नहीं था – वहाँ जितना स्वास्थ्य लाभ उठाना था, वो तो हो गया था। इसलिए अब घर में ही रहने का आदेश हुआ था। एक बड़ी समस्या यह थी की मेरी देखभाल कौन करेगा – ऐसी ऐसी जगहों पर हड्डियाँ टूटी थीं, की मैं खुद से तो अपनी देखभाल तो क्या, ठीक से उठ या चल फिर नहीं सकता था। अश्विनी ने तुरंत ही मेरी देखभाल करने के लिए आग्रह किया, लेकिन मैंने ही मना कर दिया। उसकी पढाई लिखाई का हर्जा कर के मुझे कोई ख़ुशी नहीं मिलने वाली थी। और वैसे भी मुझे एक ऐसी नर्स चाहिए थी तो मेरे साथ अगर सारे चौबीस घंटे नहीं तो उसके ज्यादातर समय तक तो रहे ही।

खैर, मेरे डिस्चार्ज के ठीक एक दिन पहले एक ऐसी नर्स मिल गई, और जैसे ही वो मिली, मुझे डिस्चार्ज होने का सुख भी मिल गया (अस्पताल की गंध से मुझे उबकाई आती है... तो मात्र वहाँ से छुटकारा पाने के ख़याल से ही सुख होने लगता)। घर पहुँचने के लगभग साथ साथ ही एक नर्स ने दरवाजे पर दस्तखत दी। उसके साथ कुछ देर अश्विनी ने वार्तालाप किया, और फिर वो मेरे कमरे में अन्दर आई। मैंने देखा की वो बिलकुल साफ़-सुथरी बेदाग़ सफ़ेद पोशाक पहने एक लड़की थी – उसकी आँखों में हल्का सा काजल लगा हुआ था, और उसने अपने बाल पोनीटेल जैसे बाँधा हुआ था। नर्स शब्द सोच कर लगता है की कोई प्रौढ़ उम्र की एक कन्टाली महिला होगी.. लेकिन यह सबसे पहले तो एक लड़की थी.. बस कोई चौबीस-पच्चीस साल की.. और.. और उसका चेहरा एकदम खिला खिला सा था। मुस्कुराता हुआ। उतनी ही मुस्कुराती हुई और चमकदार आँखें!

“हेल्लो मिस्टर शेखावत!” उसने प्रफुल्ल आवाज़ में कहा, “हाउ आर यू फीलिंग टुडे?”

और मेरे उत्तर देने से पहले, “ओह.. बाई दि वे.. आई ऍम योर नर्स, आयशा!”

“हेल्लो आयशा! थैंक यू फॉर अक्सेप्टिंग टू टेक केयर ऑफ़ मी!”

अगले कुछ देर तक उसने मुझे और अश्विनी को अपना अपॉइंटमेंट लैटर पढाया, मेरी दवाइयों और उनको लेने की समय सारिणी, व्यायाम और अन्य आवश्यकताओं के बारे में विस्तार से बताया। ज्यादातर बातें तो ठीक थी, लेकिन जब उसने यह भी बताया की उसकी ड्यूटी में रोज़ मेरे कपड़े बदलना, नहलाना और बाथरूम में मदद करना भी शामिल रहेगा तो मुझे कुछ घबराहट और कोफ़्त सी महसूस हुई।

“आयशा, टेल मी अबाउट योर फॅमिली!” मैंने कहा। इतनी देर तक अंग्रेजी में ही बातें हो रही थीं.. मुझे लगा की औपचारिक रहना ठीक है..

“मैं, और मेरे अब्बू.. बस, हम दो ही जने हैं!”

“अरे वाह! आपको तो हिन्दी बोलनी भी आती है? और.. आपके बोलने से लग रहा है की आप उत्तर भारत की हैं..?”

“आपको कैसे पता? दरअसल, मेरे अब्बू लखनऊ से हैं! वो यहाँ बैंगलोर में कोई पैंतीस साल पहले आये थे.. काम के लिए। वो रिटायर हो गए हैं.. शॉप-फ्लोर पर एक एक्सीडेंट में उनका हाथ कट गया था। तब से वो रिटायर हो गए हैं। घर चलाने और उनकी दवाइयों के खर्च के लिए पेंशन पूरा नहीं पड़ता न.. इसलिए मैं भी काम करती हूँ।“

बिना कहे ही उसको जैसे मेरी मन की बात समझ में आ गयी। इतना तो मुझे समझ में आ गया की इस लड़की से आराम से बात चीत की जा सकती है। यह एहसास अपने आप में बहुत सुखद था.. इतने दिन गहरे मानसिक अवसाद में गुजारने, और फिर एक प्राणघातक दुर्घटना झेलने के बाद मुझमें वापस जीवन जीने की इच्छा प्रबल हो गयी थी।

खैर, आयशा को कुछ और कुरेदने पर उसने बताया की वैसे तो नर्स बनने, या फिर किसी तरह का करियर बनाने की उसने कभी सोची ही नहीं थी। निम्न-मध्यम वर्गीय परिवार से सम्बद्ध होने के कारण उसकी नियति उसको मालूम थी। जैसे तैसे तो उसने इंटरमीडिएट की परीक्षा बायोलॉजी साइंस से पास करी। बायोलॉजी लेने पर भी घर में बहुत हाय-तौबा मची।

‘आर्ट्स या होम साइंस क्यों नहीं लेती?’ कह कह कर नाक में दम कर दिया। लेकिन आज पीछे देख कर लगता है की अच्छा किया! अपने अब्बू के एक्सीडेंट के बाद उसने जनरल

नर्सिंग और मिडवाइफरी का कोर्स किया। जब तक कोर्स ख़तम हुआ तब तक उसकी अम्मी चल बसी, और घर की माली हालत बहुत खराब हो गयी। अच्छी बात यह रही की उसकी इस हॉस्पिटल में नर्सिंग का कार्य मिल गया, जिससे कुछ सहारा हो सका। यदि सब कुछ ठीक रहता तो पढाई लिखाई नहीं, वो किसी के बच्चे जन कर उनको पाल रही होती।

मैंने पूछा की वो और आगे नहीं पढना चाहती, तो उसने बताया की बिलकुल पढना चाहती है.. लेकिन बीएससी नर्सिंग का कोर्स दो साल का है.. और इस समय वो अपने काम से मुक्त नहीं हो सकती।

उसने यह भी बताया की घर ही नहीं, जान पहचान में भी सभी ने कितना बवाल मचाया। उसका नर्सिंग की पढाई करना जैसे सभी का ठेका हो गया। 'गैर मर्दों को छुएगी!' यह सभी के जीवन का मानो सबसे बड़ा मुद्दा बन गया। लेकिन वो कहते हैं न.. जब ज़रुरत होती है, तो हर बात छोटी हो जाती है। कुछ दिनों बाद सभी लोग चुप हो गए.. भारत की नर्स आज कल गल्फ और यूरोप में काफी डिमांड में हैं.. इसलिए पहले हाय तौबा मचाने वाले, अब उसके करियर में सिक्कों की खनक सुन कर रिश्तेदारी जोड़ने के लालच में चुप हो गए।

"और यह इतनी अच्छी इंग्लिश कैसे बोलती हो?" मैंने पूछा।

"जब इतनी कठिन ट्रेनिंग होती है, तो लगता है की क्यों न फिर इस मौके का पूरा फायदा उठाया जाय। लैब ट्रेनिंग, लाइब्रेरी, और हेल्थ सेंटर्स.. वहाँ अनगिनत घंटे बिताने के बाद बचे हुए समय में मैं डिस्कवरी और न्यूज़ चैनल देखती, और अंग्रेजी पढ़ती। बिना अंग्रेजी के आगे कैसे बढ़ा जा सकता है?" उसने एक बुद्धिमत्तापूर्ण उत्तर दिया। इसी बीच अश्विनी भी कमरे में आ गयी।

"दैट इस ग्रेट, आयशा! आपसे बात करके मुझे लग रहा है की अब मेरा केयर ठीक से होगा, एंड दैट आई ऍम इन सेफ हैंड्स!"

मेरी इस बात पर वो ख़ुशी से मुस्कुराई। हम तीनों कुछ देर तक इधर उधर की बातें करते रहे। आयशा ने मुझे आराम करने को कहा, लेकिन मैंने यह कह कर मना कर दिया की पिछले न जाने कितने महीनो से किसी से ढंग से बात नहीं किया – न घर के बाहर, और न ही घर के अन्दर! इसलिए, आज रोको मत.. अगर थक गया, तो मैंने खुद ही चुप हो कर सो

जाऊँगा। मेरी इस दलील पर दोनों ही लड़कियाँ चुप हो गयी, और हमने कुछ और देर तक बात चीत जारी रखी।

मुझे इस बात का अनुमान था की मेरे एक्सीडेंट के कारण अश्विनी की पढाई का काफी नुक्सान हो गया था, इसलिए मैंने उससे आग्रह किया की वो अब बेफिक्र हो कर अपने कोर्स को जल्दी जल्दी पूरा करने पर ध्यान लगाए। वैसे भी घर में खाना पकाने के लिए हमारी काम-वाली ने स्वीकार कर लिया था। मजे की बात यह है की अभी मेरा जीवन पूरी तरह से स्त्रियों के भरोसे पर टिका हुआ था।

"अच्छा.. मैं आप से एक बात पूछूं?" मैंने आयशा से कहा।

"हाँ, पूछिए न?"

"आपके नाम का मतलब क्या है?"

"ओह! हा हा.. आयशा शायद अरबी या फ़ारसी शब्द है.. और इसका मतलब है.. उम्म्म.. सुशील, सभ्य, हैप्पीनेस, आनंद, मेजेस्टी.. एक्चुअली बहुत सारे मीनिंग्स हैं.. लेकिन लड़कियों के लिए यूज़ होने से इसका मतलब हैप्पीनेस होना चाहिए.."

"वैरी नाईस!" कह कर मैं कुछ और देर तक चुप हो गया।

और फिर बिस्तर से उठने की कोशिश करने लगा।

"आपको उठना है?"

"हाँ.. एक्चुअली, टॉयलेट जाना है.."

"ओके" कह कर आयशा मेरी उठने में मदद करने लगी।

कोई दो तीन मिनट कोशिश करने के बाद, जिससे मुझे कम से कम तकलीफ़ हो, आयशा मुझे सहारा दे कर टॉयलेट तक पहुँचाया। इतना तो तय था की बिना उसके सहारे के मैं यह सब मामूली काम भी नहीं कर सकता था, लेकिन ऐसे ही किसी अनजान लड़की (जो की

उम्र में मुझसे काफी छोटी हो) के सामने निर्वस्त्र कैसे हुआ जा सकता है? एक वयस्क पुरुष के लिए इससे ज्यादा लाचारी और लज्जा का विषय और क्या हो सकता था?

"आयशा.. आप.. अब मैं देख लूँगा.." मैंने हिचकिचाते हुए कहा।

"नाउ वेट अ मिनट! आई थिंक वी नीड टू टॉक एंड सॉर्ट आउट समथिंग। मैं आपकी नर्स हूँ, तो सबसे पहला रूल यह है की आपको मेरे सामने शर्माने की कोई ज़रुरत नहीं है। आपके हाथ और पैर पर प्लास्टर चढ़ा हुआ है, और रिब्स पर भी चोटें हैं.. अगर आप पूरी तरह से ठीक होते तो मेरी ज़रुरत ही नहीं थी.. है न?"

"हाँ.. वो सब तो ठीक है लेकिन.."

"लेकिन वेकिन कुछ नहीं। आप अगर इस बात से शर्मा रहे हैं तो यह सोचिये की मैं आपको स्पंज बाथ, टॉयलेट, ड्रेसिंग भी करूंगी.. तो प्लीज.. ओफेन्देड मत फील कीजिए! ओके?

"ओह गॉड! कहना आसान है.."

"आई नो! बट वी विल ट्राई.. ओके? नाउ, लेट में हेल्प यू विद योर पजामा.."

कह कर उसने मुझे सहारा दिए हुए ही मेरे पजामे का नाड़ा ढीला कर दिया और मेरे पजामे को धीरे से नीचे सरका दिया। कोई और समय होता (मतलब अगर प्रिया होती) तो अब तक मेरा लिंग अपने पूर्ण उत्थान पर पहुँच कर छलांगे लगाने लगता, लेकिन इस समय शर्म, संकोच और नर्वसनेस होने के कारण मेरा लिंग एक छोटे से छुहारे के आकार का ही रहा। मैंने आयशा की तरफ देखने की हिम्मत नहीं की, लेकिन मुझे पूरी तरह से यकीन था की वो अवश्य ही उसी तरफ देख रही होगी, और उसके आकार पर मन ही मन हंस रही होगी..

खैर, जब मेरा पजामा यथोचित दूरी तक सरक गया, तो उसने मुझे सहारा दे कर कमोड पर बैठाया। मैंने कुछ देर तक कोशिश करी, लेकिन आयशा की उपस्थिति में मेरे लिए मूत्र करना संभव ही नहीं हो रहा था।

"कर लीजिये न.."

“थोड़ी प्राइवेसी मिल जाय... मुझसे हो नहीं पा रहा है ...”

“ओह सॉरी..!” कह कर वो बाथरूम से बाहर निकल गयी।

उसके जाते ही मन में कुछ शांति हुई - मैंने अपने जघन क्षेत्र की मांस-पेशियों को ढीला करने की कोशिश की और तत्क्षण ही मैंने मूत्र को बाहर निकलता महसूस किया। जब मैंने मूत्र कर लिया तो मैंने कुछ देर रुक कर आवाज़ लगाई,

“..आयशा?”

“जी.. आई..”

अन्दर आकर उसने सबसे पहले बाथरूम में नज़र दौड़ाई। एक तरफ उसको वेट-टिश्यु मिल गए। उसने उसमें से एक टिश्यु निकाल कर आधा फाड़ा, और मेरी तरफ मुखातिब हुई। उसने मुझे सहारा दे कर उठाया, और फिर मेरे लिंग को पकड़ कर उसके शिश्नाग्रच्छद को धीरे से पीछे की तरफ सरकाया उसको तीन-चार बार झटका दिया, जिससे मूत्र की बची हुई कुछ बूँदें निकल गई। फिर उसने वेट-टिश्यु की मदद से लिंग के सुपाड़े को ठीक से पोंछ दिया। इसके बाद हम दोनों वापस अपने कमरे में आ गए।

कमरे में आकर लेटने के कुछ देर तक हमने कोई बात नहीं करी। इसी बीच कामवाली आ गयी। आयशा ने उसको विशेष निर्देश दिए की घर और खासतौर पर मेरे कमरे की सफाई कैसे करी जाय, और यह भी की खाना कैसे बनाया जाय। यह निर्देश देते समय उसका अंदाज़ धौंस देने वाला नहीं था.. बल्कि यह साफ़ दिख रहा था की वो मेरी और कामवाली की मदद ही करना चाहती थी। सच में.. पहले ही दिन में आयशा का व्यक्तित्व, उसके बात करने का अंदाज़ और उसकी मुस्कान मेरे दिल-ओ-दिमाग पर छा गई।

रात में खाने के बाद तक आयशा घर पर ही थी, और संभव है की देर रात अपने घर गयी हो। रात में मेरे आँख एक बार खुली थी, लेकिन मैंने उसको वहाँ नहीं देखा। सवेरे जब आँख खुली तो उसको अपने बगल बैठा पाया।

“गुड मोर्निंग!”

मैंने उसकी आँखों में देखा। वही मुस्कुराती हुई आँखें, खिला हुआ चेहरा! मैं भी मुस्कुरा उठा। बगल में अश्विनी भी खड़ी हुई थी.. मैंने साइड टेबल पर रखी घडी पर नज़र डाली तो देखा की सवेरे के छः बजे थे!

"गुड मोर्निंग! आप रात में घर चली गईं थीं?"

"जी.."

"अरे! इतने रात में क्यों? सेफ नहीं रहता!"

"आई नो.. लेकिन अब्बू को बताया नहीं था.."

"उनकी देखभाल कौन करता है?"

"वो कर लेते हैं.. और खाना पीना हमारे पड़ोसी पका देते हैं.. इसलिए दिक्कत नहीं होती।"

"आयशा.. ऐसे तो अगर आप रात में घर जायेंगे तो ठीक नहीं रहेगा.. आप दिन में जाइए.. लेकिन सेफ रहना ज़रूरी है.."

"हम्म.."

"इससे मुझे एक आईडिया आ रहा है.. आप अपना सामान ले कर यही क्यों नहीं आ जातीं? हमारा स्टोर-रूम एक हाफ रूम जैसा है, और खाली पड़ा हुआ है। खाने पीने की सारी व्यवस्था यहीं हो जायेगी! और अश्विनी भी पढाई लिखाई कर रही है.. वो कम से कम फ्री हो जायेगी।"

"आप ऐसे क्यों कहते हैं जैसे मुझे आपकी इस हालत से कोई मुश्किल है? मैं भी आपकी सेवा करना चाहती हूँ.."

"अरे अश्विनी.. तुम नाराज़ मत हो! तुम्हारे कारण ही तो मैं बच सका हूँ.. लेकिन तुम जानती हो न की मुझे ज्यादा ख़ुशी तब मिलेगी, जब तुम अपनी पढाई पर ज्यादा ध्यान लगाओगी! है न? और मेरा क्या? मैं तो यहाँ चौबीसों घंटे पड़ा रहूँगा! हा हा!"

“आप जल्दी से ठीक हो जाओ.. आयशा और मैं, दोनों ही आपको जल्दी से ठीक कर देंगे.. है न आयशा?”

“बिलकुल.. चलिए, मैं आपको मोर्निंग एक्टिविटीज के लिए रेडी करती हूँ..”

“मैं भी आपकी मदद करती हूँ..” अश्विनी ने कहा।

“नहीं अश्विनी.. प्लीज.. मैंने तुम्हारे सामने वो सब नहीं कर पाऊँगा.. प्लीज ट्राई टू अंडरस्टैंड!”

“जी.. ठीक है..” अश्विनी ने अनमने ढंग से कहा, और कमरे से बाहर निकल गयी।

फिर आयशा ने मुझे सहारा दे कर बाथरूम पहुँचाया। कल इतनी बार उसके सामने नंगा होना पड़ा था, की आज मुझे बहुत कम शर्म आ रही थी। खैर, इस स्थिति को मन ही मन ज़ब्त कर के मैंने अपनी नित्य क्रिया करी, और वापस बिस्तर पर आ लेटा। आयशा ने मेरी साफ़ सफाई कर के मुझे बिस्तर पर लिटाया। तब तक अश्विनी चाय और सैंडविच बना कर ले आई, जिसको हम तीनों ने साथ मिल कर खाया। उसका कॉलेज सवेरे जल्दी शुरू हो जाता था, इसलिए उसने जल्दी ही हमसे विदा ली।

इस बीच में हमारी कामवाली आ गयी, और खाना पकाने के कार्य में जुट गयी।

“अथर्व, चलिए, आपको स्पंज बाथ दे देती हूँ?”

“स्पंज बाथ?”

“हाँ.. नहायेंगे नहीं तो एक तो आपको बेड-सोर हो जाएगा, और ऊपर से बदबू आने लगेगी..” कह कर उसने अपने नाक सिकोड़ी..

“अरे.. मैं तो बस ये कह रहा था की मैं खुद ही..”

“ओह गॉड! नॉट अगेन! हमने कल ही तो इस बारे में बात करी है.. आप बिलकुल सब कुछ करियेगा, लेकिन पूरी तरह से ठीक होने के बाद.. ओके?”

फिर इधर उधर देख कर, “मैं अभी आती हूँ..”

कह कर आयशा कमरे से बाहर निकल गई.. ज़रूर रसोई में गयी होगी। क्योंकि जब वो वापस आई तो उसके हाथ में एक मुलायम तौलिया, एक साफ़ चद्दर और गुनगुने पानी से भरी एक बाल्टी थी। कामवाली एक और बाल्टी में में ठंडा पानी ले आई थी। उसके जाने के बाद आयशा ने कमरे का दरवाज़ा थोड़ा बंद कर दिया और फिर मेरे कपड़े उतारने की प्रक्रिया करने लगी। मैं बुरी तरह से नर्वस था, लेकिन मैंने देखा की मेरी शर्ट उतारते समय आयशा के होंठों पर एक बहुत ही मंद मुस्कान थी, और उसकी आँखों में एक प्रसंशा भरी चमक। अगले पांच मिनट बाद, जब मैं पूरी तरह से निर्वस्त्र हो गया, तब उसकी बेहद मंद मुस्कान अब कुछ ज्यादा ही दिख रही थी।

“आयशा.. यू आर नॉट हेल्पिंग! आई ऍम नर्वस आलरेडी!!”

“ओह आई ऍम सॉरी! लेकिन आप नर्वस क्यों हैं?”

“अरे.. इस हालत में आपके सामने..”

“यू हैव अ नाईस मस्कुलर बॉडी! नर्वस तो.. मुझे होना चाहिए!” कह कर आयशा जोर से मुस्कुराई।

खैर, मैंने बात को आगे न खींचने का निर्णय लिया, और आयशा को उसका काम करने की छूट दे दी। वो तौलिये को भिगो कर मेरे पूरे शरीर को रगड़-रगड़ कर साफ करने लगी। गर्दन, सीना, पेट और बाहें साफ़ होने के बाद उसने मुझे धीरे से करवट बदलवाई, और पीठ, कमर, पुट्ठों और जांघों को उतने ही सावधानी से स्पंज बाथ देने लगी। मैं अचानक ही उछल गया – वो मेरी रीढ़ पर बारी-बारी से गर्म और ठंडा स्पंज करने लगी थी। उसने मुझे बताया की ऐसा करने से दिल और साँस के केन्द्र उत्तेजित हो जाते हैं, यह कई तरह के रोगों के निवारण करने में मदद करता है। एक बार फिर से उसने मेरी करवट बदल कर मुझे पीठ के बल लिटाया, और एक अलग छोटे तौलिये से मेरा चेहरा और सर पोंछकर सुखाने लगी।

साधारणतः, मेरा मेरी उत्तेजना पर अच्छा नियंत्रण रहता है। लेकिन एक अरसे से किसी भी तरह की यौन क्रिया न करने के कारण, मेरा लिंग बेकाबू सा हो गया। जैसे उसमें खुद ही

सोचने समझने की की शक्ति आ गयी हो। ऐसा हो ही नहीं सकता की उसको मेरा उत्तेजित लिंग न दिख रहा हो, लेकिन वो बिलकुल प्रोफेशनल तरीके से मेरी सफाई कर रही थी। आयशा मगन हो कर जब मेरी सफाई कर रही थी, तब मैं उसके ही शरीर का जायजा ले रहा था – उसका कद कोई साढ़े पांच फ़ीट रहा होगा। चेहरा मोहरा तो साधारण ही था, लेकिन उसकी मुस्कान और जीवंत आँखें उसको सुन्दर बना देती थीं। उसकी यूनिफार्म तो आरामदायक थी, लेकिन फिर भी उसके स्तन और उनका आकार समझ में आ रहा था। उसने स्तनाग्र भी खड़े हो कर यूनिफार्म के कपड़े को सामने से कुछ कुछ उभार रहे थे। उसने ज़रूर ही एक हल्का सा मेक-अप किया हुआ था.. कुल मिला कर वो सुन्दर लग रही थी।

इतने अरसे के बाद एक स्त्री का इस तरह का अन्तरंग सान्निध्य पा कर अब मेरा लिंग अपने पूरे तनाव पर पहुँच गया।

"अच्छा है 'ये' इस तरह से खड़ा हुआ है... सफाई करने में आसानी रहेगी!"

वो मुझे सुना रही थी, या खुद से बात कर रही थी?

उसने मेरा लिंग अपने हाथ में पकड़ा और उसकी सफाई करने लगी। उसके छूते ही मुझे एक झटका सा लगा.. वैसे यह झटका मुझे ही नहीं, उसको भी लगा। जब मेरा लिंग पूरी तरह से जीवंत होता है, तो उसका आकार, उसका घनत्व और उसकी दृढ़ता कभी कभी मुझे भी आश्चर्यचकित कर देती है। मुझे यह तो नहीं मालूम, की आयशा ने ऐसा लिंग... या फिर कोई भी लिंग कभी भी अपने हाथ में पकड़ा है या नहीं, लेकिन इतना तो तय है की उस पर असर बखूबी हो रहा था।

अभी तक इतने आत्म-विश्वास के साथ मेरी सफाई करने के बाद, उसकी भी घबराहट दिखाई देने लगी। उसने धीरे धीरे, मानो डरते हुए, मेरे लिंग को गीले तौलिये से साफ़ करना शुरू किया। मानो न मानो, मुझे उसका यह बदला हुआ रूप अब बहुत अच्छा लग रहा था। मुझे अपने लिंग, और उसके बल में बहुत भरोसा था, और मुझे लगता था की उसमें एक जादुई शक्ति है। जो भी लड़कियाँ मेरे जीवन में आईं, वो उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकीं। आयशा के हाथों का स्पर्श बड़ा ही आनंददायक साबित हो रहा था। लेकिन कुछ होता, उससे पहले ही मेरे लिंग और अण्डकोषों की सफाई हो गई, और आयशा जल्दी से तौलिया और बाल्टी उठा कर कमरे से बाहर हो गई।

आने से पहले उसने मुझे खुद को संयत करने का समुचित समय दिया। कुछ देर की निष्क्रियता के बाद तना हुआ लिंग वापस शिथिल हो गया। आयशा कुछ देर बाद वापस कमरे में आई.. वो हमेशा की तरह मुस्कुरा नहीं रही थी.. लग रहा था की जैसे कुछ तनाव में हो। लेकिन मुझसे जैसे ही उसकी आँखें मिलीं, उसकी मुस्कान वापस आ गयी।

उसने मुझे सहारा दे कर उठाया, और एक आरामदायक कुर्सी पर बैठाया और चद्दर बदला। फिर मुझे वापस लिटा कर, एक नए चद्दर से ढक कर, मेरे और अपने लिए नाश्ता ले आई, और हम दोनों नाश्ता करते हुए वापस बातें करने लगे।

उसने मुझे उस दिन के बारे में बताया, जब उसको बतौर नर्स पहली नौकरी मिली थी। बंधी हुई तनख्वाह और अब्बू की मदद करने के ख़याल से ही रोमांच हो गया था उसको। कितनी खुश थी वह नौकरी पा कर! पहली बार नौकरी के लिए वो सफ़ेद यूनिफार्म पहनना, और फिर आइने के सामने खड़े होकर खुद को निहारना.. उसको आज भी याद है!

जहाँ उसको काम मिला था, वो एक नर्सिंग होम था। वहाँ पहले से काम करने वाली नर्स ने उसे धीरे-धीरे काम समझाना और सिखाना शुरू कर दिया। शुरू शुरू में वो मरीजों को इंजेक्शन देती थी, उनके चार्ट देख कर दवाई देती, आपरेशन के समय रोगियों को सम्हालती थी। वो ऑपरेशन होने पर शरीर से निकला कचरा और लोथड़े उठा कर फेंकने का भी काम करती। कई बार उस कचरे में साबूत बच्चा भी होता। सोचिए.. एक पूरा सबूत बच्चा! शुरू शुरू में इस काम में उबकाई आती, जी मचलाता और वापस काम पर आने का मन नहीं करता। लेकिन, धीरे धीरे वह इसकी आदी हो गई। अब वो सब बर्दाश्त कर लेती थी।

लेकिन उससे यह बात छुपी नहीं की यह और ऐसे कई नर्सिंग होम इस शहर का गटर थीं.. किस धड़ल्ले से यहाँ अवैध गर्भपात किया जाता है। जानते सभी हैं, लेकिन कोई कुछ कहता नहीं। नर्सिंग होम में काम करने वाले सारे कर्मचारी गूंगे और अंधे बन कर रहते हैं। आयशा ने भी ऐसे ही कुछ ही महीनों में कम बोलना सीख लिया... चुप रहना सीख लिया... और चेहरे को सपाट बनाना सीख लिया था। जल्दी ही उसका मन उकता गया और उसने वह नौकरी छोड़ दी, और रोगियों के साथ रह कर उनकी देखभाल करने का काम करने लगी।

यह सब बताने के बाद उसने मेरे बारे में पूछा। मैंने उत्तर में अपने काम के बारे में उसको बताया।

उसने फिर कुछ व्यक्तिगत सवाल पूछे..

“आपकी और मैडम की लव मैरिज हुई थी न?” उसने दीवार पर टंगी प्रिया की तस्वीर देखते हुए कहा।

“हाँ.. मैंने उसको उत्तराँचल में देखा था पहली बार... लव ऐट फर्स्ट साईट!” मैंने मुस्कुराते हुए कहा..

“आप उनसे बहुत प्यार करते हैं..”

प्रिया के बारे में याद आते ही उदासी छाने लगी।

“आप उदास हैं...” उसने कहा।

जब मैंने काफी देर तक कुछ नहीं कहा तो,

“आई ऍम सॉरी..”

“नहीं आयशा! डोंट से सॉरी! लेकिन.. प्रिया के जाने के बाद बहुत अकेला हो गया। न कुछ करने का मन होता, न ही जीने का.. जब एक्सीडेंट हो रहा था, तो लगा की अब इस दुःख से छुट्टी मिल जायेगी.. लेकिन.. लगता है की और जीना लिखा है किस्मत में!”

“अरे! आप ऐसे कैसे बोल रहे हैं? ज़रा सोचिये, जन्नत से मैडम आपको इस हालत में देखेंगी, तो क्या उनको अच्छा लगेगा? वो तो आपके लिए बस ख़ुशियाँ ही चाहती रही होंगी.. आपको ऐसे दुःख में देख कर उनको भी तो बहुत दुःख होगा न?”

“लेकिन फिर भी.. उसकी बहुत याद आती है..”

“याद तो आनी ही चाहिए! लेकिन उनको याद करके उदास मत होइए.. बल्कि खुश होइए.. साथ बिताये हुए ख़ुशी के मौके याद करिए.. और.. आप ऐसे ही उदास मत होइए। मैं हूँ न? मैं आपकी अच्छी दोस्त बन सकती हूँ! आप मुझसे दोस्ती करेंगे?”

“आयशा! आप पहले ही मेरी दोस्त बन चुकी हैं!” मैं मुस्कुराया।

बस.. ऐसे ही मेरे सुधार की गाडी आगे चल निकली। अस्पताल में तो समय बीतता ही नहीं था.. लेकिन यहाँ पर आयशा मेरे साथ मेरी छाया की तरह बनी रहती। लगता ही नहीं था की वो नर्स है.. बल्कि लगता की वो.. की वो.. मेरी पत्नी है! मेरी हर ज़रूरत को मुझसे भी पहले महसूस कर पूरा करने की कोशिश करती, हर लिहाज से मेरा पूरा ख़याल रखती।

दोपहर बाद अश्विनी कॉलेज से आती, और वो भी मेरे साथ ही रहती। मेरा जीवन वापस प्रेम से लबालब होने लगा। दोपहर बाद ही लगभग हर दिन कोई न कोई आ ही जाता - कभी नीचे मेडिकल स्टोर से कोई आ जाता, कभी कोई परिचित, कभी कोई ऑफिस से... तो कभी कोई पड़ोसी! अब तो जैसे आदत हो गयी.. दोपहर बाद आने वालों की प्रतीक्षा करना! लेकिन यह तो है की अब तक मुझे संसार और यहाँ के लोगों के बारे में जितनी भी गलतफहमियां थीं, वो सब ख़तम हो गईं। मैं समझ गया की दुनिया कठोर नहीं, बल्कि संवेदनशील है। मेरे एक्सीडेंट के बारे में जिसने भी सुना, वो सुनकर परेशान हो गया। भागा भागा चला आया देखने!

ऐसा कोई दिन नहीं गया जब प्रिया की याद न आई हो... उसकी याद आती तो मैं आँखें मूँद कर अतीत के संसार की यात्रा कर आता, उसके बारे में सोच कर आँसू भी ढुलका लेता, और भविष्य की चिंता में भी डूब जाता। कभी दर्द, तो कभी पीड़ा-भरी याद में जब मैं अचानक ही चिल्ला उठता, तो आयशा एक झटके से किसी फ़रिश्ते की तरह मुझे सम्हाल लेती।

कभी कभी उसकी बाते मुझे बोर भी करतीं। लेकिन उससे बात करना दिन का सबसे सुखद अनुभव होता था। वो रोज़ मुझसे बात करती, मुझे दवा देती, नहलाती, साफ़-सफाई करती, कभी कभार मुझे उपन्यास पढ़ कर सुनाती, तो कभी अखबार! वो मेरी फिजियोथेरेपी भी करती। ये सिलसिला चलता रहा। और उसी के साथ मेरी सेहत भी वापस आने लगी। हाथों और पैरों की हड्डियाँ जुड़ गईं, और उनमें ताकत वापस आने लगी। मैं अब खुद से चल फिर सकता था, और कई सारे छोटे मोटे काम कर सकता था.. लेकिन आयशा की आदत मुझे कुछ ऐसी लग गयी थी की मैं उसको मना नहीं कर पाता था। मेरी हालत में सुधार के बारे में उसको भी मालूम था, लेकिन वो भी कभी ऐसे नहीं दिखाती थी की उसको मुझे नहलाने इत्यादि में कोई झिझक नहीं महसूस होती थी।

एक दिन सवेरे वो मुझको स्पंज बाथ दे रही थी। वो हाँलाकि मेरे घर में ही रहती थी, लेकिन फिर भी पूरी इमानदारी से वो अपनी यूनिफार्म पहन कर ही मेरी देखभाल करती थी। लेकिन, आज जब वो नहा कर बाथरूम से बाहर आई, तो उसने आरामदायक, कैसुअल कपड़े पहने हुए थे। उसको टी-शर्ट और होसरी पजामा पहने देख कर मुझे अचम्भा हुआ, और अच्छा भी लगा।

"आयशा, तुम कितनी अच्छी लग रही हो आज!"

वो मुस्कुराई।

"जी.. वो.. मैं.. दो जोड़ी यूनिफार्म है.. और दोनों ही धोने में डाली हुई है.."

"आई ऍम नॉट कम्प्लैनिंग.. मैं तो कहता हूँ की तुम ऐसे ही रहा करो.."

हाँलाकि ये कोई कामुक कपड़े नहीं थी, लेकिन फिर भी बिना किसी बंधन के (उसने ब्रा नहीं पहनी हुई थी) उसके स्तन उसकी हर हरकत पर जिस प्रकार से हिल रहे थे, और जिस तरह से उसके पजामे ने उसके नितम्बो को उभार रखा था, उससे मेरे लिंग का स्तम्भन जल्दी कम नहीं होने वाला था। हर रोज़ की तरह जब वो कमरे से बाहर जाने को हुई, तो मैंने लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया।

"मेरे पास रहो.." न जाने कैसे मेरे मुँह से यह तीन शब्द निकल गए। निश्चित है, मेरी आँखों में वासना के डोरे आयशा को साफ़ दिख रहे होंगे!

आयशा कुछ नर्वस दिख रही थी। उसके होंठ कांप से रहे थे, और होंठों के ऊपर पसीने की एक पतली सी परत साफ़ दिख रही थी। मैं भी नर्वस था.. स्पंज-बाथ के बाद नग्नावस्था में लेटा हुआ था। न जाने क्या होने वाला था आज..!

"अथर्व..?"

मैंने कुछ नहीं कहा, बस उसका हाथ पकड़े हुए ही उसको पहले तो बिस्तर पर बैठाया.. और उसका हाथ तब तक अपनी तरह खींचता रहा जब तक वो मेरे बराबर ही बिस्तर पर

लेट नहीं गयी। जिस तरह से वो निर्विरोध यह सब कर रही थी, उससे तो तय था की आज हम दोनों का मिलन होना ही था।

“हम दोनों दोस्त हैं न?” वो पूछ रही थी, की बता रही थी? कुछ समझ नहीं आया.. लेकिन यह तो तय था की वो नर्वस बहुत थी।

“यस.. सो ट्रस्ट मी! ओके?” मैंने कहा।

उसके लेटते ही मैंने उसके होंठों पर एक चुम्बन रसीद कर दिया। उसके होंठ बहुत ही नरम थे। बहुत दिनों बाद किसी लड़की के होंठ चूमने को मिला! इसलिए मैंने चुम्बन जारी रखा और कुछ देर में मैंने उसके होंठ चूसने शुरू कर दिए। मैं उसके एक एक होंठ को अपने होंठों के बीच में दबा कर उनको जीभ से दुलारता। आयशा चुम्बन करने में अनाड़ी थी। मुझे समझ में आ गया की यह सब उसके साथ पहली बार हो रहा है (मतलब, हर बात में अनाड़ी थी)। मैंने जब अपनी जीभ उसके मुंह में डालने की कोशिश करी, तो कुछ हिचक के बाद उसने अपना मुंह खोल दिया। अब हमारी जीभें एक दूसरे के मुँह में थीं। इतने दिनों बाद ऐसा चुम्बन करने में मुझे बहुत आनंद आ रहा था।

चूमते हुए ही मेरा हाथ उसके सर और उसके बालों में फिरने लगा.. एकदम कोमल, मुलायम बाल!

“तुम्हारे बाल बहुत सुन्दर हैं.. एकदम कामुक!” इस शब्द का प्रयोग उसके सामने मैंने एक तो पहली बार किया और दूसरा, जान-बूझ कर किया। मैं चाहता था की हमारी आपस में हिचक दूर हो जाय। लेकिन आयशा नर्वस ही रही..

“हाँ.. सिर्फ बाल ही हैं..” शायद वो आगे ‘कामुक’ कहना चाहती थी, लेकिन हिचक रही थी।

उसको चूमते हुए मेरा हाथ उसके एक स्तन पर आ गया। जैसा मैंने बताया था, उसने ब्रा नहीं पहनी थी और उत्तेजना के मारे उसके स्तनाग्र खड़े हुए थे। उसने झट से अपने हाथ से मेरे हाथ को पकड़ लिया। लेकिन उसके पकड़ने से मैं रुक नहीं सकता था, लिहाजा, मैंने उसका स्तन दबाना शुरू किया। कुछ ही देर में उसकी पकड़ कमज़ोर हो गयी और वो आहें

भरने लगी। मैंने चुम्बन लेना जारी रखा, और साथ ही साथ उसकी टी-शर्ट को ऊपर उठाने लगा।

“नहीं.. प्लीज.. मुझे नंगी मत करिए!”

“देखते हैं न.. की तुम्हारा और क्या क्या कामुक है!”

“और कुछ भी कामुक नहीं है.. मैंने आपको बताया न!” आयशा विरोध नहीं कर रही थी.. मुझे ऐसा लग रहा था की यह एक सामान्य सा वार्तालाप है।

“आयशा.. आज हम दोनों रुक नहीं पाएँगे.. न तुम, और न ही मैं! ... लेकिन अगर तुम वाकई नहीं चाहती हो, तो हम ये नहीं करेंगे..”

कह कर मैं कुछ देर के लिए रुक गया, और उसकी किसी प्रतिक्रिया का इंतज़ार करने लगा। जब उसने कुछ विरोध नहीं किया और बिस्तर से उठने की कोई कोशिश नहीं करी, तो मैंने उसकी टी-शर्ट उसके शरीर से अलग कर दी। सामने का दृश्य देख कर आनंद आ गया – छत्तीस इंच के भरे पूरे गोल स्तन! लाल-भूरे रंग के छोटे छोटे स्तनाग्र।

कहने की आवश्यकता नहीं की मैंने उसके स्तनों को दबाते हुए चूसना आरम्भ कर दिया। आयशा भी अभी खुल कर आनंद लेने लगी। आदमी की अजीब हालत होती है – किसी भी उम्र का हो, अगर उसके सामने किसी लड़की या स्त्री का स्तन हो, तो उनको बिना पिए रह नहीं सकता।

‘ओह भगवान्! कितने दिन हो गए!’

‘ओह भगवान्! कितने दिन हो गए!’

मैं किसी भूखे बच्चे की तरह आयशा से लिपट कर उसका स्तन पी रहा था, और उनसे खेल रहा था। आयशा आँखें बंद किये हुए इस अनोखे अनुभव का मज़ा ले रही थी। उसकी भी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी – जो की उसकी भारी होती सांसों से परिलक्षित हो रहा था। वो खुद भी मेरे सर को अपने स्तन से सटा कर रखे हुए थी। उसने मेरे शरीर को सहलाना आरम्भ किया, और ऐसे सहलाते हुए उसका हाथ मेरे लिंग पर पहुंचा! साफ़ सफाई करते

समय वो बिलकुल भी संकोच नहीं करती थी, लेकिन इस समय उसने अपना हाथ तुरंत हटा लिया।

“क्या हुआ?”

“य्य्य्ये बहुत बड़ा है।“

एक बार मैंने एक चुटकुला सुना था, जिसमे दुनिया के सबसे बड़े झूठों में एक यह बताया गया था की जब औरत किसी मर्द को कहे की तुम्हारा पुरुषांग बहुत बड़ा है।

अक्सर यह दलील दी जाती है की जब योनि में से पूरा बच्चा निकल आता है, तो फिर लिंग का साइज़ क्या चीज़ है? उसका उत्तर यह है की जब स्त्री प्रजनन करने वाली होती है, तो होर्मोन्स के प्रभाव से उसके शरीर में (ख़ास तौर पर जघन क्षेत्रों में) अभूतपूर्व लचीलापन आ जाता है.. यह क्रिया सामान्य अवस्था में नहीं होती है.. इसलिए अगर लिंग बड़ा है, और स्त्री ऐसा कहे, तो यह बात सुननी चाहिए, और आराम से काम करना चाहिए।

“आर यू ओके, आयशा?”

“पता नहीं..” फिर कुछ देर रुक कर, “.. मुझे डर लग रहा है, अथर्व! अभी जो हो रहा है, मैं उसके लिए बिलकुल भी रेडी नहीं थी... समझ नहीं आ रहा है की मैं क्या करूँ..!”

“तुमको कुछ भी करने से डर लग रहा है?” मैंने पूछा। आयशा वाकई डरी हुई लग रही थी।

“व्व्व्वो.. मैं.. आई.. आई ऍम स्टिल अ वर्जिन!”

“व्ही डोंट नीड टू डू एनीथिंग, इफ़ यू डोंट वांट टू, स्वीटी!” मैंने आयशा को स्वान्त्वाना देते हुए कहा, “व्ही कैन जस्ट बी विद ईच अदर!”

मेरी बात से आयशा कुछ तो शांत हुई.. लेकिन फिर उसकी आँखें मेरे पूरी तरह से सूजे हुए लिंग पर पड़ी।

“लेकिन... लेकिन.. आप क्या ‘करना’ नहीं चाहते?”

मैंने आयशा को अपनी बाहों में लेते हुए शांत स्वर में कहा, “बिलकुल करना चाहता हूँ.. लेकिन सिर्फ तभी, जब तुम भी चाहती हो। तुमने कभी सहवास नहीं किया.. इसलिए अब यह तो मेरी जिम्मेदारी है की तुमको उसका पूरा आनंद मिले.. और उसके लिए सबसे पहले तुम्हारी रज़ामंदी चाहिए.. है न?”

मेरी इस बात पर आयशा मुझसे और चिपक सी गई, और उसने मेरे सीने पर अपना हाथ रख दिया। मैं इस समय उसके दिल की धड़कन सुन सकता था। फिर उसने एक गहरी सी सांस भरी और सर हिला कर हामी भरी।

“क्या हुआ आयशा?”

“रज़ामंदी है..”

“हंय?”

“आपने कहा न, की रज़ामंदी चाहिए? तो.. रज़ामंदी है!”

“पक्का आयशा? क्योंकि एक समय के बाद मैं भी खुद को रोक नहीं पाऊँगा!”

“पक्का.. बस, थोड़ा सम्हाल कर करिएगा.. सुना है की बहुत दर्द होता है!”

“आयशा, डरो मत! मैं तुमको दर्द नहीं होने दूंगा... बस, कोशिश कर के मजे करो! चलो, अभी जूनियर से कुछ जान पहचान बढ़ाओ..” मैंने मुस्कुराते हुए उसको हौसला दिया।

उसने हिचकते हुए मेरे लिंग को अपनी हथेली में पकड़ा और ऊपर नीचे करने लगी, उधर मैंने भी उसके पजामे के ऊपर से ही उसकी योनि को धीरे धीरे सहलाना शुरू किया। ऐसा अनुभव उसको पहली बार हो रहा था, इसलिए कुछ ही देर में आयशा बेकाबू हो गयी। लेकिन मैंने उसकी योनि का मर्दन जारी रखा। उसका रस निकलने लग गया था, क्योंकि पजामे के सामने का हिस्सा गीला और चिपचिपा हो गया था। फिर कोई दस मिनट बाद मैंने अपना हाथ उसके पजामे के अन्दर डाल कर उसकी योनि की टोह लेनी आरम्भ करी। आयशा कामुक आनंद के शिखर पर पहुँच गयी थी।

कुछ ही क्षणों में मैंने अपनी उंगली ज़ोर-ज़ोर से उसकी योनि पर रगड़ना शुरू किया, और वहाँ का गीलापन, और गर्मी अपनी उंगली पर महसूस किया। वो इस समय अपनी पीठ के बल बिस्तर पर निढाल लेट गयी थी और साथ ही साथ अपनी टाँगें भी कुछ खोल दी थीं, जिससे मेरे हाथ को अधिक जगह मिल सके। मैंने अपनी तर्जनी उंगली को उसकी योनि में घुसाने लगा। एक पल तो आयशा ने अपनी साँसें रोक ली, लेकिन उंगली पूरी अन्दर घुस जाने के बाद उसने राहत में सांस छोड़ी। उसकी योनि प्रिया की योनि के जैसे की कसी हुई थी! उतनी ही तंग! लेकिन आश्चर्य की बात है की वो कोमल भी बहुत थी! और, वहाँ पर काफी बाल भी थे.. आनंद आने वाला है!

कुछ देर तक उंगली को उसकी योनि के अन्दर बाहर करने के बाद आयशा दोबारा अपने चरम पर पहुँच गयी। उसकी कामुक आहें निकलने लगीं। जब तक उसने आहें भरीं, तब तक मैंने उंगली से मैथुन जारी रखा, लेकिन जब वो अंततः शांत हुई, तो मैंने उंगली निकाल ली और सुस्ताने लगा।

"आप रुक क्यों गये?" उसने पूछा।

"अब तो मेन एक्ट का टाइम है.. तुम रेडी हो?"

"बाप रे! अभी ख़तम नहीं हुआ? मैं तो थक गयी.. ओह्ह..."

"अभी कहाँ ख़तम? अभी तो हमें 'कनेक्ट' होना है.. तभी तो पूरा होगा.."

कह कर मैंने अपने लिंग की ओर इशारा किया, और उसका पजामा नीचे सरका कर उसके शरीर से मुक्त कर दिया। अब हम दोनों ही पूरी तरह नग्न मेरे बिस्तर पर थे। मैंने वापस उसके दोनों स्तनों को अपने हाथों में लेकर उसको मसलने लगा। वो पुनः वासना के सागर में गोते लगाने लगी। मैंने उसके कन्धों को चूमना शुरू कर दिया और वहाँ से होते हुए उसके कान को चूमा और उसकी लोलकी को चूसने लगा।

"आयशा, क्या तुम्हे अच्छा नही लग रहा?"

उसने सिर्फ सर हिला कर हामी भरी।

मैंने उसके हाथ में अपना लिंग दिया। कमाल की बात है आयशा के मज़बूत, नर्स वाले हाथ इस समय मेरे लिंग पर काफी मुलायम और नाज़ुक महसूस हो रहे थे। उधर मैंने उसके शरीर को चूमना और चाटना जारी रखा। मैं चूमते हुए उसकी गर्दन से होते हुए उसके पेट, और फिर वहाँ से उसकी योनि को चूमने और चाटने लगा। मैं जीभ की नोक से उसकी योनि के भीतर भी चूम रहा था। अभी कुछ ही समय पहले रिसा हुआ योनि-रस काफी स्वादिष्ट था। अब मैं भी रुकने की हालत में नहीं था, लेकिन फिर भी मैंने जैसे तैसे खुद पर काबू रखते हुए उसकी योनि चाटता रहा। कुछ देर बाद वो तीसरी बार स्खलित हो गयी। उसकी योनि का रंग उत्तेजना से गुलाबी हो गया था।

खैर, अंततः मैंने अपना लिंग उसकी टाँगों के बीच योनि के द्वार पर टिकाया, और धीरे धीरे अंदर डालने लगा। उसकी योनि काफी कसी हुई थी। आयशा गहरी गहरी साँसे भरते हुए मेरे लिंग को ग्रहण करना आरम्भ किया। खैर मैंने धीरे धीरे लिंग की पूरी लम्बाई उसकी योनि में डाल दी, और धीरे धीरे आगे पीछे करने लगा। न तो मेरे पैरों में इतनी ताकत ही, और न ही हाथों में, की वो मेरे शरीर का बोझ ठीक से उठा सके और धक्के भी लगाने में मदद कर सके.. लेकिन जब इच्छाएं बलवती हो जाती हैं तो फिर किस बात का बस चलता है मानुस पर? वैसे भी, कामोत्तेजना इतनी देर से थी की गिने चुने धक्को में ही मेरा काम हो जाना था। दिमाग में बस यही बात चल रही थी की कितनी जल्दी और कैसे अपना वीर्य आयशा के अन्दर स्खलित कर दूं। यह एक निहायत ही मतलबी सोच थी, लेकिन क्या करता? उस समय शरीर पर मेरा अपना बस लगभग नहीं के बराबर ही था। आयशा अगर मदद न करती, तो कुछ भी नहीं कर पाता.. उसी ने खुद-ब-खुद अपनी टाँगे इतनी खोल दी थीं जिससे मेरी गतिविधि आसान इसे हो जाय। मुझे नहीं मालूम की उसको अपने जीवन के पहले सहवास से क्या आशाएं थीं, लेकिन जब मैंने उसको देखा तो उसकी आँखें बंद थीं और उसके चेहरे के भाव ने लग रहा था की उसको भी सहवास का आनंद आ रहा था।

मन में तो यह इच्छा हुई की बहुत देर तक किया जाय, लेकिन अपने शरीर से मैं खुद ही लाचार हो गया। कुछ ही धक्कों बाद मुझे महसूस हुआ की मैं स्खलित होने वाला हूँ। इसलिए मैंने तुरंत ही अपने लिंग को बाहर निकाल लिया। आयशा चौंकी।

“क्या हुआ?”

“नहीं.. कहीं तुम्हारे अन्दर ही एजाकुलेट (वीर्यपात) न कर दूं इसलिए बाहर निकाल लिया.. कहीं तुम प्रेग्नेंट हो गयी तो?”

मेरी इस बात पर आयशा मुस्कुराई, और मुझे चूमते हुए बोली,

“आपको पता है, की आपकी इसी बात पर तो मैं आपसे ‘करने’ के लिए तैयार हुई। मुझे हमेशा से मालूम था की आप मेरा किसी भी तरीके से नुकसान नहीं होने देंगे.. लेकिन मुझे इस बात की कोई चिंता नहीं है। मैं एक नर्स हूँ... एंड, आई नो हाऊ टू कीप सेफ! नाउ प्लीज, गो बैक इन..”

“आर यू श्योर, स्वीटी?”

“यस हनी! आई वांट योर सीमन इनसाइड मी! प्लीज डू इट!”

मैं उसकी बात से थोड़ा भावुक हो गया, उसको कुछ देर प्यार से देखा, और वापस उसकी योनि की फाँकों को अपनी उँगलियों की सहायता से अलग कर के अपना लिंग अन्दर डाल दिया। इस घर्षण से आयशा की पुनः आहें निकल गईं। अब बस चंद धक्कों की ही बात थी.. मेरे भीतर का महीनो से संचित वीर्य बह निकला और आयशा की कोख में समां गया।

मैं वीर्य छोड़ने, और आयशा वीर्य को ग्रहण करने के एहसास से आंदोलित हो गए.. हम दोनों ही आनंद में आहें भरने लगे। उत्तेजना के शिखर पर पहुँचने का मुझ पर एक और भी असर हुआ.. स्खलित होते ही मेरे हाथ पांव कांप गए.. और मेरा भार सम्हाल नहीं पाए। ऐसे और क्या होना था? मैंने भदभदा कर आयशा के ऊपर ही गिर पड़ा, जैसे तैसे सम्हालते हुए भी मेरा लगभग आधा भार उस बेचारी पर गिर गया! संभव है की उत्तेजना के उन क्षणों में रक्त संचार और रक्त दाब इतना होता हो की उसको कुछ पता न चला हो, लेकिन मेरी बेइज्जती हो गयी!

“गाट यू.. गाट यू...” उसने मुझे सम्हालते हुए कहा। वाकई उसने मुझे सम्हाल लिया था.. उसकी बाहें मेरे पीठ पर लिपटी हुई थीं, और उसकी टाँगे मेरे नितम्बों पर।

“सॉरी” मैं बस इतना की कह पाया!

“सॉरी? किस बात का? आपने आज मुझे वो ख़ुशी दी है जिसके बारे में मैं ठीक से सोच भी नहीं सकती थी! सो, थैंक यू! आज आपने मुझे कम्पलीट कर दिया! आई ऍम सो हैप्पी!”

“तुमको दर्द तो नहीं हुआ!”

“हुआ.. लेकिन.. हम्म.. शुरू शुरू में मैं यह नहीं करना चाहती थी.. लेकिन फिर अचानक ही मुझे ऐसा लगा की मुझे यह करना ही है! और यह एकसास आते ही दर्द गायब हो गया!”

मैंने उसके माथे पर एक दो बार चूमा और कहा, “आर यू श्योर.. आई मीन, आर यू ओके विद आवर न्यू रिलेशनशिप?”

आयशा मुस्कुराई, “आई ऍम! आपको जब मन करे, मुझे बताइयेगा! और मुझे लगता है की मुझे भी इसकी (मेरे लिंग की तरफ इशारा करते हुए) बहुत ज़रुरत पड़ने वाली है! ही ही ही!”

२६

अश्विनी की नजर में:

आयशा के अथक प्रयासों का फल अब दिखने लग गया था। समय समय पर दवाइयाँ वगैरह देना, अथर्व की पूरी देखभाल करना, उनको व्यायाम करवाना और उनकी फिजियोथेरेपी करना। इन सब के कारण अथर्व की अवस्था अब काफी अच्छी हो गयी थी। मैंने एक और बात देखी - बहुत दिनों से देख रही हूँ की अथर्व और आयशा की नजदीकियां बढ़ती जा रही हैं। अथर्व स्पष्ट रूप से पहले से काफी खुश दिखाई देते हैं। उत्तराखंड त्रासदी के बाद से पहली बार उनको इतना खुश देखा है। मुझे ख़ुशी है की उनके स्वास्थ्य में काफी सुधार है, और यह भी लग रहा है की वो भावनात्मक और मानसिक अवसाद से अब काफी उबर चुके हैं।

उनके स्वास्थ्य में कई सारे सकारात्मक सुधार भी हैं.. अथर्व चल फिर पाते हैं... आज कल घर से ही अपने ऑफीस का काम भी कर लेते हैं... वैसे डॉक्टर ने उनको कुछ भी करने से माना किया है, लेकिन वो जिस तरह के व्यक्ति हैं... खाली नही बैठ सकते इसलिए एक तरह से अच्छी बात है की वो अपने काम में मशगूल रहते हैं. सवेरे उठने के बाद वो कुछ देर टहलते भी हैं।

लेकिन दुःख इस बात का है की मैं उनके इस सुधार का कारण नहीं बन पाई हूँ। यह सब कुछ आयशा के कारण है – उसके आने से वाकई घर की स्थिति में बहुत सारे सकारात्मक सुधार आये हैं। वो आई तो अथर्व की नर्स बन कर थी, लेकिन कुछ ही दिनों में उनकी देखभाल के साथ ही साथ मेरी भी देखभाल करती थी – मेरे खाने पीने, सोने, स्वास्थ्य, और पढाई लिखाई में अथर्व के बराबर ही रूचि लेती थी और यह भी सुनिश्चित करती थी की सब कुछ सुचारू रूप से हो। घर के संचालन में आयशा को अपार दक्षता प्राप्त थी। फ्लोरेंस नाइटिंगेल के जैसे ही घर में घूम घूम कर, ढूंढ ढूंढ कर काम करती! मुझे भी कभी कभी लगता था की जैसे मेरी दीदी या माँ ही आयशा के रूप में वापस आ गए हैं! सच में! बहुत बार तो आयशा को दीदी या मम्मी कह कर बुलाने का मन होता! मेरे मन से यह बात कि वो नर्स है, कब की चली गई!

ये सब अच्छी बातें थीं.. लेकिन मुझे एक बात ज़रूर खटकती थी। और वो यह, की मेरा पत्ता साफ़ हो रहा था.. जवानी में मैंने सिर्फ एक ही पुरुष की चाह करी थी, और वो है

अथर्व! लेकिन अब वो ही मेरी पहुँच से दूर होते जा रहे थे। मुझे शक ही नहीं, यकीन भी था की आयशा और अथर्व में एक प्रेम-सम्बन्ध बन गया है। वो अलग बात है की मेरे घर में रहने पर ऐसा कुछ होता नहीं दिखता था... संभवतः वो दोनों सतर्क रहते थे। आयशा हमारे घर पर ही रहती थी (अभी वो सप्ताह में एक दिन अपने घर जाने लग गयी थी), और अब इतने दिनों के बाद हमारे परिवार का ही अभिन्न हिस्सा बन गयी थी।

एक रोज़, सप्ताहांत में, मैं सवेरे सवेरे उठी – उस रोज़ कुछ जल्दी ही उठ गयी थी। आज के दिन आयशा अपने घर जाती थी। मैंने सोचा की क्यों न आज काम-वाली बाई के बजाय मैं ही नाश्ता और चाय बना दूं और सब लोग साथ मिल कर आलस्य भरे सप्ताहांत का आरम्भ करें। मैं अपने कमरे से बाहर निकल कर दालान में आई ही थी, की मुझे अथर्व के कमरे से दबी दबी, फुसफुसाती हुई आवाजें सुनाई दी। हल्की हलकी सिसकियों, दबी दबी हंसी और खिलखिलाहट, और चुम्बन लेने की आवाजें।

प्रत्यक्ष को भला कैसा प्रमाण? मैं समझ गयी की इस समय अन्दर क्या चल रहा है। लेकिन फिर भी मन मान नहीं रहा था – हृदय में एक कचोट सी हुई।जो काम मैं खुद अथर्व के साथ करना चाह रही थी, वही काम कोई और उनके साथ कर रही थी।दुःख भी हुआ, और उत्सुकता भी! उत्सुकता यह जानने और देखने की की ये दोनों क्या कर रहे हैं!

मैं दबे पांव चलते हुए अथर्व के कमरे तक पहुंची, और दरवाज़े पर अपने कान सटा दिए।

“उम्म्म्मम्म.. ये गलत है..” ये आयशा थी।

“कुछ भी गलत नहीं..”

“गलत तो है.. आह... शादीशुदा न होते हुए भी यह सब.. ओह्ह्ह्ह.. धीरेएएए..!” आयशा ठुनकते हुए कह रही थी।

“जानेमन... मेरे लिंग का तुम्हारी योनि से मिलन हो गया...शादी में इससे और ज्यादा क्या होता है?”

“छिः! कैसे कैसे बोल रहे हो! गन्दी गन्दी बातें! आअऊऊऊ! आप न, बड़े ‘वो’ हो.. अभी, जब आपके हाथ पांव ठीक से नहीं चल रहे हैं, तब मेरी ऐसी हालत करते हैं.. जब सब ठीक हो जाएगा तो...”

“अच्छाआआआ… तो ये नर्स मेरे ठीक होने के बाद भी मुझे नर्स करना चाहती है?”

आयशा को शायद अथर्व के शरारत भरे प्रश्नोत्तर का भान नहीं था।

“हाँ… क्यों? ठीक होने के बाद मुझसे कन्नी काट लोगे क्या?” आयशा ने शिकायत भरे लहजे में कहा।

“अरे! बिलकुल नहीं!”

“आऊऊऊऊऊ..” यह आयशा थी।

“कम.. लेट मी नर्स यू.. उम्म्म!”

“आऊऊऊऊऊ… आराम से! ही ही ही!!”

दोनों की बातचीत की मैं सिर्फ कल्पना ही कर सकती थी… मेरे दिमाग में एक चित्र खिंच गया की अथर्व ने आयशा के एक स्तनाग्र को अपने मुंह में भर लिया होगा। अद्भुत और आनंददायक होता होगा न, ऐसे सहवास करना? अपनी प्रेयसी की स्तनों को चूसते हुए अपने लिंग को उसकी योनि में लगातार ठोंकते रहना। है न? लेकिन मुझे पता नहीं कैसा लगा – अजीब सा, रोमांच, गुस्सा, उत्सुकता… ऐसे न जाने कितने मिले जुले भाव!

मुझसे रहा नहीं जा रहा था… मैं वाकई देखना चाहती थी की अन्दर क्या चल रहा है – सिर्फ सुन कर उत्सुकता कम नहीं, बल्कि बढ़ने लगती है। मैंने की-होल से अन्दर देखने की कोशिश करी – छेद था तो, लेकिन कुछ ऐसा था की अन्दर बिस्तर का कोई हिस्सा नहीं दिख रहा था। तभी मुझे ख़याल आया की ड्राई बालकनी से मास्टर बाथरूम के रास्ते अन्दर का नज़ारा देखा जा सकता है। मैं भागी भागी उसी तरफ गयी… उम्मीद के विपरीत मुझे सीधा तो कुछ नहीं दिखाई दिया, लेकिन बाथरूम के अन्दर लगे आदमकद आईने से बेडरूम के खुले दरवाज़े के अन्दर का दृश्य साफ़ नज़र आ रहा था।

आयशा अथर्व की सवारी करते हुए सहवास कर रही थी। उसके नितम्ब के बार बार ऊपर नीचे आने जाने पर अथर्व का लिंग दिखाई देता था – आयशा की योनि रस से सराबोर वह लिंग कमरे की लाइट और बाहर की रौशनी से बढ़िया चमक रहा था। आयशा अथर्व के

ऊपर झुकी हुई थी, जिससे अथर्व उसके स्तन पी सकें। हो भी वही रहा था – अथर्व के मुंह में उसका एक स्तनाग्र था, और दूसरे स्तन पर उनका हाथ! मैं वही खड़े खड़े अथर्व और आयशा के संगम का अनोखा दृश्य देख रही थी।

"जानू.. जानू.. बस.. ब्ब्ब्बस्स्स.. आह! दर्द होने लगा अब... अब छोड़ अआह्ह्ह.. दो!"

'जानू? वाह! तो बात यहाँ तक पहुँच गयी है? अश्विनी... तू क्या कर रही है??'

"क्या छोड़ दूं?" अथर्व ने आयशा का स्तनाग्र छोड़ कर कहा (बेचारी का स्तनाग्र वाकई लाल हो गया था), "चूसना, मसलना या फिर ठोकना?"।

अथर्व को ऐसी भाषा में बात करते हुए सुन कर मुझे बुरा सा लगा – उनके मुंह से ऐसी भाषा वाकई शोभा नहीं देती है।

"चूसना और मसलना.. तीसरा वाला तो मैं ही कर रही हूँ.. आप तो आराम से लेटे हो!"

"ठीक है फिर.. चलो, यह शुभ काम अब मै ही करता हूँ.. अब खुश?"

कह कर अथर्व बिस्तर से उठने लगे, और साथ ही साथ आयशा को लिटाने लगे।उसके लेट जाने के बाद, अथर्व अब आयशा के होंठो को बड़े अन्तरंग तरीके से चूमने लगे। आयशा भी बढ़ चढ़ कर उनका साथ देने लगी। ऐसे ही चूमते हुए अथर्व ने अपनी एक उंगली आयशा की योनि में डाली, और उसे अन्दर बाहर करने लगे। आयशा की सिसकारियाँ मुझे साफ़ सुनाई दे रही थीं। वह आह ओह करते हुए, अथर्व के बालों को नोंच रही थी। अथर्व ने अब अपनी उंगली उसकी योनि से निकाल के उसके मुंह में डाल दी। वो मज़े ले कर अपनी ही योनि का रस चाटने लगी।

अथर्व और आयशा, दोनों ही समागम के लिए तड़प रहे थे। अथर्व ने आयशा की टांगो को खोला और अपना शिश्नाग्र उसकी योनि के खुले हुए मुख पर रख दिया। उनका लिंग कितना मोटा था! सच में! यह लिंग अगर मेरी योनि में जाएगा, तो अपार कष्ट तो होना ही है! लेकिन आयशा की योनि की अब तक इतनी कुटाई हो चुकी थी की अथर्व के एक ही झटके में उनके लिंग का आधा हिस्सा उसके अन्दर चला गया। आयशा के चेहरे पर मात्र हल्का सा कष्ट का भाव आया, और उसने अथर्व का लिंग अपनी योनि में सही तरह से ले

लिया। अथर्व नीचे झुक कर उसके स्तनों पर भोग लगाने लगे और साथ ही साथ नीचे की तारफ अपनी कमर को एक झटका और दे कर के अपने लिंग को उसके अन्दर पूरी तरह प्रविष्ट कर दिया। आयशा ने अपने हाथ उनकी कमर के गिर्द लपेट कर अपनी तरफ और खींचने लगी। अथर्व पूरे जोशो खरोश के साथ सहवास करने लगे... उधर आयशा भी नीचे से अपनी कमर को उछाल कर उनका साथ दे रही थी।

मैं और अधिक नही देख सकती थी... भले ही सम्मुख दृश्य इतना रोचक और कामुक हो.. यह उन दोनो के बीच का अपना और बहुत ही अंतरंग संसर्ग संबंध था, और मैं ऐसे चोरी छिपे देख कर इस बात का अनादर नही कर सकती थी.. मैं जल्दी से अपने कमरे में वापस चली आई और बिस्तर पर लेट गयी और सोने का नाटक करने लगी। जब आयशा और अथर्व फ़ुर्सत पाकर कमरे से बाहर निकलेंगे, तब उनको किसी प्रकार की लज्जाजनक स्थिति का सामना नही करना पड़ेगा।

कुछ देर के बाद (कोई पंद्रह मिनट के बाद) मुझे उनके कमरे का दरवाज़ा खुलने की आवाज़ आई। मैं दम साध कर लेटी रही – जैसे अभी भी सो रही हूँ। मुझे वाकई बुखार सा हो गया था। ऐसे ही नाटक करते करते न जाने कब आँख लग गयी, मुझे कुछ याद नहीं है। लेकिन मेरी नींद तब खुली जब मैंने अपने गाल और माथे पर किसी के छूने का एहसास हुआ।

मैने आँखें खोलीं... सामने आयशा बैठी हुई थी...! वो मेरे गाल को प्यार से सहला रही थी।

"आयशा! आप?"

"श्श्ह्ह्ह्ह... अभी तबियत कैसी है?"

“तबियत?”

“हाँ.. बुखार से तप रहा था तुम्हारा शरीर! मैंने कोई दवाई नहीं दी, लेकिन सोचा कि पहले तुमको जगा लूं। कैसा लग रहा है अभी?”

“तप रहा था? मेरा शरीर?” फिर अचानक याद आया कि वो तो मेरे शरीर की कामाग्नि की तपन थी। मैंने सोचा की आज आयशा से इस बारे में बात कर ही ली जाय।

“ओह!” मैने कहा, “वो कुछ भी नहीं है... अथर्व कहाँ हैं?”

“वो तो बाथरूम में हैं! क्यों?”

“वो इसलिए, कि मुझे आपसे एक बात करनी थी!”

“क्या बात है? बताओ?”

मैं हिचकी, “आयशा, क्या आप और अथर्व... मतलब, क्या आप दोनों शादी करना चाहते हैं?”

“ऐसे क्यों पूछ रही हो, अश्विनी?” आयशा ने सतर्क होते हुए पूछा।

“मैंने आज आप दोनों को... सहवास करते हुए...”

“हाय अल्लाह!” कहते हुए आयशा ने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया।

“बताइए न?”

“करना तो चाहती हूँ... लेकिन तुम भी तो..”

“मैं भी तो क्या?”

“तुम भी तो उनसे शादी करना चाहती हो.. है न?”

“ये आप कैसे कह रही हैं?” मैंने प्रतिरोध किया।

“अश्विनी, मैं भी औरत हूँ, और तुम भी! और औरत ही दूसरे औरत के मन की बात समझ सकती है! हमको कुछ कहने सुनने की ज़रुरत होती है क्या?”

मैं चुप ही रही। आयशा भी कुछ देर चुप रही, और फिर आगे बोली,

“अथर्व हैं ही ऐसे मर्द! क्यों न कोई लड़की उनको चाहने लगे? मर्द नहीं, सोना हैं सोना! मैं तो उनकी लौंडी (गुलाम) बन गयी हूँ!”

मैंने कुछ हिम्मत करी।

“आप मेरी इस बात का बुरा मत मानना, लेकिन पूछना ज़रूरी है। आप उनसे उनकी दौलत के लिए शादी करना चाहती हैं?”

आयशा मुस्कुराई, “हा हा! नहीं.. मैंने तुम्हारी बात का कोई बुरा नहीं माना। मुझे मालूम है कि अथर्व ने अपनी सब जायदाद आपके नाम कर दी है। नहीं... दौलत के लिए नहीं! मेरी नर्स की नौकरी में ज्यादा तो नहीं, लेकिन कम कमाई भी नहीं होती। आराम से चल जाता है। नहीं... उन्होंने जिस तरह से मुझे औरत होने का एहसास दिलाया है, मुझे जिस तरह से मान सम्मान दिया है, उसके लिए! ... कौन सी औरत नहीं करेगी उनके जैसे मर्द से मोहब्बत? अथर्व न केवल जिस्म से ही एक भरपूर मर्द हैं, बल्कि दिल से भी हैं।"

“लेकिन.. आप तो पराये धर्म की हैं?”

“हाँ! लेकिन, पराये धर्म की होने से पहले एक इंसान भी तो हूँ!”

“नहीं नहीं! मेरा वो मतलब नहीं था।“

“हा हा! हाँ भाई... मालूम है तुम्हारा वो मतलब नहीं था! हाँ.. पराये धर्म की हूँ.. अब्बू कुछ न कुछ नाटक कर सकते हैं!”

फिर कुछ रुक कर, “तुम्हे तो कोई दिक्कत नहीं? ... मेरा मतलब...”

मेरी उदासी मेरे चेहरे पर साफ़ दिखने लगी।

“अश्विनी, अगर तुम उनसे प्यार करती हो, तो तुमको उन्हें बताना चाहिए!”

“अगर का कोई सवाल ही नहीं है आयशा...”

“इसीलिए तो ये समझा रही हूँ तुमको! ऐसे मन में रखने से तो उनको मालूम नहीं होगा न? किसी को ख्वाब थोड़े न आ रहे हैं! और सच कहती हूँ.. अगर वो भी तुमको पसंद करते हैं, तो मुझे बहुत ख़ुशी मिलेगी.. और भी ख़ुशी मिलेगी अगर तुम दोनों मिल जाओ। दुःख तो बहुत होगा.. झूठ नहीं कह सकती... ऐसा शानदार मर्द हाथ से चला जायेगा, तो किसी को भी अफ़सोस होगा! लेकिन, मुझे ख़ुशी भी मिलेगी। सच कहती हूँ!“

“आयशा.. आप इतनी अच्छी हैं, मुझे भी लगता है कि उनको आपसे शादी करनी चाहिए!”

“अश्विनी, ऐसे मत कहो! मैं तो बहुत बाद में आई... लेकिन मुझे मालूम है कि तुमने उनकी सेवा में दिन रात एक कर दिया था। इस लिहाज़ से तुम्हे पहला हक़ है, उनसे प्यार जताने का। लेकिन अथर्व को नहीं मालूम कि तुम उनसे प्यार करती हो! मुझे भी काफी कुछ हो जाने के बाद मालूम पड़ा.. नहीं तो मैं कैसे भी उनसे इतना न घुल-मिल जाती।“

आयशा कुछ देर के लिए चुप हो गयी – कमरे की निस्तब्धता में दोनों लडकियाँ जैसे अभी अभी हुई बातों की वज़न का माप कर रही थीं। चुप्पी वापस आयशा ने ही तोड़ी –

“अश्विनी प्यारी, मेरी तो बस यही सलाह है कि तुम उनको बताओ। उनको बताओ की तुम उन्हें प्यार करती हो! बाकी तो सब अल्लाह का रहम!”

आयशा की ऐसी बात सुन कर मुझे बहुत राहत हुई – एक अरसे के बाद किसी से इस तरह बात करी। इस कारण मन का दुःख आँखों के रास्ते, आंसूं बन कर बाहर निकल आये। आयशा ने मुझे अपने गले से लगा लिया। और मुझे दिलासा देने लगी। कुछ देर के बाद वो ही बोली,

“क्यों न हम एक काम करें?”

मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि डाली,

“आज घर जाना कैंसिल कर देती हूँ! और... तुमको फुल-बॉडी मसाज देती हूँ! एक तो तुमको खूब अच्छा महसूस होगा, और दूसरा, कभी न कभी अथर्व तुम्हारे कमरे के सामने से गुजरेंगे! तुम्हारा नंगा बदन देख कर कुछ तो समझ आएगा न उस बुद्धू को?”

“धत्त आयशा! आप भी न!”

“अरे! इतना कमसिन जिस्म है! कभी दिखाओ तो उन्हें!”

“क्या! आप भी न !”

“अरे! आप भी न का क्या मतलब है? पता है, जब उन्होंने जब मेरी छातियाँ पहली बार नंगी करीं, तो कैसी आहें भरी थीं! मर्द के सामने अपनी छातियाँ परोस दो, बस! उसकी तो तुरंत लार टपकने लगेगी! और इस बेचारे को तो कितना दिन भी हो गया था!”

“छिः! कितनी गन्दी हो तुम!” मेरी आँखों के सामने सवेरे के दृश्य घूम गए।

“गन्दी नहीं! खैर, मर्द की ही क्या बात करें! हम औरतों की भी तो ऐसी ही हालत हो जाती है! इन चूचों पर मर्द की जीभ पड़ जाय बस! हा हा!”

“धत्त...”

“अरे! धत्त क्या! बेटा, अगर अथर्व मान गए, तो तेरा ऐसा बाजा बजेगा न, कि तुझे ऐसा लगेगा की सात जन्नतों की सैर करके आई हो! बाप रे! थका देते हैं वो तो! ... और, उनका औज़ार भी तो कितना तगड़ा...”

मैंने आगे कुछ भी सुनने से पहले अपने कान हाथों से बंद कर लिए, और अपनी आँखें भी मींच लीं!

आयशा बातों में तो माहिर थी। उससे भी अधिक उसमें स्नेह था। जो सारी बातें अभी आयशा ने कही थी, वो सारी बातें मेरे लिए भी उतनी ही सच थीं। अगर अथर्व आयशा को पसंद कर लें, तो मुझे भी बहुत ख़ुशी मिलेगी – दुःख होगा, लेकिन वाकई, ख़ुशी भी बहुत मिलेगी। एक बार तो मन हुआ कि क्यों न आयशा भी हमारे साथ ही रहे। शादी किसी की भी हो, लेकिन साथ तो हम तीनों ही रह सकते हैं! लेकिन इस प्लान में एक अड़चन यह थी की आयशा की शादी में दिक्कत आएगी...

हैं! कमाल है! मैं पहले से ही सोच रही हूँ कि अथर्व मुझे ही पसंद करेंगे, और मुझ ही से शादी करना चाहेंगे! मज़े की बात है, की मैंने अभी तक उनको अपने मन की बात भी नहीं

बताई!

आयशा के उकसाने पर मैंने मालिश के लिए हामी भर दी। मुझे बहुत शर्म आ रही थी और मन में एक उलझन सी भी बन रही थी। कुछ दिनों पहले ही आरती के सामने मैं नंगी हो गयी थी, और उसके साथ न जाने क्या क्या कर डाला था, और आज आयशा है! क्या मैं ठीक हूँ? कहीं मैं लेस्बियन तो नहीं? सुना तो है कि स्त्रियाँ आसानी से समलैंगिक सम्बन्ध बना लेती हैं। लेकिन जो मैं अथर्व की तरफ आकर्षित होती हूँ, वो क्या है? और.. और... आज भी मैं आयशा को सिर्फ इसी कारण से यह सब करने दे रही हूँ, क्योंकि उसने मुझे अथर्व के सामने प्रदर्शन का लालच दिया है। शायद मैं ठीक हूँ!

आयशा कुछ देर के लिए कमरे से बाहर गयी हुई थी – मालिश के लिए तेल लाने। अथर्व दीदी की अक्सर ही मालिश करते थे – ख़ास तौर पर सप्ताहांत में। मालिश के साथ साथ दीदी के साथ जम कर सहवास भी करते थे। दीदी भले ही थक कर चूर हो जाती थी, लेकिन फिर भी उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव, रहस्य भरी मंद मंद मुस्कान मुझसे छिपी नहीं रहती थी। वाकई, अथर्व इस कार्य में बहुत कुशल थे। मुझे बगल के कमरे से अथर्व और आयशा की दबी हुई आवाजें सुनाई दे रही थीं। न जाने क्या कह रही होगी ये उनसे! खैर, कोई पांच मिनट के बाद आयशा वापस कमरे में आई। जब उसने मुझे अपने पूरे कपड़ों में देखा तो उसने मुझे कपडे उतारने को कहा। मैं शरम के कारण दोहरी हो रही थी और मेरा चेहरा लाल सा हो गया था।

आयशा मुझे ऐसे देख कर मेरे पास आई, और मेरे दोनों हाथों को पकड़ कर बहुत ही धीमे स्वर में बोली, “अश्विनी, मुझसे शरमाओ मत! मैं तुम्हारी दोस्त हूँ! और, तुमने मुझे आज नंगा देखा है... और वो सब करते देखा है, जो नहीं देखना चाहिए! इसलिए, अब इतना तो बनता है न?”

आयशा की बात तो सही थी। मैंने अपने सूखे गले को थूक की एक घूँट से तर किया, और अपने कपडे उतार दिए। अन्दर कुछ पहना हुआ था नहीं, इसलिए मैं तुरंत ही पूर्ण नग्न हो गयी। मुझे इस हालत में देख कर आयशा भी एक बार हतप्रभ हो गयी।

“क्या बात है अश्विनी! सचमुच तुम बहुत सुन्दर हो – न केवल तुम्हारी सूरत, बल्कि ये (मेरे स्तनों की तरफ इशारा करते हुए) तेरी छातियाँ भी! और ये (फिर मेरी योनि की तरफ), तेरी योनि भी! जब योनि की फांके ऐसे दिखती हैं, तो क्या सुन्दर लगती हैं!”

बिकिनी वैक्स द्वारा बाल निकालने के बाद मेरी योनि पर बालों के हलके हल्के रोयें ही उगे हुए थे। ऐसे में मेरे योनि के दोनों होंठ स्पष्ट दिख रहे थे।

“मन करता है की इनको चूम लूं!”

कह कर उसने वाकई मेरी योनि के होंठों को चूम लिया।

“ईईश्श्श्ष! आयशा, मैंने इसे धोया नहीं था!” उसके इस काम से मुझे हलकी सी घिन आ गयी।

“धोया नहीं था? ह्म्म्म.. इसीलिए इतनी नमकीन थी!”

उसकी ऐसी बातों से मेरी शर्म और हिचकिचाहट कम तो नहीं होने वाली थी। इसलिए मैं बिस्तर पर मुँह छुपा कर लेट गयी। और आयशा ने हँसते हुए मेरी पीठ पर तेल डाल कर मालिश करना शुरू किया। हलके हाथों से धीरे धीरे मालिश होना – मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। कुछ ही देर में मेरे मुँह से सुख भरी आवाजें निकलने लगीं। कोई दस मिनट के बाद उसने मेरे पैरों मालिश शुरू करी। मालिश करते हुए उसके हाथ धीरे धीरे ऊपर की तरफ आ रहे थे – यह मुझे मालूम हो रहा था। ऐसा नहीं है की वो मुझसे छुपा कर कुछ भी कर रही हो।

खैर, जाँघों की मालिश करते हुए जब तब उसके हाथ मेरे नितम्बों के बीच में छू जाते थे। वैसे भी कुछ देर पहली की घटनाओं के कारण मैं वैसे ही गर्म हो गयी थी – अब तक मेरी योनि से रस भी रिसने लगा था। मेरी सिसकारियाँ अभी भी निकल रही थीं, लेकिन अब मुझे ही नहीं मालूम था की वो मालिश की संतुष्टि के कारण थी, या फिर कामुक!

अचानक ही आयशा ने मेरे हाथों की मालिश शुरू कर दी। एक तरह से मुझे राहत ही हुई। लेकिन जब दो मिनट बाद वो वापस मेरे पुट्ठों को मसलने लगी, तो मैं समझ गयी की बाहों की मालिश तो महज़ एक खाना पूरी थी। मेरे नितम्बों की मालिश वो ऐसे कर रही थी, जैसे आटा गूंथ रही हो। बीच बीच में रह रह कर वो दोनों पुट्ठों पर अपनी मुट्ठी से प्रहार भी करती। इस कारण से मीठा मीठा दर्द उभर कर निकल रहा था। मैं मीठी पीड़ा, आनंद, सुख और काम – इन न जाने कितने मिले जुले भावों के सागर में गोते लगाने लगी। अचानक ही आयशा की आवाज़ सुन कर मेरी तन्द्रा भंग हुई,

“गुड़िया रानी, अब सामने की बारी!” कह कर उसने मुझे पीठ के बल लेटने को कहा।

मुझे सिहरन सी होने लगी। आयशा ने मेरे सामने की तरफ मालिश शुरू कर दी थी। पहले तो उसने मेरी गर्दन और कंधे की मालिश करी, और फिर दोनों स्तनों पर काफी तेल लगा कर कुछ ज्यादा ही जोर शोर से मालिश करने लगी। कहने की आवश्यकता नहीं कि मेरी उत्तेजना अब काफी बढ़ गयी थी। आयशा के हाथों की हरकतों के साथ साथ मेरी सिसकारियाँ भी बढती जा रही थीं।

लेकिन, आयशा का मन भरा नहीं था – उसका खेल जारी रहा। कुछ देर तबियत से मेरे स्तनों की मालिश करने के बाद वो मेरे चूचकों के साथ भी खिलवाड़ करने लगी। वो कभी उनको अपनी तर्जनी और अंगूठे के बीच पकड़ कर मसलती, तो कभी उनको बाहर की तरफ हल्के से खींचती । उसने ऐसा न जाने कितनी बार किया – लेकिन मेरी हालत खराब हो गयी। मेरी आहें और भी भारी और तेज हो गई। हार कर मैंने उसका हाथ पकड़ कर उसको रोक दिया। तब कहीं जा कर उसके मेरे स्तनों का पीछा छोड़ा।

अगली बारी पेट की थी। मैंने राहत की सांस ली। कोई पांच मिनट के बाद उसने आखिरकार मेरी योनि की मालिश आरम्भ कर दी। डर के मारे मैंने अपने दोनों पैर एकदम सटा लिए थे, जिससे वो योनि से खिलवाड़ न कर सके। लेकिन उसकी उंगली रह रह कर जाँघों की बीच की दरार में लुका छिपी खेल रही थी। अथर्व के साथ रह रह कर आयशा को कुछ तरीके तो आ ही गए थे। उसकी इन हरकतों से मैं फिर से उत्तेजित हो गई, और मेरे पैर खुद ब खुद खुलते चले गए। आयशा को मेरी योनि साफ़ साफ़ दिखने लगी।

“कितने पतले पतले होंठ हैं...” आयशा अपनी ही दुनिया में थी और इस समय मेरे योनि के होंठों को हलके से मसलते हुए कहा, “गुलाबी गुलाबी! सच में! गुलाब की कली जैसी!”

मुझे योनि से काम-रस बहता हुआ महसूस हुआ! उस स्थान पर गीला गीला और ठंडा ठंडा लग रहा था।

“मज़ा आ रहा है न अश्विनी?” उसने धीरे धीरे से मेरे भगनासे सहलाते हुए पूछा।

मैं क्या ही कहती? मेरी फिर से आहें निकलने लगीं, और मैं अपना सिर इधर-उधर कर के छटपटाने लगी। आयशा को मेरी हालत तो साफ़ पता चल ही रही होगी! उसने अगले कोई

दो मिनट तक अनवरत उस हिस्से को कुछ तेज़ गति से रगड़ा। देखते ही देखते मैं मस्त आहें भरते हुए चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हुए स्खलित हो गई।

जब मैंने वासना की मस्ती में चूर आँखें खोलीं, तो आयशा ने कहा,

“मज़ा आया?”

मैं मुस्कुरा दी।

“तुम जन्नत की हूर हो, अश्विनी!”

उसने कुछ देर मेरे एक स्तन को सहलाया और फिर कहा, “तुम हिम्मत कर के उनको अपने दिल की बात बता दो! तुमको भी खुश रहने का पूरा हक़ है!”

फिर उसने मेरे माथे को चूमते हुए कहा, “हमेशा खुश रहो!”

आयशा की हरकतों से मेरे शरीर में आग लग गयी। वो मुझे उकसाने का प्रयास कर रही थी, जिसमे वो शत प्रतिशत सफल रही। उसके कहने के बाद मैंने मन में ठान लिया कि मैं अथर्व से अपने प्रेम का इज़हार करूंगी।

मैंने इंतज़ार किया जब अथर्व नहा धो कर बाहर निकलेंगे, तब मैं उनसे बात करूंगी। कमरे की आहात से पता चल गया कि वो कुछ ही देर में बाहर आ जायेंगे... उसके पहले मैं ही कमरे में चली गयी।

“आप कैसे हैं?”

“एकदम बढ़िया, अश्विनी!”

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “अच्छा किया, जो तुम मुझसे बात करने चली आयीं। मुद्दत हो गयी, तुमसे आराम से बात किया हुए।“

“हाँ! मैं भी चाहती थी की हम फॉर्मल जैसी बाते न करें!”

मेरी इस बात ने ज़रूर उनके दिल को कहीं न कहीं कचोट दिया होगा। फॉर्मल बाते ही तो होती हैं हमारे बीच! उनका सुन्दर चेहरा उतर गया.. वो कुछ कह न पाए! मैंने बात सम्हालने की कोशिश करी,

“म्मेरा वो मतलब नहीं था..”

“नहीं अश्विनी! तुम सही ही तो कह रही हो! मेरी हरकतों के लिए मेरे पास कोई बहाना नहीं है.. हो सके तो माफ़ कर दो!”

“नहीं नहीं.. आप माफ़ी क्यों कह रहे हैं! मैंने आपको उलाहने देने के लिए यह नहीं कहा!”

“मुझे मालूम है अश्विनी! तुम्ही तो हो, जो मेरा इतना ख़याल रखती है!” उन्होंने मुस्कुराने की कोशिश करी! मुस्कुराते हुए ये कितने सुन्दर लगते हैं!!

“और भी रखूंगी.. अगर आप ऐसे ही हँसते मुस्कुराते रहें!”

“हा हा! हाँ! .. अच्छा चलो, बताओ.. कॉलेज कैसा चल रहा है?”

“बढ़िया!”

“दोस्त बनाए वहां?”

“हाँ! बहुत से हैं!”

“मुझे तो बस आरती का ही पता है!”

“उसके अलावा भी कई हैं...”

“लड़के भी?”

“हाँ!”

“हम्म्म... गुड! कोई ख़ास?”

“नहीं! उनमें कौन ख़ास हो सकता है!”

“अरे क्यों?”

“अच्छा.. आप मेरी नहीं अपनी बताइए! आपकी कोई गर्ल फ्रेंड है?”

“मेरी गर्ल फ्रेंड? हा हा!”

“सच सच बताइयेगा?”

“हम्म.. अश्विनी, कोई और होता तो झूठ बोल देता.. लेकिन तुमसे झूठ नहीं कह सकता! आयशा अच्छी लगती है मुझे!”

“हाँ! आयशा तो है भी अच्छी!”

“तुमको अच्छी लगती है?”

“हाँ! उसके आने से आप कितना खुश रहने लगे हैं!”

“अरे! ऐसे क्यों कह रही हो? तुम्हारे साथ क्या मैं गुस्सा था?”

मैं चुप रही। अथर्व भी कुछ देर सोच में पड़ गए,

“या शायद था! तुमने मेरी लाइफ, और पर्सनालिटी का सबसे खराब भाग झेला है!”

“नहीं! मैं कोई शिकायत नहीं कर रही हूँ! मैं तो बस इसी बात से खुश हूँ की वो पुराने वाले अथर्व वापस आ रहे हैं!”

“हः! पुराना वाला अथर्व तो तुम्हारी दीदी के साथ ही चला गया, अश्विनी।“ अथर्व की आँखों से खामोश आंसूं निकलने लगे, ”वो तो मेरी आत्मा थी। अब तो बस मेरा ढाँचा ही बच रहा है!”

“हाँ! दीदी तो सबसे अच्छी थी!” मेरा दिल बैठ गया ‘थी’ कहते हुए!

“सच में... उसके बिना सब फीका फीका लगता है..”

“आयशा के रहते हुए भी?”

“अश्विनी, आयशा मुझे अच्छी ज़रूर लगती है, लेकिन वो मेरी गर्ल फ्रेंड नहीं है! हम लोग सहवास करते हैं, लेकिन अभी तक दिल के सम्बन्ध नहीं बन पाए हैं! और... मुझे लगता भी नहीं की ऐसा कुछ होगा!”

“ऐसा क्या हुआ आयशा के साथ?”

“नहीं.. बात सिर्फ आयशा की नहीं है... मुझे नहीं लगता कि किसी भी लड़की के साथ मुझे अब प्रिया जैसा लग सकेगा!”

यही समय था!

“प्रिया की परछाईं के साथ भी नहीं?” मेरी आवाज़ में एक तरह की ठंडक सी आ गयी थी..

अथर्व एकदम से ठिठक गए,

“मतलब?”

मेरा गला सूख गया,

“आप.. मुझसे शादी करेंगे?” बहुत धीमी आवाज़ निकली।

“अश्विनी! ये तुम क्या कह रही हो?”

“अथर्व! मैं आपसे प्यार करती हूँ! और आपसे शादी करना चाहती हूँ! मैं चाहती हूँ की मैं आपके सारे दुःख बाँट सकूं, और आपको सब प्रकार के सुख दे सकूं!”

“अश्विनी!.. अश्विनी.. लेकिन तुम मुझसे .. मुझसे कितनी तो छोटी हो!”

“ तो क्या हुआ?”

अथर्व वाकई हक्के बक्के हो गए थे।

“लल्ल.. लेकिन.. मेरी.. ओह भगवान्!”

“अथर्व! मेरी तरफ देखिए... मुझे मालूम है, कि आपने मुझे उस नज़र से कभी नहीं देखा, लेकिन मैंने पहली ही नज़र से आपसे हमेशा प्रेम ही किया है.. हाँ – यह सच है की उस प्रेम के रूप बदलते चले गए। अगर दीदी न होती, तो मैं आपसे ही शादी करती। उनके बाद, मैंने इतने दिनों तक अपने मन में यह बात रखी हुई है.. लेकिन, अब और नहीं होगा। मैंने मन ही मन आपको अपना पति माना हुआ है! बाकी सब आपके हाथ में है!”

कह कर मैं कमरे से बाहर निकल गयी। ह्रदय का बोझ काफी हल्का हो गया।

२७

मेरा मन अत्यंत अशांत था – कहने सुनने में तो आज का दिन भी पहले के दिनों के ही समान था, लेकिन मन में न जाने कितने विचार आ और जा रहे थे। अश्विनी की विवाह प्रस्तावना मेरे लिए अत्यंत अप्रत्याशित थी। अचानक ही जीवन ने एक नया ही मोड़ ले लिया। एक तो ये 'अचानक' जैसे की मेरे पीछे ही पड़ गया है – कभी तो इससे मुझे लाभ हुआ, और कभी भारी हानि भी उठानी पड़ी – प्रिया से मिलना एक अचानक और अप्रत्याशित घटना थी... जीवन के उन कुछ सालों में मैं इतना खुश था, जितना कभी नहीं। फिर वो अचानक ही चल दी! फिर अचानक ही मेरा एक्सीडेंट हो गया... अचानक ही आयशा के साथ सम्बन्ध बने.. और आज, अचानक ही अश्विनी ने यह प्रश्न दाग दिया!

कैसी कमाल की बात है न? हम दोनों इतने सालों से साथ में हैं, लेकिन मुझे कभी इस बात का भान भी नहीं हुआ की अश्विनी मुझको ले कर ऐसे सोचती है। खैर, भान भी कैसे होता? मैं तो अपने ही ग़म में इतना घुला हुआ था की आस पास का ध्यान भी कहाँ था? लेकिन अब जब यह बात खुल कर सामने आ ही गयी है तो इस पर विचार करना ही पड़ रहा है – क्या अश्विनी के साथ मेरा होना ठीक रहेगा? मैं उससे कई साल बड़ा हूँ... कई साल! उसने बोला था की "तो क्या हुआ?" एक तरह से देखो तो वाकई, तो क्या हुआ? प्रिया भी मुझसे कई साल छोटी थी....। लेकिन इन दो बातों में क्या समानता है? प्रिया से मुझे प्रेम हुआ था। जब प्रेम होता है, तो उम्र, जाति, बिरादरी, धर्म इत्यादि का कोई स्थान नहीं होता – बस पुरुष और नारी का! (और कुछ लोगों में पुरुष पुरुष और नारी नारी का!) इस लिहाज से देखा जाय तो या कोई बड़ी अनहोनी नहीं थी। अश्विनी को भी मुझसे प्रेम हुआ था। अब मेरे सामने एक ही प्रश्न है, और वो यह कि क्या मुझे भी उससे प्रेम है? मतलब, प्रेम तो है.. लेकिन वो प्रेम, जिसकी परिणति विवाह हो?

लेकिन अश्विनी मेरे लिए विवाह प्रस्ताव लाई थी। इस नाते यह सब तो सोचना ही पड़ता है न! अभी तो वह नयी नयी जवान हुई है। जवान शरीर की अपनी मांगे होती हैं। मेरी हालत तो अभी पूरी तरह से ठीक तो है नहीं। फिर मन में विचार आता है की यह सब एक बहाना है। आयशा को मैंने इसी हालत में इस प्रकार संतुष्ट किया है की वो मेरी मुरीद बन गयी है! आयशा को क्या कहूं? उसको कैसा लगेगा? वो भी कितनी अच्छी लड़की है! उसका दिल टूट जाएगा! सच कहूं तो मेरे पास कुछ ख़ास विकल्प नहीं हैं... जो हैं वो वास्तव में सबसे अच्छे हैं। या तो अश्विनी से विवाह करूँ, या फिर आयशा से! किसी भी एक विकल्प को

चुनने से दूसरे का दिल तो अवश्य टूटेगा। यह सोचना मेरे लिए कष्टप्रद है। जो भी होगा, इन दोनों को ही सुनने का पूरा हक़ है।

कहीं किसी को कहते हुए सुना है – प्रेम कहीं से भी, किसी से भी और किसी भी रूप में आये या मिले, तो उसको लपक कर ले लेना चाहिए। और मुझे तो बैठे बैठे जैसे झोली में डाल कर या थाली में परोस कर प्रेम मिल रहा था। कुछ तो अच्छा किया होगा मैंने अपने जीवन में – पहले प्रिया, फिर आयशा और अब अश्विनी! नहीं नहीं – क्रम में कुछ गड़बड़ है – अश्विनी आयशा के पहले से है। खैर, क्रम का क्या है? वृत्त में भला क्या कोई आदि या अंत होता है? ठीक वैसे ही, प्रेम में भी क्या आदि या अंत?

मेरे लिए यह भी सोचने वाली बात थी कि मैं प्रेम के खातिर विवाह करना चाहता था, या इसलिए कि मेरा बिस्तर गरम रहे? आयशा से मुझे शारीरिक संतुष्टि तो बहुत मिल रही है... यह उसी की देन है कि आज मैं अपने हाथ पांव का ठीक से इस्तेमाल कर पा रहा हूँ। उसका बहुत उपकार है मुझ पर। लेकिन, क्या मैं उससे शादी कर सकता हूँ? उसके धर्म से मुझे कोई लेना देना नहीं है.. लेकिन, मन में यह बात तो अटकी हुई है की मैं उससे प्यार तो नहीं करता। वो मुझे अच्छी लगती है, मेरी सबसे ख़ास दोस्त भी है, लेकिन मुझे उससे प्रेम नहीं है! मेरा मतलब, ‘उस’ प्रकार का।

दूसरी तरफ अश्विनी है, जो मुझे चाहती है – आज अगर जीवित हूँ, तो सब उसी की दुआओं, प्रार्थनाओं और प्रेम के कारण ही है। लोगो ने मुझे कहा था की कैसे उसने देवी सावित्री के समान ही मेरे प्राण, मानो यमराज से वापस मांग लिए! कभी कभी सोचता हूँ कि उसके मन और ह्रदय पर क्या बीत रही होगी उस समय? क्या उसने भी देवी सावित्री के ही समान यमराज से सौ पुत्रों का वरदान माँगा था? क्या क्या सोच रहा हूँ मैं? मैं दिन में अपने कमरे में ही रहा। बाहर जाने जैसी हिम्मत नहीं हुई – अगर अश्विनी से आँखें मिल गईं तो? क्या कहूँगा मैं उससे?

अश्विनी से आँखें मिलाने के लिए मुझे कमरे से बाहर जाने की आवश्यकता नहीं थी। वो खुद ही आ गई – एक मंद मुस्कान लिए!

‘ओह भगवान! कितनी प्यारी है ये लड़की!’

“आपको यूँ कमरे के अन्दर बैठे रहने की कोई ज़रुरत नहीं! आइए, लंच कर लेते हैं?”

कह कर उसने बिना मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये, मेरे हाथ पकड़ कर मुझे बिस्तर से उठाने लगी। मैं भी एक अच्छे बच्चे की तरह उठ गया, और न जाने कितने दिनों के बाद डाइनिंग टेबल पर उसके साथ बैठ कर खाना खाया। कभी कभी छोटी छोटी बातें भी कितनी सुन्दर लगती हैं! दिमाग में प्रिया के साथ वाले सुख भरे दिनों का दृश्य घूम गया। होनी कितनी प्रबल है! उसको कौन टाल सकता है?

अगली सुबह जब आयशा घर आई, तो अश्विनी को वहां उपस्थित देख कर थोड़ा अचरज में आ गई .. फिर उसको तुरंत समझ में आ गया।

“आयशा! आओ! आज हम सभी साथ में नाश्ता करेंगे?” उसको बताने से ज्यादा, मैं पूछ रहा था।

उसको लग गया की अब फैसले की घड़ी है, तो उसने भी कोई न नुकुर न करते हुए हमारे साथ होने में भलाई समझी। लेकिन, मैं कुछ कहता, उससे पहले ही आयशा ने अश्विनी से पूछा,

“अश्विनी, तुमने इनको बता दिया?”

अश्विनी शरमाते हुए मुस्कुराई, और साथ ही उसने हाँ में सर हिलाया।

“ओह अश्विनी!” कहते हुए उसने अश्विनी को अपने गले से लगा लिया!

“आई ऍम सो हैप्पी फॉर यू!”

“थैंक यू, आयशा!” अश्विनी बस इतना ही कह सकी।

“अथर्व,” आयशा ने मेरी तरफ मुखातिब होते हुए कहा, “आपको कुछ कहने की ज़रुरत नहीं है.. बस इतना बता दीजिए, कि आप अश्विनी से शादी करेंगे?”

अचानक ही मेरा लम्बा चौड़ा भाषण देने का प्लान चौपट हो गया! मेरी बोलती कुछ क्षणों के लिए बंद हो गयी।

“अरे कुछ बोलिए भी!”

“आयशा...”

“हाँ, या ना?”

“ह्ह्हान!” मेरे मुँह से बेसाख्ता निकल गया।

आयशा मुस्कुरा दी.. उसकी आँखों से आंसू भी निकल आये! भरे हुए गले से उसने मुझे बधाई दी ...

“वैरी गुड चॉइस! सच में! अगर तुम अश्विनी से शादी न करते, तो मुझसे बुरा कोई न होता! हूहूहू..” वो रोने लगी, “कम, गिव मी अ हग!”

अश्विनी तुरंत ही आयशा से लिपट कर रोने लगी! मैं भी संकोच करते हुए उससे लिपट गया।

“मेरे सामने नंगा होने में शर्म नहीं आती, लेकिन मुझे हग करने में शर्म आती है? कम... हग मी प्रोपरली..” आयशा ने रोते हुए हिचकियों के बीच में मुझे झाड़ लगाई।

अब तक मेरे भी आँसू निकलने लगे। हम तीनो न जाने कितनी देर तक यूँ ही आपस में लिपट कर रोते रहे, फिर अलग हो कर हमने साथ में नाश्ता किया।

नाश्ते के बाद अश्विनी ने आयशा का हाथ थाम कर उससे कहा,

“आयशा, चाहे कुछ भी हो, ये घर आपका भी है!”

आयशा ने बीच में कुछ कहना चाह तो अश्विनी ने कहा, “मुझे बोल लेने दीजिए, प्लीज! मेरे लिए आपका दर्जा मेरी दीदी के जैसा है! इस घर में आपकी इज़्ज़त उन्ही के जैसे होगी। मेरी एक विनती है आपसे – आप यहीं पर रहिए!”

आयशा फिर से रोने लगी, “न बाबा! तुम दोनों जब साथ में आहें भरोगे, तो मेरा क्या होगा?” बेचारी, इस बुरी हालत में भी वो मज़ाक करने से नहीं चूक रही थी।

अश्विनी ने कहा, “तो फिर ठीक है! हम दोनों तब तक शादी नहीं करेंगे, जब तक आपके आहें भरने का परमानेंट इंतजाम न कर दें! क्यों ठीक है न?” ये आखिरी वाला मेरे लिए था!

“क्या मतलब?” मुझे वाकई नहीं समझ आया।

“आप दीदी के लिए कोई अच्छा सा लड़का ढूंढिए न! जब तक इनकी शादी नहीं होगी, मैं भी नहीं करूंगी!” अश्विनी ने फैसला सुनाया।

ऐसा नाटकीय दिन शायद ही किसी के जीवन में हुआ हो!

अब अच्छा सा लड़का यूँ ही तो नही मिलता है! देखना पड़ता है, लड़के की पृष्ठभूमि की जांच करनी होती है, फिर दोनों एक दूसरे को पसंद भी करने चाहिए! अगर प्रेम के अंकुर निकल पड़ें, तो और भी अच्छा! इसको एक अद्भुत संयोग ही मानिए कि कोई दो महीने बाद, मेरी मुलाकात मेरे अभियांत्रिकी की पढाई के दिनों के एक मित्र से हुई। उसका नाम अमर है। वो मुझसे मिलने मेरे घर आया था – मैं अभी भी ऑफिस नहीं जा रहा था, और घर से ही काम करता था। वो एक महीने के लिए भारत आया हुआ था – वैसे अभी लक्समबर्ग में रहता था, और वहीं पर उसने अपना बिजनेस जमा लिया था। उसको मेरी दुर्घटनाओं के बारे में मालूम पड़ा तो मिलने चला आया – वैसे उसका घर दिल्ली में था। उसने अभी तक विवाह नहीं किया था।

मिलने आया तो उसकी हम सभी से मुलाक़ात हुई। मुझे तुरंत ही समझ आ गया की उसको आयशा में दिलचस्पी है। मैंने उसको पूछा की वो कहाँ ठहरा हुआ है, तो उसने होटल का नाम बताया। मैंने जिद से वहां की बुकिंग कैंसिल कर दी, और हज़ारों कसमें दे कर उसको यहीं मेरे घर पर रहने को कहा। इससे एक लाभ यह था की मेरे पुराने मित्र से मैं देर तक बातें कर पाऊँगा, और दूसरा यह की आयशा और अमर को एक दूसरे से बातें करने का भी अवसर मिलेगा।

हमारी बातों में मैंने जान बूझ कर आयशा का कई बार ज़िक्र किया, जिससे वो उसके बारे में और प्रश्न पूछे, और उसके बारे में ठीक से जान जाय। बाकी सब तो प्रभु की इच्छा! एक और बात थी – वो मैंने किसी को नहीं बताई थी, और वो यह, की अमर का लिंग मेरे लिंग से बड़ा था। लम्बाई में भी, और मोटाई में भी। मुझे कैसे मालूम? अरे दोस्तों, बी टेक का हाल अब न ही पूछिए! भाई को एक बार दारू पीना का शौक चर्राया था। न जाने कितनी ही बार मद में लड़खड़ाते हुए अमर को मैंने टॉयलेट में ले जा कर मुताया था। पैन्ट्स में से उसका लिंग बाहर निकालने पर कई बार खड़ा हुआ भी रहता था। ऐसे में मुताने के लिए.... अब छोडिये भी!

अगर इन दोनों की शादी हो जाय, तो वाकई, आयशा की आहें भरने का परमानेंट इंतजाम हो जाए! और सबसे बड़ी बात यह, की अमर एक बहुत अच्छा लड़का, मेरा मतलब आदमी, भी है। वो इस समय अपने करियर और जीवन के उस मुकाम पर है, जहाँ पर उसको एक साथी की आवश्यकता थी। उसके वापस दिल्ली जाने के दो दिनों बाद जब आयशा के लिए उसका फोन आया, तो मुझे जैसे मन मांगी मुराद मिल गयी! उसके एक सप्ताह के बाद, आयशा ने शादी के लिए उससे हाँ कर दी! भले ही उन दोनों को एक दूसरे के बारे में बहुत कुछ न मालूम हो, लेकिन मुझे यकीन था की लड़की वाकई, बहुत खुश रहेगी! और अमर भी!

अमर और आयशा की शादी जैसे आंधी तूफ़ान की तरह हुई! दोनों ने कोर्ट में जा कर शादी करी थी – आयशा के अब्बू ने फ़िज़ूल की न नुकुर तो करी, लेकिन अमर के लायक न होने का कोई कारण न ढूंढ सके। अब बस हिन्दू पराये धर्म की के फर्क के कारण ऐसी शादी तो कोई नहीं छोड़ सकता है न? लिहाजा, दोनों की शादी आराम से हो गयी। वैसे भी अमर दिखावे के सख्त खिलाफ है – इसलिए शादी में अश्विनी, मैं, आयशा के अब्बू, और पांच और मित्रों के अतिरिक्त और कोई नहीं आमंत्रित था। शादी दिल्ली में हुई, और वहीँ पर रजिस्टर भी। वैसे तो काफी सारा प्रपंच करना पड़ता है कोर्ट की शादी में, लेकिन उसने कुछ दे दिला कर हफ्ते भर में ही दिन निकलवा लिया। किसी को उनकी शादी पर भला क्या आपत्ति हो सकती थी।

हम सभी ने बहुत मज़े किये। शादी के बाद, एक पांच सितारा होटल में खाना पीना हुआ, नृत्य भी – हम चारों ने एक दूसरे के साथ डांस भी किया। अश्विनी भी पूरा समय अमर को जीजू जीजू कह कर छेड़ती रही। फिर हम सबने विदा ली, और उनको अकेला छोड़ दिया। वापसी की फ्लाइट में अश्विनी ने पूछा,

२८

अश्विनी की नजर में:

मैं कमरे में रखे हुए आईने में अपने प्रतिबिम्ब को निहार रही थी। जो दिखा बहुत ही आश्चर्यचकित करने वाला था। वैसे भी जब कोई लड़की दुल्हन का परिधान धारण करती है, तो वो बिलकुल अलग सी ही लगने लगती है। और, मेरी सबसे प्रिय सहेली आरती ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ी थी मुझको सजाने में... आरती की ही जिद थी कि मैं लहँगा-चोली पहनूँ। रंग भी उसी ने पसंद किया। वैसे तो मैं सब कुछ अथर्व की ही पसंद का पहनना चाहती थी, लेकिन अथर्व चाहते थे कि मैं अपनी ही पसंद का पहनूँ! अब ऐसे में कोई रास्ता कैसे निकलता? इस मतभेद के कारण न तो मेरी, और न ही अथर्व की चली... और मैं अब आरती की पसंद का ही पहन रही थी, और यह हम दोनों को ही आसान लगा।

मैंने रस्ट (जंग लगे लाल) रंग का लहंगा चोली पहना हुआ था – आरती के कहने पर चोली इस प्रकार सिली गयी थी जिसमे से पीठ का लगभग सारा हिस्सा एक गोल से दिखता था। ऐसे में मैं उसके अन्दर कुछ नहीं पहन सकती थी। इसलिए आगे की तरफ स्तनों को संबल देने के लिए पैडिंग लगाई गयी थी।चोली को पीछे की तरफ से बाँधने के लिए ऊपर नीचे डोरी की जोड़ी थी। नंगी पीठ को ढंकने के लिए सर पर उसी रंग की चुनरी थी। लहंगा कुछ कुछ अनारकली टाइप का था। पूरे परिधान पर कुंदन की कारीगरी की गई थी.. इस समय मैं वाकई किसी राजकुमारी जैसी लग रही थी।

ओह! एक मिनट! कहानी एकदम बीच से शुरू हो गयी! शुरू से बताती हूँ... अमर और आयशा की देखा देखी, हमने भी कोर्ट में शादी करने का फैसला किया। अथर्व चाहते थे की कुछ तो धूम धाम होनी चाहिए – दरअसल उनको मन में था की मेरे भी अपनी शादी को लेकर कई सारे अरमान होंगे। लेकिन उस उल्लू को यह नहीं समझ आया की जिस लड़की का अपने अरमानो के रजा के साथ विवाह हो, उसको किसी दिखावे की क्या आवश्यकता? हमने किसी को कुछ घूस इत्यादि नहीं दी – और एक महीने के बाद हमारी भी शादी हो गयी। शादी में मेरे प्रिंसिपल, सारे टीचर, मेरे कई दोस्त, आरती (वो तो मेरी सबसे ख़ास है), अथर्व के ऑफिस के कुछ मित्र, और श्रीमति हेगड़े जी आमंत्रित और उपस्थित थे। हमने एक दूसरे को वरमाला पहनाई! कोर्ट कचहरी की मारा मारी थी, इसलिए मैंने सलवार कुरता, और अथर्व ने टी-शर्ट और जीन्स पहनी हुई थी। यहाँ से वापस घर जा कर अपने राग रंग वाले परिधाना पहनने का प्लान था।

पिताजी धर्म परायण व संस्कारी व्यक्ति थे। जात, बिरादरी, गाँव, घर, धर्म-कर्म में उनकी गहरी रुचि थी। हमेशा से ही उनके लिए धर्म और रीति-रिवाजों की पालना करना परम कर्तव्य था। यदि वो आज जीवित होते तो क्या सोचते? क्या वो मुझे अथर्व के साथ शादी करने देते? शायद! या शायद नहीं! कुछ कहा नहीं जा सकता! एक ही आदमी को अपनी दोनों बेटियां क्या कोई सौंप सकता है? संभव भी हो सकता है – यदि पिता को मालूम हो की वो आदमी हर तरह से अच्छा है, और उनकी पुत्रियों को प्रेम कर सकता है! मुझे आज उनकी, माँ की, और दीदी की – सबकी रह रह कर याद आती रही। बस, दिल में यह सोच कर दिलासा कर लिया की वो सभी मुझे वहीँ ऊपर, स्वर्ग से आशीर्वाद दे रहे होंगे!

हम सबने एक पांच सितारा होटल में साथ में लंच किया। काफी देर तक गप्पे लड़ाई, और फिर घर आ गए।

मेरी नजर में :

सुहागरात आ ही गई। मेरी दूसरी सुहागरात! अपनी बीवी की छोटी बहन के साथ! मन में अजीब सा लग रहा था – एक अजीब सी बेचैनी! एक होता है प्रेम करना – बिना किसी तर्क के, बिना किसी वाद प्रतिवाद के, बिना किसी लाभ हानि के हिसाब के! प्रिया के साथ मैंने प्रेम किया था। अश्विनी से भी मुझे प्रेम था, लेकिन एक प्रेमी के जैसा नहीं! अभी तक नहीं। वो अभी भी मुझे प्रिया की छोटी बहन ही लगती – वो ही छोटी सी लड़की जो मुझे 'दाजू' कह कर बुलाती थी, और फिर जीजू कह कर! अब वही लड़की मुझे पति कह कर बुलाएगी? पति बना हूँ, तो पति धर्म भी निभाना पड़ेगा। प्रिया के साथ मुझे बहुत आत्म-विश्वास था, लेकिन अश्विनी के बारे में सोच सोच कर ही नर्वस होता जा रहा हूँ!

मुझे नहीं मालूम था की अश्विनी को सहवास के बारे में कितना मालूम था। मैंने और प्रिया ने एक बार उसको कर के दिखाया था : उस दिन तो वो बहुत अधिक डर गई थी। उसने हमको कहा भी था, कि वो किसी के साथ भी ऐसे नहीं कर सकेगी! न करे तो ही ठीक है! अपनी से चौदह साल छोटी लड़की के साथ कोई कैसे सहवास करे भला? लेकिन कुछ भी हो – एक लड़की का संग मिलने का सोच कर एक प्रकार का आनंद तो आ ही रहा था। साथ ही साथ मेरे मन में कई प्रका के सवाल भी उठ रहे थे – अगर सहवास करने तक बात पहुंची, तो क्या अश्विनी मेरा लिंग ले सकेगी? उसकी योनि कैसी होगी? उसे कितना दर्द होगा? इत्यादि! खैर, इन सब प्रश्नों का उत्तर तो रात के अंक (आलिंगन / आगोश) में समाहित थे – जैसे जैसे रात आगे बढ़ेगी, उत्तर आते जायेंगे!

खैर, अंततः मैं 'हमारे' कमरे में दाखिल हुआ। हमारा कमरा आरती, अश्विनी की दो अन्य सहेलियों – अनन्या और ऋतु, और श्रीमति हेगड़े जी के निर्देशन में सजाया गया था। कमरा क्या, एक तरह का पुष्प कुटीर लग रहा था! हर तरफ बस फूल ही फूल! दरवाज़ा खुलते ही पुष्पों की प्राकृतिक महक से मन हल्का हो गया। मन में जो सब अपराध बोध सा हो रहा था, अब जाता रहा। फर्श पर फूल, दीवारों पर फूल, बिस्तर पर फूल, खिडकियों पर फूल! पुष्पों की ऐसी बर्बादी देख कर मुझे थोड़ा निराशा तो हुई, लेकिन अच्छा भी लगा। गुलाब, गेंदे, रजनीगंधा, रात रानी और चंपा के पुष्प! मादक सुगंध! बिस्तर के बगल रखी नाईट टेबल पर पानी की बोतल और मिठाई का डब्बा रखा हुआ था। बिस्तर पर अश्विनी बैठी हुई थी, और अपनी सहेलियों के साथ गुप चुप बातें कर रही थीं!

मुझे देखते ही आरती चहकते हुए बोली, “जीजू मेरे, आइये आइये! आपका खज़ाना आपके इंतज़ार में कब से व्याकुल है!” फिर मेरे एकदम पास आ कर मेरे कान में फुसफुसाते हुए बोली, “ज़रा सम्हाल के ठोकियेगा! बेचारी की योनि एकदम कोरी है!”

आरती को ऐसे नंगेपन औए बेशर्मी से बात करते देख कर मुझे हल्का सा गुस्सा आया। कैसी कैसी लड़कियों से दोस्ती है अश्विनी की?

“तुझे इतनी फिकर है तो आ, पहले तुझे ही निबटा दूं?”

लेकिन मुझे उसकी बेशर्मी का ज्ञान नहीं था। मेरी बात सुनते ही वो तपाक से बोली, “आय हाय जीजा जी, आपकी बीवी बिस्तर पर बैठी है, और आप उसकी सहेली की मारना चाहते हैं! वैरी बैड!! पहले उसकी सील तो खोल दीजिए... जब आप बाहर निकलेंगे, तो मैं भी ‘खोल’ कर रखूंगी! ही ही ही!”

आरती की गन्दी बातों से मूड ऑफ हो गया!

“कैसी बेहया लड़की है तू?”

“जीजू! आपकी साली हूँ! हमारे रिश्ते में छेड़खानी करने का बनता है न?” मेरी डांट के डर से उसका चहकना कुछ कम तो हुआ। मुझे भी लगा की आज के दिन किसी को डांटना नहीं चाहिए।

“सॉरी!” मैं बस इतना ही कह पाया।

“सॉरी से काम नहीं चलेगा! अश्विनी की हम सब रखवाली हैं.. रोकड़ा निकालिए, रोकड़ा... तब अन्दर जाने को मिलेगा! ऐसा थोड़े ही है की कोर्ट में शादी कर लोगे, तो हमको हमारी नेग नहीं मिलेगी! क्यों लड़कियों?”

अन्दर से सभी लड़कियों ने एक स्वर में आरती की इस बात का समर्थन किया। मैंने कुछ देर तक उन सबको छेड़ा और विरोध किया – लेकिन फिर उन तीनो को हज़ार हज़ार रुपए पकड़ाए और,

“चल .. दफा हो!” कह कर मैंने उनको कमरे से बाहर निकाल दिया।

"हाँ हाँ! जाइए जाइए.. अपने कबाब को खाइए.. हमारी क्या वैल्यू!!" कह कर वो ठुनकते हुए बाहर चली गयी। बाकी दोनों भी उसके पीछे पीछे मुस्कुराते हुए हो ली। मैं कुछ करता, उसके पहले ही मेरे पीछे उन दोनों में से किसी ने दरवाज़ा बंद कर लिया। मैं धीरे धीरे चलते हुआ जब बिस्तर के निकट, अश्विनी के पास पहुंचा, तो उसने बिस्तर से उठ कर मेरे पैर छूने की कोशिश करी। मैंने उसको कंधे से पकड़ कर रोक लिया,

"अश्विनी, हम दोनों पति पत्नी हैं – मतलब दोनों बराबर हैं!"

"लेकिन आप तो मुझसे बड़े हैं न..."

"शादी में दोनों बराबर होते हैं!"

"लेकिन आप तो.."

"अगर तुम मुझसे बड़ी होती, तो क्या मुझे भी तुम्हारे पैर छूने पड़ते?"

उसने तुरंत न में सर हिलाया।

"इसी लिए कह रहा हूँ, कि हम दोनों बराबर हैं! तुम्हारी जगह मेरे दिल में है! आओ इधर.."

कह कर मैंने उसको अपने गले से लगा लिया। उसको इस तरह से गले से लगाने से मुझे पहली बार उसके स्तनों का आभास हुआ – कैसे ठोस गोलार्द्ध! अचानक ही मन की इच्छाएँ जागृत हो गईं!

मैंने उसको वापस बिस्तर पर बैठाया, और उसके पास ही बैठ गया।

"देखने दो मेरी छोटी सी दुल्हनिया को!"

मेरी बात पर अश्विनी मुस्कुराई। सचमुच अश्विनी बेहद सुन्दर लग रही थी। साधारण सा मेकअप किया गया था – लेकिन उसका परिणाम जबरदस्त था! उसकी सुन्दर लाल रंग की, बूते लगी लहंगा चोली, माथे पर बेंदी, नाक में नथ, कानो में मैचिंग बालियाँ, और गले में स्वर्ण-माला! माथे पर छोटी सी लाल रंग की बिंदी, और होंठों पर उसी रंग की लाली!

कुल मिला कर एक बहुत की सुन्दर कन्या! उसके कजरारे बड़े बड़े नयन! और मुस्कुराता हुआ चेहरा.. जैसा मैंने पहले भी कहा है, भारतीय दुल्हनें, साक्षात रति का रूप होती हैं! न जाने कैसे मुझे ऐसी दो दो रतियों का साथ मिला! ऐसी लड़की पर तो स्वयं कामदेव का भी दिल आ जाय!!

उसका एक हाथ देख कर मैंने कहा,

“अरे वाह! ये मेहंदी तो बहुत सुन्दर रची है...”

“आपको अच्छी लगी?”

“बहुत!” कह कर मैंने कुछ देर ध्यान से उसकी मेहंदी की डिज़ाइन देखी... जैसे की अक्सर होता है, दुल्हनो की मेहंदी में पति का नाम भी लिखते हैं.. कुछ देर की मशक्कत के बाद मुझे अपना नाम लिखा हुआ दिख गया!

“अरे वाह! यहाँ तो मेरा नाम भी लिखा हुआ है!”

अश्विनी हौले से मुस्कुराई।

“और भी कहीं लगवाई है मेहंदी?”

“हाँ! पांव पर भी..” कह कर उसने अपना पांव आगे बढ़ाया। पांव और आधी टांग पर मेहंदी सजी हुई थी। कुछ देर वहां की डिज़ाइन का निरीक्षण करने के बाद मुझे लगा कि अब चांस लेना चाहिए।

“यहाँ नहीं लगवाया?” मैंने उसके स्तनों की तरफ इशारा किया। पति पत्नी के बीच तो ऐसे न जाने कितने ही अनगिनत छेड़खानियाँ होती हैं, लेकिन मुझे ऐसे बोलते हुए कुछ अप्राकृतिक सा लगा।

मेरी बात पर अश्विनी बुरी तरह शर्मा गयी, और न में सर हिलाया।

“ऐसे कैसे मान लूं? आओ.. देखूं तो ज़रा..” कह कर मैंने उसके सर से चुनरी अलग कर दी। चोली के कोमल कपडे से ढके उसके युवा स्तनों का आकार दिखने लगा।

“यह ब्लाउज का कपड़ा बहुत कोमल है.. लेकिन, यहाँ (उसके स्तनों की तरफ इशारा करते हुए) से अधिक यह यहाँ (बिस्तर के किनारे की तरफ इशारा करते हुए) ज्यादा अच्छा लगेगा!”

वो शर्म से मुस्कुराई।

“आपको एक बात मालूम है?” उसने अचानक ही कहा।

“क्या?”

“ब्लाउज उतारने से पहले, बीवी को कुछ पहनाना भी होता है?”

अरे हाँ! वो मुँह-दिखाई की रस्में! कैसे भूल गया! मुझे तो एक्सपीरियंस भी है!

“ओह हाँ! याद आया.. एक मिनट!”

कह कर मैं उठा, और अलमारी की तरफ जा कर, सेफ के अन्दर से एक जड़ाऊ हीरों का हार निकाला। यह हार ऐसा बना हुआ था जैसे की दो मोर पक्षी अपनी गर्दनों से आपस में छू रहे थे, और उनके पंख विपरीत दिशा में दूर तक फैले हुए थे। मोर के ही रंग की मीनाकारी की गई थी। यह मैंने स्पेशल आर्डर दे कर अश्विनी के लिए बनवाया था। मेरे हिसाब से एक नायाब उपहार था। उम्मीद थी, की उसको यह ज़रूर पसंद आएगा।

मैं मुस्कुराते हुए अश्विनी के पास आया, और उसके सामने एकदम नाटकीय तरीके से वो हार प्रस्तुत किया,

“टेन टेना!”

उसको देख कर अश्विनी की आँखें विस्मय से फ़ैल गईं।

“ये क्या है?? बाप रे!”

“ये है.. आपको पहनाने के लिए.. पहना दूं?”

“ल्ल्लेकिन.. मेरा ये मतलब नहीं था...”

“मतलब? मैं समझा नहीं..”

“आपने अभी तक सिन्दूर नहीं डाला! और मंगलसूत्र...” उसकी आँखें कुछ नम सी हो गईं।

हे देव! ये तो गुनाहे अज़ीम हो गया मुझसे! एकदम से मेरी भी बोलती बंद हो गई। मैंने जल्दी से इधर उधर देखा – सिन्दूर दान तो बगल टेबल पर दिख गया। मैंने उसको उठाया। वो सौ ग्राम का डब्बा कितना भारी प्रतीत हो रहा था उस समय, मैं यह बयां नहीं कर सकता। कोर्ट में एक दूसरे को वरमाला पहनाना, और यहाँ पर उसकी मांग में सिन्दूर डालना – दो बिलकुल भिन्न बातें थीं। अश्विनी की मांग को भरते समय मुझे अचानक ही नई जिम्मेदारी का भान होने लगा। ऐसा नहीं की कोर्ट की शादी का कोई कम मायने है.. लेकिन सिन्दूर जैसी परम्पराएँ बहुत गंभीर होती हैं। मैंने देखा की अश्विनी के होंठ भावनाओं के आवेश में कांप रहे थे।

“मंगल...” उसने इशारा कर के टेबल की दराज खोलने को कहा। बात पूरी नहीं निकली। लेकिन मैं समझ गया।

मैंने दराज खिसकाई तो उसमें छोटे छोटे काले मोतियों से सजा सोने का मंगलसूत्र दिखा। सच कहूं, यह मेरे लाये गए हार से कहीं अधिक सुन्दर था। सरल, सादी चीज़ों का अपना अलग ही आकर्षण होता है। मेरे खुद के हाथ अब तक हलके से कांपने लग गए थे। मैंने अश्विनी को मंगलसूत्र भी पहना दिया – हाँ, अब हो गयी वो पूरी तरह से मेरी पत्नी!

“अब आपको जो मन करे, उतार लीजिए!” उसने आँखें नीची किये हुआ कहा।

मुझे यकीन नहीं हुआ जब उसने ऐसा कहा।

“सच में?”

अब वो बेचारी क्या कहती? मैं भी क्या ही करता? ऐसी सुन्दर, अप्सरा जैसी पत्नी अगर मिल जाय, तो कोई कैसे खुद पर काबू रखे? इतना तो समझ आ रहा था कि उसकी चोली पीछे से खुलेगी। लेकिन मैं अपना नाटक कुछ देर और करना चाहता था। और मैंने बटन ढूँढने के बहाने उसकी चोली के सामने की तरफ कुछ देर तक पकड़म पकड़ाई करी। वैसे, अश्विनी को इस प्रकार से छेड़ने में मुझे अभी भी सहजता नहीं आई!! आयशा के साथ तो आराम से हो गया था.... फिर अभी क्यों..?

उधर, अश्विनी की हालत देख कर लग रहा था की उसका इतने में ही दम निकल जाएगा। उसने न जाने कैसे कहा,

“प प प्पीछे से...”

हाँ! पीछे से ही डोरी खुलनी थी। चोली की डोर पीछे से चोलने के दो तरीके हैं – या तो लड़की की पीठ को अपने सामने कर दो, या फिर लड़की के सामने से चिपका कर! मैंने दूसरा रास्ता ठीक समझा, और अश्विनी से चिपक कर उसकी चोली की डोर खोलने का उपक्रम शुरू किया। दो गांठें खोलने में कितना ही समय लगता है? झट-पट अश्विनी की पीठ नंगी हो गई। लेकिन मैंने आगे जो किया, उससे अश्विनी भी आश्चर्यचकित हो गई होगी – मैं पहले ही उससे चिपका हुआ था, और फिर उसी अवस्था में मैंने अश्विनी को जोर से अपने सीने से लगाया। ऐसा करते ही अचानक ही मेरे अन्दर प्रेम की भावना बलवती हो गई – मैंने कहा प्रेम की, न की भोग की! मैंने अश्विनी को दिल से धन्यवाद किया – हर काम के लिए, जो उसने मेरे लिए किया था।

मैंने उससे यह भी कहा कि यह सब मेरे लिए बहुत नया था। न केवल वो मुझसे काफी छोटी थी, बल्कि मेरे मन में उसकी जो तस्वीर थी, वो अभी भी एक छोटी लड़की के जैसे ही थी। अश्विनी संभवतः कुछ प्रतिवाद करना चाहती थी, लेकिन जब मैंने कहा कि अगर वो मुझे कुछ समय दे, और कुछ धैर्य से काम ले तो वो संयत हो गयी – कुछ निराश सी, लेकिन संयत। मुझे साफ़ लग रहा था की वो कुछ निराश तो है। इसलिए मैंने उससे कहा,

“अश्विनी, प्लीज तुम बुरा मत मानो! न जाने क्यों मुझे ऐसा लग रहा है जैसे प्रिया अभी यहाँ दरवाज़े पर आ खड़ी होगी। न जाने क्यों ऐसा लग रहा है जैसे हम दोनों उसकी पीठ पीछे

चोरी कर रहे हैं..”

अश्विनी को मेरी बात और मेरी चिंता का सबब समझ में आ गया। उसने कहा,

“आपको ऐसा क्यों लग रहा है? ... मेरी तरफ देखिए... मुझे भी आज दिन में कोर्ट में ऐसे ही लग रहा था .. जैसे माँ, पापा और दीदी हमको वहां ऊपर से देख रहे हों! लेकिन, मुझे ऐसे नहीं लगा की वो हमारी शादी पर बुरा मानेंगे! हम दोनों ने एक दूसरे से शादी करी है। चोरी नहीं! दीदी के जाने के बाद आपने जो दुःख झेले हैं, वो मुझसे छुपे हैं क्या? मुझे यकीन है, की दीदी का, और माँ पापा का आशीर्वाद हमको ज़रूर मिलेगा!”

कह कर उसने मुझे जोर से अपने गले से लगा लिया। कुछ देर मुझसे ऐसे ही चिपके रहने के बाद, मुझे पकडे हुए ही उसने कहा,

“आप मुझे किस नहीं करेंगे?”

ओह भगवान! क्यों नहीं! मैंने अश्विनी की नथ उतारी, और फिर उसके होंठों पर अपने होंठ रखे - अश्विनी के होंठ बहुत ही नरम थे, और सच मानिए, गुलाब के फूल की तरह ही महक रहे थे। मैंने उसके होंठों पर एक एक एक एक कर के कई सारे चुम्बन जड़ दिए, और फिर उनको चूसना भी शुरू किया। कुछ ही देर में उसके होंठों की लाली, मेरे होंठों पर भी लग गयी। अश्विनी तो बिलकुल अनाड़ी थी, लेकिन अपनी तरफ से कोशिश कर रही थी। उसके चुम्बन पर मुझे बहुत आनंद आ रहा था। कुछ ही देर में हमारा चुम्बन, एक आत्म-चुम्बन (या फ्रेंच किस कह लीजिए) में तब्दील हो गया – हमारी जिह्वाएं आपस में मल्ल-युद्ध लड़ने लगीं। मुझे बहुत मज़ा आ रहा था – और मूड भी बनने लगा था।

मैंने चोली के ऊपर से ही अपने हाथ को उसके सीने पर फिराया, और फिर उसके एक स्तन को पकड़ कर दबाने लगा। उसका चूचक पहले से ही मुस्तैद खड़ा हुआ था। याद रहे, मैंने अश्विनी की चोली उतारी नहीं थी, बस, उसकी पीछे की दोनों डोरियाँ खोल दी थीं – इससे चोली के सामने के कप ढीले हो गए थे। एक तरह से अश्विनी के स्तन अब स्वतंत्र हो गए थे।

मैंने कुछ देर के लिए अश्विनी को चूमना छोड़ा, और कहा,

“बिल्वस्तनी, कोमलिता, सुशीला, सुगंध युक्ता ललिता च गौरी... ना श्लेषिता येन च कण्ठदेशे, वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्।“

कुछ क्षणों तक अश्विनी ने मुझे कौतूहल भरी दृष्टि से देखा – उसको कुछ समझ नहीं आया।

उसने कहा, “अब इसका मतलब भी बता दीजिए?”

“हा हा! देवलोक की अप्सरा रम्भा के बारे में तो सुना ही होगा?”

अश्विनी ने मुस्कुराते हुए हर हिलाया।

“तो रम्भा, और शुकदेव, महर्षि वेदव्यास के पुत्र थे.. एक बार की बात है... दोनों के बीच एक लम्भी चौड़ी बहस होने लगी की किसके जीवन का तरीका श्रेष्ठ है। दोनों ही अपने तरीके को श्रेष्ठ, और दूसरे के जीवन को व्यर्थ बता रहे थे! रम्भा, क्योंकि अप्सरा है, इसलिए कहती है की भोग के बगैर जीवन व्यर्थ है! शुकदेव कहते हैं कि योग और वैराग्य बिना जीवन व्यर्थ है! एक वैरागी क्या जाने नारी के सान्निध्य का बल? वो काफी देर तक कुतर्क तो करते हैं, लेकिन रम्भा के तर्क कहीं भारी पड़ते हैं। वो कहती है, की नारी के सहयोग के बिना कुछ भी संभव नहीं है! समस्त तपों का आधार स्वयं नारी ही है। विवाद का हल तो कुछ निकला नहीं, लेकिन अंत में शुकदेव नारी को पत्नी के रूप में रखने की अनुमति दे देते हैं!”

“इंटरेस्टिंग! .. लेकिन उसका – जो आपने कहा – का मतलब क्या था?”

“हां! वो तो बताना ही भूल गया – रम्भा कहती है की बेल के फलों के समान कठोर स्तनों वाली, लेकिन अत्यंत कोमल शरीर वाली, सुशील स्वभाव वाली, महकते केशों वाली, और जिसको देखने से लालच आ जाय – ऐसी सुन्दर स्त्री का जिसने आलिंगन नहीं किया, उसका जीवन तो बिलकुल बेकार है!”

अश्विनी शर्माते हुए मुस्कुराई,

"तो..? आपका जीवन बेकार है, या..."

"ये तो इन बेलों की कठोरता पर डिपेंड करता है.. है न?"

मैंने आँख मारते हुए कहा, "जाँचा जाए?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया, तो मैंने चोली के ऊपर से ही उसके दोनों स्तनों को थाम लिया। अश्विनी की स्वतः प्रतिक्रिया पीछे हटने की थी, लेकिन उसने स्वयं को रोका। लेकिन, आज पहली बार मेरे हाथों के स्पर्श को अपने स्तनों पर महसूस करके उसको भी अच्छा लग रहा था। मैंने मन ही मन उसके और प्रिया के स्तनों की तुलना करी – अश्विनी के स्तन प्रिया के स्तनों से बस कुछ ही बड़े थे। छूने से समझ आया कि वाकई दोनों एकदम गोल और ठोस थे! मन तो उसके स्तनों की बनावट, तापमान और छुवन को अपने हाथों में महसूस करने का था, इसलिए कपड़े के ऊपर से मज़ा कम आ रहा था।

"अश्विनी, ये तो बढ़िया साइज़ के हो गए हैं!"

"आपको पसंद आये?" उसने धीमे से, शर्माते हुए पूछा।

"बहुत ज्यादा! अब खोल के दिखा दो न?"

"मैंने आपको कब रोका? मेरा सब कुछ आपका है.."

उसका इशारा पा कर मैंने उसकी चोली के सिरे को दोनों कंधे से पकड़ कर सामने की तरफ खींचा – स्तन तुरंत स्वतंत्र हो गए! जैसा सोचा था, ये दोनों वो उससे भी कई कई गुना सुन्दर निकले! बिलकुल युवा, गोल और ठोस स्तन – गुरुत्व के प्रभाव से पूरी तरह अछूते! गोरे गोरे चिकने गोलार्द्ध।

आपने कभी लाल गुड़हल की कली देखी है? खिले से कोई दो घंटा पहले वो कली एक इंच के आस पास लम्बी होती है, और बेलनाकार होती है। इसी समय कली के बीच में से योनि-

छत्र (पुष्प का मादा भाग) निकल रहा होता है। ठीक इसी प्रकार के चूचक थे मेरी अश्विनी के!

उत्तेजनावश कोई पौना इंच तक लम्बे हो गए थे। उनका रंग लाल-भूरा था – प्रिया के समान ही! अरेओला और चूचक के रंग में कोई ख़ास फर्क नहीं था। अरेओला पर छोटे छोटे दाने जैसे उठे हुए थे – ठीक वैसे ही जैसे गुड़हल के फूल का योनि-छत्र!

"ओह गॉड!" मेरे मुँह से बेसाख्ता निकल गया, "कहाँ छुपा कर रखा था तुमने इनको अभी तक?"

मेरी बात पर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं! उसके होंठो पर एक मद्धिम मुस्कान थी। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने दोनों ही स्तनों पर बारी बारी से (बिना हाथ लगाए) कई सारे चुम्बन जड़ने शुरू कर दिए। कोई दो तीन मिनट तक उसको ऐसे ही छेड़ता रहा। लेकिन मैं कब तक यह करता? मजबूर हो कर मैंने एक स्तनाग्र को अपने मुँह में भर लिया, और तन्मय हो कर चूसने लगा। उसको मन भर कर चूसा, चुभलाया, काटा, और चबाया! मेरी हरकतों पर अश्विनी उह और सी सी जैसी आवाजें निकालने लगी। फिर मैंने दूसरे के साथ भी यही किया।

इसी समय मेरे साथ वो हुआ, जिसकी मैंने कल्पना भी नहीं करी थी – मेरे लिंग से वीर्य निकल पड़ा! मुझे घोर आश्चर्य हुआ! ऐसा कैसे हो गया? मैं तो खुद को लम्बी रेस का घोड़ा मानता था, जो कभी रुकता ही नहीं था! खैर, वीर्य निकलने पर भी लिंग का कड़ापन कम नहीं हुआ – यह अच्छी बात थी। न जाने अश्विनी का क्या हाल होगा?

स्तनों को छोड़ कर मैंने कुछ देर तक उसके पेट और नाभि को चूमा और जीभ की नोक से चाटा। साथ ही साथ मैंने उसके लहँगे का नाड़ा भी चुपके से खोल दिया।

"अश्विनी रानी!" मैंने कामुक और फटी हुई आवाज़ में कहा, "अब अपने पति को अपना दिव्य रूप दिखाने का समय हो गया है!"

मेरी इस बात पर वो अचानक ही गंभीर हो गई – यह वह समय था, जिसकी वो अभी तक बस कल्पना ही कर रही थी। उसने अपने होंठों पर बेचैनी से जीभ फिराई और फिर अपने लहँगे को कमर पर पकड़े हुए बिस्तर से नीचे उतर गई। कैसी नासमझ है ये लड़की? 'दिव्य रूप' दिखाने को बोला था न! फिर भी लहँगा पकडे हुए है! लगता है ये चीर हरण भी मुझे ही करना पड़ेगा!

कुछ भी हो, मैंने जल्दबाज़ी बिलकुल भी नहीं करी। उससे भला क्या लाभ? बीवी तो अपनी ही है – कहीं भागी थोड़े ही जा रही है!! मैंने उसकी कमर को पकड़ कर अपने नजदीक बुलाया, और उसके अर्धनग्न शरीर का अपनी आँखों से आस्वादन करने लगा। अश्विनी ने देख की मैं क्या कर रहा हूँ – इस पर वो शरमा कर नीचे की तरह देखने लगी। मैंने कुछ देर खेलने और छेड़ने की सोची। उसका जूड़ा बंधा हुआ था – सामान्य सा था – कोई बहुत जटिल बंदोबस्त नहीं था। मैंने उसमे से गजरा निकाला, और उसके बालों को खोल कर बिखेर दिया। अब उसकी मूरत देखते बन रही थी – एक अत्यंत सुन्दर, अप्सरा जैसी कमसिन लड़की, अपना लहँगा पकडे मेरे सामने अर्धनग्न खड़ी हुई थी – उसकी साँसे तेजी से चल रही थीं, और उनके साथ ही उसके उन्नत स्तन ऊपर नीचे हो रहे थे, बाल खुल कर आवारा हो रहे थे... शरीर का रंग ऐसा जैसे किसी ने संगमरमर में मूंगे का रंग मिला दिया हो! जैसे दूध में केसर मिल गया हो!

वह एक अतिसुन्दर प्रतिमा जैसी लग रही थी। और मुझे ऐसे लुभा रही थी, की जैसे मुझे बुला रही हो!

अब मुझे खुद पर वाकई संयम नहीं रहा। मैं उसको कमर से पकड़ कर धीरे धीरे अपनी तरफ खींचा, और उसके दोनों हाथों को उसके लहँगे से हटाने का प्रयास करने लगा। उसके हाथ ठन्डे हो गए थे। यह सब होना तो आज की रात अवश्यम्भावी था – यह उसको भी मालूम था, और मुझे भी! लेकिन इस संज्ञान में भी सब कुछ नया था। मैं तो खेला खाया दुरुस्त हूँ, फिर भी सब कुछ नया सा लग रहा था। एकदम से उसका हाथ अपने लहँगे के सिरे से हट गया। मुझे उम्मीद थी कि गुरुत्वाकर्षण स्वयं ही उसको नीचे सरका देगा – लेकिन हो सकता है की उसका नाड़ा पूरी तरह से ढीला नहीं हुआ था, या यह की लहंगा उसकी कमर के बल पर अटक गया हो!

मैंने खुद ही लहँगे को नीचे खिसकाना शुरू किया – लेकिन ऐसे नहीं की अश्विनी तुरंत नंगी हो जाए। मैं उसको अभी कुछ देर और छेड़ना चाहता था। मैंने लहँगे को थामे हुए ही अश्विनी को घुमा कर उसकी पीठ को अपने सामने कर दिया। उसकी पीठ भी उसके शरीर

के बाकी हिस्से के समान ही सुन्दर, और निर्दोष थी! नितम्बों के ऊपर मेरु के दोनों तरफ छोटे छोटे डिंपल थे, जिनको अंग्रेजी में डिंपल ऑफ़ वीनस कहते हैं। और नीचे की तरफ उसके गोरे, चिकने नितम्बों का ऊपरी हिस्सा और उनके बीच की अँधेरी दरार दिख रही थी।

मैंने धीरे से उसके नितम्बों पर चूम लिया, और अपनी जीभ को उसकी दरार पर फिराया। मजा आया और रोमांच भी! अश्विनी सच में एक जवान कली थी, और उस पर अभी जवानी का पूरा रंग चढ़ना बाकी था। लेकिन फिर भी उसके शरीर में रस भरा हुआ था – जैसे फूलों में सार भरा हुआ होता है! वैसा ही! उस रस का मद मुझ पर चढ़ गया था – मेरे हाथ से उसका लहँगा छूट गया।

अश्विनी ने नीचे भी कुछ नहीं पहना हुआ था – कोई अधोवस्त्र नहीं! सच में! क्यों झंझट करना? एकदम से उसके सुडौल, विकसित, गोर गोर गोल नितम्ब मेरी आँखों के सामने प्रस्तुत हो गए। सच में मुझसे रहा नहीं गया! मैंने अपने पूरे मुँह और चेहरे का प्रयोग करते हुए उसके नितम्बों का भोग लगाना आरम्भ कर दिया! उनका चुम्बन, चूषण और लेहन करते समय कब वो घूम कर मेरी तरफ हो गई, उसका ध्यान नहीं रहा। लेकिन जब मांसल गुम्बजों के बजाय मेरे सामने दो मीठे मालपुए आ गए तब समझ आया की अश्विनी अब मेरी तरफ मुखातिब है।

अश्विनी की योनि के दोनों होंठ फूले हुए थे – जैसा मैंने पहले भी कहा, मीठे मीठे मालपुओं के समान (जो ऊपर नीचे रखे हुए थे)! उन होंठों पर कोई बाल नहीं था – एकदम चिकनी। और उनमें से रस तो जैसे बाँध छोड़ कर निकल रहा था। सच में, अब तो बस एक ही काम बाकी था। मैं भी उस काम में अब देर नहीं लगाना चाहता था।

मैंने अश्विनी की योनि के दोनों फूले हुए पटों के बीच एक जोरदार चुम्बन जड़ा, और उसको चूमने लग गया। कुछ देर चूमने के बाद मैंने उसके पटों को उँगलियों की मदद से कुछ फैलाया, और जीभ डाल कर चूसने लगा। मीठा रस! सच में! जैसे किसी ने उसकी योनि रस में हल्का सा शहद मिला दिया हो!

“कठोर पीनस्तन भारनम्रा सुमध्यमा चंचल खंजनाक्षी, हेमन्तकाले रमिता न येन, वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम्..”

अश्विनी अभी मुझसे इस श्लोक का अर्थ पूछने की हालत में नहीं थी, इसलिए मैंने खुद ही बताना शुरू कर दिया, "हेमंत ऋतु में, ठोस और भरे हुए स्तनों के भार से झुकी हुई, पतली कमर वाली, चंचल और धारदार चाकू जैसी नैनों वाली स्त्री से जिस किसी पुरुष ने संभोग नहीं किया, उसका जीवन व्यर्थ ही चला गया.."

"त..तो करिए न..."

मैं मुस्कुराया। मैंने अश्विनी को बिस्तर पर लिटाया। सिर्फ आभूषण, चूड़ियाँ, पायल इत्यादि पहने हुए वो बहुत प्यारी लग रही थी। कोई भी स्त्री लगेगी! सच में। मेरी बात का यकीन न हो, तो अपनी पत्नियों या प्रेमिकाओं को पूर्णतया नग्न होने को कहिए, लेकिन वो अपने गहने इत्यादि पहने रहें! फिर बताइयेगा!

जब वो लेट गई, तब मैंने अपने कपड़े भी उतारने शुरू किए – एक मिनट के अंदर ही मैं भी तैयार था। अश्विनी एक टक मेरे लिंग को ताक रही थी।

"अश्विनी रानी, सिर्फ देखो ही नहीं, इसको छू भी सकती हो! इसके साथ खेल भी सकती हो! अब से यह तुम्हारा है.. और सिर्फ तुम्हारी ही सेवा करेगा!" मैंने उसको छेड़ा, ".. लाओ अपना हाथ.. इसे महसूस करो.."

कह कर मैंने उसके हाथ में अपना लिंग पकड़ा दिया। रक्तचाप के कारण लिंग पूरी तरह से तना हुआ था, और तप रहा था। वो तो जैस जड़ हो गई – बस लिंग को हाथ में पकडे हुए हतप्रभ सी देख रही थी। मैंने उसके हाथ को अपने लिंग पर पीछे की तरफ सरकाया। ऐसा करने से उसकी चमड़ी पीछे की तरफ खिंच गयी, और लाल गुलाबी सुपाड़ा भी उसको दिखने लगा। जो वीर्य निकला हुआ था, उसका कुछ शेष अभी भी बूंदों के रूप में बाहर निकल रहा था।

"कुछ बोलो भी..."

"अभी.. तो... बस..."

"हाँ हाँ.. बोलो न?"

“बस.. सेवा कीजिए..” उसने शरमाते हुए कहा।

“जो आज्ञा देवी!” कह कर मैंने अपने दोनों हाथ जोड़ लिए। अश्विनी मुस्कुरा दी। पति-पत्नी में सबसे पहला महत्वपूर्ण कार्य है उन दोनों का संयोग! दोनों का मिलन! अब हम दोनों के मन की यही इच्छा थी।

मैंने उसको बिस्तर से उठाया, और अपनी गोद में ले कर बिस्तर पर बैठ गया। अश्विनी मेरी गोद में ही अपनी टाँगे दोनों तरफ लिए बैठी हुई थी। रक्त-चाप के कारण मेरा लिंग बार बार झटके लेता, और उसकी योनि का चुम्बन लेता! मैंने उसको अपनी बाहों में ले कर एक गहरा सा चुम्बन लिया। अश्विनी कामुकता की सीमा पर खड़ी हुई थी। उसके रस भरे, और महकते हुए होंठों का स्वाद स्वयं को भुला देने वाला था। अश्विनी भी मुझसे पूरी तरह से लिपट गयी थी – उसके दहकते स्तन मेरे सीने पर चुभ रहे थे।

अब हम दोनों ही अपने काबू में नहीं थे। ऐसे आलिंगन में बंधे हुए हम दोनों को एक दूसरे के शरीर का पूरी तरह से संज्ञान हो रहा था। हम दोनों ही अब तैयार थे। मैंने अश्विनी की गर्दन पर चुम्बन लिया – जैसे ही मैंने उसकी गर्दन पर जीभ फिराई, वो तड़पने लगी। स्त्री का शरीर पूरी तरह से काम से भरा हुआ होता है। कहीं भी छू लो, कहीं भी चूम लो.. लगभग एक जैसा ही परिणाम आता है। कुछ देर उसकी ग्रीवा चूमने के बाद मैंने जैसे ही उसकी कानों की लोलकी को अपने मुँह में लिया, वह अपने काबू में नहीं रही। उसका हाथ अनायास ही मेरे लिंग पर आ गया, और उसे सहलाने लगा।

इतना इशारा काफी था। हम दोनों ही कुछ देर में पागलों की तरह एक दूसरे के शरीर के अंगों को सहला, छू और मसल रहे थे। मैंने पुनः अपनी जीभ उसके एक स्तन के चूचक पर फिराया – अश्विनी अब निर्लज्ज हो कर जोरों से सीत्कार करने लगी। अगर बाहर कोई जाग रहा होगा, तो उसको अश्विनी की कामोत्तेजक आवाजें सुनाई दे रही होंगी! वैसे इससे क्या फर्क पड़ता है? अगर यह सब आज नहीं, तो कब होगा? उसने मेरा लिंग पकड़ लिया, और उसको सहलाने लगी।

मैं भी एक चंचल बच्चे की भांति कभी तो उसका बाएँ स्तन का भोग लगाता, तो कभी दाएँ स्तन का! हम सब पुरुष, और काफी सारी स्त्रियाँ भी, इस बात से सहमत होंगे की एक युवा स्त्री के स्तन, इस पूरे संसार के सबसे स्वादिष्ट, सबसे मीठे फल होते हैं! भले ही आम को फलों का राजा माने, लेकिन एक स्त्री के उन्नत आमों के सामने उनका स्वाद फीका ही है! मैं

पुनः अश्विनी के स्तन रुपी आमों का रसास्वादन करने लगा। इतने में अश्विनी पुनः स्खलित हो गयी।

मुझे समझ आया की उसके साथ क्या हो रहा है – ऐसे में मैं उसको अपनी गोद में ही लिए चूमता रहा, जब तक वो अपने काम के ज्वार से नीचे नहीं उतर गयी। कुछ देर सुस्ताने के बाद मैंने उसको वापस नीचे, बिस्तर पर लिटाया। अश्विनी की साँसे अभी भी गहरी गहरी चल रही थीं। मैं उसको लिटा कर नीचे की तरफ खिसक आया।

मैंने उसकी टाँगे कुछ फैलाईं जिससे उसकी योनि का अभिगम कुछ आसान हो सके। उसकी योनि तो अब तक न जाने कितना सारा रस निकाल चुकी थी – वहां का गीलापन साफ़ दिख रहा था। इसके बाद मैं उसकी मालपुए के सामान मीठी, रसीली और मुलायम योनि का रसास्वादन करने लगा। मैंने अपनी जीभ उसकी नर्म गर्म योनि में प्रवेश कराया – अश्विनी किसी जानवर की तरह भर्राती गुर्राती हुई कराह निकालने लगी। मैंने अपनी जीभ को उसमें जल्दी जल्दी अंदर बाहर कर के उसके आगे आने वाले प्रोग्राम के बारे में अवगत कराया। अश्विनी तो आज जैसे वासना रुपी परमाणु बम के भण्डार पर बैठी हुई थी – एक के बाद एक चरमोत्कर्ष प्राप्त कर रही थी। कुछ ही देर में अनवरत जिह्वा-मैथुन के बाद, अश्विनी पुनः कांपते, कराहते आहें भरने लगी। मुझे अपने मुँह में पुनः गर्म द्रव का अनुभव हुआ। मैं समझ गया कि अश्विनी फिर से स्खलित हो गई है।

उसको मैंने कुछ देर आराम करने दिया। मुझे खुद पर भी नियंत्रण नहीं था। इतना देर भला कब तक चलता? मेरे अन्दर का लावा भी बाहर निकलने को उद्धत था। मैं अंततः उसके ऊपर आ गया। मैंने लिंग को उसकी योनि मुझ पर टिकाया और एक धक्के से उसकी योनि में प्रवेश करा दिया। अश्विनी की कोरी, कुँवारी योनि बहुत छोटी भी थी। धक्के के कारण मेरा करीब दो इंच लिंग उसकी योनि में प्रवेश कर गया – लेकिन उधर उसकी चीख निकल पड़ी। गलती यह हुई की मैंने उसके होंठों पर अपने होंठ नहीं रखे। अब तक तो सभी को मालूम हो गया होगा, की अश्विनी अब लड़की नहीं रही!

मैंने उसको दो तीन चुम्बन दिए, और उसके गालों को सहलाते हुए बोला, “शाबाश अश्विनी! बस.. अब हो गया! वेलकम टू वुमनहुड! बस.. कुछ ही देर में सब ठीक हो जाएगा! ओके हनी? अभी मज़ा आने लगेगा! बाकी अन्दर जाने दो! डोंट रेसिस्ट! अब और तकलीफ़ नहीं होगी। ठीक है?”

अश्विनी ने सर हिला कर जवाब दिया।

मैंने आगे कहा, "अगर दर्द हो, तो बता देना! ओके हनी?"

उसने फिर से सर हिलाया। मैंने हल्का सा बाहर निकाल कर पुनः अन्दर की तरफ धक्का लगाया – उसको पुनः दर्द हुआ, लेकिन उसने किसी तरह से दर्द को ज़ब्त कर लिया। इस धक्के का परिणाम यह हुआ की अब बस एक डेढ़ इंच ही बाहर निकला हुआ था। मैंने नीचे की तरफ देखा, और फिर वापस अश्विनी को बोला,

"देख अश्विनी... सब अन्दर हो गया.. देख न?"

अश्विनी ने बड़ी कठिनाई से नीचे भौंचक्क रह गई।

"ब्ब्ब्बाप रे! अआआपने इसकी शकल बिगाड़ दी! उफ़..." मैंने लिंग को बाहर खींचा।

बात तो सही थी – उसकी छोटी सी योनि में मेरा मोटा सा लिंग ऐसे ही लग रहा था! उसकी योनि का वाह्य हिस्सा इतना खिंच गया था, की वो अभी एक पतले छल्ले के समान लग रहा था। इसमें भला क्या आनंद आएगा किसी को? बेचारी को कितना दर्द हो रहा होगा!!

"दर्द होता है? निकाल दूं बाहर?" मैंने पूछा।

मैंने पूछ तो लिया, लेकिन मन ही मन सोच रहा था की बाहर निकालने को न बोले।

"न..नहीं! दर्द नहीं है.. पहले आप कर..." बोलते बोलते वो रुक गयी – अब यह शर्म थी, या उसकी वासना, या फिर थकान! अभी कहना मुश्किल है। वो अपने होंठ भींच कर, मुँह मोड़ कर होने वाले हमले के लिए तैयार थी।

"पहले आप "क्या" कर...? बोलो न?"

"अहह.. प्लीज छेडिये नहीं.."

"अरे! मुझसे क्या शरमाना? बोलो न?"

अश्विनी ने सर हिला के ‘न’ कहा।

“बोल दोगी, तो जोश आएगा मुझे! और फिर हम दोनों को ही मज़ा आएगा.. बोल न!”

“बोल न क्या करूँ?”

“ओह्हो!” फिर धीरे से, “सहवास..”

“अरे हमारा वाला बोलो!” मैंने आगे छेड़ा।

“ठुका..ई”

“वैरी नाईस.. ये लो” कह कर मैंने धीरे धीरे धक्के लगाना शुरू किया। अश्विनी भी प्रिया के ही समान छोटे काठी की लड़की थी – जब मेरा लिंग पूरी तरह से उसके अन्दर घुस गया, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने उसके पूरे योनि मार्ग का नाप ले लिया हो! एक बात और थी – अश्विनी, प्रिया के मुकाबले कुछ अधिक साहसी और अभिव्यंजक थी। मैं जब धक्के लगा रहा था, तब वो स्वयं भी नीचे से धक्के लगा रही थी। सहवास का मज़ा तो तभी है, जब दोनों साथी उसका आनंद एक साथ उठाएँ, नहीं तो बस वह इवाली बात है की एक का मज़ा और दूसरे की सज़ा!

मैं उसकी मखमली योनि का आनंद उठाने के साथ साथ उसके स्तनों को कस कर दबा और निचोड़ भी रहा था। कोई और समय होता, तो उसकी चीख पुकार और रोना धोना मच जाता.. लेकिन सहवास के समय शरीर का रक्त चाप और दाब इतना बढ़ जाता है की इस प्रकार की हरकतें दर्द देने के बजाय दरअसल उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। अश्विनी भी इस प्रकार के मर्दन से उन्माद में तड़पने लगी और मस्त होकर अपने नितम्बों को और जोर शोर से ऊपर की तरफ ठेलने लगी। उसे अपनी पहले ही सहवास में पूर्ण आनंद मिल रहा था। और अचानक ही वो एक बार पुनः स्खलित हो गई। कमाल है! इतनी बार! मेरा अब भी नहीं हुआ था। जबकि मैं खुद भी अपने दूसरे स्खलन के कगार पर खड़ा हुआ था। संभवतः, अश्विनी ही बहुत जल्दी जल्दी स्खलित हो रही थी। खैर, मैंने धक्के लगाना जारी रखा। अश्विनी के आखिरी स्खलन के कोई दो तीन मिनट के बाद अंत में मेरा भी स्खलन हो गया।

पहले तो मैंने सोचा की बाहर निकाल देता हूँ... फिर लगा, की पहला वाला तो अश्विनी के अन्दर ही जाना चाहिए। ऐसा सोचते ही वीर्य एक विस्फोट के समान मेरे लिंग से बाहर निकल गया। पिछले कुछ दिनों से संचय हुआ सारा रस अश्विनी के गर्भ में समां गया। बहुत ही थका देने वाला सहवास किया था हमने! क्रिया समाप्त होते ही हम दोनों ही एक दूसरे की बाहों में थक कर यूँ ही पड़े रहे (दरअसल मैं उसके ऊपर ही पड़ा हुआ था, और मेरा लिंग अभी भी उसी के अन्दर था)। हाँलाकि मैं कुछ देर तक अश्विनी के शरीर के विभिन्न हिस्सों को सहलाता रहा, और चूमता रहा। हम दोनों की ही वासना अब धीरे धीरे शांत होने लगी थी। मेरा लिंग भी सिकुड़ कर स्वयं ही उसकी योनि से बाहर आ गया।

हम दोनों ही अब बिस्तर पर अगल बगल सट कर लेट गए। अश्विनी को भी अब शान्ति मिली होगी। उसने एक अंगड़ाई ली – अंगडाई में उसके रूप रंग की रौनक देखते बनती थी! उसने मुझे स्वयं को ऐसे आसक्त हो कर देखते हुए देखा तो मुस्कुरा दी। करवट लेकर मेरी पीठ सहलाने लगी। मैंने भी मुस्कुरा कर उसके होंठों पर एक चुम्बन लिया और कहा,

"अश्विनी, मज़ा आया?"

उसने उत्तर में मुस्कुरा दिया।

"तुमको दर्द तो नहीं हुआ न?"

पहले तो उसने 'न' में सर हिलाया और फिर कहा, "हुआ.. लेकिन आपने सब भुला दिया। अभी हल्का हल्का मीठा मीठा दर्द है!"

उसने जिस अदा से यह बात कही, उससे मेरा लिंग पुनः कड़क हो गया।

"एक और राउंड हो जाए?" कह कर मैंने उसके एक स्तन को हल्का सा दबाया।

"बाप रे! आप फिर से रेडी?"

"और क्या? तुमको भली भांति ठुकी हुई महिला जो बनाना है.."

"उफ्फ़! ऐसी बात है तो फिर मैं भी ठुकने को तैयार हूँ... आप शुरू कीजिए..."

कहते हुए उसने शरमा के अपने चेहरे को अपनी हथेली से ढँक लिया। अब बार बार क्या वर्णन किया जाय? हमारी सुहागरात की दूसरी ठुकाई कोई आधा घंटा और चली। अश्विनी इतनी देर में तीन बार और स्खलित हुई। अगर वो हर बार ऐसे ही द्रव निकालती रही, तो उसको तो डी-हाइड्रेशन का खतरा हो जाएगा! खैर, जब हम दोनों भली भांति थक गए, तो निकट रखी बोतल से पानी पिया। उसके बाद एक दूसरे से लिपट कर सो गये।

नव विवाहित होना अपने आप में ही एक मादकता भरा अनुभव होता है। शरीर में एक भिन्न प्रकार की थकावट, ऊर्जा और इच्छा का अद्भुत सम्मिश्रण होता है। और इस भावना का सबसे अधिक जोर नव विवाहित युगल की पहली रात को होता है। ऐसा नहीं है की बाद में नहीं होता, लेकिन एक दूसरे के शरीर को देखने, महसूस करने और जानने की तीव्र इच्छा, एक दूसरे के स्पर्श का मादक अनुभव, और पहले पहले संसर्ग का अनुभव – विवाह के बाद की पहली रात को सचमुच अनोखा बना देती हैं।

२९

मेरी आँख खुली तो देखा की सुबह की पांच बज रहे हैं। अश्विनी मेरे बाएँ बाजू पर सर रखे, और मुझसे लिपटी हुई सो रही थी – ठीक वैसे ही जैसे सोने से जाने से पूर्व – मतलब पूर्णतः नग्न। मैंने प्रेम भरी मुस्कान से सोती हुई अश्विनी को देखा। ईश्वर के खेल निराले होते हैं। पहले तो मेरे और अश्विनी के सारे सहारे छीन लिए, और फिर ऐसी परिस्थितियाँ बना दीं की आज हम दोनों एक दूसरे के ही सहारे बन गए हैं! कहते हैं न की सुबह सुबह अगर मन से प्रार्थना करी जाय, तो वह ज़रूर सार्थक होती है – तो मेरी ईश्वर से बस यही प्रार्थना है की मैं अश्विनी को हमेशा खुश रख सकूँ! उसको कभी भी उसके परिवार की कोई कमी न महसूस होने दूं! उसकी हर छोटी बड़ी ज़रुरत को पूरा कर सकूं, और... उसके शरीर को हमेशा यौन रस से सिंचित रख सकूँ!

ये आखिरी वाली प्रार्थना पर मेरा लिंग तुरंत तैयार हो गया। मैं मुस्कुराया – अगर प्रार्थनाएँ इसी तरह से तुरंत स्वीकार हो जाएँ, तो क्या बात है! मन के कहीं किसी कोने में एक बार यह आवाज़ भी निकली की काश प्रिया भी आ जाय! लेकिन क्या कभी आशाओं पर ही निर्भर कोई कामना पूरी होती है भला? मैंने एक गहरी साँस छोड़ी – प्रिया के साथ साथ ही हमारे अनगिनत मधु-मिलन की कई सारी छवियाँ मेरे आँखों के सामने एक चलचित्र के समान चलने लगीं! अश्विनी को भोगने के लिए मैं एक बार पुनः तैयार था।

मैंने अपने दाहिने हाथ को नीचे की तरफ बढ़ाया, और उसकी उँगलियों की सहायता से अश्विनी की योनि के दोनों पटों को थोड़ा फैलाया। मुझे तो लगता है की योनि का स्त्री के मस्तिष्क में एक कोई ख़ास संयोजन होता है। इतनी बार मैंने देखा है की जैसे ही किसी स्त्री की योनि को छुओ, वो चिहुंक उठती है। अश्विनी भी चिहुंक गई – सोते सोते ही!

“उम्म्म!” उसने सोते हुए ही जैसे शिकायत करी हो!

मैं मुस्कुराया और बहुत सम्हाल कर उसके सर के नीचे से अपना हाथ निकाला, और उसके सर के नीचे तकिया रख दिया। मैं जल्दी से नीचे की तरफ लपका। अश्विनी अभी भी अल्हड़ता से सोती थी। मतलब – उसके पैर हमेशा इतने खुले हुए रहते थे जिससे उसकी योनि तक आसानी से पहुंचा जा सके। मतलब मुझे कुछ ख़ास करने की ज़रुरत नहीं थी –

मैंने बस अपने होंठ उसके योनि के होंठों पर लगा दिए और जीभ को धीरे से अन्दर प्रवेश करने लगा।

“अह्ह्ह्ह... जानू!” अश्विनी सोते सोते ही बोली!

‘कमाल है! नींद में भी मालूम है की कौन है!’

मैंने मुस्कुराते हुए सोचा। खैर, काफी देर तक तबियत भर कर मैंने उसकी योनि को तब तक छेड़ा, जब तक उसमें से मीठा मीठा रस नहीं निकल आया। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान अश्विनी विभिन्न प्रकार की मादक आवाजें निकालती रही। जब मैंने उसकी योनि छोड़ी, तो वो मुस्कुराते हुए मुझसे बोली,

“सुबह सुबह उठते ही आपको इसकी याद आ गई?”

“और नहीं तो क्या? नई नवेली और जवान बीवी की योनि की याद नहीं आएगी तो और किस चीज़ की याद आएगी?”

“छी! आप कैसे बोलते हैं!”

“पहले बता, और किसकी याद आएगी?”

“अरे! भगवान की.. और किसकी?” वो मुस्कुराई।

“तुमको याद आती है?”

उसने हामी में सर हिलाया।

“किस भगवान् की?”

“अरे...! सबकी!”

“अरे... सबकी का क्या मतलब? मेरा मतलब.. कोई ख़ास भगवान?”

“भगवान ..”

“हम्म... ” मैंने उसको छेड़ा!

मुझे लगा की वो शरमा जायेगी, या कुछ विरोध करेगी.. लेकिन मेरी इस बात पर अश्विनी एकदम से गंभीर हो गई।

“मैं आपसे एक बात कहूँ?”

‘ओह्हो! जब लड़कियाँ सीरियस होती है तो कुछ न कुछ गड़बड़ होता है..’ मैंने सोचा।

“हाँ!”

“आप प्रॉमिस करिए की मैं जो कुछ कहूँगी, और करूंगी, आप करने देंगे?”

“ऐसे बिना सुने, जाने कैसे प्रॉमिस कर दूं?”

“आपको अपनी बीवी पर भरोसा नहीं?”

“अरे! ऐसी बात नहीं है..”

“तो फिर प्रॉमिस करिए!”

“अच्छा बाबा! प्रॉमिस! मैं तुमको नहीं रोकूंगा!”

मेरे ऐसा बोलते ही अश्विनी एकदम से खुश हो गई। उसने मुझे बिस्तर पर एक तरफ बैठने को कहा। बाद में मैंने ध्यान दिया की उसने मुझे पूर्व की दिशा के सम्मुख बैठाया था। उसने कमरे की खिड़की और परदे भी खोल दिए। उस समय कोई साढ़े पांच हो रहे होंगे। बाहर अभी भी अँधेरा था – इसलिए अश्विनी ने कमरे की लाइट भी जला दी।

“बैठे रहिएगा... बस दो मिनट..” कह कर वो ऐसे नंगी ही, दबे पांव कमरे से बाहर निकल गई। घर में और लोग भी थे... लेकिन, अभी तो सभी सो रहे होंगे! मैं सोच रहा था की क्या

करने वाली है! खैर, मेरे सोचते सोचते, जैसा की उसने कहा था, सिर्फ दो मिनट में वापस आ गयी। उसके हाथ में एक छोटी थाली थी – उसमे आरती का सामान था – दिया, चन्दन, फूल इत्यादि! मैं भौंचक्क था!

उसने आरती का दिया जलाया, फिर मेरे माथे पर चन्दन का एक लम्बा तिलक लगाया और फिर दिया जला कर मेरी आरती उतारी।

"आप ही मेरे भगवान् हैं.. मेरे सब कुछ!" कह कर वो मेरे सामने घुटनों के बल बैठ गई और झुक कर मेरे पैरों पर अपना सर टिका दिया! मुझे तो जैसे काटो खून नहीं! ये क्या कर रही है! मैं इस लायक नहीं हूँ! लेकिन मैं कुछ भी कहने और करने की अवस्था में नहीं था। अश्विनी एक अलग ही दुनिया में थी – ऐसा लग रहा था!

"आप ही मेरे भगवान हैं.. और ये मेरा प्रसाद!" कह कर उसने मेरे खड़े हुए लिंग पर भी टीका लगें और उसकी भी आरती उतारी, और उसको भी शीश नवाया। फिर उसने मेरे लिंग के सिरे को एक हल्का सा चुम्बन दिया। अश्विनी इतनी प्रसन्न लग रही थी, जैसे किसी बच्चे की मन मांगी मुराद पूरी हो जाती है!

"अब मैं आपसे एक विनती करूँगी – याद रहे, आपने प्रॉमिस किया था की आप मेरी बात मानेंगे! है न?"

मेरी तो जैसे तन्द्रा भंग हुई.. "बोलो!"

अश्विनी की मेरे लिए इतनी श्रद्धा देख कर मुझे डर सा लग गया।

"अश्विनी... इधर आओ! मेरे पास... प्लीज!"

मैंने अश्विनी को अपने पास बुला कर अपनी जांघ पर बैठाया, और प्यार से उसके गाल को सहलाते हुए कहा,

"अश्विनी... तुमने बहुत बड़ी बात कर दी आज! बहुत सम्मान और बहुत प्यार दिया है! इसलिए मैं भी एक बात कहना चाहता हूँ... पत्नी सहवास का यन्त्र नहीं होती। कम से कम

मेरे लिए तो बिलकुल नहीं! ऐसा नहीं है की मुझे सहवास करना अच्छा नहीं लगता – बल्कि मुझे तो बहुत अच्छा लगता है.. लेकिन, ऐसा नहीं है की तुम्हारा उपयोग बस इसी एक काम के लिए है! मुझे भी तुमसे प्रेम है! और मैं भी तुम्हारा बहुत सम्मान करता हूँ.. हम दोनों खूब सहवास करेंगे! खूब! लेकिन, तभी जब हम दोनों ही मन से तैयार हों!"

अश्विनी मेरी बात सुन कर मुस्कुरा दी।

"और एक बात.. अगर तुम मुझे अपना भगवान मानती हो, तो मैं भी तुमको अपना देवी मानता हूँ!" कह कर मैंने उसके माथे को चूम लिया, और नीचे झुक कर उसके पैरों को छू कर अपने माथे पर लगा लिया। अश्विनी मेरी इस हरकत पर सिसक उठी,

"आह.. आप मुझे पाप लगवाओगे!"

"कोई पाप वाप नहीं लगेगा!"

अश्विनी कुछ देर तक चुप हो कर मुझे देखती रही। मुझे लगा कि वो कुछ कहना चाहती है।

"क्या हुआ? कुछ कहना चाहती हो?"

उसने हामी में सर हिलाते हुए कहा, "हाँ.. मैं 'इसको' एक बार ठीक से देख लूं?" उसने मेरे लिंग की तरफ इशारा किया।

मैं मुस्कुराया, "तुम्हारा ही तो है.. अच्छे से देखो.. एक बार ही नहीं, बार बार.."

वो मुस्कुराती हुई, लगभग उछल कर मेरी गोद से नीचे उतरी, और उत्साह के साथ मेरे लिंग को अपने हाथ में लेकर उसका निकटता से निरीक्षण करने लगी। इस तरह से छूने-टटोलने से वो कुछ ही देर में पुनः स्तंभित हो गया।

"बाप रे! कितना बड़ा है आपका!"

"आपने किसी और का भी देखा है?"

“नहीं.. किसका देखूँगी भला?”

“देखना है?”

“न बाबा.. जिसके हाथ में ऐसा वाला हो, उसको किसी और ‘के’ की क्या ज़रुरत?”

“हा हा! आपको पसंद है?”

“हाँ! बहुत! लेकिन सचमुच.. बहुत बड़ा है!”

“बड़ा है, तो बेहतर है..”

“हाँ हाँ.. कहना आसान है.. अन्दर लेना पड़े, तो समझ आये!”

“एक बार तो हो गया.. आगे अब आसान रहेगा!”

“भगवान करे कि ऐसा ही हो!” फिर कुछ रुक कर, “मुझे तो लगता है.. जब आपने ‘ये’ पूरा अन्दर डाल दिया था, तो मेरा वज़न कम से कम एक किलो तो बढ़ ही गया होगा!”

“चल... ये गधे का थोड़े ही है..”

“ही ही! आप भी न..” कह कर वो पुनः निरीक्षण में लग गई।

“आपके यहाँ (उसने शिश्नाग्र के नीचे इशारा किया) और यहाँ (मेरे दाहिने वृषण की तरफ इशारा किया) पर तिल है...”

“हम्म म्म्म! तो? उससे क्या?”

“कहते हैं यदि पुरुष के गुप्तांग पर तिल हो तो वह पुरूष अत्यधिक कामुक होता है.. और एक से अधिक स्त्रियों के संसर्ग का सुख पाता है।“

“अच्छा जी! ऐसा है क्या? ह्म्म्म.. और इसका क्या मतलब है?” कहते हुए मैंने अश्विनी के दाहिने स्तन के बाहरी तरफ के दो तीन तिलों की तरफ इशारा किया।

वो शरमाती हुई बोली, “इसका यह मतलब है की जिसके सीने के दाहिनी तरफ तिल होता है, उसको सुन्दर जीवनसाथी मिलता है...”

“ओह्हो... फिर तो गड़बड़ हो गई! तुमको तो मैं मिल गया!!” मैंने अश्विनी को छेड़ा।

“अरे क्या गड़बड़? आप तो कितने सुन्दर..” कहते कहते अश्विनी रुक गई और उसका चेहरा शरम से लाल हो गया।

“अच्छा जी! ऐसा है?”

“जी हाँ.. मैंने तो जब पहली ही बार आपको देखा था, तभी आप मुझे बहुत पसंद आ गए थे!”

“अच्छा! ऐसी बात है? तो फिर आपने कुछ कहा क्यों नहीं?”

“क्या कहती? मैं तो छोटी थी, और आपको दीदी पसंद थी! तो मैंने सोचा की आपके जैसा ही कोई चाहिए मुझको! लेकिन फिर दीदी के जाने के बाद...”

प्रिया की बात सुन कर दिल भर आया। पहले प्रिया, और अब उसकी बहन – यह बात सोच कर ह्रदय में ग्लानि सी हो गई... फिर लगा, कि हमने तो बाकायदा शादी करी है.. तो उसमे क्यों ग्लानि हो? अश्विनी जैसे मेरे चेहरे पर से ही मेरे मन में उठने वाले भाव पढ़ रही हो!

“आपसे एक बात कहूँ?”

मैंने हामी में सर हिलाया।

“आपकी कोई भी इच्छा हो – जो पूरी नहीं हुई हो, दीदी या आयशा किसी ने भी.... या जो भी आप करना चाहते हैं.. मुझसे कहिएगा। मैं कभी आपको मना नहीं करूँगी। आप जो

भी कहेंगे, मैं करूँगी।“

“प्यारी अश्विनी.. हम किसी कम्पटीशन में हैं क्या?”

“नहीं नहीं.. मेरा वो मतलब नहीं है... मैं तो बस..”

“मुझे मालूम है की तुम क्या कहना चाह रही हो! और मुझे ख़ुशी है की तुम मुझसे यह सब कह रही हो! मुझे भी तुमसे प्रेम है... और मैं तुम्हारी बहुत इज्ज़त करता हूँ। इसलिए ही नहीं की तुम मेरी पत्नी हो.. बल्कि इसलिए भी की तुम एक बहुत अच्छी इंसान हो, और मैं तुम्हारी सेवा कर उम्र भर कर्ज़दार रहूँगा।“

मेरी बात सुन कर अश्विनी की आँखें भर आईं।

“चलिए जी! ये भी क्या बात है? मेरी सुहागरात के दिन ही आप मुझे रुला रहे हैं!” कहते हुए उसने अपने आँसूं पोंन्छे।

“ओओओ.. मेरी प्यारी बीवी नाराज़ हो गई? इसको कैसे मनाऊँ? कैसे मनाऊँ... हम्म्म.. सुहागरात में तो बीवी को मनाने का बस एक ही तरीका है..”

“वो क्या?”

“उसकी योनि चाट कर..”

“छीह्ह! आप ऐसे ऐसे शब्द मत बोला करिए.. आपके मुँह से अच्छा नहीं लगता!”

“अच्छा! लेकिन मेरा मुँह अपनी योनि पर महसूस करना अच्छा लगता है?”

मेरी बात पर अश्विनी बुरी तरह शरमा गयी!

“आप करते जाइए... धीरे धीरे सब अच्छा लगने लगेगा!”

“दैट्स लाइक माय गर्ल!” कह कर मैंने अश्विनी को बिस्तर पर लिटाया, उसकी टाँगे फैलाईं, और उसकी मालपुए जैसी मीठी मीठी योनि को फिर से भोगने लगा।

“जानेमन! तुमको मालूम है की तुम्हारी योनि का स्वाद कितना मीठा मीठा है? इसमें शहद डाल दिया था क्या?”

“ओह्ह्ह्ह.. नहीं.. ल्लेकिन यह सोच कर.. कि अअअआआज्ज से आपके सामने मुझे नंगी रहना पड़ेगा, मेरी योनि से बस रस बहता ही जा रहा है! आःह्ह्ह! ऊऊह्ह्ह!”

“सच में?”

“क्या सच में?” अश्विनी जैसे किसी तन्द्रा से जागी। उसका एक और स्खलन समाप्त हो गया था।

“तुम आज से नंगी रहोगी?”

"मैं नंगी रहूंगी, तो आपको ख़ुशी मिलेगी?”

“हाँ!”

"मुझे नंगी देखकर आपको क्या कोई एक्स्ट्रा खुशी मिलेगी?” अश्विनी ने मुझे छेड़ा, “आपने पहले तो दीदी, और फिर आयशा - उनको तो लगभग हर रोज़ ही नंगी देखा होगा!"

"हाँ! और तुम भी तो मेरी पत्नी हो! वो कोई बौड़म ही होगा, जो तुम जैसी पत्नी को नंगा न रखना चाहे! खुशी तो मिलेगी ही, और शारीरिक संतुष्टि भी मिलेगी मुझे! प्रिया से भी मिलती थी, और आयशा से भी! और अब, तुमको देख कर तुमसे भी वही खुशी पाना चाहता हूँ।"

कहते हुये मैंने अश्विनी की योनि की दरार पर उंगली फिराई – मेरी उंगली गीली हो गयी। मैंने उसको दिखाते हुए उसके रस से भीगी उंगली को अपने मुँह में रख कर चूस लिया।

"अच्छा जी! तो आप मुझे न सिर्फ नंगी रखना चाहते हैं, बल्कि शारीरिक सुख भी चाहते हैं!" उसने मुझे छेड़ा!

"हाँ"

"इतना सब कुछ... और इतने सस्ते में!"

"अरे! सस्ता क्या? हर बार तुम्हारा वज़न एक किलो बढाऊँगा न!" मैंने भी उसको छेड़ा।

"हा हा! और जब बाकी लोग मुझे ऐसे देखेंगे तो?"

"तो क्या? मैं उनके सामने ही यह सब करूँगा।"

"अच्छा! तो बीवी की नुमाइश लगने वाली है! और अगर देखने वालो में से किसी ने ऐसा ही कुछ करने की सोची तो?"

"तो क्या? अगर देखने वाला आदमी हुआ, तो मैं तुम्हारी योनि में डालूँगा, और उसको तुम्हारी नितंब में डालने को कहूँगा!"

"धत्त! गंदे!"

"अरे सुन तो ले पूरा... और अगर औरत हुई, तो उसको तुम्हारी नितंब चाटने को कहूँगा, और मैं तुम्हारी योनि में डालूँगा!

"आप इतनी गन्दी बाते क्यों कर रहे हो?" अश्विनी ने मेरे चेहरे हो अपनी हथेलियों में भरते हुये कहा।

"सॉरी जानू.. ऐसे ही!"

"आप मुझे किसी के साथ भी शेयर मत करिएगा प्लीज!"

"आई ऍम सॉरी जानू! अब ऐसे कुछ नहीं कहूँगा तुमको!"

“मैं आपको बहुत प्यार करती हूँ! किसी भी चीज से कहीं ज्यादा...." कहते हुये अश्विनी ने अपने होंठ मेरे होंठों से मिला दिये और उत्साह और जोश से चुम्बन देने लगी। जब वह चुम्बन करके पीछे को हुयी तो उसने कहा,

“मैं सच में नंगी रह लूंगी.. आप देखना.. लेकिन मुझे अपने सिवाय किसी और को न देना!”

मैंने उसका चेहरा अपने हाथों में भरकर कहा, “अश्विनी, तुम बहुत अच्छी हो!”

“हाँ... मुझे पता है कि मैं क्यों अच्छी हूँ! मैंने नंगी रहने का वायदा किया है, इसीलिए न?”

“हाँ...वो भी है।“

“आपको मेरे बूब्स अच्छे लगते हैं?” अश्विनी ने मेरी आँखों को देखा – वो काफी देर से उसके स्तनों पर ही जमी हुई थीं।

“हाँ! मुझे तुम्हारे बूब्स बहुत अच्छे लगते हैं..”

और मैंने उसके स्तनों को अपने हाथों से लेकर दबाना, मसलना शुरू कर दिया।

"आआह्हह्हह! आराम से! उफ़!” अश्विनी थोडा इठलाई, “अच्छा एक बात बताइए – दीदी और आयशा के मुकाबले आपको मेरे कैसे लगते हैं?”

"कामुक! और टेस्टी!”

"तो फिर! अब क्या करने का इरादा है?" उसने कहा।

“इनको पीने का प्लान है अब!”, मैंने कहा, और उसके एक चूचक को अपने मुँह में ले लिया!

“आह! हाँ! आह्ह.. आराम से जानू!!” अश्विनी अपने सीने को आगे की तरफ ठेलते हुए बोली।

मैंने जी भर कर और जोश में उसके चूचक चूसना शुरू कर दिया। अश्विनी आहें भरने लगी।

“काश, इनमें दूध भरा होता!”, मैंने चूसते हुए बीच में कहा।

"हा हा! अच्छा जी... आपके इरादे बड़े नेक हैं! लेकिन इसके लिए तो आपको मुझे प्रेग्नेंट करना पड़ेगा।" अश्विनी हँसते हुए बोली।

“तो फिर ठीक है, चलो.. तैयार हो जाओ..”, मैंने कहा।

“क्या?”

"अरे! तुमको प्रेग्नेंट करने का यही तो एक तरीका है!”

अश्विनी ने मेरे तने हुए लिंग को देखा, और कहा, “आपका ‘वो’ बहुत आतुर है अपनी सहेली से मिलने के लिए!”

“हाँ! इसकी सहेली भी इससे मिलने के लिए लार टपका रही है न!”

अश्विनी ने अपने दोनों हाथों से मेरे लिंग को पकड़ा और सहलाने लगी। उसी समय मैंने भी उसको पुनः चूमना शुरू कर दिया और बिस्तर पर लिटा दिया।

“रेडी हो जाओ, जानू...”

“क्यों? किसलिए?” वो भली भांति जानती थी की किसलिए।

"तुमको ठोकना है न.. जिससे तुम जल्दी से जल्दी माँ बन सको!”

मेरी बात सुन कर अश्विनी ने अपनी दोनों टाँगे फैला दीं।

"ज़रा और फैलाओ जानेमन.. अपनी मालपुए जैस योनि थोड़ा ढंग से दिखाओ मुझे!” मैंने उसकी योनि पर अपनी निगाहें जमाये हुये कहा।

"अभी ठीक से दिख रही है?“ अश्विनी ने टांगों को और फैलाते हुए पूछा।

“थोड़ा और..” मैंने मिन्नत करी।

“अब बताइए? अब दिखी ठीक से? क्योंकि अब और नहीं फैला पाऊंगी...” अश्विनी ने अपनी जांघे और फैलाते हुये कहा।

“हाँ, अब दिखी! तुम्हारी प्यारी प्यारी.. मीठे रस से सराबोर योनि!”

“अब और कितनी देर तक इसे देखते रहेंगे? मुझे माँ बनाने का इंतजाम कब करेंगे?” अश्विनी ने हँसते हुये पूछा।

"ये तो इतनी सुन्दर है की मैं चाहता हूँ की इसे तब तक देखूं, जब तक ये मेरे दिमाग में पूरी तरह न बस जाय!” मैंने कहा।

"अरे! आपकी ही तो मिलकियत है ये! जब चाहे आप देख लीजिए, या भोग लीजिए!” उसने अपनी दोनों टाँगे मेरे कंधों पर रखते हुये कहा।

मैंने अश्विनी की योनि पर अपना लिंग स्थापित किया और कहा, “ठुकने को तैयार?”

“हाँ जानू! आप बुरी तरह ठोकिये मुझे!”

मैंने अपने लिंग को अंदर की तरफ धकेलते हुये उसको चूमा। जैसे ही अश्विनी ने मेरे लिंग को अपनी योनि की गहराइयों में जाते हुये महसूस किया, वो बोली, “अब आप जल्दी से कर दीजिए सब कुछ! मैं कैसे भी रोऊँ, आप रुकियेगा नहीं!“

उसकी इस बात पर मैं भी तुरंत शुरू हो गया और बल पूर्वक धक्के लगाने लग गया। अश्विनी भी मेरे धक्को के साथ नीचे की तरफ से ताल मिलाने लगी। कुछ ही क्षणों में मैंने अश्विनी की योनि में लिंग को अंदर बाहर करने की गति बढ़ा दी और तब तक करता रहा जब तक मैंने उसकी योनि के अंदर अपना पूरा वीर्य उड़ेल न दिया। इसी बीच में अश्विनी को एक बार फिर से चरमसुख मिल गया। जब उसने अपनी कोख में मेरे वीर्य की पिचकारी महसूस करी, तो वो मुस्कुरा दी।

कुछ देर के बाद हम दोनों ही संयत हो गए। मैं कुछ देर उसके ऊपर यूँ ही लेटा रहा। जब उठा तो मैंने कहा, "अश्विनी, मुझे बहुत मज़ा आया! तुमको?"

"मुझे भी!" उसने कहा, और मुझे होंठो पर चूमा। "आप थक गए होंगे! सो जायेंगे?

"नहीं! इतनी मस्त ठुकाई करने के बाद कोई सोता है क्या?"

"हा हा! तो क्या करता है?"

"रुको.. बताता हूँ!"

कह कर मैंने अलमारी से जो प्रिया के लिए खास मेड-टू-आर्डर करधनी बनवाई थी, वो बाहर निकाली। यह एक १८ कैरट सोने की करधनी थी। इसमें लाल-भूरे, नीले और हरे रंग के मध्यम मूल्यवान जड़ाऊ पत्थर लगे हुए थे। अश्विनी उत्सुकतावश मुझे देख रही थी की मैं क्या कर रहा हूँ। मैं वापस आकर बिस्तर पर बैठ गया और अश्विनी को बिस्तर से नीचे उतरने को कहा। जब वो ज़मीन पर खड़ी हुई, तो मैंने उसकी कमर में यह करधनी बाँध दी। प्रथम सहवास के समय उसका हीरों का मयूर जड़ाऊ हार उतार दिया था – उसको भी वापस पहनाया। और थोड़ा सा पीछे हट कर उसके सौन्दर्य का अवलोकन करने लगा।

अश्विनी पूरी तरह नग्न थी – और उसके शरीर पर यह हार, मंगलसूत्र, वो करधन, कलाइयों में चूड़ियाँ और कंगन, माथे में सिन्दूर, कानो में कर्णफूल, पैरों में पायल, और बिछिया! मतलब सिर्फ आभूषण बचे थे! उसकी बिंदी हमारे सहवास क्रिया के समय न जाने कब खो गयी, और सिन्दूर और काजल अपने अपने स्थान पर फ़ैल गए थे, और लिपस्टिक का रंग मिट गया था। किन्तु फिर भी, अश्विनी, अपनी ही बहन की भान्ति बिलकुल रति का ही अवतार लग रही थी।

"आपकी एक तस्वीर निकाल लूं?"

अश्विनी शर्म से मुस्कुराई, और हामी में सर हिलाया।

मैंने झटपट अपना कैमरा निकला, और दनादन कई सारी तस्वीरें उतार लीं। उसके बाद मैंने अश्विनी की कमर को आलिंगन में लेकर उसकी नाभि, और फिर उसकी कमर को करधनी

के ऊपर से चूमा। फिर खड़े हो कर उसके दोनों चूचकों को चूमा, और अंत में उसके होंठों पर एक चुम्बन दिया।

“जानू.. आज दिन में बस यही पहन कर रहना!”

अश्विनी उत्तर में सिर्फ मुस्कुरा दी!!

मेरी हर कही हुई बात अश्विनी के लिए जैसे वेद-वाक्य, या फिर कोई दैवीय आदेश था। हमारे वैवाहिक जीवन के पहले दिन सचमुच अश्विनी ने अपने शरीर पर कुछ भी नहीं पहना – उसके शरीर पर बस वही कुछ आभूषण - करधनी, कंठहार, मंगलसूत्र, चूड़ियाँ और कंगन, पायल और अंगूठी ही रही। ऐसा करने के लिए उसकी दलील यह थी कि मैंने पहली बार – मेरे जीवन में भी, और हम दोनों के वैवाहिक जीवन में भी – उससे कुछ माँगा था। इसलिए वो किसी भी कीमत पर मुझे उस बात के लिए मना नहीं कर सकती थी – चाहे मैं ही उसको वैसा करने से मना करूँ! खैर, मुझे क्या आपत्ति हो सकती थी भला? इतनी सुन्दर सी लड़की अगर नग्न हो कर घर में इधर उधर घूमे तो आनंद ही आएगा! खैर, मैंने कमरे से बाहर निकलने से पहले एक निक्कर और टी-शर्ट पहन लिया था। उसकी सहेली आरती जब सुबह उठी, तो उसका यह रूप देख कर दंग रह गई।

“हाआआआआ! क्या जीजू! मेरी इतनी शर्मीली सी सहेली.. आपके साथ बस एक रात क्या रह ली, उसकी तो ऐसी हालत हो गई! क्या किया आखिर आपने?”

मैंने आँख मारते हुए उसको उसी के अंदाज़ में छेड़ा, “आजा तू भी.. देखते हैं, मेरे संग का क्या असर होता है तुझ पर!”

“न बाबा! मैं तो सोच रही हूँ की जब पति मिलेगा तो उससे नए नए कपड़ों की फरमाइश करूंगी.. अगर आपके साथ हो ली, तो ऐसे नंगी रहना पड़ेगा!”

“ओये होए! सहेली के पति को अपना पति बनाना चाहती है?” मैंने फिर छेड़ा।

“अरे मेरा ही क्या? आपके जैसे शानदार मर्द को देख कर किसी भी लड़की का जी होने लगेगा!”

“अरे तो रुक कर कुछ देर देख ही ले की हमने ऐसा क्या किया जिससे तेरी सहेली की ऐसी हालत हो गई..”

“न बाबा... ये ऑप्शन भी गड़बड़ है! आप दोनों को ठुकाई करते देख कर अगर मेरा भी मन डोल गया तो?” आरती फिर से बेशर्मी पर उतर गई।

“तो क्या? तू भी बहती गंगा में हाथ धो लेना.. लगे हाथ तेरी योनि की भी कुटाई हो जाएगी!”

“ओये होए! नई नई बीवी, वो भी नंगी नंगी, आपके पहलू में बैठी हुई है, और आपकी गन्दी नज़र उसकी सहेली पर है!”

“ठहर तो.. बताता हूँ तुझे!” इस लड़की से कोई नहीं जीत सकता।

“नहीं! मुझे कुछ मत बताओ...” वो भागी, “आप दोनों ठुको-ठुकाओ.. इसमें मेरा क्या काम? मैं क्यों कबाब में हड्डी बनूँ?” यह कहते हुए वो खिलखिलाती हुई कमरे से भाग खड़ी हुई। इस पूरे वार्तालाप के दौरान अश्विनी पहले तो सिर्फ मुस्कुराती रही, लेकिन बाद में हँसते हँसते दोहरी हो गई।

“हंसी आ रही है?”

वो और हंसी.. दरअसल अब तक वो खिलखिला रही थी।

“जानू.. जाने दीजिए.. वो ऐसी ही है..”

“हंसी निकालूँ और?” मैंने अपनी आवाज़ में नकली क्रूरता मिलाते हुआ कहा। अश्विनी कुछ सहम गई।

“हम्म? हंसी निकालूँ तेरी?” मैंने नाटक जारी रखा।

अश्विनी के चेहरे से मुस्कान अब तक ख़तम हो चुकी थी – शायद मेरे ऐसे अचानक बदले हुए रूप को देख कर डर गई थी वो! मैंने उसके करीब जा कर उसकी जाँघों के बीच में

अपनी उंगली फिराई। उसकी योनि की फाँकों की गुलाब जैसी कोमल पंखुडियां खुली, और मेरी उंगली के गिर्द चिपक गईं।

“ये होंठ हँसेंगे तेरे... ऊपर वालों में तो सिर्फ कराहें और आहें निकलेंगी!” दूसरे हाथ से मैं अपनी निक्कर उतार रहा था।

मेरी इस बात पर अश्विनी के होंठों पर एक लज्जालु मुस्कान तैर गयी। वो बोली,

“ये भी कैसे मुस्कुराएंगे? आपका अंग लेने में तो ये पूरी तरह से खुल जाते हैं!”

“अच्छा जी?”

“हाँ जी! .. ऊओह्ह्ह्ह! (मैंने उसकी योनि के ऊपर भगशेफ़ को छेड़ा) ये बेचारे तो बस लार टपकाते रह जाते हैं!” वो अदा से मुस्कुराई।

अब तक मेरी निक्कर उतर चुकी थी। यानि अब हम दोनो ही नंगे हो चुके थे। मैंने अपनी पत्नी को जी भर कर देखा – वो भी कभी मुझे, तो कभी मेरे लिंग को देख रही थी। वो सोचे बिना न रह सकी कि दीदी को कैसा लगता रहा होगा जब वो इस लिंग को अपने अंदर लेती थीं! इस बार शुरुआत अश्विनी ने करी। उसने मेरे लिंग को अपनी हथेलियों में लेकर सहलाने का उपक्रम शुरू किया। उसकी नरम गरम हथेलियों का स्पर्श पा कर मेरा लिंग भी तुरंत ही पूर्ण स्तम्भन की स्थिति में आ गया। मैंने भी उसके स्तनों को सहलाना और मसलना शुरू कर दिया।

जल्दी ही हम दोनों ही एक दूसरे को अपनी बाहों में भर कर लेट गये। मैंने एक हाथ से अश्विनी के एक चूचक को मसलते हुए कहा,

“ओह अश्विनी! तुम नहीं जानती कि मैं कितना खुश हूँ! तुमको पाकर मुझे अपने मन की खोई हुई खुशी मिल गई है! और.. जीने का सहारा भी!”

“ऊह्ह्ह! अरे! आप ऐसा न कहिए! सहारा तो आप हैं मेरे! आपकी वजह से मुझे वो सुख मिला है जिसके बिना मैं खुद को अधूरा महसूस कर रही थी।“

अश्विनी ने मेरे लिंग को सहलाते हुए कहा। मैंने महसूस किया कि अश्विनी की योनि गीली हो गई थी। पर अभी उसमे लिंग डालने का सही समय नहीं आया था। यह बात उसको भी समझ आ रही थी। वो अपनी जगह से उठ खड़ी हुई, और अपने शरीर को कमानी की तरह कुछ पीछे करते हुए इस तरह हुई, जिससे उसका योनि क्षेत्र मेरे सामने कुछ बाहर आ जाय, और कुछ अधिक प्रदर्शित होने लगे।

"एक बार इन होंठो को भी चूम लीजिए.."

ऐसे सुन्दर, मादक, गोरे, चिकने शरीर, और उससे भी अधिक चिकनी और रसीली योनि को अपने मुँह के करीब होता देख कर मैं और भी अधिक उत्तेजित होने लगा। मैंने आगे बढ़ कर उसके दोनों नितम्बों को पकड़ लिया, और अपनी तरफ धीरे से खींचा – ऐसा करने से अश्विनी का योनि मुख मेरे होंठों से मात्र कुछ इंचों की ही दूरी पर रह गए!

मैंने कहा, "अश्विनी, थोड़ा जगह बनाओ.."

अश्विनी ने अपनी टाँगे कुछ खोल दीं, और मुझे उसकी योनि का आस्वादन करने के लिए जगह मिल गई। अश्विनी ने अपना योनि क्षेत्र कुछ इस तरह से व्यवस्थित किया जिससे अब मैं आराम से अपनी जीभ से उसकी योनि का भोग कर सकता था – मैंने वही किया। मैं उसकी योनि को अपनी जीभ से सहलाने लगा। इस प्रकार की छेड़खानी का असर अश्विनी पर काफी सकारात्मक हुआ – वो भी कामुकता में मत्त सी हो गई। मैंने सोचा की अश्विनी को अपने इस कार्य का कुछ पारितोषिक तो मिलना ही चाहिए – इसलिए मैंने भी आराम से रह रह कर उसके भगशिश्न को चाटना शुरू कर दिया। मैं क्रमशः उसकी योनि की पूरी लम्बाई को चाटता, और रह रह कर उसके भगशिश्न को अपने होंठों से दबा कर उसको पागल बना देता। लगभग तीन मिनट के बाद ही अश्विनी उन्माद में पीछे की तरफ कुछ झुकी और अपनी योनि का रस मेरे मुँह पर ही छोड़ने लगी। मेरे चाटने की गति बढ़ने लगी और उसी के साथ साथ अश्विनी भी उन्माद के अंतराल तक पहुँच गई। उस समय मैं अपनी दो उंगलियाँ उसकी योनि में डाल कर अंदर बाहर करने लगा। अश्विनी इस नए प्रहार को बिलकुल भी सहन नहीं कर सकी।एक जोरदार सिसकारी के साथ वो अपने चरमोत्कर्ष तक पहुँच गई। उस उन्माद में उसका पैर कांप गया, और इससे पहले की मैं उसको सम्हाल सकता, वो भहरा कर फर्श पर गिर गई। मैं घबराया की कहीं उसको चोट न लग गयी हो – लेकिन अश्विनी लंबी लंबी साँसे भरते हुए फर्श पर लेट गयी।

यह सुनिश्चित करने के बाद, की वह पूरी तरह से ठीक है, मैं वापस मूड में आ गया। मैं पुनः उसके स्तनों को मसलने में लग गया। मेरा लिंग भी अब अपने गंतव्य में जाने को आतुर हो रहा था। मैंने अश्विनी का हाथ पकड़ कर अपने लिंग पर रख दिया – मैं एक तरह से उसको बताना चाहता था कि मैं अब तैयार हूँ! अश्विनी भी समझ गई कि अब वक्त आ चुका है। उसने मुझको उसके ऊपर आने को कहा, और मेरा लिंग अपने हाथों से पकड़ कर अपनी योनि से सटा दिया। मैंने धीरे धीरे लिंग को उसकी योनि में डालना आरम्भ कर दिया।

लडकियाँ अक्सर ही सहवास के बाद एक प्रकार का दर्द अनुभव करती हैं। अगर वो दर्द सहवास करते समय आघात के कारण उठता है, तो मर्द को चाहिए कि वो सावधानीपूर्वक, और प्रेम से करे। जल्दबाज़ी न दिखाए। लेकिन यदि यह बात नहीं है, तो एक और कारण है – और वो यह की सहवास, और उसके बाद चरमोत्कर्ष की प्राप्ति के बाद लड़कियों की योनि अति संवेदनशील हो जाती है। अब इस संवेदनशीलता की अवधि कुछ भी हो सकती है – कुछ सेकंडों से लेकर कई मिनटों तक भी! इस अवधि में लडकियाँ यह नहीं चाहती की उनकी योनि को और अधिक छेड़ा जाय। यह संवेदनशीलता इस बात पर भी निर्भर करती है की उनके भगनासे को भी छेड़ा गया है या नहीं। खैर, सुहागरात के सहवास, और अभी अभी प्राप्त यौन चरमोत्कर्ष के बाद अश्विनी की भी कुछ ऐसी ही स्थिति थी – उसकी योनि के दोनों होंठ सूजे हुए से लग रहे थे।

किन्तु इस पर भी उसने मेरे लिंग का पूरी तरह स्वागत किया। उसका छोटा सा योनि मुख जैसे अपनी सीमा तक खिंच गया था। मेरे लिंग पर वो एक रबड़ के छल्ले के समान कस गया था, और मेरा लिंग इस समय पूरी तरह से उसके अन्दर समाहित हो गया था। मैंने जैसे यह देखा, मैंने उसको लगभग पूरा बाहर निकाला, और वापस अंदर धकेल दिया। पाठक समझ सकते है की ऐसा करने में गति तो कम हो जाती है, लेकिन घर्षण अभूतपूर्व होता है। मैं ऐसा बार बार दोहराने लगा। इस प्रकरण के दौरान, मैंने अश्विनी के कंधे पकड़ रखे थे। इसलिए अब इस उन्मादक प्रहार को झेलने के अतिरिक्त अश्विनी के पास अब कोई चारा नहीं बचा था।

अश्विनी भी सहवास के मामले में प्रिया के समान ही थी – वो भी तुरंत ही बहकने लगती थी, और लगभग तुरंत ही तैयार हो जाती थी। मेरे कठोर और गरम लिंग के घर्षण का अनुभव अश्विनी को उन्मत्त करने लग गया था। वो शीघ्र ही अपने अंदर चरमोत्कर्ष की लहर उठती सी महसूस करने लगी। मैं भी जैसे किसी मतवाले पशु के समान, आँखें बंद किये, पूरे मनोयोग से उसके अन्दर बाहर हो रहा था। जब आँख खुली, तो सामने अश्विनी के प्यारे से स्तन नज़र आ गए। मैं रह न सका – मैंने जैसे ही उसके एक चूचक स्तन को मुँह

में लेकर चूसना शुरू किया, अश्विनी पुनः चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी। उसके शरीर की थरथराहट मैंने महसूस की और अश्विनी को भोगने के लिए अपनी गति और बढ़ा दी।

ड्राइंग रूम में हमारी रतिक्रिया की मादक ध्वनियाँ गूँज रही थीं। अरे, हमको तो यह भी नहीं मालूम पड़ा की कब आरती वह आ खड़ी हुई, और मज़े लेकर हमारे इस अन्तरंग समय की विडियो रिकॉर्डिंग कर रही थी। मैं अब पूरे वेग से धक्के मार रहा था – मेरा भी अंत आ गया था – मेरा पहला स्खलन बहुत ही तीव्र था। पहली पिचकारी में ही मेरा कम से कम अस्सी प्रतिशत वीर्य अश्विनी की कोख में समां गया। बाकी का बचा हुआ अगले चार पांच पिचकारियों में निकल गया। इस सहवास में ऐसा अभूतपूर्व भावावेश था, की हम दोनों एक दूसरे से बुरी तरह से लिपट गए। हमारी साँसे धौंकनी की तरह चल रही थीं, और मुझे ऐसा लग रहा था जैसे की एक मैराथन दौड़ कर आया हूँ। हम एक दूसरे को अपनी बाहों में भरकर लेटे रहे। वृषणों में अब कुछ भी नहीं बचा हुआ था, लेकिन फिर भी लिंग रह रह कर व्यर्थ ही पिचकारियाँ छोड़ने का प्रयास कर रहा था। अश्विनी की योनि में भी स्पंदन हो रहे थे – मानों मेरे लिंग के उठने वाले स्पंदनों से ताल मिला रही थी। खैर, कुछ देर तक ऐसे ही शांत लेटे रहने के बाद हमने एक दूसरे को होंठों में चुम्बन दिया और पुनः आलिंगनबद्ध हो गए।

“क्या बात है जीजू और अश्विनी!” हमारी तन्द्रा तब टूटी जब हमने हलकी हलकी तालियों की आवाज़ सुनी। “ये तो गुड मोर्निंग हो गया है जी!”

मैंने और अश्विनी – हम दोनों ने ही आवाज़ की दिशा में देखा। आरती मुस्कुराती हुई अपने मोबाइल फ़ोन लिए हमारा विडियो बना रही थी।

“ठहर जा तू..” मैंने धमकी दी और उठने का उपक्रम किया, लेकिन अश्विनी ने मुझे गलबैयां डाल कर रोक लिया।

“जाने दीजिए न.. ले दे कर वही तो एक आपकी साली है..”

“हाँ जीजू.. आपकी आधी घरवाली!” कह कर उसने मुझे जीभ दिखा कर चिढाया।

“डेढ़ घरवालियाँ हैं आपकी... डेढ़!! वैसे आप चिंता न करिए – ये विडियो मैं इंटरनेट पर नहीं डालूँगी। बल्कि आप दोनों को मेरी तरफ से गिफ्ट दूँगी। .. और अपने पास भी रखूंगी। जब भी मेरे कामुक से जीजू की याद आएगी, इसको देख कर खुश हो लिया करूंगी..।“ उसने निहायत ही नाटकीय अंदाज में यह बात कही। मुझे भी हंसी आये बिना न रही।

“अच्छा, तो तू मेरी आधी घरवाली है.. कम से कम घरवाली का आधा प्यार तो दे!” मैंने उसको छेड़ा। मुझे लगा की इस एक वाक्य से मैंने पहली बार आरती को कुछ समय के लिए निरुत्तर कर दिया। वो कुछ देर अचकचा गयी, लेकिन फिर सम्हाल कर बोली, “क्या जीजू.. इतनी सुन्दर सी बीवी है, और नंगी पड़ी है.. और आप मुझ पर डोरे डाल रहे हैं?”

“क्या करूँ साली साहिबा! इतनी कामुक साली का कोई तो फायदा होना चाहिए न!”

“क्या सच में? आपको मैं कामुक लगती हूँ?”

“हाँ! सुन्दर, और कामुक!” फिर अश्विनी की तरफ देख कर, “क्यों जानू?”

“हाँ .. बिलकुल! तू तो बहुत सुन्दर है!” अश्विनी फिर मेरी तरफ मुखातिब हो कर बोली,

“आपको अगर चांस मिले, तो इसके बूब्स देखिएगा! बहुत कामुक हैं!”

“क्या कह रही है तू कमीनी?”

“तू कमीनी है.. यहाँ हम दोनों नंगे पड़े हैं, और तू पूरे कपड़ों में खड़ी है..”

सहेलियों की मीठी तकरार...

“आप ही कुछ कहिए न...”

“हाँ आरती.. वो बात तो है..”

“हाँ.. आप तो कहेंगे ही न.. मेरे कपडे उतर गए तो दो दो नंगी लडकियाँ मिल जाएँगी आपको.. यानी पाँचो उंगलियाँ घी में..”

“नहीं रे.. पाँचों नहीं,” मैंने आरती के वाक्य को सुधारा, “दसों उंगलियाँ.. और घी में नहीं.. या तो मीठे मीठे बन (छोटे, मीठे पाव – मेरा इशारा स्तनों की तरफ था) में.. या फिर शहद में!”

हमारी छेड़खानी सुन कर आरती की जो भी मोरचाबंदी थी, वो जल्दी ही ढह गई।

“क्या सचमुच इसके बूब्स बहुत कामुक हैं?” मैंने अश्विनी से पुछा।

अश्विनी के कुछ कहने से पहले ही आरती बोली, “कोई कामुक नहीं हैं.. जैसा सभी का होता है, वैसा ही है!”

मैंने कहा, “तुम्हारा भी ऐसा ही है क्या?” मैंने अश्विनी के स्तनों की तरफ इशारा किया।

“आपकी बीवी के बहुत सुन्दर हैं..”

“नहीं.. सच में.. इसके बहुत सुन्दर हैं.. आप खुद ही देख लो..” दोनों लडकियाँ एकदम बच्चों वाली बातें कर रही थीं।

“सच में जीजू.. ये बिलकुल बेशर्म हो गयी है..”

“इधर आओ आरती...” मैंने थोड़ा सीरियस हो कर कहा। न जाने क्या असर हुआ उस पर, वो बिना किसी हील हुज्जत के हमारे पास चली आई।

“बैठो..” वो बैठ गयी।

“मैं तेरे बूब्स छूकर देख लूँ क्या?”

उसने कुछ कहा तो नहीं, लेकिन हलके से सर हिला कर हामी भर दी।

“पक्का?” वो शर्म से मुस्कुरा दी। बल्कि शरमाना मुझे चाहिए था – नंगा तो आखिर मैं था उसके सामने!

अश्विनी: “हाँ... छू कर देखिए न!”

मैंने अपना दायाँ हाथ बढ़ा कर उसका बायाँ स्तन बहुत हलके से छुआ – ठीक से छुआ भी नहीं था, फिर भी आरती चिहुंक सी गई।

“आरती, डरो मत! मैं कुछ नहीं करूंगा.. अश्विनी भी तो यही हैं न..!” मैंने उसको सांत्वना दी।

लेकिन जिस बात को मैं आरती की शर्म सोच रहा था, दरअसल वो उसकी बदमाशी थी। उसका घबराया हुआ, भोला सा चेहरा देखते देखते बदल गया – उसके होंठों पर एक पतली सी मुस्कान आ गयी, और उसने अचानक ही जीभ निकाल कर मुझे चिढाया,

“न न न जी-जा-जी..” उसने एक एक अक्षर रुक रुक कर बोला, “आज के लिए बस इतना ही.. अपनी इस साली को खुश कर के रखिएगा.. क्या पता, आगे और क्या क्या मिल जाए आपको!! ही ही ही!”

कह कर वो आगे बढ़ी और मुझको होंठों पर चूम लिया, फिर मेरे बाद उसके अश्विनी को भी होंठों पर चूम लिया।

“अब आप लोग थोड़ा नहा-धो लीजिए... मैं आपके लिए नाश्ता बनाती हूँ... ऊओह्ह्ह! देखिए न.. आपकी ये एकलौती साली पहले ही आपसे खुश हो गयी है.. आपको नाश्ता मिल रहा है उससे! हा हा!”

नित्यक्रिया से निवृत्त होने के बाद, अश्विनी और मैं हम दोनों साथ ही नहाने के लिए गए। नहाते वक्त ऐसी कोई ख़ास बात नहीं हुई – लेकिन जाहिर सी बात है, अश्विनी भी यह सुनिश्चित कर देना चाहती थी की मैं उसके शरीर के हर कोने से अच्छी तरह से जानकारी कर लूं – उसके शरीर में किस जगह पर कैसे लोच हैं, कैसी गोलाईयां हैं और कैसे मोड़ हैं – उन सबका ज्ञान उसको नहलाते समय साबुन लगाते और फिर पानी से धोते समय मुझे हो गया। उसके शरीर पर कहाँ कहाँ और कैसे कैसे तिल हैं, और कैसा जन्म-चिन्ह है, उसकी गुदा की बनावट और रंग, साथ ही साथ उसकी योनि का विस्तृत विवरण – मतलब अश्विनी के बारे में वो सभी जानकारियां जिनके बारे में संभवतः अश्विनी को खुद भी न मालूम हो, उस एक ही स्नान में मुझे हो गई।

हम तीनों ने साथ में बैठ कर नाश्ता किया। वायदे के मुताबिक, अश्विनी अभी भी नग्न थी – सिवाय एक नव-विवाहिता के समस्त आभूषणों के। मैंने भी उसका साथ देने के लिए कोई कपड़े नहीं पहने थे। आरती ने 'हाउ क्यूट', 'हाउ स्वीट', और 'हाउ कामुक' जैसे कई विशेषण हमारी प्रसंशा में जड़ दिए, और हमको बारी बारी से चूमा। नाश्ता करते समय आरती ने हमसे पूछा की हम दोनों अपने हनीमून के लिए कहाँ जा रहे हैं? वाकई! इस बात के बारे में तो मैंने बिलकुल भी नहीं सोचा था। मैंने दिमाग दौड़ाया लेकिन कुछ समझ नहीं आया – इसलिए मैंने अश्विनी से ही पूछना ठीक समझा। उसने कहा,

"अच्छा... आप ये बताइए कि हम लोग हनीमून में क्या करेंगे?"

"अरे! हनीमून में क्या करना होता है?"

"फिर भी.. बताइए न?"

"भई, मेरे हिसाब से तो हनीमून एक नए युगल के लिए ब्रेफिक्री, आनंद और पारस्परिक अंतर्ज्ञान का एक अवसर होता है! नए नए बने पति पत्नी को एकांत में मिलने का सुख मिलता है, एक दूसरे को समझने का अवसर मिलता है, और सब कुछ अच्छा रहा तो एक नए स्थान में पर्यटन करने का भी मौका मिलता है! और क्या?"

"ओह्हो! आप मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दे रहे हैं.. हनीमून में करना क्या होता है?"

"अरे! बताया तो.." मैं जान बूझ कर टाल रहा था।

फिर से आरती बीच में टपक पड़ी,

"क्या मेरे भोले जीजू! आप भी न.." फिर अश्विनी की तरफ मुखातिब होते हुए, "मेरी बन्नो.. हनीमून में जीजू तेरी जम कर ठुकाई करेंगे! और क्या? अभी तो तू अपनी मर्ज़ी से नंगी बैठी है, लेकिन जब हनीमून पर जायेगी, तो तुझे ये जबरदस्ती नंगी रखेंगे! और तेरी योनि का..."

"चोप्प्प्प!" मैंने डांट लगाई, "हनीमून में कुछ हो या न हो.. लेकिन कम से कम तू तो नहीं होगी वहाँ.. वही काफी है मेरे लिए.."

“हाय मेरे जीजू! इतनी बेरुखी मुझसे? अपनी एकलौती साली से?” उसने फ़िल्मी अंदाज़ में अपनी दाहिनी बाँह थोड़ा ट्विस्ट करके अपने माथे पर, और बाईं बाँह ट्विस्ट कर के अपनी कमर के पीछे कर लिया और कहा, “हाय री किस्मत! कैसा जीजा मिला मुझे!”

“तेरी तो..”

अश्विनी ने मुझे बाँह से पकड़ा, और मुस्कुराई, “जानू.. आप इसकी बातें मत सुना करिए! वैसे मैं कह रही थी, कि जो काम हम हनीमून पर करने वाले हैं, वो सच में, अभी भी तो कर ही रहे हैं न! मैं संतुष्ट हूँ पूरी तरह से.. और आपको संतुष्ट रखने की पूरी कोशिश करूंगी..”

“ओये होए मेरी पतिव्रता नारी! वैसे सच कहूं जीजू.. अपनी अश्विनी तो हमेशा से आपके ही सपने संजोए रही थी। पूरी तरह से आपके प्रति वफादार! बस.. एक बार मैंने ही इसको बहका दिया था..”

“तू तो कुछ भी कर सकती है” मैंने तल्खी से जवाब दिया।

“अरे अरे! आप तो नाराज़ हो गए.. और एक मैं हूँ.. जो आपसे खुश हुई जा रही हूँ..”

“तेरे खुश होने से भी मुझे क्या मिला जा रहा है?”

“अरे! नहीं मिला है तो मिल जायेग! आप तो ऐसे उतावले होंगे तो कैसे चलेगा?”

“क्या? मैं उतावला..!”

“जानू.. आप परेशान मत होइए! इस कमीनी ने मुझसे कहा था की तेरे हस्बैंड को अपने दूध का स्वाद चखाएगी! चल री! कर न.. दे न अपने जीजू को गिफ्ट...”

“अबे! मैंने कब कहा था?”

“कहा नहीं था तूने?”

“न बाबा! तू ही पिला दूध वूध... ये सब मेरे अरुण की अमानत हैं... लेकिन... अपने प्यारे जीजू को भी कुछ न कुछ तो दूँगी ही!”

कह कर उसने मुझे होंठों पर चुम्बन दिया.. और हँसते हुए अन्दर कमरे में भाग गयी।

और इसी के साथ अश्विनी और मेरी शादी-शुदा जिंदगी चल निकली। एक महीना ऐसे ही हँसते हँसते बीत गया। सच में – जो सब कुछ प्रिया के जाने से खो गया था, वो सब कुछ अश्विनी के आते ही वापस आ गया। सब कुछ तो नहीं – लेकिन काफी कुछ। दिल का घाव भर तो सकता है, लेकिन उसका चिन्ह कैसे छूटे? इस सब का पूरे का पूरा श्रेय अश्विनी को ही जाता है। मैंने तो समय से पूरी तरह से हार मान लिया था और उसके सम्मुख अपने सारे हथियार डाल दिए थे। बस इसी बात की तमन्ना रह गई थी की कब मुझे समय अपने अंक में भर के इस धरती से मुक्ति दे दे। लेकिन, वो एक दिन था, और आज का दिन है – जीवन को भरपूर जीने की इच्छा बलवती हो गई है।

भगवान् ने एक और सद्बुद्धि दी – और वह यह की मैंने कभी भी अश्विनी की प्रिया से तुलना नहीं करी.. और करने की सोची भी नहीं। दोनों ही लडकियाँ अप्रतिम और अनोखी थीं। दोनों ही मेरी पत्नियाँ थीं, और दोनों से ही मुझे अत्यंत प्रेम था। जहाँ प्रिया ने मेरे यंत्रवत जीवन में अपने प्रेम की फुहार सिंचित कर उसमें बहार ला दी थी, उसी प्रकार अश्विनी ने मेरे मृतप्राय शरीर में पहले तो प्राण फूंके, और फिर अपने प्रेम के रस से सींच कर जैसे मुझे संजीवनी दे दी थी। एक आदमी को भला जीवन से और क्या प्रत्याशा हो सकती है?

३०

“बत्तीस नंबर के पेशेंट को होश आ गया है..”, सरकारी अस्पताल की नर्स नीलिमा हर्ष-पूरित उत्तेजना में भागते भागते बाहर आई और लगभग चीखते हुए यह उद्घोषणा करने लगी।

“जल्दी से डॉक्टर सिन्हा को बुलाओ.. हे प्रभु! कैसे कैसे निराले खेल! मैंने तो उम्मीद ही छोड़ दी थी..” वह रिसेप्शन पर निठल्ले से खड़े दोनों वार्ड-बॉयज को कह रही थी। उन दोनों ने उसकी बात पर ऐसे मुँह बनाया जैसे उनको किसी ने रेंडी का तेल पिला दिया हो, लेकिन नीलिमा ने जब आँखे तरेरी, तो दोनों ही भाग कर डॉक्टर सिन्हा को बुलाने निकल लिए। किसी की मजाल नहीं थी की नर्स नीलिमा की बात न माने।

कोई पंद्रह मिनट बाद डॉक्टर सिन्हा, बतीस नंबर की पेशेंट की जांच कर रहे थे। नब्ज़ और आँखें इत्यादि देखते हुए वो मरीज़ से पूछते जा रहे थे,

“बहुत बढ़िया! कैसा लग रहा है आपको? कहीं दर्द तो नहीं?”

“मैं कहाँ हूँ?” मरीज़ ने पूछा।

“ओह! सॉरी! मैंने तो बताया ही नहीं – आप गौचर के सरकारी अस्पताल में हैं! मैं डॉक्टर सिन्हा हूँ.. और ये हैं नर्स नीलिमा! इन्होने ही आपकी दिन रात देखभाल करी है।“

“क्या डॉक्टर साहब.. आप भी..”नीलिमा ने कहा

“अस्पताल में? क्यों?”

“आपको सब बताएँगे.. लेकिन, आप पहले यह बतोये की आपका नाम क्या है?”

“नाम? मेरा नाम.. क्या? मेरा नाम क्या है?” मरीज़ को कुछ समझ नहीं आ रहा था।

“कोई बात नहीं.. कोई बात नहीं.. आराम से!” कहते हुए डॉक्टर ने अपने नोट पैड में कुछ लिख लिया, और फिर नीलिमा से कहा, “इनके वाइटल स्टैट्स सब ठीक हैं.. लेकिन, इतने

महीने कोमा में रहने के कारण लगता है याददाश्त सप्रेस हो गयी है। कोई बात नहीं.. तीन दिन ऑब्जरवेशन पर रखते हैं – अगर हालत ठीक रही तो पेशेंट को रिलीव कर दे सकते हैं.. मेमोरी गेन में टाइम लग सकता है और उसके लिए हॉस्पिटल में रहने की ज़रुरत नहीं! इनके घर इत्तला कर दी?"

" अभी करती हूँ डॉक्टर!"

"देखिए," सिन्हा ने मरीज़ को कहा, "आप घबराइये नहीं.. आप महीनो के बाद होश में आईं हैं, इसलिए शायद आपको अभी कुछ ख़ास याद नहीं है। लेकिन, जल्दी ही आपको सब याद आ जायेगा। इस बीच नर्स नीलिमा आपका पूरा ख़याल रखेंगी।"

कह कर डॉक्टर ने मरीज़ के सर पर प्यार से हाथ फिराया और फिर कुछ और ख़ास निर्देश दे कर वहां से विदा ली।

"हाँ! सतीश जी... मैं नीलिमा बोल रही हूँ... नर्स नीलिमा!" टेलीफोन पर नीलिमा कह रही थी,

"हाँ हाँ.. अस्पताल से.. आपके लिए खुश खबरी है.. हाँ! आपकी पत्नी को होश आ गया है.. हाँ हाँ! ... आप बिलकुल आ सकते हैं देखने उसको! क्या नाम बताया था आपने उसका? ... सिमा? हाँ? ओके! उनको एक्चुअली फिलहाल याद नहीं आ रहा है! कोमा का असर लगता है.. आप आ जाइए, फिर आराम से बात कर लेंगे.. ओके .. ओके!"

सतीश कोई इक्कीस बाइस साल का गढ़वाली युवक था। उसकी इलेक्ट्रॉनिक्स रिपेयर की दूकान थी – दूकान क्या थी, बस महीने का खर्च निकल जाता था। पोलिटेकनिक की पढाई करते ही उसने अपना खेत बेच दिया, और यह काम करने लगा। माँ बाप उसके थे नहीं, इसलिए किसी ने रोका भी नहीं! मौज से कट रही थी। लेकिन आमदनी अधिक तो नहीं थी। रहने सहने का काम हो जाता था। बाकी लोगों की तरह उसको भी यह मन होने लगा था कि तनहा रातों में वो अकेला न सोये! यूँ ही अकेले, ठन्डे बिस्तर में पड़े रहने से अच्छा था की कोई एक गरम शरीर उसके बगल में हो, जिसके संग वो साहचर्य कर सके! ऐसे ही नाहक अपने वीर्य को वो कब तक नाली में बहाता रहेगा?

महीनो पहले वो केदारनाथ जी के दर्शनों के लिए गया था यह मन्नत मांगने की उसको एक सुन्दर सी पत्नी मिल जाय। पत्नी वत्नी का तो पता नहीं, लेकिन वो उस प्राकृतिक आपदा की चपेट में आ गया। जैसे तैसे वो जान बचा कर भागा। चोटें बहुत सी आईं, लेकिन फिर भी वो न जाने कैसे पहाड़ों की तरफ ऊपर की ओर पहुँच गया। रस्ते में उसने न जाने कितने ही अभागों के शवों को देखा। हर शव उसको यही याद दिलाता की अंत में उसकी भी यही दशा होने वाली थी, लेकिन फिर भी उसने हिम्मत न हारी।

एक शाम को उसने एक लड़की को वहीँ पहाड़ों पर पड़े देखा – वो लगभग मरणासन्न थी। उसके आस पास सियार मंडरा रहे थे, की कब वो मरे, और कब उनका भोजन बने। अचानक ही सतीश को लगा की उसकी आस पूरी होने वाली है। उसने उस लड़की को जंगली जानवरों की दृष्टि से बचाया, और जैसे कैसे भी उसको वापस जीवन की तरफ लाया। लेकिन लड़की की हालत बहुत खराब थी। होश तो कब का खो चुकी थी। इस घटना के कोई दो दिन बाद भारतीय सेना ने उन दोनों को बचाया और अस्पताल में भरती किया।

कोई और उस लड़की पर हाथ साफ़ न कर ले, उसके लिए सतीश ने उसको अपनी पत्नी ‘सिमा’ के नाम से भरती किया था। कम से कम वह देह व्यापार करने वालो की कुदृष्टि से तो बची रहेगी। उसको तो अस्पताल से हफ्ते भर में छुट्टी मिल गयी, लेकिन सिमा को होश नहीं आया। इस बीच उसको पता चला की वो बाप बनने वाला था।

‘साला! कैसी किस्मत! लड़की मिली भी तो पेट से!’ उसने सोचा।

लेकिन फिर उसको यह सुन कर राहत हुई की वो बच्चा उस प्राकृतिक आपदा का शिकार बन गया था। यह सुन कर उसको सच में दुःख हुआ। लेकिन यह तसल्ली भी हुई, की शायद सिमा का पति मर गया हो, और अब यह सुन्दर सी, अप्सरा सी दिखने वाली लड़की उसकी बन सके। लेकिन यह तसल्ली बहुत दिन न रही – सिमा जैसे होश में आने का नाम ही नहीं ले रही थी। महीनो बीत गए। सतीश की उम्मीद तो कब की छूट गयी थी। माँ बाप नहीं थे, तो किसी को क्या पड़ी थी की उसके लिए लड़की ढूंढता? ऐसा नहीं था की सतीश की माली हालत में कोई बहुत ज्यादा खराबी थी – उसका गुजरा हो जाता था, उसको कोई बुरी आदत नहीं थी.. लेकिन उसके कसबे में एक बात प्रसिद्द थी – वो बाद बेबुनियाद भी हो सकती है – और वो यह की सतीश ‘उतना मर्द’ नहीं था। उसको अपने बारे में यह बात सुनने में आती रहती थी। उसको गुस्सा भी आता था, लेकिन बेचारा क्या करता? बस, खून के घूँट पी कर रह जाता।

इस अफवाह के कारण कई सारे सम्बन्धी नहीं चाहते थे की उनकी लड़की का रिश्ता सतीश से हो जाय। कौन माँ बाप चाहेंगे की उनकी लड़की वैवाहिक सुख से वंचित रहे? किसी को न मालूम होता तो कोई बात नहीं, लेकिन जान बूझ कर कोई मक्खी तो नहीं निगलेगा न! सिमा उसके लिए एक आखिरी आस थी, लेकिन उसको भी होश नहीं आ रहा था। लेकिन आज जब अचानक ही नर्स नीलिमा का फ़ोन आया, तो सतीश की प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं रहा! निश्चित सी बात है, सिमा का कोई भी रिश्तेदार जीवित नहीं है.. होता तो अब तक कोई इश्तेहार न दे देता? ढूँढने न आता भला? सतीश के अकेलेपन के दिन बस समाप्त होने ही वाले थे।

३१

आज ऑफिस जाने का मन नहीं हुआ, इसलिए सवेरे ही बहाना बना कर घर में रुकने का प्लान कर लिया। लेकिन, अश्विनी को कॉलेज जाना ही था – उसका कोई बहुत ज़रूरी लेक्चर था, जिसको वो बिलकुल भी मिस नहीं कर सकती थी। खैर, मैंने ठान ही ली थी, की आज घर में बैठूँगा, और अश्विनी के लिए कुछ अच्छा सा पका कर उसको दोपहर बाद सरप्राइज दूंगा।

खैर, दोपहर के निकट मैं टीवी लगाए चैनल इधर उधर कर रहा था। टीवी देखने की आदत नहीं थी, लेकिन समय काटने के लिए कुछ तो करना ही था। सैकड़ों चैनल तीन चार बार इधर उधर करने के बाद नेशनल जियोग्राफिक चैनल पर रोक दिया – रोक क्या दिया, मेरी उंगलियाँ स्वतः रुक गईं। सामने टीवी स्क्रीन पर उत्तराखंड त्रासदी की एक डाक्यूमेंट्री चल रही थी। वो त्रासदी मेरे जीवन का सबसे बड़ा घाव थी – मेरे हाथ खुद ही रुक गए, और मैं देखने लगा। दिमाग कहीं और ही मंडरा रहा था। डाक्यूमेंट्री में क्या कहा जा रहा था, मुझे सुनाई नहीं दे रहा था – मेरा मष्तिष्क स्वयं ही सामने के चित्रों में कभी तो अथाह जलराशि की गड़गड़ जैसी आवाज़ भरता जा रहा था, तो कभी चोटिल व्यक्तियों की कराह की आवाज़! मन में तो हुआ की टीवी बंद कर दूं – लेकिन वो कहते हैं न, आदमी को अपने दुस्वप्नों से दो-चार होना चाहिए। और कुछ न हो, कम से कम तसल्ली तो मिल ही जाती है।

मैं टीवी बंद नहीं कर सका। बस – चित्र देखता गया। अचानक ही एक ऐसा चित्र आँखों के सामने आया जिसने मेरे ह्रदय की धड़कन कुछ क्षणों के लिए रोक दी। डाक्यूमेंट्री में एक अस्पताल का दृश्य दिखा रहे थे, जिसमे त्रासदी के शिकार लोग भरती किये गए थे। कैमरामैन ने अस्पताल के बड़े से हॉल में अपना कैमरा एक कोने से दूसरे कोने तक चलाया था, लेकिन मुझे जो दिखा वो अत्यंत ही अकल्पनीय था।

उस अस्पताल के एक बिस्तर पर प्रिया थी!!

कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा। दृश्य में प्रिया लगभग निर्जीव सी बिस्तर पर लेटी हुई थी, नहीं – बैठी हुई थी। उसको एक नर्स ने पीछे से सहारा दिया हुआ, और सामने से एक और नर्स उसका कुछ तो मुआयना कर रही थी। एक क्षणिक दृश्य, एक झलक भर.. लेकिन मेरे दिलोदिमाग पर एक अमिट छाप लगाता हुआ! एकदम से रोमांच हो गया – शरीर से सारे रोंगटे खड़े हो गए। उत्तेजना में मेरी साँसे तेज हो गईं।

‘क्या सचमुच प्रिया जीवित है? हे प्रभु! काश, ऐसा ही हो!’

अब मैं बहुत सचेत हो कर वो डाक्यूमेंट्री देखने लगा – हो सकता है पुनः दिखाएँ? लेकिन उस अस्पताल का दृश्य पुनः नहीं दिखाया गया। बीच में जब प्रचारों का समय आया तब मैंने डाक्यूमेंट्री का नाम नोट कर लिया। और वापस देखने लगा। अंत तक दोबारा वहां का दृश्य नहीं दिखाया गया। डाक्यूमेंट्री ख़तम होने पर मैंने कैमरामैन, फोटोग्राफर, निर्देशक और निर्माता समेत उस डाक्यूमेंट्री को बनाने में जितने भी सहयोगी थे, सबका नाम लिख लिया।

कुछ देर समझ ही नहीं आ सका की क्या करूँ! कहाँ से शुरू करूँ! कहीं ऐसा तो नहीं की पुराने दुःख के कारण मुझे प्रिया दिखी हो! या वो लड़की प्रिया न हो, कोई और हो? और फिर, अश्विनी ने भी तो देखा ही था न की प्रिया मर चुकी थी। अश्विनी से पूछूं? नहीं नहीं! वो बेचारी को फिर से उस बुरी घटना की याद दिलाना बिलकुल ही गलत होगा। वैसे भी वो कितना कुछ झेल चुकी है। नहीं नहीं! अश्विनी से नहीं।

मैंने जल्दी से लैपटॉप में इंटरनेट चला कर नेशनल जियोग्राफिक की वेबसाइट खोली, और उनके कॉर्पोरेट ऑफिस कॉल लगाई। अगले एक घंटे तक मैंने एक के बाद एक कई सारे लोगों से वहां बात करी, और सिलसिलेवार तरीके से उनको अपनी आप बीती सुनाई। अंततः, वहां ले एक बड़े अफसर ने मुझसे मिलने का वायदा किया और उसने अपना फ़ोन और ईमेल भी दिया। मैंने झटपट उसके ईमेल पर प्रिया की तस्वीर के साथ, उस डाक्यूमेंट्री का पूरा विवरण लिख कर भेज दिया। अश्विनी के घर आने से पहले मुझे उनका कॉल आया की उन्होंने डाक्यूमेंट्री देखी है, लेकिन उनको नहीं लगता की वो लड़की प्रिया है! क्योंकि ठीक से कुछ भी नहीं दिखा। लेकिन मैंने अपनी जिद नहीं छोड़ी। उन्होंने अंत में हार मान ली और डाक्यूमेंट्री बनाने वाली टीम से बात करने का वायदा किया। उन्होंने कहा की जो कुछ भी बन पड़ेगा, वो करेंगे।

कुछ देर में अश्विनी आ गई। कोई और समय होता, तो मैं सांझ को पहली बार मिलने के अवसर में अगले दस मिनटों में अश्विनी के साथ गुत्थम-गुत्था हो चुका होता। लेकिन आज मैं काफी शांत बैठा हुआ था – कम से कम अश्विनी को तो ऐसा ही लगा होगा। लेकिन, मुझे अगले कुछ मिनटों में मालूम होने वाला था की मैं अपनी पत्नी के बारे में काफी कम जानता था – और वो मुझको मुझसे ज्यादा समझती और जानती थी। अश्विनी ने मुझसे क्या बाते करीं, मुझे याद नहीं, लेकिन वो अन्दर चली गयी। संभवतः चाय बनाने गयी होगी।

मुझे नहीं मालूम की वो कब वापस आई और उसने क्या कहा – मेरी आँखें तो खुली हुई थीं लेकिन मन न जाने कितने ही कोसों दूर था। अचानक ही मुझे अपने चेहरे पर गरम साँसों और गालों पर नरम उँगलियों का स्पर्श महसूस हुआ। मैं एक झटके से वापस आया – अश्विनी मेरी आँखों में झाँक रही थी, मानों प्रयास कर रही हो की मेरे अन्दर क्या चल रहा था। वो प्रत्यक्ष मुस्कुराई, लेकिन वो चिन्तित थी। उसने कुछ कहा नहीं।

"जानू – कॉफ़ी!" उसने एक हाथ से मेरे गाल को छुआ, और उसके दूसरे में कॉफ़ी का मग था।

मैं उल्लुओं की भांति कभी उसकी तरफ तो कभी कॉफ़ी मग की तरफ देख रहा था। उसने फिर दोहराया, "कॉफ़ी.."

"ओह सॉरी! मैं किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था।"

उसने कुछ कहा नहीं। बस मेरी बगल आकर मुझसे सट कर बैठ गयी। हम दोनों ही शान्ति से कॉफ़ी पीने लगे। कॉफ़ी समाप्त होने के बाद अश्विनी ने अपना और मेरा मग सामने की टेबल पर रखा, और वापस आकर मेरी गोद में इस तरह बैठ गयी जिससे की उसकी दोनों टाँगे मेरे इधर उधर रहें। गोद में बैठे बैठे ही उसने अपनी पहनी हुई टी-शर्ट उतार फेंकी। अन्दर कुछ भी नहीं पहना हुआ था – कोमल पहाड़ियों के मानिंद उसके सुन्दर स्तन तुरंत ही स्वतंत्र हो कर मेरे सम्मुख हो गए।

इस बात का असर मुझ पर बहुत ही सकारात्मक पड़ा – उस मुद्रा में मेरा लिंग तुरंत ही खड़ा हो कर उसकी नितम्बों के मध्य की घाटी में अटक सा गया। हम दोनों ने ही इस समय पजामे पहने हुए थे, इसलिए सीधा कनेक्शन नहीं हो सका – लेकिन अश्विनी मेरे ऊपर पड़ने वाले अपने इस प्रभाव पर हलके से मुस्कुराई। उसने प्यार से मेरे गले में अपनी बाहें डाल दीं, और लिंग के ऊपर अपने नितम्बों को घिसने लगी। कुछ ही देर में मैंने भी देखा की मैं स्वयं भी हलके हलके अपनी कमर चला कर उसका साथ देने लगा था।

हम दोनों ने एक दूसरे का चुम्बन लिया। मैंने रह रह कर उसके होंठों, गालो, कन्धों और चूचकों पर चुम्बन लिया। इस बीच हम दोनों ही अपने अपने तरीके से तेजी तेजी घिस रहे थे। मेरा लिंग उत्तेजना के मारे फूल कर मोटा हो गया था।

थोड़ी देर में मैंने उससे कहा, “अगर मज़ा ही लेना है, तो ठीक से लेते हैं न…”

तो वो कुछ बोली नहीं, तो मैंने उसको अपनी गोद से उठाया और सामने खड़ा कर दिया। उसके बाद मैंने खुद उठा और अपना पजामा उतार दिया और फिर लगे हाथ अश्विनी का पजामा भी उसके शरीर से अलग कर दिया। उसने शर्म से अपनी आँखें बंद कर ली। अश्विनी ने उस समय काले रंग की चड्ढी पहनी हुई थी। मैंने देखा की इतनी देर तक लिंग घिसने के कारण चड्ढी का नरम नरम कपड़ा उसके नितम्बों की दरार में अन्दर घुस गया था।

मैंने जब उसके नितंबो को सहलाया, वो एकदम से कांप गयी। मैंने उसके नितंबो को कुछ देर तक सहला कर तीन चार बार दबाया और उसको कमर से खींच के फिर से अपने लिंग पर बैठा लिया। पहली ही बार की तरह इस बार भी अश्विनी अपनी कमर हिला रही थी। मैं उसी के ताल में उसकी नंगी जांघों को सहलाने लगा। एकदम चिकनी जाँघें – मक्खन के जैसी! कुछ देर ऐसा ही करने के बाद मैंने एकदम से उसकी चड्ढी को पकड़ा और घुटनों तक खींच दिया। मैंने एक हाथ से अपने लिंग को साधा, और दूसरे से अश्विनी को फिर से अपनी गोद में बैठा लिया। उस समय मेरे लिंग के उसकी नग्न गुदा के स्पर्श से मुझे मन में आया की क्यों न गुदा मैथुन किया जाय? एक अजीब सा वासना पूर्ण अहसास था वो। मैंने अपने हाथों से उसके नितंबो को चौड़ा किया और उनके मध्य अपने लिंग को बैठाया।

“जानू.. जानू! उसमे नहीं! आपका बहुत मोटा है.. मर जाऊंगी मैं..”अश्विनी ने मिन्नत करी।

सचमुच! ध्यान ही नहीं रहा!

“ठीक है.. लेकिन, कभी ट्राई करते हैं!”

“हाँ.. लेकिन आज नहीं! प्लीज!”

“ओके” मैंने कहा और उसको लिटा कर, अपना मुँह उसकी योनि पर रख दिया। लोग उत्तेजित योनि को ‘पाव रोटी’ की उपमा देते हैं.. मुझे यह पसंद नहीं आता। मुझे उत्तेजित योनि को मालपुए की उपमा देनी अच्छी लगती है। मालपुआ रसीला, और मीठा होता है। अश्विनी की योनि भी उसी तरह की हो रही थी। अब मेरा भी लिंग उत्तेजना के बल को सहन नहीं कर पा रहा था। लेकिन फिर भी फोरेप्ले तो करना होता ही है न! मैं अपनी जीभ उसकी योनि के भीता डाल कर अन्दर के स्वाद और वातावरण को महसूस कर रहा था,

और उंगली से उसके भगनासे को छेड़ रहा था। अश्विनी उस शाम पहली बार स्खलित हुई। उसकी आवाजें अब कामुक सिसकारियों में बदल गई थी।

मैं फिर उसकी टाँगों के बीच आ गया। मैंने उसकी टाँगें उठा कर अपने कंधों पर रख ली और अपने लिंग को उसकी योनि के मुहाने पर टिका दिया। आप लोग उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं। अश्विनी की कुछ ऐसी हालत थी उसकी जांघें मुड़ कर लगभग क्षैतिज हो गयी थीं, और योनि लगभग ऊर्ध्व! मैंने तेजी से अपना लिंग उसकी योनि में डालना शुरु कर दिया। मैंने गुरुत्व के प्रभाव से सारा काम जल्दी हो गया। और फिर वही चिरंतन चली आ रही प्रक्रिया करने लगा। अश्विनी भी मस्त हो कर अपनी ठुकाई का आनंद लेने लगी । मेरे होंठ उसके मुँह और होंठों को चूस रहे थे। करीब पंद्रह मिनट के बाद मैंने अपना वीर्य अश्विनी के अन्दर ही छोड़ दिया।

उस पूरे साहचर्य के दौरान मेरे मन में सिर्फ प्रिया की ही छवि घूम रही थी...

३२

सतीश आज सिमा को घर ले आया। नर्स नीलिमा के कहने पर वह सिमा के लिए कपडे वगैरह खरीद कर ले आया था। उसकी बीवी होती तो कम से कम उसके कपडे इत्यादि तो रहते.. और उसको कुछ आईडिया भी होता की उसकी बीवी की नाप क्या है.. लेकिन आश्चर्य की बात थी की नर्स नीलिमा को उसका यह अनाड़ीपन खटका नहीं.. उसने अपने मन में यह कह कर समझा लिया की संभव है की वो अपनी बीवी को नए कपडे पहनाना चाहता हो! यह भी हो सकता है की वो हद से अधिक शर्मीला हो। नीलिमा ने ही अंदाजे से उसको सिमा के अधोवस्त्रों की नाप बता दी, और उसको छेड़ा भी की कम से कम अपनी पत्नी का ठीक से जायजा तो लिया कर!

सिमा के लिए ब्रा और चड्ढी खरीदते समय सतीश बहुत ही उत्तेजित हो गया था। अपनी समझ से उसने बेहद कामुक लगने वाली गुलाबी सी ब्रा और उसकी मैचिंग चड्ढी खरीदी थी। और गुलाबी ही रंग के शेड का सलवार सूट भी। एक मैक्सी भी खरीद ली, यह सोच कर की वो घर में क्या पहनेगी! सिमा को देख कर उसको लगा था की वो उम्र में उससे कुछ बड़ी है, लेकिन उसको इस बात की कोई परवाह नहीं थी – अगर बड़ी होगी तो होती रहे! बालिग़ तो अब वो खुद भी है! खैर, वो अस्पताल पहुंचा, और सभी ज़रूरी कागजों पर दस्तखत कर के सिमा को घर लाया।

आज सिमा को उसने पहली बार होश में देखा था – बेहोशी की हालत में भी वो अति सुन्दर लगती थी, लेकिन इस समय वो सचमुच की अप्सरा लग रही थी। उस नितांत कमजोरी की हालत में भी। सिमा ने जब सतीश को देखा तो उसके चेहरे पर न तो ख़ुशी के भाव थे, और न ही दु:ख के। वो दरअसल अपने पति को पहचान ही नहीं पाई। नर्स नीलिमा ने जब दोनों को ऐसे 'हिचकिचाते' हुए देखा, तो प्रसन्न भाव से बोली, "कोई बात नहीं.. घर जा कर आराम से मिलना!" उसने अपने हिसाब से दो बिछड़े हुए प्रेमियों को मिला दिया था और यही सबसे बड़े पुण्य की बात थी।

डॉक्टर सिन्हा ने सतीश को सख्त हिदायद दी थी की सिमा से घर के काम न कराये जांए, और उसको आराम करने दिया जाय। वो अभी भी काफी दुर्बल थी, और कम से कम एक महीना लगेगा उसको वापस अपनी ताकत पाने के लिए। उन्होंने उन दोनों को यह भी कहा था की वो दोनों यदि हो सके तो अगले दो सप्ताह शारीरिक सम्बन्ध न बनायें.. अभी वह सब झेलने की दशा में नहीं थी सिमा। अस्पताल में सबकी नज़रों में दोनों पति-पत्नी थे,

इसलिए ऐसी बाते आराम से करी जा सकती थीं। दवाइयाँ इत्यादि समय पर लेते रहें.. और ऐसी ही कई सारी बातें।

खैर, सतीश सिमा को घर ले आया। कसबे में आते हुए वो बहुत चौकन्ना था की कोई देख न ले की वो किसी लड़की को घर ला रहा था। कोई देखता तो हज़ार सवाल पूछते – कौन है, कहाँ से आई है इत्यादि इत्यादि! और वो उनसे झूठ नहीं कह सकता था, क्योंकि वहां सभी को मालूम था की सतीश की शादी ही नहीं हुई है, तो उसकी बीवी कहाँ से आ जाएगी! उसकी तेज किस्मत कहिए, की जिस समय वो अपने घर आया, उस समय सड़क पर और आस पास कोई भी नहीं मिला। वो जल्दी से सिमा समेत अपने घर में घुस गया, और अन्दर से किवाड़ लगा ली।

वो एक पुराने पहाड़ी तरीके का घर था – जिसमे कुछ फेरबदल कर के आधुनिकीकरण कर लिया गया था। एक कमरा था, एक खुला हुआ सा रसोईघर, उसके बिलकुल विपरीत दिशा में स्नानघर और शौचालय था। एक हाल और एक अहाता जैसा बना दिया गया था। पत्थर, लकड़ी जैसी सामग्री से बना हुआ घर बाहर से पहाड़ी घर दिखता था, लेकिन अन्दर से बिजली और खड्डी स्टाइल के शौच की व्यवस्था थी।

“सिमा... रर रानी..” सतीश ने अटकते हुए कहा, “तु तुम.. नहा लो.. अगर चाहो तो..”

सिमा को तो इस समय कोई भी अजनबी लगता। लेकिन यह सामने खड़ा व्यक्ति उसका पति था, ऐसा नर्स नीलिमा ने उसको बताया था। इसलिए इस व्यक्ति से कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। लेकिन फिर भी वो संयत नहीं थी। उसने महसूस किया की उसका पति भी संयत नहीं है।

“ज जी!” कह कर उसने सतीश की तरफ प्रश्नवाचक दृष्टि डाली।

“ओ ओह! बाथरूम उधर है.. सब भूल गई?” उसने खींसे निपोरी।

सिमा ने भी खिसियाई हुई मुस्कान डाली!

‘ओ भगवान! कितनी सुन्दर सी मुस्कान है इसकी! हे बाबा केदार.. हे बद्री विशाल! आपका बहुत बहुत धन्यवाद!’ सतीश ने मन ही मन अपने सारे इष्टों को धन्यवाद किया।

“नहा लो.. तुम्हारे पुराने कपडे सब खराब हो गए थे.. जल्दी ही और नए कपड़े खरीद लूँगा तुम्हारे लिए..”

सिमा ने हामी में सर हिलाया। वो एक क्षण को हिचकिचाई, फिर सतीश के सामने ही मुँह फेर कर अपने अस्पताल वाले कपड़े उतारने लगी (नर्स नीलिमा ने सतीश को कहा था की जब वो वापस अस्पताल आये, तो वो कपडे लेता आये)। कुछ ही देर में पूर्ण नग्न सिमा का पृष्ठ भाग सतीश के सामने था। हाँलाकि सिमा के कमज़ोर शरीर से हड्डियाँ कुछ कुछ झाँक रही थीं, लेकिन उतना दृश्य ही सतीश के लिए पर्याप्त था। उसका लिंग तुरंत ही तनावग्रस्त हो गया। वो अनिश्चित हालत में सिमा की तरफ बढ़ा, लेकिन उसी समय सिमा स्नानघर की तरफ चल दी।

जब स्नानघर का दरवाज़ा बंद हो गया, तो सतीश ने अपनी पैंट के सामने गीलापन महसूस किया – उसके लिंग ने वीर्य उगल दिया था। वो शर्मसार हो गया – कैसी छीछालेदर! क्या लोग सच कहते हैं? उसके मन में एक क्षण शंका हुई.. फिर उसने उस शंका को मन से निकाल दिया – पहली बार उसने एक लड़की इस हालत में देखी थी.. ऐसे तो किसी का भी निकल जाता.. उसने झटपट से अपनी पैंट उतार दी। फिर उसके मन में ख़याल आया की क्यों न आज वो नंगा ही रह ले.. क्या पता सिमा को भी नंगी रहने के लिए पटा सके? अपने इस विचार पर उसको बहुत आनंद आया – उसने झटपट अपनी जांघिया उतार दी।

जब सिमा नहा चुकी, तो उसने पाया की नहा कर पहनने वाले कपडे तो वो लाई ही नहीं। कुछ असमंजस के बाद उसने अपने पति को आवाज़ लगाई,

“सुनिए..?”

बाहर सतीश नंगा खड़ा हुआ था – क्या वो सिमा को पसंद आएगा? वो उसको देख कर ‘डर’ तो नहीं जायेगी? वह यह सोच ही रहा था की अन्दर से सिमा की आवाज़ आई।

“ह हाँ?” सतीश अचकचा गया।

“मेरे कपडे..”

“बाहर आ जाओ..” उसने कहा, फिर अपनी शैतानी स्कीम के अंतर्गत उसने कहा, “तुम वैसे भी घर में ऐसे ही रहती हो..”

‘ऐसे रहती हूँ? नंगी? अच्छा!’ सिमा ने सोचा।

सतीश ने देखा की कुछ देर में स्नानघर का दरवाज़ा खुला, और पूर्ण नग्न सिमा बाहर निकली! वो उसको देखता ही रह गया...

‘ओह प्रभु! यह तेरी कैसी कलाकृति है! इतनी सुन्दर! कैसे सुन्दर स्तन!

सिमा ने देखा की कैसे उसका पति उसको प्यासी दृष्टि से देख रहा है.. वो हलके से मुस्कुरा दी। नर्स नीलिमा ने बताया था की वो महीनो से बेहोश पड़ी है.. इतने दिनों तक कैसे इस बेचारे ने जीवन व्यतीत किया होगा! उसकी दृष्टि अपने पति के जनन क्षेत्र पर पड़ी।

“इधर आओ..” सिमा ने सतीश को कहा।

सतीश यंत्रवत उसकी तरफ चल दिया। सिमा वही रखे पीठे पर बैठ गई।

“अभी कुछ दिन सब्र कर लो.. लेकिन तब तक..” उसने अपने स्तन की तरफ इशारा किया, “आपको दूध पिलाती हूँ..”

सिमा की कही हुई बात सतीश को मिश्री जैसी मीठी लग रही थीं। कहाँ तो एक लड़की मिलनी दुश्वार थी, और कहाँ आज ऐसी बला की खूबसूरत लड़की के रसीले स्तनों का पान करने को मिलेगा! इस विचार के साथ ही सतीश को लगा की जैसे वो गलत कर रहा है – वो लड़की उसको अपना पति समझ कर यह सब कर रही थी। लेकिन वो जान बूझ कर उसका फायदा उठा रहा था। लेकिन सतीश ने अपने मन को यह कह कर समझा लिया की बाद में वो सिमा को समझा देगा। फिलहाल तो ये मीठे मीठे दूध पिए जांए!

“सुनिए...?” सिमा की आवाज़ दोबारा सुन कर सतीश की तन्द्रा टूटी!

‘ओ तेरी! ये तो सपना था!’ यह सोच कर उसने आवाज़ की दिशा में देखा। सिमा स्नानघर के दरवाज़े की ओट से झांकती हुई उसी की तरफ देख रही थी।

“क क्या?”

“जी मुझे कपड़े दे दीजिए पहनने के लिए..”

“अच्छा..” कह कर जब वो उठा, तो उसने देखा की वो कमर के नीचे पूरी तरह नंगा था।

‘धत्त तेरे की..’ वो नंगा होते ही लगता है सपना देखने लगा था! एक पल को वो हाथों से अपने छुन्नू को छुपाने को हुआ, लेकिन फिर रुक गया – बीवी से क्या छुपाना?

अपने पति को ऐसे अपने सामने नंगा घुमते हुए देख कर उसको थोड़ी सी शर्म आई, और हंसी भी! बेर के आकार के अंडकोष, और छुहारे के जैसा लिंग! दिखने में भी, और आकार में भी! सिमा को कहीं याद आया की लड़को का ऐसा होता है.. उसको नहीं मालूम था, की आदमियों का भी ऐसा ही होता है। या कहीं, उसका पति अभी लड़का ही तो नहीं? अगर ऐसा है, तो उसकी खुद की उम्र क्या है?

सतीश अन्दर कमरे में जा कर सिमा की मैक्सी ले आया। फिर उसको एक शैतानी सूझी,

“यहाँ बाहर आ कर ले लो..”

“दीजिए न..”

“नहीं.. आज तो बाहर आ कर ही लेना पड़ेगा..”

सिमा ने उसको कुछ देर देखा, फिर वापस अन्दर हो कर उसने स्नानघर का दरवाज़ा बंद कर लिया।

‘ओये! ये क्या हो गया..’

फिर कुछ देर बाद जब दरवाज़ा खुला, तो सिमा अपने सीने पर अंगौछा लपेटे बाहर निकली। अंगौछा गीला था, और उसके शरीर पर पूरी तरह से लिपटा हुआ था। और चूंकि उसकी लम्बाई और चौड़ाई बहुत बड़ी नहीं थी, इसलिए वो अंगौछा सिमा का शरीर छुपा कम और दिखा अधिक रहा था। सतीश को वह दृश्य बहुत पसंद आया। सिमा के उस रूप का अनुमोदन , उसके छुन्नू ने अपना छुहारे वाला रूप छोड़ कर, भिन्डी जैसा रूप धारण कर के किया। सिमा ने देखा की उसके पति का लिंग उसकी मध्यमा उंगली के जितना ही लम्बा, और बस मुश्किल से कोई दो गुना मोटा था।

न जाने क्यों उसको हलकी सी निराशा हुई। उसको निराशा क्यों हुई? कहीं न कहीं उसके मन में ऐसा विचार आया था की उसके पति के जननांग बहुत पुष्ट होंगे। और उसका पति बहुत ही दृढ़ शरीर और व्यक्तित्व का मालिक होगा.. लेकिन सतीश ऐसा नहीं था। ऐसे विचार उसको क्यों आ रहे थे जैसे सतीश उसका पति न हो? लेकिन, उसको कुछ याद ही नहीं और सभी तो यही कह रहे हैं की सतीश ही उसका पति है.. उसी ने उसको बचाया था।

“अब दीजिए...”

सतीश क्या करता भला? उसने सिमा को उसकी मैक्सी दे दी।

“अच्छा, मैं आपसे एक बात पूछूँ?” सिमा ने अपने बाल सुखाते हुए कहा।

“एक क्या? जितना मन करे उतना पूछो!”

“नहीं.. आपको लग सकता है की मैं कैसी फालतू बातें कह रही हूँ, और पूछ रही हूँ...”

“नहीं नहीं.. ऐसा कुछ भी नहीं.. पूछो न?”

“आपकी उम्र कितनी है?”

सतीश को फिर शरारत सूझी, “सोलह साल..”

‘ओह! तो मेरा ख़याल सही था...’ सिमा ने सोचा।

“और मेरी..?”

“इक्कीस साल..”

“सही में? मैं आपसे पांच साल बड़ी हूँ?”

“और क्या!”

सतीश ने उसको और कुरेदा, “तुमको क्या लगा की मैं कितना बड़ा हूँ?”

“मुझे लगा की पंद्रह सोलह के होगे!”

“हैं! वो कैसे?” सतीश को वाकई आश्चर्य हुआ!

“वो कैसे क्या? आपके अंडे और छुन्नू, लड़के जैसे ही तो हैं अभी..”

सिमा की बात पर उसको अचानक ही बेहद गुस्सा आया, “इसी छुन्नू से मैंने तुझे गाभिन किया था..” वो गुस्से से बोला।

“आप गुस्सा क्यों हो गए? मैंने कब मना किया इस बात से? बिलकुल किया था आपने! वो नर्स बता रही थीं.. की हमारा बच्चा..” कहते कहते सिमा की आँख में पानी आ गया।

“आई ऍम सॉरी.. मेरा मतलब.. मुझे माफ़ कर दो!”

“नहीं! आप माफ़ी मत पूछिए... पति का आदर करना चाहिए.. मैंने गलती करी है.. आप मुझे माफ़ कर दीजिए!”

“अरे! अब माफ़ी वाफी छोड़ो.. और जल्दी से कपड़े बदल लो...”

सतीश की बात पर सिमा कुछ देर चुप रही.. वो फिर से हिचकिचा रही थी..

“क्या हुआ?”

“कपड़े पहनने हैं..”

“तो पहनो न?”

“आपके सामने?”

“हाँ! क्यों क्या हो गया?”

सिमा लेकिन चुप ही रही।

“अरे मुझसे क्या शरमाना? मैं तो तुमको नंगा देखता ही रहता हूँ..” सतीश ने उत्तेजित और भर्रायी हुई आवाज़ में सिमा को छेड़ा।

“धत्त झूठे..”

“अरे मैं झूठ क्यों कहूँगा? तुम तो मुझे देखते ही अपना कुरता उतारने लगती हो!”

“अच्छा जी! वो क्यों भला?”

“मुझको दूध पिलाने के लिए..”

सिमा इस बात पर एकदम से गंभीर हो गयी।

“सच में?”

“सोलह आने सच!”

सिमा ने मैक्सी वहीँ ज़मीन पर फेंकी, और अंगौछे को अपने सीने से हटाते हुए सामने पड़ी खटिया की तरफ बढ़ी। खटिया पर बैठते बैठते सिमा पूरी तरह से नंगी हो चली थी।

“इधर आओ..” सिमा ने सतीश को कहा।

सतीश ने सिमा के स्तन देखे, तो उसको बाकी कुछ भी दिखना बंद हो गया... वो यंत्रवत उसकी तरफ चल दिया।

सिमा ने अपने स्तन की तरफ इशारा किया, "...आपको फिर से अपना दूध पिलाती हूँ.."

सिमा की कही हुई बात सतीश को मिश्री जैसी मीठी लग रही थीं। कहाँ तो एक लड़की मिलनी दुश्वार थी, और कहाँ आज ऐसी बला की खूबसूरत लड़की के रसीले स्तनों का पान करने को मिलेगा! इस विचार के साथ ही सतीश को लगा की जैसे वो गलत कर रहा है – वो लड़की उसको अपना पति समझ कर यह सब कर रही थी। लेकिन वो जान बूझ कर उसका फायदा उठा रहा था। लेकिन सतीश ने अपने मन को यह कह कर समझा लिया की बाद में वो सिमा को समझा देगा। फिलहाल तो ये मीठे मीठे दूध पिए जांए!

एक पल को सतीश को लगा जैसे सपने वाली बात एकदम सचित्र हो गयी! अगर सपने इतनी जल्दी सच होते हैं, तो वो और देखेगा! यह छलकता हुआ सौन्दर्य, ऐसा मीठा आमंत्रण! सतीश सिमा के पास पहुंचा, और उसके दाहिने स्तन के एक स्तनाग्र को अपने मुँह मैं ले कर चूसने लगा और दूसरे स्तन को सहलाने लगा! जाहिर सी बात है की एक वयस्क आदमी, स्तनों को अलग तरीके से चूसेगा - ख़ास तौर से तब, जबकि उसको अपने जीवन में पहली बार ऐसे सुन्दर स्तन देखने और भोगने को मिले हों!

"आराम से बाबा.. यह आपके लिए ही तो हैं! जितना मन चाहे, उतना चूसो..." सिमा ने सतीश के सर को प्यार से सहलाते हुए कहा।

सतीश बारी बारी से सिमा के दोनों स्तनों को चूसता रहा।

रात का खाना सतीश ने ही बनाया – सिमा काफी थक गयी थी, और क्योंकि डॉक्टर ने आराम करते रहने की सख्त हिदायद दी थी, इसलिए सतीश अपना पति-धर्म (यानि की आराम से बैठना, जब पत्नी खाना पका रही हो, और फिर सहवास कर के सो जाना) निभा नहीं पाया। सिमा कुछ ढंग से खा नहीं सकी – एक तो खाना बेस्वाद बना था, और ऊपर से दवाइयों, और लम्बे कोमा के प्रभाव से उसको खाने से अरुचि सी हो गयी थी। खाना और दवाइयाँ खा कर सिमा सो गयी; तो उसके साथ सतीश को भी झक मार कर लेटना पड़ा। पहली बार एक स्त्री के साथ रात बिताने की उत्तेजना में उसके लिंग ने अनायास ही वीर्य

थूक दिया। लेकिन फिर भी सतीश को उम्मीद थी, की उसकी यह हालत जल्दी ही ठीक हो जायेगी – अब क्योंकि सिमा भी उसके साथ है!

आज सिमा पहली बार कोमा के प्रभाव से पूरी तरह से बाहर आ कर सो रही थी। नींद बहुत गहरी आई – और नींद में बड़े ही विचित्र से सपने भी! सपनो ने ऐसे ऐसे स्थानों और ऐसे वस्तुओं के दृश्य थे, जो उसने अपने जीवन में पहले कभी भी नहीं देखे थे – अथाह समुद्र, रेतीला बीच, समुद्र की गहराइयाँ, बहुत ही घना बसा शहर और उसके अनगिनत दृश्य, एक आलीशान सा घर.... और इन सभी दृश्यों में परिलक्षित होता एक पुरुष! और सिर्फ यही नहीं... वह पुरुष उसके सपनो में सुस्पष्ट रूप से दिख रहा था – कभी इस वेश में, तो कभी किसी और... और तो और कभी कभी नग्न भी! दो तीन दृश्य तो उसने उस पुरुष के साथ सहवास के भी देखे! कौन है वो? उसने सपने में ही अपने दिमाग पर जोर डाला! लेकिन निद्रा ने विवश कर के रखा हुआ था। और भी लोग दिखे – एक लड़की.. “अश्विनी!” उसके दिमाग में कौंधा!

सतीश उथली नींद में सो रहा था की अचानक उसने सिमा को ‘अश्विनी अश्विनी’ पुकारते सुना! वो जाग गया।

‘अश्विनी कौन?’ उसने सोचा! कहीं यह सिमा का असली नाम तो नहीं? या उसकी किसी सहेली का? तो क्या सिमा को अपनी भूली हुई याद-दाश्त वापस मिलने लगी? बेटा! जल्दी कुछ कर.. नहीं तो ये लड़की जायेगी हाथ से! और कुछ इस्धर उधर हो गया, तो पिटाई भी हो सकती है! उसने कुछ देर और इंतज़ार किया, लेकिन सिमा ने कुछ और नहीं कहा.. उसको कब नींद आई, उसको खुद ही नहीं पता चला।

सुबह का उजाला घर के आँगन में अपने पैर पसार रहा था। सिमा ने अपनी आँखें धीरे धीरे खोलीं। आज बहुत ही अरसे के बाद उसने अच्छे से नींद ली थी – यह बात उसको भी समझ में आ रही थी। कल से आज वह काफी तरो ताज़ा महसूस कर रही थी। उसने जम्हाई भरी, अंगड़ाई ली, और फिर अचानक ही उसको कल रात के सपने की बातें याद आ गईं। उसको स्वयं पर बहुत ही लज्जा आई – अपना पति होते हुए भी ऐसे ऐसे सपने आते हैं..! लेकिन जाने क्यों वो पुरुष भी कोई अपना सा ही लग रहा था। उसने सतीश को आँगन से इधर उधर होते हुए देखा। वो मुस्कुराई – कल जब सतीश उसके स्तनों का पान कर रहा था तो उसको बहुत ही आनंद आया। वो भी कैसे नटखट बच्चों के जैसे मचल मचल कर पी रहा था।

कल शाम को सतीश ने सिमा को बताया की उसकी उम्र सोलह साल की नहीं है.. बल्कि सिमा के बराबर ही है.. सिमा थोड़ा निराश हो गयी – अगर सोलह की उम्र होती, तो कुछ उम्मीद भी थी, लेकिन अभी तो... खैर!

उसके मन में एक बात उठी की उन दोनों की पहली रात कैसी रही होगी? कैसे सतीश ने उसके कपड़े उतारे होंगे, और कैसे उसके साथ सहवास किया होगा!

सतीश ने सिमा को देखा तो मुस्कुराया। एक बार उसके मन में आया की सिमा से पूछे की ये अश्विनी कौन है.. फिर उसको याद आया की सिमा को तो कुछ याद ही नहीं.. क्यों अनायास ही ऐसी बातें छेड़ना? कहीं लेने के देने पड़ गए तो!

“ठीक से सोई?” उसने पूछा।

“हाँ.. आप क्या कर रहे हैं?”

“नाश्ता बना रहा हूँ... काम पर भी तो जाना है..”

“ओ माँ! कितनी देर सोती रही मैं.. और आपने जगाया क्यों नहीं?”

“अरे कोई बात नहीं.. पहले ठीक हो जाओ.. ये सब तो होता रहता है..”

“नहीं नहीं.. अब से खाना मैं ही बनाउंगी..”

“ठीक है.. बना लेना.. लेकिन अभी तो आराम से रहो न..”

“समय कितना हो रहा है..”

“साढ़े नौ हो रहे हैं..”

“बाप रे!” फिर कुछ सोच कर, “आपने... खा लिया?”

“हाँ.. बस अभी अभी.. कुछ देर में निकल जाऊँगा..”

“अच्छा..” सिमा ने कुछ बुझे हुए स्वर में कहा। अकेला रहना भला किसको पसंद आएगा? “कब आयेंगे वापस?”

“शाम को..”

“ओह!”

“कहो तो न जाऊं..” सतीश ने रोमांटिक बनने की असफल एक्टिंग करी।

सिमा मुस्कुराई, “कुछ देर में चले जाइए?”

“हम्म.. देर में चला तो जाऊं.. लेकिन उसके बदले में मुझे क्या मिलेगा?”

“मेरी गोदी में सर रख कर लेटेंगे आप?” सिमा मुस्कुराई। सतीश भी मुस्कुराया।

“और?”

“पहले रखिए तो सही..”

सतीश बिस्तर पर आ कर सिमा के बगल आ कर उसकी गोदी में सर रख कर लेट गया। सतीश का शिश्न उत्तेजित होने लगा – लेकिन फिर भी वो इस समय काफी आराम महसूस कर रहा था। आश्चर्यजनक रूप से उसको किसी भी तरह का उतावलापन नहीं महसूस

हुआ। सिमा बड़े प्यार से सतीश के सर और चेहरे को सहला रही थी। सतीश को ठीक वैसा महसूस हुआ, जैसा की अगर वो अपनी माँ की गोदी में सर रखता! उतना ही आराम! उतना ही चैन! उतनी ही कोमलता!

'बढ़िया!'

सुख और आनंद से उसकी आँखें बंद हो गईं, जो कपडे की हलकी सरसराहट की आवाज़ के बाद ही खुलीं। सिमा ने मैक्सी के सामने के बटन खोल दिए थे, और सतीश को स्तनपान करवाने के लिए अपने स्तन स्वतंत्र कर दिए थे। सतीश ने देखा – सिमा के आदर्श स्तन और चूचक उसको निमंत्रण दे रहे थे। उसके चूचक उत्तेजनावश कड़े हो गए थे, मानो कह रहे हों – 'सैयां! आ जाओ.. हमें अपने मुँह में ले लो.. और चूसो!'

सतीश ने वही किया। सिमा समझ गयी की आधे घंटे का प्रोग्राम तो बन गया। कल की चुसाई के बाद उसके चूचक थोड़े से पीड़ित थे, लेकिन अकेला रहने से यह ज्यादा अच्छा यह था की वो यह पीड़ा बर्दाश्त कर ले। सतीश भी पूरी सतर्कतापूर्व चूस रहा था, जिससे सिमा को चोट न लगे। कुछ देर बाद जब उसने दूसरे स्तन को मुँह में लिया, तब सिमा के मुँह से एक कराह निकली।

'क्या उसको दर्द हुआ?' सतीश ने दूध पीना छोड़ कर एक प्रश्नवाचक दृष्टि सिमा पर डाली। वो आँखें बंद किए सिसकारी भर रही थी। जब सिमा ने देखा की सतीश ने पीना छोड़ दिया, तो उसने आँखों में ही वापस पूछा, 'क्या हुआ?'

सतीश ने 'कुछ नहीं' में सर हिलाया, और वापस दूध पीने में लग गया। उसी के साथ उसने सिमा की मैक्सी भी उसके कन्धों से नीचे सरका दी – अब वो ऊपर की और नंगी बैठी हुई थी। और सतीश बिना झिझक के सिमा के स्तन पी रहा था। जब उसका मन भर गया तो अंत में वो अलग हुआ। अलग हो कर वो सिमा की गोदी से उठा, और उसको बिस्तर पर लिटाने लगा। लिटाने साथ साथ ही वो उसकी मैक्सी को नीचे की तरफ खींचने लगा जिससे वो पूरी नंगी हो जाय। सिमा को शर्म आई, लेकिन उसने मना नहीं किया।

"छुन्नी के साथ खेलोगी?"

सिमा शर्माती हुई मुस्कुराई।

“अपनी योनि के साथ खेलने दोगी?”

‘योनि?’ यह तो सुना हुआ शब्द है.. “वो क्या होता है?”

“यह..” सतीश ने सिमा की योनि की तरफ इशारा किया। सिमा ने जांघे सिकोड़ लीं।

सतीश अपनी पैंट उतार रहा था। सिमा देख रही थी की आगे क्या होने वाला है। कुछ ही देर में उसका भिन्डी के आकर का शिश्न मुक्त हो गया। वाकई अभूतपूर्व घटना थी की अभी तक उसके लिंग ने वीर्य नहीं छोड़ दिया था। सतीश ने सिमा का हाथ पकड़ कर अपने छुन्नू पर रख दिया। सिमा ने अपनी उंगलियाँ उसके इर्द गिर्द लपेट लीं।

“कितना गरम है..”

सतीश गर्व से मुस्कुराया।

“रुको.. आज तुम्हारी योनि के साथ खेलता हूँ.. बहुत दिन हो गए..” उसने प्रभाव के लिए आगे जोड़ा।

कह कर वो सिमा की घने बालों के अन्दर छुपी योनि की दरार पर अपनी उंगली फिराने लगा। सिमा नख-शिख तक कांप गयी, और सतीश को कामुक लालसा से देखने लगी। कुछ देर यूँ ही दरार पर उंगली चलाने के बाद उसने अपनी उंगली वहां पर दबाई – पट से अन्दर जाने का रास्ता खुल गया। सतीश मुस्कुराया और अपनी तर्जनी को सिमा की योनि के भीतर डालने लगा। उधर सिमा भी अपनी जांघ खोलने लगी – जैसे उसको अन्दर आने के लिए और जगह दे रही हो..

उंगली पूरी अन्दर जाने के बाद उसने धीरे धीरे ही उसको बाहर निकाला और वापस अन्दर बाहर करने लगा। उसी ताल में सिमा भी अपने नितम्ब हलके हलके उछालने लगी।

सतीश सिमा के पास आया, और उसके कान में फुसफुसाते हुए बोला, “इसको कहते हैं उंगल ठुकाई..” और उंगली अन्दर बाहर करने का क्रम करते हुए वो उसके स्तन भी चूसने लगा। सिमा के अन्दर का ज्वार बहुत दिनों से उठा हुआ था। सतीश ने उंगली डाल कर बस

जैसे किसी बाँध को तोड़ दिया। दो मिनट के भीतर ही सिमा यौन उत्तेजना के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी... उसका शरीर किसी अनियंत्रित यंत्र जैसे कम्पित होने लगा।

उसको यूँ स्खलित होते देख कर सतीश चाह कर भी खुद पर नियंत्रण न रख सका, और उसके कुछ कर पाने से पहले ही उसका वीर्य निकल पड़ा, और सामने सिमा के सपाट पेट पर जा कर गिरा। दो तीन विस्फोटों में वह खाली हो गया। सिमा हाँफते हुए अपने पेट पर पड़े सफ़ेद रंग के तीन छोटे छोटे तलैयों को देखने लगी – और उनको अपनी हथेली से पोंछने लगी।

सतीश बोला, "सम्हाल कर रानी! हाथ धो लेना पहले.. कहीं मेरे पानी से सना हाथ अपनी योनि पर लगा लिया तो गाभिन हो जाओगी.. समझी?"

सिमा ने हामी में सर हिलाया, और बिस्तर से उठा कर हाथ धोने चल दी। नंगी ही।

सतीश अपनी किस्मत पर खुद ही रश्क करने लगा।

सतीश अपनी तरफ से पूरा प्रयास कर रहा था की सिमा के बारे में उसके किसी पडोसी को न पता चले। इसलिए उसने सिमा को जैसी जैसी हिदायदें दी थीं, उनको सुन कर वो खुद भी अचरज में पड़ गयी। वो अगर इस घर की मालकिन थी, तो क्यों नही वो छत पर जा सकती थी? क्यों नहीं वो अपने कपड़े धूप में सुखा सकती थी? क्यों नहीं वो घर में बिना खट-पट के रह सकती थी.. इत्यादि! और सबसे बड़ी बात की सतीश घर के बाहर ताला लगा कर क्यों जाय? अगर उसको घर से बाहर निकलने की ज़रुरत पड़ी तो? लेकिन उसको कोई उत्तर नहीं मिला। सिमा ने भी कोई अधिक प्रतिवाद नहीं किया – कुछ तो सोचा होगा सतीश ने!

नहा धो कर उसने नाश्ता किया, और फिर दवाई खाई। अकेले बंद घर में वो क्या करती भला? जल्दी ही वो फिर से सो गयी। उसको गहरी नींद आई, या उथली यह तो नहीं कहा जा सकता, लेकिन उसको अत्यंत सजीव से सपने आये। और उन सपनो ने फिर से वही पुरुष विभिन्न अवस्थाओ में दिखा – कभी उसको अपनी गोद में बैठाए, कभी सूट पहने, कभी कार चलाते, कभी नग्न, और कभी उसके साथ रमण करते!

“अथर्व?” सिमा ने ऊंची आवाज़ में कहा, और नींद से जाग उठी। उसका शरीर पसीने पसीने हो गया था, और एक कम्पन भी हो रहा था।

‘क्या नाम था उसका?’ सिमा को वापस याद नहीं आया।

कुछ देर में उसको घर के दरवाज़े पर आहट हुई। सतीश वापस आ गया था, और घर का दरवाज़ा खोल रहा था। सिमा ने घड़ी पर नज़र डाली – शाम के चार बज रहे थे।

अन्दर आते हुए उसने बहुत सावधानीपूर्वक दरवाज़ा वापस बंद किया और फिर सिमा को अपनी बाहों में भर लिया। ऐसा करते ही सिमा उसके आलिंगन में सिमट गयी – उधर सतीश सिमा के गालो, होंठ और माथे पर अपने चुम्बन की छाप लगाने लगा। सतीश शायद दिन भर इसी क्षण के सपने संजो रहा था। उस पर इस समय वासना का तूफ़ान परवान चढ़ रहा था –उसके हाथ सिमा के शरीर की टोह लेने में व्यस्त थे – वो कभी सिमा के स्तनों को मसलता, तो कभी उसके नितम्बों को! अंत में उसके हाथ सिमा के नितंबो पर जम गए।

“सिमा रानी! आज मैं रुक नहीं पाऊँगा! आज मुझे तेरे अन्दर जाना ही है..” चुम्बनों के बीच में सतीश ने सिमा को अपने इरादों से अवगत कराया।

उसकी बात पर सिमा ने एक पल को सोचा, और फिर सतीश के एक हाथ को अपने एक स्तन पर रख दिया। जोश में आ कर सतीश सिमा को फिर से चूमने लगा। सिमा ने आज सलवार कुरता पहना हुआ था। उसने जल्दी ही सिमा का कुरता उतार दिया – उसने अन्दर कुछ नहीं पहना हुआ था। फिर उसने सिमा के सलवार का नाड़ा भी ढीला कर दिया।

सलवार उसके कूल्हों से सरक कर नीचे गिर गया।

उसका ऐसा नज़ारा देख कर सतीश काफी आवेश में आ गया। आज दूकान पर जाते ही उसने किसी से अव्वल गुणवत्ता का शिलाजीत खरीद कर उसका सेवन किया था। अब उसका प्रभाव हो, या न हो, लेकिन इस समय सतीश को विश्वास भी था, और आत्म-विश्वास भी। लिहाजा, उसका अब तक का प्रदर्शन, उसके लिए अत्यंत संतोषजनक था। सिमा ने चड्ढी पहन रखी थी – गुलाबी चड्ढी पहने हुए, और अन्यत्र पूर्ण नग्न सिमा का रूप बहुत सुहाना लग रहा था। वो सचमुच काम की देवी लग रही थी। उससे रहा नहीं जा रहा था – आज तो बस कर ही डालना है!

आत्मविश्वास से लबरेज़, उसने सिमा के नितम्बों को दबाना, कुचलना शुरू कर दिया। उसके साथ ही उसकी चड्ढी भी नीचे की तरफ सरकानी शुरू कर दी। सिमा समझ गयी की सतीश आज रुक नहीं सकता। किसी का कोई डर तो था नहीं! वो थोड़ा सा कसमसाई, लेकिन अपनी हर हरकत के साथ वो बस सतीश की बाहों में और समाती गयी। वैसे, सिमा को भी अच्छा लग रहा था – पति का संसर्ग तो सबसे सुखद होता है। और वैसे भी अपनी याद में प्रेमालाप का उसका यह पहला अनुभव था।

कुछ ही देर में सिमा पूरी तरह से नंगी हो गई, और सतीश उसको अपनी गोद में उठा कर बिस्तर तक ले गया। बिस्तर पर लिटा कर उसने सिमा की टाँगें मोड़ कर, उसके घुटने उसके सीने से लगा दिए। इस अवस्था में सिमा की योनि की दोनों फांकें पूरी तरह से खुल गईं, और उनके बीच में से योनि का गुलाबी हिस्सा झाँकने लगा। सिमा को अपने गुप्तांगों का ऐसा निर्लज्ज प्रदर्शन होते देख कर शर्म भी बहुत आई और रोमांच भी! उसकी अवस्था ऐसी थी की सतीश उसकी योनि के पूरा भूगोल, और यहाँ तक कि उसकी गुदा को भी खूब अच्छी तरह से देख सकता था।

सिमा की रस से भरी, गुलाबी योनि देख कर सतीश के मुँह में पानी आ गया। उसने बस स्टेशन पर बिकती सस्ती काम-प्रसंगों से भरी पुस्तिकाओं में पढ़ा था की अगर स्त्री की योनि को पुरुष मुख से चाटे, तो उसको बहुत आनंद आता है। लिहाजा, उसने यह काम भी आजमाने का सोचा। सिमा की टाँगों को वैसे ही मोड हुए, उसने झुक कर उसकी योनि की दरार पर जीभ फिराई। वहां से मूत्र की हलकी सी गंध आ रही थी – सतीश का मन जुगुप्सा से भर गया, लेकिन फिर भी उसने मैदान नहीं छोड़ा। जब ओखली में सर डाल दिया है, तो मूसल से क्या डरना?

दो तीन बार जीभ फिराने के बाद, सतीश सहज हो गया और तबियत से सिमा की योनि चाटने लगा। उसको योनि की संरचना का कोई ख़ास ज्ञान नहीं था – उसको नहीं मालूम था की बस थोड़ा ऊपर चाटने से उसकी 'प्रेमिका' ऐसी पागल हो जायेगी की उसने नाम की माला अपने उम्र भर जप्ती रहेगी। खैर, इस समय वो जो कुछ कर रहा था, वही सिमा के लिए काफी भारी होता जा रहा था। दोनों के सहवास का पहला स्खलन सिमा को बुरी तरह कम्पित कर गया।

"ओह सतीश.." सिमा ने बस इतना ही कहा, लेकिन इतनी कामुक तरीके से कहा की सतीश का स्खलन होते होते बचा। सिमा कोई दो मिनट तक कांपती रही, तब जा कर वो कुछ संयत हुई। इतनी देर तक वो बस आँखें बंद किये आनंद ले रही थी। जब उसकी आँख

खुली, तब उसने अपनी ही तरफ देखते सतीश को देखा। वो मुस्कुरा रहा था। पहला किला फतह!! सिमा उसको देख कर लज्जा से मुस्कुराई। इस बीच में वो कब निर्वस्त्र हो गया, सिमा को अंदाजा नहीं हुआ।

“रानी – अब मेरी बारी!”

कह कर उसने अपने तने हुए लिंग का सर, उसकी योनि के खुले हुए होंठों के बीच लगा दिया। अब यह शिलाजीत का प्रभाव हो, या फिर सतीश के आत्म-विश्वास का, इस समय उसके लिंग में अतिरिक्त तनाव बना हुआ था, इसलिए खुद सतीश को भी अपना आकार और तनाव काफी प्रभावशाली लग रहा था।

सतीश अनुभवहीन था, यह साफ़ दिख रहा था। किसी लड़की से सहवास का यह पहला अवसर था। उसको लगता था की योनि पर लिंग टिका कर बस धक्का लगा देने से काम हो जाएगा। उसने वैसा ही किया – लेकिन बार बार उसका लिंग फिसल जा रहा था। अंत में सिमा ने ही उसकी मदद करी – उसने अपनी योनि के होंठों को उँगलियों की सहायता से हल्का सा फैलाया, और अपने हाथ से पकड़ कर सतीश के लिंग को प्रवेश कराने में मदद करी। उसका लिंग गर्म था, और साफ़ लग रहा था की बेहद उतावला हो रहा था। चाहे कुछ भी हो – हर स्त्री अपने प्रेमी को – वो चाहे पति के रूप में हो, या सिर्फ प्रेमी के रूप में – अपने लिए ऐसे उतावला होते देख कर ख़ुशी से फूली नहीं समाएगी।

उसने सतीश के लिंगमुख को अपनी योनि के द्वार पर टिका दिया, और मन ही मन भगवान् का नाम लिया। सतीश ने रास्ता साफ़ देख कर एक जोरदार झटका दिया – उसका सारा का सारा लिंग एक ही बार में उसकी योनि के भीतर समा गया।

अब भले ही उसका लिंग काफी पतला सा रहा हो, लेकिन सिमा के लिए इतने अरसे के बाद यह पहला सहवास था। अपनी गहराई में उस गरमागरम लिंग को उतरते हुए महसूस कर के सिमा की आह निकल गयी।

“ऊह्ह्ह! अह्ह… उईई … आआआआ… ऊऊऊ… उह… ओह्ह…” हर धक्के के साथ सिमा नए प्रकार की आवाज़ निकालती जा रही थी। उसको शर्म तो बहुत आ रही थी, लेकिन फिर भी कामुक उन्माद के सम्मुख वो नतमस्तक थी।

ख़ुशी से उछल पड़ी वह, और फिर जोरों से धक्के मार-मार कर किलकारियां भरने लगी।

उधर सतीश भी स्वयं के भीतर एक नए प्रकार का जीव उत्पन्न होता महसूस कर रहा था – इतना देर तो वो हस्त मैथुन करते हुए भी नहीं टिक पाता। वो इसी ख़ुशी में पूरे जोश के साथ धक्के लगा रहा था। बीच बीच में वो सिमा के होंठों को चूमता, तो कभी चूचकों का रस पीता। सिमा भी खुल कर अपने प्रथम सहवास का आनंद उठा रही थी – उसकी योनि बहुत गीली हो गई थी, और वो खुद भी अपने योनिड़ उचका उचका कर सहवास में सहयोग दे रही थी।

अंततः सतीश ने पूरी ताकत से एक ज़ोर का धक्का लगाया। आखिरी।

"आआआआआआह्ह…"

और इसी धक्के के साथ सतीश ने अपना पूरा वीर्य सिमा की योनि में खाली कर दिया और उसी अवस्था में सिमा के ऊपर ही पस्त होकर गिर गया।

"सिमा सिमा! मेरी प्यारी! …आई लव यू… तू मेरी जान है! जान!"

जवाब में सिमा मुस्कुरा दी, और सतीश के माथे पर चुम्बन दे कर उसने आँखें बंद कर लीं।

३३

अश्विनी से आफिस के काम का झूठा बहाना बना कर, दो दिन बाद मैं गुड़गाँव चला गया – नेशनल जियोग्राफिक के ऑफिस, उस अफसर से मिलने, जिन्होंने मुझे अपनी तरफ से सारी मदद देने का वायदा किया था! उन्होंने मुझ पर कृपा कर के उस डाक्यूमेंट्री की सारी अतिरिक्त फुटेज, कैमरामैन और डायरेक्टर – सभी को बुला रखा था। कैमरामैन कुछ निश्चित तौर पर बता नहीं पाया – लेकिन उसका कहना था की हो न हो, यह शॉट गौचर में फिल्माया था। वह इतने विश्वास से इसलिए गौचर का नाम ले रहा था क्योंकि वहीँ पर हैलीकॉप्टर इत्यादि से त्रासदी के पीड़ित लोगों को लाया जा रहा था। सेना ने वही की एयर स्ट्रिप का प्रयोग किया था। इसलिए बहुत संभव है की गौचर के ही किसी अस्पताल की फुटेज रही हो। मैंने बाकी की फुटेज भी देख डाली, लेकिन न तो प्रिया की कोई और तस्वीर दिखी, और न ही उस अस्पताल की!

मैंने उन सबसे बात कर के उनकी डाक्यूमेंट्री बनाते समय वो लोग किस किस जगह से हो कर गए, उसका एक सिलसिलेवार नक्शा बना लिया, और फिर उनसे विदा ली। इस पूरे काम में एक दिन निकल गया। अब जो हो सकता था, अगले ही दिन होना था। शाम को अश्विनी को फ़ोन कर के मैंने बता दिया की काम आगे बढ़ गया है, और कोई तीन चार दिन और लग जायेंगे। वो अपना ख़याल रखे, और वापसी में क्या चाहिए वो सोच कर रखे। हम खूब मस्ती करेंगे! उससे ऐसे बात करते समय मन में टीस सी भी उठ रही थी की मैं अश्विनी से झूठ बोल रहा था। वैसे यह उसके लिए भी एक तरह से अच्छा था – अगर उसको पता चलता की मैं प्रिया की खोज में निकला हूँ, तो वो ज़रूर मेरे साथ हो लेती। और मुझे अभी तक नहीं मालूम था की जिस लड़की को मैंने टीवी पर देखा, वो सचमुच प्रिया थी, या मेरा वहम। कुछ कह नहीं सकते थे। ऐसे में, अगर प्रिया न मिलती, तो बिना वजह ही पुराने घाव कुरेदने वाली हालत हो जाती। अश्विनी बहुत ही भावुक और संवेदनशील लड़की है, ठीक प्रिया के जैसे ही। और मन की सच्ची और अच्छी भी.. ऐसे लोगों को अनजाने में भी दुःख नहीं देना चाहिए। तो मेरा झूठ उसको एक तरह से रक्षा देने के लिए था।

रात में दिल्ली के एक होटल में रुका। वहां पर मेरी कंपनी जिस ट्रेवल एजेंसी का उपयोग करती थी, वहां पर फ़ोन लगा कर एक भरोसेमंद कार और ड्राईवर का इंतजाम किया – दिन रात की सेवा के लिये। वो अगले सुबह छः बजे होटल आने वाला था। शुभस्य शीघ्रम!

दिल्ली से गौचर पहुँचने में पूरे दो दिन लग गए। एक कारण तो पहाड़ी रास्ता है, और दूसरा यह की गौचर से कोई पचास किलोमीटर पहले ही से मैंने अस्पतालों में जा जा कर प्रिया के बारे में पता लगाना शुरू कर दिया था। प्रिया की तस्वीरों की प्रिंट मैंने दिल्ली में ही निकाल ली थीं, जिससे लोगों तो दिखाने में आसानी हो। मैं उनको सारी बातें विस्तार में बताता, यह भी बताता की नेशनल जियोग्राफिक वालों ने त्रासदी के समय डाक्यूमेंट्री फिल्माई होगी यहाँ। गौचर तक पहुँचते पहुँचते कोई पांच छोटे बड़े अस्पतालों में बात कर चुका था, लेकिन कोई लाभ, कोई सूत्र, अभी तक नहीं मिला था।

३४

एक बार शेर को खून का स्वाद पता चल जाए, तो फिर उससे पीछा छुड़ाना मुश्किल है। सतीश का भी यही हाल था – एक तो शिलाजीत का अत्यधिक सेवन, और उससे होने वाले लाभ – दोनों का ही लालच उसको लग गया था। अगले दो दिन उसका यही क्रम चलता रहा। वह दिन भर यौन शक्ति वर्द्धक दवाइयों, खास तौर पर शिलाजीत का सेवन करता, और जैसे कैसे किसी भी बहाने सिमा के साथ सहवास!

उसी के कहने पर सिमा घर पर या तो निर्वस्त्र रहती थी, या फिर उस गुलाबी ब्रा-पैंटीज में। सिमा की किसी भी प्रकार की नग्नावस्था का प्रभाव, सतीश पर एक जैसा ही पड़ता था। जब भी वो उसकी गोरी टाँगे और जांघें देख लेता था, तो उसका मन डोल जाता था। जब सिमा चलती, तो उसके गदराये हुए ठुमकते नितम्ब उसके दिल पर कहर बरपा देते। उसकी कठोर चूंचियाँ देख कर सतीश सोचता की ऊपर वाले ने बड़ी फुर्सत से जैसे संगमरमर को तराश तराश कर निकाला हो। नमकीन चेहरा, और रसीले होंठ! कोई देख ले तो बस चूमने का मन करे!

सहवास के बाद से दोनो ही एक दूसरे को बहुत प्यार से देखते। साथ में हँसी मज़ाक भी करते। सतीश हंसी मजाक में कभी कभी सिमा के बाल पकड़ लेता, तो कभी कमर पकड़ कर भींच लेता। सिमा उसकी हर बदमाशी पर हंसती रहती। जब वो रोमांटिक हो जाता, तो सिमा को कहता की आज बहुत सुन्दर लग रही हो। सिमा उसकी इतनी सी ही बात पर शर्म से लाल हो जाती। रह रह कर वो सिमा के नग्न नितम्बों पर हौले से चिकोटी काट लेता, तो कभी उसकी चूंचियाँ दबा देता। उसकी इन शैतानियों पर सिमा जब उसको झूठ मूठ में मारने दौड़ती, तो वो उसको प्यार से अपनी गोदी में उठा लेता, और उसके चूचकों को मुँह में भर कर चूमने लगता।

इसके बाद होता दोनों के बीच सहवास! भले ही उनकी यौन क्रिया पांच मिनट के आस पास चलती, सतीश के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। उधर सिमा इस बात से संतुष्ट थी की सतीश उसकी सेवा और देखभाल में कोई कसर नहीं रखता था। अपनी तरफ से खूब प्रेम उस पर लुटाता था। पिछले दो दिनों में उन दोनों ने तीन बार सहवास किया था – सिमा को हर बार आनंद आया था। प्रत्येक सहवास से एक तरीके से उसको मानसिक शान्ति मिल जाती थी। कुछ तो होता था, की संसर्ग के कुछ ही देर बाद सिमा आराम की अवस्था में आ जाती थी – और कब सो जाती थी, उसको खुद ही नहीं मालूम पड़ता।

बस दो बातें थीं जिनके कारण उसको खटका लगा रहता – एक तो यह की उसके सपनों का पुरुष हर बार दिखता था। इससे सिमा को विश्वास हो गया की वो कोई मानसिक कल्पना नहीं था – बल्कि उसके अतीत का एक हिस्सा था। कब और कैसे, उसको समझ नहीं आता। लेकिन जिस प्रकार से वो दोनों सपनों में निर्भीक हो कर सन्निकट रहते थे, उससे न जाने क्यों सिमा को लगता जा रहा था की सिमा उस पुरुष की पत्नी रही होगी।

लेकिन अगर यह सच था तो सतीश से उसकी शादी कब हुई? अगर सतीश से उसकी शादी हुई है, तो फिर इस घर में उसके कोई चिन्ह क्यों नहीं मौजूद हैं? घर को देख कर साफ़ लगता था की यह किसी कुंवारे पुरुष का घर है.. माना की वह इतने लम्बे अरसे तक अस्पताल में रही थी, लेकिन एक शादी-शुदा परिवार और घर में स्त्री का कुछ प्रभाव तो मौजूद रहना ही चाहिए था न?

दूसरा खटका उसको इस बात का लगता था की सतीश हमेशा उसको पड़ोसियों से छुपा कर रखता था। उसकी इस हरकत का कोई तर्कसंगत विवरण उसके लाख पूछने पर भी उसको नहीं मिल पाता था। यह दोनों ही बातें मन ही मन में सिमा को बहुत अधिल साल रही थीं। उसको यकीन हो रहा था की कुछ न कुछ तो गड़बड़ है। उसने सच का पता लगाने की ठान ली।

हर रोज़ की तरह सतीश घर के दरवाज़े पर बाहर से ताला डाल कर काम पर चला गया। जाने से पहले उसने दैनिक सहवास की खुराक लेनी न भूली। सतीश के जाने के कोई पंद्रह मिनट के बाद सिमा ने कपडे पहने, और दरवाज़े पर घर के अन्दर से दस्तक दी। पहले धीरे धीरे, और फिर तेज़ से। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

कोई पंद्रह बीस मिनट तक ऐसे ही खटखटाने के बाद सिमा बुरी तरह से निराश हो गयी, और निरी हताशा, खीझ और गुस्से में आ कर दरवाज़े को पीटने लगी। अंत में बाहर से आवाज़ आई,

“कौन है अन्दर?”

“मैं हूँ.. सिमा!”

“सिमा? कौन सिमा? कौन हो तुम बेटी?”

“आप..?”

“मैं यहाँ पड़ोस में रहता हूँ.. मेरा नाम रामलाल है। तुम बहुत देर से दरवाज़ा पीट रही हो। यहाँ मेरे साथ सात आठ और लोग हैं.. तुम घबराओ मत.. मेरी बात का जवाब दो.. कौन हो तुम?”

“जी.. मैं सिमा हूँ..”

“वो तो हमने सुना.. लेकिन कौन हो?”

“जी मैं.. इनकी.. पत्नी हूँ!”

“किसकी पत्नी?” रामलाल ने जोर से पूछा, जैसे उसको सुनाई न दिया हो।

“इनकी.. सतीश की..”

“सतीश की पत्नी?”

“जी!”

रामलाल कुछ कहते कहते रुक गया। फिर कहा,

“लेकिन तुम अन्दर क्यों बंद हो?”

“वो ही बाहर से बंद कर के गए हैं..”

“बाहर आना चाहती हो?”

“जी.. लेकिन..”

“देखो बेटी, अगर बाहर आना चाहती हो, तो बताओ.. हम तब ही कुछ कर पाएंगे।”

“जी.. मैं आना चाहती हूँ..”

“ठीक है.. कुछ पल ठहरो, और दरवाज़े से दूर हट जाओ..”

कुछ देर के बाद दरवाज़े पर जोर की खट-पट हुई.. फिर कुछ टूटने की आवाज़ आई। नहीं दरवाज़ा नहीं, बस ताला ही टूटा था। दरवाज़ा खुल गया। सिमा को घोर आश्चर्य हुआ जब उसने देखा की घर के बाहर कम से कम बीस पच्चीस लोगों की भीड़ लगी हुई थी। वो बहुत डर गयी, और अपने आप में ही सिमट कर घर के कोने में बैठ गई।

उसकी ऐसी हालत देख कर दो महिलाएँ घर के अन्दर आईं, और उसको सांत्वना और दिलासा देने लगीं। उसको समझाने लगीं की यहाँ कोई उसको कैसे भी कुछ नहीं पहुंचाएगा। खैर, कोई आधे घंटे बाद सिमा बात करने की हालत में वापस आई।

“हाँ बेटी, अब बोल! तू कह रही थी की तू सतीश की पत्नी है?”

“ज्ज्जी...” सिमा को लग गया की कुछ गड़बड़ तो हो गयी है। उसकी स्त्री सुलभ छठी इन्द्रिय कह रही थी कुछ भारी गड़बड़ थी। अगर वो सतीश की पत्नी थी, तो कोई पडोसी उसको जानते क्यों नहीं थे?

“कब हुई तेरी शादी?”

इस बात का क्या उत्तर देती वो!

“आप मुझे नहीं जानते?” उसने एक तरीके से विनती करते हुए रामलाल से पूछा। मन ही मन भगवान् से प्रार्थना भी करी की काश उसको ये लोग जानते हों!

“उसका उत्तर मैं बाद में दूंगा, पहले ये बता की तू आई कब यहाँ?”

“चार दिन पहले!”

“कहाँ से?”

“मैं अस्पताल में थी न.. कोमा में.. कोई दो साल के आस पास..”

“कोमा में..?”

“ज्जी..”

“तो क्या तुमको याद नहीं है की तुम कौन हो?”

“नहीं..”

“और तुम्हारा नाम?”

“उन्होंने ही बताया..”

“अच्छा?”

“हाँ!”

“और यह भी बताया की तुम उसकी पत्नी हो?”

“जी..” इस पूरे प्रश्नोत्तर के कारण सिमा का दिल बहुत धड़क रहा था।

‘हे प्रभु! हे भगवान एकलिंग! बचा लो!’

“और तुम दोनों पति पत्नी के जैसे रह रहे हो – पिछले चार दिनों से?”

इस प्रश्न का भला क्या उत्तर दे सिमा? वो सिमट गई – कुछ बोल न पाई। लेकिन रामलाल को अपना उत्तर मिल गया।

“अब कृपा कर के मेरे प्रश्नों के उत्तर बताइए! क्या आप मुझे जानते हैं?”

“बिटिया,” रामलाल ने पूरी गंभीरता से कहा, “मैं अपनी पूरी उम्र यहाँ रहा हूँ.. इसी कस्बे में! और मेरे साथ ये इतने सारे लोग। मैं ही क्या, यहाँ कोई भी तुमको नहीं जानता। लेकिन तुम्हारी बातों से मुझे और सबको समझ में आ रहा है की क्या हुआ है तुम्हारे साथ..”

रामलाल ने आखिरी कुछ शब्द बहुत चबा चबा कर गुस्से के साथ बोले। और फिर अचानक ही वो दहाड़ उठे,

“हरिया, शोभन.. पकड़ कर घसीटते हुए लाओ उस हरामजादे को..”

सिमा हतप्रभ रह गयी! घसीटते हुए? क्यों? उसने डरी हुई आँखों से रामलाल को देखा।

कहीं इसी कारण से तो सतीश उसको घर में बंद कर के तो नहीं रखता था? कहीं उसको पड़ोसियों से खतरा तो नहीं था? रामलाल ने जैसे उसकी मन की बात पढ़ ली।

“बिटिया.. घबराओ मत! इस बात की मैं गारंटी देता हूँ, की तू उस सतीश की पत्नी नहीं है.. उस सूअर ने तेरी याददाश्त जाने का फायदा उठाया है, और तेरी... इज्ज़त से भी... खिलवाड़ किया है.. पाप का प्रायश्चित तो उसे करना ही पड़ेगा..”

‘पत्नी नहीं.. फायदा उठाया... इज्ज़त से खिलवाड़..’

“..उसकी तो अभी तक शादी ही नहीं हुई है.. उस नपुंसक को कौन अपनी लड़की देगा?” रामलाल अपनी झोंक में कहते जा रहा था।

‘शादी नहीं.. नपुंसक..?’

सिमा को लगा की वो दहाड़ें मार कर रोए.. लेकिन उसको तो जैसे काठ मार गया हो। न रोई, न चिल्लाई.. बस चुप चाप बुत बनी बैठी रही.. और खामोश आंसू बहाती रही।

हाँलाकि सिमा अब किसी बात का कोई जवाब नहीं दे रही थी, लेकिन फिर भी रामलाल और कंपनी ने सारे घटना क्रम का दो दूनी चार करने में बहुत देर नहीं लगाई। उनको मालूम था की सतीश केदारनाथ यात्रा करने गया था, और वहां वो भी त्रासदी की चपेट में आ गया था। वहीँ कहीं उसको यह लड़की मिली होगी – जाहिर सी बात है, इसका नाम सिमा नहीं

है। उसने अपने आपको उस लड़की का पति बताया होगा, जिससे अस्पताल वाले खुद ही उस लड़की को उसके हवाले कर दें, और वो बैठे बिठाए मौज करे!

तब तक हरिया और शोभन सतीश को सचमुच में घसीटते हुए लाते दिखे। मॉब-जस्टिस के बारे में तो सुना ही होगा आप लोगो ने? खास तौर पर तब, जब मामला किसी लड़की की इज्ज़त का हो। भीड़ का पारा ऐसी बातों से सारे बंधन तोड़ कर चढ़ता है, और जब तक अत्याचारी की कोई भी हड्डी सलामत रहती है, तब तक उसकी पिटाई होती रहती है। हरिया और शोभन ने लगता है सतीश को वहां लाने से पहले जम कर कूटा था।

सिमा ने देखा – सतीश का सर लहू-लुहान था, उसकी कमीज़ फट गयी थी, और कुहनियाँ और बाहें रक्तरंजित हो गई थी। घसीटे जाने से उसकी पैन्ट भी जगह जगह से घिस और फट गयी थी। सवेरे का आत्मविश्वास से भरपूर सतीश इस समय वैसे ही डरा हुआ लग रहा था, जैसे हलाल होने के ठीक पहले कोई बकरा। सिमा ने उसको देखा तो मन घृणा से भर उठा। सतीश ने उसकी तरफ देखा – पता नहीं उसको सिमा दिखी या नहीं, लेकिन उसकी व्याकुल और कातर निगाहें किसी भी हमदर्द भरी दृष्टि की प्यासी हो रही थीं। कोई तो हो, जो इस अत्याचार को रोक सके!

लेकिन लगता है की किसी को भी सतीश पर लेशमात्र की भी दया नहीं थी। वहां लाये जाते ही भीड़ उस पर पिल पड़ी – बरसों की पहचान जैसे कोई मायने नहीं रखती थी। जिस गति से सतीश पर लातें और घूंसे बरस रहे थे, उसी गति से उस पर भद्दी भद्दी गालियों की बौछार भी हो रही थी। कस्बे के चौराहे पर सतीश के साथ साथ उसके पूर्वज, और पूरे खानदान की इज्ज़त नीलाम हो रही थी।

“मादरठोक, इस मरियल सी छुन्नी में बहुत गर्मी आ गई है क्या?” कोई गरजा।

सिमा ने उस तरफ देखा। सतीश को वही एक तरफ पेड़ से टिका कर बाँध दिया गया था। वो इस समय पूरी तरह से नंगा था। वो कहते हैं न, आदमी शुरू की मार की पीड़ा से डरता है.. बाद मैं गिनती भी कहाँ याद रह जाती है? सतीश एकदम निरीह सा लग रहा था! वो कुछ बोल नहीं पा रहा था, लेकिन उसकी आँखें चिल्ला चिल्ला कर अपने लिए रहम की भीख मांग रही थीं।

“अरे सोच क्या रहे हो.. साले को बधिया कर दो! वैसे ही नपुंसक है.. गोटियों का क्या काम?” किसी ने सुझाया।

ऐसा लग रहा था की न्यायपालिका वहीँ कस्बे के चौराहे पर खुल गयी थी।

“सही कह रहे हो.. अबे शोभन.. ज़रा दरांती तो ला.. इस मादरठोक का क्रिया-करम यहीं कर देते हैं..” एक और न्यायाधीश बोला।

सिमा की आँखों की घृणा यह सब बातें सुन कर अचानक ही पहले तो डर, और फिर सतीश के लिए सहानुभूति में बदल गयी। ठीक है सतीश ने उसके साथ वो सब कुछ किया, जो उसको नहीं करना चाहिए था, लेकिन उसने सिमा की जान भी तो बचाई थी। एक क्षणिक अविवेक, और स्वार्थ की भावना के कारण जो कुछ हो गया, उसकी ऐसी सजा तो नहीं दी सकती। कम से कम सिमा तो नहीं दे सकती।

“नहीईईईईईईईईईईईईईई!” वो जोर से चीखी! “बस करो यह सब! जानवर हो क्या सभी?”

एकाएक जैसे अफीम के नशे में धुत्त भीड़ को किसी ने झिंझोड़ के जगा दिया हो। सारे न्यायाधीश लोग एकाएक सकते में आ गए।

“जिसको अपनी उम्र भर जाना, उसके साथ यह सब करोगे? कोई मानवता बची हुई है? इसको तुम नपुंसक कहते हो? तो तुम लोग क्या हो? मर्द हो? ऐसे दिखाते हैं मर्दानगी?”

सिमा चीखती जा रही थी.. अचानक ही उसकी आवाज़ आना बंद हो गई। जिस वीभत्स दृश्य से वो अभी दो-चार हुई थी, उसके डर से सिमा का गला भर गया। उसकी हिचकियाँ बंध गयी, और वो रोने लगी। सतीश अचेत होने से पहले बस इतना समझ पाया की उसकी जान बच गई थी।

३५

मैं शाम को अश्विनी से बात कर रहा था की जिस प्रोजेक्ट को करने निकला हूँ, वो अगर ठीक से हो गया, तो हम दोनों की ज़िन्दगी बदल जाएगी! उत्तर में अश्विनी ने मुझसे कहा की उसको पूरा यकीन है की मेरा प्रोजेक्ट ज़रूर पूरा होगा। मैंने हंस कर उसकी बात आई गयी कर दी। अगर उसको मालूम होता की मेरा प्रोजेक्ट क्या है, तब भी क्या वो ऐसे कहती? सच में हम दोनों की ही ज़िन्दगी बदल जाएगी! यह बात मैंने पहले सोची ही नहीं। अगर वाकई प्रिया जीवित है, और उसको मिल जाती है, तो अश्विनी और मेरे वैवाहिक जीवन में बहुत सी जटिलताएं आ जाएँगी! और तो और, हमारे विवाह पर ही एक सवालिया निशान लग जायेगा।

यही सब सोचते सोचते मैं सो गया।

अगले दिन एक घंटे के सफ़र के बाद हम गौचर के इलाके में पहुंचे। मेरी उत्तराँचल यात्रा के समय में मैं यहाँ से हो कर गुजरा था। पुरानी बातें वापस याद आ गईं। एक वो समय था, जब मैंने प्रिया को पहली बार देखा था.. और एक आज का समय है, मैं प्रिया को ढूँढने निकला हूँ।

गौचर का सरकारी अस्पताल ढूंढ निकालने में मुझे अधिक दिक्कत नहीं हुई। लेकिन सरकारी अस्पताल में से सूचना निकालना बहुत ही मुश्किल काम है। इसी चक्कर में कल इतना समय लग गया था। रिसेप्शन पर दो बेहद कामचोर से लगने वाले वार्ड बॉयज बैठे हुए थे। देख कर ही लग रहा था की उनका काम करने का मन बिलकुल भी नहीं है; और वो सिर्फ मुफ्त की रोटियाँ तोडना चाहते हैं।

“भाई साहब,” मैंने बड़ी अदब से कहा, “एक जानकारी चाहिए थी आपसे।“

“बोलिए..” एक ने बड़ी लापरवाही से कहा।

“यह तस्वीर देखिए..” मैंने प्रिया की तस्वीर निकाल कर रिसेप्शन की टेबल पर रख दी,

“इस लड़की को देखा है क्या आपने?”

उसने एक उचाट सी नज़र भर डाली और कहा, “नहीं! क्या साब! सवेरे सवेरे आ गए यह सब करने! देखते नहीं – हम कितना बिजी हैं..”

“अरे एक बार ठीक से देख तो लीजिए!” मैंने विनती करी।

इस बार उसने भारी मेहनत और अनिच्छा से तस्वीर पर नज़र डाली – जैसे मैंने उसको एक मन अनाज की बोरी ढोने को कह दिया हो।

“क्या साब! एकदम कंचा सामान है..” उसके शब्द कपटता से भरे हुए थे, “इसको यहाँ अस्पताल में क्यों ढूंढ रहे हैं?”

इसी बीच दूसरे वार्ड बॉय ने शिगूफा छोड़ा,

“ऐसे सामान तो देहरादून में भी नहीं मिलते हैं.. आहाहाहा!”

“सही कह रहे हो.. जी बी रोड जाना पड़ेगा इसके लिए तो..”

और दोनों ठठा कर हंसने लगे। उन दोनों निकम्मों की धूर्ततापूर्ण बातें सुन कर मेरे शरीर में आग लग गयी। मेरा बायाँ हाथ विद्युत् की गति से आगे बढ़ा और पहले वाले वार्ड बॉय की गर्दन पर जम गया; दाहिना हाथ उससे भी तेज गति से उठा और उसका उल्टा साइड दूसरे वाले वार्ड बॉय के गाल पर किसी कोड़े के सिरे के जैसे बरसा।

तड़ाक!

वह थप्पड़ इतना झन्नाटेदार था की अस्पताल की पूरी गैलरी में उसकी आवाज़ गूँज उठी। वैसे भी सवेरा होने के कारण अधिक लोग वहां नहीं थे।

“लिसन टू मी यू बास्टर्ड्स! तुम जैसे हरामियों को मैं दो मिनट में ठीक कर सकता हूँ। समझे!”

मैंने पहले वार्ड बॉय के टेंटुए को दबाया, दूसरा वाला अभी अपने गाल को बस सहला ही रहा था।

“तमीज से बात करोगे, तो ज़िन्दगी में बहुत आगे जाओगे.. नहीं तो जिंदगी भी आगे नहीं जा पाएगी..”

मैं दांत पीस पीस कर बोल रहा था। मेरी प्रिया की बेईज्ज़ती करी थी उसने। वो तो मैं सब्र कर गया, नहीं तो दोनों की आज खैर नहीं थी।

“ए मिस्टर.. ये क्या हो रहा है..”

मैंने आवाज़ की दिशा में देखा – एक अधेड़ उम्र की नर्स या मैट्रन तेजी से मेरी तरफ आ रही थी.. लगभग भागते हुए। मैंने पहले वार्ड बॉय को गर्दन से पकडे हुए ही पीछे की तरफ धक्का दिया, और उस नर्स ले लिए रेडी हो गया। अगर ज़रुरत पड़ी, तो इसकी भी बैंड बजेगी – मैंने सोचा।

“ये अस्पताल है.. अस्पताल.. तुम्हारे मारा पीटी का अड्डा नहीं.. चलो निकालो यहाँ से..” उसने दृढ़ शब्दों में कहा।

“मैट्रन.. मुझे मालूम है, ये अस्पताल है! और मेहरबानी कर के इन दोनों को भी यह बात सिखा दीजिए। ये दोनों महानिकम्मे ही नहीं, बल्कि एक नंबर के धूर्त भी हैं..”

लगता है मैट्रन को भी उन दोनों की हरकतों की जानकारी थी.. मैंने उसके चेहरे पर कोई आश्चर्य के भाव नहीं देखे। उल्टा उसने उन दोनों वार्ड-बॉयज को घूर कर खा जाने वाली नज़र से देखा। दोनों सकपका गए।

“तुम दोनों ने मेरा जीना हराम कर दिया है.. दफा हो जाओ.. एडमिनिस्ट्रेशन से कह कर मैं तुम लोगो को सस्पेंड करवा दूँगी नहीं तो..”

दोनों निकम्मे सर पर पांव रख कर भागे।

“अब बताइए.. इन दोनों की किसी भी बात के लिए आई ऍम सॉरी! आप यहाँ कैसे आये?”

“जी मैं यहाँ अपनी पत्नी की तलाश में आया हूँ...”

“पत्नी की तलाश? यहाँ?”

“जी.. एक बार गौर से यह फोटो देखिए..” मैंने प्रिया की तस्वीर मैट्रन को दिखाई,

“आपने इसको कभी देखा अपने अस्पताल में?”

मैट्रन ने तस्वीर देखी – उसकी आँखें आश्चर्य से फ़ैल गईं।

“ये ये.. फोटो.. आपको..”

“जी ये फोटो मेरी पत्नी की है.. उसका नाम प्रिया है! आपने देखा है इसको?”

मैट्रन की प्रतिक्रिया देख कर मुझे कुछ आस जागी – इसने देखा तो है प्रिया को। मतलब यही अस्पताल था डाक्यूमेंट्री का! मतलब मैं सही मार्ग पर था। मंजिल दूर नहीं थी अब!

“आपकी पत्नी? ये?”

“जी हाँ! आपने देखा है इसको?” मैंने अधीर होते हुए कहा।

“लेकिन लेकिन.. ये तो सिमा है.. सतीश की पत्नी!”

“सतीश? सिमा?”

‘हे प्रभु! रहम करना!’

“मैट्रन प्लीज! आप प्लीज मेरी बात पूरी तरह से सुन लीजिए.. प्लीज!” मैंने हाथ जोड़ लिए।

मैट्रन आश्चर्यचकित सी भी लग रही थी, और ठगी हुई सी भी! ऐसा क्यों? मैंने सोचा। मेरी बात पर उसने सर हिलाया और मुझे वहां लगी बेंच पर बैठने का इशारा किया। वो मेरे बगल ही आ कर बैठ गयी।

“मैट्रन, देखिए.. मेरा नाम अथर्व है..” कह कर मैंने उनको सारी बातें विस्तारपूर्वक सुना दीं। बस अश्विनी और मेरी शादी की बात छोड़ कर। मेरी बात सुन कर मैट्रन को जैसे काठ मार गया। वो बहुत देर तक कुछ नहीं बोली।

“आपने मेरी पूरी बात सुन ली है.. अब प्लीज आप बताइए.. ये सिमा कौन है?”

“जी ये लड़की, जिसकी तस्वीर आपके पास है, हमारे यहाँ भर्ती थी – जब ये यहाँ थी, तब से वो कोमा में थी। जिस डाक्यूमेंट्री की आप बात कर रहे हैं, शायद यहीं की ही हो.. मैं कह नहीं सकती.. लेकिन वो लड़की हूबहू इस तस्वीर से मिलती है। एक सतीश नाम का मरीज़ भी भर्ती हुआ था उसी लड़की के साथ.. वो खुद को उसका पति कहता था। और उसको सिमा!”

“तो फिर?”

“वो सिमा को ले गया..”

“ले गया? कहाँ? कब?”

“अभी कोई पांच-छः दिन पहले.. रुकिए, मैं आपको उसका डिटेल बताती हूँ..”

‘पांच छः दिन पहले! हे देव! ऐसा मज़ाक!’

कह कर वो एक रिकॉर्ड रजिस्टर लेने चली गयी। जब वापस आई, तो उसके पास एक नहीं, दो दो रजिस्टर थे।

“यह देखिए..” उसने एक पुराना रजिस्टर खोला, और उसमे सतीश के नाम की एंट्री दिखाई, फिर दूसरे में सिमा के नाम की एंट्री दिखाई – दोनों में ही एक ही दस्तखत थे। मतलब वो सही कह रही है। एंट्री रिकॉर्ड में पता भी एक ही था, और फ़ोन नंबर भी। सिमा के डिस्चार्ज की तारिख आज से एक सप्ताह पहले की थी।

“देखिए मिस्टर...”

“अथर्व.. आप मुझे सिर्फ अथर्व कहिए..”

“अथर्व.. हमसे बहुत बड़ी गलती हो गयी.. लेकिन हमारे पास क्रॉस-चेक करने का कोई तरीका नहीं था.. उस बदमाश ने कहानी ही ऐसी बढ़िया बनाई थी! काश आप हमारे पास पहले आ जाते..”

“मैट्रन! इसमें आपकी कोई गलती नहीं है.. मैं खुद ही प्रिया को भगवान के पास गया हुआ समझ रहा था.. मैं तो बस इतना चाहता हूँ की वो सही सलामत हो, और मेरे पास वापस आ जाय..”

“अथर्व.. आपके पास कोई सबूत है की ये लड़की आपकी पत्नी है?”

“जी बिलकुल है.. ये देखिए..” कह कर मैंने अपना और प्रिया दोनों का ही पासपोर्ट दिखा दिया। ‘स्पाउस’ के नाम के स्थान पर हमारे नाम लिखे हुए थे, और दोनों पासपोर्ट में तस्वीरें हमारी ही थीं। शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।

“थैंक यू मिस्टर अथर्व.. दूध का जला छाछ भी फूंक फूंक कर पीता है..” कह कर उन्होंने मेरा पता लिख लिया और मुझसे मेरा फ़ोन नंबर माँगा, जिससे की अगर कोई ज़रूरी बात याद आये तो मुझे बता सकें! उन्होंने अपना नंबर भी मुझे दिया।

अगर यह सतीश कहीं गया न हो, तो अभी कोई देर नहीं हुई है। लगता तो नहीं की वो कहीं जाएगा।

३६

सिमा जब सो कर उठी, तो उसके सर में भीषण पीड़ा थी। असंख्य विचार उठते गिरते – सब गड्डमड्ड हो रहा था।

“ओह अथर्व! मेरे अथर्व!” यह उठते ही उसके पहले शब्द थे।

“लेटी रह बेटी, लेटी रह.. तुम कल दोपहर अचेत हो गयी थी.. याद है?” रामलाल की पत्नी ने सिमा को पुचकारा।

“कल?” सिमा कुछ समझ नहीं पाई।

“अच्छा कोई बात नहीं.. ये हैं डॉक्टर सिन्हा.. इनको पहचानती हो?”

‘सिन्हा? नाम तो सुना हुआ सा है.. कहाँ सुना है?’

प्रत्यक्ष में सिमा ने ‘न’ में सर हिलाया।

डॉक्टर सिन्हा मुस्कुराए, “हेल्लो! अच्छा, तुमको अपना नाम याद है?”

सिमा ने हामी में सर हिलाया।

“हमको बताओगी?”

“जी क्यों नहीं! मेरा नाम प्रिया है..” उसने बहुत ही खानदानी अंदाज़ में उत्तर दिया।

सिन्हा मुस्कुराए, “वैरी गुड! और ये अथर्व कौन है?”

“मेरे पति.. हम बैंगलोर में रहते हैं.. मैं कहाँ हूँ?”

“आप गौचर में हैं..”

“गौचर में?” कहते हुए प्रिया सोच में पड़ गयी। “लेकिन, मुझे तो केदारनाथ में होना चाहिए था!”

डॉक्टर सिन्हा समझ गए की प्रिया / सिमा को अब सारी बातें याद आ गयी हैं। हमारा मष्तिष्क कुछ ऐसे चेकिंग मैकेनिज्म (प्रणाली) लगाता है, जिससे हमको दुर्घटनाओं की याद नहीं रहती। एक तरीके से यह प्रणाली हमारे जीवित रहने के प्रयास में एक अति आवश्यक कड़ी होती है।

“हाँ! हम आपको सारी बातें बाद में विस्तार से बताएँगे.. लेकिन पहले आप एक बात बताइए, आप किसी सतीश को जानती हैं?”

“सतीश? नहीं…! पता नहीं.. कुछ याद नहीं आता..”

“आप मुझे जानती हैं? मतलब आज से पहले आपने मुझे देखा है?”

“नहीं डॉक्टर, याद नहीं आता.. सॉरी! लेकिन आप मुझसे यह सब क्यों पूछ रहे हैं?”

“डॉक्टर का काम है मरीज़ को ठीक करना.. मुझे लगता है की आप अब ठीक हो गईं हैं..”

“ठीक हो गयी हूँ? लेकिन मुझे रोग ही क्या था?”

“आई प्रॉमिस! मैं आपको सब कुछ बताऊँगा.. लेकिन बाद में! अच्छा, आपको अपने पति का नंबर याद है?”

“जी हाँ! क्यों?”

“अगर आपकी इजाज़त हो, तो मैं उनसे बात कर सकता हूँ?”

“हाँ! क्यों नहीं!” प्रिया कुछ समझ नहीं पा रही थी की यह सब क्या हो रहा है!

“आप मुझे उनका नंबर बताएंगी?”

“जी बिलकुल.. उनका नंबर है.. नाइन एट, एट जीरो...” कह कर प्रिया ने उनको अथर्व का नंबर बता दिया।

सतीश का पता और फ़ोन नंबर ले कर, सिटी हॉस्पिटल से मैं जैसे ही बाहर निकला, मेरे फ़ोन की घंटी बजने लगी। अनजाना नंबर था – मैंने फोने करने वाले को मन ही मन कोसा, 'लोग कहीं भी पीछा नहीं छोड़ते...'' मुझे लगा की किसी क्लाइंट का फ़ोन होगा। मैंने फ़ोन उठाया, और बहुत ही अनमने ढंग से जवाब दिया, ''हल्लो!''

''मिस्टर शेखावत..?'' उधर से आवाज़ आई।

''स्पीकिंग! हू ऍम आई टाकिंग टू?''

''मिस्टर शेखावत, आई ऍम डॉक्टर सिन्हा! आई वांट टू टॉक टू यू अबाउट योर वाइफ..''

''माय वाइफ?'' पहले तो डॉक्टर, और फिर अपनी पत्नी का जिक्र सुन कर मेरे पैरों के तले ज़मीन खिसक गई। क्या हुआ अश्विनी को? वो ठीक तो है न! मेरे दिल की धडकनें तेज हो गईं। अभी सुबह ही तो बात हुई थी उससे – उस समय तो सब ठीक था.. अचानक.. क्या हो गया? वो कहते हैं न, जब किसी अनिश्चित समय घर से दूर रहने वालों को घर से कॉल आता है तो उनके दिमाग में सबसे पहला ख्याल अमंगल का ही होता है.. वही हाल मेरा था।

''व्हाट हैप्पंड टू हर, डॉक्टर?''

''व्ही फाउंड हर..''

''फाउंड हर? डॉक्टर प्लीज.. ठीक ठीक बताइए.. यह पहेलियाँ न बुझाइए प्लीज..'' ..

''आई ऍम सॉरी, मिस्टर शेखावत! मैं पहेलियाँ नहीं बुझा रहा हूँ.. आपकी पत्नी प्रिया मिल गई हैं..''

''क्या?'' प्रिया मिल गई है! ओह प्रभु! आपका करोड़ों करोड़ों धन्यवाद! ''कहाँ है वो? कैसी है?''

''जी इस समय गौचर के बगल एक गाँव से बोल रहा हूँ.. सुगी!''

“सुगी से?” वहां तो सतीश रहता है! मेरे दिमाग में ख्याल कौंधा! मतलब सचमुच प्रिया ही है..!

“जी हाँ.. आप यहाँ कब तक आ सकते हैं?”

“जी एक बार प्रिया से...”

“हाँ हाँ! क्यों नहीं? आप बात कर लीजिए उनसे!” कह कर डॉक्टर सिन्हा ने फ़ोन प्रिया को पकड़ा दिया।

“जा नू.. मेरे.. अथर्व!”

“ओह भगवान्!” यह आवाज़ सुने एक लम्बा लम्बा अरसा हो गया.. लेकिन अभी फिर से उसकी आवाज़ सुन कर जैसे दिल पर ठंडा पानी पड़ गया हो। भावातिरेक में आ कर मैं सिसकने लगा। एक मुद्दत के बाद दिल की सारी तमन्नाएँ पूरी हो गईं! उसकी आवाज़ सुन कर ऐसा लगा की जैसे ये बरस हुए ही नहीं!

“आप रो रहे हैं?” प्रिया ने पूछा। उसके स्वर में वही जानी पहचानी चिंता!

“नहीं जानू!” मैंने आंसू पोंछते हुए कहा, “क्यों रोऊँगा भला! आज तो मेरे लिए सबसे ख़ुशी का दिन है..”

“आप कहाँ हैं?” मुझे उसकी आवाज़ से लगा की वो मुस्कुरा रही है।

“तुम्हारे बहुत पास!”

“तो जल्दी से आ जाइए...” प्रिया को लग रहा होगा की मैं बैंगलोर में ही हूँ।

“आता हूँ जानू! बहुत जल्दी! बस वहीँ रहना!”

“आई लव यू!”

“सबसे ज्यादा जानू.. सबसे ज्यादा!”

“जी मिस्टर शेखावत.. आप कब तक आ सकते हैं?” ये डॉक्टर सिन्हा थे।

“आप वहां पर कुछ देर और हैं डॉक्टर साहब?”

“जी हाँ.. क्यों?”

“मैं आता हूँ... आधे घंटे में!”

“क्या?”

“जी.. आप प्रिया को मेरे आने की बात न बताइयेगा.. मैं आकर आपसे मिल कर सारी बात बताता हूँ..”

“जी ओके ओके! मुझे भी आपको कुछ बाते बतानी हैं.. आप जल्दी से आ जाइए” इतना कह हर उन्होंने फ़ोन कॉल विच्छेद कर दिया।

मैं भागता हुआ कार के पास पहुंचा..

“ड्राईवर, जल्दी से चलो! जितना जल्दी हो सके!”

“किधर साहब?”

“सुगी.. मैं रास्ता बताता हूँ..”

“डॉक्टर बाबू, क्या बात है? क्या हुआ है इस लड़की को? और अचानक ही पिछले कुछ दिन की बात याद क्यों नही है?” सिन्हा को बाहर कोने में ले जा कर रामलाल ने चिंतातुर होते हुए पूछा।

“देखिए ठीक ठीक तो मैं भी कुछ नहीं बता सकता। आदमी का मष्तिष्क इतनी अबूझ पहेली है, की उसको सुलझाने के लिए कम से कम मेरे पास काबिलियत नहीं है... जहाँ तक इस लड़की का सवाल है, तो मुझे इतना तो समझ आ रहा था की एक लम्बी बेहोशी की वजह से इसकी याददाश्त गायब हुई थी.. कल की घटनाओं के कारण हो सकता है की इसके दिमाग पर इतना जोर पड़ा हो की उसको अपनी पुरानी सब बातें याद आ गईं हों!

“लेकिन, ये किसी को पहचान नहीं रही है न..”

"हाँ! यह बात तो वाकई बहुत निराली है.. ऐसा लग रहा है जैसे पिछले एक सप्ताह की बातें इसके दिमाग की स्लेट से किसी ने पोंछ दी है.. सच कहूं, मेरे पास आपके सवाल का कोई जवाब नहीं है। एक तरीके से अच्छा है.. ये अब अपनी पिछली जिंदगी मे वापस पहुँच गई है। ज़रा सोचिए – अगर इसको सारी बातें याद रहती, तो सतीश वाला केस बिगड़ सकता था.. और आप लोग भी लम्बा नप जाते! इसलिए अच्छा ही है, की यह बात यहीं दब जाय, और ये लड़की अपने घर वापस चली जाय..”

“और इसके पति को क्या कहेंगे?”

“मैं उसको सब सच सच बता दूंगा.. वो आपका तो कोई नुकसान नहीं करेगा.. आपने तो इस लड़की की सिर्फ मदद ही करी है... हाँ, लेकिन हो सकता है की सतीश पर केस ठोंक दे।“

“अच्छा ही है.. साला मनहूस नपुंसक जाएगा यहाँ से..”

“रामलाल जी, एक बात कहूँ.. आप बुरा मत मानियेगा.. वो नपुंसक है, तो उसमे उसका कोई अपराध नहीं। आप ठन्डे दिमाग से सोचिएगा कभी... उसने कभी भी किसी का भी नुकसान किया है? इस लड़की को भी उसी ने तो बचाया.. मेरी मानिए, जो हुआ उसको भूल जाइए, और उसको भी इज्ज़त से जीने का मौका दीजिए..”

रामलाल को प्रत्यक्षतः डॉक्टर सिन्हा की बात अच्छी तो नहीं लगी, लेकिन उसको मालूम था की वो सोलह आने सही बात कह रहे हैं! इसलिए वो चुप ही रहा।

सतीश अपने शरीर पर पट्टियाँ बंधवाए, अपने घर में चारपाई पर लेटा हुआ था। कल जिस प्रकार से सारे कस्बे वालों ने जिस बेदर्दी से उसकी ठुकाई करी थी, उसको पूरा यकीन हो गया था की उसको वहां कोई भी पसंद नहीं करता। एक सिमा ही थी – नहीं सिमा नहीं.. प्रिया! हाँ, यही नाम है उसका। एक वही थी, जिसने उसको अपने पास आने का मौका दिया, और उसको वो सुख दिया जो उसे सिमा से पहले कभी नहीं मिल सका, और अब लगता है की जीवन पर्यंत नहीं मिलेगा।

उसने गलत तो किया था – लेकिन न जाने क्यों वो सब करते समय उसको गलत नहीं लग रहा था। कल उसकी जान सिमा के कारण ही बची.. नहीं तो न जाने क्या हो जाता! उसके मष्तिष्क के पटल पर अनायास ही पिछले सप्ताह के सारे दृश्य उजागर होने लगे। कैसी प्यारी सी है सिमा! यह कहना अतिशयोक्ति नहीं थी की इतने कम समय में ही वो उसकी ज़रूरत बन चुकी थी। या यह भी हो सकता है की यह सब सतीश का विमोह हो! उसको भला किसी स्त्री का संग कब मिला!

किसी ने उसको बताया की सिमा को अब उसके बारे में कुछ याद नहीं है.. इस बात की भी पीड़ा रह रह कर उसके दिल में उठ रही थी। उसकी आँखो मे आँसू आ गये – कुछ शरीर के दर्द के कारण, और कुछ भाग्य के सम्मुख उसकी विवशता के कारण! संभव है, आंसू की कुछ बूँदें पश्चाताप की भी हों!

‘हे बद्री विशाल, आपकी लीला भी अपरम्पार है! अब मैं इस बात पर हंसूं.. की रोऊँ? यह कैसी सज़ा है? सिमा के दिमाग से मेरी सारी स्मृति ही भुला दी? .. वैसे एक तरह से ठीक ही किया। उसकी स्मृतियों की ज़रुरत तो मुझे है.. उसको नहीं! उसका जीवन तो वैसे ही खुशियों से भरा हुआ था! सही किया प्रभु! सिमा की स्मृति मैं उम्र भर सम्हाल कर रखूंगा!’

सुगी में गाड़ी नहीं जाती – वहां पैदल जाना होता है। खैर, मैं ड्राईवर को पीछे छोड़ कर लगभग भागता हुआ सा सुगी तक पहुंचा। लोग बाग़ जैसे मुझे देखते ही पहचान गए की मैं कौन हूँ; वो सभी लोग मुझे इशारे से किसी रामलाल के घर जाने को कह रहे थे, और रास्ता भी बता रहे थे। खैर, मैं कोई आधे घंटे के अन्दर ही वहां पहुँच गया।

"मिस्टर शेखावत?"

"डॉक्टर सिन्हा?"

हम दोनों एक दूसरे को देखते ही पहचान गए। सिन्हा इस बात पर हैरान थे की मैं सचमुच आधे घंटे में कैसे वहां पहुँच गया। मैंने उनको सारी बातें विस्तार से बता दीं। वो विस्फारित से नेत्रों से मुझे देखने लगे..

"सचमुच, कुदरत का करिश्मा है तुम दोनों की मोहब्बत!" उन्होंने मुझे बस इतना कहा और मुझे बहुत बहुत बधाइयाँ दीं।

फिर उन्होंने मुझे प्रिया के साथ घटी सारी बातें विस्तार से बताई – उन्होंने मुझे बताया की कैसे लगभग मरणासन्न सी हालत में उसको वहां लाया गया था। उन्होंने बताया की उस अवस्था में प्रिया का गर्भ भी गिर गया। उन्हें वैसे उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं थी, लेकिन कोई एक महीने के बाद अचानक ही प्रिया की हालत सुधरने लगी। लेकिन वो इस पूरे घटनाक्रम के दौरान अपने होश में नहीं थी – कोमा में थी। डॉक्टर्स विदआउट बॉर्डर्स के कुछ सहयोगियों ने कुछ नवीन तरीके से प्रिया का इलाज जारी रखा, इसलिए कोमा में रहने के बाद भी, उसकी मांसपेशियों का क्षय नहीं हुआ। बीच बीच में उसकी आँखें खुलती, लेकिन शायद वो किसी तरीके का रिफ्लेक्स रिएक्शन था। वो देखा और सुना हुआ कुछ समझ नहीं पाती थी।

लेकिन कोई आठ दस दिनों पहले.... फिर उन्होंने मुझे सतीश, और कस्बे में जो घटना हुई, उसके बारे में बताया। सच कहूं, मुझे यह जान कर बिलकुल भी बुरा नहीं लगा, की सतीश ने प्रिया के साथ सहवास किया। उल्टा मुझे उस बेचारे पर दया आई। मेरी नज़र में उसको अपने किये की बहुत ही बड़ी सजा मिली थी.. उसका ऐसा अपराध था भी नहीं।

प्रिया से मिलने से पहले मैंने सतीश के घर का रुख किया – उसकी बुरी हालत देख कर मेरा दिल वैसे ही बैठ गया। हमारा परिचय हुआ, तो वो हाथ जोड़ कर बिस्तर से उठने की कोशिश करने लगा। मैंने उसको सहारा दे कर लिटाया, और लेटे रहने का आग्रह किया।

“सतीश,” मैंने कहा, “तुमने मेरी प्रिया के लिए जो कुछ किया, उसका एहसान मैं अपनी पूरी जिंदगी नहीं भूलूंगा! यह तुम्हारा एक क़र्ज़ है मुझ पर.. जिसको मैं चुका नहीं सकता। मैं तो यही सोच कर रह गया था की वो अब इस दुनिया में नहीं है.... लेकिन वो आज मुझे मिली है, तो बस सिर्फ तुम्हारे कारण!”

“लेकिन...” सतीश कुछ कहने को हुआ..

“मुझे मालूम है, की तुमने प्रिया के साथ सहवास किया है। लेकिन वो तुम्हारी नादानी थी। वैसे भी प्रिया को उस बारे में कुछ याद नहीं.. और क्योंकि कल उसी ने तुम्हारी जान बचाई थी, इसलिए मैं मान कर चल रहा हूँ की उसने तुमको माफ़ कर दिया..”

“मुझे माफ़ कर दीजिए..” उसने फिर से हाथ जोड़े।

“सतीश, माफ़ी के लिए कुछ भी नहीं है! अगर तुम माफ़ी चाहते ही हो, तो मेरी एक बात सुनो, और हो सके तो अमल करो।“

“बताइए सर!”

“मैं चाहता हूँ की तुम आगे की पढाई करो – इंजिनियर बनो – ढंग के इंजिनियर! तुम्हारी पढाई लिखाई का खर्चा मैं दूंगा। बोलो – मंज़ूर है?”

सतीश की आँखों में आंसू आ गए।

“जी! मंज़ूर है..” उसने भर्राए हुए स्वर में कहा।

दुनियादारी से फुर्सत पाकर अब मैं अपनी प्रिया से मिलने चला।

इतने दिनों के बाद.. ओह भगवान् मैं ख़ुशी से पागल न हो जाऊं! पैरों में मेरे पंख जैसे निकल आये..

प्रिया कुछ व्यग्र सी रामलाल के घर के दरवाज़े के ठीक सामने एक चारपाई पर बैठी हुई थी। मन में न जाने कितने सारे विचार आ और जा रहे थे। भले ही किसी ने उसको पूरी बात विस्तार से न बताई हो, लेकिन किश्तों में और छोटे छोटे टुकड़ों में उसको जो सब कुछ पता चला, वो उसको हिला देने वाला था। सबसे पहले तो उसके आँखों के सामने वो दिल दहला देने वाला दृश्य पुनः सजीव हो उठा।

मष्तिष्क के खेल निराले होते हैं – केदारनाथ आपदा के समय जब अभी जीवन अभी मृत्यु जैसी दशा बन आई, तब किस तरह से वो, अश्विनी और उनके पिता हरिहर सिंह जी अपनी जान बचा कर वहां से निकले। माँ को तो उसने आँखों के सामने उस अथाह जलराशि में बह जाते हुए देखा था – बाढ़ में होटल का अहाता बुरी तरह से टूट गया था, और होटल ढलान पर होने के कारण, वहां से पानी भी बड़ी तीव्रता से बह रहा था। पकड़ने के लिए न कोई रेलिंग थी न कोई अन्य सहारा। बहुत सम्हाल कर निकलने के बाद भी माँ का पैर फिसल गया और वो सबकी आँखों के सामने बह गईं। एक पल को आँखों के सामने, और अगले ही पल गायब! कितनी क्षणिक हो सकती है ज़िन्दगी! कितनी व्यर्थ! पिताजी उनके पीछे भागे – बिना अपनी जान की परवाह किये! लेकिन पानी में इतना सारा मिट्टी और पत्थर मिला हुआ था, की उसकी रंगत ही बदल गई थी। माँ फिर कभी नहीं दिखाई दीं। वो कुछ दूर तक गए तो, लेकिन जब वापस आये तो लंगड़ा कर चल रहे थे – टूटे हुए किसी राह पर गलत पैर पड़ गया और उनके में चोट लग गयी।

जान बचाते लोगों ने उनको पहाड़ पर ऊंचाई की तरफ जाने की सलाह दी। काफी सारे लोग वही काम कर रहे थे – मतलब लोग पहाड़ की ढलान के ऊपर की तरफ जा रहे थे। उन्ही की देखा देखी वो तीनों भी ऊपर की चढ़ाई करने लगे। पर्वतों की संतानें होने के बावजूद उस चढ़ाई को तय करने में बहुत समय लग गया। न तो पिताजी ही ठीक से चल पा रहे थे, और न ही खुद प्रिया। वैसे भी गर्भावस्था में ऐसे कठिन काम करने से मुश्किलें

और बढ़ जाती हैं। चलते चलते अचानक ही उसकी हिम्मत जवाब दे गई, और वो वहीँ एक जगह भहरा कर गिर गई। जब होश आया तो उसने देखा की पिताजी उसको पानी पिलाने की कोशिश कर रहे हैं।

रात गहरा गई थी, और आस पास कोई भी नहीं दिख रहा था। बस इसी बात की आस थी की कम से कम हम तीनो तो बच गए.. लेकिन पिताजी दिन भर उल्टियाँ करते करते मृत्यु से हार गए। एक साथ कितनी यातनाएँ सहती वो? दिन भर के अंतराल में दोनों लड़कियों के सर से माँ बाप का साया उठ गया। अब तक वो भावनात्मक, शारीरिक और मानसिक – तीनों स्तर पर अपने हथियार डाल चुकी थी। न जाने कहीं से कुछ सड़ा हुआ मांस मिल गया – जिसने कुछ देर और उन दोनों की जान बचाई। जंगली जानवरों की आवाज़ के बीच न चाहते हुए भी उसको नींद सी आ गई – पलकें बंद करते करते उसने नज़र भर अश्विनी को देखा। प्रिया समझ गयी की अब अंत समय आ गया – उसको दु:ख बस इस बात का था, की वो अपनी छुटकी – अपनी छोटी बहन – के लिए कुछ नहीं कर पा रही थी। संभवतः प्रभु के घर उसको अपने माँ बाप के सामने लज्जित होना और लिखा था।

जब खुद का होश हुआ, तो मालूम हुआ की वो यहाँ इस अनजान सी जगह पर है, और डॉक्टर उसकी जांच पड़ताल कर रहे थे। उसको अपने शरीर में हुआ परिवर्तन समझ में आ गया था – प्रिया समझ गयी की अथर्व और उसके प्रेम की निशानी अब नहीं बची। उसका जी हुआ की बुक्का फाड़ कर रोए, लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं किया। डॉक्टर उससे सवाल जवाब कर रहे थे.. उसको समझ नहीं आया की उससे ऐसी जवाब-तलबी क्यों करी जा रही है.. लेकिन फिर भी वो पूरे संयम से उनकी बातों का ठीक ठीक उत्तर देती रही। फिर मालूम हुआ की अथर्व यहीं आने हैं.. यह सुन कर उसकी जान में जान आई – कम से कम पूरी बात तो समझ आएगी!

लेकिन अथर्व के आने से पहले उसको लोगों की दबी आवाज़ में कही गई बातें सुनाई दे गईं। उसने डॉक्टर सिन्हा पर दबाव डाला की वो उसे सब कुछ सच सच बताएं – उसको सब सच जानने का पूरा हक़ था। सिन्हा और रामलाल ने उसको सारी बातें, हिचकते हुए ही सही, बता दीं। उसको यकीन ही नहीं हुआ की उसके दिमाग में जो बात अभी तक जीवित थी, वो कोई दो साल पुरानी यादें थीं, और यह की पिछले हफ्ता दस दिन तक उसके साथ जो कुछ भी हुआ, वो उसको याद ही नहीं था! उसने यह भी जाना की उसने ऐसे आदमी की जान बचाई थी, जिसने उसकी याददाश्त का फायदा उठा कर उसके साथ शारीरिक ज्यादतियां करी थीं। अब क्या मुँह दिखाएगी वो अथर्व को?

ऐसी ही न जाने कितनी बातें सोचती हुई, उम्मीद और नाउम्मीद के झूले में झूलते हुए, अश्विनी का अंतर्मन बेहद आंदोलित होता जा रहा था। वो बहुत बेसब्री से अथर्व की प्रतीक्षा कर रही थी।

‘अथर्व!’

अथर्व पर निगाह पड़ते ही वो चारपाई पर से उछल कर खड़ी हो गई। अथर्व को देखते ही जैसे उसके मन के सारे संताप ख़तम हो गए। उसके चेहरे पर तुरंत ही राहत के भाव आ गए। प्रिया के मुँह से कोई बोल तुरंत तो नहीं फूटे, लेकिन अथर्व को जैसे उसके मन की बातें सब समझ आ गईं। प्रिया ने सुना तो कुछ नहीं, लेकिन उसको लगा की अथर्व ने उसको ‘कुछ मत कहो’ जैसा कुछ कहा था।

अथर्व ने प्रिया को देखा – अपलक, मुँह बाए हुए! दो वर्ष क्या बीते, जैसे दो जन्म ही बीत गए!

‘हे भगवान्! कितनी बदल गयी है!’ उसका गुलाब जैसे खिला खिला चेहरा, एकदम कुम्हला गया था; सदा मुस्कुराती हुई आँखें न जाने किस दुःख के बोझ तले बुझ गईं थीं।

न जाने क्यों अथर्व का मन आत्मग्लानि से भर गया। अथर्व लगभग दौड़ते हुए उसकी तरफ बढ़ रहे थे; प्रिया भी लपक कर उनकी बाहों में आ गई। आलिंगनबद्ध हुए ही अथर्व उसका शरीर यूँ टटोलने लगे जैसे उसकी मुकम्मल सलामती की तसदीक कर रहे हों!

“ओह जानू!” अथर्व ने कहा।

उनकी आवाज़ में गहरी तसल्ली साफ़ सुनाई दे रही थी – उम्मीद है की दिल का दुःख प्रिया ने न सुना हो। आलिंगन बिना छोड़े हुए ही, अथर्व ने प्रिया के कोमल कपोलों को अपनी हथेलियों में ले कर प्यार से दबाया,

“ओह जानू!”

अथर्व का गला भर आया था। उनकी आँखों से आंसू बह रहे थे।

“ओह जानू..” कहते कहते वो फफक फफक कर रो पड़े। गले की आवाज़ भावावेश में आ कर अवरुद्ध हो चली थी।

ऐसे भाव विह्वल मिलन का असर प्रिया पर खुद भी वैसे हुआ, जैसे अथर्व पर! अथर्व को अपने आलिंगन में बांधे प्रिया की आँखें बंद हो गईं। वो निःशब्द रोने लगी। उन आंसुओं के माध्यम से वो पिछले दो वर्षों की भयानक यादें भुला देना चाहती थी – अपनी भी, और संभवतः अथर्व की भी। अथर्व को इस तरह से रोते हुए उसने कभी नहीं देखा था – वो कभी कभी भावुक हो जाते थे, लेकिन, रोना!! प्रिया को तो याद भी नहीं है की अथर्व कभी रोए भी हैं! प्रिया को अपने आलिंगन में बांधे अथर्व रोते जा रहे थे। एक छोटे बच्चे के मानिंद! गाँव वाले पहले तो तमाशा देखने के लिए उन दोनों को घेर कर खड़े रहे, लेकिन रामलाल ने जब आँखें तरेरीं, तो सब चुपचाप खिसक लिए।

पता नहीं कब तक दोनों एक दूसरे को थामे, रोते रहे और एक दूसरे के आंसूं पोंछते रहे। लेकिन आंसुओं का क्या करें? थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे। अथर्व विगत दो वर्षों की निराशा, दुःख, हताशा, और सब कुछ खो जाने के संताप से रो रहा था, और प्रिया उन्ही सब बातों को सोच सोच कर! वो अथर्व के लिए रो रही थी, अश्विनी के लिए रो रही थी, अपने माता पिता के लिए रो रही थी, और अपनी अजन्मी संतान के लिए रो रही थी। कैसा था वो समय.. और कैसे होगा आने वाला कल?

रोते रोते एक समय ऐसा भी आता है जब रोने के लिए आँसूं भी नहीं बचते है... उस गहरे अवसाद में अथर्व ने ही सबसे पहले खुद को सम्हाला,

“बस जानू बस.. अब चलते हैं...”

प्रिया की हिचकियाँ बंध गईं थीं। उसके ठीक से बोल भी नहीं निकल रहे थे।

“अ.. अ..श..श..अश..विनी क..कैसी ..?” हिचकियों के बीच में उसने पूछा।

इस प्रश्न पर अथर्व को जैसे करंट लग गया। अचानक ही उसके मन में अपराध बोध घर कर गया।

‘ओह भगवान्! क्या सोचेगी प्रिया, जब उसको मेरी करतूत के बारे में पता चलेगा! इतना भी सब्र नहीं हुआ? और ऐसा भी क्या की उसी की छोटी बहन पर हाथ साफ़ कर दिया! कितनी ज़िल्लत! सुन कर क्या सोचेगी प्रिया? अपने से चौदह साल छोटी लड़की के साथ! छिः छिः!’

“अच्छी है..”

मेरे गले में अपराध बोध वाली फाँस बन गयी, “बड़ी हो गई है काफी..” जैसे तैसे वाक्य ख़तम कर के मैंने बस यही सोचा की प्रिया अब अश्विनी के बारे में और पूछ-ताछ न करे।

“म म्मेरी अह अह.. उस उस से अह.. ब बात क क करा..अहइए..” प्रिया ने बंधे गले से जैसे तैसे बोला।

“जानू.. अभी नहीं! अभी चलते हैं.. उसको सरप्राइज देंगे.. ठीक है?”

तकदीर ने साथ दिया, प्रिया मेरी बात मान गयी, और उसने आगे कुछ नहीं पूछा। मैंने जल्दी जल्दी कई सारी औपचारिकताएँ पूरी करीं, सारे ज़रूरी कागज़ात इकट्ठे किए, स्थानीय पुलिस थाने में जा कर प्रिया से सम्बंधित जानकारियों का लेखा जोखा पूरा किया और वहां से भी ज़रूरी कागज़ात इकट्ठे किए और फिर वापसी का रुख किया। निकलते निकलते ही काफी शाम हो गई थी, और गाँव वालों ने रुकने की सलाह दी, लेकिन मेरा मन नहीं माना। मेरा मन हो रहा था की उस जगह से जल्दी निजात पाई जाय – और यह की वहां का नज़ारा दोबारा न हो! मैंने अपने ड्राईवर से पूछ की क्या वो गाडी चला सकता है, तो उसने हामी भरी। हम लोग तुरंत ही वहां से निकल गए।

वैसे तो रात में पहाड़ी रास्तों में वाहन नहीं चलाना चाहिए, लेकिन अभी रात नहीं हुई थी। हमारा इरादा यही था की कोई दो तीन घंटे के ड्राइव के बाद कहीं किसी होटल में रुक जायेंगे, और फिर अगली सुबह वापस दिल्ली के लिए रवाना हो जाएँगे। ड्राईवर साथ होने से काफी राहत रही – प्रिया न जाने क्या क्या सोच सोच कर या तो रोती, या फिर गुमसुम सी रहती। उस मनहूस घटना ने मेरी प्रिया को सचमुच ही मुझसे छीन लिया था – मैं मन ही मन सोच रहा था की अपनी प्रिया को वापस पाने के लिए क्या करूँ! ऊपर से प्रिया के पीछे पीछे मैंने जो जो काण्ड किए थे, उनके प्रिया के सामने उजागर हो जाने की स्थिति में उनसे

दो चार होने का कोई प्लान सोच रहा था। लेकिन इतना सोचने पर भी कुछ समझ नहीं आ रहा था।

खैर, मन को बस यही कह कर धाडस बंधाया की अंत में सत्य तो उजागर हो कर रहेगा। इसलिए छुपाना नहीं है। वैसे भी अश्विनी को अभी तक कुछ भी मालूम नहीं हुआ था। वो तो सब कुछ बोल ही देगी। न जाने क्यों सब कुछ विधि के हिसाब से होने के बावजूद मन में एक अपराधबोध सा घर कर गया था। न जाने क्या होगा!

रास्ते में अश्विनी के कई सारे कॉल आए – जैसे हर रोज़ उससे रोमांटिक बातें होती थीं, आज करना संभव नहीं था। जैसे तैसे उसको भरोसा और दिलासा दिला कर और बाद में बात करने का वायदा कर के शांत किया। लेकिन फिर भी उसके एस एम एस आते रहे। वो तो प्रिया गुमसुम सी बैठी थी, इसलिए यह सब सिलसिला चल गया। साला मैं तो बिना वजह ही चक्की की दोनों पाटिया के बीच बस फंस कर ही रह गया! कैसी किस्मत थी – दो दो बीवियाँ, और वो भी दोनों सगी बहने! ऊपर से दोनों को एक दूसरे के बारे में पता भी नहीं! वैसे यहाँ तक भी गनीमत थी... पिसना तो अभी बाकी है!

गंगा की निर्मल धारा जैसी बह रही मेरी जिंदगी में अचानक रोड़ा आ गया था. मानो गंगा की उलटी धारा बह रही हो!

तो ऐसे गुमसुम हालात में मेरे से तो गाडी नहीं चलाई जा पाती। इसलिए ड्राईवर साथ होने से बहुत सहूलियत हो गई। हमारे पास वैसे भी कोई सामान नहीं था। मेरे पास बस दो जोड़ी कपडे थे, और प्रिया के पास कुछ भी नहीं – जो उसने पहना हुआ था, बस वही था। मैंने दिमाग में नोट कर लिया की उसके लिए दिल्ली में कपड़े खरीदने हैं। बहुत देर की चुप्पी के बाद मैंने ड्राईवर को गाड़ी में लगे संगीत तंत्र को चलाने को कहा – कम से कम हम दोनों लोग अपनी अपनी चिंता के दायरे से बाहर निकालेंगे! मुझे तो लगा की बस कोई एक घंटा चले थे, लेकिन जब मैंने बाहर ध्यान दिया, तो घुप अँधेरा हो गया था, और अब मेरे हिसाब से गाड़ी चलाना बहुत सुरक्षित नहीं था।

“भाई, आगे कोई होटल या धर्मशाला आये, तो रोक लेना!”, मैंने ड्राईवर से कहा, “अब अँधेरा बढ़ गया है, और ऐसे में गाड़ी चलाना ठीक नहीं। आज रात वहीँ रुक जायेंगे, और कल आगे का सफ़र करेंगे। क्यों, ठीक है न?“

“बिलकुल ठीक है साहब! मैं भी यही कहने वाला था.. जैसे ही कोई सही होटल दिखेगा मैं वैसे ही रोक लूँगा। रात में ड्राइव करते रहने का कोई इरादा नहीं है मेरा।“

ऐसे ही बात करते हुए मुझे एक बंगलेनुमा होटल दिखा। मुझे अचानक ही पुरानी बातें याद हो आईं – शादी के बाद जब मैं प्रिया को विदा कर के ला रहा था तो हम इसी होटल में रुके थे। मैंने ड्राईवर को उसी होटल के प्रांगण में पार्क करने को कहा, और उसको कहा की आज हम यहीं पर रुकेंगे।

जैसा की मैंने पहले भी लिखा है, यह एक विक्टोरियन शैली में बनाया गया बंगला था, जिसमें चार बड़े बड़े हाल नुमा कमरे थे। हर कमरे ही छतें ऊंची-ऊंची थीं, जिनको लकड़ी की मोटी मोटी शहतीरें सम्हाले हुई थी। बिस्तर पहले के ही जैसे साफ़ सुथरे थे। किस्मत की बात थी, एक कमरा खाली मिल गया हम लोगों को। होटल के सभी कमरों में मेहमान थे, लेकिन फिर भी वहां का माहौल बहुत शांत था। ड्राईवर को खाने के लिए पैसे दे कर प्रिया और मैं अपने कमरे में आ गए। पहले की ही भांति मैंने वहां के परिचारक को कुछ रुपये दिए और गरमा-गरम खाना बाहर से लाने को कह ही रहा था की प्रिया ने माना कर दिया – उसने कहा की हम दोनों बाहर ही चले जायेंगे।

खैर, मेरे लिए तो यह भी ठीक था। सामान तो कुछ खास था नहीं, इसलिए हम दोनों बाहर चले आये। दुकाने ज्यादातर बंद हो रही थीं, लेकिन एक दो दुकाने, जो लगभग सभी प्रकार की वस्तुएं बेच रही थीं, अभी भी खुली थीं। वहां जा कर प्रिया के लिए हमने एक और जोड़ी सलवार कुर्ता खरीदा, और फिर खाने के लिए चल दिए। छोटी जगह पर कोई खासमखास इंतजाम तो रहता नहीं, लेकिन फिर भी उस छोटे से ढाबे में दाल तड़का, आलू की सब्जी और रोटियाँ खा कर अपार तृप्ति का अनुभव हुआ। खाने के बाद हम लोग तुरंत ही होटल में नहीं गए – प्रिया के कहने पर वहां की मुख्य सड़क से अलग हट कर नीचे की तरफ जाने वाली सड़क की और चल दिए। उसने ही मुझे बताया की अलकनंदा नदी यहाँ से बहती है।

मैंने कोई प्रतिरोध नहीं किया – इतनी देर के बाद प्रिया ने वापस कुछ कहना बोलना शुरू किया था – मेरे लिए वही बहुत था। बात उसी ने शुरू करी,

“आप अपना ख़याल नहीं रखते न?”

अब मैं उसको क्या बताता! उसके जाने के बाद मुझ पर क्या क्या बीती है, यह तो मैं ही जानता हूँ। और, वह सब बातें मैं प्रिया को कैसे कह दूं?

“कैसे रखता? आपकी आदत जो है..” यह वाक्य बोलते बोलते गले में फाँस सी हो गयी।

“मेरे कारण..” वो कुछ और कहती की मैंने उसको बीच में टोक दिया,

“जानू.. किसी के कारण कुछ भी नहीं हुआ.. जो हुआ, वो हुआ.. इसमें न किसी की गलती है, और न ही किसी का जोर! वो कहते हैं न.. आगे की सुध ले.. तो हम लोग भी आगे की ही सुध लेते हैं.. भगवान को जो करना था, वो कर दिया.. ज़रूर कुछ सिखाना चाहते थे, जिसके लिए यह सब हुआ!”

प्रिया कुछ देर चुप रही।

हम लोग टहलते हुए जल्दी ही नदी के किनारे पहुँच गए। अलकनंदा अपनी मंथर गति से बहती जा रही थी। नदी की कर्णप्रिय ध्वनि से आत्मा तक को आराम मिल रहा था। हम लोग चुपचाप उस आवाज़ का देर तक आनंद लेते रहे... चुप्पी प्रिया ने ही तोड़ी,

“पिछली बार जब हम यहाँ आये थे, तो मेरा मन हुआ था कि आपको यहाँ लाया जाए...”

“हम्म... तो फिर लाई क्यों नहीं?”

“आपको ठंडी लग जाती न... इसलिए..” प्रिया मुस्कुराई।

ओह प्रभु! इस एक मुस्कान के लिए मैं अपना जीवन कुर्बान कर सकता हूँ! कितने सारे कष्ट सहे हैं बेचारी ने! हे मेरे प्रभु – प्लीज.. अब यह मुस्कान मेरी प्रिया से कभी मत छीनना!

“अच्छा जी! आपको नहीं लगती?”

“नहीं! बिलकुल भी नहीं.. मैं तो पहाड़ों की बेटी हूँ.. याद है?” प्रिया की मुस्कान बढती जा रही थी!

“हाँ! याद है… इन्ही पहाड़ों ने मेरा दिल और दिमाग दोनों ले लिया!”

“हैं! तो मुझे क्या मिला?”

“… और आपको दे दिया..”

“हा हा! बातें बनाना कोई आपसे सीखे!”

हम दोनों अब तक नदी के किनारे एक बड़े से पत्थर पर बैठ कर अपनी टाँगों को पानी में डाले हुए सौम्य मालिश का आनंद उठा रहे थे।

“आपने बताया नहीं की आप यहाँ इतनी जल्दी कैसे आ गए?”

“प्रिया – भगवान् के खेल तो बस भगवान् ही जानता है! बस यह कह लो की हमको मिलना था वापस, इसीलिए भगवान् ने कोई युक्ति लगा कर मिला दिया… सोचने समझने जैसी बात ही नहीं है.. कोई और मुझे यह कहानी सुनाता तो मैं कहता की फेंक रहा है.. लेकिन, अब जब यह खुद मेरे साथ हुआ है, तो और कुछ भी नहीं कह सकता! अभी कोई सप्ताह भर पहले की बात है – मैं घर पर बैठा टीवी देख रहा था। वहां नेशनल जियोग्राफिक में उत्तराँचल त्रासदी के ऊपर कोई डाक्यूमेंट्री चल रही थी। उसी में मैंने झलक भर आपको देखा।“

उसके बाद मैंने प्रिया को सब कुछ सिलसिलेवार तरीके से बता दिया। वो मंत्रमुग्ध सी मेरी बात सुनती रही।

“समझ ही नहीं आया की आँखों का देखा मानूं या दिल का कहा सुनूं, या फिर दिमाग पर भरोसा करूँ! मैंने तो इस बार बस भगवान् पर भरोसा कर के यह सब कुछ किया.. और देखो.. यहाँ तक आ गया..”

सारी बात पूरी करते करते मेरी आँखों से आंसूं गिर गए। प्रिया ने कुछ कहा नहीं – बस मेरी बाँह को पकड़ कर मुझसे कस कर चिपक गई।

“अब तुम मुझे छोड़ कर कहीं मत जाना..” बहुत देर के बाद मैंने बहुत ही मुश्किल से अपने दिल की बात प्रिया को कह दी, “चाहे कुछ हो जाय..”

“नहीं जाऊंगी जानू.. कहीं नहीं! आपको छोड़ कर मैं कहीं नहीं जाऊंगी!”

कह कर प्रिया मुझसे लिपट गई, और हम दोनों एक दूसरे के आलिंगन में बंधे भाव-विभोर हो कर रोने लगे। कुछ देर बाद जब हम दोनों आलिंगन से अलग हुए तो प्रिया ने कहा,

“अब मैं रोऊंगी भी नहीं.. आप मुझे मिल गए.. अब क्या रोना?”

मैंने भी अपने आंसू पोंछे, और कहा, “सही है.. अब क्यों रोना! .... चलें वापस?”

प्रिया ने उत्तर में मुझे नज़र भर कर देखा, और हलके से मुस्कुराई,

“जानू..” उसने पुकारा।

प्रिया की आवाज़ में ऐसा कुछ था जिसने मेरे अन्दर के प्रेमी को अचानक ही जगा दिया। मैं इतनी देर से उसके अभिवावक, और रक्षक का रोल अदा कर रहा था। लेकिन प्रिया की उस एक पुकार ने ही मेरे अन्दर के प्रेमी को भी जगा दिया।

“हाँ?”

“आपको शकुंतला और दुष्यंत की कहानी मालूम है?”

“हाँ..” क्या कहना चाहती है!

“आप मेरे दुष्यंत हो?”

“हाँ.. अगर आप मेरी शकुंतला हो!”

“मैं तो आप जो कहें वो सब कुछ हूँ..”

“लेकिन, मैं तो नहीं भूला .. भूली तो आप..”

प्रिया मुस्कुराई, “वो भी ठीक है.. चलो, मैं ही दुष्यंत.. हा हा!”

“हा हा..”

“आप भी तो भूल गए होंगे..!”

“नहीं.. मैं कै..” मेरे पूरा कहने से पहले ही प्रिया ने अपना कुरता उतार दिया।

“आप नहीं भूले?” वो मुस्कुराते हुए अपनी ब्रा का हुक खोल रही थी।

प्रिया से मैंने इतने दुस्साहस की उम्मीद नहीं करी थी। एकदम नया था यह मेरे लिए। और आश्चर्यजनक भी। सुखद आश्चर्यजनक!

“हम्म्म.. अंगूठी किधर है?” मैंने भी ठिठोली करी।

“अंगूठी? हा हा.. आप फिलहाल तो इन अंगूरों से याददाश्त वापस लाइए.. अंगूठी आती रहेगी..” वो मुस्कुराई।

“बस अंगूर ही मिलेंगे?”

“नहीं जानू.. शहद भी...”

तब तक मेरा लिंग तन कर पूरी तरह तैयार हो चला था। सलवार का नाडा प्रिया खोल ही चुकी थी, तो उसको उतारने का उपक्रम मैंने कर दिया। साथ ही साथ उसकी चड्ढी भी उतर गयी।

“इन अंगूरों में रस कब आएगा?”

पूर्ण नग्न हो कर प्रिया वहीँ पत्थर पर पीठ के बल लेट गयी। उस पत्थर के वृत्त पर लेटने से प्रिया का शरीर भी कमानीदार हो गया – अर्द्ध चांदनी में उसके शरीर का भली भांति

छायांकन हो रहा था। यह सोच लीजिए जैसे खुलेआम एक बेहद निजी अनावृत्ति! उसके नग्न शरीर को सिर्फ मैं देख सकता था और कोई नहीं। हलकी चांदनी उसके शरीर के हर अंग को दिखा भी रही थी, और छुपा भी रही थी। उसके गाल, उसकी नाक, उसके होंठ, उसके कंधे, और उत्तेजना से जल्दी जल्दी ऊपर नीचे होते उसके स्तन! सपाट, तना हुआ पेट, और उसके अंत में सुन्दर नितम्ब! कुल मिला कर प्रिया के शरीर में बहुत अंतर नहीं आया था – हाँ, कम खाने पीने से वो कुछ पतली तो हो गयी थी, लेकिन ऐसा कुछ नहीं तो हफ्ते भर में ठीक न हो जाय। अस्पताल में सचमुच उसकी अच्छी देखभाल हुई थी।

वो मुस्कुराई, “जब आपका रस अन्दर जाएगा..”

मैंने प्रिया के क्रोड़ की तरफ देखा – उसका योनि मुख – उसके दोनों होंठ फूले हुए थे। घने बालों के बीच से भी यह दिख रहा था। फूले हुए, रसीले भगोष्ठ!

“सचमुच भूल गया!”

“तो अब आप याद कर लीजिए, और मुझे भी याद दिला दीजिए..” प्रिया ने बहुत ही धीमी आवाज़ में यह कहा – फुसफुसाते हुए नहीं, बस दबी हुई आवाज़ में!

“एक तरह से हमारी दूसरी सुहागरात!” उसने एक आखिरी प्रहार किया..

मुझे उस प्रहार की वैसे भी कोई आवश्यकता नहीं थी। मैंने प्रिया के पैर थोड़े से फैलाए। और अपनी उंगली को उसकी योनि की दरार पर फिराने लगा। प्रिया एक परिचित छुवन से कांप गयी। इतने अरसे से दबी हुई कामुक लालसा इस समय उसके अन्दर पूरे चरम पर थी। कुछ देर योनि की दरार पर उंगली चलाने के बाद मैंने अपनी उंगली को अन्दर की तरफ प्रविष्ट किया – उंगली जैसे ही अन्दर गयी, प्रिया की योनि ने तुरंत ही उसके इर्द गिर्द घेरा डाल कर उसे कस कर पकड़ लिया। मैं मुस्कुराया।

“उ उंगली उंगली नहीं जानू..” प्रिया हांफते हुए बोली।

प्रिया की इस बात पर मेरा लिंग जलने सा लगा। मेरे तने हुए जलते लिंग को अगर मैं बटर की ब्रिक से लगा देता तो उसमें लिंग की मोटाई के समान ही एक साफ़ छेद हो जाता। खैर, मैंने अपनी उंगली को बाहर खींचा और उंगली और अंगूठे की सहायता से उसके योनि-पुष्प

की पंखुड़ियों को अलग करने लगा। प्रिया के उत्तेजक काम रसायनों की महक हमारे आस पास की हवा में घुल गयी।

स्वादिष्ट!

मैंने उसकी खुली हुई योनि को अपने मुख से ढंका और उन रसायनों का आनंद उठाने लगा। प्रिया का रस, अश्विनी के रस जैसा मीठा नहीं था। खैर, इस बात की मैं कोई शिकायत तो करने वाला नहीं था। मैंने धीरे धीरे से प्रिया की पूरी योनि को चूसना चाटना आरम्भ कर दिया। उतनी जल्दी तो उसकी योनि काम रस बना भी नहीं पा रही थी। जल्दी ही जब इस क्रिया से उसका रस समाप्त हो गया, तब मैं कभी दाहिने, तो कभी बाएँ होंठ को चूसने लगा। हार मान कर उसकी योनि पुनः काम रस का निर्माण करने लगी। और मैं उस रस को सहर्ष पी गया।

प्रिया बड़े प्यार से मेरे बालों में हाथ फिराती हुई मेरा उत्साह-वर्धन कर रही थी। आज एक अरसे के बाद मैं प्रिया की योनि चाट रहा था, इसलिए मुझे बहुत रोमांचक आनंद आ रहा था। थोड़ी ही देर बाद मेरा लिंग खड़ा हो गया।

मैंने कहा, “जानू, लगाता है कि आज तुम मूड में हो।”

प्रिया ने फुसफुसाते और कराहते हुए कहा, “आ ह हाँ, इतने दिनों बाद अपने कामदेव से मिली हूँ.. आज तो मैं सचमुच बड़े मूड में हूँ। आप मुझे ठोकिये, और जम कर ठोकिये.. जैसे मन करे वैसे.. जितनी बार मन करे, उतनी बार...।”

“तब तो आज खूब मज़ा आयेगा।”

कह कर मैं वापस प्रिया की योनि को चाटने में मग्न हो गया। वो सचमुच बहुत ज्यादा जोश में आ चुकी थी। थोड़ी ही देर में प्रिया स्खलित हो गयी..

फिर आई उसके भगनासे की बारी। मैंने उसके उस छोटे से अंग को देर तक कुछ इस तरह से चूसा जैसे कोई स्त्री अपने प्रेमी के लिंग को चूसती है। इस क्रिया का प्रिया पर नैसर्गिक प्रभाव पड़ा – वो अपने नितम्ब गोल गोल घुमा कर और उछाल कर मुख मैथुन का पूरा

आनंद उठा रही थी। खैर, जब तक मैंने उसके भगनासे से अपना मुँह हटाया, तब तक प्रिया तीन बार और स्खलित हो गयी। प्रिया की संतुष्टि भरी आहें वातावरण में गूँज रही थीं।

“ओह गॉड!” उसने कामुकता भरी संतुष्टि से कराहा।

मैंने प्रिया को रतिनिष्पत्ति का पूरा आनंद उठाने दिया। मुझे शंका थी की कहीं प्रिया की आहें और कराहें सुन कर कोई आस पास न आ गया हो। उस जगह निर्जनता तो थी, लेकिन इतनी नहीं की कोई इतनी ऊंची आवाज़ न सुन सके। खैर, कोई देखता है, तो देखे! क्या फर्क पड़ता है! मैंने अपने भी कपडे उतार दिए। मेरा लिंग तो पूरी तरह से तना हुआ था।

मैंने अपने आप को प्रिया की टाँगों के बीच व्यवस्थित किया और उसकी टाँगों को उठा कर अपने कंधे पर रख लिया। फिर मैंने उसकी योनि के होंठों को फैला कर अपने शिश्नाग्र को वहां व्यवस्थित किया। कोई दो ढाई साल बाद प्रिया की ठुकाई होने वाली थी (सतीश वाला कुछ भी मान्य नहीं होगा) – इसलिए मुझे सम्हाल कर ही सब कुछ करना था।

प्रिया को खुद भी इस बीते हुए अरसे का एहसास था – इसलिए वो भी उत्तेजना के मारे एकदम पागल सी होने लगी। खुले में सहवास करने जैसी हिमाकत वो ऐसे नहीं कर सकती थी।

“शुरू करें?” कह कर मैंने लिंग को उसकी योनि में फंसा कर एक जोर का धक्का लगाया। प्रिया के मुँह से चीख निकल पड़ी। उसकी योनि सचमुच ही पहले जैसी हो गई थी – संकरी और चुस्त! मैंने नीचे देखा तो सिर्फ सुपाड़ा ही अन्दर गया था – बाकी का पूरा का पूरा अभी अन्दर जाना बचा हुआ था।

“क्या बात है रानी! आपकी योनि तो एकदम कसी हुई है! ठीक उस रात के जैसे जब हम दोनों पहली बार मिले थे! असल में, उस से भी ज्यादा कसी हुई...।”

पीड़ा में भी प्रिया की खिलखिलाहट निकल गई।

“आप जो नहीं थे, इसके कस बल खोलने के लिए...”

“कोई बात नहीं... अब आपकी ये शिकायत दूर कर दूंगा..”

“वो मुझे मालूम है... अब शुरू कीजिए..”

“क्या?” मैंने छेड़ा।

“ठुकाई...” उसने फुसफुसाते हुए कहा और मेरे लिंग को अपनी योनि के मुहाने पर छुआ दिया।

मैंने धीरे धीरे लिंग को अन्दर घुसाया; प्रिया की कराह निकल रही थी, लेकिन उसके खुद में ही उसको ज़ब्त कर लिया। प्रिया की योनि सचमुच संकरी हो गई थी। अश्विनी से भी अधिक कसावट लिए! उस घर्षण से लिंग के ऊपर की चमड़ी पीछे खिसक गयी – अब मेरा मोटा सुपाड़ा प्रिया की योनि की दीवारों को रगड़ रहा था। हम दोनों का ही उन्माद से बुरा हाल हो गया। मैं अन्दर के तरफ दबाव देता गया जब तक लिंग पूरी तरह से प्रिया के अन्दर समां नहीं गया।

“देख तो! मेरा लिंग कैसे तेरे अन्दर फिट हो गया है...”

प्रिया ने सर उठा कर देखा और बोली, “ओ भगवान! शुक्र है की पूरा अन्दर आ गया.. मेरे अन्दर की खाली जगह आखिरकार भर ही गई! उम्म्म.. मुझे डर लग रहा था की शायद न हो पाए! अब बस.. आप जोर से ठोक डालिए मुझे... यह भी तो बहुत आतुर हो रहा है..."

मैंने प्रिया की दोनों टाँगे अपने कन्धों पर रख लिया।

“तैयार हो?”

"हाँ... आप ऐसे मत सताइए! मेरे पूरे शरीर में आग सी लगी हुई है। बुरी तरह...”, प्रिया ने कहा।

"क्या सच में!” मैंने पूछा।

मेरे इतना कहने की देर थी कि प्रिया नीचे से खुद ही धक्के लगाने लगी। मैंने कुछ नहीं कहा, बस प्रिया को तेजी के साथ ठोकना शुरु कर दिया। हम दोनों ही बहुत जोश में थे और तेजी से मंथन कर रहे थे। अति उत्तेजना के कारण सिर्फ पाँच मिनट में ही प्रिया चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई। प्रिया की योनि से कामरस निकलता हुआ देख कर मेरा जोश भी बढ़ गया और मैंने भी अपनी गति बढ़ा दी। मैं उसको तेजी से ठोकने लगा। हाँ, यही शब्द ठीक है! जो हम कर रहे थे, वो विशुद्ध सहवास था, जिसका सिर्फ एक और एक ही उद्देश्य था – और वो था हमारे शरीरों की काम पिपासा को शांत करना। और इसका सटीक शब्द ठुकाई ही था। आगे दो तीन मिनटों में मेरे लिंग ने भी वीर्य छोड़ दिया और प्रिया की योनि भरने लगी। पूरी तरह से स्खलित हो जाने के बाद मैंने अपना लिंग उसकी योनि से बाहर निकाला, और हट गया। प्रिया ने मुझको अपनी तरफ़ खींच लिया, और मेरा लिंग चाटने लगी।

एक और नई बात!

“आज तो मज़ा आ गया।” जब प्रिया ने अपना काम ख़तम किया तो मेरे मुँह से अनायास ही निकल गया।

“भैना, और मजा आएगा... आप ये जड़ी लिया करें!”

हम दोनों ही चौंक कर आवाज़ की दिशा की तरफ देखने लगे। एक लड़का, किशोरावस्था में ही रहा होगा वह, अपने कंधे पर एक झोला लटकाए हमारी ही तरफ देख रहा था। जाहिर सी बात है, उसने यह बात भी हमको ही कही थी।

वो न जाने कब से हमारी रति-क्रिया देख रहा होगा, इसलिए मैंने तो अपनी नग्नता छुपाने की कोई कोशिश नहीं करी, लेकिन प्रिया अपने आप में ही सिमट सी गई।

“कौन है?” मैंने पूछा।

“जी मैं जड़ी-बूटी बेचने वाला हूँ... तरह तरह की जड़ी-बूटियाँ बेचता हूँ.. आप लोगों को देखा तो रुक गया।“

“अच्छा तो तू दूसरों को ठुकाई करते हुए देखता है?”

“नहीं भैना! लेकिन आप लोग भी तो खुले में...” वो झिझकते हुए बोला।

“अच्छा अच्छा! ठीक है! क्या जड़ी बेच रहे हो?”

“है तो भैना यह कामवर्धक जड़ी.. अरे! पूरी बात सुन तो लीजिए!”

संभवतः उसने मेरे चेहरे पर उत्पन्न होने वाले झुंझलाने वाले भाव देख लिए थे,

“यह जड़ी शुद्ध शिलाजीत, इलाइची, अश्वगंधा और चन्दन से बनी है.. शुद्ध है! आप चाहें तो चख कर देख लें.. ऐसा स्वाद आपने कभी नहीं चखा होगा.. इसका नियमित इस्तेमाल करें.. दीदी खुश हो जाएँगी! ... और आप भी!”

“अभी खुश नहीं थीं?”

“थीं भैना.. खुश थीं... लेकिन और हो जाएँगी! आपका ब्वारू लम्बी देर तक कड़क रहेगा..”

“अच्छा..” अपनी मर्दाना ताकत पर ऐसी टिपण्णी होते सुन कर मुझे अच्छा नहीं लगा, “तू खाता है ये जड़ी?”

“भैना, महँगी जड़ी है.. उतना तो नहीं खा पाता!”

“उतना नहीं..? अरे! तुझे क्या ज़रुरत हुई इस जड़ी की?”

“भैना, मेरी भी घरवाली है! उसको भी खुश रखना होता है न!”

“तेरी शादी हो गई? अरे!”

“हाँ! एक साल हो गया भैना।“

“अरे तू खुद इतना छोटा लग रहा है.. तेरी ब्वारी की उम्र क्या है?”

“यही कोई पंद्रह की, भैना!”

“अरे! बच्ची से..!?”

“बरबरि है भैना वो.. बच्ची नहीं..” कहते हुए वो मुस्कुराया! “मुझे एक बार अपना ब्वारू देखने देंगे? .. मैं वैद्य भी हूँ...”

कह कर वो मेरे लिंग को पकड़ कर, खींच कर, दबा कर जांच करने लगा। न तो उसने मेरी सहमति की परवाह करी और न ही किसी हील हुज्जत की। जब वो अपनी जांच से संतुष्ट हो गया तो बोला, “बहुत गुंट अंग है भैना आपका... थोड़ा सा बांग है.. लेकिन उससे कोई दिक्कत नहीं होगी। आप चाहें तो उसके लिए एक अर्क दे सकता हूँ.. उससे मालिश कर के थोड़ा सा सीधा हो जायेगा.. वैसे उसकी कोई ख़ास जरूरत नहीं है.. आप बस यह जड़ी खाया करें। आप तो ज़रूर लीजिए.. अच्छा स्वास्थ्य है, असर अधिक आएगा..”

“अच्छी बात है.. अब अपनी दीदी की भी जांच कर के बता।“

“जी..” कह कर वो लड़का प्रिया की जांच करने लगा।

“अरे... ये... कक्या..” अचानक से हुए इस घटनाक्रम से प्रिया भी अचकचा गई। लेकिन मुझे इस बात पर आश्चर्य हुआ, और एक तरह से बढ़िया भी लगा कि प्रिया एक पल को तो हिचकी, लेकिन उसके बाद उसने कोई विरोध नहीं किया, और उस वैद्य/लड़के को अपनी जांच करने दी। लड़के ने प्रिया के भिन्न भिन्न स्थानों पर दबा कर न जाने किस बात का जायजा लिया, उसके सीने पर कान लगा कर कुछ देर धडकनों को सुना, पेट और कमर को दबा कर जाँचा, और अंत में कहा,

“दीदी भी आपकी ही तरह एकदम गुंट है, भैना। आपको बस थोड़ा पूरक की जरूरत है। मेरा मतलब ज़रुरत तो नहीं है, लेकिन अगर लेंगे तो अच्छा रहेगा। यह जड़ी न केवल वीर्य वर्द्धक है, बल्कि आरोग्य और लम्बी आयु के लिए भी ठीक है..“

“ह्म्म्म.. अच्छा.. अगर मैं इसको अभी खरीद लूं, तो बाद में क्या होगा? मतलब एक पुडिया से तो कुछ नहीं होने वाला न?”

“बाद के लिए या तो मैं आपको इसको बनाने की विधि बता दूंगा, या फिर आप मुझे कोई पता बता दीजिए, जिस पर मैं आपको डाक से भेज दूंगा..”

“अच्छी बात है..” कह कर मैंने उसको हमारे साथ होटल आने के लिए बोला।

हमने अपने कपडे पहने, और साथ में होटल चल दिए, जहाँ पर मैंने उससे जड़ी ली, उसको पैसे दिए और सो गए।

३७

अश्विनी की नजर में :

'Heading Back home... with huge huge surprise. Love You!'

अश्विनी अपने फ़ोन के स्क्रीन पर अथर्व के इस मैसेज को बार बार पढ़ रही थी. ऐसा नहीं है कि अथर्व सिलसिले में कभी बाहर नहीं गए - लेकिन ऐसा विचित्र व्यवहार उन्होंने पहले कभी नहीं किया। वो बिना किसी चूक के उससे हर दिन कम से कम बार बात अवश्य करते थे। लेकिन इस बार तो बात ही नहीं हो पाई। बस कभी कभी कोई एस एम एस भेज देते थे। और तो और, उसका भी फ़ोन एक बार भी नहीं उठाया! क्या हो गया? क्या सरप्राइज है! उसके मन में कई सारे सवाल थे, लेकिन उनके जवाब अथर्व ही दे सकते थे। तब तक तो इंतज़ार करना ही होगा। अच्छी बात यह थी कि वो बस कुछ ही देर में आने वाले थे।

चार दिन हो चले थे - जैसे चार महीने बीत गए हों! उनके बिना तो मन लगता ही नहीं! इस बार बोलूँगी कि जब वो बाहर जाया करें, तो मुझे भी साथ ले जाया करें! उनका अनवरत साथ उसके लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक - उसके तीनों ही प्रकार के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक था।

अगले एस एम एस में फ्लाइट नंबर लिखा हुआ था। अथर्व हमेशा ही उसको अपनी फ्लाइट का नंबर लिख कर भेजते थे। एक दिन मज़ाक मज़ाक में उन्होंने कहा था कि अगर कभी मेरी फ्लाइट क्रैश हो जाय तो कम से कम तुमको मालूम तो रहे कि पूछ-ताछ कहाँ करनी है! उनकी इस बात पर अश्विनी खूब रोई थी; पूरा दिन खाना भी नहीं खा सकी। अथर्व की लाखों मनुहार के बाद ही उसके गले से खाने का एक निवाला उतर सका।

उसने फिर से फ़ोन की स्क्रीन पर एस एम एस पढ़ा। अथर्व का सन्देश, मनो खुद ही अथर्व खड़े हों, और वो उन्हें देख रही हो। शादी सचमुच ही जीवन बदल देती है। अथर्व और अश्विनी की शादी वैसी नहीं थी, जैसी उसने कभी कल्पना करी थी। न जाने कैसे कैसे सपने संजोती हैं लड़कियाँ अपनी शादी को ले कर... लेकिन यहाँ तो.. सब कुछ एक तरफ़ा मामला ही था; अथर्व ने जैसे बस उसकी इच्छा रख भर ली। उन्होंने इस मामले में न कभी अपनी तरफ से कोई पहल करी और न ही कभी इस प्रकार की गर्मी ही दिखाई, जो अक्सर मंगेतर जोड़े दिखाते और महसूस करते हैं। संभव है कि उनके मन में किसी तरह का

अपराध-बोध रहा हो। यह शंका उन्होंने सुहागरात में जाहिर भी कर दी थी। अश्विनी समझ सकती है - दीदी के जाने के बाद, उन्ही की छोटी बहन के साथ... पहले उसको भी यह अपराध-बोध था। कैसे अपने ही जीजा से प्रेम! सोचने वाली बात यह कि उनको वो पहले दाजू कह कर बुलाती थी...! दाजू और अब..! और ऊपर से पड़ोसियों की कुरेदती हुई निगाहें! फिर उसने निर्णय कर लिया कि बस, बहुत हुआ। यदि प्रेम करना गुनाह है, तो होता रहे। अथर्व को वो अवश्य ही अपने मन की बात कहेगी। आगे जो होना होगा, प्रभु की इच्छा!

उन दोनों के सम्बन्ध की ऊष्णता विवाह के बाद ही तो हुई। यह संभवतः उनके अंदर जगा हुआ एक अधिकार भाव और एक संलिप्त भाव था। दोनों ही बातें, जो विवाह के बंधन में बंध कर होती हैं। विवाह सचमुच एक मायावी सम्बन्ध है - और उसके परिणाम रहस्यमय! आर्थिक और सामाजित स्तर पर देखा जाय, तो उसके पिता की प्रतिष्ठा एक मामूली व्यक्ति की ही थी। मामूली रहन-सहन, मामूली समाज में उठना बैठना, और मामूली आशाएँ और उद्देश्य। पर ऐसे मामूली परिवेश में भी उसने जीवन का एक अहम् रहस्य सीखा था – और वह यह कि अपने जीवन से संतुष्ट रहे, और सुखी रहे। अथर्व में उसको जीवन के रहस्य को साकार करने का यन्त्र मिल गया था। और यह सब कुछ उनकी संपत्ति के कारण नहीं था – संपत्ति न भी होती, तो भी कुछ ख़ास प्रभाव नहीं होना था। प्रभाव था उनके स्नेह का, और उनके प्रेम का! वो संतुष्ट थी, सुखी थी। विवाह के बाद उसको अपने ही अन्दर छुपे हुए कितने ही सारे रहस्य पता चले थे! उन रहस्यों के उजागर होने पर उसको रोमांच भी होता, आश्चर्य भी होता, और लज्जा भी आती। लेकिन फिर भी मन नहीं भरता। अथर्व भी हर संभव तरीके से उसको सुखी रखते थे! ऐसे में कोई आश्चर्य नहीं, कि विवाह के उपरान्त उसके देह भी भरने लगी है! पुरुष के रसायनों का कैसा अद्भुद प्रभाव होता है!

वो लज्जा से मुस्कुरा दी।

‘पुरुष के रसायन... हा हा’ अश्विनी मन ही मन हंस दी।

ये भी तो अपने रसायन उसके अन्दर डालने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते हैं! यह बात तो है, दोनों चाहे कितने भी थके हुए हों, बिना सहवास किए रह नहीं पाते! सहवास करने के बाद की ऊर्जा और ताजगी! अथर्व के साथ की बात याद कर के अश्विनी के शरीर का पोर-पोर दुखने लगता है। उसका मन करता है कि जल्दी से अथर्व आ जाएँ, और उसे अपने आलिंगन में भींच लें; इतनी जोर से कि उसकी एक एक हड्डी चटक जाए।

३८

हवाई-अड्डे से निकल कर मैंने और प्रिया ने टैक्सी करी और घर की ओर चल दिए। घर की तरफ जाते हुए –

“अश्विनी है घर पर?” प्रिया ने पूछा।

मैंने सिर्फ सर हिला कर हामी भर दी.

“उसकी पढ़ाई लिखाई कैसी चल रही है?”

“अच्छी चल रही है..” अब मैं उसको क्या बताऊँ कि पढ़ाई लिखाई के साथ साथ और भी बहुत कुछ चल रहा है, और वो भी बहुत ही अच्छे से!

“उसको कैसा लगेगा!” यह प्रश्न जैसे प्रिया ने खुद से ही किया था।

“कैसा लगेगा? ये क्या बात हुई जानू! वो बहुत खुश हो जाएगी.. और कैसा लगेगा! मैं आपको बता नहीं सकता कि वो कितनी दुखी रही है!”

“हाँ.. आप सही कह रहे हैं! हम दोनों सिर्फ सगी बहनें ही नहीं है.. हमारा रिश्ता बहुत ही गहरा है..”

“इस बात में कोई शक नहीं..”

‘रिश्ता तो गहरा ही है!’

“क्या हुआ जानू.. आप ऐसे सूखा सूखा क्यों बोल रहे हैं?”

“नहीं कुछ नहीं.. थक गया हूँ बस! और कुछ भी नहीं..” अब अपनी सफाई में और क्या ही बोल सकता था?

“ओह अच्छा! कोई बात नहीं.. घर चल कर आपको अच्छी सी चाय पिलाती हूँ, और फिर बढ़िया स्वादिष्ट खाना.. ओके?”

मैं सिर्फ मुस्कुराया! सच में! अगर घर जा कर सचमुच ऐसा ही हो, तो फिर समझो कि मेरी लाइफ सेट हो गई!

घर की तरफ बढ़ते हुए मेरे दिल की धडकनें बहुत तेज हो गईं, गला सूखने सा लगा और बहुत घबराहट हो गई. लगभग कांपती उँगलियों से मैंने कॉल-बेल का बटन दबाया।

कोई बीस सेकंड (जो की मुझे घंटे भर लम्बे लगे) के बाद दरवाज़ा खुला।

“आ गए आ... दीदी? दीदी..??? दीदी!!!! दीदी!!!! तुम जिंदा हो?!!!!!”

अश्विनी के समक्ष जो परिदृश्य था, वह उसकी समझ से परे था। किसी की भी समझ से परे हो सकता है; लेकिन इस बात के लिए अश्विनी तैयार ही नहीं थी।

“ओह भगवान्! तुम जिंदा हो! ओह! ओह भगवान्!”

ऐसा कह कर अश्विनी प्रिया को कस कर अपने आलिंगन में भर लेती है। प्रिया भी खुश हो कर और भावविभोर हो कर अश्विनी को अपनी बाहों में भर कर उसका चुम्बन लेने लगती है।

“तुम जिंदा हो दीदी! तुम जिंदा हो।“ प्रिया के आलिंगन में बंधी हुई अश्विनी सुबकने लगी थी। उसकी आँखों से ख़ुशी के आंसू बन्हने लगे थे। “तुम जिंदा हो।“

“हाँ मेरी बच्ची! मैं जिंदा हूँ!” प्रिया भी रोए बिना नहीं रह सकी। “मैं जिंदा हूँ!”

इस समय दोनों ही बहने वर्तमान में नहीं थीं। वो दोनों ही उस भयावह अतीत को याद कर रही थीं, जिसको उन्होंने साथ में झेला था। वह अतीत जिसने उनके माँ बाप को लील लिया था। वह अतीत जिसने उन दोनों को अलग कर दिया था। और वह अतीत, जिसने अनजाने में ही दोनों के वर्तमान को भी बदल दिया था। उस भयंकर अतीत को याद कर दोनों ही फूट फूट कर रोने लगीं; एस समय उन दोनों के लिए ही इस बात से बढ़ कर कुछ नहीं था कि वो दोनों ही जीवित थीं, और एक बार फिर से एक दूसरे के साथ थीं। न जाने कितनी ही देर

दोनों बहने एक दूसरे को अपनी बाहों में लिए खड़ी रहीं, और फिर आखिरकार दोनों ने अपना आलिंगन छोड़ा।

“बस कर मेरी बच्ची... बस कर! ... कैसी है तू?” प्रिया ने बड़े लाड से पूछा, और बड़े प्यार से अश्विनी के चेहरे को अपने दोनों हाथ में लिए निहारने लगी।

“अरे! तेरी शादी हो गई?” प्रिया ने अश्विनी की मांग का सिन्दूर देख लिया।

“वाआह्ह्ह! कब?” प्रिया ने लगभग चहकते हुए कहा। यह प्रश्न जैसे वज्र की तरह गिरा – अश्विनी पर भी, और मुझ पर भी। इस प्रश्न पर अश्विनी के पूरे शरीर को मानो लकवा मार गया।

“आपने बताया क्यों नहीं?” प्रिया ने शिकायती लहजे में मुझ पर प्रश्न दागा।

“वो मैं.. मैं..”

“हाँ हाँ ठीक है.. बहाने मत बनाइए। अब आ गई हूँ, तो सब कुछ डिटेल में सुन लूंगी! कहाँ हैं तेरे हस्बैंड?”

स्वतः प्रेरणा से अश्विनी ने इस प्रश्न पर मेरी तरफ देखा, और मैंने उसकी तरफ। मैंने ‘न’ में सर हिला कर एक दबा छुपा इशारा किया।

“व्वो वो दीदी.. तुम आओ तो सही। बैठो, फिर बताती हूँ सब।“

“हा हा.. ठीक है।“ कह कर हँसते हुए प्रिया अन्दर आ गई और सोफे पर बैठ गई। “कहाँ तो मैं सोच रही थी कि मैं तुझे सरप्राइज दूँगी, और कहाँ तूने मुझे ही इतना बढ़िया सरप्राइज दे दिया...!”

“म्ममैं चाय बनाती हूँ!” अश्विनी अपना बचाव करते हुए बोली।

“अरे नहीं! अश्विनी, तू बैठ। चाय मैं बनाऊँगी।“

कह कर प्रिया ने अश्विनी का हाथ पकड़ कर सोफे पर बैठाया, और खुद रसोई में चली गई।

प्रिया ने जाते ही अश्विनी भी उठ खड़ी हुई।

"कहाँ जा रही हो, अश्विनी?" मैंने पूछा।

"'अपने' कमरे में..." उसने थोड़े से उदास और रुआँसे स्वर में कहा। उसकी आवाज़ में मुझे शिकायत की भी एक झलक सी महसूस हुई।

"अपने कमरे में? अपने?" मुझे समझ आ गया कि अश्विनी दूसरे कमरे में जाने वाली है। "अश्विनी.. इधर आओ.. प्लीज!" कह कर मैंने उसको अपनी बाँहों में भर लिया।

अश्विनी उदास सी मेरे बाहों में आ गई। तो मैंने कहना जारी रखा।

"हमने शादी करी है.. वो भी विधिवत। तुम मेरी बीवी हो। ठीक प्रिया की ही तरह। इसलिए इस कमरे पर, इस घर पर, मुझ पर और मेरी हर चीज़ पर तुम्हारा उतना ही अधिकार है, जितना की प्रिया का है!"

"आप समझ नहीं रहे हैं... बहन से सौतन तो बना जा सकता है, लेकिन सौतन से बहन नहीं। आपको मुझे पहले ही बता देना चाहिए था।" अश्विनी ने बुझे हुए स्वर में कहा। "आपने सोचा भी है, कि सच्चाई जानने के बाद दीदी क्या सोचेगी? क्या करेगी?"

"अश्विनी, मैं कैसे बताऊँ कि क्या हुआ! मैं तुमको बताना चाहता था, लेकिन मैं खुद ही श्योर नहीं था। इसलिए पहले नहीं बता सका। अगर प्रिया न मिलती तो तुम्हारे मन पर क्या बीतती? मैं तो अभी यह भी बताने की हालत में नहीं हूँ की प्रिया को ढूँढने के लिए मैंने क्या क्या पापड़ बेल दिए। यह तो बस भोलेनाथ की ही कृपा है कि वो मुझे मिल सकी। ... और... और कहाँ तक प्रिया के सोचने का सवाल है.. तो प्रिया के सोचने का क्या? मैं उसको सब कुछ सच सच बताऊंगा। जो सच्चाई है, वो उसे स्वीकारना ही होगा। उसको... प्रिया को तुम्हें इसी रूप में, इसी रिश्ते में स्वीकारना ही होगा..।"

“क्या स्वीकारना होगा, जानू?” प्रिया के ‘जानू’ कहने पर अश्विनी और मैं दोनों ही चौंक कर उसकी तरफ देखने लगे। न जाने क्यों, मुझे पुनः अपराध बोध हो गया।

“सब स्वीकार है.. फिलहाल आप दोनों यह चाय स्वीकार कीजिए। वहां मुरुक्कु रखे हुए थे, वो भी मैं ले आई। अश्विनी, आज डिनर के लिए क्या सोचा है?”

“वो दीदी..”

“प्रिया.. जानू..,” मैंने झिझकते हुए यह कहा, “अभी चाय पी लो, डिनर का देख लेंगे। ओके?”

हमने चुपचाप चाय पीनी शुरू करी। मुझे यह तो मालूम था कि अश्विनी और मेरी कहानी मुझे ही प्रिया को सुनानी पड़ेगी, लेकिन यह कितना कठिन होगा, यह मुझे नहीं मालूम था।

“जानू,” मैंने दुनिया भर की हिम्मत इकठ्ठा कर के बोलना शुरू किया, “आपको एक बात बतानी है.. बहुत ज़रूरी..”

“हाँ, बोलिए न! मैं भी तो मरी जा रही हूँ सब कुछ सुनने के लिए! कितना कुछ है सुनने के लिए! तीन साल यूँ ही उड़ गए! मुझे तो कुछ याद भी नहीं। अब आप दोनों को ही तो बताना है सब कुछ।“ प्रिया ने मुस्कुराते हुए कहा। “.. और इसकी शादी के बारे में भी.. किस से शादी कर ली?”

“तो ठीक है.. सबसे पहले अश्विनी की शादी से ही शुरू करते हैं..”

हिम्मत बटोरी, लेकिन फिर भी ठिठक नहीं गई। ऐसी बातें सहजता से कैसे कही जा सकती हैं।

“जानू... अश्विनी से... शादी... मेरा मतलब हैं, अश्विनी से मैंने शादी कर ली..”

प्रिया को लगा जैसे उसके पैरों तले की ज़मीन ही निकल गई हो। ‘शादी कर ली है..! यह कैसे मुमकिन है?’ प्रिया की शकल देख कर साफ़ दिख रहा था कि उसको यकीन ही नहीं हुआ है।

“शादी कर ली है..?”

मैंने हामी में सर हिलाया।

“अश्विनी से?”

मैंने फिर से सर हिलाया।

प्रिया ने अविश्वास के साथ अश्विनी की तरफ देखा। वो सर झुकाए, किसी मुजरिम की भांति बैठी हुई थी, और खामोशी के साथ आंसू टपका रही थी। आज सच में हम सभी का जीवन बदल गया था।जिंदगी की बहती उलटी धारा और तेज हो गयी थी ..

“क्या सच में? आप और अश्विनी?”

“हाँ जानू.. हम दोनों ने शादी कर ली.. लेकिन इस बात को पूरा समझने के लिए आपको सब कुछ बहुत पेशेंटली सुनना पड़ेगा..”

मुझे दिख रहा था कि मेरे इस खुलासे के बाद प्रिया बहुत ही व्यथित हो गई थी, लेकिन जितनी ही जल्दी यह सारी बात सामने आ जाय, उतना ही अच्छा था।

मैंने प्रिया को सब कुछ बताना शुरू किया – शुरू से – जब मैं त्रासदी के बाद, उनकी तलाश में उत्तराँचल गया था। मैंने बताया की कैसे दर दर भटकने के बाद एक दिन अनायास ही अश्विनी मिली। उसकी कैसी बुरी हालत थी। एकाध दिन और न मिलती, तो कभी न मिलती। अश्विनी से ही मुझे बाकी जानकारी मिली कि कैसे मम्मी, पापा और प्रिया तीनो ही नहीं रहे।

मैं अश्विनी को ले कर वापस आ तो गया, लेकिन जीने की सारी इच्छा अब समाप्त हो गई थी। यंत्रवत हो गया था। अब जीवन में न कोई उद्देश्य नहीं दिख रहा था, और न ही कोई औचित्य। आत्महत्या का भी ख़याल आया, लेकिन कायर की तरह मरने में क्या रखा था। इन सब के बीच में हर बात पर से ध्यान हटने लगा – न स्वास्थय पर नज़र, और न ही परिवार पर। अश्विनी घर पर थी, लेकिन फिर भी उससे न बराबर ही बात होती थी – उस पूरे समय तक मैं उसका पूरी तरह से प्रमाद करता रहा था। एक तरह से मन में यह ख़याल

आता ही रहा कि प्रिया के स्थान पर वो क्यों न रही! अश्विनी का चेहरा मुझे उत्तराखंड की त्रासदी की ही याद दिलाती थी।

और फिर मेरा एक्सीडेंट हो गया। ऐसा एक्सीडेंट जिसने मुझे मृत्यु के मुहाने तक पहुंचा दिया। मैं बोल रहा था, लेकिन एक्सीडेंट की बात सुन कर प्रिया के दिलोदिमाग में एक झंझावात चलने लगा।

‘अथर्व का एक्सीडेंट! मेरे अथर्व का एक्सीडेंट!! हे भगवान्! यह क्या क्या हो गया मेरे पीछे!’

मैं बोल रहा था – मुझे नहीं मालूम की क्या क्या बीता अश्विनी पर, लेकिन जब अंततः मेरी चेतना वापस आई, तब मैंने उसको अपने बगल, अपने साथ पाया। डॉक्टर और नर्स सभी लोगों ने कहा की उन्होंने मेरे बचने की कोई उम्मीद ही बाकी नहीं रखी थी। लेकिन अश्विनी, जैसे सावित्री के समान ही मुझे यमराज के पाश से छुड़ा लाई। ये वही अश्विनी थी, जिसकी मैंने इतने समय तक उपेक्षा करी। ये वही अश्विनी थी, जिसको मैंने बात बात में दुत्कार दिया, ये वही अश्विनी थी जिसने मेरी हर कमी को मेरी हर उपेक्षा को नज़रंदाज़ कर के सिर्फ मेरा साथ दिया। अश्विनी ने जिस तरह से मुझे सहारा दिया, मेरी टूटी हुई ज़िन्दगी को वापस पटरी पर लाया, मेरे पास और कोई विकल्प ही नहीं था। मैं सच में तुम्हारा कोई विकल्प नहीं चाहता था – कभी भी नहीं। मेरा तो सब कुछ ही तुम्हारे साथ साथ ही चला गया था। मैंने तो एक अँधेरे में डूबता जा रहा था, और न जाने कब तक डूबता रहता, अगर अश्विनी ने आ कर मुझे सम्हाल न लिया होता।

ये जो तुम मुझे इस हाल में देख रही हो, वो मेरा पुनर्जन्म है, और उसका सारा श्रेय सिर्फ अश्विनी को जाता है। तुम्हारे बाद यदि मेरा कोई विकल्प हो सकता था – एक नेचुरल विकल्प, तो वो सिर्फ और सिर्फ अश्विनी ही हो सकती थी। यह कहते कहते मुझे आयशा की याद हो आई.. वो भी एक विकल्प थी। लेकिन नेचुरल नहीं!

“सच में?” प्रिया मंत्रमुग्ध सी हो कर बोली। उसने अश्विनी की तरफ देखते हुए बहुत मद्धम आवाज़ में कहा, "मेरी प्यारी अश्विनी... तू कब से इतनी सयानी हो गई?"

इतना कह कर वो उठ खड़ी हुई और हमारे शयन कक्ष की ओर जाने लगी।

“मैं कुछ देर आराम करना चाहती हूँ.. और शायद सोचना भी.. आप लोग मुझे कुछ देर डिस्टर्ब मत करिए.. प्लीज!” उसने बिना किसी की भी तरफ देखे कहा और अन्दर चली गई। बस इतनी गनीमत थी कि उसने अन्दर से दरवाज़ा बंद नहीं किया।

सोने का तो सवाल ही नहीं था। बिस्तर पर पड़े पड़े प्रिया कुछ परिचित की तलाश कर रही थी। उसका शयन कक्ष बिलकुल बदल गया था। हाँ, वो कमरा, वो अलमारी, ये बिस्तर आदि तो वही थे, लेकिन इस समय कितने अलग से लग रहे थे। अपरिचित। बिलकुल अपरिचित। उसको ऐसा लग रहा था, कि जैसे किसी और के कमरे में लेटी हुई हो! अलमारी खोल कर अन्दर देखने की हिम्मत ही नहीं हुई – पति ही अपना नहीं रहा तो किस हक़ से किसी और की अलमारी खोले? किस हक़ से?

हाँ, किस हक़ से वो अथर्व और अश्विनी के बिस्तर पर लेटी हुई है? उसको समझ ही नहीं आ रहा था कि इस पूरे घटनाक्रम पर वो क्या प्रतिक्रिया दे! उसको लगा कि शायद उसको गुस्सा आएगा, लेकिन वो भी नहीं आ रहा था। अथर्व - उसका पति जिस पर उसे हमेशा ही गर्व रहा है। वह खुद को कितना सुहागिन मान कर इतराती रही है, गर्व से फूली हुई फिरती रही है। वह पति अब किसी और का है!

किसी और का? किसी और का कैसे है? अश्विनी तो भी अपनी है। उसकी खुद की बच्ची! खुद की बच्ची – हुँह! इतनी ही बच्ची रहती तो उसके पति पर डोरे डालती? उसके पति को ले उडती? अचानक ही प्रिया को इतना गुसा आया कि उसका मन हुआ कि उस डायन को अभी के अभी अपने पति के सामने झाड़ू से पीट डाले!

उसके मस्तिष्क में अश्विनी और अथर्व की छवि जाग गई – एक दूसरे से गुत्थम गुत्था! एक दूसरे से गुत्थम गुत्था और नग्न! पूर्ण नग्न! अथर्व अश्विनी के ऊपर चढ़े हुए! उसको उस छवि की कल्पना से उबकाई आ गई! शर्म नहीं आती... किसी और के साथ! फिर उसको एक दूसरा विचार आया। किसी और के साथ कहाँ? अश्विनी तो अब अथर्व की पत्नी है। उनकी विवाहिता! तो कल जो उसके साथ हुआ? कल रात क्या था? अब प्रिया तो उनकी विवाहिता नहीं रही! तो क्या था वह सब? रेप? ओह! नहीं नहीं! कल तो उसके खुद के आमंत्रण पर ही तो अथर्व ने उसको भोगा था! तो अब उसका और अथर्व का क्या रिश्ता है? और कैसे प्रिया उनकी विवाहिता नहीं है?

यह विचार आते ही प्रिया की कुछ व्यावहारिक बुद्धि जागी।

अथर्व ‘उसका पति’ कैसे है! वो तो सभी के अनुसार मर चुकी थी। व्यावहारिकता के हिसाब से मर चुकी है, विधि के हिसाब से मर चुकी है.. मर चुकी है, मतलब अथर्व भी उसके वैवाहिक बंधन से मुक्त हो चुके थे। और फिर अश्विनी ने उनको तब सम्हाला जब वो नितांत अकेले थे। वो भी तो नहीं थी। जब उनका एक्सीडेंट हुआ, तो वो कहाँ थी? उनको किसके भरोसे छोड़ गई थी? ऐसे में अश्विनी ने ही तो सम्हाला! उससे ज्यादा किया। कहीं ज्यादा! पता नहीं अगर वो खुद वहां होती, तो क्या कर पाती! डाक्टरों ने अश्विनी को सावित्री का रूप बताया – सावित्री का! सती सावित्री! सती – वो स्त्री, जो पूरी तरह पवित्र हो। अश्विनी पवित्र है। पूरी तरह। गन्दगी खुद उसके अपने दिमाग में है, जो ऐसी फूल जैसी, ऐसी गुड़िया जैसी बच्ची को तकलीफ देने की सोची भी। दोनों ही रीति रिवाजों के बंधनों में बंधे हुए पति-पत्नी हैं। उनके बारे में वो ऐसा बुरा सोच भी कैसे सकती है?

पल भर में ही उसका सारा क्रोध शांत हो गया। कितना कष्ट हुआ होगा उन दोनों को ही, जब खुद उसने उन दोनों का साथ छोड़ दिया। अथर्व पूरी तरह से उसके लिए ही सपर्पित थे; अश्विनी उनके लिए समर्पित है; और अथर्व भी अश्विनी के प्रति समर्पित हैं। उनका विवाह झूठा तो नहीं है। भले ही भाग्य ने दोनों को इतने दुःख दिए, लेकिन एक दूसरे के संग से दोनों सुखी हैं! मन का बंधन क्या टूटता है कभी?

किस तरह से, किस मुश्किल से दोनों ने एक दूसरे से शादी करने का निर्णय लिया होगा। कितना कठिन रहा होगा उन दोनों के लिए ही। आज वो जो अचानक ही उनके हँसते खेलते जीवन में आ गई, तो ये दोनों अब कैसे खुश रहेंगे? उसके रहने से कितनी पीड़ा होगी मन में उनके?

वो प्यारी सी बच्ची! कैसे उसने उसके ही सुहाग की रक्षा करी थी! और एक वह है कि उसको ही अभियुक्त बना कर अपने कुंठित न्यायलय के कठघरे में खड़ा करने चली थी! छिः! कितना ओछापन!

संयोग से ही सही, अश्विनी को अथर्व मिल गया। भले ही पहले अथर्व उसका पति था, लेकिन अब वह उस का नहीं, अश्विनी का पति है। सच तो यह है कि अश्विनी ने उसके इस छोटे से परिवार की रक्षा की, उसको सजाया, और सँवारा। और वह उस पर ही आक्रोश में भर कर इस सजे सजाए गृहस्थी में आग लगाने जा रही थी! कितना छोटा मन है उस का!

प्रिया को वापस आया देख कर अश्विनी को जो ख़ुशी मिली थी, वो उसके सामने उसके और मेरे सम्बन्ध के उजागर होने से काफूर हो गई! और प्रिया को ऐसे उखड़े हुए व्यवहार करते देख कर मेरा और अश्विनी – दोनों का ही दिल टूट गया। यह तो मुझे मालूम था कि प्रिया को आश्चर्य होगा, लेकिन उससे गुस्से की उम्मीद नहीं थी। मुझे लगा था कि वो शायद समझ जाएगी। और बेचारी अश्विनी को तो प्रिया के अस्तित्व के बारे में ही कुछ नहीं मालूम था। उसको तो थोड़े ही अंतराल में न जाने कितने धक्के लग गए। वो ऐसे ही मुझसे अलग बहुत देर तक नहीं रह पाती, और अब तो उसकी हालत ही खराब हो गई।

जब प्रिया ने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया, तब अश्विनी के धैर्य का बाँध पूरी तरह से ढह गया – वो दबी घुटी आवाज़ में हिचकियाँ ले ले कर रोने लगी। मैंने अश्विनी को अपने गले से लगाया और उसको चूमा। साफ़ जाहिर था कि अश्विनी के मन में सिर्फ और सिर्फ अशांति थी। अश्विनी ने मुझे कस कर पकड़ कर अपने गले लगाया हुआ था। कुछ ऐसे जैसे की उसने पहले नहीं किया था।

काफी प्रयास कर के मैंने अश्विनी को शांत कराया और उसको छोटे बेडरूम में ले गया, जिससे वो भी कुछ आराम कर सके। अश्विनी इतने दिन मेरे बिना कैसे रही होगी, यह मैं समझ सकता था – मैं खुद भी उसके बिना इतना समय कैसे रहा यह बताना मुश्किल काम है। यह समय उसके लिए अत्यंत ही यातना भरा था। क्या सोचा था, और क्या हो गया!

अश्विनी को मैंने काफी मना कर बिस्तर पर ही लिटा लिया। उसको इस समय प्रेम की आवश्यकता थी.. तनाव, ग्लानि और क्रोध या ऐसे ही मिले जुले भाव जो उसके मन में उठ रहे थे, उनके निवारण के लिए प्रेम की आवश्यकता थी।

अश्विनी ने एक शर्ट पहनी हुई थी। वो जब बगल में लेटी तो मैंने उसकी शर्ट का बटन खोलना शुरू कर दिया। उसका मन कहीं और ही लगा हुआ था। उसको अपनी नग्नता का एहसास तब जा कर हुआ, जब उसकी शर्ट पूरी तरह से खुल गई और उसको मैंने अपने आप में समेट लिया। तब जा कर उसने महसूस किया कि मेरी उंगलियाँ लगातार उसके स्तनों के उभारों के उतार-चढ़ाव का अध्य यन करने में लगी हुई थी।

प्रिया ने मन ही मन खुद को सम्हाला – उसका पति तो अब बँट ही गया था, लेकिन अच्छी बात यह थी कि वो बँटा था तो भी उसकी खुद के बहन के साथ। वो बहन जिसको प्रिया खूब प्यार करती है... वो पति जो उसको खूब प्यार करता है... वो बहन जो प्रिया को खूब प्यार करती है... और वो अथर्व जो अश्विनी को खूब प्यार करते हैं! जब उन तीनों में ही

इतना प्रगाढ़ प्रेम है, तो फिर मन मुटाव का सवाल ही कहाँ से आता है? वो अभी जा कर उन दोनों से बात करेगी और माफ़ी मांगेगी... और विनती करेगी कि वो उसको अपने साथ रहने दें! उसको यकीन है कि वो दोनों मना नहीं कर सकेंगे!

प्रिया अथर्व और अश्विनी को ढूंढते हुए कमरे से बाहर निकली और सीधा बैठक की तरफ गई। वहां कोई भी नहीं था, तो वो वापस अपने कमरे की तरफ आने लगी। तब जा कर उसने देखा कि छोटे वाले कमरे में कोई है। उसने कमरे के अन्दर झाँका, तो अन्दर का दृश्य देख कर चमत्कृत रह गई।

अश्विनी और अथर्व पूर्णतः नग्न अवस्था में आलिंगनबद्ध होकर सो रहे थे। नग्न तो थे ही, लेकिन प्रिया को समझ आ रहा था कि यह निद्रा कुछ समय पहले ही संपन्न हुई रति-क्रिया के बाद के सुख के कारण प्रेरित हुई है। अथर्व बिस्तर पर कुछ नीचे की तरफ, अश्विनी की ओर करवट करके लेटे हुए थे। उनका बायाँ पाँव अश्विनी के ऊपर था, और इस अवस्था में उनका लिंग स्पष्ट दिख रहा था। उस समय उनके लिंग का शिश्नाग्रच्छद पीछे की तरफ खिसका हुआ था, और इससे उनके लिंग का गुलाबी हिस्सा साफ दिखाई दे रहा था।

अश्विनी पीठ के बल चित्त लेटी हुई थी। आज पहली बार प्रिया ने अश्विनी के यौवन रस से भरे अनावृत्त सौंदर्य को पहली बार देखा था। जब छोटी थी, तब वो ऐसी सुन्दर तो बिलकुल ही नहीं दिखती थी! अभी जैसी लगती है, उससे तो कितनी भिन्न! लेकिन अब देखो... कितनी अधिक सुन्दर हो गई है! उसके स्तनों की मादक गोलाईयां – मन करता है कि उनका रस निचोड़ लिया जाए! और कैसा सुन्दर, भोला चेहरा, भरे भरे रसीले होंठ! और ऊपर से ऐसा फिट शरीर! कैसी सुन्दर है ये!

‘हाँ...’

अश्विनी के पाँव कुछ खुले हुए थे, जिस कारण उसकी योनि भी थोड़ी सी खुली हुई थी। अश्विनी की योनि के होंठ उसकी खुद की योनि के होंठों के समान ही फूले हुए थे – या संभवतः थोड़े से अधिक ही फूले हुए थे। कुछ कुछ तो अभी हुए घर्षण के कारण हुआ होगा... लेकिन इतना तो तय है कि अश्विनी की योनि भी पूरी तरह से परिपक्व हो गई थी। वहाँ से अभी कुछ देर पहले ही संपन्न हुए सहवास का रस निकल रहा था। प्रिया का संदेह सही था। खैर, कैसा संदेह? पति-पत्नी क्या प्रेम नहीं करेंगे? प्रेम सम्बन्ध नहीं बनाएँगे? दांपत्य जीवन में प्रेम का एक बड़ा रूप रति है। वही तो हो रहा था।

प्रिया ने उन दोनों को वात्सल्य भाव से देखा, ‘कैसा सुन्दर और आकर्षक जोड़ा है दोनों का।‘

प्रिया से रहा नहीं गया। वो दबे पांव आगे बढ़ते हुए अश्विनी और अथर्व के पास पहुंची और चुपके से अश्विनी के एक चूचक को हलके से अपनी उंगली और अंगूठे के बीच दबाया। प्रतिक्रिया स्वरुप, लगभग तुरंत ही उसका चूचक खड़ा हो गया। अश्विनी के होंठों पर हलकी सी मुस्कान भी बन गई।

‘ऐसे मुस्कुराते हुए कितनी प्यारी लगती है..! सोच रही होगी की इन्होने छुआ है...’

प्रिया ने दूसरे स्तन के चूचक के साथ भी वही किया। समान प्रभाव! उत्सुकतावश उसने अथर्व के लिंग को भी हलके से सहलाया – पुष्ट अंग तुरंत ही उत्तेजना प्राप्त कर के आकार में बढ़ने लगा।

‘इन्होने शायद वो जड़ी ले ली..’ प्रिया ने मुस्कुराते हुए सोचा।

लिंग के बढ़ते ही अथर्व कुनमुनाते हुए जागने लगे। प्रिया झट से कमरे से बाहर हो ली।

३९

“अश्विनी?”

अश्विनी चौंकी। दीदी उसको बुला रही थी। उसकी आवाज़ क्षीण थी, लेकिन गुस्से में नहीं लग रही थी। दुःख में भी नहीं लग रही थी। एक तरह से शांत लग रही थी। अश्विनी बस अभी अभी जगी थी, और अपने कपड़े पहन रही थी। शायद कमरे से आने वाली आवाज़ दीदी को सुनाई दे गई, इसलिए उसने उसको पुकारा है। इसका मतलब दीदी ने सब कुछ देख भी लिया है..

“जी, दीदी!”

“ज़रा यहाँ आ मेरी बच्ची।“

दीदी की आवाज़ तो शांत ही लग रही थी। खैर, ऐसा तो नहीं है कि वो कभी भी दीदी के सामने जाने से बच सके। और बचे भी क्यों? दीदी है उसकी। सगी दीदी! और तो और, उसने भी तो अथर्व से पूरी रीति के साथ शादी करी है; जायज़ शादी करी है। वो क्यों डरे? अगर दीदी गुस्सा हुई तो वो उससे माफ़ी मांगेगी। उनके पैर पकड़ेगी। दीदी को उसे माफ़ करना ही पड़ेगा।

अश्विनी उठी।

मैंने उसका हाथ पकड़ लिया – मेरे दिल में एक अबूझ सा डर बैठा हुआ था। अश्विनी ने एक प्यार भरी मुस्कान मुझ पर डाली, और कहा,

“जानू, आप चिंता क्यों करते हैं? दीदी हैं मेरी। आज एक काम करिए, आप बाहर घूम आइए। प्लीज! आज अभी यहाँ मत रहिए। मैं दीदी से बात करती हूँ। ओके?”

कह कर अश्विनी ने मेरे होंठों पर एक चुम्बन दिया और मेरे जाने का इंतज़ार करने लगी। मैं अनिश्चय से कुछ देर तक बिस्तर पर बैठा रहा, लेकिन फिर अश्विनी का आत्मविश्वास देख कर उठ खड़ा हुआ। मैंने बाहर जाने से पहले एक बार अश्विनी को देखा – न जाने क्यों लग

रहा था कि उसको मैं आखिरी बार देख रहा था – और घर से बाहर निकल गया। दिल बैठ गया।

अश्विनी अंततः बेडरूम में पहुंची।

अश्विनी की पदचाप प्रिया ने सुन ली, और उठ कर बिस्तर पर बैठ गई।

“यहाँ आओ.. मेरे पास। मेरे पास बैठो।“

अश्विनी धीरे धीरे बिस्तर तक पहुंची, और झिझकते हुए एक तरफ बैठ गई। लेकिन उसकी नज़र नीची ही रही।

“अश्विनी, मेरी बहन, मेरी तरफ देख!”

अश्विनी ने अंततः प्रिया ने आँख मिलाई। प्रिया के होंठो पर एक मद्धिम मुस्कान थी।

“मेरी बच्ची, मुझे माफ़ कर दे। मेरा मन तुम्हारे और अथर्व के प्रति कुछ देर के लिए मैला हो गया था।“

“नहीं दीदी, आप ये कैसे बोल रही हैं?” अश्विनी क्या सोच कर आई थी, और क्या हो रहा था।

“बोल लेने दे। तू बाद में बोल लेना। मैंने ने आज तक अथर्व के चरित्र में किसी भी तरह का खोट नहीं देखा। उन्होंने मेरी किसी भी इच्छा को अपूर्ण नहीं रखा। तुम भी उनकी पत्नी हो... तुम भी उनके साथ रही हो, और तुम भी यह बात जानती हो। अथर्व... पति धर्म को निभाने में कहीं भी चूके हैं? जब भी किसी भी प्रकार की समस्या, या कठिनाई आई, तो ढाल बन कर वो मेरे सामने आ गए! मुझे हर कठिनाई से बचाते रहे, और रास्ता दिखाते रहे। उन्होंने मुझे हर तरह से खुश रखने का प्रयास किया। आज तक एक कटु शब्द तक नहीं बोला उन्होंने मुझसे। वह तो इतने अच्छे हैं, कि मेरी हमउम्र स्त्रियां... मेरी सहेलियां मुझसे ईर्ष्या करती हैं।“

कह कर प्रिया ने अश्विनी पर मुस्कुराते हुए एक गहरी दृष्टि डाली।

“... और आज... जब उनके पास ऐसे कठिन चुनाव का समय आया तो, मैं उनको अकेला छोड़ दूं? नहीं मेरी बहन.. बिलकुल नहीं। तुम उनकी पत्नी हो, और हमेशा रहोगी। मैं वापस हमारे गाँव चली जाऊंगी.. और वहीँ रहूंगी! तुम दोनों कभी कभी मुझसे मिलने आ जाना.. आओगी न बच्चे?”

प्रिया की ऐसी बात सुन कर अश्विनी का दिल टूट गया। आँखों से आंसुओं की अनवरत धरा बहने लगी। दु:ख के मारे उसका रोना छूट गया और रोते हुए हिचकियाँ बंध गईं।

“दीदी, ये आप कैसी बाते कर रही हैं? आपको क्या पता नहीं है कि अथर्व का पहला प्यार आप हैं? ... और अगर आज उनके पास ऐसा कठिन समय आया है तो वो इसीलिए है, क्योंकि वो आपसे बहुत प्यार करते हैं। मैं सपने में भी आप दोनों को अलग करने का सोच भी नहीं सकती हूँ। मैं तो यूँ ही अनायास ही आप दोनों के बीच आ गई! दीदी आप ही उनका पहला प्यार हैं, और आप ही का उन पर ज्यादा अधिकार है। आप फिर से उनसे शादी कर लो। मैं उनसे तलाक ले लूंगी।“

कहते कहते अश्विनी की हिचकियाँ बंध गईं।

“ले पाओगी तलाक? सच में? अरी पगली.. कैसी बातें करती है? तू अनायास हमारे बीच में आ गई? अनायास? अरे मेरी सयानी बहन, अगर तू न होती, तो सच कह रही हूँ, अथर्व भी न होते। मेरा सुहाग न होता। उनको अँधेरे से निकाल कर लाने वाली तू है.. सच कहूँ? उन पर अगर किसी का हक़ है, तो वह सिर्फ तुम्हारा है! लेकिन मुझे यह भी मालूम है, की अथर्व हम दोनों से ही बहुत प्यार करते हैं! ज़रा कुछ देर रुक कर यह सोच, हम दोनों कितने भाग्यशाली हैं कि हम दोनों को ही उनका प्यार मिला, उनका साथ मिला। ख़बरदार तुमने कभी अथर्व से अलग होने की सोची।“

ऐसे भावनात्मक वार्तालाप करते हुए दोनों ही बहने फूट फूट कर रोने लगीं। ऐसे ही रोते रोते प्रिया ने कहा,

“क्या तुम सच्चे दिल से इनसे प्यार करती हो?”

“दीदी यह कोई पूछने वाली बात है? मैं इनसे बहुत प्यार करती हूँ। अगर वो कहे तो मैं तो उनके लिए अपनी जान भी दे सकती हूँ...”

“तो मेरी सयानी बहन, अब मेरी बात सुन… अगर अब से हम तीनों ही एक साथ रहें, तो क्या तुम्हे कोई प्राब्लम है?”

“क्या? क्या? क्या सच में दीदी? मैं इनसे और आपसे अलग नहीं हो पाऊंगी? सच में दीदी, मैं आप दोनों से अलग नहीं हो सकती… अगर आप दोनों के साथ रहने को मिल गया, मैं आपकी बहुत आभारी रहूंगी और आप जो कहोगी, मैं वो सब कुछ करूँगी.. आपकी नौकरानी बनकर रहूंगी.. आप बस मुझे इनसे और अपने आप से अलग मत करना।“

“अरे पगली! वो मेरे पति हैं, और तुम्हारे भी पति! ये नौकर नौकरानी वाली बातें मत करना कभी! मेरी बात ध्यान से सुन.. मैं बहुत भाग्यशाली हूँ, कि तू मेरी बहन है – मेरी छुटकी! मत भूलना की मैंने तुझे अपनी छाती पिलाई है.. मैं तुझसे दो साल ही बड़ी सही, लेकिन तुझे माँ जैसा प्रेम भी करती हूँ… मेरी प्यारी बहन, हम दोनों बहनें अब से एक ही पति की पत्नी बनकर रहेंगी! ठीक है?”

“बिलकुल दीदी.. बिलकुल! थैंक यू! थैंक यू! थैंक यू!!”

माहौल एकदम से हल्का हो गया। दोनों हो बहने मुस्कुराने लगीं।

प्रिया और अश्विनी ने शायद ही कभी सहवास के विषय में बात करी हो, लेकिन आज परिस्थितियाँ एकदम भिन्न थीं। बात के बारे में पहल प्रिया ने ही करी –

“प्यारी बहना, एक बात बता…”

“क्या दीदी?”

“तुझको.. जरूरत के हिसाब से तो मिल जाता है न..?”

“क्या दीदी?”

“अरे.. इनका ‘प्यार’.. और क्या?”

“क्या दीदी! ही ही ही..”

“अरे बोल न?”

“जरूरत का तो कभी नहीं मिलता...”

“क्या? क्या ये तुझे खुश नहीं...”

“अरे नहीं दीदी! ऐसा कुछ भी नहीं है... इनके तो छूने भर से खुशी मिल जाती है.. लेकिन ये कुछ इस तरह से करते हैं कि मन भरता ही नहीं...”

प्रिया समझ गई कि अश्विनी क्या कह रही है.. साफ़ सी बात थी कि अश्विनी जम कर सहवास का आनंद उठा रही थी, और प्रिया खुद मानों रेगिस्तान में भटक रही थी। एक पल को उसका मन फिर से इर्ष्या से भर गया। एक भिन्न प्रकार की इर्ष्या – सौतिया डाह!

अश्विनी ने प्रिया के चेहरे को देखा – उसको समझ में आ गया कि प्रिया के मन में क्या चल रहा है।

“दीदी, अब तो आप घर वापस आ गई हो... अब क्या चिंता!”

“अरे, तेरा ‘मन’ भरते भरते इनके पास मेरा भरने की ताक़त बचेगी भला?”

“आपका क्या दीदी, ही ही!” अश्विनी भी तरंग में आ गई थी।

“हा हा! मेरी मियान!”

“ही ही दीदी! कैसा कैसा बोल रही हो!”

“अरे इसमें कैसा कैसा वाला क्या है... मियान ही तो कहा है... योनि थोड़े ही कहा... अब तेरा ही देख न.. कुछ सालों पहले तक तेरी पोकी ठीक से दिखती तक नहीं थी.. और अब तो एकदम रसीली हो गई है! फूल कर बिलकुल कुप्पा!”

“दीदी!”

“अरे! मुझसे क्या शर्माना? मेरी भी ऐसी ही हालत हो गई थी मेरी बहना! इनके बेदर्द लिंग ने इतनी कुटाई करी मेरी सहेली की कि साल भर तक ठीक से ले भी नहीं पाती थी.. लेकिन बाद में आदत हो गई, और जगह भी बन गई!”

अश्विनी शर्माते हुए प्रिया की बात सुन रही थी और साथ ही साथ कुछ सोचती भी जा रही थी।

“अरी! मन ही मन क्या सोच सोच कर मुस्कुराए जा रही है?”

“कुछ नहीं दीदी... मैं सोच रही थी कि हम दोनों बहनों का कितना कुछ साझा है – माँ बाप भी एक और पति भी..”

“हा हा! वो तो है!”

“दीदी, हम लोग कैसे करेंगे?”

“कैसे करेंगे का क्या मतलब?”

“मतलब, उन पर पहला हक़ तो आपका ही है..”

“किसी का पहला दूसरा हक़ नहीं है... हम तीनो का ही हम तीनो पर एक सा हक़ है। इन्होने मुझे यही समझाया है कि शादी में पति और पत्नी दोनों बराबरी के होते हैं.. और कोई छोटा बड़ा नहीं।“

“हम्म.. मतलब की हम तीनो एक साथ?”

“और क्या? सोच.. हम तीनो एक साथ एक बिस्तर पर!”

“नंगू पंगु?” अश्विनी ने बचे हुए आंसू पोंछते हुआ कहा।

“हाँ..” प्रिया मुस्कुराई, “और उनका छुन्नू.. हम दोनों के अन्दर बारी बारी से! सोच!”

“ही ही.. दीदी, वो उसको लिंग कहते हैं..”

“तुझे भी सिखा दिया?”

“हाँ..”

“हम दोनों मिल कर अथर्व की सेवा करेंगी, और हम दोनों मिल कर उनको इतनी ख़ुशी देंगी कि उनसे सम्हाली न जा पाए!”

“हाँ दीदी! उन्होंने बहुत सारे दुःख झेले हैं।“

“अब और नहीं! अब बिलकुल भी और नहीं!”

“दीदी... क्यों न आज हम सब मिलकर रात बिताएँ?”

“मन तो मेरा भी यही है.. लेकिन इनसे भी तो पूछना पड़ेगा... क्या पता, क्या क्या सोच लिया होगा इन्होने!”

“अरे क्या सोचेंगे? किस आदमी को अपने बिस्तर पर दो दो कामुक लड़कियाँ नहीं चाहिए?”

“हा हा हा हा... हाँ.. इन्होने हमारे हनीमून पर एक विदेशी लड़की के साथ कर लिया था...”

“क्या कह रही हो दीदी?”

“हाँ! और वो भी मेरे सामने!”

“अरे! और आपने कुछ कहा नहीं? रोका नहीं?”

“अरे कैसे रोकती? इतनी कामुक सीन थी कि क्या बताऊँ! वो सीन देख कर मेरे बदन में ऐसी आग लग गई थी कि कुछ कहते, करते न बना!”

“मतलब इन्होने चार चार लड़कियों को...”

“चार? चार मतलब?”

“जब जनाब की हड्डियाँ टूटी हुई थीं, तब इन्होने अपनी नर्स की योनि को भी तर किया...”

“क्या? हा हा!”

“हाँ दीदी... ये तो उससे शादी भी करना चाहते थे.. अगर मैंने ही इनको प्रोपोज़ न कर दिया होता तो ये तो गए थे हाथ से...!”

“बाप रे... कौन थी वो लड़की?”

दोनों बहनें फिर आयशा की बातें, और इधर उधर की गप-शप करने लगीं। पुरानी बातों को याद करने लगीं। जो भी गिले शिकवे, डर और संदेह बचे हुए थे, सब निकल गए!

४०

मुझे फोन पर एस एम एस मिला ।समय देखा, रात के साढ़े दस बजे थे। मुझे मालूम नहीं था कि दोनों बहनें आपस में क्या कर रही थीं – झगड़ा या प्यार! कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। खाने पीने का भी कुछ ठिकाना नहीं मालूम हो रहा था, इसलिए मैंने बाहर ही खाना खा लिया – खाना क्या खाया, बस पेट में कुछ डाल लिया। भूख तो वैसे भी नहीं लग रही थी।

अश्विनी का एस एम एस पढ़ कर कुछ दिलासा तो हुई। मतलब बात खराब तो बिलकुल भी नहीं हुई है।

प्रिया जैसी लड़की तो मुर्दे में भी कामेच्छा जगा सकती है.. ये तो सिर्फ मैं ही हूँ... उसका पति!'

मैं जल्दी जल्दी डग भरते हुए घर पहुंचा – तब तक तो मेरा शिश्न तीन चौथाई खड़ा भी हो गया था। दरवाज़ा खोला तो देखा कि अश्विनी एक मद्धिम बल्ब से रोशन ड्राइंग रूम में मेरा ही इंतज़ार कर रही थी। उसने मुझे देखा और फिर मेरे लोअर के सामने बनते हुए तम्बू को। उसने एक हाथ की तर्जनी को अपने होंठो पर ऐसे रखा कि मैं कुछ न कहूँ, और दूसरे हाथ की तर्जनी से इशारा कर के अपनी तरफ बुलाया। उसके पास मैं जैसे ही पहुँचा, उसने एक ही बार में मेरा लोअर और चड्ढी खींच कर नीचे उतार दिया और 'गप' से मेरे उत्तेजित लिंग को अपने मुँह में भर लिया। कुछ ही देर के चूषण के बाद मेरा लिंग पूरी तरह से तैयार हो गया। यह देख कर उसने मुझे छोड़ दिया और फुसफुसाती हुई आवाज़ में कहा,

“कस के ठोकना उसे... कम से कम तीन चार बार! समझ गए मेरे शेर? अब जाओ..”

यदि कोई कसर बची रह गई हो तो अश्विनी की यह बात सुन कर पूरी हो गई। मास्टर बेडरूम का दरवाज़ा बंद था, और उसके अन्दर में से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, और न ही अन्दर बत्ती जलती हुई लग रही थी। अन्दर जाते जाते मैंने अपने सब कपड़े उतार दिए। अन्दर गया तो देखा कि हाँलाकि बत्ती बंद थी, लेकिन बाहर से हलकी हलकी रोशनी छन कर आ रही थी, और उसी रौशनी से प्रिया का नग्न शरीर प्रतिदीप्त हो रहा था।

लम्बे लम्बे डग भरता हुआ मैं बिस्तर तक पहुंचा और चुपचाप, बिना कोई ख़ास हलचल किए प्रिया के बगल पहुंचा। वैसे देखा जाय तो जो मैंने आगे उसके साथ करने वाला था, उससे तो प्रिया की नींद में कहीं अधिक ख़लल पड़ने वाला था। वैसे अगर मुझे पहले से मालूम होता तो यह सब इन दोनों बहनों का स्वांग था। खैर, बहुत ही मजेदार स्वांग था। मैंने उंगली को प्रिया की योनि पर हलके से फिराया – वो तुरंत ही गीली हो गई।

‘ह्म्म्म कैसे सपने देख रही है यह..!’ मैंने सोचा।

अब देरी किस बात की थी... मैंने प्रिया की जांघें फैलाई, और फिर अपने लिंग को प्रिया के प्रवेश-द्वार पर टिकाया। लिंग में बलपूर्वक रक्त का संचार हो रहा था। लिंग इतना ठोस था कि एक ही बार में वो सरसराते हुए पूरे का पूरा प्रिया के भीतर तक समां गया। मुझे ऐसा लगा कि सोते हुए भी प्रिया की योनि पूरी अधीरता से मेरे लिंग का स्वागत कर रही थी। मैंने लिंग को बाहर खींचा, और वापस उसके अन्दर ठेल दिया – यह इतने बलपूर्वक किया था कि प्रिया की नींद खुल गई। और उसको तुरंत ही अपनी योनि में होने वाले अतिक्रमण का पता भी चल गया।

प्रिया ने तुरंत ही अपना कूल्हा चला कर मेरी ताल में ताल मिलाई। बिना किसी रोक रूकावट के मेरा लिंग सरकते हुए उसकी योनि की पूरी गहराई तक घुस गया। मीठे मीठे दर्द से प्रिया कसमसा गई और उसने मुझे जोर से पकड़ लिया। उत्तेजना के अतिरेक से वह कभी मेरी पीठ पर हाथ फिराती, तो कभी नाखून भी गड़ा देती थी। एक अलग तरह का जंगलीपन था आज उसमें। मुझ में भी था! इसके कारण मुझे चुभन का दर्द नहीं, बल्कि मजा आ रहा था। मैं उन्माद में आ कर धक्के लगाने लगा। मैंने प्रिया के नितंबो को पकड़ लिया और तेजी से उसकी योनि की पूरी गहराई तक जा जा कर उसकी ठुकाई करने लगा।

बीच-बीच में हम एक दूसरे के होंठों को भी चूमते और चूसते। मैंने अपनी रफ़्तार बढ़ा दी। प्रिया भी मेरी ताल पर अपनी कमर आगे पीछे कर रही थी, जिससे हम लोग जोरदार ठुकाई कर रहे थे। कोई पांच मिनट के बाद मैंने पोजीशन बदलने की सोची। मैं प्रिया को पेट के बल लिटा कर उसको घोड़ी के पोजीशन में ले आया और पीछे से अपने लिंग को उसकी योनि में घुसा दिया। मैंने उसकी कमर को मजबूती से पकड़ा हुआ था, और धक्के लगाने के साथ-साथ उसकी कमर को भी अपने तरफ खींचने लगा। उसकी योनि की भरपूर ठुकाई हो रही थी। अश्विनी अगर यह दृश्य देखती, तो उसको मुझ पर गर्व होता।

कुछ देर में मुझे लगा कि स्खलन हो जायेगा, इसलिए मैं थोड़ा रुक गया। लेकिन लिंग को उसकी योनि से निकाला नहीं। प्रिया बिस्तर पर घोड़ी बनी अपनी साँसें संयत करने लगी। मैं पीछे से ही प्रिया के ऊपर झुक गया और उसके स्तनों को सहलाने लगा, साथ ही उसकी पीठ पर छोटे छोटे चुम्बन जड़ने लगा। इसी बीच प्रिया को चरम सुख मिल गया। मैंने अपने लिंग से उसके अन्दर से निकाला नहीं था। ज्यादा देर रुक भी नहीं सकता था, क्योंकि मुझे भी उसमें वीर्य छोड़ने का मन हो रहा था।

मैंने प्रिया को बिस्तर के साइड में बैठा दिया, कुछ ऐसे जैसे प्रिया का एक पैर नीचे था और दूसरा बिस्तर पर ही रह गया। मैंने उसकी कमर को अपने बांहों में जकड़ा और अपना लिंग उसकी योनि पर टिका कर एक ही बार में अन्दर घुसा दिया।

उसी समय अश्विनी ने कमरे में प्रवेश किया। पूरी तरह से नंगी!

“दीदी का हो गया जानू.. अब मेरी बारी है!”

मैं एक पल को अश्विनी की बात समझ नहीं पाया – उसके यूँ ही अचानक से प्रकट हो जाने से एक तो मैं चौंक गया था, और ऊपर से मुझे अचरज हुआ की वो यह ऐसे कैसे बोल रही है। मुझे ऐसे अचंभित देख कर दोनों बहने एक साथ ही हंसने लगीं। तब जा कर मुझे समझ आया की यह इन्ही दोनों की मिलीभगत है और दोनों मुझ से मजे ले रही हैं! मैंने इशारे से अश्विनी को बिस्तर पर बुलाया, और प्रिया के जैसे ही बैठने को कहा। फिर प्रिया को छोड़ कर अश्विनी की योनि में प्रविष्ट हो गया। बस एक ही बात मेरे दिमाग में आई,

‘दुनिया में कहीं स्वर्ग है, तो बस, यहीं है!

उपसंहार

मेरी कहानी की तिजोरी अब फिरसे बंद करने का वक़्त आ गया है । आशा करता हु आपको मेरी बंद तिजोरी से निकला यह छोटासा खजाना लुभा पाया है ! पिछला साल मेरे जीवन का सबसे रंगीन, सबसे खुशनुमा, और प्रेम से सराबोर समय रहा। मेरी दोनों ही पत्नियों ने अपनी अपनी पढ़ाई ख़तम करी। स्नातक की डिग्री के साथ ही उन दोनों को एक और डिग्री मिली – माँ बनने की! एक समय था जब मैं पूरी तरह अकेला हो गया था और आज मेरे घर में कुल जमा पांच लोग हैं - दो बीवियाँ और दो बच्चे!! पास पड़ोस के लोग शुरू शुरू में हमको अजीब निगाहों से देखते थे, लेकिन फिर सभी को हमारी परिस्थितियों का पता चला तो उनका बर्ताव भी सामान्य हो गया। प्रिया, अश्विनी और मैं - हम तीनो मिल कर सहवास का भरपूर आनंद लेते हैं। जीवन में अगर प्रेम है, तो सब कुछ है।

•◆■★ समाप्त ★■◆•